



# बन्दी जीवन

( तीनों भाग )

उत्तर भारत में क्रान्ति का उद्योग

लेखक

शचीन्द्रनाथ सान्याल

सम्पादक

वनारसीदास चतुर्वेदी

1963

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-6

**BANDI JEEWAN**

by

**Shachindra Nath Sanyal**

P. 10 00

**COPYRIGHT © 1963 ATMA RAM & SONS DELHI-6**

# अनुक्रम

प्रकाशनीय

ग्रुमिका

निवेदन

जातिवारी राजीन्द्र साह्यास का आत्मचरित्र सम्पादन

(7—8)

(9—22)

(23—26)

(27—40)

## प्रथम भाग

1 आत्म-समय योग	
2 पूर्व परिचय	
3 शिक्षक बस का परिचय	1
4 पंजाब-यात्रा	3
5 काशी में पुस्तिक के साथ सम्बन्ध	8
6 भाव और कर्म	17
7 कौश की बारबरी में	30
8 पंजाब की कथा	37
9 काशी केन्द्र की कहानी	39
10 विरवातवात और निरवात	40
	53
	69

## द्वितीय भाग

1 पहली निष्कसता के बाद	
2 काशी प्रवास की कहानी	
3 दिल्ली में	77
	84
	8



4 बंगाल में	114
5 बर्मा की बहानी	140
6 परिणाम	148
7 बिप्लव का प्रयास क्या क्यों हुआ ?	165

## तृतीय भाग

1 रिहाई की सूचना	170
2 कामेपानी से बिहाई	189
3 मातृभूमि की ओर में	204
4 बम्बई छात्रियों की विस्था	212
5 मि० सख्त और बैरिस्टर बटजी	220
6 चेम्सफोर्ड सुधार और असहयोग	228
7 जमशेदपुर में मजदूर संघर्ष	237
8 वान्तिकारी दल का पुनर्गठन (1)	240
9 वान्तिकारी दल का पुनर्गठन (2)	263
10 श्री मोतीलालजी जवाहरलालजी तथा श्री सी० धार० दास से मेट	279
11 उत्तर भारत में दल का विस्तार	292
12 वान्तिकारी दल और कम्युनिस्ट	314
13 अनुशीलन समिति का सहयोग	331
14 गृह-यात्रा	341
15 फिर बंगाल में	354
16 भादवों का संघर्ष	362

## परिशिष्ट

बुध पुरक तन्त्र रत्नसाल बसम

391

हादिक दल का 303 शर्मासमोहन हादिक 304 राजराम का वान्ति  
री दल 306 श्री मोतीलाल और जयचन्द 307, मर रेडिफ्ट ५ दल की

हुत्पा का प्रयास 399 भी प्रतापसिंह 400, मुल्तबिर कृपासिंह 402, करतार  
 सिंह साहि की बिरपनारी 404 कृपासिंह की हुत्पा 404 गदर पार्टी का जन्म  
 धीरे भ्रष्ट 404 मुस्लिम क्रांतिकारी दल का इतिहास 406 प्रथम बिदबमुद्द  
 और मुस्लिम क्रांतिकारी 409 अफगानिस्तान की स्थिति 410, अमायवे सिया  
 सिया 411 सरहदी बबीले 412 मौनाना सदेदुस्मा सिधी 413, काबुल में  
 आजाद हिन्द सरकार 414 धमीर हबीबुस्सायी का बिदबासभा 415 टर्की  
 सरकार से सम्पर्क 415 आजाद हिन्द सरकार के मिशन 416 रेयमी पत्र 417  
 आजाद हिन्द सरकार द्वारा भारत पर आक्रमण 418 हबीबुस्सायी की हुत्पा  
 418 अफगानिस्तान का भारत पर आक्रमण 419 सन्धि 420, बलूच धीरे  
 क्रांतिकारी 420 मली अहमद सिद्दीकी 421 मुल्तबिर कुमुदनाम मुल्तबी 422,  
 अफगान में बिद्रोह की तयारी 423 रासबिहारी का भारत-राम 424 बिदेसों में  
 भारतीय बिप्लववादी 425 बिदेसों में भारतीय आसुस 426 भारतीय क्रांति  
 कारियों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय संकट 428 भारत छोड़ने से पूर्व की सुभाष का सेनाओं  
 से सम्पर्क 430 भारत के राष्ट्रीय नेता और क्रांतिकारी 432 श्री राबीन्द्र की  
 सेवा कर्तनी 435



## प्रकाशकीय

भारत के उन महामाण वीर देशभक्तों के जीवन तथा कार्यों का इतिहास सभी तक सगमग समकट ही है जिन्होंने राष्ट्रवत्स के सहारे स्वदेश की विदेशी दासता से मुक्त कराने का प्रयास किया था। महायुधियोगी ब्रिटिश साम्राज्य से मोर्चा लेनेवाले स्वतंत्रता के इन सैनिकों की जीवन-कथाएँ इतनी रोचक और त्याग-बलिदान की भावनाओं तथा घटनाओं से परिपूर्ण हैं कि एक उदृष्ट बाल्य की भाँति हृदय पर स्थायी प्रभाव डालती हैं। हमारे इतिहास की यह ऐसी प्रमूल्य निधि है, जो युग-युगों तक हमें प्रेरणा देने की सामर्थ्य रखती है।

‘सहीद ग्रन्थ माता’ के अन्तर्गत प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ ‘बड़ी जीवन’ हमारे इतिहास की घटनाओं का बहुत भाग है जिसमें उन रहस्यमय रोमांचकारी घटनाओं का अत्यन्त सजीव और प्रामाणिक विवरण है जिनसे कारण एक दिन भारत के ब्रिटेन की दासता की नींव हरा दी गई थी। ‘बड़ी जीवन’ के लेखक श्री धर्मवीरनाथ सायनाल ने स्वयं इन घटनाओं में प्रमुख भाग के संवादन का उत्तरदायित्वपूर्ण भार उन पर था जिसे उन्होंने बड़ी गम्भीरता और जिम्मेदारी के साथ निभाया था तथा इसके लिए कालान्तर में बड़ी मीमांसा घटनाएँ धर्मवीर बाबू को सहन करनी पड़ी थीं। यही कारण है कि इतिहासी घटनाओं का यह घटनाक्रम उन्होंने ऐसी मर्मस्पर्शी भाषा में लिखा है कि घनेक वर्षों तक इतिहासी सगठन द्वारा युवकों को अपने मार्ग में दीक्षित करने के लिए इस ग्रन्थ का उपयोग किया जाता रहा है। यह ग्रन्थ आज से समय-बासीय वर्षों तक भी हमारे सामने प्रकाशित हुआ और प्रकाशित होते ही उभर कर सामने आया। फिर भी इसके अनेक संस्करण प्रकाशित होते रहे और हार्पो-हार्पो बिकते

मए । यह बहुत बरों से यह ग्रन्थ प्रकाश्य था ।

ग्रन्थो जीवन' के प्रस्तुत संस्करण में पूर्ण प्रकाशित दो भागों के अतिरिक्त यह तीसरा भाग भी है, जो अभी तक पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हो सका था । इसके साथ ही 'गुप्त पुरातन्य' दीपक में एक पृष्ठक प्रकाशित भी है जिसमें ग्रन्थ में बर्णित घटनाओं का यह स्मोरा दिया गया है जो संघर्षों के शासनकाल में नहीं दिया जा सकता था । हमें याद है कि पाठक 'सहीद ग्रन्थ' याता के अन्य ग्रन्थों की ही भाँति 'ग्रन्थो जीवन' का भी हार्दिक स्वागत करेंगे ।

## प्रथम सस्करण की भूमिका

किसी समाज को सहजाने के लिए उस समाज के साहित्य से परिचित होने की परम आवश्यकता होगी है क्योंकि समाज के प्राचीन की जेतना उस समाज के साहित्य में भी प्रतिबिम्बित हुआ करता है। मात्र भारत ध्वज और निर्माण के बीच क्रमशः अपनी साधकता को जोड़ता फिरता है। यद्यपि भारत का समाज यदि सजीव होगा तो भारत के प्राचीन की इस प्रभावित का बिना उसके साहित्य में प्रत्यक्ष ही अपने प्रतिबिम्ब को संकटित कर देगा। हम भारतीयों को यह नज़र नहीं आता कि इस प्रचलित घटुट गति का बेव कितना प्रचलित है किन्तु हमारे परभाव मानते कि पीढ़ी इस गति के बेव को बसूरी बतला सकेगी। भारत के इस ध्वज और निर्माण के उपयोग के बीच जितनी बड़ी शक्ति का स्फुरण हो रहा है उसके स्वरूप को जानने का समय घायब सभी भाषा नहीं। इस बनाव-बिबाह का एक बिन्दु—मने हो वह प्रत्यक्ष और भविष्य हो—भारत की इस भाष्य-परीक्षा की एक भूमि-सी छाया मात्र भारत के साहित्य में भी धीरे-धीरे प्रकट हो रही है। इसी से 'निर्वा-सन-काहिनी' 'कारा-काहिनी' 'श्रीपालदेव कथा' 'निर्वाचितेय धाम-कथा' और 'बायनाय विप्लव-बाय' आदि अन्य नम भाषा के साहित्य में क्रमशः प्रकाशित हो रहे हैं। भारत के प्राग मात्र जैसे कुछ घटपटा रहे हैं उस घटपटाहट (प्रभावित) का पूरा स्वरूप उसके साहित्य में प्रकाशित नहीं हो सका। सभी नहीं हुआ तो न सभी क्रमशः भागे होगा। 'निर्वाचितेय धाम-कथा' इत्यादि पुस्तकें जिस ओगी की हैं उस सभी के प्रभाव मेरी यह पुस्तक 'बगरी जीवन' भी है। इस सभी की कई पुस्तकें जब पहले से मौजूद थीं तब फिर यह 'बगरी जीवन' देने क्यों मिली? इसका विरोध करने मुन सीविए।

मुझ यह कहना है कि सजीव जातियों में ध्यानहीन करने की प्रवृत्ति बहुत

प्रबल होती है। इस बीच-पड़ताम करने की प्रवृत्ति के कारण ही सभी जातियों  
 अपने समाज के रस्ते रस्ती समाचार के लिए चौकम्पी रहती हैं। चापे एक देहाती  
 के देदाग बरा-बूरा का पेड़ पत्ता जानने में किसी ने अपनी सारी उम्र इस घाटा व  
 बिठा ली थी कि इस प्रकार तथ्य समझ कर देने से कदाचित् किसी दिन किसी को  
 बरानुक्रम की पारा का पता लगाने में सुभीता हो जाय। भारत के वर्तमान समाज  
 की भीतरी बेगनाहक परिस्थिति उसका परिमाण और उसका बारम्बार पाने का  
 समय क्या अभी तक उपस्थित नहीं हुआ ? उस भीतरी बेगनाहक—दर्र हिस—को  
 हटा देने को इच्छा से भारत में जो अधिनियम घोषित हो चुके हैं वह  
 आगलाही जितना व्यापक और गम्भीर ? कहीं-कहीं पर उसमें कोर-कटर और  
 बूम-बूम रह गई है वह घोषित अधिनियम से साबक हुआ और जिसका  
 अनुमति दे दिया है तथा उसमें मात्र अपराधन क्या रह गया—इन सारी बातों का  
 ज्ञान लेना क्या प्रत्यक्ष भारतवासी का कर्तव्य नहीं ? इन सारी बातों को जानने  
 के लिए हम इन को बहुत ही पुस्तक के प्रकाशित होने का आश्चर्यकृत है जिस  
 इन को कि वह पुस्तक बड़ी जीवन है। एसी-एसी जिसकी पुस्तकें प्रकाशित हामी  
 मुख्य विषय की समझना उतना ही आसान हो जायगा।

मेरा बलवत्त यह है कि बाग दाहिनी के इन की जिसकी पुस्तक प्रकाशित  
 हुई है उसमें अरविन्द बाबू की 'कारा-दाहिनी' और बाबू ललित की फिरो  
 लिखित 'बागलाय विप्लव-वार' नामक पुस्तकें मुझे सर्वश्रेष्ठ लगीं। हों अरविन्द  
 बाबू ने लिखित बलवत्त के कारणों की हो गया लिखा है और मैं चाहता हूँ कि  
 साहोब बनारस बलवत्त और अरविन्द की बातें इसी इन व लिखित तथा इस  
 लिखित में प्रकाश मुक्त प्रदेश बंगाल और अरविन्द-लिखित भारत के अरविन्द  
 प्रदेशों के मानव-विकास की भी बाड़ी-बहुत बर्णन है। यह पुस्तक तो अरविन्द  
 विप्लव-वार के लेखकों के ज्ञान को कि मुझे नहीं है परी अनेकाने वही अरविन्द  
 इन में प्रकाश कर रही है। भाषा पर अरविन्द मेरा उनकी भाषा अधिनियम नहीं है  
 फिर भी अभी तक बहुत ही बातें प्रकाश करने को रह गई हैं बंगाल की भाषा का  
 बोल भारत में ही मैं उनकी बर्णन करना चाहता हूँ। मैं बंगाली जानता हूँ कि  
 बाग की बुद्धि में मैं सुन्दर नहीं लिख पाता और इन लिखित में ही अरविन्द बाबू का  
 पुस्तक के साथ लिखी भी पुस्तक अनेकाने लेने पाय नहीं। भाषा देने और अरविन्द  
 करने को ऐसी पुस्तक बंगाल में बर्णन हो बिना और अरविन्द में हो। अनेक

बाबू निम्बुसहेह दंगान के शक्तिशाली लखर हैं। किन्तु उनकी 'भारत-बन्दा' में बहुत ही सुस्तर विषया की घालीबत्ता भी बिमलूख साधारण रीति पर की गई है मानो उनका उसी में कीगुठ है। इसी कारण 'त्रिकोसितुर घात-कथा' बिना कबक होने पर भी ममदगिनी नहीं हुई। और बारीग बाबू की द्वीपान्तरेर कथा में जो माग उपेन्द्र बाय का मिता हुआ है वही मुझ मरुता मगा। उरत पुस्तक का घावे में भी घाघक घरा उपेन्द्र बाबू का ही मिता हुआ है। बाबू बारीग कुमार पोव ने मरुति मिता मही है कि "यह दो मुर्कों की एक ही बात है किन्तु यह सभी की समझ में आ जाता है कि यह दो मुर्कों की साय-साफ मलय मलय बातें हैं। बारीग बाबू के भिछे हुए मलय में बीच-बीच में मरुति खाता कबित्व है तथापि, सब तो यह है कि हममें भी बिप्लव बाहियों की मम-कथा प्रबट नहीं हुई। इसक सिवा हममें इन द्वीपान्तरेर की कथा की बहुतेरी बातें घालनी से दबा दी गई हैं। ऐसा क्यों हुआ है इसका बिचार मयास्यान करने की इच्छा है।

'बम्बी बीबम' के इस खण्ड में मही मिथने की चप्पा की गई है कि यूरोप के महानुष्ठ के समय भारत में जाति की कैसी-कथा तैयारी की गई थी। रोमट रिपोर्ट में तो इसका यह पड़नु बिमकुल ही दिखा दिया गया है परन्तु 'टाइम्स हिस्ट्री ऑफ़ बी ग्रेट वार' (Times History of the Great War volume dealing with India) नाम की पुस्तक में इसका बोझ-सा उल्लेख आ गया है। माना कि जाति की इस तैयारी का बपधाय नहीं किया जा सका फिर भी सफ-मता या विफलता के बुष्टिकोण से इसकी महानता का फेसला करना ठीक नहीं। पितामह भीष्म का महत् करिज क्या कुम्भन के महा संशाम में उनकी हार-जीत पर अवलम्बित है ?

इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में यह बतनाम की इच्छा है कि कुछ बिहिन के पूर भारतीय बिप्लवबाहियों की क्या दशा थी और उनके मन की पति ने किस किस प्रकार घाघात मगने से कैसा-कथा माव धारण किया था। इसके परचाव मेरे करार हो जाने की दशा फिर गिरपतार होने और मुक-मा बनने एवं 'बम्बी बीबम' का वर्धन करने का बिचार है। मेरी गिरपतारी हो जाने के बाद भी भारत और बर्मा में जिस प्रकार जाति की मुष्ट योजना की आ रही थी उसका भी वर्धन करने का मेरा इरादा है।

मुना है कि बारीगकुमार के साथी उस्तासखर दत्त मरुदमन टाणु में कहते



हास है घम्य स्थान पर इसकी जर्जा मुझे करनी पड़ेगी । जिस समय क्रांतिकारी भावना को लेकर मैंने सर्वप्रथम बनारस में संगठन प्रारम्भ किया था संयोगवश इसी समय नगीब-करीब मेरी ही उम्र के एक गरीब बुद्ध के साथ मेरी पहरी मित्रता हो गई थी । यह गरीब बुद्ध अभी कसकटा से घाबे हुए थे । ऐसी मित्रता कैसे उत्पन्न होती है यह एक रहस्य की बात है । गरीब भावनाओं की तरह सहृदय किसी एक दिन ऐसे मित्र जीवन-पथ में घाबर राके हो जाते हैं । पहले ही दसन में यह प्रतीत हो जाता है कि यह मेरे बड़े मित्रजन हैं । मोस घाब करके दुनिया की चीजें खरीदी जाती हैं लेकिन जीवन की जो श्रेष्ठ सम्पद हैं बहूँ ही मिला करती है । इस प्रकार १० जीवन के एक महान् अवसर पर मैंने इस तरह से यों ही अपने मित्र को पाया था—मेकिन छोड़े हो दिनों में जीवन के घाटों को लेकर इनके साथ मेरा मतभेद उत्पन्न हुआ । मैं तो पहले ही संकल्प कर चुका था कि भारत को विदेशियों के हाथ से मुक्त कराना और इस महान् काय को सम्पन्न करने के लिए गोपनीय रूप से यन्त्रजाल एक सम्पन्न गणहू बनना पड़ेगा । उस समय पिताजी को मैं आदर्श पुरुष समझने लगा था । पिताजी जब पूछते थे कि तुम घाबे बसकर क्या करोगे तो मैं कहना था कि मैं पिताजी बनूँगा मैपोलियन की तरह मैं जीवन बिताना चाहता हूँ । लेकिन अब मेरे मित्र ने मेरे मन में एक भीषण उपद्रव पैदा कर दी । हम दोनों की अवस्था उस समय पगड़-खोलहू साथ की थी । इसी उम्र में मेरे मित्र ने संन्यास का आशय पसन्द कर लिया था जिसका अर्थ होता है समाज-सेवा के नाम से धन होकर व्यक्तिगत भावना में जीवन व्यतीत करना । मेरे लिए सामाजिक कर्म की छोड़ना एक प्रकार में असम्भव-सा था । लेकिन मेरे मित्र ने मुझे यह समझना पड़ा कि मनुष्य का अर्थ धार्मिक है जीवन में ईश्वर की उपलब्धि करना । ईश्वर का साक्षात्कार हुए बिना हम जो कुछ भी करेंगे सबसे समाज का अपाय कल्याण होगा या नहीं यह कहना कठिन है । मध्य की धनुमुठि हुए बिना हम कैसे टीक रास्त को धर्मियमार कर सकते हैं ? ईश्वर का साक्षात्कार होने के परवान् ही हम अपाय ज्ञ में समझ सकते हैं कि क्या बाय है और क्या असाय क्या कल्याणकारी है और क्या अर्थमयप्रद ? ईश्वर का साक्षात् किए बिना समाज का कल्याण करने जागा मानो अंध होकर अंध की रास्ता दिखाना है । ईश्वर का साक्षात्कार करने के परवान् ईश्वर की आज्ञा से ईश्वर की इच्छानुसार जब हम समाज की सेवा में लगे हैं तभी हमारी समाज-सेवा मार्ग

हो सकती है। अपने पद की पुष्टि के लिए मेरे मित्र ने स्वामी विवेकानन्द एवं परमहंस रामकृष्ण देव की जीवनी का उत्सेह किया।

इस प्रकार जीवन में सप्रबल भावसंगत इन्द्र उपस्थित हुआ। एक तरफ मैं समाज को छोड़ नहीं सकता था दूसरी तरफ अपने जीवन के परम मित्र से भी मैं दूर नहीं रह सकता था लेकिन मेरे मित्र मेरे साथ बचने के लिए तैयार न थे। मैं भी अपने मित्र के रास्ते पर चलने को तैयार न था। छ. महीने तक दिन और रात इस समझ में छँदे रहे। उस क्रिस्तोरावन्पा की मित्रता में एक धनीय मोहिनी छवि थी। हम एक-दूसरे को छोड़ भी नहीं पाते थे। बहुत भी नहीं कर पाते थे। धात्र भी मेरे मित्र सन्वास मार्ग में अवस्थित हैं और मैं गङ्गाधर धायम में जकड़ा हुआ मोठा सा रहा हूँ।

अपने मित्र के बनाने पर मैंने स्वामी विवेकानन्द एवं श्रीरामकृष्ण परमहंस देव की जीवनी पढ़ी। उनकी समान उचितियों को लेकर एकाग्र मन से एकान्त में गम्भीर रूप से मनन किया। उपनिषद् एवं गीता अनुवाद की सहायता से बार-बार पढ़ी साधु-संगति भी करने लग गया। इस प्रकार से हिन्दू-समाज की गर्भरक्षा को भली प्रकार से समझने की मैंने अपने धर्मरतन से चेष्टा की। साधु-सत्तों की संगति से जीवन में प्रसूत लाभ हुआ। हममें कोई छन्देह नहीं लेकिन जी को उसस्ती नहीं हुई। मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि हमारे समाज के श्रेष्ठ महापुरुष क्यों समाज में नहीं पाते। क्यों सामाजिक काम में अग्रणी नहीं होते? साधु-सत्तों के संघर्ष में धाकर मैंने यह बेला कि साधन मनन करना छोड़कर ये लोग एक छंदम भी इधर उधर नहीं जाते। यहाँ तक कि साधन मनन के बारे में भी इनके जो कुछ अनुभव हैं उन्हें भी वे पुस्तक के धाकर में समाज को देना नहीं चाहते। मैंने स्वामि हैं, धर्मयन्त्रीसत्ता हैं। दक्षिण होकर एक काम में लग जाने की शक्ति है लेकिन ये समाज-सेवा के किसी काम में धाना नहीं चाहते। मैंने अपने मन में यह सोचा कि यदि हमारे पूर्वज भी ऐसे ही होते तो धात्र हमें न पाणिमि जैसा ध्याकरप ही निशता न बैद-वेवाग्य उपनिषद्, ज्योतिष गणित या आयुर्वेद शास्त्र ही प्राप्त होते। मेरे मन में यह सन्देश पैदा हुआ कि सम्भव है धात्रकस के साधु सत्त जाहे जितने भी मसे हों लेकिन हममें प्राचीनकाल की तरह वह प्रतिभा नहीं है, वह सम्पन्न दृष्टि भी नहीं है। जिसके कारण एन दिन भारतवर्ष सम्पत्ता के चरम मरार पर धाकड़ था। मुझे उसस्ती नहीं हुई। पीछा के कर्मयोग के धायम ने

हास है। धर्म स्थान पर इसकी पूर्वा मुझे करनी पड़ेगी। बिना समय काव्यिकारी मानना को लेकर मैंने सबप्रथम बनारस में संगठन प्रारम्भ किया था। संतोषवश इसी समय करीब-करीब मेरी ही उम्र के एक नवीन युवक के साथ मेरी पहली मित्रता हो गई थी। यह नवीन युवक धर्मी कसकसा से घाबे हुए था। ऐसी मित्रता कड़े चलन होती है यह एक रहस्य की बात है। नवीन भावनाओं की तरह सहसा किसी एक दिन ऐसे मित्र जीवन-मय में आकर बड़े हो जाते हैं। पहले ही दर्शन में यह प्रतीत हो जाता है कि यह मेरे वह मित्रवत है। मोस भाव करके पुनिया की चौकें करीबी जाती हैं, लेकिन जीवन की जो खेच सम्पद है वह बों ही मिला करती है। इस प्रकार से जीवन के एक महान् अवसर पर मैंने इस तरह से यों ही अपने मित्र को पाया था—लेकिन बोड़े ही दिनों में जीवन के आदर्श को लेकर इनके साथ मेरा मतभेद उत्पन्न हुआ। मैं तो पहले ही संकल्प कर चुका था कि भारत को विदेशियों के हाथ से मुक्त करनेवा और इस महान् कार्य को सम्पन्न करने के लिए भोपनीय रूप से व्यवस्था सब अवसर सब तरह करना पड़ेगा। इस समय बिबाजी को मैं आदर्श पुरुष समझने लगा था। गिताजी जब पूछते थे कि तुम घाबे बसकर क्या करोगे, तो मैं कहना था कि मैं बिबाजी बनूंगा। मेपोलियन की तरह मैं जीवन बिताना चाहता हूँ। लेकिन धर्म मेरे मित्र ने मेरे मन में एक प्रीवक उत्पन्न देना कर दी। हम दोनों की अवस्था उस समय पन्ध्र-सोल्ह साल की थी। इसी उम्र में मेरे मित्र ने सम्बास का आदर्श पत्रम्भ कर दिया था, जिसका धर्म होता है समाज-सेवा के काम से जनम होकर व्यक्तिगत साधना में जीवन व्यतीत करना। मेरे लिए सामाजिक कर्म की छोड़ना एक प्रकार से असम्भव-सा था। लेकिन मेरे मित्र ने मुझे यह समझाना चाहा कि मनुष्य का खेच आदर्श है जीवन में ईश्वर की उपलब्धि करना। ईश्वर का साक्षात्कार हुए बिना हम जो कुछ भी करेंगे सबसे समाज का यथार्थ कल्याण होगा या नहीं यह कहना कठिन है। सत्य की अनुभूति हुए बिना हम कैसे ठीक रास्ते को पहचान कर चलेंगे? ईश्वर का साक्षात्कार होने के पश्चात् ही हम यथार्थ रूप में समझ सकते हैं कि क्या सत्य है और क्या असत्य क्या कल्याणकारी है और क्या धर्मपरायण। ईश्वर का साक्षात् किए बिना समाज का कल्याण करने जाना मानो धर्म होकर, धर्म को रास्ता दिखाना है। ईश्वर का साक्षात्कार करने के पश्चात् ईश्वर की आज्ञा है, ईश्वर की दृष्टानुसार जब हम समाज की सेवा में मर्गे तब ही हमारी समाज-सेवा सार्थक



मुझे बहुत कुछ सहारा दिया। उपनिषद् से भी मुझे इस बात का सहारा मिला।  
 विवेकानन्द की भाषा में कर्मयोग एवं सम्पास दोनों तरह की ही बातें मिलीं।  
 लेकिन प्रामाणिक रूप से मुझे यह चहुँप नहीं मिला कि कर्म का मार्ग ही एकमात्र  
 सत्य रास्ता है। तब मैंने यह निश्चय किया कि सम्भवतः हम अपनी-अपनी प्रकृति  
 के अनुसार योग, कर्मयोग या सम्पासयोग को ग्रहण कर सकते हैं कोई रास्ता  
 किसी दूसरे रास्ते से न छोटा है न बड़ा। अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार जिस  
 रास्ते को हम ग्रहण करेंगे वही रास्ता हमारे लिए सही है एवं और सब रास्ते  
 गलत हैं। कम-से-कम दूसरे रास्ते में जाने से हमें अवश्य कुछ-न-कुछ हानि होगी।  
 अब यह निर्णय कैसे होया कि मेरी प्रकृति कैसी है, एवं कौन-सा रास्ता मेरी प्रकृति  
 के अनुकूल है? साधु-संप्रति करने एवं शास्त्र-वचनों से मुझे यह पता चला कि ऐसा  
 निर्णय करने के लिए तीन साधन भीजते हैं। एक तो अपनी विचारबुद्धि है, दूसरा  
 सतगुरु की सहायता है और तीसरा आत्मवचन है। इन तीनों में यथार्थ मान्यता होना  
 चाहिए। केवल शास्त्रवचन से काम नहीं चलेगा। कारण एक तो शास्त्र बहुत है  
 इसलिए उनमें से अवश्य ही भ्रम फैलाना पड़ेगा। नव्व बात यह है कि शास्त्रवचन  
 भी अनिश्चय के आधार पर स्थित है। तथापि विभिन्न महापुरुषों ने अलग-अलग  
 रास्ते पर चलकर सत्यानुभूति की है। इसलिए कौन-सा मार्ग मेरे लिए प्रशस्त है  
 इसका निर्णय शास्त्रवचनमात्र से ही नहीं हो सकता इसके लिए शिक्षक की  
 आवश्यकता है। जब सत्कार के प्रत्येक काम में शिक्षक की आवश्यकता है तो क्या  
 सत्यानुसंधान के काम में ही शिक्षक की आवश्यकता नहीं होगी? किन्तु केवल  
 शिक्षक से ही काम नहीं चल सकता। शिक्षा लेनेवाला यदि उपयुक्त न हो, तो  
 शिक्षक क्या करेगा? एवं कौन मेरा शिक्षक होया यह निर्णय भी तो मुझे ही करना  
 पड़ेगा? इसलिए अन्त में अपनी विचारबुद्धि पर ही निर्भर करना पड़ता है। लेकिन  
 अपनी प्रकृति को छोड़कर उसका उन्मूलन करके मैं कुछ नहीं कर सकता। इसलिए  
 भारतीय साधन-प्रकृति में सर्वप्रथम बात यह है कि सत्य की खोज करने के पहले  
 अपने का निष्कलतापूर्ण बनना पड़ता है। सम्पूर्णतया निष्कलतापी हुए बिना सत्य  
 की खोज सम्भव नहीं है। लेकिन यथार्थरूप में निष्कलतापी होना आसान बात नहीं  
 है। इसके लिए हमें स्वार्थछूट्य होना आवश्यक है। और स्वार्थछूट्य हम तभी हो  
 सकते हैं जब हम अपनी भासना के बलीभूत न हों। भासनाशील होना और भीरा  
 व्यवहार होना एक ही बात है। इसलिए भारतीय साधन-प्रकृति में वैराग्य होना



नेतामण्य प्रदर्शित भाप के शार्सनिक विचारों से संतरंग रूप से प्रभावित हो रहे थे । इससे बढ़कर सम्मोष अपने जीवन में मुझे बहुत कम मिला है । मेरे मानसिक दृढ़ों के इस संस को बिना समझ 'गन्धी जीवन' के बहुत-से स्थानों को बाठक ठीक से नहीं समझ पाएँगे । ऐसी मानसिक परिस्थिति में मैंने आम्तिकारी दल में काम किया एवं इसी मनोवृत्ति को छात्र लेकर मैं जेल गया कातेपानी गया और लौट भी आया ।

सन् 1920 के बाद जब मैं कातेपानी से लौटकर आया तब महारमा गांधी भारत के राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी कार्यप्रणाली को लेकर प्रचलीत हो चुके थे । महारमा गांधी की यहिहा नीति के कारण एवं महारमा गांधी ऐसे महान् व्यक्ति का भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण भारतीय आम्तिकारी आन्दोलन को काफी बाधा पहुँची । महारमा गांधी यह प्रचार करने लगे कि भारतीय प्राचीन धारस के छात्र भारतीय आम्तिकारी आन्दोलन का समन्वय नहीं हो सकता । मानो प्राचीन भारतीय धारस में श्रीकृष्ण का एक कुशलन के महानुद का कोई स्थान ही नहीं है । महारमा गांधी की तरह कस्तूर पाठ आलापों के छात्र एवं अध्यापकगण भी भारतीय प्राचीन धारस के नाम पर भारतीय आम्तिकारी आन्दोलन के विरुद्ध तीव्र प्रचार किया करते थे । इस प्रकार से हिंसा एवं यहिहा की नीति को लेकर मेरे मन से दूसरा संघर्ष उत्पन्न हुआ था लेकिन यह इतना तीव्र न था । महारमाजी ने बेलगाम कावेर में आम्तिकारियों के विरुद्ध जो कुछ बोयारोपण किए थे उसके प्रत्युत्तर में मैंने उत्तर हाउस में महारमा जी के पास अपने नाम से एक बिट्टी भेजी थी, वह बिट्टी ज्यों की त्यों 12 फरवरी सन् 1925 की 'बय इन्डिया' में प्रकाशित हुई थी । उसी एक में महारमाजी ने उसका उत्तर भी दिया था ।

कातेपानी से लौटने के बाद संभवतः सन् 1923 में ही मैं पहले पहल कम्युनिस्ट सिद्धान्तों से परिचित हुआ । यह एक नवीन सिद्धान्त का जिसके साथ आम्तिकारी दल के किसी व्यक्ति का भी उस समय सम्पर्क परिचय न था । उत्तरचात् सन् 1925 में जेल जाने के पहले मैं कम्युनिस्ट सिद्धान्त के साथ गंभीर रूप से परिचित हुआ । बहुत से प्रामाणिक एवं पढ़े कम्युनिस्टों के साथ खूब वाद-विवाद किया विचार विनिमय किया । एक तरफ मैं आम्तिकारी आन्दोलन में जुटा था दूसरी तरफ गन्धी जीवन के दूसरे भाग का सम्पादन-कार्य भी कर रहा था, एवं कम्युनिस्ट

मिथ्यात्व को समझने के लिए जी जान से प्रयत्न कर रहा था। कम्युनिस्ट सिद्धान्त का कुछ समझ तो मैंने ग्रहण कर लिया लेकिन कुछ संशय भी मैं आज भी ग्रहण नहीं कर पाया। कम्युनिज्म के सिद्धान्त की प्राविक-योजना की बहुत-सी बातें मैंने स्वीकार की लेकिन प्राविक योजना के साथ कम्युनिज्म के सिद्धान्त में मीथिक-बाद के बहुत-से ऐसे सिद्धान्त हनपूर्वक जोड़ दिये गए हैं जिसे दार्शनिक दृष्टि से एवं मानव धर्मिकता को धर्म में मैं मान नहीं समझता। मैं जब भी ईश्वर में विश्वास रखता हूँ एवं यह समझता हूँ कि प्राधुनिक विज्ञान की धर्मिक्यक्ति से जमस भारतीय राजन शासन का पुट्टि होती जा रही है। प्राक्कल हमारे देश के कुछ व्यक्ति परानुकरण कृति के बग होकर धारमबाध को स्वीकार नहीं कर रहे हैं एवं जो लोग धारमबाध में विश्वास रखते हैं उनकी वे हूँभी उदाते हैं।

यद्यपि मैं बात तो यह है कि अपनी अपनी धर्मिक सत्कार एवं संजी धर्मियों के प्रभाव की बजह से ही अधिकांश हमारी विचारधारा बनती है यन्वीर रूप से विचार करने के बाद किसी सिद्धान्त को ग्रहण करने का दृष्टान्त मनुष्य में दुस्त है।

यह भी एक बात है कि आज जो लोग राष्ट्रीय राज में त्याग एवं मोरत्व के साथ साथे बढ़ रहे हैं उनकी विचारधारा का प्रभाव स्वभावतः प्रबल होगा। कृती विसन्धी धारमबाध की सकलता के मोह में आकर भी आज हमारे देश के बहुतेरे लोगवाम उसमें धर्मिभूत हो रहे हैं। मीथिकबाधियों के मन में यह भी एक धारणा है कि प्राधुनिक विज्ञान ने धारमबाध के सिद्धान्त को बढ़ से उखाड़कर फेंक दिया है, लेकिन ये सब बातें विसदुल निराधार हैं।

निष्पत्तवात रूप से यदि हम प्राधुनिक विज्ञान की धारमोचना करें तो हमें यह प्रबल ही स्वीकार करना पड़ेगा कि विज्ञान केवल इन्द्रियग्राह्य विषयों की ही धोज करता है इस कारण विज्ञान की सहायता से हम यह कैसे कह सकते हैं कि इन्द्रियातीत वस्तुओं का धर्मिस्थ हो नहीं है? यन्वीर के धारमिधार में हम अपनी इन्द्रियों की धर्मि को बढ़ाते हैं धीर तब हम देख पाते हैं कि जो वस्तु इन्द्रिय मोचर नहीं थी वह यन्वीर की सहायता से इन्द्रियग्राह्य हो गई। धार वैज्ञानिक उन्नति के कारण हमें यह प्रतीत होने लगा है कि हमारे मुपरिधित ज्योति पुंज के धर्मिस्थ हमारी इन्द्रियग्राह्य धारमोक रमियों के धारमबाध थी ऐसी बहुत-सी धर्मि हैं जिसकी प्रकाश धर्मि धर्मिस्थ धारमोक रमि में नहीं धर्मि एवं धारमय



प्रब है। मन्त्रों की भीर भी उगमति होने पर हमें पता चलेगा कि हमारे परिचित जगत् से हमारे इन्द्रियग्राह्य जगत् से इन्द्रियातीत जगत् कहीं अधिक व्यापक एवं चमत्कारपूर्ण है। हम मनुष्यों का स्थान उस अज्ञातसोक एवं ज्ञात भोक के समीप स्वयं पर स्थित है। मन्त्रों की सहायता के बिना भी मनुष्य ऐसी शक्ति धर्जन कर सकता है जिसकी सहायता से इन्द्रियातीत जगत् का उसे परिचय मिल सकता है।

जीवविज्ञान एवं मनोविज्ञान की धातुनिक उगमति से वैज्ञानिकों को यह प्रतीत होने लगा है कि भौतिक मतवाद एक अश्विस्वास्त मात्र है। इसका वैज्ञानिक आधार कुछ भी नहीं है। प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक जे० एस० हासडेन साहब ने तो यहाँ तक कह दिया है कि यदि व्यक्तिगत रूप से उन वैज्ञानिकों के प्रति लोगों को असीम भ्रष्टा नहीं होती तो भौतिकवाद के मानने के कारण उन्हें वे बुद्धि की दृष्टि से देखते। [ देखिये Materialism by J S Haldane C H., M. D., F R. S Hon. LL. D ( Birmingham and Edinburgh ) Hon. D Sc (Cambridge Leeds, and Witwatersrand) Fellow of New College Oxford and Honorary Professor Birmingham University—P 39] नोबेल पुरस्कार प्राप्त किये हुए डाक्टर कैरेस अमेरिका के प्रसिद्ध रॉकफेल्लर इंस्टिट्यूट में अनुसन्धानकारी जगत्प्रसिद्ध जीव विज्ञानवेत्ता हैं। इनकी भी राय में भौतिकवाद एक अश्विस्वस्त विश्वासमात्र है। विज्ञान की दृष्टि से इसकी पुष्टि नहीं हो सकती। बल्कि विज्ञान की धातुनिक वृत्ति भौतिकवाद के विरोध में आ रही है। ( देखिए कैरेस के लिखित Men the Unknown ) इस प्रकार से धातुनिक जगत् के विख्यात एवं लब्धप्रतिष्ठ वैज्ञानिकों के जहन उद्भूत करके यह विद्वन्मया जा सकता है कि भौतिकवाद एक मत मात्र है। भौतिकवाद का सिद्धांत वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित नहीं है। बर्ट्रेंड रसेल साहब ने भी यह कहा है कि रूस के राजनीतिज्ञों एवं अमेरिका के कुछ बौद्धों से वैज्ञानिकों को छोड़कर धातुनिक संसार में अधिकांश दार्शनिक एवं वैज्ञानिकों की भौतिकवाद में कोई भ्रष्टा नहीं है। रूस एवं अमेरिका में ईसाई पुरोहितों के अवांछनीय किन्तु प्रबल प्रभाव के कारण उन देशों में उसकी प्रतिक्रिया के रूप में ऐसे भौतिकवाद का उद्भव हुआ है। ( देखिए History of Materialism by Lang, English translation—Introduction by Bertrand Russell—Written in 1925 ) अपने इस पक्ष को प्रमाणादि देकर उचित प्रकार से सिद्ध

करने के लिए एक सम्पूर्ण ग्रन्थ लिखने की आवश्यकता है। परन्तु इस स्थान पर हमने गहरे रूप से इस विषय में विचार करने के लिए मैं प्रवृत्त होना नहीं चाहता। अन्त में एक बात का धीरे-उम्पेस करके अपने पक्षस्थ का स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। एक तरफ प्राधुनिक पदार्थ विज्ञान हम मशीनें पर या पहुँचा है कि बिजली में बिजली भी पदार्थ है अन्त में ये सभी वैज्ञानिक सचि के ही विभिन्न रूप हैं। दूसरी तरफ यह प्रमाणित हो रहा है कि भौतिकवादि के परिणाम से परिणाम से वैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न होता है। अभी इसका प्रमाणित होना बाकी रह गया कि वैज्ञानिक प्रभाव के कारण भौतिक में विचारधारा की उत्पत्ति हो। हम याद रखना चाहिए कि कुछ दिन पहले यह प्रमाण था कि भौतिक सचि में एक प्रवृत्ति से दूसरी प्रवृत्ति में अन्तर्गत की जा सकती है। परन्तु आज प्रत्यक्ष यह बात प्रमाणित हो गई है। इस प्रकार से हम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जिस दिन यह प्रमाणित हो जायगा कि संसार के समस्त पदार्थ एवं जीवजगत् के समस्त जीवों की प्रारम्भिक तथा अन्तिम एवं बुद्धि ये सब के सब एक ही वस्तु के विभिन्न रूप या प्रकाश हैं। कलकत्ता हाइकोर्ट के प्रसिद्ध न्याय सर जान बुडरफ साहब ने यह कहने का साहस किया था कि प्राधुनिक विज्ञान की प्रगति बेदान्त के सिद्धान्त की तरफ अनिवार्य रूप से झुक रही है। न कि बेदान्त को अपने सिद्धान्त से हटकर विज्ञान की तरफ झुकना पड़ रहा है।

इस वस्तु के अन्तर्गत समाजवाद के धीरे भी बहुत-से सिद्धान्त हैं जिनसे मैं सहमत नहीं हूँ तथा मानसवादियों का यह कहना है कि इतिहास की अभिव्यक्ति प्राचीन कारणों से ही हुआ करती है तथा संसार में अभिव्यक्ति हरेक प्रकार की सम्मति के मूल में प्राचीन कारण ही प्रधान रूप में सक्रिय होते हैं। इस बात की भी मैं स्वीकार नहीं कर पाया।

मार्क्स का यह भी कहना था कि पूँजीवादी व्यवस्था में उद्योग वर्गों की उत्पत्ति के साथ-साथ संसार के मजदूरों में अशांति भी बढ़ेगी एवं उनकी लोचनी भी प्रगल्भित होगी और कमल इन दो शक्तियों के संघर्ष के परिणाम में पूँजीपतियों की हार एवं मजदूरों की विजय अवश्यम्भासी है। लेकिन वास्तविक अन्त में हम देखते हैं कि संसार में जर्मनी फ्रांस इंग्लैंड, इटली, अमेरिका जापान इत्यादि देशों में पूँजीपतियों की उत्पत्ति अरुण सीमा को प्राप्त किए हैं। फिर भी इन मजदूरों की शक्ति इन देशों में नहीं हुई है। प्रसुत कम्युनिस्ट चीन

एवं कम जैसे पिछड़ हुए देशों में अपना राज्य कायम करने में बहुत कुछ इतकाय हुए हैं। इसके मूल में आर्थिक कारण उठते नहीं हैं जितने अन्य और अनेक प्रकार के कारण हैं।

इन सब बातों की वैज्ञानिक प्रणाली से व्याख्यान करना आवश्यक है, लेकिन इस मुद्रिका में यह सम्भव नहीं है। इन सब बातों की सम्बन्ध व्याख्यान कहीं सम्भव करने की मेरी प्रबल इच्छा है।

धार्मिक विज्ञान एक ऐतिहासिक ज्ञान की प्रणाली की सहायता से भारतीय विप्लव व्याख्यान वा एक प्रामाणिक इतिहास बतलाने की प्रबल आकांक्षा है, इसलिए प्रस्तुत पुस्तक 'बम्बी जीवन' में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया। इस पुस्तक की हिन्दी भी मेरी नहीं है। इस बार वेस से छूटने के बाद से हिन्दी में लिखना आरम्भ किया है। इच्छा है कि अगले संस्करण में धनु बाद की सहायता न लेकर मैं हिन्दी में ही मूल ग्रन्थ का लिखूँ। इस ग्रन्थ की मुद्रियों के लिए पाठकवर्ग से समा का मिथारी है।

सप्तमक,  
13 सितम्बर 1938

—राधाप्रसाद सान्दान

## निवेदन

घाज ब्रूतकास की बातें लिखने बैठा हूँ। वह समय घाज बहुत ही महिमामय जान पड़ता है। जान पड़ता है कि जिस प्रकार समय धनन्त है उसी प्रकार उसकी महिमा भी अमण्ड-अपार है। ऐसा लगता है कि समय मानो उसे भी सुन्दर बना देता है जो कि सुन्दर नहीं है वह घसनति में भी संयति भिन्ना देता है उसे बेडगी नहीं रहने देता। समय की महिमा विविध है उसकी कृपा से अग्रिय की स्मृति भी प्रिय हो जाती है।

वास्तव में घसोत—मुझरे दुए—की स्मृति बड़ी मीठी होती है वह बीणा के तार में छोई हुई म्कार की तरह तार पर घावात करते ही मधुर भाव से म्कृत हो छल्टी है।

कई बार पिछली बातों की याद दुःख भी कम नहीं देती। किन्तु उस दुःख बदे के बीच भी मानो सुख रहता है। उस समय जिस का मर्यस्वस तक खुल जाता है मानो उस घपसर पर घपने आपके साथ जिसमूस निर्जन में बहुत ही गुप्त रूप से बातचीत होती है।

भासा धीर निरुधा सुख धीर दुःख, मानो बिम्बवीसर हमारे साथ खिस नाइ करते हैं किन्तु बहुत दिनों तक हममें से कोई भी नहीं टिकता। सभी वो दिन दर्शन बेनर—हँसाकर या रसाकर—मसे आते हैं सिफ सनकी याद रह जाती है।

स्मृति-पट पर बहुतैरी बड़ी चीजें छोटी हो जाती हैं धीर छोटी चीजें बड़ा रूप धारण कर लेती हैं—कुछ चीजें ऐसी भी हैं जो मन में ऐसी जा छिपती हैं कि फिर सनकी हुई निकामना कठिन हो जाता है।

बनारस पत्रमग्न में मुझ सजा हुई थी। सन् 1915 की 20वीं जून को मैं गिरफ्तार हुआ और 14 फरवरी सन् 1916 को धाजग्य कासेपानी का सपा सारी

सम्पत्ति जमा होने का दृष्ट मिमा । इसके समस्त कुछ दिन तक वो काशी से कारागार में ही रहा, फिर धनस्त महीने में धन्यमन द्वीप को रवाना कर दिया गया । धनस्त की 18वीं तारीख को मैं उस द्वीप के बेसकापे में बाधित किया गया । फिर इन्धामन की इच्छा के अनुसार फरवरी सन् 1920 में सम्राट् के बोधवापन के कारण रिहा किया गया ।

इस सन् 18 से लेकर सन् 20 के आरम्भ तक मेरा प्रथम बार का बन्दी जीवन रहा । इस 'बन्दी जीवन' का व्यवसाय ग्रहण करके मैं मतलाना चाहता हूँ कि आखिर मैं कैसा क्यों किया गया था । बहु पुस्तक धान में इसनिष् निष् रहा हूँ जिससे कि भारत के अभिप्रेत इतिहास के कुछ अध्याय ठीक-ठीक लिखे जा सकें ।

भारत का धाम एक महान् युय-सन्धि के बीच होकर बँकटा जा रहा है । भारत के भीतर और बाहर क्षति की भयंकर घाय भयवान् की मुक्त प्रेरणा से अपने निर्विष्ट मार्ग पर—और बहु भी मानो अपने लिए अनुकूल बन्दर बना कर—फँसती जा रही है ऐसे ही एक बन्दर में उसी विधाता की यहाँ से मैं भी पड़ गया था ।

मेरी ही तरह और भी कुछ मुवा पुत्र अपने भयंकर की अभ्यस्त बेचना से घबरा होकर, जान बूझकर या बे-समझे-बुझे विधाता का अधीष्ट सिद्ध करने के लिए ही बसबद्ध हो गए थे । मुझ से मैं चाहता था कि उस क्षण के भीतरी मर्म का जो कि काम-काज के बाहरी आवरण में छिप गया था एक संक्षिप्त इतिहास लिखूँ । धान उसी मर्म व्यापी इच्छा को परिताप करने की चेष्टा कर रहा हूँ ।

हम लोग बक्सर बटना को ही महत्त्व दे देते हैं—उसी को बड़े धाकार में देखते हैं किन्तु यह नहीं समझते कि बटना की शोर्ट में—फिर बहु बटना फिटनी ही छुट क्यों न हो—महाधन की बीमा रहती है और वही धन में बटना की अनेका कहीं अधिक मुख्यधाम होती है । सफलता का मोह हम लोगों को प्रति पर पर घेरता है । विचार के द्वारा उस मोह का क्षेपण हो जाने पर भी प्रायः उस मोह के चेटन को काटकर धन्य कर देने में समर्थ नहीं होते । किन्तु बड़ी-बड़ी बटनाओं के मुकाबले में जीवन-यापन की मामूली बातें भी कुछ कम महत्त्व की नहीं होती । बटनाओं का आरम्भ विचार-व्यगत् में ही हुआ करता है ।

इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत चरित्र की आलोचना होने पर भी वह व्यक्तिगत रूप में न की जाएगी। व्यक्ति से परिचय हुए बिना समष्टि से परिचय नहीं हो सकता। इसलिये तो व्यक्तिगत चरित्र की आलोचना आवश्यक हो जाती है।

यह परिचय हमें मेरे अपने और अपने दम के बहुतेरे द्विप्र प्रकट हो आएँगे। तो इसलिये क्या मैं उन दुबसताओं और सकीनताओं का छिपाने की व्यर्थ चेष्टा करूँ जिन्होंने कि हम भीतर हो भीतर पनु बना दिया है? ऐसी चेष्टा व्यर्थ तो हमी ही क्योंकि एक-न-एक दिन सत्य प्रकट होमा और उकर होमा और साम ही छिपाने का उद्योग करने से न सिर्फ सत्य का अपसाप ही होमा अपितु सबसे हमारा पगुल्य —निकम्मापन—भी और अधिक बढ़ जाएगा। इतिहास के पृष्ठों में सत्यम् ब्रूयाद् प्रियम् ब्रूयाद् वा ब्रूयाद् सत्यमप्रियम् सार्थक नहीं।



## क्रान्तिकारी अचीन्द्र सान्याल का आत्म-चरित्र

भारत के मुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री अचीन्द्रनाथ सान्याल के बन्दी जीवन का प्रथम भाग प्रगस्त सन् 19 2 में प्रकाशित हुआ था द्वितीय भाग बंगबादी में छपा था जिसका अनुवाद श्री जयचन्द्र बिद्यालंकार ने किया था और तृतीय भाग के कुछ तैल 'प्रदान' में छपे थे पर वे पुस्तकाकार में प्रकाशित नहीं हो सके। इन तीनों भागों को एक साथ पढ़ने का सोमार्थ हमें अभी प्राप्त हुआ है और इसके लिए हम श्री अचीन्द्रनाथ सान्याल के अनुबन्धी भूपेन्द्रनाथ सान्याल का आशी और कृतज्ञ हैं। हमें इस बात का पसतावा है कि हम ऐसे महत्त्वपूर्ण आत्म-चरित्र को अब से पहले क्यों नहीं पढ़ सके।

'बन्दी जीवन' का पहला हुए कई बातें आश्चर्यजनक प्रतीत होती हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि अन्ध-भेद्यता की विस्फेपण-शक्ति आश्चर्यजनक भी और दूसरी यह कि वह धार्मिक भक्ति के पुरुष थे और उनकी भावनाओं का मूल आधार भारतीय धर्म अन्य तथा भारतीय संस्कृति में था। जयचन्द्रजी ने सान्याल बाबू की पहली प्रत्यक्ष छवि की भी एक सच्चे ऐतिहासिक की बगमतिद्ध पूंजी होती है किन कोमलकर प्रशंसा की है। उनकी सफलता का कारण बतलाते हुए जयचन्द्रजी ने लिखा है—“वह केवल इतिहास लेखक ही नहीं, बल्कि जिस इतिहास को वह लिख रहे हैं उसके बनानेवालों में से भी हैं, उस इतिहास के पात्रों के वह जीवन मरण के खेल में साथी थे। यदि वह उनके भावों को पढ़नामते नहीं, तो उनके नेता ही कैसे बनते? उन्हें विष्णु-मेता में भी तो ठीक वे ही गुण चाहिए, जो एक सच्चे इतिहास-लेखक के लिए आवश्यक हैं।”

निस्संदेह यह सत्य कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। स्वयं लेखक ने इसके प्रथम अंग के विषय में लिखा था—“इस अंग में यही लिखने का प्रयत्न किया गया है



कि यूरोप के महाकुट के समय भारत में आगि का कौसी धीर क्या तैयारी की गई थी। रीमट-रिपोर्ट में मैं यद्यपि यह पढ़ूँ बिलकुल ही खिचा दिमा गया है तथापि 'आइम्स हिस्ट्री ऑफ़ बी गेट वार' नामक पुस्तक में इसका थोड़ा-सा उल्लेख था गया है। माना कि आगि की इस तैयारी का उपयोग नहीं किया जा सका फिर भी सफलता या विफलता के दृष्टिकोण से इसका फैसला करना ठीक नहीं। पिनामह भीष्म का महत्त्व बरिब बवा कुरुक्षेत्र के महा समार में उनकी हार-जीत पर व्यवस्थित है ?"

सायबान साहब ने पुस्तक के प्रथम भाग को जीनामय भवनाम् के चरण कमलों में अर्पित किया था और द्वितीय भाग का समर्पण इस प्रकार था—“जिन को जीवन में माना रूप से दुःख-कष्ट ही होता रहा, जलकट इन्ध्रा रहने पर भी साधारण रीति से जिन को दुःख की सुपी नहीं बना सका दिन और रात कुछ और दुःख में सम्मिलित और बिपद में हर बड़ी जिन की बाह करके एकदम मानस और दुःख से किङ्कलन-सा हो उठता हूँ जो मेरे दुःखों में छाड़ी होकर केवल दुःख ही दुःख पाती रही अपनी उन्ही परम स्नेहमयी बगनी के कीचरनों में यह अपना कुछ प्रत्य भड़ा और भक्ति-सहित समर्पित करता हूँ।

## हुय की कोमलता

पुस्तक के इन तीन भागों को पढ़कर यह विचारा हो जाता है कि सचीन्द्र बाबू बड़ी उच्च कोटि के आत्मिकारी थे जिन्होंने हितार्थक प्रयत्नों में संलग्न रहने पर भी अपने हुय की कोमलता को लुप्त नहीं होने दिया। उनके इन प्रबंधों में अनेक महापुरुषों और छोटे-से-छोट कार्मिकताओं के जीवन की व्यक्तिगत देखने को मिलती है। सर्व्वी मासवीयजी जी० धार बास बवाहरलाब बैरु कुरुक्षेत्र नाम बनर्जी और रासबिहारी बोस से लगाकर साधारण से साधारण कार्मिकता तक को उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक माना किया है। जिन दिनों भी अपनी ने अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ ही किया था उन दिनों सायबान बाबू ने उन्हें अपने बस में लाने की कोशिश की थी। यद्यपि उसमें वह असफल हुए फिर भी उन्होंने अपनी कोमल प्रवृत्ति ही की है। उन्होंने लिखा है—“एक में तो कोई संदेह नहीं कि उनकी लेखनी में अत्यन्त दक्षिण है लेकिन उनकी यदि मैं परिवर्तन हो जाने के कारण उनका सृष्ट साहित्य समार को साधारण कस्यारप्रद सिद्ध नहीं

हुआ यह धीर बात है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह प्रतिभाशाली सेलक है। उनकी सहायता में हमारे दल को एक ऐसा महत्वपूर्ण लाभ हुआ कि जिसके लिए हम सब सदा उनके कृतज्ञ रहेंगे।”

श्री साम्बाल बाबू ने शान्तिकारी सिधों की उदारता की दिल भासकर बात की है। उन्होंने लिखा है—“दण-पसे की कर्षा निकलते ही उन्होंने गुरुत्त सोने की गोम गोम बड़ी-बड़ी कर्षातिर्षा भरे घाम रख की जो अमेरिका में प्रचलित सोने के सिधके से। हियाब सगाने पर से कई हजार रुपए के हुए। प्रत्येक दल ने ऐसा कर्षाब किया था। यदर के कार्य में इन लोभों को जिस प्रकार जिस लोभकर अपनी गाड़ी कमाई का घन दान करते देखा है वैसे दूर बंगाल में देखने को नहीं मिला। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा उत्साह और आन्तरिकता इन्हीं सिधों में थी जो कि अमेरिका की यात्रा कर आए थे। इसके सिवा पंजाब के निवासियों ने प्रायः इन लोभों के साथ सहानुभूति प्रकट नहीं की। हाँ पंजाब और सिन्धु र्क्षकों के साथ इन लोभों का विशेष हल-मेल था। इसके सिवा सिन्धु आदि में परस्पर एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और मवेदना-जनित एकता भावन की अगम्य आदिमों की अपेक्षा बहुत अधिक है।

## उदारता और आत्म वसिष्ठान

‘अन्वी जीवन को पकड़े हुए ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम कोई फिल्म देख रहे हों। सिधों की उदारता तथा आत्म-वसिष्ठान की सक्रिय प्रीति बंगालियों की संगठन शक्ति का संघाम सोने और मुहाने का मेल था। सेलक ने लिखा है—“उत्तर भारत की प्रायः सभी छात्रागणियों में हमारे दल के आरम्भी घाने जाने लगे। उत्तर-पश्चिम संघन के बल से लेकर दानापुर तक कोई भी छात्राणी घादुती न रही कई। प्रायः सभी रैजिमेंटों ने कर्षन दिया था कि पहले वे सोम कुस भी न करेंगे हाँ यदर शुरू हो जाने पर न घनदय ही विष्णुवर्षाओं से मिल जाएँगे। सिधों माहोर और फीरोजपुर की रैजिमेंटों ने सबसे पहले काम शुरू कर देना स्वीकार कर लिया था। आरम्भ में सरकार यह नहीं समझ सकी कि पक्ष्यकारी इतनी महीरी नीब देकर काम कर रहे हैं। यदि ऐसा न होता तो इतना अधिक काम हो ही न सकता। पंजाब के पुलिस विभाग के एक मुखसमान सिधों

ने अपने एक मुकदिर को इस दण में सामिल कर दिया था। अन्त में उस इपान सिंह ने ही कृपा करके सारी बातें प्रकट कर दीं।

‘बन्धी जीवन’ में यही— करतारसिंह के स्तुतिमय चरित्र की जो प्रशंसी रिचार्ड यहीं है वह बड़ी दिम्प है। उन्होंने लिखा है—“मैंने तो करतारसिंह में जैसा धाम बिरबास देखा जैसा धाम-बिरबास न रहने पर किसी के द्वारा कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। बहुतों में अहंकार का भाव रहने पर भी ऐसे धाम-बिरबास का भाव कम देखा जाता है। अहंकार और धाम-बिरबास अलग-अलग दो चीजें हैं अहंकार दूसरे पर चोट करता है किन्तु जो अहंकार दूसरे पर नोक मोंक किए बिना ही अपने प्राणों में दक्षि के अनुभव को बाधन करता है वही धाम बिरबास है।”

साध्यात बाबू ने पञ्जाबी लोगों को समझाया था— हम लोगों से समाह लिए बिना प्रचानक कुछ कर न बैठना। सब सावधानी से काम करना होना जिसन कि यह दक्षि धर्म न हो जाय। चिर्ष हू-हा करके किन्तु कामों में दक्षि धीन न कर दी जाय।”

यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रिय समय साध्यात बाबू यह परामर्श दे रहे थे उनकी उम्र कुल जमा बाईस वर्ष की थी। इस पुस्तक में कहीं-कहीं हास्य का भी प्रच्छा पुट था गया है। एक स्टेयन के जलपान-गृह में उन्होंने रोटी घोर तर काये माँयो थी पर वहाँ का माहमी रोटी घोर मांस से घाया। उस समय तब साध्यात बाबू को यह पता न था कि पञ्जाबी लोग मोरन को तरकारी बहते हैं। फासी की पुस्तिक को जहना देने के अशहरण भी बड़ मजदार बन पड़ हैं।

### ऊँचा बौद्धिक स्तर

यदि कोई यह खयाल करे कि ये जाम्बिकारी लोग गिरे हुएारे से तो उसकी यह बड़ी भारी भूल होगी। वे लोग प्रायः धापस में बड़े ऊँचे धरातल से विचार विमर्श करते थे। निम्नलिखित वाक्य हमारे इस कथन के प्रमाण हैं—

“अन्त में हम लोगों के बहुत पुराने—किन्तु फिर भी ‘नित नये’ धाम समपण योग’ की वर्षा निकली। जहाँ एक बार इसकी वर्षा निकल पड़ती वहाँ फिर बरस समाप्त न होती थी। मार्ग मसे ही एक हो और सब लोग एक ही धारा से प्रोसाहिज हों तो भी वही एक बात एक ही भाव मिन्न मिन्न

व्यक्तियों में कितनी ही गंभीर पीठियों से विकसित होने का प्रयत्न करता है। इसलिये एक भाव के उपासक और उसी एक मार्ग के पथिक होने पर भी हम सौधों के बीच परस्पर घर्षण स्थानों में मतभेद रहता था। मेल तो काफ़ी रहता था किन्तु बेमेल हो गया कम या ? जिस धारण से प्रेरित होकर हम भोग करने का समष्टिगत या समष्टिगत जीवन को नियंत्रित कर रहे थे उस भाव श्रेष्ठ की व्यक्तित्व की महिमा को स्थिर रखा था। हमारे धारण की छोटी-मोटी बातों के अर्थों में कितनी ही रातों बीत गई हैं। फिर भी उसमें कुछ भी नहीं है। एक व्यक्ति दूसरे को कुछ-कुछ समझकर जब घर में बाहर निकल जाता तब उपा की लालिमा घबकिते फूल की तरह पूर्ण स्थिति में खिल पड़ती थी। रास्ता चलते-चलते जब बीच से धलसाई हुई धातियों पर चलकर गिरने लगती तब मानुस होता कि कितनी सफ़ा हो गई है ! रात बीतने से पहले ही इन कैशों से हट जाना पड़ता था और सबेरा होने पर अनेक काम करते हुए भी रात की आलोचना का प्रसंग दुबारा बात-चीत करने के लिए मानो प्रतिक्षण अवसर ढूँढता रहता था और कभी-कभी दिन को काम-काज करते समय न जाने कब उस 'आत्म-समर्पण योग' की भावना आकर हम पर प्रभाव जमा लेती थी।

### सम्बन्धियों के साथ घुरे भी

इस घन्ट में साय्याल बाबू ने मि० पिमले निजामविह, पुरमुखविह तथा अन्य शान्तिकारियों के जीवन पर प्रकाश डाला है। इसमें स्पष्ट है कि कितने ही असाधारण व्यक्तित्व शान्तिकारियों के दम में घामिल हो गए। लेखक ने लिखा है कि सभी बड़े-बड़े धार्मिकों में सम्बन्धित पुरुषों के साथ-साथ नरपिशाच भी कुछ पड़ते हैं। लेखक के शब्दों में 'यह धार्मिकों का बीज नहीं है यह तो हमारे मनुष्य चरित्र का ऐव है। धायब मैगिन ने भी कहा था कि प्रत्येक सम्बन्धित के साथ कम से कम 30 बरमाच और 60 मुर्ख उनके दम में मिल गए थे और मैंने अटोम शरणार्थी चट्टोपाध्याय से सुना है कि देशबन्धुवास में भी कदाचित् कहा था कि बकालत करते-करते हम बुद्धे हो गए और इस बीच में हमको बड़े-बड़े बोखेबाजों से भी साबिका पड़ा किन्तु असहयोग धार्मिकों में हमने कितने बोखेबाज और दशाबाज आदमी देखे हैं जैसे जिम्बगीयर में गड़ी

देखे !

अद्यपि साधारण पंजाबियों के नाम बसत की उन्होंने कठोर धामोचना की है फिर भी उनके गुणों का भी विराट् वर्णन किया है। एक बमह उन्होंने लिखा है—“पंजाब में पुरुषों की धोखा स्त्रियाँ ही धार्मिक ब्रह्मण्य हैं किन्तु इसी पंजाब में उस दिन सतीत्व की ऐसी गीरबोझबस स्त्रिय फिरन प्रकट हुई थी जिसकी तुलना इस कलिकाल में मिलनी कठिन है। बी० ए० बी० कालेज साहोर के भूतपूर्व अध्यापक माई परमानन्द के बच्चे माई बालमुकुन्द बिस्नी पदयन्त्र के मुकदमे में गिरफ्तार किये गए। उनके माई बालमुकुन्द के पूर्व पुरुष मोतीदास को सिद्धों के धम्मुत्तान-समय में धारे से चीरकर मार डाला गया था। गिरफ्तार होने से एक वर्ष पहले माई बालमुकुन्द का विवाह हुआ था। उनकी स्त्री धामती स्वामी गिरफ्तार हुए, उसी दिन से वह व्याकुल हो गई और धनक प्रकार से देह को मुचाने लगी। फिर जब माई बालमुकुन्द को काँधी का कुचम हो गया वह उसे मिलने गई। किन्तु उनके समाधिघाटों में भी भरकर स्वामी के ब्रह्म न करने दिये। घर लौटकर वह एक प्रकार से धधमरी बछा में समथ बिठाने लगी। एक दिन वह अपने कमरे में भी कि बाहर से रोने का कोलाहल सुन पड़ा। कमरे से बाहर जाने पर धीमती रामराजी को प्रसन्न बात यामूम हो गई। वह जब भीर न सहन कर सकी। स्वामी का मृत्यु समाचार पाकर सती-साध्वी साधी गीरोम बछा में स्वामी का ध्यान लगाकर मानो स्वामी से जा मिली। मिट्टी से मिल जाने के लिए ही मानो उनकी वेह इस लोक में पड़ी रह गई ! ऐसे पवित्रेय भीर धामोत्सर्ग की तुलना है कहीं ?

‘बन्दी बीबन’ के प्रथम भाग में भी रासबिहारी बोस के विषय में जो कुछ लिखा गया है उसे पढ़कर उनके धर्म्य उत्साह धर्मभूत साहस तथा धनोन्नी धूम्र-धूम्र की प्रसंसा करनी पड़ती है। निस्संदेह वह उष्णकोटि के कान्तिकारी थे।

द्वितीय भाग में लेखक गहोदन ने रासबिहारी बोस की दो चिट्ठियाँ उद्धृत की हैं। प्रथम पत्र में जो 12 अप्रैल 1922 का है, उन्होंने लिखा था— ‘धर्मय ही धर्म धूम्र-धूम्र करने की कोई धामक्यकता नहीं इस विषय में तुम्हारे साथ मेरी पूरी सहमति है। धर्म धर्म हमें धर्मराष्ट्रीय परिस्थितियों के विषय में कुछ भी धाम न था हमने धर्म धर्म भारत की धोर ही ध्यान रखा था किन्तु धर्म में

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कुछ-कुछ समझने लगा है। इससे मेरे पहले विचारों में बहुत परिवर्तन हो गया है। एक बात याद रखो—हमें अंत में सारे संसार का प्रश्न हल करना होगा हमारे भाग्य में यही लिखा है। संसार में नवीन युग की भाव और शक्ति की स्थापना का दायित्व भारत के ही शिर पर है। भारत की स्वाधीनता इसी उद्देश्य का साधन है यह स्वयं उद्देश्य नहीं है।”

श्री बोस महोदय ने द्वितीय पत्र में फिर लिखा था—‘मरी दृष्टि पहले से बहुत विस्तृत हो गई है। पूरा स्वाधीनता भारत को चाहिए ही क्योंकि उसकी स्वाधीनता पर सारे संसार का पुनर्र्गठन निर्भर है। यह स्वयं एक साम्य नहीं प्रत्युत एक उद्देश्य का साधन है और वह उद्देश्य है साम्राज्यवाद और धार्मिक धर्मपरम्य का विनाश और सब लोगों के रहने के लिए एक नवीन संसार की सृष्टि। मैं आपाजत बहुत प्रेम करता हूँ और अब उस पर थोड़ा भी रूखन लगा हूँ। मुझे यह कुछ बिद्वान हो गया है कि उपयुक्त समय आने पर आशा एशिया की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करेगा। जब मैं पहले पहल यहाँ आया आपाजतों को भारत की समस्या का कुछ भी ज्ञान न था। किन्तु अब मुबारक हमारी बेग्या और त्याग के कारण प्रत्येक आपाजती भारत के घटना प्रवाह को उत्प्रेरकता से देख रहा है। मन्त्रिमंडल के सदस्यों ने लेकर बड़ीसों पार्लामेंट के सदस्यों पत्र-व्यवहारों और विचारविमों तक मेरे बहुत-से आपाजती मित्र हैं। आशानी भाषा में लोपी और भारतीय साम्योत्तम के विषय में बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और पत्र-व्यवहारों में भारत पर लगातार लेख निकल रहे हैं। आज यहाँ के बहुत-से नवयुवक एशिया की स्वाधीनता के कट्टर पक्षपाती हो गए हैं।

‘बन्दी जीवन’ के द्वितीय भाग में साव्यास बाबू ने अनेक स्थलों पर बड़ी विचारपूर्ण बातें मिली हैं। एक स्थल पर उन्होंने विप्लवियों और उनके समा सोचकों में जो फर्क बतलाया है उसे पढ़ लीजिए—“विप्लवियों और समासोचकों में भेद यही है कि विप्लवी लोगों की अपने धारणा पर घट्ट पड़ा है इसीलिए उन्होंने अद्भुत मिठा के साथ घपन धारण की और आगे बात पत्र पर बन्दे हुए जीवन बिताया है और इन समासोचक लोगों ने धारामनुर्सी पर बैठकर समा सोचना करने को ही जीवन का पेशा बना रखा है और बहुतों के लिए तो यह समासोचना करना ही जीविका प्रार्जन करण का मुख्य व्यवसाय हो गया है। गेड़ी कमाल के लिए अनेक बातों का हिमायत करण करना होता है किन्तु इस प्रकार

हिताव करके चलने से हमेशा सत्य की मार्गा को घट्ट रक्खना शायद सम्भव नहीं होता। इस सबके बसावा बिप्लवियों में घीर इन सारे समालोचकों में एक घीर भी बड़ा भेद है। बिप्लवियों के लक्ष्यहीन को बीच धड़ा है समालोचकों के लिए वह केवल सम्मति है। यह 'सम्मति' प्रायः सफलता का मोह पार नहीं कर सकती इसीलिए फलाफल पर निर्भर होकर ही बहुधा 'सम्मति' बनती है। किन्तु जो मोह इतिहास-स्रष्टा के धावन पर बैठते हैं वे इस सम्मति की परवाह नहीं करते वे निष्ठावान् घीर धड़ा-सम्पन्न व्यक्ति होते हैं। बिप्लवता उन्हें धड़ाभ्रष्ट नहीं कर पाती। इसी कारण वे इतिहास में विरस्मरणीय हो जाते हैं इसी से धड़ा-सम्पन्न व्यक्ति ही कल्प में कुछ स्थायी काम कर जाने में समर्थ होते हैं।

'बन्नी जीवन' के द्वितीय भाग में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उल्लेख प्रोफेसर है जिसमें उन्होंने इस प्रश्न पर अपने विचार प्रकट किए हैं कि बिप्लव का प्रयास व्यर्थ क्यों हुआ ? वह इस परिणाम पर पहुँचे कि किसी प्रतिमाधारी नेता का प्रभाव ही इस व्यर्थता का सबसे बड़ा कारण था। श्री धरनिन्द भोप घीर सासा हरदयाल के विषय में लिखते हुए उन्होंने कहा है— 'यदि वे भोप भन्त तक इस दल में रहते तो बिप्लव दल का यह दैन्य बहुत कुछ दूर हो जाता किन्तु वे भी भन्त में इस दल को खोके गए। यदि इस प्रकार के विस्तृतधीन प्रतिमावान् पुरखों की बात धसप भी रखें तो भी इस बिप्लव दल में किसी बड़े साहित्यिक किसी बड़े समाचारपत्रों के लेखक बनना किसी बड़े कवि ने भी धोप नहीं दिया। एक छद्म से कह सकते हैं कि इस बिप्लव दल में इष्टसैक्यसंस्थ ( बुद्धि गरी ) नहीं थे इस प्रकार के लोगों का सास घीर पर प्रभाव था इसी कारण वह बिप्लव दल प्रकार-कार्य की घीर प्राय उदासीन ही रहा। जो कुछ उत्तेजनपूर्ण प्रतिहिता के सञ्ज्ञास से भरी होती थीं। इन सब लेखों में विचार धीनता का कोई भी परिचय नहीं पाया जाता था घीर न जीवन का कोई नया धावण ही इनसे प्रकट होता था। निस्सन्देह भारतीय साहित्य में इन लेखों का कोई स्थान नहीं रहेगा। भारतीय बिप्लवी किसी स्थायी साहित्य की सृष्टि नहीं कर सके। इस प्रकार बिप्लव दल का प्रयास व्यर्थ होगा ही था।'

बनबन्नी विद्यासकार ने साम्यास बाहू की इस विचारधारा का विरोध अपनी भूमिका में किया है। जब भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के चौदह वर्ष

बाद इस प्रश्न पर सम्मीरतापूर्वक सिद्धा जा सकता है, पर सबसे बड़ दुर्भाग्य की बात यह है कि स्वयं विप्लववादियों ने उस दूरदर्शिता का परिचय नहीं दिया जिसका परिचय साम्यात बाबू ने अपना विम्लुत आत्मचरित लिखकर दिया था। यदि उन सबने अपनी अनुभूतियों को लिखा होता तो उनसे उनका उचित मूल्यांकन करने में किसी इतिहास-लेखक को बड़ी मदद मिलती। पर छेद है कि अभी यह काय अनूरा पड़ा हुआ है। इनका मुख्य कारण यावत् यह हो सकता है कि विप्लववादी हिम्न निम्न व्यवस्था में प्रलय प्रलय पड़ रहे और उनका कोई बनी-बोरी न रहा। यावत् उनमें कोई ऐसा साधन-सम्पन्न भी नहीं जो एक बार धूम धूमकर अपने साथी-श्रमियों से मिल लेता और उनकी अनुभूतियों को लिखित कर लेता। क्रांतिकारियों की दिलीबी वाली परिपक्व से इस विषय की चर्चा की हुई थी पर मामला धीरे बढ़ा नहीं।

साम्यात बाबू ने बड़ी उबरदस्त मजदूरी की। एक और कमी यह प० मोदीनाथ जी से मिलते तो कमी थी० भार० दास से और कमी बैरिस्टर बी० सी० बटर्फी से और दूसरी ओर कभी लहू अथवात्रयी को या उषाजी को या नवीनजी को अपना किसी विद्यार्थी को ही अपने दल में मान की कोशिश करते। उनके प्रथम क तत्तीय भाग में हमने यह पढ़ा कि उनकी डाक भी केराबदेवजी मासवीय के नाम जाती थी—जो महावीर त्यागी से उनका परिचय था और त्यागीजी ने ही रामप्रसाद बिस्मिल से उनका परिचय कराया था। सान्यात बाबू को इस बात का खेद रहा कि वे नवीनजी को अपने पत्र का पवित्र नहीं बना सके। श्री बुबलिस से उनका परिचय सम्बन्ध तो था ही। हमें पता नहीं कि उन साथियों ने जिसका उल्लेख इस आत्मचरित में आया है श्री अश्वमेधनाथ साम्यात के स्वर्गवास पर वो धाँसू भी बहाए जा नहीं। यदि नहीं तो अब वे उनके संस्मरण तो लिख हो सकते हैं।

साम्यात बाबू ने प० अच्युतनाथ से भी बातचीत की थी उसे 'बन्दी जीवन' के तृतीय खण्ड में उद्धृत कर दिया है और वह विवरण निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण है।

**विप्लव का प्रयास असफल क्यों ?**

हमारा निजी कयाल है कि विप्लववाद असफल नहीं हुआ। हाँ यह बात दूसरी है कि हम सोम उष महान् कार्य को जो विप्लववादियों ने किया था, भूल गए। त्याग विचारणीयता और व्यक्तिगत के महत्त्व के प्रयास से विप्लववादियों



में कितने ही ऐसे थे जिनका मुकाबला हमारे अधिकांश शासनादक महानुभाव नहीं कर सकते बल्कि यों कहना चाहिए कि कुछ घंशों में विप्लववाधियों के ही बलिदान के परिणामस्वरूप ही वे शासनादक हैं और कुछ तो अपने ही सहीद आजाद प्राजाद प्रादि का साथी कहने की हिमाकृत भी कर बैठते हैं ! यदि भारत का सच्चा इतिहास कभी लिखा जाएगा तो उसमें विप्लववाधियों को मात्र के नेताओं से कहीं अधिक ऊँचा स्थान मिलेगा । वर्तमान नेताओं में से अधिकांश के नाम जब विस्मृति के गर्भ में कभी के बिहीन हो चुके होंगे तब चन्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह, सुशील साम्भल और यतीन्द्रनाथ के नाम इतिहास में स्वर्णसिरो में लिखे जाएंगे ।

इस आत्मचरित के कई घस बड़े भावपूर्ण हैं । अपनी माताजी के बारे में उन्होंने बड़े भावपूर्ण ढंग से लिखा है और अपने भाइयों के बारे में बड़े प्रेम के साथ । श्री साम्भल बाबू को इस बात का डेर था कि देश के अनेक नेता अन्तिकारियों को देश का धनु समझते थे और उनके हृदय में अन्तिकारियों के प्रति बड़ी कटुता भावी । वह लिखते हैं— कभी तो वे नेतायन अन्तिकारी आन्दोलन को इनफेंगलन अर्वात् दासकोषित कहकर निन्दा करते हैं और कभी अन्तिकारी आन्दोलन को फीसिस्ट कहकर अपनी जलन को सान्त करते हैं और कभी ऐसा भी कह देते हैं कि अन्तिकारी लोगों ने देश की प्रगति को पचास साल पीछे हटा दिया है ! यह भी आसप क्रिया जाता है कि अन्तिकारी लोग जबर बस्ती असहाय, निर्दोष व्यक्तियों को सहीद बना देते हैं ! इस मनोवृत्ति के पीछे शान्त मुक्ति नहीं है और न इसके पीछे कोई ऐतिहासिक प्रेरणा ही है और सर्वोपरि इसके पीछे देश-हित की कोई अस्यानमयी कामना भी नहीं है । वस्तुतः इस मनोवृत्ति के पीछे अहंकार का एक उग्र रूप विद्यमान है ।”

साम्भल बाबू एक विचारशील व्यक्ति थे । उन्होंने एक जगह लिखा है— “हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन अथवा हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ के कार्यक्रम को पूर्ण रूप से समझने के लिए बा बाबों को जान लेने की विशेष आवश्यकता है । जिसने भारतीय सम्मता की कर्म-कथा को अभी गाँठ नहीं समझा उसके लिए यह संभव नहीं कि कम्युनिज्म के शोषों को वह ठीक-ठीक समझ सक । इसलिए भारतीय सम्मता के प्रति जिसका प्रेम नहीं है मानव-सम्मता की उन्नति के लिए भारतीय सम्मता की विशेष उपयोगिता है इस बात पर जिसकी शक नहीं है

वह इस वायव्य का टोक-टीक नहीं समझ सकता ।”

पर राखीन्द्र बाबू बड़े ज़रार स्वभाव के व्यक्ति थे । वह अपने पुराने साथियों को अपनी-अपनी अन्तरात्मा के अनुकूल पक्ष ग्रहण करने के लिए प्रेरित करते थे । उनके कहने ही माथी माथसबाब से प्रभावित होकर हृदय से साम्यवादी बन चुके थे । श्री भगवानदास माहौर ने अपने एक पत्र में लिखा है—“मैं कुछ दिनों सतमज में रहा था और जब बड़ा घट्टा मस्ति से मैं श्री गणेशनाथ साय्यास के घरों में जाकर बैठता था । स्वभावतः देश की राजनीतिक गतिविधि पर ही बातचीत होती थी । इसके पूर्व घाठ-मो साम जैसे में रहकर मैं जो कुछ बोझा-बहुत अध्ययन कर पाया था उसके फलस्वरूप अल्प संघर्ष वास्तविकी साथियों की नीति मेरा श्री शिवाय भावार्थवाद पर जम गया था । यह सैद्धांतिक संघर्ष पर न तो श्री साय्यास की बातें ही मैं पूरी तौर पर ग्रहण कर पाता था और न इतना विद्या बुद्धिबल ही मुझ में था कि मैं अपनी बात ही उन्हें समझ सकता । वह अपनी बातें बड़े उत्साह से कहते थे बहुत जोरों से लेकिन दूसरे की भी बोलने की उत्साहित करते थे और उसकी बात बड़े सज से सुनते थे । जो हार्दिक प्रेम और वास्तव्य मुझे उनसे मिला वह मेरे लिए तो अमूल्य मिथियों में से है । उसी समय उन्होंने वह ही स्वाभाविक और हार्दिक स्नेह से मुझ कहा था—“तुम्हारा और मन्मथ का स्वान स्वभावतः साम्यवादी पार्टी में है तुम इस-उपर क्यों मटकते हो ?”

अध्ययन से भागवतव्य नीटने का जो अत्यन्त सान्यास बाबू ने लिखा है वह बड़ा हृदयस्पर्शी है । वह लिखते हैं—“मैं बसकर बर नहीं पाया बल्कि दीड़ता हुआ बर पहुँचा । क्या हृदयावेय की धाकर्वय सक्ति पत्नी की मध्याकपय सक्ति की तरह है कि अध्ययन से जब जैसे ठक से लेकर बर पहुँचने तक इस धाकर्वय का बेग बढ़ता ही गया और बर के पास धाकर धातिर मुझ दीड़ता ही पड़ा । मकान के नीचे के कमरे का जगता लाला हुआ था । मैं मुहूर्त-भर जगसे के सामने धाकर लड़ा हो गया । कई एक मुझ वहाँ सेटे हुए थे । इनमें मेरे दो भाई रवीन्द्र और जितेन्द्र भी थे । रवीन्द्र मुझे देखते ही हर्षोल्लास स्वर से बिस्सा उठे—“अरे लाला है । रवीन्द्र बिस्वरे से ऐसे उठ पड़े जानो नीचे से किसी से जोर का बक्का देकर उन्हें ऊपर फेंक दिया हो । घुमकर दरवाजे होते हुए धन्वर घाय एवं हरएक को छाती से जोर से लिपटा लिया । मरी यह गई दिव्यगी थी । मेरे नये जन्म का यह आरम्भ था ।

‘ जिस रोज मैं जर पहुँचा उसके पहले दिन ही मेरे कमिष्ठ भ्राता का तप मयम सस्कार हो चुका था । पर मैं किसी को पता न था कि मैं आज यहाँ पाकर पहुँचूँगा । मैंने सबसे पूछा “ माताजी कहाँ हैं ? ”

माताजी दूसरे मकान में कुछ काम से गई हुई थीं । मैं पूछताछ कर ही रहा था कि इतने में वह आ गई । मुझे देखते ही घामम्ब के भारे रो पड़ी और कहने लगी—“बेटा मेरे आ गए हो । मेरे बेटा आ गए हो । और मेरे सिर पर मेरे कमर पर और माँ के पर हाथ खेरने लगे हैं । फिर कहन लगी “बाने कितनी मुसीबत तुमने खेती ।”

साम्बास बाबू के घातमचरित के कितने ही सच बड़े हृदयवेधक हैं और कितने ही बड़े विचारोत्पन्नक । खेर है कि स्वामाया से हम उन्हें यहाँ नहीं ले सकते । उन्होंने अपना सबसब भारतीय स्वाधीनता के लिए धरिषि कर दिया यहाँ तक कि अपनी अत्यन्त प्रिय पुस्तकों को भी अखण्ड में अपने धारिषियों को भेंट कर आए और सिर्फ एक बाइबिल अपने साथ आए । साम्बास बाबू को इस बात का हार्दिक दुःख रहा कि देश के नेताओं ने विप्लववादिओं के कार्य का उचित मूल्यांकन नहीं किया । उनका यह घातमचरित स्वयं विप्लववादिओं और शासनाब्द पाटों के नेताओं के लिए एक सबैष है—एक चुनौती है ।

## विप्लववादिओं का इतिहास

विप्लववादिओं का यह कर्तव्य है कि बिना किसी की प्रतीक्षा किए बसिभ भारतीय पमाने पर विप्लववादिओं के इतिहास का मसाला संग्रह कर दें और केवल बेसी भाषाओं में ही नहीं अंग्रेजी में भी उसे खपा दें । यह भंसे बुर्जुआ की बात है कि हमारे यहाँ कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहाँ यह सब मसाला एकत्र मिल सके ? सुना है कि पूना में भी बी० बी० केटरकर साहब ने बहुत कुछ मसाला संग्रह किया है और नामपुर के भी बास दास्ती हुरबास ने मण्ठी और अग्रजी में एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ इस विषय पर लिखा है । यही हम में बैठता स्वकप आई परमानन्द के बामाठा भी यमबीर ने जाला हुरबासजी का एक योग्यपूर्ण बीजन चरित लिखा है और बंवास में तो अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं । बसिभ भारत के विप्लववादिओं का ब्रूतान्त यहाँ उत्तर भारत के पाठकों को बहुत ही कम मासूम है । यही उस दिन एक बसिभ भारतीय ने हमसे कहा—

“क्या आप लोग यह समझ बैठे हैं कि कान्ति का सम्पूर्ण कार्य उत्तर भारत में ही हुआ था ?

उनके इस कथन में ध्यान के साथ सत्य का ग्रंथ भी था। हम लोग बम्पाकमन पिन्ने और बी पिन्ने को भूल ही गए। कुछ दिन पूर्व सुप्रसिद्ध कान्तिकारी डा० कामजोमे ने हमसे कहा था ‘मुझ इस बात से अत्यन्त दुःख है कि सुप्रसिद्ध कान्तिकारी आचार्यवर का स्वर्गवास बम्बई में अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में हुआ। वह अपने कमरे में कई दिन तक मरे हुए पड़े रहे और जब उनकी माय से बहू निकलने लगी तब लोगों को पता चला कि कोई व्यक्ति मर गया है। बम्बई कारपोरेशन के नौकर उन्हें वहाँ से बसीट में गए और इस प्रकार उस महान् कान्तिकारी का अन्तिम संस्कार हुआ जो बहिन कमेटी में भी था उस को भी जिसने यात्रा की थी और विप्लववादियों के इतिहास के एक प्रध्याय का जो निर्माता था।”

कितने व्यक्तियों को इस बात का पता है कि बी राखबहादी बोस ने आपानी भाषा में सोनाह प्रश्न लिखे हैं जिनमें पन्द्रह प्रश्न भी उपलब्ध हैं ? हमें यह बात अदपूर्वक कहनी पड़ती है कि हमारे शासकों ने—हम लोगों ने—इस विषय की ओर उद्योक्षित ध्यान नहीं दिया। पर अब बक्त आ गया है कि हम लोग अपनी नीति पर पुनर्विचार कर लें। स्वार्थ की दृष्टि से भी हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम विप्लववादियों के श्रम को स्वीकार करें और उनकी कीर्ति-रसा के लिए प्रयत्न भी करें। ईमानदारी का भी बही ठकावा है।

### भायरलैंड का उदाहरण अनुकरणीय

भायरलैंड ने अपने शहीदों के लिए जो कुछ किया है क्या उस तरह का कार्य हम लोग अपने देश में नहीं कर सकते ? शीघ्रतः अमनसाल पत्रकार ने उद्योक्षित शहीदों के अनामकधर का वृत्तान्त नवम्बर सन् 1939 के ‘विप्लव’ में लिखा था। उनके सम्बन्ध सुन लीजिए—“भायरलैंड के राष्ट्रीय वीरों का यह स्मारक भायरलैंड की पार्लियामेंट के विशाल भवन में कायम है। इस अनामकधर में मुख्य को प्राचापी की सड़ाई में भाग लेनेवाले वीरों और उस युद्ध की बटनामों की स्मृति का एक बहुत प्रभावशाली संग्रह है। इसमें उन वीरों की प्रायमक-मूर्तियाँ हैं, वे चरित्र हैं, जिन्हें पहनकर उन्होंने अपनी सड़ाइयाँ कहीं। उ

हबिमार हैं बिहू, बीज कण्डे इत्यादि भी हैं। उनकी विची पुस्तकों, उनके व्याख्यान ऐलान तथा पत्र इत्यादि कुछ सुप्रसिद्ध कम से रसे हुए हैं। भायरसख के म्मी-मुस्य, बूख और बच्चे वहाँ पहुँचकर और उन स्मृति-चिह्नों को देखकर राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ते हैं। जिन जनरल राजस केसमेंट को धंसेजों ने फाँसी दी थी उनके जीवन की सम्पूर्ण याथा आपको यहाँ देखने को मिलेगी। प्रथम महा-मुद्ध में उन्होंने जर्मनी की सहायता से एक सामरिक सेना तैयार की थी और बहादुर द्वारा वह या ही रहे थे कि बहादुर धंसेजों के हाथ पड़ गया। केसमेंट को फाँसी हुई पर राष्ट्रीय प्रभाव पर से वह सब भी बिम्बा हैं।

‘कोर्धर्यस स जीवति।’

इस प्रभाव पर मैं आपरसख के प्रसिद्ध छाहीब टर्से मंकस्विनी का भी चित्र मिलेगा जिन्होंने 74 दिन का प्रवासन करके अपने प्राण दिए थे। जनरल माइकेल कोलिम्स की भी मूर्ति विद्यमान है। हैरी बोलेख सुप्रसिद्ध और सेनापति डी० बेलेरा के सेक्रेटरी थे। एक सकट के समय वह अपने बूते के तले में छिपा कर एक पत्र डी० बेलेरा के लिए ले गए थे। वह मार खाते गए पर उनका वह बूता अब भी सुप्रसिद्ध है। इस संग्रहालय में आपको और बासक केबनबेरी का बूतामिल मिलेगा जिसे फाँसी दी गई थी। उसकी उम्र 18 वर्ष की थी। कहीं आपको शान्तिकारियों द्वारा प्रकाशित ऐलानों का संग्रह मिलेगा तो वहीं राष्ट्रीय हुई। कहीं ‘माउण्ट जोय’ बेल में भूख झुकास करने वालों की मूर्तियाँ लगी हैं तो कहीं सामरिक सहोदों के चित्र के ऐलान। और तो और उन सहीदों द्वारा व्यवहार में लाई जाने वाली चीजें भी संग्रह कर ली गई हैं—जथा उनकी धंभुठियाँ ज्वाले और वंक्षिण इत्यादि। जगह जगह मोलियों से छिदे कपड़े तथा टोपियाँ रखी हुई हैं।

क्या इस प्रकार का कोई संग्रहालय हम लोग दिल्ली में स्थापित नहीं कर सकते ? उसके लिए सर्वोत्तम स्थान दिल्ली की सेण्ट्रल जेल की वहाँ वार शान्तिकारियों को फाँसी लगी थी पर घबुरबगिता के कारण वह भी गल्ट कर दी गई। पर सरकार की प्रतीक्षा में बैठे रहने से हम अपने-आपको पंगु ही बना लेंगे इसलिये हम लोग को कुछ स्वयं कर सकते हैं उसे कर दें।

**प्रथम भाग**



## 1 | आत्म-समर्पण योग

कनकता के राजा बाजार मूर्खों में एक छोटा-सा शोमजिस्ता जर्जर का नवान था। घरीबों का-सा घर जैसा था। इसमें ट्राम-बैटलर या इसी घरी के नाम रहते थे। इसी मकान के ऊपरवाले एक कमरे में श्री सशांकमोहन हाजरा नामक एक बुढ़ा पुरुष रहते थे। जिस समय वह निरपत्तार किये गए उस समय उनके कमरे में बम के ऊपरी खोल मिले और ऐसे तेज भी बरामद हुए जिनमें योमाम्बास की निधि थी। अवास्तव में मुकदमा चलते समय किसी ने भी इन लोगों को महत्वपूर्ण नहीं समझा कहा गया कि ये सैद्धास्य में लोगों को फँसाने के लिए हैं। लोगों को भुमराह करने का यह एक जरिया है। लेकिन मैं जानता हूँ कि अस्त में बात ऐसी भी नहीं। हम लोगों ने सचमुच ही अपने जीवन में इस साधन (योमाम्बास) को ग्रहण किया था। हम लोग सिर्फ मूर्ख से ही न कहते थे कि भगवान् सभी कामों के निष्पत्ता हैं बल्कि सचमुच हृदय से यन्गीर खड़ा के साथ इस बात पर हम निश्वास भी करते थे। हम अपनी गरज के लिए, अपना काम सामने के लिए ही कुछ भगवान् को न बसीटते थे किन्तु भगवान् के अधिनायकत्व की धारणा और भावना में कितने ही दिन और रातियाँ तक हमने बिताईं।

भारत की छाती पर जो यह महान् धाम्नीतन हुआ और हो रहा है, यह भगवान् की इच्छा से ही हुआ और हो रहा है यही हम लोगों का विश्वास है। जिस भाव की प्रेरणा से भारत के संकड़ों नवयुवक मृत्यु को सह्य चुनौती देकर बड़ी-बड़ी कठिन विपत्तियों के मुख में भी बड़ी धान-बाम के साथ झूठे थे और जिस प्रेरणा के बल से उन्होंने अपार दुःखों और साधनों को उसके संघर्ष की-



जाति सहन किया था उस भाव के प्वावन को क्या कोई विशेष व्यक्ति उपस्थित कर सकता है ? या इसका स्वाभिव्यक्ति किसी व्यक्ति विशेष के मत प्रकाश बीबन मरण पर प्रबलान्वित है ?

जब मैं निरा बच्चा ही था तभी से मेरे हृदय में स्वदेश का उद्धार करने का संकल्प जाग्रत रहता था। यह संकल्प मुझे किसी से प्राप्त नहीं हुआ। उस छोटी सी ही उम्र में किसने मेरे रोम-रोम में इस संकल्प को भर दिया था ? बचपन से ही मैं इस विषय की धारणा अपने छोटे भाइयों से करता आता हूँ। उस समय तो स्वदेशी आन्दोलन भी उपस्थित न हुआ था। यह केवल मेरे ही मन की इच्छा न थी। बयस्क होने पर जब मैंने धीरे-धीरे लोगों से बातचीत की तब मुझे पता लगा कि मेरे-जैसे धीरे धीरे बहुतों में भी इस भाव में निहितान्वित हैं। मुझे तो यही लगता है कि जयवान् अपने आभीष्ट को सिद्ध करने के लिए पहले ही से तैयारी करते आ रहे हैं।

हमने जो आध्यात्मिक साधना प्रवृत्त की थी एक क्षण में उसे आत्मसमर्पण योग कहा जा सकता है। व्यक्ति-योग प्रत्येक प्रयत्नात्मक से इसका अनिवार्य सम्बन्ध है। मैं जयवान् को प्यार करता हूँ इतना प्यार करता हूँ कि उसके सिवा अन्य किसी वस्तु को अपना नहीं कह सकता। मैं जो कुछ करता हूँ वास्तव में वह मैं स्वयं नहीं करता मैं तो केवल निमित्त-मात्र हूँ। जयवान् स्वयं मेरे द्वारा उन कार्यों को सम्पन्न करते हैं। वेदांत में इस मत का पर्याप्त पोषण किया गया है। जयवान् में व्यक्ति एक ही है, प्रत्यक्ष जो कुछ इस संसार में होता है सब उस व्यक्ति का ही फल है। परन्तु जयवान् को हम माना नहीं समझते बल्कि उस जयवान् की सीमा मानते हैं। हमने निज बीबन में देश में तथा जयवान् में उसी एक व्यक्ति की सीमा देखने तथा अनुभव करने की चेष्टा की थी।

## 2 | पूर्व परिचय

1906-1907 ईसवी में बंगाल में जो जाति की लहर चल रही थी वह बंगाल तक ही सीमित न रही। कुछ बंगाल के अनुकरण में, और कुछ बंगाल की प्रेरणा से इस समय भारत में कई स्थानों पर बिस्म-केन्द्र स्थापित हो गए थे। इसी के परमस्वरूप कापी दिल्ली और साहौर में बिस्म-केन्द्रों की सृष्टि हुई।

यँ दिल्ली बम-केन्द्र के बाद से ही कहानी प्रारम्भ करूँगा। उससे पूर्व बंगाल के बाहर जातिकारीयों ने जो काम किए, जनसाधारण को उसका कुछ ज्ञान न था। दिल्ली पदपत्र के मुद्रण में नामा हरदयास और श्री रासबिहारी बसु के नाम विख्यात हुए। नामा हरदयास उस समय अमेरिका में थे किन्तु रासबिहारी और सफ्ट के समय में श्री सन् 1915 तक भारत में ही रहे। वह बंगाल के बाहर के जातिकारी बस के गैठा थे। उनको साधारणतः हम दादा या रामूरा कहते थे।

दिल्ली पदपत्र के मुद्रण के प्रारम्भ होने के पहले से ही रासबिहारी ऊपर हो चुके थे। उनको पकड़ने के लिए कई पुरस्कारों की घोषणा हो चुकी थी। प्रत्येक बड़े रेलवे स्टेशन पर उनका फोटो टाँगा गया था और उनको पकड़वानेवाले को साढ़े साठ हजार रुपया पुरस्कार दिया जायगा इसकी भी घोषणा प्रकाशित की गई थी। किन्तु पूरा प्रयत्न करने पर भी सरकार उनको किसी तरह पकड़ न सकी।

बहुत सोच-विचार के बाद मेरे परामर्श से रासबिहारी ने कापी में रहना निश्चित किया। वह कापी में मेरे साथ प्राप्त एक बय तक रहे। उस समय उनके संघर्ष से मैंने जो आनन्द पाया था उसे मैं भूल नहीं सकता। इतने घन्टों में मैंने उनको घायर कभी भी नहीं देखा। हाँ जिस दिन दिल्ली बम-केन्द्र के मुद्रण

के जेलों के अनुसार बार व्यक्तियों को काँची का हुकम हुआ उस दिन एकान्त में उनको धमपात करते देखा था।

पचूरा जितने दिन काँची में रहे उतने दिन मैंने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों के लोगों को उनसे मिलते देखा था। राजपूताना पंजाब और हिस्सी से लेकर सुदूर पूरब बंगाल तक के लोग उनके पास घाते थे। वह सब तक काँची में रहे तब तक युक्त प्रदेश (उत्तर प्रदेश) तथा पंजाब के भिन्न-भिन्न स्थानों में विप्लव केन्द्रों की स्थापना में लगे रहे। उसी का यह परिणाम हुआ कि एक ही जगह से हजारों दसों पर्यन्त व्यक्तिवादी हो गया और उसी का यह फल था कि यूरोपीय महायुद्ध जब प्रारम्भ हुआ तब हम सब खोर से काम कर सके थे।

सन् 1918 भारत में विरस्वरूपीय रहेगा। इस साल विप्लव की जितनी बड़ी तैयारी बकारण गई उतनी बड़ी तैयारी सन् 1857 के पहर के पश्चात्, पंजाब में कूका विद्रोह के सिवा और हुई कि नहीं इसमें सन्देह है। इस पक्षपाती इस के विरुद्ध हो जाने पर "भारत रत्न" कानून बनाया था। उस समय के होम मेम्बर कैडब्र साहब ने भारतीय व्यवस्थापिका सभा में उक्त कानून का प्रस्ताव उपस्थित करते समय जो बयानवादी भी उसमें कहा था—"We had anarchy for a long time in Bengal but the situation in the Punjab was serious in Bengal it was less so" उस समय सब कुछ भारत की दशा बहुत ही नाबूक हो गई थी। हाँ बंगाल के सम्बन्ध में कैडब्र साहब की प्रतिज्ञा उस समय बहुत ही कम थी। कुछ दिन के पश्चात् उक्त साहब ने स्वीकार किया था कि पंजाब के विप्लवकारियों के साथ बंगाल के विप्लवपन्थी दल के सम्बन्ध घुस में सरकार की पहले जो धारणा थी उसमें परिवर्तन हो गया है।

उत्तर भारत के विप्लव सम्बन्धी कई मुद्दों में बहुतैरी बातें प्रकट हो चुकी हैं। बहुत लोग समझते हैं कि इन बातों में सचाई कम है। बहुतों ने मुझे कहा भी था कि 'भुक्ति ने अपना विमात्र लड़ाकर भूटा भुक्तिया बनाकर लड़ा कर दिया है वास्तव में बीता कुछ बेस में किया ही नहीं गया है। ऐसे लोगों की बातें सुनने से मैं दिल में बस मुन पाठा था। सोचता था कि बेसवासियों का अपनी गति का निरवास यहाँ तक मुप्त हो गया है कि वे यह समझ ही नहीं सकते कि उनके स्वजातियों में ऐसा कुछ करने का सामर्थ्य है। किन्तु अन्दर के लोग के रज मन की बातें सुनकर न कह सकता था इससे जलन और भी अधिक होगी।

धी 1) 'कोमागाटा मार्क' नामक जहाज के सिव्म यात्रियों को कनाडा की भूमि में पैर न रखने देने के कारण उनके मन में जो घाव प्रग्नमिति हुई था उसकी चिनमारियाँ जब चारों ओर उड़ रही थीं तब भारत के एक प्रांत में बैठ हुए हम सोम घाटा की वेदना से चबम होकर प्रसहूनधीम की भाँति ठाक रहे थे। पञ्जाब में जो हमारे दम के मोय थे उनसे कह दिया गया था कि 'कोमागाटा मार्क' के यात्री क्योंकि दस में घाएँ उन्हें पौरन दम में भरती कर लिया जाय।

किन्तु 'कोमागाटा मार्क' के यात्रियों के भारत की बसुपय पर पैर रखते ही एक दुःखटना हो गई। परन्तु इससे हमारी घाटा और भी खबम होने लगी। देखते देखते कनाडा और कैमिफोनिया से सिक्कों के दस के दस देय में आने लगे। ये लोग भारत को घाटे समय रास्ते में, स्वाग-स्वाग पर उतरकर, पुत्तिस और पीड में नियुक्त सिक्कों के बीच बिज्मपानि मड़का रहे थे। ये माग बहुत दिन से भारत से बाहर परदेस में थे। इस कारण ये प्रायः यह न जानते थे कि गुप्त रूप से बिज्म योजना किस प्रकार की जाती है। यही कारण है कि ये लोग प्रत्येक जहाज और बन्दर में गहर की घाय कँसाते चले आ रहे थे। उसका फल यह हुआ कि भारत सरकार लूब चौकनी हो गई। जैसे-जैसे सिक्कों के दस स्वदेय में आकर जहाज से उतरग भये तैसे-तैसे सरकार की ओर से उनकी मुषारीति घन्यर्यना होने लगी। इस प्रकार एक दस के कोई तीन सौ यात्रियों को सीधा मुसतान जम में भेज दिया गया। इनमें से बहुताँ के पास काफ़ी नन था इन्होंने धमरिका में समातार कई बय परिधम करके जो उपाजैन किया था उसे य धाय लाए य। उनके उस ओर परिधम से उपाजित मन का सरकार ने जल कर लिया। बेचारों के बरबादे ताकते ही रहे यए कि परदेस से दो पैसे घाएँगे तो यहीनेबर मुक्त से पटभर

1 इस खान में पुत्तिस के कालों के सम्मन्ध में ज्ञा-चार और बातें यह बना सकित है। ऊपर जो कुछ कहा गया है कम्मे कई मज्जन यह न समझ से कि पुत्तिस या राजनीतिक मुहदमे करती है वे नन सम्पूदनया लय होते हैं। पुत्तिस मुहदम बनाने के लिए कई मिम्य कयार् गती है और जमे ही यह बाय सबय निर्दोष जविन्याँ को या मुहदम में पँच देती है। काती बद्दम में जिन पर मुहदम जमाया गया था और जिनको सया श गर्ई की उनमें से कई मुर्बा जिते थे। कि जमे कई राजनीतिक मुहदम के बार में खानता है जिनमें जमि-मन धमि निरुप निरदोष थे। लखनऊ राजनीतिक हाथ के मुहदम में सीपुा सुरीनकर जविनो को पँच हुई थी किन्तु कयों की सम्पति में यह वास्तविक बरबादी लरी थे।

घोड़न कर लेने। इनमें से एक सिक्ख का पास कोई तीस हजार रुपए थे।

बहुतेरे ऐसे थे जो अपनी सारी याड़ी कमाई 'कॉन्सिडरेशन-मनी' 'मुपास्र बायप' को धरप कर आए थे। जितने बल सरकार की सीधी गडर से बच गए थे वे पंजाब जाकर बलबल होने लगे। सिक्खों के कर्म-मन्दिर मुखारा कहे जाते हैं। इनमें सिक्खों के पुरोहित रहते हैं। सिक्ख लोग इन्हें 'ग्रामीजी' कहते हैं। प्रत्येक मुखारे में एक 'ग्रामीजी' रहते हैं। बिप्लवपन्थी सिक्खों के सम्मिलन केन्द्र में ही कर्म-मन्दिर थे। मैं ऐसे ही एक मुखारे में बैठा था कि एक सिक्ख ने धाकर जबरन कि 'घमूक-घमूक' व्यक्तिओं की मुखारे में जाते देख मैं उनसे जेंट कर बोला हूँ। बोली ही बेर में बोला कि उस जमात के मुख्य-मुख्य व्यक्ति उस मुखारे में था मैं जहाँ कि मैं बैठा था। रुपए-पैसे की चर्चा निकलते ही उन्होंने गुरम्त होने की बात-बात बड़ी-बड़ी 'बकिया' मेरे सामने रख दी, वे अमेरिका में प्रचलित डोले के सिक्के थे। हिसाब लगाने पर कोई हजार रुपए के हुए। प्रत्येक बल ने ऐसा ही किया। गडर के कार्य में इन लोगों को जिस प्रकार दित कोलकर अपनी याड़ी कमाई का बल बाग करते देखा-ई बैठा वृत्त कपाल में देखने को नहीं मिला। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा जल्साह और धान्तरिकता जहाँ सिक्खों में थी जो कि अमेरिका की शान कर आए थे। और वह बात भी है कि पंजाब के अधिवासियों के साथ इन लोगों के साथ सहानुभूति प्रकट नहीं की। हाँ, पठान और सिक्ख दोनों के साथ इन लोगों का विशेष हेल-मेल था। इसके सिवा सिक्ख जाति में परस्पर एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और समवेदना-जन्त एकता पारल की सम्मान्य जातियों की अपेक्षा बहुत अधिक है।

जो लोग अमेरिका से लौटकर आए थे उनमें अधिकतर ऐसे लोग थे जो कि वहाँ कुसीपिरी किया करते थे। इनमें जिनके पास से तीस हजार रुपए जमा कर लिये गए थे वह 'कॉन्सिडरेशन' में खिती करके बनवाना हुए थे। इनका नाम था सरदार क्वालासिंह।

इन लोगों के बहुत-से रिश्तेदार और धार्मिक-बन्धु भारत की प्येज में लौकर थे। देख नें थात ही इन लोगों ने सैनिकों के साथ गुप्त अधिर्लपि करनी शुरू कर दी। उसी समय बंगाल के साथ पंजाब का सम्बन्ध जुड़ गया। राज्य अनेक गुप्त होने पर भी पंजाब के लोगों में संघठन की बेसी योग्यता न थी जैसीकि बंगाल वालों में थी। बंगाल के साथ इनका संयोग हो जाने पर बड़े प्रत्येक बल से बल

होने लगा । उत्तर भारत की प्रायः सभी छावनियों में हमारे वस के बादभी जाने जाने लगे । उत्तर-पश्चिम प्रान्त के बन्नु से लेकर दानापुर तक कोई भी छावनी पसूती न रखी गई । प्रायः सभी रेजिमेंटों में बचन दिया था कि पहले वे सैन्य क्लब भी मजकूरने, ही बंदर शुरू हो जाने पर वे अवश्य ही विप्लवकर्त्ताओं से मिल जाएँगे । सिर्फ साहौर और पीरोजपुर की रेजिमेंटों में सबसे पहले काम शुरू कर देना स्वीकार किया था । प्रारम्भ में सरकार यह नहीं समझ सकी कि गुप्त विप्लव योजनावाले इतनी गहरी नींव देकर काम कर रहे हैं । यदि ऐसा न होता तो इतना अधिक काम हो ही न सकता । पंजाब के पुलिस विभाग के एक मुसलमान डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट ने अपने एक मुखबिर को इस वक्त में जामित करा दिया था । अन्त में उस कृपासिंह ने ही कृपा करके सारी बातें प्रकट कर दीं ।

### 3 | सिक्ख दल का परिचय

इस दल में कृपालसिंह किस प्रकार भर्ती हो गया और उसने किस प्रकार, कब सारी बातें प्रकट कर दी इसका उत्प्रेक्ष्य बचास्वान किया जाएगा। अभी तो इस सिक्ख दल का बाड़ा-सा परिचय देने की चेष्टा करता हूँ।

इस दल में कुछ कम मेम्बर न थे। उत्तरी अमेरिका और कनाडा से सिन्धु मिन्न दलों में कोई छ-साठ हजार सिक्ख देश में वापस आए थे। किन्तु सन् 1914 के *Loggers Ordinance Act* के अनुसार बहुतेरे लोय बेल में डेन दिये गए तथा और भी बहुतेरे लोय नजरबन्द कर दिये गए जिससे वे अपना माँब छोड़ कर कहीं धा-या न सकते थे। लो लोय नजरबन्द थे उन्हें विप्लव-कार्य में सहायता देने का विरोध प्रबल नहीं मिला। क्योंकि सूर्यसिंह और सूर्यदेव के दमियान इन्हें अपने घर पर मौजूद रहना पड़ता था। यह इसलिये कि क्या जाने पुलिस किस समय इनकी जाँच करके पहुँच जाय। थिम निकल चुकने पर भी वे लोय अपने माँब से बाहर न जा सकते थे। किसी दूसरे माँब का कोई भी व्यक्ति इनसे प्रकट रूप में मिल-बुल न सकता था। बाद में जब काम अच्छे सिमलिते से होने लगा तब उनमें से जिस-जिसको देश का काम करने की प्रवृत्ति दृष्टा हुई वे पुलिस की मजूर बन्ना कर चिपक गए। अर्थात्, क्या पुलिस, क्या उनके घर के लोय और क्या रिश्तेदार—किसी को उनकी खबर न मिलती थी।

जिस भाव को हृदय में लेकर ये दल भारत में आए थे स्वदेश में पराधीन करने के प्रयत्न ही उनमें थे। बहुताँ का यह भाव बदल गया। अमेरिका से सीटे हुए इन छ-साठ हजार मनुष्यों में से कोई धाये लोय अपने घर-पूहस्वी के कार्यों में

जा बँसे । किन्तु पञ्चशिष्ट सिक्ख बड़े उत्साह के साथ विप्लव काय में लगे रहे ।

अमेरिका से लौटे हुए इन लोगों में अधिकांश सिक्ख ही थे । ऐसे लोग इन्-गिने ही थे जो कि सिक्ख न थे । साधारण पचास-सोस हों । वे प्रायः सब बयस्क थे । बहुतां के सभी परिवार और बास-बच्चे सब कुछ थे । इनमें से बहुतां की उम्र पचास वर्ष से ऊपर थी । कुछ लोग तो बूढ़े थे । भाई निधानसिंह, भाई सोहनसिंह, भाई कार्तसिंह भाई केहरसिंह—इनमें से किसी की उम्र पचास वर्ष से कम नहीं थी ।

विस्तो पद्मन के मुकदम में जा लोग गिरफ्तार हुए थे उनमें से कई एक उतरती उम्र के थे । अमीरचन्द की उम्र पचास से भी ऊपर थी । सबमविहारी भी जवानी पार कर चुके थे ।

बंगाल का विप्लवकारी दल ही ऐसा था जिसके प्रायः सभी सदस्य छात्रश्रेणी के बालक और नवयुवक थे । इनमें से अधिकांश लोगों को सांसारिक अभिज्ञता एक प्रकार से थी ही नहीं । स्वाभावतः ऐसे थे जिनकी उम्र सोलह से लेकर बीस-बाईस वर्ष से अधिक न होगी । बंगाल में प्रायः यही बीस पड़ता है कि जो लोग तीस के पार हुए उनका सारा उत्साह समय उछोय ठंडा पड़ जाता है, उस समय के किसी तरह अपनी बूढ़स्वी का काम बंगाल के सिवा और किसी मसरफ के नहीं रह जावे । मामूम होता है कि बंगाल का जो कुछ धाया भरोसा है वह माना स्कूल और कावेज के मुबकों के तहत मनों में ही धाबड़ है । किन्तु बंगाल में काम करने वालों की सांसारिक अभिज्ञता स्वल्प रहने पर भी, उनमें बहुतां के तरुणवयस्क होने पर भी उनमें एक ऐसी एकग्रतापना देखी है जोकि बंगाल के बाहर अन्यत्र देखने को नहीं मिली ।

बंगालियों ने जब-जब जिस किसी काम में हाथ लगाया है तब-तब उसे प्राची की बाड़ी लगाकर किया है । इसी से देखता हूँ कि बीछ युग में बंगालियों ने जिस प्रकार बीछ धर्म को अपनी नस-मस में प्रविष्ट कर लिया था वैसे ही और किसी प्रदेश के लोगों ने नहीं किया तथा अन्त में जब अन्त्याय्य प्रदेश-वासियों ने बीछ धर्म को निमज्जम छोड़ दिया था तब वे बंगालियों को कुछ-कुछ अवज्ञापूर्ण दृष्टि से देखने लग गए थे क्योंकि बंगाल उस समय भी बीछ धर्म को पकड़े की भाँति हृदय से पिपकाये हुए था । फिर अंग्रेजी अमलदारी होन पर भी देखा कि बंगालियों ने जिस प्रकार अपना सर्वस्व सोकर पाठशास्त्र शिक्षा-दीक्षा और धाबार-म्यमहार को अपना लिया इस प्रकार और किसी भी प्रदेश ने नहीं अपनाया । इसे बंगाल



का युव समझिए बा बाप, किन्तु बंगाली जन जिसे ग्रहण करते हैं उसे प्राणपण से प्रोत्साहित करते हैं। इसी कारण वर्तमान युग में भी बंगालियों ने जब देश-हिंद की ओर ध्यान दिया तब फिर वे दूसरी ओर दृष्टि नहीं डाल सके। न फिर उन्होंने खारी-ब्याह करके मूहस्त्री बनाई थीर न उन्हें द्रव्य उत्पादन करना मना मया। उन्हें तो एकदम घर-बार छोड़कर बाहर निकल जाना पड़ा।

इन युवकों में से बहुतों में मुझे एक अतीव्रिय भाव की प्रेरणा का साक्षात् मिमा है—ये लोग विप्लव साधक करने में ही मस्त नहीं बने रहे। इन लोगों ने देशसेवा-व्रत को एक प्रकार से साधना का प्रसंग समझकर ही ग्रहण किया था। इन लोगों के बीच एक इसी बारम्बा थीर याचना में कुछ कम से कुछ जमा ली थी कि 'हम कैसे समुप्यता को प्राप्त कर सकेंगे हम किस प्रकार से चरित्रवान् हो सकेंगे ?

किन्तु मुझे वह भाव दो-तीन शिक्षकों के सिवा अन्य लोगों में नहीं दिखा। मुक्त प्रवेश के भी बिना विप्लवपरम्पराओं से भरा हैत-मैस रहा है उनमें भी बंगाल के भारद्वाज की बात सिखने पर दिखा है कि वे भी उसे प्राणपण से ग्रहण करने में तय नहीं हुए, प्रत्युत उनके होंठों पर एक अविश्वास की गन्ध मुखकान ही फैल पड़ी है।

शिक्षकों में प्रथम साहस थीर उत्साह था इसके सिवा वे कष्ट भी पूरा सह सकते थे। उनकी विद्यालय गयी हुई वेह खूब चौड़ा सीमा थीर सुसम्बद्ध कठिप्रवेश सभी की दृष्टि का आकर्षित करते थे। उनके बाड़ी थीर मूर्खों न मुषोमित बुद्धता व्यवक बेहरे को बेचकर बाहुतेरे जलीककों का दिल बहस जाता था। उनकी भास-दान से एक विशेष भाव प्रकट होता था। ताक मामूम होता था कि मानो वे दोनों पैरों पर समान भार डालकर चलते हैं किन्तु बिना दाढ़ी मूर्खोंनासे कोमलान सीधे सादे नम्र बंगाली युवकों का चरित्रमित्र बौधे एक तबब भारद्वाज पर यद्विज हुआ दिखाता था बीसी बात इनमें न थी। इस बात की मैं साधारण भाव से ही निश्च रहा हूँ क्योंकि व्यक्तिगत रूप से कठिपम शिक्षकों के सम्बन्ध में मेरी बहुत ही उच्च चारणा है। अपनी धांडमन—कासापानी—की कथा का वर्नन करते समय मैं इस विषय की धानोचना करूँगा।

विशित कहने से हमारे मन में साधारणतया जो चारणा होती है उस दृष्टि से कहना पड़ता है कि अमेरिका से लौटे हुए वनों में कोई भी विभित न था। भारत के सम्मान्य प्रवेशवाले पर की धावी रोटी पर समुष्ट रहकर बाहर जाने

का साहस नहीं करते किन्तु इनमें से बहुतों ने इस टुकड़े पर सब न करके सिर्फ अपना पैसा करने के लिए ही पंजाब को छोड़कर विदेश यात्रा की थी। सिंगापुर, पिन्यांग, स्वाम मसय प्रायद्वीप और चीन के अनेक स्थानों में इनकी गति-विधि प्रारम्भ हुई। जबर कमावा और उत्तर अमेरिका के भी अनेक स्थानों में ये लोग इसी उद्देश्य से जा पहुँचे। सिंगापुर, पिन्यांग और हांगकांग में ये लोग काम करके अंग्रेजों का लौटने और मिलिटरी पुलिस में मर्ती हाँ गए थे। स्वाम मसय प्रायद्वीप और चीन के अनेक स्थानों में बहुतेरे सिक्ख कुलीगिरी भी करते थे। कुछ लोग ठेकेदारी का ऐसा ही कुछ और स्वाधीन रोजगार करते थे। किन्तु कमावा और अमेरिका में ये लोग प्रयासतया कुलीगिरी करते थे। वहाँ इनका यही पैसा था। अमेरिका के किसी-नकसी कारखाने में अमेरिकावासियों की अपेक्षा इन्हीं की कमावा ऊँच थी। अमेरिकावासियों की अपेक्षा ये अधिक काम करते थे इसलिये इन्हें उन्नत भी समझी मिलती थी। इसका फल यह होता था कि अक्सर अमेरिकन मजदूरों से इनका झगड़ा-बहकावा हो जाता था। मैंने इनसे सुना है कि एक बार एक शहर में यह मनोमासिम्य इतना बढ़ गया कि एक प्रचण्ड विवाद का श्रीमशेष हो गया। बस्तीभर में सिक्ख मजदूर एक ओर और दूसरी ओर उस शहर के सब अमेरिकन गोरे मजदूर। कासी मार-पीट हुई, खूब लाठी चली किन्तु यह सब होने पर भी सरकार की ओर से सिक्खों पर कोई ब्याबती नहीं हुई। भारत में यदि कहीं ऐसी घटना हो जाती तो यह मानना न जाने कैसा रंग पकड़ता। अमेरिका से लौटे हुए ये सिक्ख लोग बैसे शिक्षित न होने पर भी प्रायः सभी अपनी मातृभाषा में लिखित ग्रन्थ आदि पढ़ सकते थे और अपने गाँव के सिक्खों की शिक्षा-दीक्षा आदि के सम्बन्ध में इन्हें अग्रगण्य उत्साह था। ऐसी शिक्षा के प्रचारार्थ जब अमेरिकावासी मजदूरपेसा सिक्खों ने ही अमेरिका से जन-संग्रह करके कई बार बस-बस पन्नाह-पन्नाह हजार की रकमें पंजाब को धर्पण की थीं। अमेरिका की स्वाधीन आज़ादी के बीज मैं रहने से और कासी आमदनी कर सकने से उनमें आत्मसम्मान अर्थात् और आत्मनिष्ठा का परिमाण बहुत कुछ बढ़ गया था। इनमें से कई एक ने अमेरिका में रहकर कमी अपने वेत और परिश्रम को नहीं छोड़ा बहुतेरे तो अपने हाथ से रसोई बनाकर भारतीय ढंग पर ही आहार किया करते थे। देश से जब पहुँचे-पहुँच ये लोग अमेरिका पहुँचे तब आपस अंग्रेजी में एक-दूसरे की बात न कह सकते थे किन्तु वहाँ पहुँचकर अजीब किस्म

की टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना इन्होंने सीख लिया। इनके मुँह से वह टूटी-फूटी अंग्रेजी सुनने में बड़ा मजा आता था। अमेरिका में ऐसी ही अंग्रेजी बोलकर वे अपनी मानगएँ व्यक्त करते थे और उम्मा अंग्रेजी न जानने से इनके किसी काम में स्टाफट न पड़ती थी और फिर इन्होंने नग भी खासा कमाया था। और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अपने अमेरिका-यात्रा के फलस्वरूप इन लोगों ने स्वदेश सम्पर्क को नहीं तोड़ दिया था। वे करते तो थे अमेरिका में कुश्मीरि या मजदूरी, लेकिन वह जानने के लिए सदा व्यग्र रहते थे कि हमारे देश में कहीं क्या हो रहा है। उस समय बंगाल की नवजागरण की तरंग थे जिस प्रकार भारत के अन्धम्य प्रदेशों में एक माव की हिलोर पैदा कर दी थी उसी प्रकार उसका हिमकोरा सुदूर अमेरिका में स्थित भारतीयों के हृदय में भी लगा था। जब भारत में महर की बिजपाहियाँ धीरे-धीरे इधर-उधर चारों ओर उड़ रही थीं तब अमेरिका में कुछ भारतीयों के बी-ही-बी में न बचककर जल रही थी। इसी समय भाई करतार सिंह नामक एक ठरन मुवा इनके साथ आकर सम्मिश्रित हुए। वे लड़ोसा में रेवेनशा कासेज की प्रथम बोधी की पढ़ाई समाप्त करके विद्यार्थी के रूप में अमेरिका आये थे। यद्यपि शिक्षकों में वे सबसे कम उम्र के थे फिर भी इनकी प्रतिभावता से मैंने कितने ही बड़ी उम्र के शिक्षकों को भी काब करते देखा। इन्होंने अपने-जैसे विचार रखनेवाले दो-एक व्यक्तियों की सहायता से एक सम्बाधन के निकालने का संकल्प किया। इसी समय बंगाल के स्वनामक्यात वैद्यमन्त्र नामा हरदयाल भारत में विप्लव करने की सारी साधनएँ छोड़-छाड़कर अमेरिकन सोसलिस्टों (साम्यवादियों) के साथ आत्मीयता स्थापित करने का यत्न कर रहे थे। करतार सिंह और उनके मित्र इस सबका पर हरदयाल के पास ऐसे पत्र की प्रकाशित करने का प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुए। स्वदेश-प्रेमी हरदयाल तो ऐसे तुषोव की ताक में ही बैठे थे। उन्होंने झुड़ी-झुड़ी इस काम को ह्रास में ले लिया। इस प्रकार 'महर' नामक विस्फाट समाचारपत्र का प्रकाशन होना आरम्भ हुआ, और धीरे-धीरे इसी ने 'महर' पार्टी का संघठन कर दिया। कौमीकोनिवा का मुसल्लर सामय ही इसका केन्द्रस्थल था।

बीसवीं सदी के महाभारत (प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1919) के आरम्भ होने से पहले तक भारतीय विप्लववादियों का हल सबसे ही न सका था कि अंग्रेजों के साथ जर्मनी का विरोध इसी अन्धी उपस्थित हो जाएगा। फलतः इनके विप्लव

की तैयारी भी इस बंम से हो रही थी कि मानो दस-पद्महू बय के अनन्तर वास्तविक 'यदर' शुरू होया। यही कारण है कि ये लोग महासमर छिड़ते समय कान्ति के लिए पूरी धीर पर तैयार न थे। इसके सिवा अब तक के बिप्लवकारी दस के साथ भारत से बाहरी देश के किसी भी कान्तिकारी दस का कहने सायक कोई सम्बन्ध ही न था। इसका फल यह हुआ कि जब अमेरिका से कान्तिकारियों के दस-के-दस भारत में आने लगे तब भारत में स्थित कान्तिकारी लोग उनके साथ दिल लोमकर ठीक समय पर सम्मिलित नहीं हो सके। यदि ऐसा सम्मिलन हो जाता तो भारत का भाव्य धाज कुछ धीर ही होता।

अमेरिका प्रवासी बिप्लवपंथियों की समझ में नहीं आया था कि अंग्रेजों के साथ जमनों का पुत्र पीछे ही छिड़ जाएगा इस कारण उनकी तैयारी धीर ही ढग पर हो रही थी। वे समझते थे कि भारत से बाहर की किसी भाव्य राजनयिक की सहायता लेकर मुक्त की तैयारी करनी होगी और इसा संकल्प को कार्य में परिणत करने के लिए बहुत कुछ आयोजन हा रहा था परन्तु इसके लिए असमय में ही यूरोप में राजनयिक का मृत्यु होने लगा। इसके लिए ये तैयार न थे और धारा संकल्प एकदम बिफल हो गया। अब इन्होंने निश्चय किया कि बहरपाटी के दस के-दस भारत में पहुँचकर भारतीय सैनिकों को अपने प्रभाव में कर लें। बस, कान्ति का यही एकमात्र उपाय निश्चित हो गया। हजारों सिक्ख विदेश में पड़े हुए अपने बोरिए-बैचने समेट-समेटकर स्वदेश को रवाना हो गए।

इसके बाद भारत सरकार को इस पार्टी की बहुत-सी बातों का पता लग चुका था क्योंकि इस पार्टी के नेम्बर लोग अमेरिका में खुले खजाने समाधों में भारत में महर करने के सम्बन्ध में व्याख्यान दिया करते थे। 'यदर' नामक पत्र भी प्रकाशक रूप में मुद्रित होता था। सन् 1857 के महाबिप्लव की दसवीं मई एक उत्सव में परिणत की जाती थी। आभा हरदयास पर अंग्रेज सरकार की विरोध तय धृति थी। कई बार उनकी डाकघरी तक बड़ी सफाई से उड़ा ली गई। अन्त में जब उनकी फिरफार करने की सलाह हो रही थी तब एक अमेरिकन ने उन्हें सावधान कर दिया। अतएव हरदयास और भाव्य भारतीयों ने अमेरिका से हट जाने में ही मसा सोयी।

विभिन्न स्थानों के जर्मन एसबी (कीन्सल) उस समय भारत में बिप्लव मचा देने की इच्छा रखनेवालों की अनेक प्रकार से सहायता करते थे। अमेरिक

पाव-अपाव का विचार किए बिना ही ये लोच पंजाब में बिहोड़ की बातें कहने लगे। इस समय कलकत्ता की मामूली सड़कों पर भी मैंने सुना था कि पंजाब में विप्लव की ठीपारी हो रही है। 'जाएँ रखा कामून लगाते समय हाज़िर साहब ने इस बात का उत्सोह किया था।

इसी समय करतारसिंह ने धाकर बंगाल के किसी सुपरिचित सम्प्रतिष्ठ सार्वजनिक नेता से भूलाकात की। उन्होंने करतारसिंह को सप्रेम दिया कि तुम अपने सकल धोर सुनीते के अनुसार काम करते जाओ बस तो ठीक समय पर तुम्हारी सहायता करेगा ही। अब वह कहने में कोई बाधा नहीं है कि ये व्यक्ति सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे।

इस समय इन्हें थोड़े-बहुत हथियारों की जरूरत हुई। यद्यपि इस विप्लव का प्रधान प्रबन्धन पंजाबी सेनिकों के बल में तथापि धात्मरसा करने के लिए तथा सम्बन्ध प्रत्येक कार्यकर्ता को सक्षम रखने की इच्छा से कुछ रिवाज़र इत्यादि की आवश्यकता हुई। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए श्रीमंत जगत राम कुछ रुपये देकर काबुल की ओर ब्रजे गए और वहीं से कारागार की बन्धनार्थों ने उनका पलायन पकड़ लिया। बेचारे जगत राम पेशावर में ही पकड़ लिये गए और प्राये जलकर अस्मन में भुंके उनके बचन हुए थे।

छोटे परमानन्द को भी इन लोगों ने इसी काम के लिए बंगाल भेजा था पर वे भी काली हाथ बौट गए।

## 4 | पंजाब यात्रा

इस विप्लव की तैयारी के समय काशी में, बाहरी लोगों से मुलाकात करने के लिए पास-पास मकान थे। पंजाब से जो लोग मुलाकात करने आते थे वे पहले ऐसे ही बात मकान में पहुँचाए जाते थे। वहाँ से खबर मिलने पर वृद्ध धायन्तुक व्यक्ति को छिपकर पहुँचाया जाता था। सब सम्बेद्धन रखने पर उससे भेंट की जाती थी। मैं उस दिन काशी में ही था जब पंजाबी दल का एक मनुष्य वहाँ के विप्लव की तैयारी का समाचार लेकर हमारे पास आया। जब उसके मुँह से सुना कि विप्लव के लिए दो-तीन हजार सिक्का कमर बसे तैयार बैठे हैं तब हमारा अन्तरतम पुरुष धामन्द से बिरकने लगा। पंजाब के कार्यकर्ताओं ने धायन्तुक व्यक्ति द्वारा कहा था कि रासबिहारी की हमें बहुत जरूरत है। दिल्ली वद्वय के ऊपर असामी प्रविष्ट कर्मवीर रासबिहारो का नाम उस समय अमेरिका तक में विद्युत हो चुका था। इन लोगों ने अमेरिका में ही इनका नाम सुना था।

कई कारणों से उस समय रासबिहारी पंजाब न जा सके इसलिए पहले वहाँ भेजा ही भेजा जाना तय हुआ ताकि जब मैं पंजाब की दसा अपनी भाँखों देख पाऊँ और सबको वहाँ का हाल बताऊँ तब आगे का कृतव्य निर्धारित हो।

पहले ही निश्चित हो गया था कि मैं बालम्बर शहर में जाकर सिक्कों नेताओं से भेंट करूँगा। उस समय नवम्बर का महीना खतम होने का था। पश्चिम में ठण्ड का मौसम था। बड़ी धीतकाम के प्रातःकाल बुधियाला में गाड़ी, ही बैठा कि मेरे मित्र के परिचित एक सिक्क मुखकह्य लोगों की प्रतीक्षा

हैं। मिन मे इनसे मेरा परिचय करा दिया। यही करतारसिंह थे। वह पाड़ी में खड़ा होकर हमारे साथ बालम्बर की घोर खाना हुए। रास्ते में बोड़ी-बहुत बातें हुई। उनसे जानूँ हुआ कि इस समय लखियाला में दो-तीन सौ मनुष्य एकत्र हुए हैं। बुवा-बुवा काम करने के लिए वे सोय विभिन्न विद्यालयों में भेजे जाएँगे। वे लोग गुस्सारे में अध्ययन करने के बहाने एकत्र होते थे।

उस दिन की बात मुझे आज साँची स्मरण है। पाड़ी के उस हिस्से में हम कई छादमी एकत्र हुए थे, किन्तु सभी के मन का भाव कई तरह का था। हम तीनों अस्तित्व बीच-बीच में एकत्र बात कर लेते थे सभी किन्तु हृदय में न जाने कितने भावों का आशोकन हो रहा था। मैं रास्तेवर में यही सोचता था कि इस सिस्त्र हल के छादमी न जाने किस ढंग के होंगे इनकी शिक्षा-दीक्षा कैसी है। यह तो सुन ही चुका था कि इनमें बहुतेरों की उम्र तीस वर्ष की या इससे भी अधिक है, वे मुझे किस दृष्टि से देखेंगे (बशर्ते उस समय मैं कुल बीस वर्ष का था) वहाँ जाने पर मेरा मन पर कुछ असर भी पड़ा कि नहीं, इतने बड़े संसाह से उम्रमत्त मन संम को हम लोग किस न कार सुसयत करके अपना अधीष्ट सामन करेंगे ऐसे ऐसे संकड़ों प्रथम रास्तेवर भीतर ही भीतर मुझे कैर्शन करते रहे। साथ ही साथ एक आनन्द-स्रोत भी बर्म की घोट करके, मावो बिना जाने ही बहा चला जा रहा था कि इस बार जीवन का स्वप्न सफल होना चाहता है। सुप-मुगान्तर का खेवरा इस बार हट जाएगा किन्तु एक घोर बात को सोचते ही मानो खंका से मेरी देह कण्ठस्थ हो उठती थी वह यही कि बंधाम पात्र कितना पिडा हुआ है—इस मध्यमूम मस से कितने अन्तर पर है। बंधास की संकड़ों-झुंकारों वपों की कलक-कालिमा मानो गाड़ी होकर मुझे निरन्तर जलकती रहती थी। इसी से बंधाम में बाकर काम करने की मुझे बहुत इच्छा थी। और जाने दो उस बात को।

सुधियाना पीसे रह गया। अब हम लोग एक घोर स्टेसन पर पहुँचे। करतार सिंह ने 'कुसेटिन' नाम का समाचारपत्र मोल लिया। उसमें पढ़ा कि कमकला की सुसमान-पाड़ा मेन में मन की भीषण घटना हुई है। समाचार था कि अक्रिया पुलिस के डिप्टी सुपरिटेण्डेंट वीरुत बसन्त बटवर्मा के घर पर दो-तीन बम फेंके गए हैं। इससे एक हैड कोस्टेबल का पैर जड़ पया कुछ लोग घायल हुए, मकान की दीवार का कुछ धंसा जड़ जाने से गड़बा हो गया, घर के भीतर का पायइल का बहुत-सा सामान जड़कर पर धा बिरा घोर मकान के सामने का लासटेम का उम्मा

टूट-फूट गया है, इत्यादि। किन्तु बसन्त बाबू इस बार साफ बच गए। समाचार पढ़ने से बहुतेरे बातें मने समझ थीं। पंजाब का वृत्तान्त सिद्ध बुद्धि पर बंगाल की उस समय की दशा पर विचार करते समय इन बातों को ठीक-ठीक लिखने की इच्छा है।

इन कम शोभों के पढ़ने से भारत में चारों ओर देशभक्तों के बीच जागृति-धी देस पड़ती थी। सभी, कम से कम बहुतेरे, सोच समझते थे कि बड़े भारी विप्लव की दौड़ारी का यह ऊपरी लक्षण है और ऐसी घटनाओं से सबको ऐसे-ऐसे बलों का संगठन करने की इच्छा होती थी। उल्लिखित सम्वाद को पढ़कर करतारसिंह बहुत ही प्रसन्न हुए। परस्पर नेत्रों में बातचीत हो गई, एक-दूसरे की धारों के कोनों से घामन्द का धामास प्रकट हुआ। इस प्रकार हम लोग बालाभर स्टेसन पर पहुँचे। यहाँ करतारसिंह के कई छात्र मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमें जिनसे जो कुछ कहना था वह कह-सुन चुकने पर हम सोम रेस की पटरी को पार करके पास के बगीचे में गए, वहाँ पर इस बल के कई नेता उपस्थित थे। इनको देखने से मुझे बरोसा हुआ कि इन लोगों के बीच में मैं बिल्कुल ही कम खज्ज नहीं हूँ क्योंकि इनमें ऐसा कोई भी न जैसा जिसकी उम्र मेरी अपेक्षा बहुत अधिक हो। उस दिन वहाँ पर करतारसिंह, पृथ्वीसिंह भमरसिंह और रामरक्खा के सिवा सायद एक व्यक्ति कोई और उपस्थित था। करतारसिंह की उम्र उस समय उन्नीस-बीस वर्ष से अधिक न होगी। भमरसिंह और पृथ्वीसिंह दोनों ही राजपूत थे किन्तु मुझ से पंजाब में ही रहते थे। इनकी अवस्था बीबीस-पच्चीस वर्ष से ऊपर नहीं जैसी। रामरक्खा बाह्यन थे। इनकी उम्र भी इसी के लगभग होगी। ये सोय रासबिहारी से मिलने के लिए ठहरे हुए थे। मेरे पूर्व-परिचित मित्र थे इन लोगों के साथ मेरा परिचय करा दिया। मैंने पहले-पहल इनमें से किसी का भी नाम-धाम धारि नहीं पूछा। फिर तो बातचीत के सिमसिमे में मुझे सभी का नाम यादगुम हो गया। इपारे दल में ऐसी जाँच-पड़ताल करा सनेहू की वृष्टि से बेसी जाती थी और इस प्रकार नाम-धाम पूछना तो मैं बिल्कुल अनावश्यक समझता था। मित्र ने मेरा परिचय यह कहकर कराया कि रासबिहारी तो एक बास काम के मारे घा नहीं सके उन्होंने अपने बाहिने हाथ स्वक्य इन्हें भेजा है। करतारसिंह ने कहा कि हमें तो रासबिहारी से ही काम है। तब मैंने उन्हें समझाया कि यहाँ धामे से पहले यह वहाँ की दशा का पूरा-पूरा हाल जान लेना चाहते हैं इसके सिवा यह ऐसी दशा में है



बिससे धीर भी कुछ समय तक इस धीर न भा सकेंगे। इसके पश्चात् मैंने इन लोगों से पंजाब की हानत आगने के लिए पूछा—वे भोग कितने भारही हैं आपस में किस प्रकार मिलते-जुलते धीर मुसाफात करते हैं तथा उनका वास्तविक नेता कौन है इत्यादि। मैंने कहा “जो आपके पास ही नेता हों उन्हीं से मैं बातचीत धीर पहचान करना चाहता हूँ। कमरार्सिह ने कहा “सब पूछिए तो हम लोगों में वास्तविक नेता की आस कमी है धीर इसीलिए हमें रासबिहारी की जरूरत है। यहाँ पर हम कितने भारही भोजन हैं इनमें किसी को विशेष धमिलता प्राप्त नहीं है इससे हमारे काम का कोई लाभ सिखासिला नहीं बैठता। हमको बंयास से सहायता पाने की बहुत आवश्यकता है। बंयास में आप भोग बहुत दिन से काम कर रहे हैं इन कामों का आप लोगों को स्पष्ट अनुभव हो गया है।” कमरार्सिह ने भी इसे माना तो किन्तु कमरार्सिह को मकसद करके कहा, “देखा भाई यों हिम्मत क्यों हारते हो? काम के बरत देस सेना कि तुम्हीं में से कितने धिये स्तम निकलेंगे। उस दिन की बातों से मुझे साफ मालूम हो गया कि जिस महान् घट में वे लोग बीसित हुए हैं उसके मुख्य का अनुभव इनकी गठ-मग में भिन्न मया है धीर अपने में धमिल की कुछ कमी समझकर बाहर एक सहारा ढूँढ रहे हैं किन्तु उसके साथ मैं यह भी समझ गया कि इनमें यदि कोई सचमुच काम करनेवाला है तो कमरार्सिह है। मैंने इसमें बैसा आत्मविश्वास बैसा बैसा आत्मविश्वास न रहने से किसी के हाथ कोई बड़ा काम नहीं हो सकता। बहुतों में घटकार का भाव रहने पर भी ऐसे आत्मविश्वास का भाव कम बैसा जाता है। घटकार और आत्मविश्वास असम-अलग हो जायें हैं घटकार दूसरे पर थोट करछा है किन्तु जो घटकार दूसरे पर जोर-जोर किए बिना ही अपने प्राणों में धमिल के अनुभव को वापस करता है वही आत्मविश्वास है।

जो हो इन लोगों से मुझे पंजाब की बहुत कुछ हानत मालूम हो गई। उनमें से बहुतेरी बातों का बगन पहले किया जा चुका है। इनकी बातों से स्पष्ट हुआ कि इनके विप्लव की तैयारी का मुख्य अवलम्बन पंजाब की शिक्षा फौजों हैं। कमरार्सिह से बात हुआ कि भारत में अमेरिका से शिक्षार्थी का जो पहला रज प्राप्त या उषी में वे भी आए वे धीर शिस्तम्बर नहींगै से इस काम की तैयारी कर रहे हैं, इत्यादि।

यह कमरार्सिह ने मुझसे पूछा “अस्व-स्व आदि देकर के बंयास हमारी

कहीं तक सहायता कर सकता है ? बंगाल में कितने हज़ार मनुष्यों हैं ? इत्यादि ।

मैंने कहा “आप क्या क्यास करते हैं ? बंगाल में कितने धरम-धरम होंगे ?”

करतारसिंह, “मैं तो समझता हूँ कि बंगाल में काफ़ी हथियार भोजन कर लिये गए हैं क्योंकि बंगाल तो बहुत दिनों से विप्लव की तैयारी कर रहा है और हमारे इस के परमानन्द के एक बंगाली मित्र ने उन्हें पाँच सौ रिवास्वर का वस्त्र दिया है । इसके लिए परमानन्द बंगाल गए हैं ।”

मैं “जिन्होंने परमानन्द से यह बात कही है वह कोई कामतू यादमी बंधते हैं । क्योंकि बंगाल में कोई कहीं पाँच सौ रिवास्वर न ले सकेगा । जिन्होंने यह बात कही है उन्होंने तप्य उड़ा दी है ।”

करतारसिंह “तो फिर बंगाल हमको किस प्रकार की सहायता देगा ? तो क्या वहाँ भी पंजाब के साथ ही साथ गबर होगा ? बंगाल में आपके धर्म का करनेवाले कितने हैं ?” अथ किसी समय और किसी भी व्यक्ति को ऐसे प्रश्न करने का हम लोग मौका ही न दें तो ये और यदि कोई पूछ ही बैठता तो कह देंगे “हम बातों को जानकर क्या कीजिएगा, समझ लीजिए कि कुछ भी तैयारी नहीं हुई है, तो भी आप इस दल में संयुक्त होयें या नहीं ? आपको स्वयं आरम्भ से ही तैयारी करनी होगी इस दल में भी क्या आप इस दल में बर्ती होगा चाहते हैं ?” इत्यादि ।

हैं बंगाल में कहीं-कहीं कोई-कोई ऐसे भी वे जो विप्लव की जमी तैयारी की बातें बढ़ा-बढ़ाकर लोगों को सुनाते और इस तरह असोमन लेकर उन्हें इस में भर्ती करते हैं । जो हो करतारसिंह ने जब मैं प्रश्न किए तब उनको ठीक उत्तर न देकर टाल देना मुतासिल न मानूँ मुझा । मैंने कहा “देखिए, जिस प्रकार यहाँ आपके सैनिकों में भर्ती होने का व्यवहार मिलता है, उस प्रकार बंगाल में यदि हम लोगों को फौज में भर्ती होने का सुचीता मिलता तो अब तक कभी का भीषण विप्लव मच गया होता । बंगाल के दल में प्रधानतया मुन्क और छात्र-श्रेणी के सदस्य हैं और इस दल में हम लोग बड़ी ही सावधानी से, बहुत-कुछ सामग्री करके ऐसे लोगों को सम्मिलित करते हैं जो कि हर भड़ी मरने की तैयार रहते हैं । इसलिये हमारे दल में अधिक भावनी नहीं हैं । आपद हज़ार-दो हज़ार से अधिक न हों किन्तु यह बूढ़ विश्वास है कि जिस दिन आमतौर पर विप्लव शुरू हो जाएगा उस दिन हज़ारों यादगी हमारे साथ या मिलेंगे । यदि पंजाब में शर हो जाएगा तो वह भी निश्चित समझिए कि उस दिन बंगाल बैठ-बैठा तमाशा न देखेगा और भदों को बंगाल

के लिए इसी उलझन में पड़ना होगा कि सरकार अपनी कुल शक्ति पंजाब ही पर न लगा सकेगी।" मैंने यह भी कहा "पंजाब इस समय भी सरकारी खजाने भूट सकता है या पुलिस की बारकों पर आपा मारना इत्यादि काम कर सकता है किन्तु प्राप्ति क्या होगा? इस 'प्राप्ति क्या होगा' को खोजकर ही पंजाब ने अभी तक ऐसा कुछ नहीं किया।" मैंने इस सोचों को मसी मूर्ति समझा दिया कि "हम सोचों से सलाह लिए बिना अचानक कुछ कर न बैठना।" यह भी कह दिया "सब धावधानी से काम करना होगा जिसमें कि यह शक्ति व्यर्थ न हो जाय सिर्फ हुंहा करके किन्तु कामों में शक्ति बीज न कर दी जाय।" मैंने इन्हें सलाह दी कि अधिकांश व्यक्तियों से कहो कि अपने-अपने पाँव में बाँधकर रहें केवल मुश्कियों का धीर काम करने के लिए थोड़े-से आदमियों का समीप रहना ठीक होगा धीर सब सोचों को कई टुकड़ियों में बाँटकर प्रत्येक टुकड़ी पर एक-एक अधिनायक लगाकर ही बचाव। ऐसा संयोजन करने से बिना समय धावधकता होगी उस समय सब सोचों से धनावास ही काम लिया जा सकेगा। यदि इस प्रकार छोटी-छोटी टुकड़ियाँ न बनाई जायें तो गिरफ्तार हो जाने का सम्बन्ध हर बड़ी रहेगा।" फिर करतारविह से कहा "आप में से कोई एक व्यक्ति मेरे साथ बसे मैं उसे उस स्थान पर ले जाऊँगा जहाँ कि 'पसबिहारी' है। पसबिहारी के साथ अच्छी तरह समाह करनी है।" यह बात इन्हें पसन्द आई। सब निश्चय हुआ कि साहीर में पुष्पीविह से बुबाप मुलाकात करके उनको साथ लेकर पसबिहारी के पास भेंट करने को जाना ठीक होगा।

करतारविह ने हमारे यहाँ से कुछ रिवाजवर इत्यादि की सहायता माँगी। आत्मरक्षा करने धीर छोटी-छोटी सरकारी खजाने भूटने के लिए कुछ धन्य-धन्यों की शकल थी। अमेरिका से ये लोग जब स्वदेश को लौटे तब अनेक स्थानों से थोड़े बहुत रिवाजवर इत्यादि ले आए थे। अंग्रेजों की प्रखर दृष्टि रहने पर भी ये रिवाजवर देश में पहुँच गए थे। बास्ती की तली में लकड़ी या टीन का पट्टा लगाकर उसके बीच में धिपाकर रिवाजवर इत्यादि लाए जाते थे किन्तु कुछ दिनों में रिवाजवर लाने की यह तरीका बाहिर हो गई। कभी-कभी यह भी होता था कि भारत के बम्बरगाह में पहुँचने से पछा देर पहले वे हजियार लसाधियों के ज़िम्मे कर मुसाफिर बने पाते थे धीर फिर फुरसत तथा मोका देतकर उनके पास से पठा लिए जाते थे। इस रीति से इन सोचों के हाथ कुछ रिवाजवर पा गए थे।

किन्तु सभी हथियारों की जरूरत थी ही। मैं काशी से कुछ रिवास्तर घीर बोभिया लाया था। ये सब करतारसिंह को सौंपकर मैंने कहा कि इस बजत यही सामान पास था सो लेता आया फिर घीर भी ला हुआ किन्तु यह भी बता दिया कि हम सोमों के पास धस्त्र-धस्त्रों का अधिक संग्रह नहीं है। यतएव इस सम्बन्ध में अधिक प्राधान्य कीजिएगा।

मैंने बमगोलों के सम्बन्ध में उनसे कहा कि इस काम में बंगाली लोग सिद्ध हस्त हो गए हैं घीर बमगोलों की जिस ऊदर जरूरत होगी बंगाल देगा। उस समय ये लोग भी एक प्रकार का बमपोसा बनाते थे। पंजाब में सीसे की घीर पीतल की बनी एक तरह की बगलों मिलती थीं। ये बगलों ही पंजाबियों के बम का ऊपरी जोर थीं। इन बगलों के मुँह में पेंच या बगल का इस्त्रम लगा देने से बहुत पण्डी तरह बन्द हो जाता था। घीर इसका मसाला बड़ी बा जो कि पटाओं का है बगल पटास (कोरोट बाद्) घीर मनसिल। हिन्दुस्तान की बनी काँच की एक तरह की छोटी धीखी बाजार में मिलती थी। इसमें समस्त्रुरिक एसिड भरकर मुँह बन्द कर दिया जाता घीर इसे जोर में डाल दिया जाता था। यह धामूली बस्के से ही फट पड़ता था। मामूम होता है कि धस्त्र इसमें मसाले के साथ धस्कर भी डाली जाती थी। धीखी के टूटने पर एसिड पटास घीर धस्कर के संयोग से यह बमपोसा फट पड़ता घीर बगल के टूटने चारों घीर छिटाटा जाते थे। यह बम बीछा बावक नहीं था चोके जाने पर धस्त्र फटता ही नहीं था। जो फट भी पड़ता तो घादभी की जान लेने के लिए बहुत करके काफ़ी न होता। मैंने इन्हें समझा दिया कि बंगाल का बमपोसा बड़ा बिकट होता है। करतारसिंह ने कहा कि पंजाब के विभिन्न स्थानों में हमारे कुछ बमपोसे रहे हुए हैं जरूरत हो तो दिए जा सकते हैं। जब व प्राध्व के साथ लेने को तैयार हुए तो मैंने पूछा कि जब आपसे कहा मुझाकात होगी? तम्होंने उत्तर दिया कि "हमारे ठहरने का कोई निश्चित स्थान नहीं है।" इस पर मैंने पूछा "क्या आपका कोई केन्द्र नहीं है जहाँ पहुँचने से सब बातों का पता लग जाय? उत्तर 'नहीं' में मिला। मामूम हुआ कि ये लोग धमय-धमय काम से जैसे बाएँ घीर काम हो जाने पर फिर एक निश्चित स्थान पर आ मिलेंगे। यदि किसी कारण से इस प्रकार एकत्र ॥ मिल सकें तो मुझारे में ईदने के सिवा पता लगाने का घीर कोई उपाय नहीं। यह सुनते से मुझे बड़ा धक्का हुआ। मैंने समझा कि सायब मुझे सब बातें बतलाई

वहीं बा रही हैं। इस कारण अपनी रीति के अनुसार मैंने विशेष पुष्टताय नहीं की। इसके विषय में कुछ समाह भी न थी। बीजे सम्बन्ध पविष्ठ होने पर मामूम हुआ कि सम्बन्ध इनकी यही दशा थी तब उसका उपाय भी कर दिया गया था। उस वाम में वहाँ बातचीत हो रही थी पहुँचते ही मुझ जैसे गया था कि बासम्बर सहर में इनका कोई खास घरका नहीं है। जो सोय यहाँ उपस्थित थे वे सभी बासम्बर सहर के बाहर के थे और मिलने के लिए आए थे। यहाँ इनका ऐसा कोई स्थान न था वहाँ जाकर मैं धाराम कर सकता। इस प्रकार कुछ विमर्शना न रहने पर भी ऐसी ही मक्कह में वे उन रासबिहारी को बुलाना चाहते थे कि जिन्हें विरस्तार कराने के लिए उस समय साठे सात हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था। अस्तु, वे सब बातें सुनकर मैंने करतारतह के समस्त दिन किसी स्थान पर पहुँचने के लिए कहा वह राखी हो गए। निश्चय हुआ कि मैं उनकी प्रतीक्षा उसी स्थान पर आकर करूँगा फिर उनको साथ ले जाऊँगा और संरक्षित बन के बोले उनके सुपुर्द कर दूँगा।

बड़ी देरों सब सात अपना-अपना काम करने को बैठ पड़ गए। उनकी गाड़ी का समय हो गया था। मैं और मेरे मित्र दोनों एक होटल में गए। वहाँ मामूम हुआ कि मित्रकी मांस-मछली कुछ भी नहीं आते। इसलिए मुझे भी वाम और धाक-तकड़ी से ही संतोष करना पड़ा। पंजाब की तम्बूरी रोटीयाँ और दाल बहुत बढ़िया होती हैं।

मैं भी पहले मांस-मछली से परहेज करता था। नहीं कह सकता कि कितनी बार मांस-मछली खाना जिसकुल छोड़ दिया और फिर परहेज को भी छोड़ आता। इससे कुछ पहले की बात है "मैं एक बार हरिद्वार से आकर बसंहर बरधन पर रामूवाकी प्रतीक्षा कर रहा था। बहुरिष को तीसरे पहर की मारी से आने आने थे। स्थान पर सज्जा रिक्शमेंट-रूम था। मैं हाथ-मुँह और विर भोकर रिक्शमेंट-रूम में गया। वहाँ मैंने रोटी और तरकारी मानी। रोटीयाँ तो बढ़िया बछाही थीं किन्तु यह क्या—मांस क्यों से थाया? मुझे उस समय तक मामूम न था कि पंजाबी तोष पोष को तरकारी कहते हैं। क्या करता, बड़े पत्तोपेस में पड़ा। सोटावा तो किच तरह और के लोप ही इसका क्या मतलब समझते। सोच विचारकर मैंने सा भेने का ही निश्चय किया। बुलारा जब तीसरे पहर रामूवा के साथ आने को बैठा तब तम्बूने भी पोस रोटी की करमाइय की। किन्तु तुरन्त

ही मेरी घोर हैसकर धर्मस्फुट स्वर में कहा "ओह भुम तो मोठ साधाय नहीं । यह कहकर भुम बदमन को ये कि मैंने रोकर कह दिया कि धन भाता है तो धाने को घोर फिर सदने की घटना का वगन कम्के कहा कि उस वक्त तो राय चुका हूँ धन का इस वक्त न खाऊँगा ता खासा पाषण्ड होगा । किन्तु इसूना ने कहा "देखा इनमे मन म किसी तरह की ग्लानि न होने देना । उन नि से मैं फिर मांस नाने मय मया परन्तु मांस नान पर थी, तथा वध को हाथ से स्पस कर चुकने पर भी मैं मूर्खार जन्तु नहीं हूँ ।

जो हो तन्दूरी रोटीया घोर बड़िया दान लाकर जब मैं लुप्त हो गया तब घारीरिक स्वराज्य प्राप्त करके मैं तो करतारसिंह के लिए बम के पोने नाने को दूसरी घोर बता मया घोर मेरे मित्र महोदय साहीर की घोर रवाना हुए । मैं मन्तव्य स्वान में पहुँचकर अपने धड़े पर गया । यहाँ पर जो हमारा धादमी बा उससे मैंने जालम्पर में सिकल से भेंट होने बाबि का कुछ खिक नहीं किया निफं मही कहा कि मुझे बम के मोलों की जरूरत है एक सिकल महोदय घाएँ बह सन्धे ले बाएँ । सिकल नाम भुमकर वह उनिक किन्तुका घोर कहने लगा कि शाब पान सिकलों से जरा सोच-समझकर हैम-येन करना उन पर धाबकस सरकार की बड़ी सक्त बजर है । इस समय उनके संसर्ग से घलग घूना ही बना है । मैंने मन में सोचा कि बड़ी धाऊन है धन इस पर बिदबास करना ठीक नहीं घोर धन इमने कुछ बास्ता न रखा जाय । प्रकट रूप से उसकी हाँ में हाँ मिलाकर मैं ठीक निश्चित समय पर स्टेशन गया । यथासमय माही तो धा गई किन्तु करतारसिंह के दधन न हुए । सब दूसरी माही धाने पर फिर उनको बूँदा किन्तु फल एक-सा ही रहा । सारे स्टेशन में उनके लिए जसकर काटे धाँसे लाह-धाड़कर कितने ही लोगों के बेहरोँ को देखा किन्तु किसी का बेहरा करतारसिंह बीसा न बीक पड़ा । लाचार होकर डर पर सीन धाया । मैं तो जानता ही न था कि करतारसिंह से कहीं भेंट होयी संविन मया यह है कि उनके दल का भी कोई धादमी यह बात न जान सकता था ! बम के बोये जहाँ कं तहाँ रह गए । मैं साहीर को लोट गया । यहाँ चुपने भुमाकात्रियों से मिमा-जुमा घोर इमसे भी पजाब की दया जानने की चेष्टा की । इस प्रकार धनेक स्वानों घोर धनेक उपायों से जो कुछ संभव किया था उसकी धनेक बातें मैं धापसे कह चुका । शाम को साहीर के समीप एक सार्वजनिक स्थान में धूमवीसिंह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे उनसे मैंने करतारसिंह की बात कही । वह

भी उनका कुछ पता-ठिकाना न बताता सके। काशी जाने के सम्बन्ध में उन्होंने तीन-चार दिन की मुहलत माँगी। निश्चय हुआ कि पाँचवीं दिसम्बर को बहुपत्राज नेत्र द्वारा काशी पहुंचे। फिर उन्हें मैं रासबिहारी के स्थान पर ले जाऊँगा। मैंने इस समय भी इन लोगों को ठीक पता न बताया था कि रासबिहारी समूक स्थान पर हैं।

साहोर से रवाना होने के पहले मैंने अपने जिन पुरानी जान-पहचानवालों से मुलाकात और बातचीत की थी उनमें से एक व्यक्ति के सम्बन्ध में यहाँ कुछ कहना चाहता हूँ। चायप ये पंजाबी न थे। ये पहले संयुक्त प्रान्त में ही कहीं निवास करते रहे होंगे। ही भय पंजाबी हो गए व धीरे इनके वाचार-व्यवहार में पंजाबीपन घा गया था। इनका पूर्व परिचय मुने बिना करा ही भय न होता था कि वे पंजाबी नहीं हैं। बंगाल से बाहर सम्प्रान्त प्रान्तों में बहुतेरे पंजाबी रहने लगे हैं किन्तु वे सोय इसरी बस्ती अपनी विशेषता को को नहीं देते। तीन बार पुस्तक पढ़ा इससे भी अधिक समय तक भय प्रान्त में रहने पर भी अधिकांश स्वामी में बंगाली—बंगाली बने रहते हैं वनिक उन स्थानों में उनके मुहल्ले बस जाते हैं। किन्तु मैंने उत्तर भारत के लोगों को देखा है कि वे ऐसी जगह में भय प्रवेश में रहते-रहते बहुत जल्दी अपनी विशेषता छोड़कर जिसकुल उस देशवालों में विलीन जाते हैं। यस्तु, काशी नोटने के पहले इनकी बातचीत से मुझे इनकी चौड़ी-सी संकीर्णता का परिचय मिला। इससे मैं बहुत ही दुःखित हुआ। बहुत बातचीत करने के बाद उन्होंने दिल्ली-वदम्यवास मुकदमे का बयान करके कहा कि उक्त अवसर पर बंगाल से उक्त लोगों को कुछ भी भाविक सहानुभूति नहीं मिली यद्यपि उसी मुकदमे के प्रसंगी बसन्तकुमार के लिए गए भी न थे गए धीरे रीतिस्तर भी भेजा गया। कुछ-कुछ इसी रीति का अभियोग उन्होंने बंगाल पर लगाया था। यद्यपि भय बत समय की कुल बातें मान्य न थी क्योंकि दिल्ली पदम्यवास मुकदमे के कुछ ही पहले मैं इस दल में चर्चा हुआ था तथापि जो कुछ भय माधुम था वतक पमुठार मैंने कहा कि हम लोगों ने बत की धीरे मे किसी की कुछ सहानुभूति नहीं की न तो गए ही दिए वे धीरे न किसी रीतिस्तर को ही परधी के लिए भेजा था। बसन्त माधु के ही किसी विशेष मित्र ने अपनी धीरे से भय बत करके ऐसी सहानुभूति की थी। पंजाब के गए सिखा बत के सम्बन्ध में पूछताछ करने पर उन्होंने ऐसा उत्तर दिया मानो वे कुछ भी न जानते हों और उन्होंने जो कुछ कहा उससे स्पष्ट हो

बया कि उक्त दल असम्भव में ये सबया बनमित्र नहीं हैं। हाँ उसे मुझ पर प्रकट नहीं करना चाहते। मया यह है कि इस दल की बातें इनसे जानने का मुझ मयि कार था। इनकी बातचीत के रंग से यही व्यक्त हुआ था कि सिकनों का यह दल अपने बिचारों के अनुसार स्वयं सब काम कर रहा है यह किसी से कुछ प्रत्याशा नहीं रखता। मतलब यह है कि "बगल क्यों दाल भात में मूसमबन्ध बनता है?" जब मैंने यह पूछा कि "क्या इस समय पंजाब में रासबिहारी के पाने स काम में कुछ सहूलियत हो सकती है?" तो उत्तर मिला कि "हाँ अगर वह चाहें तो पा सकते हैं।" मैंने मन में सोचा कि "हाँ अगर चाहें तो! मैंने देखा कि रासबिहारी को भी इस ओर बुलाने का इनका चाग्रह नहीं है यद्यपि ये स्वयं उनसे बहुत दिनों से परिचित हैं। सिक्ख दल के कुछ नेताओं से परिचय करा देने के लिए उनसे धनु रोष किया तो उत्तर मिला कि "बड़े नेताओं में उनका कुछ परिचय नहीं।" लेकिन इससे पहले ये मुझसे कह चुके थे कि "लाहौर से संग्रह करके उक्त नेताओं को हम हथार दिया दे चुके हैं।" इस प्रकार ये जिस समय सिक्ख दल की बहुत सी बातें मुझसे छिपाने का प्रयत्न कर रहे व उस समय मैं मन ही मन मुसकरता था।

'मह' को हम कितना ही दूर हटाने की चेष्टा क्यों न किया करें, वह प्रकट रूप से या मनजाने में न मामूम दितन प्रकार से इसी तरह हमारे पीछे पड़ा रहता है। परन्तु, इनकी लकीरता देखकर कोई यह न समझ ले कि सभी पंजाबी इसी रंग के थे। असल बात तो यह है कि जो लोग वास्तविक कायकर्ता थे व अन्य प्रान्तवालों की अपेक्षा बंधासियों का कुछ अधिक स्नेह और प्यार की दृष्टि से देखते थे। मुझे तो ऐसा ही याद पड़ता है कि अस्थायी प्रान्तवासियों की अपेक्षा यहाँ तक कि बहुतेरे पंजाबियों की भी अपेक्षा ये सिक्ख लोग भागो बगासियों के प्रति विशेष रूप से घातुष्ट थे। मुझ तो बड़ी भवता है कि जो लोग कुछ करते करते नहीं थे ही समालोचना करना पसन्द करते हैं। मरे थे भिन्न महोदय हमारे कामों में बफसर भनैक तरह से सहायता तो दिया करते थे उसी परन्तु क्याबातर मैं हम लोगों से दूर ही रहूँगे न। इस कारण हम लोग भी समझे विशेष सम्बन्ध नहीं रखते थे। हाँ इस समय पंजाब की भीतरी दशा को जानने-समझने के लिए मैंने सभी के पास जाना प्रावस्यक समझा। बिपत्ति में पड़ने पर भी ये किसी युक्त बात को प्रकट नहीं ही करके हमारा हतमा बिस्वस्त हन पर बकर था और इस



बिरबास की सत्यता प्रभावित हो चुकी थी क्योंकि एक बार वे नक्कर में घा चुके थे।

अस्तु, अब मैं वह सोचकर कि विप्लव की तैयारी का यह तथा पर्व धारम्भ हो गया है। रेल में बैठकर काशी की ओर बढ़ा। रड्-रड्कर यह सोचता था कि कब काशी पहुँचूँ और उसका को कब साय हास मुनाऊँ।

पंजाब की दशा देखकर मैंने समझ लिया कि यदि बहुत हा पीछे इस गरीब व्यक्ति को संयत और सुसंवदित न किया जाएगा तो बहुत सम्भव है कि वे सिपल जौन बेनीके ही कुछ ऐसा कर देंगे जिससे सारी सक्ति और उत्तम हिम्मत-बल हो जाय। उस समय किसे खबर थी कि इतनी सावधानी रखने पर भी सब टॉय टॉय फिट हो जाएगी। 'इस जगत् में व्यर्थ कुछ भी जाता है या नहीं?' इस प्रश्न पर वहाँ विचार नहीं करना है। इस प्रकार सोचते-सोचते मैंने रास्ते में ही निश्चय कर लिया था कि जिसनी बस्ती हो उसके बाबा को इस छोटे से बस्ती में भेजना होगा और अपने प्रान्त में जो अब छावनिदों में—छोड़ो—काम धारम्भ करना होगा। भावे बसकर बतलाऊँगा कि हम जोशों में सब तक इस ओर क्यों ध्यान नहीं दिया था। मैंने सब मन में संकल्प कर लिया कि पंजाब में तो बाबा को भेजना और मैं स्वयं बंगाल जाऊँगा। बंगाल जाकर काम करने की मेरी बहुत दिलों से प्रवण इच्छा थी। इस विषय की बातचीत बाबा से मैं पहले कई बार कर चुका था किन्तु उनकी अनुमति नहीं मिलती थी।

पंजाब की सीमा को जाँचकर नाड़ी युक्त प्रदेश में पहुँची। शाम हो गई। मेरे डिब्बे में मुसाफिर अधिक न थे। शामद कुछ तीन-चार थे। उस समय दुनिया के पर्व पर यात्रा ही कोई जगह हो बहुत सीसनीसरी के कुक्षेत्रों की बातचीत न होती हो। मुसाफिरों में परस्पर जान-बहुतान हो जाने पर सुरम्भ युरोप के महासमर की चर्चा छड़ी। मैंने अपने एक साथी मुसाफिर से पूछा "आपके गाँव से कैसे रबस्ट भती हो रहे हैं?" उत्तर मिला कि "कीड के लिए अब बहुत नुकसान से जवान मिसते हैं। हालाँकि बिजली-बिखरी और इनाम-इकराम की भी कमी नहीं है। जोशों से यह दिया जाता है कि उनका हा माकूल मिलेगी और एक महीने की उन काहा पछपी दी जाएगी। कुछ मजिस्ट्रेट और धर्म्यान्त्र मज्जर देहात में इसके लिए बोरा करने जाते हैं। जो लोग कीड के लिए हजर-उपर से धान्य भी भर्ती करत देते हैं, उन्हें कासा कमीशम दिया जाता है। किन्तु यह सब होने पर भी धारमी नहीं

मिलते। जो लोग प्योड़ में मर्ती होने लायक हैं वे गाँव छोड़कर दूसरे गाँव में भाग जाते हैं। मैंने पूछा “क्या आपकी तरफ प्योड़ के लिए एक भी रंगस्ट नहीं मिला? उन्होंने उत्तर दिया “जो लोग बिसकुल ही नासमझ हैं व पहले तो लातन में धाकर मर्ती होना संभूर कर सेते हैं किन्तु जब सैनिक का सच्चा स्वरूप प्रकट होता है तब वे मौकरी छोड़ने की चेष्टा करने पर भी मौकरी ने चलन नहीं हो पाते। इस दसा में बहुतरे मनुष्य छावनी से भाग निकलते हैं। तब इसक लिए उन्हें पुलिस की सौख्य भोगनी पड़ती है।”

पंचांग की दसा भी मैं ऐसी ही सुन चुका था। वहाँ तो रंगस्ट मिलना और भी मुश्किल हो गया था।

इस समय मैंने एक बात पर विशेष रूप से ध्यान दिया—जंगल, बना सड़क छोड़ क्या हाट-बाजार, सभी जगह परिचित जमता में धर्मियों के प्रति तीव्र विद्रोह फैलता जाता था। एक दिन काशी में बस्ती से बाहर, बुरे की जमता पर बैठकर एक संयुक्तप्रवेशवासी व्यक्ति के साथ हमारे ही किसी काम की आलोचना हो रही थी। पास ही एक किसान पास छीम रहा था। बोड़ी बेर में देखा कि वह भीर भी समीप आ गया और नास छीमते-छीमते मुसकराकर पूछने लगा “धर्मियों का राज्य रहेगा भी या नहीं?” हम लोगों ने पूछा “तुम्हें क्या समझा है?” उत्तर मिला “बाबू भग ये हिन्दुस्तान में नहीं ठहर सकते इनका बस्त हो चुका। बाबू, जर्मन लोग कब तक धार्ये?” तब हम लोगों ने उसे समझाया कि जर्मनों के धान से हमारा कुछ फायदा नहीं किन्तु उसने फिर कहा “नहीं बाबूजी धर्मों लोग भग न्याय नहीं करते भग इनका जमा जमा ही भसा है।” इस पर हमको जो कहना चाहिए था वही कहा। यहाँ उसका उत्प्रेष करने की आवश्यकता नहीं। मैंने देखा कि ‘बाबू लोग’ यदि ऐसे लोगों की बातें सुनकर हँसें तो न मिभाते तो वे बाबूओं को जरा टेढ़ी नजर से देखने लगते थे।

## 5 | काशी में पुलिस के साथ सम्बन्ध

काशी में पंजाबमेल सीग बने पहुँची। मेरे ऊपर पुलिस की साव नजर रहती थी। सबैरे से लेकर नी-बस बने तक पुलिस या तो मेरे घर के दरवाजे के सामने ही धपका वहीं-कहीं समय-समय में बीटी रहती थी और घर से बाहर पैर रखते ही मेरी पतिविधि पर नजर रखने के लिए वह परछाई की तरह मेरा पीछा करती थी। घर में रहने पर भी मुझे बिलना-जुमना मोर्बों के लिए सहज काम न था। क्योंकि पुलिस जिसके साथ मेघ हैस-मेल देखती उसकी भी नियरामी उसी तरह करने लगती प्यती कि मेरी करती थी। इस कारण उन दिनों मेरे-जैसे लोगों के साथ मामूली डंप पर मोर्बों का बिलना-जुमना भी जुर्म समझा जाता था। ऐसा सक्त पहुँच रहने पर भी मैं इस प्रकार के काम करता रहता था। बंगाल से काशी बिमान में बम के गोले और रिवास्वर इत्यादि से घाटा और फिर वहाँ से पंजाब के विभिन्न प्रदेशों में इन चीजों को पहुँचाता था सभी काम इस सक्त पहले के बीच होते रहते थे। पुलिस की धोखों में भूल भोंकना हम लोगों के लिए साधारण-सी बात थी। धाये की बायें सियम से पहले यहाँ मैं कुछ से सटके निश्चता हूँ जिनसे मानुम होया कि किस प्रकार हय लोग पुलिस के पहुँचाने को प्रकाशे थे।

पुलिस की नजर से बचने के लिए हमारी सबसे बढ़िया हिकमत यह थी कि पहले तो घर से निकलते समय ही होशियारी से किसी तरह पहुँचाने को बाखा दिया। यदि घर से गाना होत समय पहुँचाने की नजर न बपा सके तो यह किमा कि उस घर न तो रख बा कुछ जान दिया और न इन के किसी व्यक्ति से

ही मेट की। उस समय या तो अपने किसी सहपाठी के घर चले गए या हाट बाजार में जाकर खकरी खोदा-मुलुक में ऐसा चित्त मथा दिया कि बरबासे समझते कि 'याब तो सलीम का ध्याम मूहस्वी के कामों की धोर बैठरह लवा हुआ है।' अपना कारभाइकेस काइदारी में जाकर मासिकपत्रों धोर समाचारपत्रों की खेर करके फिर जहाँ-के-तहाँ अपने घर आ गए। बाजिरी हिफ्तत वह भी कि बदि मर्मी का मौसम हुआ तो घर सोटकर थोड़ी-सी मासिक की धोर जाइदारी के पब्लिश बन में देह लवा मन को धीतम करके पहरेबासे को सहज ही छूटी दे दी सहज इसलिए कि किसी किसी दिन बेचारे को हमारा पीछा करते-करते नाकों बने बचाने पड़ते थे। इन पहरेबासों में से प्रायः किसी के भी साम में अत्यन्त विरोध न था। मौख से मौख पिमते ही मैं मुसकरा देता था। कभी तिमजिसे की लिङ्की से झककर मैंने देखा था कि बेजो पहरेदार किछ धोर गया कर रहा है और ठीक इसी समय उसकी भी मकर मुक पर पड़ गई तब मैंने अपने को खोस दिया। हुज्जत नीची निगाह करके टहमते हुए घर के सामने से मुसकराकर कुछ धाने बढ़ गए। ऐसा भ्रष्टर होता ही रहता था। इन पहरेदारों को बोला देने में भी मजा आता था और बोला देने में विप्ला हो जाने से भी हँसी-मजाक का मसाला हास लगता था। किन्तु किसी किसी दिन इसदेख निगाह की बधोलत काम में पड़बड़ हो जाने से इन लोगों पर जोश भी कम न होता था। इन्हें हम लोग जब तब समझाया करते कि भैया किसी तरह नौकरी खोजो, मला इस तरह दिन भर दरवाजे पर डटे रहना कहीं की मजमनगी है? घरबासे धीर टोले-मूहस्वेबाले बना गया कहेंगे? सरकार समझती है कि हम लोग न जाने कौन-सा सठरमाक काम कर रहे हैं सो यह उसकी प्रसती है। बी हो तुम अपनी नौबरी करो किन्तु माहक हम लोगों को इस तरह मत सताधी। इन बातुओं में भी बहुतरे भले प्रादमी थे। वे लोग हम से इतनी नम्रता और सम्मता से बातचीत करते कि उन पर हमें तनिक-सी भी दुकन न थी यहाँ तक कि उनको देखने से सहानुभूति का मास मन में आ जाता था। वे लोग भी भ्रष्टर सिर्फ नौकरी के लिहाज से साम, सबेरे या दोपहर के मकसद बनकर लमाकर या तो मेरे घर के पास ही किसी जली में घाउप से बँठे रहते या सड़क पर किसी दुकान में बैठकर यय-यय किया करते थे। वे सिर्फ एक बार इतना ही पता लगा मेले थे कि मैं काशी में ही हूँ न। किन्तु जो हम लोगों को कहीं बाँटे देख सेते तो पीछा करने से भी बाज न आते थे। फिर कोई-कोई तो

इस तरह हमारे पीछे पड़ता मानो हम उसके बम्-बम्माभर के बंदी हूँ। तब हम लोप भी इन्हें झकड़ाए बिना न रहते। कभी-कभी स्वा करते कि यो हो बन्दर काटकर एक घसी से दूसरी में जाकर एकाएक बीच में बूस बाते घोर पूर्वी से निकसकर न जाने किस घोर बावब हो बाते। बहि सुनिषा पुनिष का कोई बारोवा हम सोचों को इस प्रकार—बिना पिछलग्गू के—धूमते-फिरते देख सेठा लो उस दिन हम घर नहर रखके को को सिपाही लगात होता उसे वस्त-मुस्त का बासा मचा बचाना पड़ता।

लगातार बासूचों के साथ वह घास-घिभीनी का-सा ठेस ठेसते-बेसते हुए लोचों में यह बाखियत पैदा हो गई थी कि इन लोचों को देखते ही माप लेते थे कि यह बासूच है। एक लो लकी बाते प्रकट हो गई हैं इसलिए अब साफ सामुह हो गया है कि हम कभी पुनिष के बकमे में नहीं पाए, सिर्फ इमारत बीछा करके ही पुनिष एक भी भए घाघमी का पता लगाने में समर्थ नहीं हुई। हम पर जिस समय बम का-सा कड़ा पहारा रहता था उसी समय हम लोप बम के बोले घोर रिवाजवर सेकर काशी के विभिन्न स्थानों में घाते-जाते रहे हैं घोर इन बीचों को बाहर से कापी में लाये भी फिर बाहरी से बाहर भेज भी दिया। मैं एक दिन सबेरे घर बाहर था। घर के पास घाते हो एकदम मेहिया बिनाय के बारोवा के सामने आ पड़ा। बारोवा धकैसा न था उसके साथ उसका एक अनुचर भी था। बुझपर नजर पड़ते ही वह मुसकन्नाकर घाने कड़ा घोर मेरे पास आ कड़ा हुआ। मैं भी उसी तरह हँस हँसकर सबसे बातचीत करने लगा। 'बया मानिम बाक करने लघदीकले बएवे?' मैंने भी कहा 'की हां बरा बूम-बाम घाना हूँ।' 'मह स्वा है?' कहकर मेरे मुक-पकित की एक छोटी-सी किताब की घोर उसने धनुषी से इशारा किया। मैंने उसी बम किताब निकालकर बारोवा का दे दी। उसने मैपोलियन की कुछ बक्तियाँ घोर ऐसे ही दो-एक धम्य विस्वात बुझों के बीचन की कोई-कोई वियेय बटना मिली हुई थी। उसने बूम देख-बातकर मुझे किताब लौटा दी। फिर मूतकटाकर हम लोप घपनी-घपनी राह दे गये। उस दिन घोर उसी समय मेरे कोठ के भीचेवाले बॉकेट में बलकाटन (इस कपात से बम बलाने की बत्ती का पसीता बगठा है) घोर इसी किस्म के अन्धान्य जीवध पदार्थ गेरे हुए थे।

घूर से नहर पड़ते ही हम लोप साह सेते थे कि यह पुनिष का घाघमी है।

पुनिसी पहरेदारों को तो उनकी जूतियों से ही पहचान लिया जाता था। फिर याबातर उनके सिर की टोपी, चलने का ढंग और हाथ में छड़ी सेने की रीति—पुनिसी विशेषता के कारण—हमारी दृष्टि को जोड़े से बचा लेती थी। कभी-कभी पुनिसी साधियों के कारण ये लोग पहचान लिए जाते थे। सड़क पर चलते समय स लोगों को कुछ ऐसी भावत पड़ गई थी जो कि जैसे से लौट जाने पर भी बहुत दिन तक बनी रही। वह वह कि सड़क पर चलते समय एकाएक किसी जगह ठहरकर किसी व्यक्ति से बातचीत करने लगे और उसी घबराहट पर भागे-पीछे हुए ठहरकर एक बार-बार-बार-बार ऐसा किया कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है। सड़क के मोड़ पर जाकर पीछे मेदमरी निगाह डालने की जो भावत मुझे पड़ गई। उसके लिए अभी उस दिन लोगों ने कुछ मजाक किया। भयवा कोई भीज मोलने के बहाने किसी दूकान पर ठहरकर या किसी और ढंग से चलते चलते एक-एक करके भागे-पीछे देखे बिना मैं रास्ता चमता ही न था। मैं इस बात का ज्ञान हुमेदा रखता था कि मेरी समिक-सी भी पत्रगत से समूचा रस तहस-नहस हो सकता है। किन्तु चलते-चलते ठहरे बिना कभी पीछे मुड़कर न देखता था। यदि एक ही नेहरे पर कई बार लहर पड़ती तो उस पर तुरन्त सन्नेह हो जाता और मैं अपने सन्नेह को आचने के लिए किसी मुनठान गली में जा निकलता। उस समय तो पीछा करनेवाला पकड़ लिया जाता यागी बिपनास हो जाता कि यह बासूस है भयवा उसे लाचार होकर पीछा छोड़ देना पड़ता था। अपना पीछा करनेवाला को जब इस तरह हम जमुन में फीम सेते देख कि किसी तरह उसे मोला दना ही हयादा रहता काम होता था। ऐसे भीके पर जकमा देने का खास ढंग था मुनठान रास्ते पर चलते-चलते एकाएक किसी भीड़ भाड़ की जगह में जाकर घायब हो जाना। इसके सिवा जर से चलने के पहले ही मैं कुछ चौकला हो जाता था और जिस दिन खास काम होता उस दिन तो बड़े लड़के जर से चल देता था। जब लौटकर घर जाता तो देखता कि मेरा पीछा करने के लिए तैनात किये गए पहरेदारों पर को बंदे हुए इस तरह बैठ हैं गोया मैं जर के भीतर ही हूँ।

पुनिस के साथ मेरा ऐसा ही सम्बन्ध था। ऐसी ही बया में तीन बजे दिन का मैं काशी या पहुँचा। पुनिस की मजूर बजाकर घर गया और फिर वहाँ से बादा के बेरे पर। रासबिहारी उस समय काशी में ही थे। किन्तु पुनिस को उस समय स्पन् में भी हमारी पतिविधि की कुछ भी जानकारी न थी।

बाबा से सलाह करने पर निश्चय हुआ कि मुक्त प्राण के संनिकों में भी काम के बिचार फैला दिये जायें। और संगस को पंजाब के विद्रोह की खबर बहुत जल्द दे देनी चाहिए। पाँचवीं दिसम्बर की रात बोही जाने लगी क्योंकि पुष्पीसिंह से बातचीत हो जाने पर संगस को मेरा जाना निश्चित किया गया था। इस बीच घन में इस रात में लया कि काशी की छावनी में—बागको में—किस प्रकार पेटी रसाई हो। दो-एक दिन के बाद अखबार में पढ़ा कि अमेरिका से लौटे हुए कुछ सिक्ख लगे में सवार हो एक गाँव में जा रहे थे। उन्हें करके पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने गई तो उनके पास बैरिवास्त्र इत्यादि वस्त्र बरामद हुए। फिर पुलिस जब उन्हें गिरफ्तार करने को तैयार हुई तब सिक्खों ने लौनी चलाई जिससे एक विपत्ती बहुत घायल हो गया। बाब को मामूम हुआ कि ये किसी खजाने को सूटने गए थे। किन्तु इनकी 'होखियारी' की 'शारीक' करनी पड़ती है कि इन पर गजर पड़ते ही पुलिस को धक हो गया।

प्यास देने की बात है कि इस बीड़े पर बाँधवालों ने पुलिस को सहायता दी थी। बाँधवालों ने समझा कि पुलिस मामूली ठगवटों और चोरों को गिरफ्तार कर रही है। वह इसी बीड़े में आकर उन्हें पुलिस को मदद दी थी। इससे कुछ दिन बाद की एक घटना का ज्ञान सुनिए। उस समय बिप्लव की ठमारी का मण्डा फूट चुका था। सारे पंजाब में घर पकड़ की धूम से विभिन्न कोलाहल मचा हुआ था। पुलिस भाई प्यारसिंह नामक एक सिक्ख बुढ़क को गिरफ्तार करने की छिड़ में थी। एक दिन ऐसा हुआ कि पुलिस का एक बुढ़सवार एक मुढ़क के पीछे बैठहाया बोबा दौड़ाए जा रहा था। इस पला में वह बुढ़क तीन मील के समय पौड़ा। पीछे की दौड़ से बाजी मारने में वह असमर्थ होने पर जा कि उसी के बाँध वालों ने आकर उसका रास्ता रोक लिया। पलसर में पुलिस के सवार ने आकर बहुत बियों से भागे हुए आत्मायी भाई प्यारसिंह को गिरफ्तार कर लिया। बाँध वालों को जब यह मामूम हुआ कि उन्होंने जिन्हें गिरफ्तार कराया है वह उन्हीं के बाँध के सुपरिचित और समी के परमप्रिय भाई प्यारसिंह हैं तब उनके पछताने का प्रयत्न न रहा। जो मोघ कमी इस भाई प्यारसिंह से मिले हैं वे इसके चरित्र की मधुरता से अवश्य मुग्ध हुए हैं, और उन समी को स्वीकार करना पड़ता कि इनका 'प्यार' नाम सीलहों जाने ठीक है। बीठे ये स्वभाव से नम्र थे बंसे ही इनके चरित्र से एक आश, समायित संयत तैज का आनास मिलता था। बाँधवाने

उपयुक्त इनके गुणों पर सदृष्ट्ये और विवादा की मर्जी देखिए कि जूही युव-मुग्ध  
प्रायवालों ने प्राप्ति अपने हाथों अपने प्यारे को पुसिस के पंज में बँसा दिया ।

घसृ पंजाब में गिरफ्तारियाँ होने की खबर पढ़कर हम लोग रुचित् बिज  
लित हुए क्योंकि हम साथ हरदय यही सोचते रहते थे कि ऐसा बड़िया मीठा  
तनिक-नी मूस से कही हाथ से न निकल जाय । इधर अपने दल के उन्मुख दो  
एक सड़को से हमने अपने निश्चित काम की बातें कहीं । इस समय स हम सोचों  
ने और सब कामों से ध्यान हटाकर अपना साथ सामग्य र्चनों का मन परि  
ब्रजन बरन की बन्ना करने में लगा दिया । मैं एक ग्नि अपने एक महाराष्ट्रों निज  
के साथ फौज की बारकों की ओर गया । हम लोग सीधे बारकों में नहीं गए  
पहले छावनी स्टेशन पर पहुँचे । यह इसलिए किया कि यदि कोई हमारा पीछा कर  
रहा हो तो स्टेशन पर जाने से बारकों में जाने की हमारी इच्छा उसे न मामूम  
हो । स्टेशन पर पहुँचने के बाद हम लोग रेल की पटरी के किनारे-किनारे बारकों  
की ओर बने । स्टेशन पर पहुँचने और वहाँ के लम्बे प्लेटफार्म की उप करने में  
साफ मामूम हो सकता था कि हमारा पीछा तो नहीं किया जा रहा है । और जब  
मैं रेल की पटरी के किनारे-किनारे चलन लगता था तब तो कुछ धिप ही न सकता  
था । फौज की बारकों में जाते-जाते समय किसी भी दिन हमारा पीछा नहीं किया  
गया । रेल की साइल फौज की बारक के पास से रैंगट्रंक रोड को काटती हुई  
जमी गई है । रैंगट्रंक रोड के मोड़ पर जाकर हमने देखा कि वो मुवा मिस्कर  
बारक से निकलकर, मायब बाजार की ओर जा रहे थे । हमको अपनी ओर घाव  
देखकर मैं लोग खड़े हो गए । मैंने इन लोगों से कितनी ही बातें पूछीं । कुछ प्रश्न  
व हैं—‘आप कहाँ जा रहे हैं ? आपकी पसलन का क्या नाम है ? आपका इकलवार  
कौन है ? इस समय पसलन में कितने बरान हैं ? इससे पहले आप लोग कहाँ थे ?  
यहाँ ने कहीं बहरी बन्नी तो नहीं होनेवासी है ? गोरों की बारको में कितने सिपाही  
हैं ? और यहाँ की छावनी में आपकी माए गिनना समय हुआ है ? इत्यादि । सभी  
प्रश्नों के उत्तर देकर उन्होंने मुस्कराकर पुछा—‘य बातें आप क्यों पूछते हैं ?  
हम पर हमला तो न कीजिएगा ? तब हम लोग भी इसलिए लिसलिसाकर हैं  
पड़ कि जिसमें इस उच्च हास्य के अनन्तर इन लोगों के मन में हमारे किये हुए  
प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ खटका न रहे । वे साथ अपने रास्ते लगे और हम और  
बीरे सड़क पर बारकों के पास से होकर जाने लगे । बारकों में जाने की हमें हिम्मत



न हुई। इतने में देखा कि एक घीर तिकल सड़क को तरफ घा रहा है। चपरे हबलदार की बाबत पूछा तो वह बारक के एक स्थान की घोर भगुनी से इशारा करके हमसे वहीं जाने को कहकर चला गया। अब हमने सोचा कि शामक बारकों में बाहरी सारथियों के जाने-आने की रोक-टोक नहीं है। किन्तु फिर भी बारक में किसी से कुछ भी परिचय न होने के कारण उस दिन वहाँ जाने की हिम्मत न हुई। हिन्दुस्तानी घीर भरोखी फौज की कुछ बार्ते मान्य करके हम सोम उस दिन वर की मोर सौट पड़े। काशी में तिकलों की बसटन देखने से मुझे उस दिन बहुत ही अस्ताह हुआ क्योंकि पंजाब में जाकर मैंने देखा कि तिकलों को बड़ी सर सता से चलेवित किया जा सकता है। इसके तिका वह भी सांचा कि यदि वह पलटन यहाँ कुछ दिन तक बनी रहे तो पंजाब से तिकल नेताओं को यहाँ बुसाकर सहाज ही काम कर लिया जाएगा। उस दिन मेरी एक यही कामना थी कि वह तिकलों की टुकड़ी कुछ दिन तक घीर वहीं बनी रहे। इन दिनों कोई भी सेना की टुकड़ी एक स्थान पर बहुत दिनों तक न रहने पाती थी। वह टुकड़ी भी बोड़े ही समय में कितनी ही सारथियों की घीर कर भाई थी घीर कुछ भरोसा न था कि न जाने किस दिन यहाँ से कूच करके का हुजम हो जाय।

इसर दिसम्बर की चौथी तारीख भा गई। मयासमय स्टेसन पर जाकर देखा कि पंजाब सेल थक-थक करती हुई प्लेटफार्मे पर घा गई। मन में तरंग उठी कि हमारे विप्लव की तैयारी के छाव इंसान का बहुत बना सम्बन्ध है, इसी से उसका प्रचंड वेग देखकर मैंने सोचा कि माना पंजाब के विप्लव का समाचार लेकर वह पावस की तरह दीकठा भा रहा है। अब पंजाब की चिनवारियाँ इसी रम बाउ की बात में इस प्रान्त में भी फल जाएंगी। किन्तु भाड़ी में पृथ्वीसिंह क बर्धन न हुए। उनको बहुत दुःख किन्तु कही न देख पड़े। तब पंजाबियों पर बहुत कोप हुआ कि इन्हें बसत की कद्र मान्य नहीं। अब क्या किया अब ? उन लोगों को बुझा सहाज काम नहीं है। जाकर बाबा को सब समाचार सुनाया। यह अनुमान किया गया कि किसी कारण से पृथ्वीसिंह घाय यहाँ न पहुँच सके होंगे। इसलिये मैं अगले दिन फिर स्टेसन पर गया किन्तु घाय का नाम भी खर्ब हुआ। तीसरे दिन जाने पर भी भेंट न हुई।

## 6 | माव और कर्म

दादा से सलाह करके अब मैं बंयास को बना गया। वास्तव में देखा जाय तो दादा ही सारे उत्तर-भारतीय हिन्दव-ग्रन्थ के नेता थे। तथापि दत्त की पुरानी पद्धति के अनुसार उन्हें अपना कार्यक्रमों और भी दो-एक व्यक्तियों पर प्रकट करना पड़ता था। उसविहारी पहले ग्रन्थालय सत्रों की भाँति दत्त के एक साधारण कार्यकर्ता ही थे। लेकिन वह धीरे-धीरे अपनी धर्ममय कार्यकुशलता से सबकी जानकारी से बाहर धार्मिकजीवन की रीति से संयोजन करते रहे और एक दिन बहुत-से कामों का भार अपने ऊपर लेकर वह नेताओं के सम्मुख प्रकट प्रकट हुए। यस्तु अब पंजाब का पर्व समाप्त करने के पहले बंयास की चर्चा न खेहूँ।

इस समय हमारे दत्त का विस्तार पूर्वी बंयास की अन्तिम सीमा से लेकर अब पंजाब में प्रवेश करने की सूचना है रहा था। अपने प्रधान नेता और पूर्वी बंयास के कुछ नेताओं को पंजाब का नया समाचार सुनाने के लिए मैं बंयास को भेजा गया। किन्तु कलकत्ता में उस समय पूर्वी बंयास का कोई भी व्यक्ति न मिला। अतएव मैंने उचित स्थान पर खबर कर दी कि जितनी बस्ती हो सके, पूर्वी बंयास का कोई व्यक्ति काही जा जाय। फिर केन्द्र के नेताओं के पास जाकर मैंने पंजाब का सारा समाचार विस्तार के साथ कह सुनाया। उन लोगों में एक मण उत्साह की तरंग मैंने देखी सही किन्तु पूरे समाचार पर वे सोच उस समय विचार नहीं कर सके। बहुत रात तक जातपीठ होती रही। यदि सचमुच बिद्रोह हो जाय और फिर यदि ऐसी दशा हो कि आगने-सामने कुछ न करके हम पीछे हटना पड़ तो उस समय हम मोबा को कहाँ धारण मिलेगा? हम लोगों को रख किस प्रकार मिलेगी और परस्पर सम्मन्ध-सूत्र किस प्रकार से रक्षित रहेगा?—इत्यादि अनेक विषयों

पर जो बातचीत हुई थी उसका यही पर उत्सर्ग करने से कुछ लाभ नहीं। उस समय भी सिक्खों के इस विद्रोह से भारत में बने या रहे थे और उनमें बहुतेरे सोय कमजोरी में कुछ दिन तक शिव्याम करके पंजाब को बने जाठे थे। मैंने नेताओं से कहा कि इन विद्रोहों से घाये हुए सिक्खों से सर्वोत्तम स्थापित करने की विवेक रूप से चेष्टा कीजिए। इस बात पर भी विचार किया गया कि धर्म बहुतबलव शक्ति के बोल बहुत अधिक बोलने पड़ने और उसके लिए धर्मी से तयारी शुरू कर देनी चाहिए।

अन्त में हम लोगों के बहुत पुराने—किन्तु फिर भी 'निठ-बए'—घातम नयर्पन योग की चर्चा निकली। जब एक बार इसकी चर्चा निकल पड़ती थी तब फिर अस्व समाप्त न होती थी। याद करने ही एक ही और सब लोक एक ही प्रादुर्भूत से प्रबोधित हों तो भी वही एक बात एक ही याद मिल-मिल-मिलती है। मैं किन्तु ही कई रीतियों से विकसित होने की चेष्टा करता हूँ। जबकि एक याद के उपासक होकर भी उसी एक मार्ग के पवित्र होने पर भी हम लोगों के बीच परस्पर अस्व स्वातंत्र्य में मतभेद रहता था। जानेवाला तो एक ही है किन्तु वही एक स्वरसहरी पाँच श्रोताओं के लिए किन्तु प्रकार की मूर्च्छना उत्पन्न नहीं कर देती। मैं तो काँड़ी रहता हूँ किन्तु बेयस भी क्या कुछ कम रहता है? जिस प्रादुर्भूत से प्रबोधित होकर हम सोय अपने व्यक्तिगत और समष्टिगत जीवन को नियमित कर रहे थे उस याद-शीत की तरंग यद्यपि एक ही स्वर से धाती थी तथापि उसने विभिन्न धाराओं में अपनी विविधता की महिमा को स्वर रखा था। हमारे प्रादुर्भूत सम्बन्धी छोटी-बड़ी बातों के अन्तर्गत में किन्तु ही रातों की रातें कई हैं फिर भी इनमें सुलभ नहीं हैं। एक व्यक्ति दूसरे को कुछ-कुछ समझकर जब घर से बाहर निकल जाता तब जया की भाँतिमा अचानक पून की तरह पूर्व स्थिति में दौल पड़ती थी। रास्ता चलते-चलते जब नींद से घनताई हुई धारों पर पसके मिरने बगरी तभी मामूम होता था कि इसकी पकबत हुई है। रात बीतने से पहले ही इन केन्द्रों से हट जाता पड़ता था और सबेरा होने पर अनेक काम करते हुए भी रात की आशाचना का प्रत्यक्ष बुझा बातचीत करने के लिए नानो प्रतिक्षण अवसर ढूँढता रहता था और कभी-कभी दिन को काम-काज करते समय न जाने कब सोय की वह भावना आकर हम पर प्रभाव जमा लेती थी। इस प्रकार याद और कर्म के जोड़क घावे में हमारा विविध जीवन व्यतीत और पण्डित होता जाता था।

## 7 फौज की वारकों में

काशी में बापस घाने पर हाथा से ज्ञात हुआ कि काम मजदूरी में होना या रहा है। उन्होंने कहा 'शाम ही दोपहर के बाद घमूक बाग में एक सिपाही घाने वाला है तब घाम बड़ी जाना । यह भी सुना कि वह पसलन काशी से बदल गई है और उसकी जगह पर नई पसलन आई है । मैं दोपहर के बाद उसी बाग में पहुँचा । उस बाग में मुझे एक मित्र से मेल मिला । मैंने रास्ते में उनसे पूछा कि इस का परिचय इन लोगों के साथ किस प्रकार हुआ ? मित्र ने बतलाया कि 'ये सोम बाजार में सींग सेने घाते थे एक दिन घामनी की घोर जाते समय रास्ते में घाते इन्हें देखा । तब हम सोम भी इनसे बातचीत करते हुए घहर की तरफ लौट पड़े । रास्ते में वर्तमान मुठ-सम्बन्धी बहुत-सी बातें भी हुईं । हिन्दू-मुसलमानों से सम्बन्ध बहुतेरी बातें भी हुईं । हिन्दुओं की वर्तमान दुर्दशा और घबरावत की बर्णना करते करते हम लोग बस्ती में आ पहुँचे । इस प्रकार पहले दिन घाम-बहान हो चुकने पर उनका नाम-घाम पूछ लिया गया और कहा गया कि घामसे ज़रूरी काम है इसलिए किसी दिन तकनीक कीजिएगा । बस उस दिन इतनी ही बातचीत हुई । दूसरे दिन वे सोम फिर रंगाना नहाने के लिए बस्ती में आए । उस दिन हम लोगों ने उनसे अपनी नीतरी बातें कह सुनाईं । बहुत कुछ बातचीत हो चुकने पर उन्हें समझाया गया कि वर्तमान मुठ में विदेश में जाकर विधियों के भले के लिए प्रायश्चित्त की घयेन्द्रा स्वदेष्ट में स्वधर्म के लिए प्रायश्चित्त देना हजार बरों घच्छा है । इसका उन पर बहुत घच्छा घसर पड़ा । घासानी से काम बन गया । पसलन में जाकर अपने देहवासों से इस विषय की बातचीत करके वे घाम भिसने को घाने वाले हैं ।

बोझी ही देर बाट ओही बी कि देखा, एक मनुष्य हाथ में लौटा लिए जमा था रहा है। बिज ने कहा, "यही तो है।" ये घिर से पैर तक सखेय कपड़े पहने हुए थे, माथे भीतर की मिथुनता बाहर भी प्रकट हो रही थी। इनसे बातचीत करके मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। हिन्दुओं की स्वभाव-विशेषता मानो इनकी देह में मिटी हुई थी। इनमें एक उत्कृष्टता और उत्साह का भाव मैंने देखा किन्तु उसे जमा इन्हें छू तक नहीं गई थी। उस दिन इनके साथ सीमे बारक में आकर और इनकी चारपाई पर बैठकर बहुत बातचीत हुई। हम लोग इनकी चारपाई पर बैठकर बातें करने लगे और वे हमारी छातिर के लिए समीप के बाजार से मिठाई मँगाने का इन्तजाम करने लगे। ✓

उस दिन अपने बीबन में पहले-पहल पंखों की छोटी बारक में मैंने कदम रखा था। इससे पहले इन छोटी बारकों के कितने ही अस्फुट रहस्य मन में ब जाये किन्तु नी बार किन्तु ही सूरतों में देख पड़ते थे। आज उसी छोटी बारक में बैठे रहने पर भी ऐसा लगता था कि मानो वे सब रहस्य हमारे पास-पास बन्द कर काट रहे हैं। बीच-बीच में ऐसा प्रतीत होने लगा कि बहुत पुराना सुख-स्वप्न मानो इस छावनी की बारक में निपटा हुआ है।

मन्वी बारक के बीच में दोहरी कठार में सिससिले से चारपाइयाँ बिछी हुई हैं। कोई तो चारपाई पर बैठे इयर-जवर की बातें मार रहा है। कोई पुस्तक पढ़ रहा है और कोई किसी काम से बारक में घाटा-भाटा है। हम लोग परिचित सिपाहियों से समय के साथ बातचीत कर रहे थे तभी किन्तु मन में एक ही साथ ऊर, अचरज और आनन्द की मिश्रित हमजल मची हुई थी। हमारे लिए मिठाई मँगाने का जब ये इन्तजाम करने लगे तब पहले तो हम लोगों ने इन्हें रोका कि यही मिठाई की क्या जरूरत है रहने भी दीजिए किन्तु इनका धामाह देतकर अन्त में चुप हो जाना पड़ा। इयर जब मिठाई के आने-औ विलम्ब होने लगा तब बीच बीच में लटका होने लगा कि जकर कुछ-न-कुछ दान में कामा है। धायद किसी अजसर को हमारी लबर देने के लिए कोई बोझाया गया है। बोझी ही देर में पास पास के सिपाहियों ने हमारी चारपाइयों पर आकर हमारे साथ बातचीत छोड़ दी। बारकों में हम लौभो ने अपने को राजपूत शक्ति मठसाया था। शिर्ष राजपूतों के लिए बनारस में एक स्कूल और कामेज था। वहाँ राजपूतों के सिपा और कोई पढ़ने न पाठा था और वहाँ के मोरिय में ही रहने पाठा था। अपने पूर्व

परिचित सिपाही की बात के अनुसार हमने इन लोगों को बतसाया कि हम सोन उक्त राजपूत कालेज के छात्र हैं। सिपाहियों द्वारा माम-धाम पूछा जाने पर हमने बड़े ठपाक से धमरसिंह और जगतसिंह प्रभृति नाम बतसा दिए। किन्तु मग में चुकुर-चुकुर होने लगी कि नहीं हमारा धससी स्वरूप प्रकट न हो जाय। यह बतमान भी उकरत ही नहीं कि वहाँ पर हम सोम जगसी सिबास में नहीं गए थे। हमसे एक के मिर पर तो साफ़ या धीर वृषरे के सिर पर भी टोरी। पहनावा भी संयुक्त प्रातवासियों जैसा था। मुझसे साफ़ बाँपते न बनता था इसलिए मैं धकसर टोरी से ही काम लेता था।

हमारे पूर्व-परिचित सैनिक ने एक हुबनदार से परिचय करा देने का काम किया। इस हुबनदार से य हमारी बर्षों पहले ही कर चुके थे और हुबनदार भी हमारे प्रस्ताव क पक्ष में हो गया था। बोड़ी देर बाद हुबनदार से हमारा परिचय हुआ। इसका नाम बिस्मासिंह था। इसने हमसे कुछ झिझकते हुए बातचीत की और बोड़ी देर में यह कहकर कही चल दिया कि एक काम करके आता हूँ। बिस्मासिंह उसी समय से हमें कुछ मत्ता न जैसा धीर जब वह काम का बहाना करके बिसरक गया तब मैंने डरते-डरते पूर्व-परिचित सैनिक से धीरे से पूछा कि बिस्मासिंह पर पूरा मराठा किया जाय? कुछ लटका तो नहीं? तब उक्त सैनिक ने उसकी धीर से बेफिकर रहने को कहकर उसे मत्ता धावमी बतसाया। मैंने उस दिन भी यह बात किसी से नहीं छिपाई थी कि बिस्मासिंह मुझे मत्ता धावमी नहीं जैसा। उस दिन बिस्मासिंह जब तक वहाँ लौट नहीं आया तब तक दूर बड़ी-पल पर मैं धपने मित से कहता था कि 'बर्षोंजी, जब तक आया नहीं कहा गया?' धीर एक-दूसरे को धीर देख-बेककर हम दोनों परस्पर मुस्कराते थे। जो हो हमारा सन्देह बाधा रहा उस दिन तो बिस्मासिंह दुबारा लौट आया। उस दिन मामूली बातचीत करत-करते शाम हो गई फिर हमसे एकान्त में बातें करने के लिए बिस्मासिंह उस पुन-परिचित सिपाही को लेकर हमारे साथ-साथ बारक के बाहर जाता था। बिस्मासिंह ने हमारे प्रस्ताव को मान लिया धीर कहा कि हम बारक के कुछ पम्प सिपाहियों से भी बातचीत कर रवेंगे। बिस्मासिंह के लौट जाने पर भी पुन-परिचित सैनिक महोबय धीर भी बोड़ी देर तक हमारे पास बने रहे। जब बिस्मासिंह के ऊपर हमारे शक करने पर उन्होंने हमसे फिर उसकी धीर से बेकटके रहने को कहा। तब यह सोचकर मन में धानन्द हुआ कि जलो एक हुबनदार तो

राम में आ गया। इस रीति से इस क्रीडी बारक में हमारा आवागमन आरम्भ हुआ और एकाच महीने के भीतर हम वहाँ कम से कम सत्-आरह बार आ गए। इन सिपाहियों में से कुछ लोग बाहर में हमारे डेरे पर भी आए थे और तब हम लोगों ने भी इन्हें हर मर्तबा रसगुस्सा आदि कई प्रकार की बंगामी मिठाई खिलाकर लुप्त किया था।

मालूम होता है कि समूचे भारत में ऐसा एक भी शहर न था जहाँ स्वदेशी आन्दोलन और राम के मोने के दम की बात किसी का मालूम न हो। हम लोगों ने इन सिपाहियों को अपने घर बुलाकर राम के गाने रिवाज और मोरार पिस्टल आदि के दर्शन करके विश्वास करा दिया कि वास्तव में हम लोग भी उत्तिष्ठित दम के सदस्य हैं। इस प्रकार कुछ दिनों तक आवा-जाही होने पर इनका मतसावा मया कि पंजाब की क्रीडा में भी विप्लव का तंबाकू खोरोँ से हो रही है। हम लोग बज्जी जानते थे कि इन लोगों को भद्र की सारी बातें सुना देने में क्या घमघ हो सकता है क्योंकि इन लोगों के लिये यदि सरकारी पक्ष को हमारी गबर की तयारी का तनिक भी पता मिल जाता तो पंजाब का सब किया-कराया मिट्टी में मिल जाता। किन्तु इनसे कुछ रसमें भी तो लुमीठा न था जब इनसे कहा गया कि "यदि हमारी बातों पर विश्वास न हो तो तुम अपने किसी आदमी को कुछ दिनों के लिए पंजाब भेज दो हम उन ऐजेंटों से इसकी जात-पहचान करा देने बिन्हीं कि प्रस्ताव को मान लिया है।" तब हमारी बात पर इन्हें बहुत कुछ विश्वास हो गया। इस प्रकार धीरे-धीरे तीन-चार हफ्तबादों और सिपाहियों से हमारा परिचय हुआ।

हम लोग बजाबादर काम को या धंधरा हो जाने पर बारकों में जाते थे किन्तु दो-एक बार दिन को शेषहर के बका भी जाता पड़ा है। इसी प्रकार एक दिन हम दो व्यक्ति बारक के समीप घने पेड़ों की छाँह में बैठ जाइ रहे थे और हमारे बीच का एक व्यक्ति बारक में दो-एक सिपाहियों को बुलाने गया था। वर तक राह देखने पर भी जब हमारा छापी नहीं लौटा तब हम लोग चुपिते हो पए और दर लगभग लगादि फड़ी को बिपत्ति तो नहीं आ गई। तब ता फिर यही इस प्रकार, प्रतीक्षा करना भी मुक्तिसयत नहीं। किन्तु अपने छापी को ही किस प्रकार छोड़कर चलें? ऐसी-ऐसी बहुतेरी बातों पर हम सोच-विचार करने लगे। वरतो हम लोगों को कुछ लयता था किन्तु दर के मारे हम लोगों के हाथ-पैर नहीं कूत गये, हमारा तो

विश्वास है कि विपद् की तनिम-सी भी कालिमा हमारे बहरे पर नहीं माने  
 गई। धीरे हम ही बारक में कितनी ही बार आए-गए हैं किन्तु सड़कें ने एक भी  
 बार धाम नहीं छोड़ा फिर भी हम प्रत्येक बार साफ निर्बिम्ब सौट आए। लौटने  
 पर सोचते थे कि जलो धाम का दिन तो निर्बिम्ब व्यतीत हुआ किन्तु फिर भी  
 कई बार बारकों में घाना-जाना पड़ा। वो ही बेर तक बाट जोड़ने पर भी जब  
 मित्र महोदय न लौटे तब सोचा कि क्या संभव साध्य है बेर लिया। फिर  
 सोचा कि हम लोग संपात्नी हैं ज्ञाप में टोरी धीरे साफा है बारक के पाम ही पेड़  
 की छाँह में हम भले घाघमी के नक़्के बठे हैं इन पने पेड़ों की कठार के पास स ही  
 रैकट्रक रोड गई है जो कोई हाकिम-हुक्माम हमें यहाँ पर दस घंटा में बठा हुआ  
 बैस स तो क्या समझ्या? हम ऐसी ही जघेदजन में थे कि मित्र महोदय को दो  
 सिपाहियों के साथ सपनी भोर घांते हुए बैसा। भत हमारे सिर स पड़ा भारी  
 बोझ-सा उतर गया। इसके परचात् इस बारक के पास दो-एक बार सबेरे के  
 समय भी आया हूँ उस समय सिपाही लोग परेड पर क़बामद करत थे। सपने ही  
 परिचित एक हुकमदार को सना परिचासन-कार्य करत देखकर ऐसा मया कि  
 रैजमेंट मानो हमारी ही है हमारे उद्देश्य की सफलता के लिए ही मानो यह सारी  
 तैयारी की जा रही है। सामने से दो-एक सचब सफ़रर घोड़ पर बठ हुए निकल  
 गए, किन्तु किसी ने हम लोगों की ओर ध्यान नहीं दिया। उस समय तो किसी  
 मन में रसीमर भी सन्नेह न था।

एक दिन की बात का मुझ लूब स्मरण है। उस समय पत्राक का दुबारा  
 चकर सग चुका था। बिम्ब की तैयारी पूरी होने की थी। एक दिन सन्ही बने  
 पेड़ों के नीचे बैठकर, यारों की छोड़ी बारक के दिनगुन ही समीप संधकों के ही  
 राग्य को ललट देने के लिए कौसी भीषम गुप्त योजना की गई थी। उस दिन कोई  
 तीन हुकमदार धीरे लामब हुकमदार तथा कुछ सिपाही घाम होने पर उन्ही पेड़ों  
 के नीचे एकत्र हुए। हम लोग भी तीन व्यक्तिये। इन पेड़ों की कठार के एक घोर  
 रेत को पटरी है धीरे घुमरी भोर है रैकट्रक रोड। इसी सफ़रर रोड के बगम में  
 मोड़ा-सा संवाग छोड़कर सेना की बारकों हैं। कुछ सिपाही सड़क के किमारे पेड़ों  
 की छोट में इसलिक बठे हुए थे कि यदि किसी को उस धीरे घांते देखे सचवा ऐसा  
 ही कुछ धीरे सटका हो तो बसी बम हम लोगों को सावधान कर दें। हम लोग  
 भी सबाधम्य बसों की छोट में बैठकर पासग-बिबोह का दिन समय धीरे



ग्राम्याय छोटी-मोटी बातों पर विचार कर रहे थे। बीच-बीच में वे लोग संक्षिप्त चिन्त से इधर-उधर देखते थे। उस दिन मानो कई सुर्गों की संक्षिप्त आत्मनिष्क भीर मूर्तियाँ कसेबसे बारब करके उस घोंघरे में परछाई की तरह हमारे घासे देख पड़ी थीं। सन् 1857 के नगर के पश्चात् पिर उसी तांडव नृत्य की जंजी संघारि का विचार करके वेह भीर मन सचमुच ही पुनर्निष्ठ और रोमांचित हो रहे थे। पलटन के लोग बड़ी ही आन्तरिकता के साथ हम लोगों से बातचीत कर रहे थे। इस प्रकार बने बैठों के नीचे कुछ रूप से हम लोगों को समझा करते समय यदि सिपाहियों में से हो कोई जाकर अपने ऊँचे धाकड़ों को इसकी इच्छिता से घाता तब तो कोर्ट मार्शल में इस सबकी जान के लिए बड़ी मुसीबत पड़ती। यही कारण था कि उस दिन वेहों के नीचे घाकर वे लोग इस प्रकार चौकन्ने थे। किन्तु मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका क्योंकि इस प्रकार की तैयारी से क्षिप्ते-क्षिप्ताने का भाव बड़ी आगामी से साह सिमा जाता था और इसीलिए मैंने कुलों की मोट में इस प्रकार क्षिप्ते के लक्ष्य का विरोध किया तथा इस प्रकार सविश्व नाम से बार-बार इधर-उधर ताकने को भी मना किया। हम लोग कहीं भी जब इस प्रकार समझा करने के लिए वापस में एकत्र होते थे तब इस बात पर हम सबका सदा ही ध्यान रहता था कि सहज-सरस भाव ही हममें बना रहे किसी प्रकार की कचलता न घाने पाए। किन्तु उस दिन मना कर देने पर भी जब सिपाहियों ने मेरी बात न मानकर इस तरह चौकन्ने रहने में ही मना समझा तब मेरे मन में यही भावा कि वे लोग यों ही मोसे भाव से और अत्यन्त घाबहू की घेरना से यही बने घाहू हैं। इस बिप्लव की तैयारी में वे भी-जाग से घागिष्ठ हैं और इन तरह हमारे पास घाने-घाने में घपनी जाग को बोधिम में समझते भी हैं लेकिन—घोसभी में तिर दिया तो मुसल की मोट का कर हो गया? ऐसी भावना से ही मैं लोग हमारे पास घाने और बिप्लव की तैयारी की समझा करने में हिचकते नहीं। इस तरह वे न जाने कितनी बार हमारे पास घाए हाने।

इधर तो फौजी बागकों में पहुँच हो गई और ऊपर बंवास से मोटने पर कुछ ही दिनों में अमरिका से भीटे हुए एक महाराष्ट्री युवक के घा घाने से पंजाब के साथ और भी बना सम्मन्ध करने का मया जरिया मिल गया। इस महाराष्ट्री युवक का नाम चिमन था। इनका पूरा मराठी नाम इस समय मुझे पार नहीं। स्वदेश को वापस आते समय इन्होंने आहान पर ही निश्चय कर लिया था कि पहले

बंगाल के बिष्मलपत्नी दसका बंगालमें पता लगाएँगे तब पंजाब आएँगे। कमकता में बिष्मल दस के कई लोगों से इन्होंने जेंट की इससे पंजाब में बिष्मल की तैयारी होने की बात कसकता भर में फैल गई। इधर इनके कुछ मित्रों के साथ हमारे दस का भी सम्बन्ध था और इसी भाँते पिगले हमारे दस में था गए। हमारे दस में पाठे ही ये सीध काशी भेज दिये गए। पिगले ने कमकता में बहुत लोगों से बमगोले मंगाने में। उस समय समूचे बंगाल की प्रजापतया हमारे केन्द्र से ही बमगोलों मिलते थे। अतएव बमगोलों के लिए हम लोगों से पिगले का घना सम्बन्ध हो गया।

काशी में इन्हीं दिनों हमारे मन में यह धारणा हो रही थी कि आसद अब हमारा सम्बन्ध पंजाब से जुड़ना कठिन हो जाय क्योंकि पाँचवीं दिसम्बर को वृष्णीसिंह काशी आनेबात में किन्तु न तो उनके बचन हुए और न पंजाब का ही समाचार मिला। ऐसे अचर्य पर पिगले के मित जाने कि ऐसे घटनाता हुई मानो कुवेर का घन हाथ लग गया हो। पिगले के आ जाने से हम लोगों को सचमुच बड़ा आसदा मित गया। इनकी वैह समुत्पन्न और बलिष्ठ थी और मोटा रंग था और इनकी पाँखों तथा चेहरे से सुतीव्र बुद्धि झलकती थी। इस बुद्धिमत्ता न उस दिन हमारे मन में आस अवह कर सी थी। इन्होंने देखने और इनसे बातचीत करने से हम लोगों को पक्का विश्वास हो गया था कि इनके हाथों हमारे कई काम सिद्ध होंगे किन्तु सच तो यह है कि मनुष्य की पहचान लेना बड़ा कठिन काम है।

मनुष्य जीवन का धारण कैसा हो—इस सम्बन्ध में पिगले के साथ बहुतेरी बातें होती-होते न जान किसे तरह पीठा की चर्चा सिद्ध गई और उस समय जब उन्होंने पीठा के कुछ स्थापक पढ़कर सुनाए तब हम लोगों को आत हुआ कि पीठा इन्हें कच्छत्व है। उन्होंने स्वयं कहा कि 'जब हम साबु हो गए थे तब पट्टारखों अथवा पीठा मुताबक थी। इस पर उनके जीवन का बोझा-बहुत पिछला इतिहास जानने की इच्छा प्रकट करने पर उन्होंने कोट इत्यादि चत्वारते-चत्वारते विस्तार-पूर्वक बतलाया कि वह किस प्रकार साबु होकर भारत के विभिन्न स्थानों में बिखर रहे, फिर किस तरह मेकेनिकल इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए अमेरिका गए और वहाँ इस बिष्मलदस में अर्पण हो गए।

## 8 | पंजाब की कथा

पियरे के जीवन की पिछली बातों का याद मुझे ठीक-ठीक स्मरण नहीं। याद तो इतना ही याद पड़ता है कि साबु होकर उन्होंने समूचे भारत की भाषा की भी धीर फिर अमेरिका के मैकेनिकल इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ते समय वहाँ के विप्लव बल में सम्मिलित हो गए थे। किन्तु यह नहीं मालूम कि वह किसलिए साबु हुए और क्यों इंजीनियर हुए और इसके पश्चात् किस तरह मवरपाटी में शामिल हुए ? यादस्वरूप पियरे ने भी इस विषय में धीर कुछ नहीं बतलाया था।

इस सम्प्रदाय में जो बातें मुझे कहनी हैं उनमें से बहुतेरी बातें याद स्मृति में धूमिल हो गई हैं, इससे सामान्य कुछ बातें मिलाने से रह जायें। ऐसा मयता है कि इस भूल जागे धीर याद रखनेके साथ हमारी प्रकृति का बना सम्बन्ध है। हमारे स्मृतिपट पर बिठनी ही बड़ी-बड़ी चीजें छोटा रूप धारण कर लेती हैं और छोटी चीजें बड़े रूप में आ जाती हैं। फिर बहुतेरी बातों को न जाने हम किस तरह भूल ही जाते हैं। इसका कारण यह मान्य होता है कि जो बात हमारे स्वभाव के अनुकूल है, बिठका हमारी प्रकृति से मेल मिलता है वह पाई कोई बटना हो या कोई शारीरिक मत्त बनना चाहे कुछ धीर हो वह तो हमारे चेतन अथवा अवचेतन में भी स्मृति-पट पर चित्र की भाँति अपने आप अंकित हो जाती है। परन्तु जो बात हमारे स्वभाव के अतिकूल होती है उसे या तो हम भूल जाते हैं या कम से कम करने के लिए ही याद रखते हैं और लक्षण करने में जिन धूमिलता तथा बटना या न हमें सहजता मिलती है उन्हें भी हम अपनी अपनी धारणा और अभिज्ञता के अनुसार याद रखते हैं।

मुझे याद थाता है कि धम्ममन द्वीप में रहते समय एक दिन रामेन्द्र बाबू की 'विचित्र प्रसंग' नामक पुस्तक पढ़नेमें बिमकुल इसी ढंग के भर्त्तक प्रकार के विचार मन में घम्भीर भाव से फँस गए थे और उनको मैंने अपनी मोट-बुक में लिख रखा था। उन्हें मैं ज्येन्द्र शाहा (उपन्द्रनाथ बनर्जी को छि मुसाम्मर' के सम्पादक थे और जिन्हें धर्तीपुरनाम नामने में काफ़ी पान्नी हुआ था) को प्रायः दिखलाता था और वह उनको तारीफ़ करते तो इससे मन में बड़ा कामन्द होता था। धम्ममन की बातें वहीँ लिखी जाएँगी वहीँ बतलाया जाएगा कि मेरी वह मोट-बुक किस तरह मल्ट हुई।

हमने विगत का दो-एक दिन काशी में टहराकर पंजाब भेज दिया। उनका धमुरोप था कि पंजाब में हम उनके पास बेहिजाब बमबोले भेज दें। परन्तु उनमें कहा गया कि सोले तो भेज जा सकते हैं किन्तु एक-एक बमबोले के बनबाने में सोनहर रंग के समसम खर्च बँटता है। इसलिए रंग की मदद मिले बिना बेहिजाब बमबोलों का भेजा जाना बर्तित है। इनसे पुष्पीसिंह और करतारसिंह की भी खर्चा कर ही गई। अब रंग लाने और पंजाबियों का कच्चा हलाल खाने के लिए विगत पंजाब की गए। विगत के पास इनके कुछ साधियों का पठा-ठिकाना था। समयमें एक हफ्ते में ही ये काशी लौट आए। अब रासबिहारी की पंजाब-यात्रा में भी कुछ रोक-टोक न थी। किन्तु उनके जाने के पक्ष में एक बार फिर विगत के साथ पंजाब हो आया।

दिसम्बर महीन के एक सप्ते काशी ठंड पड़ रही थी जब मैं साधारण हिन्दु स्तानी के निवास में विगत के साथ धमुरोप पहुँचा। मैं तो पंजाबी भाषा बोल न सकता था किन्तु विगत की इसका अभ्यास था। हम लोग एक पुस्तकालय में बाहर टहरे। यहाँ पर विगत ने एक पंजाबी मुलिया से मेरा परिचय कराया। इनका नाम भूषासिंह था।

भूषासिंह सपाई के पुमिष्ठ विभाग में नौकर रह चुके थे और वहीँ पर भी पुमिष्ठ के हड़तालियों के मुखिया बन थे। इस बार उन लोगों से भी मेरा परिचय हुआ जो कि विगत में नौकर रह चुके थे। इस समय मैंने बहुत से देहाती शिक्षकों को यहाँ पाठे-जाते देखा था। ये अधिकतर किसान या मजदूर थे किन्तु वे भी देश का काम करने के लिए जतनमान हो रहे थे। विगत सम्प्रदाय की ऐसी ही धिन्ता दीया है। इनमें से बहुतों की वेह काशी गठीली और कसी हुई थी।

मोहिन्दसिंह पर हमला किया। भोर संघाम करते-करते गुरु ने देखा कि किसी धोर से एक दम से साकर दधु-मधु पर बाबा बीस बिपा है। गुरु मोहिन्दसिंह की समझ में न आया कि इस बिपत्ति के समय में हमारी सहायता करने यह कौन या पढ़ेबा है। इन नए धाये हुए योद्धाओं की मार के धाये मुत्तसमान तो बीमे पड़ नए वरन्तु ने सब बीड़ी बेर मुट्ट करके प्रायः सभी जूम नए। इस मुट्ट में एक मुत्तसमान के बस्मम से बिहूत एक ब्यक्ति की साध जठाकर देखी गई तो वह साध एक स्त्री की निकसी इसका नाम भाई मानो बा। इसीकी ससाह धोर प्रेरना से 'बे-बाबा' सिक्कों ने अपनी भूल को सुधारने का मार्ग ढूँढ़ निकाला बा। गुरु का भन्त हो चुकने पर वह मोहिन्दसिंह रणभूमि में सेटे हुए प्रत्येक मृत सिक्क के पास जाकर उसके भूल में निपटे हुए मूँह को पोंछकर बीसे प्यार धीर सावर का ब्यवहार कर रहे थे जैसाकि पिता अपने पुत्र का करता है। भन्त में उन्होंने देखा कि एक ब्यक्ति में उस समय तक प्राण थे। इसका नाम महासिंह था। महासिंह के मस्तक को अपनी मोह में रखकर धीर उसके सिर पर हाथ फरते-फरते गुरु मोहिन्दसिंह ने पूछा—“महासिंह तुम क्या चाहते हो?” महासिंह की बाँखों में आँसु भर आए। उसने कहा—“मैं वही चाहता हूँ कि हम लोगों के उस पथ को फाड़ डालिए जिसमें हम लोगों ने सिख बिबा था कि हम लोग सिक्क नहीं हैं।” अब गुरुजी ने समझा कि दूसरी धोर से दधु पर किसने हमला किया बा। गुरुजी ने देखा अब 'बामीसों' सिक्कों ने रणक्षेत्र में प्राण दे दिए हैं। लाशों में उन्होंने स्त्रियों की भी मारें देखीं। अब 'सिक्क नहीं' वाला पत्र गुरुजी ने फाड़कर फेंक बिबा। महासिंह भी महासिद्धा में मर्य हो गया। वहाँ पर जो लोग उपस्थित थे उनसे गुरु मोहिन्दसिंह ने कहा कि 'जिस जालता' में ऐसे महाप्राण हैं वह जालसा सहाय ही बन्त नहीं होना। वहाँ पर एक भी मक्तमान धारमाहुति देता है वह स्वान पवित्र हो जाता है यहाँ पर तो इतने धविक महाप्राण ब्यक्तियों ने प्राण दे डाले हैं, इसलिए इस स्वान का नाम 'मुक्तनर' हुआ धीर वहाँ के ताताब में जो कोई स्नान करेता वह मुक्त हो जाएगा। इस प्रकार मुक्तनर-भोज की उत्पत्ति हुई। यह सिक्कों का महामेबा है। यहाँ पर हर साल एक साल से अधिक सिक्कों का बभाव होता है। सिक्कों के प्रत्येक जसब के साथ ऐसे एक-न-एक दधुर्ष इतिहास की कथा संलग्न है धीर हरेक एक सिक्क का ऐसे उत्सव धीर उर्मय के बीच सासन-पासन होता है तथा ऐसे ही बातावरण में वह मनुष्य बनता है। मेरी समझ से तो सिक्क जाति भारत की

एच प्रभुर्न बीर जाति है।

पिम्पसे त्रिस समय 'मृतसर' के मेले से लौटकर आए उस समय करतारसिंह अमरसिंह आदि सभी पुस्तारे में उपस्थित थे। मुझ देखकर करतारसिंह बहुत ही प्रसन्न हुए और पूछा कि 'बोसो रासबिहारी कब आएंगे?' मैंने कहा— 'बस, अब वहीं का गन्धर है। यहाँ ठहरने के लिए कुछ इन्तजाम हो जाए और आपका काम भी तनिक तिससिले से होगे सबे बस फिर उनके घाने में देर नहीं। इस समय मैंने करतारसिंह को केन्द्र की आवश्यकता विशेष रूप से समझाई और वह भी कहा कि केन्द्र का मार सुतासिंह ने ग्रहण कर लिया है। रासबिहारी के लिए अमृतसर और लाहौर में बो-बो किराए के मकान लेने को कह दिया। इन सारी बातों के सम्बन्ध में बाद में मुझे पहले ही कह रखा था एक ही समय में विभिन्न स्थानों पर कई मकान अपने अधिकार में होने चाहिए। यत ऐसा ही किया गया। अमृतसर का मकान तो मैंने ही देखकर पसन्द किया। लाहौर में मकान लेने के लिए दूसरा यादमी भेजा गया। पंजाब की उस समय की दशा का हास करतारसिंह से सुनकर मुझे बहुत कुछ धासा हुई। मैंने सोचा कि इस बार सबकुछ कुछ कहने नामक काम हो रहा है। इस समय सिक्कों का एक और बल अमृतसर में आया। यह बल अमेरिका से लौटकर आया था इस बल के कुछ नेताओं को मैंने देखा। इनमें एक तो इतने बड़े थे कि उनके मामों में मूर्खियाँ पड़कर बैठकने को थीं। वेरा क्यास है कि ये बड़ी बूढ़ पुरुष थे जिन्होंने बाघ में अण्डमन टापू में भी बड़े तैल के साथ के अपनी बोड़ी-सी सेप धाबु बिठाकर साठ बा सत्तर वर्ष की अवस्था में जसी द्वीप में जीवन को निश्चित कर दिया। इस बुढ़ापे में भी इन्होंने अण्डमन में हड़तालियों के साथ हड़ताल करने में कभी पीछे पैर नहीं रखा। इस बल का कोई व्यक्ति उस समय घाने भरन पहुँचा था। अमेरिका से भारत में आकर अमृतसर में ही वे लोग ठहरे थे। इन्होंने अपनी गाड़ी कम्पार्टमेंट में से हम लोगों को पीछे सीटें दिए थे।

इन दिनों करतारसिंह अद्भुत परिग्रम कर रहे थे। वे प्रतिदिन साइकिल पर बैठकर देहात में जगजग आसीस पचास मील का चक्कर लगाते थे। पाँच-गाँव में काम करने को जाते थे। इतना परिग्रम करने पर भी वे थकते न थे। जितना ही वे परिग्रम करते थे उतनी ही मांगो उनमें पूर्ण होती थी। देहात का चक्कर लगाकर जब वे जलपाटनों में गए जिनमें कि काम नहीं किया गया था। इन लोगों के काम करने का डंग इतना कच्चा था कि इससे इस समय हममें से बहुतों ने

किरफ्तारी के लिए बार्डट निष्क्रिय। किरफ्तारसिंह को निरफ्तार करने के लिए इस समय पुलिस ने एक बाँध को बाँध कर बेर सिखा। उस समय किरफ्तारसिंह बाँध के पास ही कहीं मौजूद थे। पुलिस के आने की खबर पाते ही वे ग्राहकिस पर सवार हो उस बाँध में ही आ गए। पुलिस उन्हें पहचानती न थी। इस मत्वा किरफ्तार सिंह इसी घसीम साहस के कारण साफ बच गए। यदि वे ऐसा न करते तो संभवतः रास्ते में ही पकड़ लिए जाते।

इस समय स्वदे-पैसे का खर्च इतना अधिक बढ़ गया था कि भव दान की रकम से काम न चलता था इसलिये भव ने कुछ-कुछ उकँठी करने के लिए विवश हुए। बाँध में मौजूद हुआ कि मुत्तासिंह मत्वा घावमी न था। इसने दान का खर्चा पैसा भी हड़प लिया। जिस समय ये बातें मौजूद हुई उस समय सुधार का कोई खर्चा नहीं था। क्योंकि वहाँ तक मुझे स्मरण है, वह इसके पाँचे (5) दिन बाद नसे की हालत में सीधे ही किरफ्तार कर लिया गया। इसके सिवा व्यक्तिगत धन्यता के कारण उसने एक घावमी के वहाँ उकँठी भी करवाई थी।

सभी बड़े-बड़े धान्योमनों में देखा गया है कि साधु और महान् चरित्रवान् दुश्मनों के साथ कुछ नर-निघाण भी दस में धा मिसते हैं। यह धान्योमनों का दोष नहीं है वह तो हमारे मनुष्य चरित्र का ऐश है। सायद लेनिन ने भी कहा था कि प्रत्येक सच्चे बोलबोलिक के साथ कम से कम सगठनीय बरमाण और साठ मूख उनके दस में मिस गये थे।<sup>1</sup> और मैंने अजब सारणमत्र चट्टोपाध्याय भी सुना है कि देवचन्द्र दास ने भी कहा कि कहाँ कहाँ करते-करते इन बड़बड़े हो गए और इस बीच हमको बड़े-बड़े बोलेबाजों से भी साविका पड़ा किन्तु घसहपोम धान्योमन में हमने जितने बोलेबाज आदमी देखे वैसे जिम्मीमर में नहीं देखे थे।

मैं इस बार पंजाब में हफ़्तेभर के समय इन लोगों के साथ रहा। घसहपोम इनके बहुत-से आचार-व्यवहारों को मैंने भ्रान्त से देखा। यद्यपि ये लोग कड़ाके की ठण्ड में भी बहुत ही ठंडके गद्दा-बोकर प्रसन्नवाहक हथ्यादि का पाठ करते थे किन्तु होटल में भोजन करने के कारण इनका पाय-पान दुःखसापूर्वक न होता था परन्तु इनका आचर का बर्तन बहुत ही मत्वा था। एक-दूसरे को बुलाते या बात

बीत करते समय ये 'सन्तो' सज्जना', 'बादशाह' इत्यादि सम्मानसूचक शब्दों के सिवा और किसी शब्द का प्रयोग न करते थे। इस बार भाई निधानसिंह से मेरी मुलाकात हुई। यही वह पंजाब बर्ष के बूढ़े सिक्ख थे। ये कोई तीस-पैंतीस बर्ष से देश के बाहर थे और चीन में रहते समय एक चीनी मुन्धरी से इन्होंने विवाह कर लिया था। मैं इन्हें घर-घर घूम-घूम कर चीन-देश का पाठ करते देखता। एक बार मैंने स्टेशन पर जाकर देखा कि वहाँ प्लेटफार्म पर बैठ हुए पाप छोटी-सी धर्म-मुस्तक को मन ही मन पढ़ रहे हैं। ये कुछ सिर्फ दिखावे के लिए ही ऐसा नहीं करते थे क्योंकि मैंने मण्डमन में भी इनकी यही शरा देखी थी। मैंने इनमें जैसा देख देखा है वैसा मोखानों में भी नहीं देखा।

साधारण पंजाबियों के यौग आचरण के सम्बन्ध में प्रतिष्ठित भारतीय ब्राह्मण की दृष्टि से सामान्य जन-जातना अच्छी नहीं होती और फिर पंजाबियों में सिक्खों के यौन-व्यवहार को तो और भी चिन्तन समझ जाता है। चायद इसका प्रचलन कारण पंजाब में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या बहुत ही कम होना है। इसके सिवा पंजाब प्रांत चायद समोमुखी राजसिक्ख भाव से परिपूज्य है। लगातार युद्ध से बिदे दियोंने संपूर्ण में रहने के कारण और कमजोर निम्नतर सम्प्रदायों के ही संस्पर्ध में घाते रहने से यहाँ की सम्प्रदाय भागो बीरे-बीरे छीकी पड़ गई है। धननि के दिनों में बिदेदियों का यह संस्पर्ध जैसे हानिकारक हुआ है वैसे ही सन्तति के जमाने में इससे सर्वश्रेष्ठ सम्प्रदाय का विकास भी हो सकता है। जो चीन बुरे मार्ग पर बहुत आसानी से चले जाते हैं उनमें भले बनने का भी बहुत-कुछ सामर्थ्य है इतना कि चायद और लोगों में उठना न हो। इस कारण असंभव निष्कूरता नीचता और हिंसा-वृत्ति से सिक्खों का चरित्र जिस प्रकार कलकित हुआ है उसी प्रकार संभव उदारता और अभावृत्ति में भी है लोग अपना सानी नहीं रखते। तभी तो इन गए बीते दिनों में भी धर्मपति सिक्ख जाति ने 'नवकाना साहब' और 'गुरु का भाव' में धर्मुत भीरता और सत्य का लभूना शिक्षा दिया।

पंजाब में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ ही अधिक बढ़नाम हैं किन्तु इसी पंजाब में उध दिन सतीत्य की ऐसी गौरवोग्गल स्त्रिय फिर प्रकट हुई थी जिसकी तुलना इस कलिकाल में मिलनी कठिन है। डी० ए० बी० कार्सेज साहौर के भूत पूर्व धर्म्यापक भाई परमानन्द के छोटे बच्चा के बेटे, भाई बाबमुकुन्द, दिस्सी पद्म के मुकुन्द से विरपजार किए। इन्हीं बाबमुकुन्द के पूर्वपुत्र्य मोतीबास को



चिक्कों के प्रभुत्व-समय में घारे से नीरकर भार जाता गया था। मिरपटार होने से एक ही वर्ष पहले माई बासमुकुन्द का विवाह हुआ था। इनका पत्नी श्रीमती रामराजी परम सुन्दरी भक्तगा थी। उम्र इसकी गई थी ही। जिस दिन इनके पति मिरपटार हुए उसी दिन से ये व्याकुल हो गई थीर अनेक प्रकार से बेह को सुनाने लगीं। फिर जब माई बासमुकुन्द को फाँसी का हुकम हो गया तब ये उनसे मिलने गईं। किन्तु इनके धर्माभुषों ने भी भरकर स्वामी के दर्शन न करने दिए। घर लौटकर ये एक प्रकार से धक्करी बच्चा में समय बिताने लगीं। एक दिन ये अपने कमरे में थी कि बाहर से रान का कोलाहल सुन पड़ा। कमरे से बाहर आते प श्रीमती रामराजी को असम बात भासूम हो गई। ये जब थीर न सहन कर सकीं। पति का मृत्यु-समाचार पाकर सती-साम्बी जाली नीरोप बच्चा में पति का ध्यान समाकर मानो पति से जा मिली। मिट्टी में मिस जाने के लिए ही जानो उनकी यह लोक में पड़ी रह गई। ऐसे पति-सेव थीर धारमोत्सर्ग की तुलना है कहीं? इस बटना का स्मरण होते ही बेह थीर मन पुलकित होकर कष्टकित हो जाता है। बासमुकुन्द की मूर्हिणी। तुम बम्ब हो। ऐसी पत्नी के बिना क्या ऐसा पति हो सकता है। हाय रे भारत के नसीब, ऐसी पत्नी थीर ऐसे पति का बना रहना भी तेरे माग में न था।

## 9 | काशी केन्द्र की कहानी

इस बार पंजाब से गया उत्साह लेकर लौटने पर भी काशी जाने पर मुझे ऐसा लगा मानो अब तक मैं बहुत घनाचार घोर अनियमों में था। मैं नहीं कह सकता कि पंजाब के मुकाबले में काशी कितनी मगोहर और पुरानी मानसूम हुई। मैं नहीं कह सकता कि ऐसा क्यों हुआ किन्तु इस मलबा काशी के जिस निरन्तर रूप का अनुभव मुझे हुआ उसका अनुभव काशी में बहुत स रहने पर भी नहीं हुआ था। बेह में काशी की हवा लगते ही ऐसा मानसूम हुआ कि बहुत दिनों की अपवित्र बेह शुद्ध हो गई। काशी में सिर्फ एक दिन रहने से ही ऐसा जान पड़ा कि बहुत दिनों की संचित स्थिति दूर हो गई।

विप्लव की तैयारी व्यव ही जाने वह रातबिहारी जब काशी में वापस आए तब उनके मन में भी विलक्षण ऐसा ही भाव हुआ था।

काशी लौट जाने पर पूर्ण बंगाल के एक नेता से भेंट हुई। हमारे एक पूर्ण परिचित नेता इससे पहले ही गिरफ्तार हो चुके थे। इससे ऐसी घाटा के बाता करण में सभी पूर्ण-परिचित व्यक्तियों के जेल जाने से मुझे एक अनिर्विष्ट-सी बेधमा हो रही थी। इतने काम-काज के बीच ज्यों ही थोड़ी-सी फुरसत मिल जाती थी त्यों ही घनघर मन में यह बात कसकने लगती थी कि आज वे लोग क्यों हमारे साथ नहीं हैं। उस आनन्द को उस समय सभी के साथ न लूट सकने से अब तब उनका वह विश्वास मार्गों को बहुत ही छताने लगता था।

कमकला-विभाग के एक सुप्रसिद्ध नेता भीमल महीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, इन्हीं दिनों काशी आए। विप्लव-सम के अनेक कार्यकर्ताओं के बीच इनका स्थान

बहुत उच्च है। इतिहास में यह धनस्रव पैसा जाता है कि जब कोई नया धान्योसम समाज धनवा राष्ट्र के ग्राम व्यवहार के बिना छिर उठाता है तब जो लोग ऐसे धान्योसम के प्राण-स्वरूप होते हैं उनका चरित्र धनसम-साधारण हुए बिना वह धान्योसम कारगर नहीं हो सकता। इसी से जिस समय कोई सम्प्रदाय राज रोष में दग्ध किया जाता है धनवा समाज के निबह में पीछा जाता है उस समय भी उस सम्प्रदाय के व्यक्तियों के चरित्र में कुछ न कुछ विशेषता धनसम रहती है। यही कारण है कि ऐसे सम्प्रदायों की सदस्य-संख्या स्वल्प होते हुए भी समाज पर उनका प्रभाव कुछ कम नहीं पड़ता। विप्लव के विपक्ष इतिहास से भी इस बात की सच्चाई सिद्ध हुई है। यतीन्द्र बाबू ऐसे ही सम्प्रदाय के प्राण-स्वरूप के और कई विभिन्न सम्प्रदायों पर उन्होंने अपने चरित्र-बल से अपना मुद्दक भाविपत्य बना लिया था।

विप्लव का काम-काज बहुत ही युष्म रीति से करना पड़ता था। भारत के विभिन्न स्थानों में विप्लव के लिए शिम्भ-विम्भ कितने ही बल बन गये थे। उन सब का साथ-प्रयत्न एक मसी-शक्ति पता भी नहीं लगा। धर्मिष्ठाधी महापुरुषों की सर्व-बाही प्रतिष्ठा का धारण न मिलने से वे सब एक विद्यालय संघर्ष में संघटित न हो सके। वे प्रलय-प्रलय ही रहे। इन छोटे-छोटे स्वतन्त्र बलों का होना बना हुआ था कुछ यह कहना कठिन है।

इन विभिन्न बलों को सम्मिश्रित करके एक बिराट् दल के रूप में परिचलित करने का उद्योग बहुत दिनों से किया जा रहा था किन्तु कोई व्यक्तिगामी नेता न रहने से किसी भी दल ने दूसरे दल में मिसकर अपनी स्वतन्त्रता को देना स्वीकार नहीं किया। इन दलों के मुलिया लोग ही अक्सर इस कारण कि वे अपने-अपने बलों पर अपना साधारण भाविपत्य बनाए रखना चाहते थे ऐसे मिलन के विरोधी थे। 'मनुष्य सहज ही पराई शचीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं हो जाता परन्तु फिर भी लक्ष्मण धर्मिष्ठाधी पुरुष के मामले उसे भावा-भुक्ताना ही पड़ता है। जिस समय किसी दशिमव धार्ष्ट्य प्रयत्न धनमुक्त कार्य की प्रेरणा से मनुष्य जाग पड़ता है उस समय व्यक्तित्व धार्ष्ट्य की वे सारी तुच्छताएँ और स्वाभिमानीएँ फिर छिर नहीं उठा सकतीं।

यतीन्द्र बाबू का नेतृत्व इस दल का था कि इसके प्रभाव से बंगाल के बहुत-से छोटे-छोटे दल एक में मिल गये थे। यद्यपि यतीन्द्र बाबू कोई पुराणपर विश्वास नहीं थे किन्तु उनके चरित्र के प्रभाव से बहुतेरे शिक्षित युवकों ने उन्हें आत्मतर्पण कर

रिया था। इनमें जैसा धनुस साहस था वैसे ही इनके प्राण भी सदा थे। इनके चरित्र-बल की बातें बंगाल के विप्लववादी लोगों को भली-भाँति मालूम हैं। किन्तु इनके द्वारा हम मित्र-मित्र वहाँ का एक मूक में धाबड़ा होना उसी दिन सम्भव हुआ जिस दिन बि पंजाब में गदर होने की तैयारी के समाचार से एक नये काम की प्रेरणा ने उन सबको उठावसा कर दिया था। फिर भी इस मिलन-कार्य में यतीन्द्र बाबू का चरित्र बहुत ही सुन्दर रूप में प्रकट हुआ है। क्योंकि इस के मित्र-मित्र सम्प्रदायों में कुछ इन-विषे ही आदमों ने के धीरे इन सबका स्वागत और चरित्र भी मामूली आदमियों के आवाज धीरे चरित्र जैसा नहीं था यद्यपि उन सबके मन पर आक्रियण कर दिया कुछ मामूली शक्ति का काम नहीं है।

सब तो यह है कि बंगाल में इस समय विप्लव का उदय करैवाने दो ही दल थे। इनमें से एक के यतीन्द्र बाबू थे। दूसरे दल के दो नाम किये जा सकते हैं एक बंगाल के बाहर काम करता था और दूसरे ने बंगाल के भीतर ही अपना कार्यक्षेत्र बना रक्खा था। बंगाल के बाहर की कुछ जिम्मेवारी रासबिहारी को ही थी किन्तु बंगाल के भीतर का काम ही रहा या उसका भार किसी एक व्यक्ति पर न था।

यतीन्द्र बाबू काही इसलिए बुलाये गए थे जिसमें कि सारा उत्तर भारत एक क्षेत्र में और एक क्षेत्र में कर लिया जाए। इस प्रकार पंजाब के सीमांत प्रदेश से लेकर पूर्व बंगाल और असम की सीमा तक समूचा देश एक संगठन में रहकर विप्लव के लिए तैयार हो जा। पंजाब के सिपाही इस समय कुछ कर दिखाने के लिए ऐसे उठावले हो गए थे कि जब किसी भी तरह उन्हें शान्त न रखा जा सकता था। मैं नहीं कह सकता कि इस प्रकार उन्हें संयत कर देना अच्छा हुआ या बुरा क्योंकि यदि हम लोगों की रोक-टोक न रहती तो पंजाब में अवश्य ही कुछ न कुछ भीषण घटना हो जाती। शीघ्र कह सकता है कि उसका फल क्या और क्या होता? हम लोगों ने उनकी ज़ख्मीबाजी को इसलिए रोका था कि सारा देश एक मठ से विप्लव के तात्त्विक-नृत्य में सम्मिलित हो जाय।

मालूम नहीं कि यतीन्द्रबाबू के काही माने का हाल सरकार को कुछ भाव हुआ या ना नहीं और यदि हुआ था तो कितना? यद्यपि मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए कि यहाँ पर इस बात का ज़रूरत मैंने इसलिए किया है। क्योंकि यहाँ तक मैंने जो कुछ लिखा है उसमें एक भी पृष्ठ भाव प्रकट नहीं का गई है, यहाँ तो

मैंने ज्यों बटनाघों का सम्बन्ध किया है जिन पर कि पश्चिम-सम्बन्धी मुकदमों में प्रकाश पड़ चुका है और जो घटनाओं में प्रभावित हो चुकी हैं। कुछ बातें तो ऐसी भी हैं जिन्हें सरकारी पत्र छीक-छीक महीं जानता इसीलिए इन बटनाघों को भी मैंने छोड़ दिया है। क्योंकि उन बटनाघों को सिद्ध करने योग्य उपयुक्त प्रमाण इस समय तक सरकार के पास नहीं हैं। जिन बटनाघों के प्रकट होने से बिम्बी वर तनिक भी धीरे धामे की सम्भावना नहीं है और जिन्हें सरकार तो बत्ती साँठि जानती है किन्तु हमारे देशवासी जिनके व्यस्त व्यस्त धावास के सिवा और कुछ भी नहीं जानते ऐसी ही बटनाघों का वर्णन मैं अपनी लेखन-शक्ति सीम होते हुए भी करना चाहता हूँ। निम्न युद्ध के समय भारत में जो पश्चिम सम्बन्धी मुकदमे हुए वे उनकी सुनवाई अधिकतर जेलों में हुई थी उस मुकदमों का कच्चा हाल जनता को प्रायः मासूम ही नहीं हुआ क्योंकि पुलिस और म्याग कर्ता को जिस बात का अकामन सम्भव न होता था फिर वह भले म्यागकर्ताओं के सामने प्रभावित हो चुकी हो उसका समाचार प्रकाशित न किया जाता था। इन कारणों से वे घटनाएँ बहुतों के लिए बिलकुल ही गई होती। मैं सिर्फ यही चाहता हूँ कि जो बातें सरकार तक पहुँच गई हैं उनसे जनता भी परिचित हो जाय। जो सम्भव एक दिन देश में हुआ था और जिसको जानने से अपनी एन्ति-सामर्थ्य का ज्ञान हो जाता है और यह भी मासूम हो जाता है कि जिस जनह हमारी दुर्बलता थी कहीं हमने बुद्धि का परिचय दिया था और किस स्वान पर हमारे मन की संकीर्णता तथा कार्य की दृष्टि प्रकट हुई थी—यद्यपि ही उन बटनाघों पर मैं निस्कोष होकर प्रकाश डालना चाहता हूँ। इसमें हमारा भला ही होना बुराई तनिक-सी भी न होती। देश में विप्लव को जैसी प्रचण्ड रवारी हुई थी उसे धिमाने की शक कुछ भी प्रावश्यकता नहीं है। मैं तो चाहता हूँ कि देशवासियों को उसका रसी रसीभर हाल मासूम हो जाय। मेरी पुरतक पूर्ण होने पर देशवासियों को मासूम होया कि बहर की रवारी कुछ इन दिने नरकों और नरमुककों के मन की लहर ही न थी और न इसकी रवारी ही कुछ ऐसे सम्भवस्थित कम में हुई थी जहाँकि रीमट रिपोर्ट में प्रकट किया गया है। रीमट रिपोर्ट तो किसी ही इस दृष्टि से गई है कि भारतवासियों को प्रावश्यकत पर विराम न होने पावे यत् उसमें बटनाघों का वर्णन इस रूप पर किया गया है जिससे कि सरकार की रजन-नीति को सहानुभूति मिले। इस रिपोर्ट में बहुत-सी

बातें बढ़ाकर मिली गई हैं। किन्तु इनमें यह बढ़ावा विमर्शपूर्ण गुच्छ विषयों को दिया गया है और यह काम इस ढंग से किया गया है जिससे कि विप्लववादी लोग देशवातियों की मदद में हास्यास्पद हैं। फिर ऐसी साध-साध बातें बड़ी सफाई से दबा दी गई हैं कि जिनके प्रकट होने से देशवातियों के मन में घागा का संचार हो सकता है। रीतट रिपोर्ट पढ़ने से यह हृदय नहीं माजूम हो सकता कि कितने समय से बड़ी साधमानों के साथ बहुत ही धीरे-धीरे कितने नर रत्न किस प्रकार इकट्ठे किये गए थे फिर कितने बुद्धों और कर्णों के बीच हाकर, कितने भीतरी बाहरी कर्णों की कसौटी पर कैसे जाकर कितनी भीरु की रताओं की महिमा से मण्डित हुए इन नर रत्नों की माया गूँधी गई थी। मुझे तो इसी बात का दुःख है कि उन सारी बातों को उपयुक्त रूप में प्रकट करने योग्य शक्ति मुझमें नहीं है तथापि जैसा मुझमें बनता है करता हूँ।

बहुत-से लोग यह भी सोच सकते हैं कि इस प्रकार सारी बातें प्रकट कर देना (मानों ये बातें धनी तक गन्त हैं!) सरकारी पक्ष को समन-नीति का प्रयोग करने के लिए और अधिक मौका देगा है। किन्तु इसका उत्तर में मुझ यही कहना है कि विप्लव की जो धारा एक दिन सिर्फ संघर्ष के एक प्रांत की सीमा के ही भीतर थी उसी की अभिप्राय होनह-सतरह वर्ष की समन-नीति का दमन पाकर उबलपिन्दी और पैसावर तक फैल गई थी। अतएव जो लोग इस समन-नीति की बड़ उबाड़ना चाहते हैं उनसे भरा यही कहना है कि दुपरा विमर्श युग के विप्लव की लैपारी के प्रयत्न को मज्जाक में उड़ाकर माजीव न कहिए या उसके अस्तित्व को ही अस्वीकार मत कीजिए, प्रत्युत सरकार को अस्ती-नीति समझ दीजिए कि देश की सच्ची आकांक्षा को दबाने का उद्योग करने से अथवा ईश आन्दोलन का विकास होने के लिए मौका और समय न देने से। इस प्रकार गुप्त-अनवागिन का उत्पन्न होना अनिवार्य है। सैन्य प्रकाशय आन्दोलन की अपेक्षा दिएकर विप्लव का उद्योग करना कम अधिकतासी नहीं जान पड़ता है। ईश्वर में प्रकाशय आन्दोलन करने का सुप्रोत्साहन देने के कारण—फिर वह आन्दोलन कितना ही उग्र क्यों न हो—वही गुप्त रूप से विप्लव का उद्योग करने ही परिमाण में नहीं किया जाता कितने परिमाण में कि फ्रांस अथवा यूरोप के अध्याय देशों में किया जाता है। मरफोग्मुस वाति ही समानात्म से नष्ट में कर ली जाती है किन्तु बिकाधोग्मुस वाति के आत्मप्रकाश करने के उपायों को किसी भी समानात्म द्वारा व्यर्थ नहीं किया जा

सम्भत्ता। आज यह बात क्या सरकार धीर क्या भारत की जनता सभी को मन्त्री तरह जाननी चाहिए।

यतीन्द्रबाबू जब इस लोक में नहीं हैं इसी से उनकी बात प्रकट करने में मुझे शिथिल नहीं हुई। शायद हमारे बैसाबासियों को ठीक-ठीक मान्यता नहीं कि इस समय हम लोग घारे घसरी भारत में एक दिन से धीर एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं, धीर शायद बंगाल के विप्लवकारी दलों को भी इसका सोनहों माने पठा न था।

यतीन्द्रबाबू का विशेष रूप से अनुरोध था कि इस विप्लव के लिए नियमित दिन इतना पीछे हटा दिया जाए जिससे कि बंगाल में पहुँचने पर उन्हें कम से कम दो महीने का समय मिले धीर इस बीच वे कुछ रुपये-पैसे भी बना कर सकें। उन्होंने बार-बार कहा कि बिना हाथ में कांड़ी बन किए इस काम में कदना ठीक नहीं। किन्तु उनकी इस 'कांड़ी' की बारम्बा की सीमा बड़ी सम्झी बोड़ी थी। उन्होंने अपरिमित इच्छा का बोझ समय में संभल किया जाना भी मनाप्य काम था। इस बात को ध्यान में यतीन्द्रबाबू ने स्वीकार कर लिया था किन्तु इस घोर की दशा को वे ठीक ठीक समझ न सकते थे। उस समय पंजाब के सिपाही बहुत ही धीर हो रहे थे। इसका एक कारण बहु भविष्य की स्थिति थी कि वे न माने कि बिना पश्चिम के सम्बन्ध में भेज दिये जाएँ। इसके बिना भारत के विभिन्न सैनिक-बलों को भी लगातार एक छोर के स्थान से दूसरे छोर के स्थान में बदलकर भेज दिया जाता था। इसीलिए, अनुकूल दशा में न रहने दिये जाने पर, यदि उन सैनिकों को मुझ दक्षिण की किसी छावनी में भेज दिया जाय तब तो उनकी सारी मांगों पर जाता पड़ जायगा। ऐसे ही अनेक कारणों से पंजाब के सिपाहियों को धन्य रसना तो कठिन हो ही गया था साथ ही हमें भी यह बड़ा सटका था कि विप्लव के लिए तैयार किये गए सैनिक कहीं अभ्यर्थ न भेज दिये जाएँ। इन कारणों से हम लोग यतीन्द्रबाबू के अनुरोध को न मान सके हम लोग भी कुछ-कुछ उठावसे हो गए थे कि ऐसा बढ़िया मौका किसी कारण द्वारा से न निकल पाय। इसी से एक घोर तो हम सिपाहियों को धन्य रखने का सद्योप कर रहे थे धीर दूसरी घोर ऐसी तैयारी में लगे हुए थे जिससे कि बैराबर में एक-ही होकर कुत्त कर दिया जाय। साथ ही यह भी ध्यान रखना क्या था कि इस काम में क्या विफल न होने पाये। यतीन्द्रबाबू से भी वे सारी बातें समझाकर कही गई धीर सावधानी से उन

भोगों को भी हमारे साथ ही साथ समान भाव से इदम बढ़ाना पड़ा।

✓ यह हम बहुत दिनों से समझते थे कि अपना जनता को उभाड़ देना कुछ कठिन काम नहीं है। परन्तु इसके साथ-साथ हम यह भी जानते थे कि चिकित्सा जनता को भड़का देने से ही हमारी कार्य-सिद्धि की बाधा विशेष रूप से नहीं है। इसी से हमने इस कार्य की ओर विशेष रूप से ध्यान नहीं दिया था। हम लोगों का विचार था कि पहले देश के विदित युवकों को सम्मिलित करके एक बिराद देवध्यापी संघ का संगठन कर लिया जाय और फिर उसके बाद यदि देशी क्रोड़ों को अपने मार्ग की दीक्षा दी जा सके तभी विप्लव की नींव पक्की होगी परन्तु इस तैयारी के साथ-साथ हम लोगों ने विदेशियों से कुछ भी सम्पर्क नहीं रखा और गहर के खोले में यही बड़ी भारी भूल थी। कई मठवा यह विचार भी हुआ था कि इस तैयारी के साथ-साथ अधिक परिमाण में धर्म-सत्त्वों के रेंगाने का भी सम्बोधन होना चाहिए, किन्तु नेता लोग इस ओर से सदासीन थे। वे कहते थे कि वह समय अभी दूर है। किन्तु जब समय आया तब फिर न इसका सम्बोधन करने की समय खा और न कोई जरिया ही मिला। सारे देश में तो नहीं किन्तु बयास और पंजाब में युवकों का जो संघ बनाया गया था उसकी व्यापकता कुछ कम न थी किन्तु इस संघ का विकास और परिणति बंगाल में जसी हुई थी वही और कहीं भी नहीं हुई। व्यक्ति के भीतरी मूल और कुछ समय-व्यापी साहचर्य के फल से यह संघनित जैसी प्रसफुटित होती है वही और किसी तरह नहीं होती। यही कारण है कि सच्ची संघनित बंगाल में ही गठित हुई थी क्योंकि पंजाब में जो विप्लव की तैयारी हुई थी उसका तो सारा ही सम्बोधन खासकर उन शिक्कों ने ही किया था जो कि अमेरिका-प्रभृति देशों से लौटकर भारत में आए थे। इन विदेश से आये हुए शिक्कों के साथ देश का बैसा बना हैम-मेल न था और फिर इस संघ का संगठन भी मित्त-मित्त व्यक्तियों के कुछ कात-व्यापी साहचर्य से नहीं हुआ था। देशवासी लोग भी उनकी ओर से कुछ सापरबाहू थे किन्तु बयास की जनता संमान के रा से हटती सदासीन नहीं थी। इसके सिवा यह बात भी है कि जिन व्यक्तियों के सहयोग से संघ संगठित होता है उनके मन और प्राणों में भार्गव की प्रेरणा जितनी मज्जीर होगी और उस भार्गव का ठाठ जितना ऊँचा-बाँधा जायगा उसी परिमाण में संघ भी शक्तिशाली होगा। इस दृष्टि से बयास के बाहर का कोई भी संघ बंगाल की संघनित के समान शक्तिशाली न था — ब



मिन्न-मिन्न घादों के बाढ-प्रतिबाढ की शीड़ा बीठे धमिनच रूप में देख पड़ी, वैसे बंगाल के बाहर देखने में नहीं आई। हमारी इस विप्लव की तैयारी के साथ भारत के बातीय बायरन का मिन्न-मिन्न धीर से क्या सम्मान का धीर विप्लव बादियों के व्यक्तिगत जीवन में बहु किस प्रकार प्रतिफलित हुआ था इसकी चर्चा नहीं होनी चहूँ बंगाल का वर्णन किया जायगा। इसका प्रधान कारण यह है कि उस घादों के हम्न का बीठा धनुषन मध्ये बंगाल में हुआ है बीठा धनुषन नहीं हुआ धीर नहीं तो मैं मुख्यरूप से बंगाल के बाहरी प्रदेश के बायोलेन का वर्णन कर रहा हूँ। बंगाल के बाहर तो हम सोच प्रभावतया विप्लव की तैयारी की मामूली बातों में ही लगे हुए थे किन्तु बंगाल में मालों भारत के वास्तविक बातीय बायरन के लिए—क्या चर्म, क्या कर्म क्या साहिरन धीर क्या सामाजिक भाचार बिचार—सभी कामों में हम लगे लगे हुए थे।

भगवान् प्रदेशवालों को बीठों में पड़ी होके का बीठा सुधीठा रहता थाया है बीठा सुमीठा यदि बंगाल में बंगालियों को होता तो चहूँ न जाने कब का पहर मच गया होता। किन्तु इस समय में पञ्जाब में किस फुटी से विप्लव की तैयारी हो रही थी उसको देखते हुए हम सोच सोचते थे कि बंगाल न जाने इस समय किस प्रकार विप्लव में सामिल होना। बंगाल के पिछले युग के कलंक का स्मरण होने से मेरे मन को बड़ा कष्ट होता था। यही कारण था कि बंगाल में बाकर काम करने की इच्छा होती थी। इससे यतीन बाबू बघेरु बर बंगाल को बापल बसे मएतब चहूँ जाने के लिए मैं विशेष रूप से ठासुक हुआ किन्तु बाबा इसके लिए किसी प्रकार रुकी न हुए। उन्होंने कहा कि वे स्वयं तो पञ्जाब जायके धीर बुझे बंगाल धीर पञ्जाब के मध्य के बस में रहकर उनका दोनों प्रदेशों की कारबाई का सिलसिला जोड़े रखना होगा। इससे मन बाकर बुझे कापी में ही रहना पड़ा।

इसी समय बंगाल में मोटर इक्कीती का भारम्भ हुआ धीर बाड़े ही समय में कई अपहृ डाके जाने कए धीर इस तरह बहुत-सा धन खंडहू किया गया। इन बट नामों के कुछ ही दिन पहले रोडा कम्पनी के चहूँ से पञ्जाब पोकर पिस्ट्रीनों धीर पञ्जाब ह्जार के मचमम टोटों की बोरी हो गई। धन तक बंगाल में विप्लव की तैयारी का कार्यक्रम बो-एक दलों में ही बाबड था। यतीन बाबू ये तो जाने काम कुछस किन्तु धन तक कुछ-कुछ चाभी रहते थे। इससे मध्याम्य दलों का भी कुछ भी काम-काज न होता था। इस बार यतीन बाबू के पूर्ण उद्यन से काम में जुटे

ही बंवास में बड़े सपाने से काम-काज होने लगा। उनके इस नये धार  
देकर हम लोगों को बड़ा ही हर्षपूर्ण प्रचरण हुआ।

इस रासबिहारी भी पत्राव को रवाना हुए। उन्हें गिरफ्तार के  
लिए साढ़े सात हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। रासबिहारी को  
गिरफ्तार न कर सकने के कारण सरकारी पक्ष की कार्य-कुशलता में बड़ा नम  
मना था और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए भारत सरकार ने कुछ उठा न रखा  
था। एक ओर तो वह प्रबल प्रतापशाली ब्रिटिश राजसक्ति थी जिसकी अपार  
बल-बल और सौकरम प्राप्त है जो इतने बड़े मुनियमित राज्य की भावक है,  
देश के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जिसका अद्भुत संगठन (Organisation)  
है और जिसके जामुन-विभाग की होशियारी की तुलना कम के सिवा  
एशिया में किसी से भी नहीं हो सकती, और दूसरी ओर वा भारत का हमारा वह  
बलि विप्लव दल—इतना दखि कि एक दिन रासबिहारी ने हम लोगों से कहा  
कि 'मुझे संदेहों के हवाले करके साढ़े सात हजार रुपये बसूल कर लो। इस दल  
के साथ देशवासियों की आन्तरिक सहानुभूति तो थी किन्तु वे डर के मारे किसी  
भी तरह उसकी सहायता करने की तैयार न थे और फिर इस दल के नेता  
समाज में बिलकुल ही अपरिचित थे जो बात की एक बात तो यह है कि वे लोग  
बिलकुल ही असह्य थे, इनका एक-मात्र बल और भरोसा था केवल अपना  
असीम विश्वास तथा जिस की अद्भुत दृढ़ता, किन्तु अपने घर में ही वे अपने  
स्वदेशवासियों से अपेक्षित थे। ऐसे दो दलों के अन्तर्गत इन्हें व विप्लव-दल ने बहुत  
दिनों तक केवल भारवश ही नहीं की थी, बल्कि उसने प्रत्यक्ष सरकार को भी  
फिरोने ही नाक नचा दिए थे और इस प्रकार अंग्रेजी साम्राज्य की प्रबल सक्ति  
को रासबिहारी को गिरफ्तार नहीं कर सकी इसका प्रधान कारण था हमारे संघ  
की व्यापकता और बहुत बढ़िया सम्बोधन। उपयुक्त सक्तिशाली मुनियमित संघ  
न होता तो रासबिहारी को बचा लेना कदापि सम्भव न होता। इसमें सन्देह नहीं  
कि इतने पर भी रासबिहारी की कुशलता और उनका भाव्य कुछ कम सहायक  
नहीं हुआ। फिरोने ही भीषण संकट के अवसरों पर वे जर्मन से सह्य ही बच निकले  
थे। अब उन बातों का अन्त होने से ही वह में रोमांच हो जाता है। इसे भगवान्  
की विशेष कृपा के सिवा और क्या कहा जाय। इन सब बातों का वर्णन दूसरे  
भाग में होगा। केवल रासबिहारी ही इस प्रकार अपने को खिलाने में सफल न हुए

ये, भापतु और भी कितने ही युवक इसी समय से तथा इसके पश्चात् भी प्रबल प्रतिद्वन्द्वी की सारी शक्तियों को व्यर्थ करके तीन-चार वर्ष तक—कोई-कोई तो इससे भी अधिक समय तक—छिपे रहने में समर्थ हुए थे। यदि इन छिपे हुए लोगों का रहस्यपूर्ण इतिहास सिखा जाय तो भारत के साहित्य को एक नई सम्पत्ति प्राप्त हो।

रासबिहारी राठ की बाड़ी से बिस्नी होते हुए पंजाब को रवाना हुए। इस समय से प्रायः हर वक़्त हम लोगों में से कोई-न-कोई रासबिहारी के साथ-साथ रहता था। बिस्नी पहुँचने तक कोई सास बटना नहीं हुई। पाड़ी जिस समय बिस्नी स्टेशन को पीछे छोड़कर जाने बड़ने लगी उस समय रासबिहारी ने धक्का-स्मात् देखा कि उनके छोटे से बच्चे में उनकी पहचान का कुट्टिया पुसिस का धारोसा बैठ रहा है। उस समय रासबिहारी के मन की जो वृत्ति हुई होभी उसकी हमें कल्पना से ही ज्ञान सेना चाहिए। जो हो, सीमाप्य से उस राठ को वे अपने छिर पर टोपी लगाये रहने की बड़ीसत साफ बच गए और भगता स्टेशन जाने पर वे उस बच्चे से निकलकर दूसरे बच्चे में जा बैठ किन्तु गए वे उसी पाड़ी से इसीसे समझ लीविए कि उनमें कितना साहस था। इस प्रकार बड़ी छान्ति से किन्तु बुद्धता के साथ रासबिहारी सब बातों को धामते रहने पर भी बहकती हुई भाग में कूब पड़े। वे अमृतसर पहुँच गए।

इस युक्तप्रदेश बिहार और बंगाल की मिन्न-मिन्न छाबनियों में हमारे छाबनियों ने अपना धाना-धाना आरम्भ कर दिया। बोड़े ही दिनों में पंजाब से करतापसिह तथा और भी कई सिक्ख पंजाब का समाचार लेकर कापी आए। उस समय उत्तर भारत की तमाम छाबनियों का हास हमने मानस कर लिया था। सब स्थानों का समाचार मिलने पर समझ में आ गया था कि उस समय देश में घोरि सेना बहुत ही छोड़ी जो और बितने गोरे से भी वे निरे रंगकट वे। टेपी थोरिमन सेना के छोकरों और बुबले-पतले लम्बे मीनवान सिपाहियों को देखकर हम सोच चाहते थे कि अब बहुत बम्ब हमें शक्ति की बाँच करने का मौका मिस जाय। उन दिनों समूचे उत्तर भारत की दो-तीन बड़ी-बड़ी छाबनियों और काबुल के सीमास्त देश के सिवा कहीं भी तीन सौ से अधिक गोरे सिपाही न थे। बड़ी बड़ी छाबनियों में भी इनकी ताबाद एक और दो हजार के बीच में थी। मिन्न मिन्न छाबनियों में बितने धरन-धरन वे उनकी सहायता से कम-से-कम वर्षभर तक तो मजे में मूढ़ जारी रक्खा जा सकता था। हम लोगों में उन सब बातों का

## काशी केन्द्र की कहानी

रतो-रती पड़ा सगा लिया था जिनका कि तब मर चुका था। जैसे—बिस्म रेजिमेंट में कितने नाम राईकमें हैं? बारतूमों के कितने बक्क हैं? मर चुके पर बिस्म रेजिमेंट पर राईक है और बंसा पहरा रहता है? इत्यादि। हिन्दुस्तानी ज़ोनों की मान निकलना वह समय बहुत ही ग़राब थी। उन्हें हर घड़ी वह शर्मा बना रहता था कि इस सब यूरोप जाने का हुक्म होता हो है। जो दम दूब रता था लम्बीमठ समझा जाता था। छात्रनिषेधों में पहुँचते ही हमारे युवकों का मिठाही मोप बना बार-बार-बार करते और बड़े धाड़ह में उनकी बातें सुनते थे। एक बार एक मुबक मिठी छात्रनी में गया वह ज़मी दिन रात को बड़ी मिठाहियों की बैठक हुई। उस बैठक में बड़े धोहदाओं के बिना और सभी मिठाही एक्क हुए, उस बिस्म से घाये हुए मुबक की बातें उन सोपों में बड़े धाड़ह में सुनी। अन्त में उन सोपों ने कहा कि इस बिस्म में हम सोप धनुषा न बनने, हाँ हम सोप ऐसा उकर करेये जिसमें बिस्म के समय हमारे हाथ से बिस्म न निकल जाने पाए, वह वर सबमुप सब बाएगा तब हम भी उनमें शामिल हो जाएँगे।

काशी की रेजिमेंट में भी घोर भी कई बार गया था। इस रेजिमेंट में दिन्ना निह के सिवा घोर नहीं आये घादनी थे। व सोप मचनुच देग के मन के बिस्म विस्म में शामिल होने की तैयारी थे। दिन्ना निह ने एक निह हम सोपों में पूछा—बाबू, इस के स्वाधीन हो जाने पर क्या हम सोपों को कुछ जागीर या माद्री बंदरह मिलेगी? एक दिन मरकटन में जाकर सने हम सोपों ने घादनी कगमात दिन्ना निह की घोर कहा कि देखो यह मापुनी कई नहीं है इसम माग छुने ही बिस्म प्रकार मरक से सारी की सारी जस उठती है, तनिक-नी भी बाधी नहीं रहती। यह सीता बसकर ने सोप धनुषा करते थे। इस प्रकार हम सोप कई तरह में दिन्ना निह की घोर उसक धनुषा सीधियों की धपने मत में जाने की कोशिश करने थे। इस रेजिमेंट के कुछ धाड़हियों में बार की मेरी भेंट हुई। उन्होंने बड़े भविष्यवाक से मापा धुकाकर मुझसे बातचीत की थी। इनमें एक मिठाही की उम्र पचास से ऊपर थी। उसने मुझसे कहा—बाबू मेरे साथ के जान-बहुतान नाम धब कोई भी जीवित नहीं। एक मैं ही रह गया हूँ। सो मेरा समय बचती है। बाबू धब मैं मोठ से नहीं करता तुम्हीं मेरे मुक हो गए, क्योंकि दुनिया के ममनों से मेरे चित्त को हटाकर तुम्हीं भगवान् की घोर कर दिया है।

कितनी ही रेजिमेंटों में हमारी पहुँच हो चुकने पर उनकी धम्प स्थानी में

पकती हो गई। इससे यह हुआ कि हमारे काम का प्रचार बेस में बहुत दूर तक हो गया।

रेजिमेंटों में प्रचार करने के अलावा इसी समय हमने देहात में जाकर वहाँ की जनता में भी अपना रसाई करने की कोशिश की। युक्तप्रदेश में कुछ ऐसे गाँव हैं जहाँ केवल ठाकुरों की ही बस्ती है। ऐसे अनेक केमलों से अंग्रेजों की छीनों के लिए रंगवट चुन जाते थे। युक्तप्रदेश और पंजाब के अनेक लोग बंगाल की स्थितिगत जनता की भाँति नहीं हैं। एक तो वे बंगालियों की अपेक्षा धीरे से बहुत कुछ अलग हैं, दूसरे अपने-अपने धर्म का स्मरण इनमें अबतक मजबूत परिभाषा में बना है। ये धर्म हैं सही किन्तु राजनीतिक दृष्टिकोण इनमें अत्यन्त प्रबल हैं। बंगाल की जनता और स्थिति सम्प्रदाय की अपेक्षा भी यहाँ वालों में अपने धर्म पर बहुत अधिक प्रीति और मोह है। सुषोष्ण नेता की असीमता में परिचित किए जाने से वे अस्थिरित लोग एक बार सम्भव को भी सम्भव कर सकते हैं।

इन लोगों में भी हमारा आना-जाना होने लगा था और इन लोगों से भी हम को कुछ कम आघातमक उत्तर न मिला था।

इधर रासबिहारी जी पंजाब में सैनिकों से मिल-मुसाफ़ात करने लगे। वे मिल मकान में रहते थे जहाँमें किसी से भी शेंट न करते थे। दूसरों-से मिलने-जुलने के लिए बोलीन मकान बिलकुल अलग थे। सिपाहियों से वे ऐसे ही एक अलग मकान में बिता करते थे। इस समय के लाहौर के दो सैनिकों का जो हाल मैंने सुना है वह सदा स्मरण रखने योग्य है। एक का नाम सख्तमनसिंह था। दूसरा सिपाही मुसलमान था उसका नाम मुर्ते साह नहीं। वे दोनों ही हवलदार थे। सिपाहियों पर सख्तमनसिंह का आशा प्रभाव था। इस रेजिमेंट के एक सिपाही से बाब में अन्तर्गत में मेरी बातचीत हुई। उससे पता चला कि सख्तमनसिंह ने बहुत पहल से अपनी रेजिमेंट में एक छोटा-सा दल बना रखा था। वे बीच-बीच में अलग-एकन होते थे। उस समय सिखा बर्न-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ी जाती थीं और अनेक दिवसों पर वर्षा दर्यादि होती थी। कई बार इसकी छबर पाकर रेजिमेंट के अग्रज हाकिम इसे रोकने का हुक्म दिया करते थे। इस प्रकार बीच-बीच में दम्य होकर भी वह कार्य छोटे रूप में कई वर्षों से लगातार होता चला आ रहा था। रेजिमेंट के सभी लोग सख्तमनसिंह की बड़ा यमार्त्ता और उम्मत चरित का पूर्ण समझते थे। सख्तमनसिंह की फौसी का हुक्म हो चुकने पर जब मुसलमान हवलदार

की बात बकन देन का मालूम देकर सरकार की घोर मे-  
सने की कोशिश की गई और उससे कहा गया कि तुम एन  
फ़ांसी पर चढ़ना कैसे पसन्द करोगे तब उस बीर देशभक्त  
ने यज्ञ ही बलि या उत्तर दिया। उसने कहा—“अगर मैं स  
फ़ांसी पर टाँचा जाऊँ तो मुझ बहिस्त मिले। उसको भी फाँसी हो गई।

४०  
३३८

बिद्रोह का निर्दिष्ट दिन जितना ही समीप माने जगा उठता ही हम लोगों  
को लटकने से सजा कि 'क्या हम लोग पार या जाएँगे ? इतनी बड़ी जिम्मेदारी  
को क्या हम लोग भे सकेंगे ? विप्लव के लिए जैसी तैयारी करने की तरकीब  
हमें मूक पकड़ी थी उसमें तो हम लोगों ने कोई कसर रखी नहीं किन्तु फिर भी  
उस बहुत अल्प आनेवाले दिन के बिचार से ही घरीर बर्बा जाता था। पंजाब  
जाने से पहले दादा भी कई बार यही बात कह चुके थे।

असल में हम लोग यह चाहते थे कि एक दिन एकाएक—बिना किसी को  
अपनी इच्छा बतलाए—उत्तर भारत की छाकतियों में तमाम अंग्रेजी सैनिकों पर,  
एक ही दिन और ठीक एक ही समय एकदम हमला कर दिया जाय और उस रेल  
पैज के बक्त जो लोग हमारी शरण में आ जाएँ उन्हें छँद कर लिया जाए। बिद्रोह  
राज के बक्त सुरू किया जाय और उसी दम सहर के तार हरगिह काटकर अंग्रेज  
बालश्रिकों तथा उनके पुरुषों को छँद में डाल दिया जाय और फिर खजाना मूट  
करके बिल से छँदी रिहा कर दिये जाएँ। इसके पश्चात् उस सहर का इस्तबाम  
अपने जुने हुए किसी योग्य पुरुष को छीनकर तमाम बसबाइयों का दल पंजाब में  
जाकर एकत्र हो। हम लोग यह न समझे बैठे थे कि गबर मचने पर अन्त तक  
अंग्रेजों के साथ सम्मुख युद्ध में हमारी विजय ही होती जायगी किन्तु इसका हमें  
पक्का भरोसा था कि उल्लिखित रीति के अनुसार एक बार गबर मचते ही एक  
ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय विविध तथा उपस्थित हो जाएगी कि यदि हम कम-से-कम वर्ष  
भर तक इस युद्ध को ठीक-ठीक पर जारी रख सकें तो विदेशों के मित्र-मित्र राष्ट्रों  
के भावपूर्ण विद्रोह के फल से और अंग्रेजों के समुहों की सहायता से देश को  
स्वाधीन कर लेना हमारे लिए, अत्यन्त कठिन होने पर भी, असम्भव न होगा।

एक दिन पंजाब से यह समाचार लेकर कलकत्ता आया कि विप्लव का  
मुहूर्त पक्का कर लिया गया है। इसकी सूचना करारी क सरर मचा दिया जायगा।  
काम रात को ही आरम्भ होगा। यह सुचना मुझे इतवार को मिली थी। अगले

यद्वशीकृत धारणा से देह और मन न जाने कैसे भाव से कम्पित हो उठे। वह ऐसा वैशेषिक भाव का विस्तार पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था। मही उठे आत्मन् कहा जा सकता है और न भावका ही। विप्लव का आरम्भ होने के लिए अब एक हफ्ते भर की बेर भी। अपने आध्यात्म स्थानों को भी विप्लव की ठापीक की सूचना दे दी गई।

बहुत ही घीघ्र होनेवाले इस विप्लव की तैयारी में हम में से बहुतों के मन में एक अस्पष्ट अनिर्देश्य भय और सन्देश का भाव विद्यमान था मानो हम किसी भी तरह विप्लव आरम्भ हो जाने का निसन्देह विस्वास न कर सकते थे। सर्वज्ञों हजारों वर्ष की बीनता और होनता से परधीनता को हजारों तर्कों में निबटे चूने से, आत्मघात को हम यहाँ तक को बैठे थे कि स्वाधीनता के पूर्ण आदर्श की कल्पना कर लेने और उस आदर्श को वास्तविक रूप देने की भरपूर चेष्टा कर चुकने पर भी और इसकी अटक अभिजापा रखते हुए भी हम मानो वह विस्वास ही न कर सकते थे कि सचमुच विप्लव का भंडा सजा कर दिया जायगा। अन्तर्मन का बुझिया जिस प्रकार किसी भी तरह वह विस्वास नहीं कर पाता कि किसी दिन उसका भी महीम धारणा—उसे सुक मिलेगा—जिस प्रकार ऐसा व्यक्ति जो सदा आपरबाही से दुतकारा गया है जो बार-बार बोला जा चुका है वह आधा की कल्पना से भुग्न होकर सारा बीबन जैसे बिछा दे पर वह किसी तरह वह विस्वास नहीं कर पाता कि किसी दिन वह भी फिर किसी का प्रमात्त होना इसी तरह मैं भी भारत के आध्यात्म के सम्मुख मैं हताश हो चुका था।

## - 10 | विश्वासघात और निराशा

मन में ऐसा धाव रहने पर भी बिप्लव को तैयारियाँ होने लगीं। बंगाल के सिन्धु-सिन्धु केन्द्रों में काम करनेवाले बिप्लवकारियों के लिए हाफमेट सिमबाये गए। पंजाब में भारत की राष्ट्रीय गवाका बना ली गई। उस गवाका के रंगों में अपनी विशेषता सूचित करनेवाले काठ रंग को स्पष्ट दिखाने के लिए सिक्कों में बड़ा धावह किया। इसीलिए हिन्दू, मुसलमान सिक्क धीरे धीरे भारत की धर्मार्थ बातियों के बिह्व-स्वप्न भारत की जातीय गवाका बार रंगों की हुई। वहीं रसद वा बन्दो-बस्त हुआ कहीं-कहीं पर स्थानीय मोटर-सारी प्रभृति सधारियों की फेहरिस्तें बनाई जाने लगी। उत्तर भारत के समस्त बिप्लवपन्थी बड़े ही उद्येय से पंजाब की ओर देखकर दिन-दिनसे जाते, मानो पंजाब से इसारा मिलते ही शम्भर में बसला मुन्नी पर्वत भीपक्ष प्रायः समझने लगा। सुना गया था कि कर्नाचित् श्री धीमहाप्रभु अपवन्धु<sup>1</sup> ने कहा था कि भारत वर्ष की समस्या के पक्कात् बिस्व बिस्व में अपनी मुफ्त से बाहर निकलेंगे उसी दिन से भारत की स्वाधीनता का युग धारम्भ हो जायगा। सो ने भी सायब इसी 1918 ई० के फरवरी में अपनी मुफ्त के बाहर था गए। इस बिप्लव का हाव उन्हें रसीमर भी मालूम न था। किन्तु मुफ्त में बाहर जाने पर उन्होंने संकेत से समझाया कि अभी तो कुछ देर है वह कहकर वे फिर अपनी मुफ्त में जाते गए। जबबाम् का धमिप्राय हर बक्त ठीक-ठीक समझ में नहीं आता। हजारों वर्ष से भारत का सारा पुनर्प्राप्त बिस्व तरङ्ग बार-बार ध्वज होता रहा है

1. वे कंगाल के एक पंडितके पुत्र अश्वमेध हैं। शम्भरपत्नी से ही वे शम्भर कर रहे हैं।



उसी तरह इस बार भी समय उत्तर भारत की विप्लव की इतनी बड़ी हमारत भरमपट्टर फिर पड़ी। कुसुमकली का खिलने के पहले ही मानो वृत्त से ठोड़कर बेचता की पूजा में बड़ा दिया गया। सुनिसे यह बर्बोर कर दिया।

पंजाब के सुक्रिया पुलिस महकमे के एक मुखलमान डिप्टी सुपरिटेण्ट ने कृपालसिंह नाम के एक सिक्ख को विप्लव दल में भरती करा दिया। यह उक्त यक्ष्मर का जासूस था। एक ब्यक्ति जो रिस्ते में कृपालसिंह का एक भाई होता था लंदेबों की झौन में लौकर था और इस दल में भी शामिल था। प्रधानतया इसी सैनिक की सहायता से कृपालसिंह का सम्भवतः फरवरी महीने में इस दल में प्रवेश हुआ था। किन्तु इसके कुछ ही दिन बाद कृपालसिंह की परिधिधि पर बहुत लोगों की सन्देह हो गया। तब कुछ नेताओं की सलाह हुई कि उस पर तुरन्त नजर रखनी चाहिए। इसका फल यह हुआ कि दो-चार दिन में ही इसका पुलिस के हाकिमों के पास प्रतिदिन एक निर्धारित समय पर आना-जाना बंद लिया गया। इस विप्लव का भन्ना लड़ा करने को दो-चार दिन की देर रह गई थी इसलिए सोचा गया कि इस वषा में यदि इसे बुनिया से हटा दिया जाय तो ऐसी विकट पड़बड़ मच सकती है बिचसे कि साथ-साथ हमारे धर्मित जनोरण की सिद्धि में बेशक बिप्लव का पड़े। इस मासका के बारे इस कठि को निकालने का कुछ भी उद्योग नहीं किया गया। ऐसी वषा में पूर्व बंगाल वाले उसे बुनिया के भन्मटों से लड़ावे बिनाकमी न मानते। असलु, वाय में पठा गया कि विप्लव के लिए जो दिन मुकरेंर किया गया था उसकी जबर पुलिस को भय बुरी है क्योंकि कृपालसिंह से वा दिन सिखाया नहीं गया था। अतएव निबन्ध हुआ कि कृपालसिंह जब वर से बाहर न जाने पावे और विप्लव की तारीख इक्कीस फरवरी के बरसे जल्दी फरवरी—मानी वो दिन पहले—कर ही गई। किन्तु बुनिया से हो या होनहार के कारण हो—कुछ भी कहिए—इस नई तारीख की सुचना सावनी में दे जाने का काम जिम्मे सौंपा गया था उन्होंने उक्त संवाद सावनी में पहुँचकर जब रासबिहारी से कहा “छात्रनी में जल्दी फरवरी की इतिमा दे जाया” तब कृपालसिंह बड़ी बैठा हुआ था। कृपालसिंह का हाल सब लोगों को जानूय न था। साथ-साथ बरना भट्टारह फरवरी की है। उसी दिन दोपहर के समय सब भोजन करने के लिए सब लौच इतर-इतर गये पर तब कृपालसिंह ने वहाँ से टरक जाना चाहा। किन्तु उस पर नजर रखने के लिए जिनकी नियुक्ति कर दी गई थी उन्होंने उसका हाथ पकड़कर

तीन-चार नहीं की बल्कि हर बख्त उसके साथ बने रहे। कृपार्थसिंह ने मकान के बाहर घाते ही देखा कि भेदिया पुनिव का एक भावमी साहसिक पर उसी घोर घा रहा है। उससे कृपार्थसिंह की मुमाकात हाते ही उन्नीस फरवरी की इसमा पुनिव को भिज गई और इसके कुछ घण्टे बाद घर-घरक शुरू हो गई। जिस मकान ॥ कृपार्थसिंह का उसमें सात-आठ गिरपशरिया हुई। इनमें कुछ मुद्रिया भी थे। जिस मकान में रासबिहारी रहते थे उसका पता वो-एक मुद्रियों ५ सिवा और किसीको धातूम न था क्योंकि जिनसे निमने-बुमने की जकरत होती थी उनसे रासबिहारी घग्गान्य मकानों में ही मिलते थे। इधर मेयजीम पर बेसी सिपाहियों के बदन मोरों का पहरा हो गया। शहर के बांधव बासन्धियर छोड़ी तैयारी से सैन कर दिये गए। उन सबको कैम्प बनाकर रहने का हुक्म हो गया। मुद्र के समय बीकाने होकर रहने की जिस प्रणाली को 'विक्ट' करना कहते हैं उस प्रणाली में गोरे सिपाही और बासन्धियर सोव पहरा देने लगे। हुपियारबन्द गोरे सिपाहियों की टोभियां छोड़ी कम से बस्ती भर में बचकर लगाने लगीं। साहोर दिस्ती फिरोजपुर सनी जयह ऐसा ही हुपा। सोवों ने समझा कि इस छोड़ी तैयारी का बाग्य यूरोपीय मुद्र का कोई बटका होगा। बेसी सिपाहियों के मन में बचपहट छा गई (बन्हीं के वो कि मुक्त-योजना में थे) इधर विप्लव की तारीख वो दिन पहुँचे कर देने से देहात के सब लोग अपने-अपने निश्चित स्थानों में एकत्र नहीं हो सके। सिर्फ करतारसिंह सत्तर-बस्ती बासमियों के साथ फिरोजपुर की छावनी में बसा कि पहल निश्चय हो चुका था पहुँच गए। उस समय वहाँ भी बड़ी हाल था बैसा साहोर में हो रहा था—मेयजीम बेसी सिपाहियों को ह्माकर मोरों के अधिकार में दे दी गई थी और उस पर गोरे सिपाही बड़ी मुस्ती से पहरा दे रहे थे। किन्तु करतारसिंह को साहोर की नई बटना का कोई समाचार नहीं मिला था।

बारकों में ऐसी जोकसी रहने पर भी करतारसिंह काकर कासी पलटन के हकमदार से मिले। हकमदार ने कहा कि अब कुछ दिन तक इम्तिजार किये बिना हम सोव कुछ भी नहीं कर सकते क्योंकि ऐसी दशा में यदि कुछ किया जायगा वो तत्पानाश हो जायगा इससे करतारसिंह ने समझ लिया कि इस बार अब कुछ होने की आशा नहीं। उन्होंने ताड़ लिया कि दो-चार दिन में कैसे दशा हो जाने वाली है। उन्होंने कई तरह सैनिकों को समझाने का बसक्य उद्योग किया कि

यदि मान इसी वन कुछ न किया जायगा तो फिर भीर कुछ होने का नहीं, बही पहना और घाघिरी लीला है। परन्तु विप्राहिमों ने धर्मव्यवहारेदारों की धोर सैयमी से इधारा करके कहा कि इस समय कुछ कर बुझरने की कोशिस विमकुल बेकार होमी। जोसों देखते भभा मन्त्री कैसे भिमली वा सकती है आन-बुधकर कैसे भाग में कूदा जाय ? उस दिन आर्यवागियों के हाथ में यदि उपवृत्त परि भाय में धरुव उरुव होये तो ऐसा विववासपाठ हो जाने पर भी भारत में विप्लव किसी के रोके न सक सकता था। धक्का यदि पहले से ही विधित भीर उपवृत्त अनुप्य विप्लव की बीका लेकर औजों में यती होये तो भी उस समय की विप्लव की तैयारी व्यय न जाती। उस दिन साधार होकर करतारसिंह को लाती हाथ लौट जाना पड़ा। बैहाल के आदमी अपने-अपने घर की बने बए। करतारसिंह लाहोर पहुँचे। अब सारे पंजाब में दकावड गिरफ्तारियाँ होने लगी। जो सीव पकड़े जाते थे उनमें से कोई-कोई मंदाप्रीड करके धीर भी बस-पौव साधियों का माम-आम प्रकट करने लगे। इस प्रकार कभी-कभी थोड़ी छोड़ किसी पाँव को वा घेरती भीर ठव बहुत-से आदमी एक ही बगल गिरफ्तार कर लिए जाते। भार सीव विप्राहिमों के मन में एक तरह की बेबनी बेश पड़ी। रामलाली की एक काली पलटन बरखास्त कर दी गई। लाहौर में वहाँ-वहाँ आनातलाधियाँ धोर विरफ्तारियाँ होने लगीं। किसी सिक्क पर कर-सा भी धन्देह होते ही ठवे लीधा जाने में पहुँचाया जाता था। इसी तरह पकड़-बकड़ होने में कमी कमी दोनों तरह से मोली बल जाती थी। जो ही बार दिन में मामला इस तरह खीन हो गया। अब वन में परस्पर एक-दूसरे पर विववास करना कठिन हो गया।—करतारसिंह बुद्धिमान युवक थे। लाहौर जाते ही वे सीधे रासबिहारी के डरे पर पहुँचे धीर किसी भी स्थान पर नहीं गए। क्योंकि रासबिहारीवाले मकान को बहुत कम आदमी जानते थे इसलिए वह सबसे अधिक सुरक्षित था। उस समय रासबिहारी बड़ी उदासी से एक पाठ पर मुरी की तरह पड़े थे। करतारसिंह भी बुरबाप उनकी बयल में पड़ी हुई एक साट पर भेट रहे। मंदावड के मारे उनका घरार विविध हो रहा था। दोनों ही चुप थे। उनके उस म्मान मीन से मर्म की बड़ी हो निरा बल पीड़ा प्रकट होने लगी। हम में से कितने लोगों को जीवन में उतनी बड़ी चाट सहनी पड़ी है ? जिस की बस्यना जितनी अधिक बड़ी होती है भाव की उपनता धीर पम्मीरता जितनी जितनी ही अधिक होती है उसको जीवन में उतनी ही

भारी चोट भी मगती है। उनकी कितनी बड़ी घाघा छिन्न-मिन्न हो गई ? उनका बिराट आन्दोलन बाढ़ की बाढ़ में धूम में मिस गया। ऐसी दृष्टा में विद्रिष्ट मन का भाव भी बहुत-कुछ बरस जाता है। फिर विप्राहिमों के मन पर यदि विषम घातक का भाव घनना अधिकार जमा में तो इनमें बिबिधता कुछ भी नहीं। दोनों नेताओं ने सोचा कि यूरोपीय महासमर की उसमन के दिनों में भी—ऐसा बहिमा सुमौता रहने पर भी बिप्लव बल सारी तैयारी करके भी कुछ नहीं कर सका। कौन जाने घबड़ फिर कब ऐसा मौका मिलेगा।—किन्तु यह भयानक चोट खाकर भी वे फिर कमर कमकर काम में लग गए। उनके हृदय की असीम घाघा, हृदय का बल माना घटना चाहता ही नहीं था। इसा से वे फिर नये उत्साह से बीर अन्वकारावृत्त भारत-माकाश के एकान्त कोने में अपने ब्रह्मस्वत की दीप-मिथ्या के ही बल और शरोसे पर उठ हुआ-अच्छल बीभन-माघ पर फिर भागे बढ़े। उनके दिल में ब-री चोट लगी थी किन्तु इससे उनके हाथ-पैर फूल नहीं गए। इतने बड़े मार्गदिक बल की मर्यादा को समझने वाले हममें कितने मनुष्य हैं ? बीर की इरजठ करना बीर ही जानता है, इसी से भारत के बिप्लवकारी बल को असेब जिस दृष्टि से देखते थे या देखते हैं, उस दृष्टि से उस बल को कितने भारतवासी देख सकते हैं ? भारतीय बिप्लवपन्थी बल को भारतवासियों के सवा उपेक्षा की दृष्टि से देखा है। यह सापरवाही भारतीय बिप्लवकारी बल की छाती को एक बड़ी बज्रनशर अट्टम की तरह बड़ी बेवसी से दबाया करती थी। उक्त बल की ऐसी अजज्ञा और किसी ने भी नहीं की। इस दल को जिनसे सबसे अधिक सहानु-भूति की घाघा दी उन्होंने उसकी सानत-मसामत की है किन्तु इतने पर भी दल ने हिम्मत नहीं छोड़ी। इस दलवालों के प्राण मानो किसी स्वप्नभोक की कल्पना से भरपूर थे अपने प्राणों की पूंजी के सिवा इन्हें और किसी का भरोसा न था—बिप्लव की यह तैयारी ठेकार तो हो गई थी किन्तु सफलता-निष्कमता की कसौटी से किसी भी आशेन पर विचार करना ठीक नहीं। इस आम्बोलन पर विचार करने के लिए यह ऐनता चाहिए कि इस आम्बोलन के पोखे कितने बड़े आदर्श की कल्पना की और इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए कितने व्यक्तियों ने प्राणों की बाजी लगाकर कहाँ तक त्याग प्रवीकार किया था। ऐसी-ऐसी बातों पर ध्यान देकर ही इस आग्रहानम पर विचार किया जाना चाहिए। किध आदर्श की प्रथा से आग्रह होकर भारत के युवकों ने हस्पेसी में जान लेकर यह खेल खेला

तथा यूरोपीय महायुद्ध छिड़ने से पहले भारत में विप्लव करने की इच्छा रखने वाला इस इसके लिए कैसे तयारी कर रहा था और पंजाब में सहर का ज़खोब निष्पन्न हो जाने के पश्चात् भारत के इस विप्लवपन्थी इस का क्या स्वरूप हो गया था, इन बातों पर इस पुस्तक के अगले भागों में विचार करने की इच्छा है।

द्वितीय भाग

के बाद राजपूताना मर-सा गया और महाराज छत्रसाल के बाद मुन्नेसबख्श ने म्हाल मोमठा आरण कर ली। ऐसा होने का कारण है भारत की पूर्ण सुकृति के बल से कभी-कभी वही माध्यमाली महापुरुषों का आधिपत्य हो जाता है तो भी प्रत्येक जीवन जिस प्रकार पुरुष-परम्परा में अपना प्रवाह बनाये रखता है उस प्रकार भारत की जीवन प्रतिष्ठा नहीं होती है। इसीलिए वहाँ एक महापुरुष के बाद दूसरे महापुरुष का आधिपत्य सम्भव नहीं हो पाता।

किन्तु इस वार के इस नवीन युवकों के विप्लव आन्दोलन की विशेषता यह थी कि यह आन्दोलन किसी का मुँह नहीं देखता रहा। देश के गन्धमान्य सम्प्रतिष्ठ नेता सोच जब एक रास्ते पर चल रहे थे, तब यह युवगम सरीख युवकों का सम्प्रदाय संकटों विपदाओं में डबकसाये बिना अनेक बाधाओं और कष्टों में हिममत हारे बिना देश के नेताओं के बिच्छु ही नहीं प्रसृत उनके हाथ निविड माय में पाते हुए हिरकियाता न था। महामति ठिगक ने जेल से बाहर आकर पुराने प्रादर्यों में भ्रम देखा और अपना मत बदल निवा और अन्त में देश छोड़कर बर्माजी जाने का संकल्प भी प्रकट किया। नवीनी विप्लवबन्ध भी ईर्ष्या से बाध आकर अपनी सारी शक्ति के प्रयोग से यह प्रचार करने लग गये कि पूर्ण स्वाधीनता का आदर्श भारत के लिए सुविधाजनक न होया। अवि अरविन्द राजनैतिक क्षेत्र से छुट्टी लेकर मजबान् की सीमा के उपर्युक्त आचार बनने के लिए तपस्व करने लगे और पूरक योग के आदर्श का मुहूर्त और संस्थापी जीवन में सार्वजन्य की कल्पना का तथा यह अवलम्बि मिया नहीं, उसी सर्वशक्तिमान् का विश्वास ही ॥ नीलामय का नीलादीप ॥ इत्यादि बातों का प्रचार करने लगे। भारत के राजनैतिक क्षेत्र में उस समय उत्तम शिल्प और कोई प्रभावशाली नेता नहीं रहे। इसी कुछ नेताओं ने भारतवर्ष में पूर्ण स्वाधीनता के आदर्श का पहले प्रचार किया था। उसी के फलस्वरूप समाज में दो प्राणों की स्फूर्ति हुई, उसी मजबानगरम की तरंग भाव भी भारत के हृदय को विविध प्रेरणा से स्पन्दित कर रही है। इनमें से दो प्राणों ने तो पुराने आदर्श को छोड़ ही दिया, तीसरे ने

1. अन्धकार में आकर भारतीय राष्ट्र की नीत्यवस्था जीव हो जाती है, एक लक्ष्य प्राप्त के लक्ष नहीं बरती वह प्रीति है। भारतीय राष्ट्र के समूचे जीवन के लिए यह बड़ी बड़ा लक्ष्य है। भारतीय इतिहास में Stagnation का यह नाम शब्द अत्यन्त लक्ष्य हो रहा है। यह एक इतिहास का लक्ष्य प्रत्यक्ष है जिस पर बड़ी हुए निवार बड़ी हो लक्ष्य।

मौन साध लिया। भारत के राजनैतिक क्षेत्र में कोई धीरपथ प्रदर्शक न रहा। पर भारत के प्राण तो जाग चुके थे उनमें गति आ चुकी थी। वही जीवन है वही प्राण तो पथ-प्रदर्शक होते हैं। अपने अन्तरात्मा की धीर ही सत्य रसधर बिम्बोने जीवन-पथ की यात्रा की थी भारत के उन युवकों ने अपना मत्त नहीं बरसा। वे देश के नेताओं में समाह लेकर तो इस बात में नहीं उतरे थे धीर न कभी इन नेताओं पर उन्होंने मरोसा ही रखा था। नेताओं में जिन छात्रों का प्रचार किया था उन छात्रों को पाम के लिए जो कुछ करना उचित था तो उन्होंने कभी किया नहीं। भारत के सम्प्रतिष्ठ विख्यात नेताओं में से दो-एक को छोड़कर सबके विषय में कहा जा सकता है कि वे जिस बात को अपनी विवेचना से उचित समझते हैं उसे कहते नहीं हैं धीर अनेक बार जो कहते हैं सो करते नहीं हैं। अर्थात् जिस भावों का वे प्रचार करते हैं उसे कार्य में परिणत करने को जितना प्रयत्न होना चाहिए उतना प्रयत्न वे नहीं करते।

किन्तु भारत के उन नवयुवकों के विषय में यह बात नहीं कही जा सकती। देश के प्रविकांत नेता हुए स्वयं क्या कुछ कर सकते हैं या नहीं कर सकते वही देखकर चेष्टता देते हैं कि देश के लिए क्या कार्य-क्रम उचित है, क्या अनुचित किन्तु हमारे युवक जो कुछ सिद्धान्त तय करते हैं उसमें क्या कर सकते हैं क्या नहीं कर सकते इस बात की चर्चा नहीं रहती। बल्कि हमें क्या करना उचित है वही उनके नज़दीक सबसे बड़ी बात होती है। युवकों के मन की अवस्था ऐसी थी या है इसी कारण उनमें से ही विप्लवियों का आविर्भाव सम्भव हुआ है। धीर ठीक इसी कारण विप्लवी भाग जीवन-पथ में प्रयत्न करते समय किसी बड़े नेता का मुँह ठाकते न रहते वे धीर न सफलता-मिष्टमत्ता का हिस्सा बनना करते थे। जिस चरित्र-वर्णन के रहने से जीवन की समस्त व्यपत्तियों के बीच अनुप्य छात्रा भ्रष्ट नहीं होता, सम्पद-विषय में सफलता-मिष्टमत्ता में, जीवन की सब अवस्थाओं में जिस चरित्र-वर्णन के धार पर अनुप्य अपने धार्मिक को लिये हुए बटा रहता है विप्लवियों के बीच जैसे चरित्र वाले लोग जिस परिमाण में पाए जाते हैं विप्लव दल के बाहर कुछ एक महाप्राण नेताओं को छोड़कर जैसे बहिष्कृत-चरित्र के धादमी पाया दुर्लभ है। धीर विप्लव दल में जैसे चरित्र का प्रभाव न था इसी कारण विषय विपत्ति के दिनों में भी वे चंचल नहीं होते धीर पथ की दुर्लभ देखकर वे मोन कभी पीछे नहीं हटते। इसीलिए पंजाब की विप्लव बैट्या के लपट हो जाने पर



भी भारत में विप्लव का प्रयत्न उसी तरह चलता रहा।

अपने दल के विस्वासपात्र के कारण पंजाब में जो सी धारमी पकड़े गए। पंजाब का विप्लव इस प्रकार प्रायः गल्ट हो गया। जो जीवन-मरण के खेल के छापी ने धब के प्रायः सभी सरकार के कूटो हो गए। जीवन रहते भी मालो ने पर से गए। पय-मय पर प्रभावित होने सवा कि बहु धान के साथ खेलता है। धान जो हमारा छापी या कम बही पुमिस के पंजे में फँस जाता है। धान जो विस्वासी का कम बहु विपत्ति में पड़कर कर्तव्याकर्तव्य भूल जाता है। जीवन का धार्य धुइ स्वार्थ के नीचे दब जाता है। विप्लवियों के जितने केन्द्र थे एक-एक करके प्रायः सभी शकट हो गए। लाहौर के मुहम्मद-मुहम्मद में जामातशाही और घर-बकड़ होने लगी। कहीं एक घर में दम थिला कहीं छार काटने के धीवार प्रादि। राब बिहारी जिस बैठक में रहते थे वह बैठक दो-चार धावधियों के सिवाय किसी की जाती न थी इसी कारण ठब ही वे नियतपत्र रहे। पर हमास रोज बयल रहे थे। कम क्या होता कुछ कहा नहीं जा सकता था—फिर नये सिरे से विप्लव की धायो बना होने लगी। पहले तीन विप्लवों को लाहौर के बाहर भेजने का संकल्प हुआ। लाना करके वे तीन विप्लव जा रहे थे। सड़क के एक मोड़ पर पुलिस ने ठाँवा रोका कारण—कि वे विप्लव थे विप्लव बैठते ही पुलिस ने लाना रोककर कहा, एक बार उन्हें जाने जाना होना और फिर उनका नाम-बाध प्रादि लिखा जाने पर वे अपनी जाने की बगल जा सकेंगे। उनके पास रिवास्वरें थीं। इसके असावा वे जानते थे कि पुलिस को पूर्ण समीपजनक उत्तर दे दे न सकेंगे। कहीं से जाते हैं, कहीं जाते हैं वह मतमाना उनके लिए उस समय सम्भव न था, प्रासिरकार जाने जाने का धर्म ही था यथाह समुद्र के तल में डूब जाना। इस दमा में बंदर कुछ कहे-मुने पकड़े न जाकर एक बार उन्होंने अंतिम बार धाम्यगयीला कर दीली। रिवास्वर की मोसी जाकर पुलिस के कई धादधी घरे और धावत हुए। तीन विप्लवों में से केवल एक को ही पकड़ा न जा सका एक को एक रास्ता चलते मोटे मुस्टंहे मुसममान में भर भिराया तीसरे को पुलिस ने ही पकड़ा। मुसममान में लिपको पकड़ा अनछा नाम था जयतसिंह। विप्लवों में भी उन बंदपाकार बनत-सिंह के मुकाबले का कोई न था। वे जैसे बलवान् और साहसी थे उनका धीर भी ठीक बीसा ही देख का-या था। पुलिस के साथ यह कांड करके वे पुलिस की प्राब से बचकर निकल गए थे, किन्तु पूरी तरह से-आठके होने से पहले ही रास्ते के

एक नलके से बम पीकर वे शान्ति से जब अपना मूँह पोंछ रहे थे उस समय उनकी अपेक्षा भी कमवान् एक मुसलमान ने बाहर दोनों हाथों में उनक दोनों पैर इस तरह जोर से दबाकर पकड़ लिए कि जबतक सिहू फिर हिम न सके। जयसिंह बल्लभ न सम्भाव सके और गिर पड़े। मुबयमे में जयसिंह को घाँसी हुई। उस प्रकार रासबिहारी के कुछ विद्वत्त आदमी फिर पकड़ गए। यथामयम यह समाचार रासबिहारी के पास पहुँचा। उस समय सारे साहोर शहर में उन्हें आधम बेनेबासा कोई नहीं था। उनका दल उस समय एकदम टूट गया था। उनके साथी सहायकों में से उस समय तक कुछ बुजुर्ग सिक्ख मुक हों बचे थे। अपार समुद्र के मध्य में जानों के उस समय पामबिहीन जोंगी पर किसी तरह बह रहे थे। जो पुनिष जाने मरे और बायल हुए वे भारतवासी थे जो पकड़ गए ज़ाँसी पर बड़े या बेस में सड़ने लगे थे भी भारतवासी थे और इनमें आपस में कोई द्वेष, कोई विरोध न था।

इस समय के कुछ पहले ही मुसलमानों के बीच भी विप्लव का पहलवा आरम्भ होता है। भावे इस मुसलमान जाति की विस्तृत आलोचना करनी होगी इसलिए अभी यहाँ इतना ही कहना यथेष्ट है कि तुर्की-इस्लामियन युद्ध के बाद से भारतीय मुसलमानों में एक गई बेतना का संचार होता है। किन्तु हमारे दल के साथ मुसलमान दल का सम्बन्ध होता है ठीक उस समय से जिस समय की कहानी अब हम सुना रहे हैं। उनके साथ परामर्श करके रासबिहारी ने ठीक किया कि अब काबुल जाकर ही पहले आधम मना होगा और वहीं टहरकर भारत की विप्लव वेल्ग को नियन्त्रित करना होगा। उन्होंने एक मौमनी से कसमा पकड़ा लीबा। जालिख मुसलमान के रूप में ही काबुल जाता रय पाया। कुछ सिक्ख नेता भी रासबिहारी के साथ जाते। सब ठीक हो चुका था और दो-एक दिन में ही यात्रा करनी होती जब एक दिन दोपहर को रासबिहारी बोस उठे "महीं पार्स, काबुल जामा अब नहीं होता मुझे जान पड़ता है कि इस समय काबुल की घोर जाने से विपत्ति आने की सम्भावना है, इसी घोर आहोर में भी अब बड़ी भर घोर डेर करने की इच्छा नहीं होती बिस कहता है इस समय डेर करने से बकर धाऊत आणी। रासबिहारी के दिन में अब जो आता था कभी उससे उसदा न करते थे। इसलिए उसी वक्त ठीक कर जाता कि उसी दिन रात की पाड़ी से रवाना होंगे। काशी के दो मुक इस समय उनके पास थे। एक का नाम था

विनायकराम कापसे, वे मराठा ये पर बहुत दिन काशी में रहे थे। दूसरे मुचक का नाम हमारे समझे की सुमिषा के लिए भरा जाता है, यन्त्रायम। वह बहुत दिन तक ऊपर रहे। रासबिहारी और विनायकराम रात को घाट बने की माड़ी से रवाना हुए। तब हुआ कि बंगाराम कुछ सिक्का नैतापों को लेकर दो-एक दिन बाद काशी आएँगे। करतारसिंह हरनामसिंह और दूसरे कई सिक्का नैतापों से काबुल जाना ठीक किया।

रासबिहारी जिस मकान में रहते थे वही मकान सबकी धनेला बैसटक का क्योंकि इसका पता बहुत लोगों को न था। दिन सब मकानों पर वे भिन्न-भिन्न लोगों के भिन्न-भिन्न से उन सब मकानों से इस समय कोई सम्बन्ध न रहा काय रासबिहारी का यह विरोध अनुरोध था। किन्तु वह होने पर भी बंगाराम रासबिहारी को स्टेशन पर पहुँचाकर लौटते समय एक बार उसी पुराने मकान को झाँककर देख घाने गए, उनकी दृष्टि की मरि लटक न देखा तो अपने बहुत-से कपड़े लते जो उस मकान में वे लेते आएँगे। किन्तु पुनिस ने पहले से ही इन सब मकानों के चारों ओर घनने आदमी रख छोड़े थे। यन्त्रायम ने उस मकान के निकट जाकर झाँका ही था कि पुनिस ने उन्हें पकड़ लिया।

पकड़ जाने कुछ दिन के अन्दर ही बंगाराम ने पुनिस के नजदीक सब बातें मान लीं। उनके इजहार से पुनिस ने उस मकान का सुराज भी पा लिया जिसमें रासबिहारी अन्तिम बार ठहरे थे। उस मकान की खानासमाधी सेने पर पुनिस को उनके हाथ के सिक्के दो-एक कायम भी मिले। इससे पहले जिन्होंने इजहार दिये थे उनसे ही पुनिस को पता लग चुका था कि रासबिहारी फिर बंजाव आए थे और इसी साहीर में थे। बंगाराम को बाकर उन्होंने यह भी सुन लिया कि जबकि बर-पकड़ के समय भी रासबिहारी लाहीर में ही थे। पुनिस यह भी जान गई कि रासबिहारी काशी से आए थे और फिर काशी वापस चले गए हैं।

मौत के मुँह से इसी प्रकार रासबिहारी कई बार बने थे। इसने बहुत दिन पहले की बात है एक बफ और रासबिहारी इसी साहीर में आए थे, उस समय तक वे देहपान ही में मौकरी करते थे। कुछ दिन की छुट्टी ली थी और बिस्ती होकर साहीर की तरफ दल का काम-काज देखने आए थे। इतर बिस्ती में खाना-पाना भी और गिरफ्तारियाँ चारम्भ हो गईं। रासबिहारी इस बारे में कुछ भी न जानते थे। बिस्ती की खानासमाधी के अन्तर्गत पुनिस को खानासमाधी

साहीर के एक मुक का सम्मान मिला एक आदमी के मकान पर रासबिहारी का टुक़ धीरे-धीरे-धीरे धादि भी भिज गए। किन्तु साहीर में रासबिहारी ठीक किस बयह है इसका सुराम पुलिस को न मिला। तो भी बीमानाथ का ठिकाना पुलिस को मिला गया और साहीर में उसे पकड़ लिया गया। तब भी रासबिहारी साहीर में थे। बीमानाथ जिस दिन पकड़ा गया उससे अगले दिन शाम के समय बी०ए०बी० कासेज के बोर्डिंग के एक बिछापी ने रासबिहारी के पास आकर उन्हें बीमानाथ की गिरफ्तारी की खबर दी। तब तक उन्हें यह खबर न मिली थी। सबकी सलाह से तय पाया कि उसी रात रासबिहारी साहीर छोड़ दें। रासबिहारी हिस्ती जैसे गए। इस तरह सलाह-मशविरा करते-करते रात घबिह हो जाने पर वह बिछापी बोर्डिंग में वापस न गया जिस मकान पर रासबिहारी ने वह रात उसमें भी वहीं काट दी। सबेरे पुलिस ने वही मकान खेर लिया। तीन मुक़ विरफ़्तार हुए पर रासबिहारी न पकड़े गए। बीमानाथ जिस दिन पकड़ा गया उसके अगले दिन रात के समय उसने सब बातें खोल दीं। यदि एक दिन पहले वह मुंबई हो जाता तो रासबिहारी भी पकड़ लिए जाते।

इधर फिर हिस्ती आकर रासबिहारी धमीरचन्द के मकान की ओर जाने को ही वे कि राह में उन्होंने जाने के मजदूर धमीरचन्द के मकानवासे मौक़र को कहीं जाते देखा। उन्हें ख़ास सम्बेह-सा हुआ मौक़र को बुलाकर पूछा धमीरचन्द कहाँ है। मौक़र मानिक के बोस्त को पहुँचाकर बड़ी हड़बड़ाहट से बोले उठ—  
“बाबू हमारे मकान पर न आएँ, मानिक को पुलिस पकड़ ले गई है मैं उनके लिए जाने पर जाना से का रहा हूँ।” रासबिहारी के हाथ में उस समय जो रुपया-पैसा था उससे कलकत्ते तक का रेल का टिकट खरीदा जा सकता था। वे फिर स्टेशन मोड़कर एकदम सीमा चम्बलनगर जैसे आए। उस दिन से रासबिहारी का पलायन वास आरम्भ होता है। तब से “Thou art but a wandering folk” (तू एक उड़ती-फ़िरती आबाज ॥) की तरह यह पकड़ा यह पकड़ा होने पर भी मानो उनका पता नहीं मिसता। इस प्रकार बार-बार विपत्ति से उद्धार पाकर भी वे फिर उसी विपत्ति में पड़ते रहे।

## 2 | काशी अंचल की कहानी

1 :

काशी में बैठे-बैठे हम पंजाब की दरबस्ता की बात कुछ भी न जान पाए थे । तो भी कुछ दिन तक पंजाब का कोई संवाद न जाने पर हम कुछ चिन्तित होने लगे । पञ्चमिहारी इस बार जब पहले पंजाब गए थे तब कह गए थे कि पन्दी ही पंजाब से कुछ मित्र कामकर्ताओं को भेज देंगे क्योंकि सिक्खों की पसन्द में यदि सिक्ख ही जाकर काम करें तो बुरा फल हो । पंजाब से जब करतारसिंह आदि एक बार काशी आए थे तब उनकी खबानी भी सुना था कि रामदास<sup>1</sup> सीधे ही कुछ सिक्खों को इधर भेजना चाहते हैं । उस समय तक कानपुर, लखनऊ फैजाबाद (फैजाबाद) आदि जगहों में हमारे आश्रमी नहीं गए थे । बिम्बरा ठीक जब आरम्भ होना यह संवाद एक आश्रमी हमारे पास से आया था और इसके बाद हमें पंजाब का और कोई संवाद नहीं मिला था । पंजाब से कुछ लोग सीधे फैजाबाद जाकर आए थे एवं कानपुर और लखनऊ में भिन्न-भिन्न समय पर पंजाब से ही लोग भेजे गए थे । इधर हम लोग काशी की छावनी में घाते जाने लगे । 21 फरवरी सन् 1916 रनिवार को बिम्बरा धुक्त होने की बात थी, हम रात्रिभार रात तक काशी की छावनी में गए थे । उधर पंजाब में बिम्बरा की तारीख 21 से हटाकर 10 कर दी गई थी उतका हमें कुछ भी पता न था । रात्रिभार रात को भी काशी को पसटन के हलतबार और नाथन हलतबार आदि ने हमें आश्वासन दिया था कि बिम्बरा

1 जो नई को देगा में रहा रहते हैं, कतना सख्त भी हो जाय है ।

प्रारम्भ हो जाने पर वे निश्चय ही विप्लव दल का साथ देंगे ।

किन्तु इस समय कई बिचारों ने हमें एकदम संभल कर दिया था । हम सोचते थे कि कांग्रेसों के विरुद्ध विप्लव करने जा रहे हैं और यदि सचमुच विप्लव प्रारम्भ हो गया तो अपने परिवारों को वहाँ किस दशा में रक्ता जायगा । विप्लव प्रारम्भ होने पर विप्लवी दल को दिल्ली से आकर दूसरे विप्लवी दल के साथ मिलाना होगा । उस अवस्था में यदि कांग्रेसी छीज घाकर काशी पर वज्र करे तो हमारे परिवारों की क्या अवस्था होगी ? इस भावना ने हमें थोड़ा व्याकुल नहीं किया ।

विप्लव सचमुच धुक हो जाने पर पस्टन के सिपाहियों को तथा राहू के मुखों को संयत शासन के अधीन रखना कितना कठिन काम होया यह भी हम भूल न गए थे विप्लव के समय सैकड़ों-हजारों परिवारों के मंगल-अमंगल का उत्तरदायित्व भी हमीं लोगों के सिर पर था वह बात भी कभी हमारे ध्यान से नहीं हटी । किन्तु विप्लव बन करना ही था तब समस्याएँ चाहे कितनी कठिन क्यों न हों इनका समाधान भी हमें करना ही था ।

और भी एक विचार ने हमें उस समय चिन्तित किया था । हम सोचते थे कि यदि दूसरे स्थानों में विप्लव प्रारम्भ हो जाय और हमारे यहाँ न हो तब हम लोगों की या पहले से ही पुलित की-विप-वृष्टि में पड़ चुके थे क्या पति होगी ? और दूसरे स्थानों में विप्लव प्रारम्भ हुआ कि नहीं, यह भी जानेंगे कैसे ? इस अवस्था में धर्म्यान्व केन्द्रों की पक्की बात जाने बिना काशी की पस्टन को उभार देना मुक्ति संभव होना कि नहीं यह हम साधकर तय न कर पाए थे । हम जानते थे कि काशी में हमारे अपने दल की जो कुछ शक्ति थी उससे हम काशी की कांग्रेस छावनी पर हमला कर सकते थे । ऐसी अवस्था में बेटी पस्टन को भी कोई एक पक्ष अवश्य मैना पड़ता और हमारा विश्वास था कि बेटी पस्टन हमारी तरफ ही योग देगी । इस तरह हम जानते थे कि इच्छा हो तो हम काशी में विप्लव का सूत्रपात कर सकते हैं । किन्तु और स्थानों की बात जाने बिना विधायक पञ्जाब की बात जाने बिना कुछ करने की हिम्मत न होती थी । यदि अपने दल में काशी तारबाद में अस्त्र धरते रहते तो भी ऐसा करने की हिम्मत हो जाती । जो हो इन सब भावनाओं के बाव हमने तय किया था कि रेलवे स्टेशन और तार घर के पास जाँच-पड़ताल करके ही हमें इस बात का संघय दूर करना होगा कि पंजाब की ओर से तार मारे

इस हुआ है कि नहीं। यदि तार न मारा तो जान लेंगे कि वही कुछ हो गया है बिचार था कि बिजली बुरा होने के कुछ पहले ही सब टूट दिए जायेंगे। हमें स्टेशन पर ट्रेनों के थाने-बाधे में भी मोहमास होने की आशा थी।

हमने स्मिर किया था कि इस प्रकार पम्प स्तानों की बात जानकर ही काशी की प्रेसबी पस्टन पर आक्रमण करेंगे और रात के समय समय पर प्रेस पुरखों को जेल में डालकर जेल के कैदियों को मुक्त कर देंगे। हमने समझा था कि जेल के कैदी इस तरह हमारी मदद से छूट जाएंगे तो उनमें से कुछ तो चकर हमारा साथ देंगे। तब तक हम जेल न गए थे इसलिए जेलों की अवस्था कुछ भी न जानते थे। वह तो सब जान गया है कि वह आशा कौन सी बड़ी बुराई थी। जो हो हमारा मतलब यह था कि काशी रात को मेमरीन और बराना हाथ में करके बूझसोयों को एकदम हवाहावा और बानापुर की ओर बिजली की लहर के साथ जेल से और सबेरा होने पर आम कुत्ती समा बुलाकर शहर के सभी लोगों से जन-संघर्ष करके शहर के मुँहकों से बाजलियार होने का अनुरोध करते। उस समय काशी में हमारे बंगाली लोगों की कई कुत्ती समा-समितियाँ थीं। काशी में विद्यते भले लड़के थे सभी इन समितियों के सदस्य थे। इन समितियों के सदस्यों की संख्या कम-से-कम दो हो पचास थी। ये सभी लिखने-पढ़ने स्वभाव और चरित्र एवं धार्मिक सामर्थ्य में काशी के बंगाली समाज के उज्ज्वल रत्न थे। इसी से काशी के चितित लोगों को हमारे इन समितियों से बड़ी सहानुभूति थी। कांग्रेस के प्रोफेसर, स्कूलों के मास्टर, बड़े-बड़े चिकित्सक म्युनिसिपल कमिश्नर आदि घनेक बनाती थे और इन सब के कोई-न-कोई सम्बन्धी हमारी समितियों के सदस्य थे। घनेक पक्षों और मैनों पर काशी में यह समिति के सदस्य लोग वाधियों के थाने-बाधे और उनके स्नात प्राधि का ऐसा बन्दोबस्त करते थे कि सब लोग शक्ति हो जाते थे। इन्हीं सब समितियों से भवेक भले घरों की विपत्तिग्रस्त विधवाओं की घनेक प्रकार से सहायता की जाती था बीमारी प्राधि के समय सभी समितियों के सदस्य लोगों के घरों पर जाकर सेवा-सुधूपा करते थे। काशी के घरीब घरों के लिखने-पढ़ने के बन्दोबस्त के लिए इन्हीं समितियों के सदस्य लोग स्कूल प्राधि जोलते थे। इस तरह इन सब समितियों का प्रभाव काशी के बंगाली समाज पर कुछ कम न था। इसीलिए हमने तब किया था कि बिजली के समय काशी में शान्ति और श्रृंखला रखने का

भार इन्हीं समितियों के सदस्यों पर डाल दिया जायगा। हम समितियों के सदस्यों ने यद्यपि मुक्त रूप से हमारे इस विप्लव के आयोजन में साथ न दिया था किन्तु तो भी इनमें स्वदेश-श्रम या संगठन-व्यक्ति कुछ सामारण न थी। इस प्रकार प्रकट रूप से साहित्य और इतिहास की चर्चा करने के कारण तथा नियमित व्यायाम का अभ्यास करने से इन समितियों के सदस्य लोग शहर की धान्ति रसा का भार उठाने के लिए आज सबसे अधिक उपयुक्त थे। हम ध्याता करते थे कि विप्लव भारम्भ होने पर इनमें से और शहर के हिन्दुस्तानी युवकों में से भी निश्चय ही बहुत-से स्वेच्छा-सेवक मिलने को प्रायःपूर्वक हमारे विप्लव में साथ देने और ऐसे ही बहुत-से मिलने को स्वामीय काम के लिए कापी में ही रह जायेंगे। उस दिन कल्पना की घाँटों से जब देखते कि कापी की यमी-मुहत्तों पह-बाटों में बंमानी स्वेच्छासेवक हाथ में गोली भरी पिस्तौल लिए और कमर में पानी कुपाय लटकाये दल बांधे घूम रहे हैं तब धब से हमारी छाती इस हाव फूस उठती थी। हमने तब किया था कि अपने सब विप्लवियों के परिवारों का कापी के ही किसी एक स्थान में एकट्ठा रहने का बन्दाबस्त कर दिया जायगा। हमारे इन स्वेच्छा सेवकों का दल किस प्रकार सारी कापी का भ्रमन कायम रखता उसी प्रकार हमारे परिवारों का भी ध्यान रखता।

हम बहु भी जानते थे कि विप्लव भारम्भ होने के बाद सिपाही लोग क्योंही जान पायेंगे कि भस्व-शस्त्र को कुछ है सो सब जगहों के पास हैं और उनकी सहायता बिना हम देश के सामारण लोग कुछ भी करने में असमर्थ हैं तब स्वभावतः ही वे सिपाही स्वेच्छाचारी हो जायेंगे। किन्तु दूसरी तरफ हमने यह भी सोच लिया था कि एक बार विप्लव में साथ देने के बाद जब तक कोई एक फँसना न हो जायगा तब तक वे सिपाही लोग निश्चित न रह सकेंगे और फलतः अपने स्वार्थ के लिए ही विप्लव सफल बनाने की ओर ध्यान देना होगा और इस प्रकार बाधित होकर उन्हें जिस के चिन्तित और बुद्धित विप्लव-नेतार्यों के धमीन रहना पड़ें होया। इसके भनाया मेगबीन हाव में धाते ही जितना अवसर हो सकता हम अपने धारमियों को हथियारबन्ध कर डालते और तब हम लोग भी बिलकुल मिहत्वे न रहते।

मुद्र-नीति से हम विचकृत भगमित्र थे, इस तरफ जैसी शिक्षा का प्रवर्ण करना उचित था वह हमने किया नहीं था। कारण यह कि जर्मन-मुद्र रहनी



सिंह बापणा धीर इतनी जल्दी जुमे तीर से विप्लव शुरू करना होया यह हम पहले से समझ न सके थे। बी. हो. रासबिहारी के पंजाब जाने पर मैंने धीरे धीरे एक बन्धु बिनापकराव कापसे के *Encyclopaedia Britannica* (संशुद्धी विरल कोष) में *Strategy* और *Warfare* (समरबीति) विषयक मेक बटना आरम्भ किया और इससे पहले भी अनेक पत्रिकाओं आदि में इस विषय पर जो लेख निकलते थे वह भी हम बराबर पढ़ते रहते थे। इस प्रकार ये सब पोषियाँ पढ़कर हम युद्ध-कुशल सेनापति न हो सके थे वह हम जानते थे *Encyclopaedia* में भी कहा था कि *generals are made in the field of battle* (युद्ध क्षेत्र में ही सेनानायक तैयार होते हैं) और इतिहास में इसके अनेक दृष्टान्त भी दिसते थे। आरकस के जमाने में भी ऐसे दृष्टान्तों का अभाव नहीं है, कस के पची सस दिन के विप्लव का इतिहास देखने से भी इसके प्रमाण मिलते हैं। धनु, बी. बी. हो, हम लोगों ने जो किया था वही लिखे देता है, उससे यदि हमारी कुछ मादानी का परिचय मिले तो लज्जित नहीं हूँ।

स्टेशन और ठारवर का हाजरास देख जाने के लिए 21 फरवरी रविवार का मैं बाइक पर चढ़कर काशी कैम्पमेंट के स्टेशन पर शाम के समय आया था। स्टेशन पर आकर सुना कि उस समय तक ट्रेन अथवा टैमीवाड का कुछ भी मोल प्राप्त नहीं हुआ। उसी स्टेशन पर उसी दिन शाम के अन्त पल्लव के एक हजमदार के आने की बात थी। उसकी बात जोड़ते-जोड़ते जेटवार्न पर क्रमोन्-छिड़ते दिन में आई कि अगुवार कटीर कर पड़ूँ। पाबोनिबर सरीरकर देका लाहौर में बर पकड़ आरम्भ हो गई है और यूरोपियन औद्योगिक पहर में विकेट कर रही है अर्थात् सड़क के समय भी तरह लावधान होकर बरे आसकर पड़ी है। सबस यथा काव कुछ असह-युक्त हो गया है। मठ शहर में लीट आया। हमें अब समेह नहीं रहा कि इस बार की विप्लव योजना भी धिम्-मिम्न हो गई। किन्तु ठीक उसी दिन सिपापुर में विप्लव शुरू हो जाता है। सिपापुर के साथ सीधे तीर पर हम लोगों का कोई सम्बन्ध न था यह इतिहास एक और परिच्छेद में बतलाया जायगा। यदि सिपापुर भारत के अन्दर की कोई अवह होती तो भारत की अवस्था अत्यन्त भयानक रूप आरम्भ कर लेती इसमें समेह नहीं। जिस समय लैफ्टी पल्लव विदेश के युद्ध-क्षेत्र में रोज ही भेजी जाती हों उस समय विप्लव शुरू हो जाने पर सम्मुख अधिनाय देवी पल्लव हमारी ओर आ जाती। हमारी यह आया एक दम निर्मूल

या भ्रमपूर्ण न थी। सभी पद्यों से हमें साधा का संवाद मिला हो यह बात भी न थी। एक तरफ वही एक सिविल पद्यों के सिपाहियों ने हमारे दम के एक वरुण युवक के मुँह से विप्लव नञ्चोक होने की खबर पाकर घाघरु और उत्साह के साथ बड़ी रात पद्यों के मुसियों को बुलाकर गुप्त रूप से एक बैठक करके तय किया था कि पहले वे जरूर कुछ न करेंगे पर सचमुच विप्लव शुरू हो जाने पर वे निश्चय ही विप्लव में साथ देंगे वहाँ दूसरी तरफ एक और जगह की मुसलमान पद्यों ने यह उत्तर दिया था कि तुम क्या हम को बिलकुल बचना समझते हो? अंग्रेजों के साथ युद्ध करना क्या लड़कों का खेल है? तुम्हारी तरफ कोई नवाब या राजा महायबा है? अब नहीं है तो तुम्हें रुपये से मदद कौन देगा? इसके अलावा विप्लव शुरू होते ही नायरनेस टेमीप्राणी (वे छार के छार) पर उड़ी समय भारत के चारों ओर उबर वसी जायगी और चोड़े दिनों में चारों ओर की फ्रीज तुम्हारे ऊपर धा पड़ेगी। इस अवस्था में क्या तुम किसी तरह टिक सकोगे? तुम्हारे हाथ में अस्त्र-शस्त्र ही कितने हैं? तुम्हारी सामरिक शिक्षा-बीजा ही क्या है? ये बातें क्या सोच देखी है? हम लोग न बच्चे हैं न पागल ऐसी बातें फिर हमारे नजदीक कहने मत माना जा। अगर सचमुच विप्लव शुरू हो गया तो भवश्य हम लोग भी देशवासियों के बिराद न चलेंगे किन्तु देखना होया कुछ भी नहीं इत्पाबि।

उत्त समय सिविल लोगों में वैसे उत्तजना और उत्साह देखा गया था वैसे उत्साह केवल पंजाबी मुसलमानों और पठानों में ही कुछ हद तक देखा है। भारत की अनेक जातियों के साथ मिल-जुलकर समझ सका हूँ कि सिविलों के समान मजबूत समय और मायुक्त जाति भारत में कोई नहीं है। सिविल लोग वैसे सहज रूप से बितने चोड़े समय में उत्तेजित हो उठते हैं वैसे सहजता से भारत की ओर कोई जाति उत्तवित नहीं हो उठती। रासबिहारी जब विप्लव का उत्तय धर्म हो जाने पर पंजाब छोड़कर फिर काशी की ओर सीट रहे थे तब ट्रेन में एक सिविल सैनिक के साथ उनकी बातचीत हुई। साधारण बातें होते-होते प्रसंगबस भारत की वर्तमान अवस्था की बात आई। इतने चोड़े समय की बातचीत से ही वह सिविल इतना उत्तवित हो उठा कि रासबिहारी के साथियों को डर हुआ कि कहीं कुछ पनबे न हो जाय क्योंकि ट्रेन के कमरे में और भी कई तरह के लोग हैं यह सुनकर उस सिविल ने उत्तवित स्वर में कहना शुरू कर दिया था कि यह देश के लिए जरूर प्राण देना। जो हो बड़ी मुश्किल से उन्होंने उत्त माया में छुटकारा पाया।

इस विषय में सब बंगालियों को शोच देते हैं। बंगाली भी बेसफ बड़ी मानूँ  
जाति है पर भाव के सम्भाव में सिक्ख लोग बड़ीतर में जैसे एक सम्भव का  
कर सकते हैं, वैसे भारत की और कोई जाति नहीं कर सकती। सिक्कों के कहने  
और करने के बीच अन्तर बहुत बड़ा रहता है। इसलिए मैं समझता हूँ कि ऐसा  
कोई काम नहीं मिले যে सिक्ख लोग उपयुक्त नेतृत्व में परिणामित होने पर न कर  
सकें। सिक्ख समाज में आज केवल एक ही चीज का प्रभाव बीसठा है और उस  
प्रभाव को पूरा करने के लिए सिक्ख समाज इस प्रकार व्याप्त हो गया है कि वह  
प्रभाव भी बढ़े ही लोगों में नहीं रहेगा। संसार की विचारधारा के साथ रहने के  
लिए जैसी शिक्षा चाहिए सिक्ख समाज में वैसी शिक्षा का बिल्कुल अभाव है  
और इस प्रभाव को दूर करने के लिए छोटे-छोटे सिक्ख वर्गों में भी वैसी प्राथमिक  
सहायता करते हैं वैसे ब्रिटिश भारत की और किसी जाति में नहीं पाया जाता।  
तो भी सिक्कों में संकीर्णता बड़ी है इसलिए सिक्ख समाज के लिए वे जो कुछ  
करते हैं उसका सी में एक हिस्सा भी दूसरे समाजों के लिए नहीं कर सकते।  
सिक्ख सम्प्रदाय में वे बहुतों का विश्वास है कि यदि वे उपयुक्त-शक्ति सामर्थ्य  
का उपयोग कर लें तो फिर वे भारत में अपना साम्राज्य बड़ा कर सकते हैं। जो  
हो वे फिर एक साम्राज्य बड़ा कर सकें या न कर सकें, भविष्य में यदि उनमें  
उपयुक्त शिक्षा का प्रचार न होया तो भारत के राज्य में बहुत दुःख मिलेंगे। इस  
में सन्देह नहीं।

अब, जाने दो इन बातों को जो बात हम कह रहे थे उसे ही फिर कहें कह  
रहे थे कि किस तरह बंगाल की दुरवस्था की सबर हमने काफी में जान पाई थी।  
पाबोमियर में यह कुसमाचार देकर हमें बड़ी चोट लगी। हमें मान्य होने लगा  
मानों हम भारतवासियों का कोई उत्कर्ष भी अथवा उत्थान नहीं रहता। हम जो  
सोचेंगे कुछ भी न होया। अंग्रेज लोग जो करने की बात कहेंगे उसी में कृतकार्य  
हो जायेंगे। न जाने विधाता का यह कैसा विधान है।

भारतवासी का जीवन मानो केवल बुराई के खेल की सामग्री है। उसको  
अपनी मानो कोई साथ कोई बातना ही नहीं, या वह है भी तो मानो उसे पूर्ण  
करने की शक्ति उसमें नहीं है। भारतवासी की सब श्रेष्ठियों का परिणाम मानो  
केवल व्यर्थता है पूर्ण है, भारत का इतिहास भी वैसे एक विराट व्यर्थता के कारण  
जवाब स्वर में मरा है। भारत के इतिहास की तरह भारत की विपन्न श्रेष्ठ का

इतिहास भी एक सिरे से व्यर्थता का ही इतिहास है ;

2

रेलवे स्टेशन से मुरझाया हुआ घर भापस आया । घर में अनेक साथी मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे । मुहम्मद-मुहम्मदों में कुछ युवकों के इस भी हमारे धारण की प्रतीक्षा में थे । उन्हें विप्लव की बात मालूम न थी पर इतना तो सब जानते थे कि छाया कोई भी भीषण काण्ड हो सकता है जिससे जान हमेशा पर रखकर उन्हें उस कार्य में साथ देना होगा । साथियों ने सब सुना । विप्लव एक गया यह समझ लिया तो भी दो-तीन दिन बड़ी उत्कण्ठा में कटे । वो हुआ वो एकदम आशा के विपरीत रहा हो ऐसा भी नहीं कारण यह कि इस व्यर्थता की आशंका बड़ खोर से पहले ही दिन में उठी थी इसलिए पायोनियर की खबर सुनकर हम भागी मौन स्वर से बोस उठे—“बड़ी तो कहते थे कि इतनी जल्दी क्या भारत का भाव्य पलट जायगा !” —दो-तीन दिन में ही लाहौर में तबि की बुन्दना का समाचार प्रसंग में पड़ा, हममें से बहुतों ने सोचा कहीं भाव जानेवाले व्यक्ति रासबिहारी ही न हों किसी-किसी ने कहा नहीं रासबिहारी निरक्षर ही वहाँ न ब कारण कि रासबिहारी का भाव्य बड़ा उज्ज्वल है, उनका भाव्य ही उनकी रक्षा करता है इसीलिए विपत्तियों के भूँट में वे कभी नहीं पड़ सकते । इसके सिवाय प्रसंग में तो साफ़ ही लिखा है कि तबि के भागी तबिब थे । इस प्रकार रासबिहारी का भला-बुरा सोचते-सोचते हमारे दिन कटने लगे । क्योंकि और कितने दिन तक रासबिहारी बेकटके काशी या पहुँचेंगे इसी भावना में हम अस्तिर होकर दिन बितने लगे । पत्राव की बुलबुल के कारण काशी के बल को भी कहीं थोड़ न लगे इसी आशंका में हम कई भावभीतर घर पर बितकुल न रहते थे, केवल बीच-बीच में घर भाकर खबर ले जाते थे कि पुलिस का उत्पात बड़ रहा है वा बढ रहा है । उस समय भी घर पर बराबर पुलिस का पहरा था । उनकी भीड़ों में भूम आसकर ही सब काम करना होता था । काशी में हम लोग इसी प्रकार दिन काटने लगे ।

इस पत्राव से करणारसिंह और हरमामसिंह काकुश की घोर रवाना हुए । राह में उन्हें न जाने क्या सूझी कि वे फिर सिपाहियों में विप्लव का प्रचार करने के लिए आगनी में जुस पड़े । इस समय जगह-जगह सिपाहियों में घर-घर प्रचार हो गई थी । इसलिए स्वभावतः उनके बीच एक आतंक-सा छाया देखा पड़ता था । इस भावना में सिपाहियों के बीच फिर प्रचार करने वाला करणारसिंह के बिह

हरपिब उचित न था। फलतः विप्राद्वियों ने ही करतारसिंह को पकड़वा दिया। उन्हें माहौर सामा गया। जंजीरों में बकड़े हुए करतारसिंह की तरफ मुबबरी में बीरत्व की ऐसी महिमा झमकती थी कि उस मूर्ति को देखकर समुचित सभी एक साथ मुग्ध हो जाते थे। बाई परमाणव ने अपनी 'भाषा बीबी' नामक पुस्तक में उस दृश्य का भव्यपूर्ण भाषा में वर्णन किया है। ठीक वैसे के संघेज राज्याधिकारी भी बीर को उपबुद्ध बर्खास्त होने में प्राम भुक्ति नहीं करते। पिछले विप्लव युग की कहानी देखते हुए साधारण रूप से यह कहा जा सकता है कि संघेज राज्याधिकारी विप्लवियों के बीरत्व और धूर्तता पर बहुत ही मुग्ध हो उठते हैं।

इस एक एक एक दिन सुना। राजा काशी था यह। राजा के भेंट होने पर पंजाब की सब व्यवस्था भाग्य हो गई। एक ही पंजाब का समाचार बंगाल में ऐसा भावपूर्ण था, दूसरे पक्ष काशी में ठहरना किसी तरह समीप न था। इस लिए राजा ने मुझसे एक कम काशी छोड़ देने को कहा। हयारा यह नियम था कि घर-बकड़ घर-गम होने पर गुरुत्व ही हम पहले का बग़ावत जड़ से बग़ल बैठे थे। यद्यपि मनुष्य के मन का हम पूरी तरह कभी विश्वास न करते थे क्योंकि हम जानते थे मनुष्य अपने मन को बाप ही ठीक-ठीक नहीं पहचानता। इसलिए किसी के पकड़े जाने पर हम सभी कम सावधान हो जाते थे।

इसी समय काशी में पुलिस की निगरानी ऐसी कड़ी हो गई कि कोई भी नया बंगाली पुलिस की नजर बचाकर भा ही न सकता था। बंगाली टोले के हर मुहम्मद में पुलिस हर एक घर जाकर पता लगाती थी कि वहाँ कोई नया बंगाली तो नहीं आया। चन्दननगर और बंगाल में रासबिहारी को पहचानने वाले कुड़िया पुलिस के बिलने कारिन्दे ने सबको काशी के मिल्म-मिल्म स्टेचनों पर पहले पर नियुक्त किया गया था। चौबीस घंटा ऐसा ही पहरा रहता था। इसके अलावा काशी में जो लोग पुलिस की विप-दृष्टि में पड़ चुके थे उनके ऊपर भी वही एक कड़ा पहरा रहता पुलिस के लिए सम्भव था। सबसे पुलिस पर भी कम न छोड़ती थी। जो भी बंगाली काशी में आते उन सभी का नाम-वाम पुलिस मित्र लेती और फिर मकाम पर जाकर पता लगाती कि उनकी बात सच है या नहीं। इस प्रकार पुलिस काशी में रासबिहारी की टोह लेती थी। और ऐसी भीषण घमरबा में भी रासबिहारी बैठके काशी भा पहुँचें थे।

हम कुछ लोग पहले से ही सावधान थे। बहुत बड़े समय ही घर पर टिकते

ये । जबिक समय जिस जगह रहते थे उसे दम के कुछ घादमियों को छोड़कर कोई न जानता था । घोर रातूदा ही घर-घर जाकर रात को हमारा पता सेते थे । क्योंकि रासबिहारी को काशी में कोई बहुत पहचानता न था । काशी में हमारा जब प्रख्या दम था इसीलिए रासबिहारी ऐसी धनस्था में काशी में प्रनामास एक महीने से ऊपर रह सके थे । रासबिहारी का पकड़ने के लिए ब्रिटिश मवनमेष्ट ने कमर कस ली और काशी के दम को बचाने के लिए रासबिहारी ने भी कमर कस ली । काशी के मुबक लोग बुपचाप धरों में बैठे घोर रासबिहारी ही घर-घर जाकर पूछ-छाछ करने लगे । जिसे किस उपाय से काशी से बाहर भेज दें । प्रत्येक मुबक के निकट जाकर रासबिहारी रोज़ यही बात ठीक करते । पहले मैं काशी छोड़कर जसा गया फिर एक धीरमित्र ने भी काशी छोड़ दी । इसी तरह धीरे धीरे बहुत लोग काशी से खिसककर बंगाल आ गए । जो युक्तप्रदेश के थे वे अपना सहर छोड़कर दूसरे सहर में जाकर रहे, जैसे काशी वाले सबनऊ गए और सबनऊ वाले काशी आ गये ।

मेरे बंगाल में खिसक आने के कुछ ही दिन बाद हमारे काशीवाले मकान की खानातलासी हुई इसके थोड़े ही दिन बाद काशी के एक धीर मुबक के घर की खानातलासी हुई, वे मुबक उस समय काशी में ही थे, पर अपने घर पर न रहते थे । उनके तीन बच्चे पुलिस ने घर में लिये पर सबेरे ब्यथ मनोरथ होकर लौट गई । रासबिहारी के पास उस मुबक ने सुना कि उनके घर की खानातलासी हुई है । कुछ दिन बाद बिनायकराव आपल के घर की भी तलासी हुई । बिनायक उस समय गया स्थान करके लौट रहे थे । वे रहते थे भाड़े के मकान पर, किन्तु मोड़न करते थे अपने ही मकान पर । मकान के मालीक आने पर बिनायक ने सुना कि उनके मकान पर मालीक साहब लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं । यह बात सुनते ही बिनायक भी धन्यार्जन हो गए । इस प्रकार पुलिस किसी को भी न पा सकी । उस समय भी रासबिहारी काशी में ही रहे ।

जिस समय सरकार की तरफ का गयाह विभूति स्वेचन ट्राइब्यूनल की घदा घट में इन सब बातों का विवरण करने गया उस समय घदासत के जब भी भाई फाइकर केबल विभूति के मुँह की घोर छाकते रहे और कुछ बेर के लिए मोट लिखना भी भूल गए । सरकारी कौम्यस घोर हुमारी घोर के बकील-बैरिस्टर घादि भी ऐसे ही घाग्रह घोर भचम्मे के सापनिर्वाक होकर रासबिहारी के मरकुब

कानों की कहानी सुनने लगे वए धीरे-धीरे-धीरे में कोई-कोई हमारी धोर पहुँच करके बीरे से बीस उठते—“धोह, रासबिहारी की ऐसी हिम्मत है।” हम भी उस समय ध्यानध धीरे-धीरे से बहए हो जाते थे। एक बार विभूति के पहुँच की धोर देखकर समझने की पैयटा की थी कि विभूति क्या सोचता है। क्या भाता है कि मन में उस समय इस बात का कुछ हुआ था कि विभूति क्यों हमारे बर्फ धीरे ध्यानध में भाग नहीं लेता। इस समय ठीक याद नहीं आता कि विभूति की सचमुच ऐसी मुकबरी करने के बाद बर्फ अनुभव करता था कि नहीं।

इस प्रकार काशी के घनेक युवक बपाल में आकर इकट्ठे हो गए। जिन लोगों का पंजाब से कोई सीबा सम्बन्ध न हुआ था, धर्पाएँ जिनका नाम-नाम पंजाब में कोई न जानता था वे काशी में ही रहे। ऐसे युवकों की संख्या कम न थी धीरे-धीरे-धीरे ऐसे धीरे-धीरे संसद के समय भी रासबिहारी बैसद के काशी में रहे सके थे। जिन युवकों को कोई बिप्लवी रूप के नहीं जानता जिन पर कोई सनेह भी नहीं करता, ऐसे लोगों की संख्या जित्त बिप्लव दल में जितनी अधिक हो उतना ही वह बल कमजोरी धीरे-धीरे कमजोर होता है।

काशी में हम लोग इस प्रकार सतर्क हो गए, पर पंजाब के नेताओं में से लगे भय सभी एक-एक करके बरुड़ लिये गए। डा० मधुपसिंह आदि केवल दो-तीन आखरी काबुल भाग आने में सफल हुए। विगते सब भी बरुड़ें न गए थे। पंजाब की पोतबान के बाद विप्लव भी काशी की तरफ ही आए थे। राह में वे भी करपासिंह की तरफ मेरठ आखरी में बिप्लव लंगे के लिए चुन पड़े। इस प्रकार मेरठ आखरी के एक मुसलमान क्राधार के साथ उनकी बाजबीत हुई। उस क्रा-  
दार के विप्लव के मकरीक बिप्लव की बात में जब अस्ताह दितावा धीरे विप्लव के साथ ही काशी आ गया। किन्तु रासबिहारी के विगते को ऐसे काय में हाव बानसे के लिए सास तीर से रोका। उन्होंने कहा सब सिपाहियों में जाने का नाम नहीं पर विगते निरास्ताह न हुए। घण्ट में बादा को भी इस काय में स्वीकृति देनी पड़ी। विप्लव की सबसे बड़े बिस्म के दम बय देकर भेजा गया। वे सब बय इतने बड़े थे कि इनमें से एक भी बिप्लव बयह गिरता उस जगह धीरे-धीरे कोई बिप्लव तक न रहता। बारों बार पड़ता तो घनेक बारों एक ही साथ नृपिताएँ हो जातीं। रीसद कमेटी की रिपोर्ट में इन्हीं बनों के सम्बन्ध में लिखा है—*Successful to annihilate half a regiment* धर्पाएँ धापी रीजिमेंट को सधुम ध्वंस कर देने

की शक्ति इन बर्गों में थी।—ग्रन्थ में रासबिहारी का समूह ठीक ही निकला। उस दफ्तरदार ने विमले की अपनी छावनी में ले जाकर वहाँ रहित पकड़ा दिया। मेरठ के प्रायः दस-भारह सिपाहियों ने भी बाण में काशी के ठगों पर पीका दिया।

विस समय विमले मेरठ गए उसी समय दादा ने मुम्बई बंगाल में कहना भेजा कि मैं सीधा दिल्ली जाकर वहाँ के सभी ऊँचे पदों के कर्मचारियों के संगे इत्यादि चर्चा करूँ। उसी समय दिल्ली में एक बड़ा कांड करने की मायोजना चल रही थी। मुझे दादा से सलाह लिए बिना दिल्ली जाना ठीक न भेजा किन्तु पुलिस उस समय मुझे बरी तरह खोजती थी। काशी जाना उस समय मेरे लिए बड़ा विपत्तिकर था। पर तो भी मैं काशी भागा। मैं हुमेदा से बेपरवाह तरीकत का था। मैंने कभी कल्पना भी न की थी कि मुझ पर भी कभी विपत्ति पड़ सकती है। अपनी इसी उच्छृंखल निर्भीकता के कारण ही ग्रन्थ में मैं पकड़ा गया। रास बिहारी निर्भीक से पर उच्छृंखल नहीं।

रास को मुमससराय स्टेसन पर एक गुप्तचर के साथ मेरी भेंट हुई। किन्तु मेरी मौसी संघ में थी इसलिए मायने का कोई कारण न था। बंगाल के एक युवक भी मेरे संघ से और उनके साथ कुछ कम भी थे। उन युवक को सावधान करके कह पाया था कि मेरे साथ इकट्ठे एक माही में न बैठें और स्टेसन पर मेरे साथ से कुछ दूरी पर ही रहें। जो दो स्टेसन पर कुछ घोलमास नहीं हुआ। मौसी से कह रखना था कि मैं पकड़ा जाऊँ तो वे धमक पता बताकर घर पहुँच जाएँ। काशी की ट्रेन प्लेटफार्म पर आई तो वह गुप्तचर मेरे साथ एक ही डब्बे में बैठा, और गवाने कबों वह युवक भी मेरे ही डब्बे में आ गये। उस गुप्तचर के साथ मेरा परिचय था इसलिए उसने पूछा मेरे साथ की महिला कौन है। मुझे मौसी के साथ निश्चित होकर घर जाते देखकर मालूम हुआ कि गुप्तचर को कुछ धारवातन मिला और धामक उसने सोचा कि बहुत बीड़-बुप करने की कुछ आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा मालूम होता है उसका सम्बन्ध काशी के बुद्धिमान विभाग के बाघेया मतीश्र मुन्सोफायाय के साथ था इसलिए कोई गुप्त समाचार विमले पर बतीश्र के सिवाय और किसी के नज़दीक वह प्रकट न करता। अन्तर का मानना ऐसा ही रहा होगा। इसीसे मालूम होता है उस यात्रा में मैं बच सका। बहुत सकेरे घर आ पहुँचा और घर पर बहुत छोटी देर टिककर फिर बाहर निकल पड़ा। मेरा



रूप-रंग बैसकर घर के सब लोग बड़ कुची हुए। घर में सबसे मैंने सुलसमसुलसा कह दिया कि किसी समय भी मैं पकड़ा जा सकता हूँ। मेरी छवि मेरे दोनों हाथ अपने दोनों हाथों में दबाकर बड़ी अनुमय के साथ कहने लगी "तू क्यों बरता है सभी मैं कहती हूँ मुझे कुछ न होया तू पर पर ही रह।" किन्तु मैंने किसी की कोई बात न सुनी। उस समय मामूम हुआ रात जलम होकर भोर हुआ जाहवा है, बार या छाड़े बार बने होंगे मैं बर छोड़कर रासबिहारी के ठिकाने पर जा ठहरी। फिर दूसरे दिन सुबह के बजत कासी से जाता गया उठी दिन छबैरे ही हमारे घर की जानातवासी हुई। हमारे घर के सामने ही एक मुत्तबग रहता था। सभी मुत्तबगों के मुँह से पुसिस ने मेरे घर घाने की खबर पाई थी पर घर की जतासी सेते पर मुझे न पाकर मैं सब व्यत्यस्त आश्चर्य करने लगे वहाँ तक कि कई पुसिस वालों ने समझा मैं अभी जाया हूँ और सड़कों पर बीकबूप भी की। बीछे कककते जाकर सुना कि पुसिस मुझे बकड़ने आई तो पुसिस के सामने ही कहते हैं, मैं छतों-छतों पर मायता हुआ प्रायब हो गया, और वह सब देखती हुई भी कुछ न कर सकी।

जबपुताबा के एक मुबक के साथ मैं दिस्ती जा पहुँचा। अपने दल के ही एक मुबक के डरे पर प्रतिधि हुआ। दिस्ती मैं जो करता था सो किया। दिस्ती में ही दिवले के साथ भेट होने की बात थी। उस समय के होम मेम्बर घर रेजिन्स ब्रैक साहब तक दिस्ती में न थे और एक-दो और कारण के, जिससे दिस्ती में कुछ किया नहीं गया।

दिस्ती में एक दिन बाइक घर बूमते बूमते खींच हो गई थी। रास्ते में बयह-बयह मिला था शाम को छाड़े छ. बने बली जाता मेना चाहिए। मैंने भी बाइक की बत्ती जला ली। मेरी बत्ती कुछ जलाने ली। मैं बाइक पर तेजी से पाठे हुए जबों ही रास्ते के मोड़ से घुमा त्यों ही देखा कि एक धंसेज बुद्धवार बड़ रोब से थोड़ा थोड़ा जाता था। मुझे देखते ही मेरी और हाथ बढ़ाकर उसने पंजुमी से हथारा किया 'छहरो', मैं भी गट बाइक से नीचे उतर पड़ा। बुद्धवार ने मेरे नजदीक जाकर प्रारंभ किया, "बली क्यों नहीं जलाई?" सब देखा बाइक की बत्ती बुझ गई है। मैंने कहा, "बत्ती अभी बुझ गई है हाथ लगाकर देना अभी परम है।" "बत्ती जलाओ" कह कर धंसेज बुद्धवार ने थोड़ा थोड़ा दिया। मैं कुछ देर एकटक उस दपोंगलत धंसेज बुद्धवार की ओर देखता रह गया, और सोचने

मगा "हय रे ! कब हम भी बोड़े पर चढ़कर इस तरह माया ऊँचा करके छाती फुसाये घुमेंगे ।

मेरठ में पिगसे कृतकाम हों या न हों, दिस्ती में हमें कुछ काम करना था । इसी बीच समाचारपत्र में पढ़ा मेरठ छात्रनी में पिगसे पकड़ गए । और ठीक इस समय मैं भी बुरी तरह बीमार पड़ गया । माचार मूक दिस्ती छोड़नी पड़ी । इस बीमारी में मैं पन्द्रह दिन तक एक साज साट पर पड़ा रहा । दूसरे सप्ताह निमो निया के सहाय भी दिखाई दिए । उस समय जिन युवकों ने मेरी सेवा की थी उनके मूल की बात मैं बीबनगर भूल नहीं सकता । मूक उस समय उठने की भी ताकत न थी । उस समय वही युवकमण मेरा मल-मूत्र तक साफ करते थे ।

उत्तर पंजाब में बाहोर पञ्चमन के नामसे की सुनवाई धारम्म हो गई । बाहोर के नामसे में छात्रव धनेक बातें सुनने सापक हैं । किन्तु मुझे इस विषय में कुछ विधेय नहीं कहना है ।

इस प्रसंग में सबसे पहले यह बात ध्यान में घाटी है कि इस मामले में ही विप्लवियों में से प्रायः सब व्यक्ति विप्लव बम को विस्फोटित करके अपने ही बगबुनों को विपत्ति के मूँह में डालने से भी नहीं बूके । इन सब मुखविरों के विषय में देश में धनेक धानोचनाएँ हुई हैं । इन्हीं को देखकर ही बहुत लोगों की विप्लवियों के विषय में बड़ी हीन चारणा हो गई है । पर एक बात याद रहे कि ईसा मसीह के विप्लवों में भी विस्फोटबातकता का दृष्टांत पाया जाता है । मसीह-जैसे महापुरुष के सम्पर्क में धाने के बाद भी मनुष्य का जल-पतन हो जाता है । सब धर्म्य स्वामी में ऐसा जल-पतन हो जाने में आश्चर्य ही क्या है ?<sup>1</sup> हमारा विश्वास

1. मथुरा के भव्य साधव में 1764 सम्मिवर्ष में से दो छे से अधिक माडी मगकर हुए गये थे । वह भी न मूना होया कि इस स्वेच्छा-सेवकों को छात्र देश एक आचार्य से मोलान्न और साधव दे रहा था । आरी तरह कम-कम की गूँब छल पकने की । इनक सप-सम्पन्नी इसकी धीरता पर प्रमिमान करते थे । वहाँ तक कि बहुतों की लिपी और बहने 'मुद्र-सेवा' में साव उपलिंग की और सेवा में छात्र जाने तक को ठेकर थी । दूसरी तरह यदि ये लोग सिर न मूकने तो उन्हें ध्येनतन कैला टन मास की छात्रो या बड़ी और मिस्ती । रमन्त के धमि-कुनों के छिर अनेक बात इससे ठीक समझी थी । कबना पक्या है आरम्भासिध की रीत की बड़ी मनी तक भी बहुत कमजोर है और मैं गर्म सीनी करके बाहर होया नहीं आगत । आम्ह-रिवकत की मिठ्या ही हीने होका करें बटनाई सिद्ध करतो हैं कि वरिच-कत में वे संसार की उन लक्षण्य धमियों से पीछे हैं ।

है कि बिप्लव का काम जितना धीरे-धीरे विश्वासघातकता भी उसी परिमाण में बढ़ेगी। इस सब पद्मग्न के मामलों में जैसे एक तरह विश्वासघात के दृष्टान्त पाये जाते हैं वैसे ही दूसरी तरफ भीरता की भी प्रबल प्रतीति हम देख पाते हैं। जो हो लाहौर पद्मग्न के मामले की केबल दो बातें ये पाठकों को देता हूँ।— अदालत में बिचार के समय जस्टिस सिह नामी एक सिक्ख ने अभियुक्तों के घिनौले के विषय में एक उल्लेख किया। केवल इसी अवसर पर जेल के सुपरिन्टेन्डेंट ने उन्हें तीव्र बेटों की सजा दी। आश्चर्य की बात है कि पंजाब में कहीं भी इसका खराब भी प्रतिवाद नहीं हुआ। करतारसिंह ने मुकद्दमे के समय अदालत में सब बातें स्वीकार कर लीं पर अंततः जब ने पहले दिन उनकी किसी बात को खर्ज नहीं किया। उन्होंने करतारसिंह को समझाकर कहा कि उनकी स्वीकारोक्ति ने उनका अपना Case बहुत खराब हो जायगा। इस पर भी करतारसिंह ने अपना मत न बदला। उन्होंने सब बटनाओं का वास्तविक स्वयं अपने ही चिर पर लिया। बिषय होकर जब ने कहा "करतारसिंह भाब घने तुम्हारी कोई भी बात नहीं सुनी तुम्हें एक दिन का घोर समय देता हूँ। अच्छी तरह सोच बिचारकर कम बो कहना हो वह कहना।" दूसरे दिन फिर करतारसिंह ने सब वास्तविक अपने ही चिर पर ले लिया। उनकी घान्त भीरता पर सब मुग्ध हो गये। भारत के इतिहास में करतार सिंह का नाम सदा अमर रहेगा। भारत के बिप्लव युव भी करतारसिंह से स्मरणीय कर दिया।

इस पद्मग्न के मामले में लाहौर डी० ए० बी० कासेब के वृत्तपूर्व अध्यक्ष साई परमानन्द भी पकड़े गए, इन्हें भी अदालत में आबन्ध कालपानी का बन्ध मिला। लाहौर जेल में रहते समय वे करतारसिंह के पास की कोठरी ही में बन्द थे। उस समय प्रायः सभी राजनीतिक अपराधी एक ही बरक में बन्द रहते थे। रात को वे सभी अपनी-अपनी कोठरी से एक-दूसरे के साथ गप-शप करते थे। कहते हैं एक दिन साई परमानन्द ने करतारसिंह से कहा—"बेखोशकि मानम होता कि अन्त में मुझे भी यही दुर्गति भोगनी होगी तो मैं भी तुम्हारे काम में पूरे सहम से योग देता।" साई परमानन्द के एक घोर करतारसिंह से घोर दूनरी घोर की कोठरी में एक घोर सिक्ख थे। वे सब भी बन्धे हुए हैं घोर इन्हीं से घने उल्लेख बटना अन्त में सुनी थी।

## ( 1 ) प्रताप की कहानी

राजपूताना के बिठ मुक्क के साथ में दिल्ली गया उसका नाम था प्रतापसिंह । ये राजपूताना के चारस बरा के थे । चारस लोग राजपूतों में पूज्य माने जाते हैं । प्रताप के पिता का नाम था सरदार केशरीसिंह । ये उदयपुर के राजा के विशेष प्रिय थे और सब मुझे ठीक याद नहीं था तो प्रताप के पिता या उनके दादा उदयपुर के राजा के मन्त्री पर तक पहुँचे थे । इनकी जागीर मेवाड़ के अन्तर्गत माहपुरी राज्य में थी ।

एक दिन था, जब यही राजपूताना बीरो का तीसा-निकेतन कहा जाता था एक दिन इसी राजपूताना में भीष्म के समान महापुरुषों का भी आविर्भाव हुआ था बंनार की कल्पना दृष्टि में शायद आज भी राजपूताना उसी घटीत युग की घूरता बीरठा और उदारता की प्रतियुति-मय ही प्रतीत होता है किन्तु बीरभक्त युग का वह गौरवमण्डित राजपूताना आज नहीं है । तथापि राजपूताना के आज विषमकृत अक्षयतित हो जाने पर भी उस घटीत युग के संस्कार आज भी प्रत्येक राजपूतानावासी के हृदय में अंकित हैं । प्रताप-परिवार की कहानी देखकर यह बात मेरे मन में स्वतः आग उठती है ।

यह परिवार राजपूताना के गण्य मान्य समूह जमींदारों में पिला जाता था, किन्तु स्वयं प्रीति और वैयस्थता की तातिर इन्हें अपना घर-बार बरबाद करना पड़ा ।

सबसे पहले दिल्ली पहलगम के मामले के सम्बन्ध में प्रताप और प्रताप के बहनोई पकड़े गए। किन्तु उनके विरुद्ध कोई विशेष प्रमाण न रहने से उस बार उनका छूटकारा हो गया। इसके कुछ ही दिन बाद कोटा में ही एक और राजनैतिक मामले में प्रताप के पिता सरदार कैथरीसिंहजी की धारम काबेपानी का दण्ड हुपा और प्रताप के एक सगे बचा के नाम भी बारम्ब विरुद्ध सम्भवतः धाब भी वे पकड़े नहीं गए। कैथरीसिंहजी का स्वास्थ्य बर्द्धा न रहने से उन्हें धन्यमन नहीं जाना पड़ा। देश की जेबों में ही रहना पड़ा।<sup>1</sup>

इस मामले के समरबद्ध सरदार कैथरीसिंहजी की और उनके छोटे भाई की समूची सम्पत्ति तो जब्त हुई ही इसके पतावा उनके जा भाई राजनीति के पास फटकते भी न थे, उनकी भी सारी सम्पत्ति जब्त हो गई। इस तरह वे समूह सम्पन्न आवीरदार की अवस्था से एकदम रास्ते के बिछाटी हो गए। प्रताप की माता के बुजुर्गों की उस समय सीमा न थी। भाब एक सम्बन्धी के पास रखी तो कम दूसरे सम्बन्धी के घर आकर धरिबि बनहीं। धन्य में धरने पिता के घर आकर किसी तरह दिन काटती रहीं। प्रताप के मामा के घर की हालत भी विशेष अच्छी न थी। बिबाठा जब किसी के प्रति निर्बन्ध होते हैं तब उनकी निष्ठुरता के निकट तसार की सब निष्ठुरता फीकी पड़ जाती है। और वे जिनको और बनाकर जडाते हैं उनके बीरद के निकट बनवान् की निष्ठुरता भी हार मानने को बाध्य होती है। इसी से इतनी विपत्ति में पड़कर भी प्रतापसिंह बराबर विभ्रम इस में काम करते रहे। काम करने-करने में भी धन्य है केवल कर्तव्य जान से काम करना एक बात है और काम करके धान्य पाता दूसरी बात। हमारा विचार है कि काम करके धान्य पाया धान्य यही हमारा कर्तव्य है। अपना जैसा काम करके मन में किसी तरह का अनुपाप-परिताप नहीं जैसा काम करने से मन में और प्राण में शान्ति की कोई सुचना भी न हो और सबल बड़कर जैसा काम करने से मनुष्य साक्षात् धन्य से धान्य भी पाये। हमारा विचार है जैसा काम ही मनुष्य का कर्तव्य है और जो करके मनुष्य धान्य तो पाये ही नहीं प्रत्युत उससे कभीस का धान्य हो वह काम करना मनुष्य को उचित नहीं। वैसी स्थिति में मानना होना कि धनधिकार

1. बार में जुलाई सन् 1919 में उन्हें जोर दिया गया था कि उनके भाई का वापस आने तक नहीं दिया गया।

बेवटा की जा रही है क्योंकि बेसी स्थिति में धानम्ब घबरा वृष्टि कुछ भी नहीं होती। घबराई सज्जा की खातिर, मोठ गिन्दा के भगसे कर्तव्य-कार्य में योग देना एक बात है और कर्तव्य-काय करके सबमुख धानम्ब पागा दूसरी बात। प्रताप ने जो अपनी पारिवारिक व्यवस्था के भीषण संकट-काल में भी इस प्रकार बिप्लव नाम में मोन दिया था उससे उनके बिस के किसी कोने में किसी तरह की आगि घबरा संकोच तो था ही नहीं बरन् बिपत्ति की ऐसी कराव भूति आँखों से देखकर भी वे पिता के समिप्रेत प्रिय कार्य में फिर भी अपने को लगा सके, इससे उनका बिस धानम्ब और परम से फूल उठता था। ऐसे बहुत सज्जन देखे पये हैं जो केवल कर्तव्य की खातिर घबरा बन्धुत्व को निबाहने के लिए ही इस बिप्लव काय में योग देते थे इसीसे उनके काम में बैसा जल्ताह न बैसा जाता था और इसीलिए वे प्रमि काय समय मुरझाने से रहते थे। ऐसा भाव देखकर हम उन्हें अधिक दिन यह बिडम्बना न भोगने देते और सीधे ही निबिबाव रूप से धानम्ब भोगने का प्रबसर दे देते थे जिससे वे छटकारा पाकर आन्ति से बम से छुटें। किन्तु जब-जब ऐसा नहीं किया गया है जब-जब प्रकृति और प्रवृत्ति के बिच्छु आचरण किया गया है, तब-तब प्रकृति बेबी ने अपना पूरा बबसा चुकाया है। प्रताप जैसे कर्तव्य की खातिर ही सब कार्य में योग न देते थे। उन जैसे मुखर्य में बहुत ही कम देखे हैं। प्रताप केवल स्वयं ही धानम्ब में रहते हों तो नहीं उनके संघ में जो रहते थे वे भी धानम्ब पाते थे। तो भी बीच-बीच में प्रताप का मन माता-पिता के लिए अधीर न होता हो सो नहीं हमारा तो बिचार है कि जिसका मन ऐसी प्रबस्था में माता पिता के लिए अधीर न होता हो उसका निबिबाव करना उचित नहीं है। माया मोह का एकबम अभाव होना एक बात है और माया-मोह में सिप्ल न होना दूसरी बात। मनुष्य की वृष्टि से मैं तो जम्हीं को धेप्ट नहूँगा जिनके स्वभाव में माया-मोह की पूरी सत्ता है किन्तु जो माया-मोह में सिप्ल नहीं होते। इसीसे प्रताप को जब बुन्नी देखता तब मेरे प्राणों में बड़ी ही व्यथा होती। किन्तु कार्य-लाभ में जब देखता प्रताप किसी से भी पीछे नहीं है तब फिर बैसा ही धानम्ब भी प्रतीत होता।

यमे दुरे का इह भी प्रताप के अंत-करण में चरम प्रबस्था तक था पहुँचा था। प्रताप के पकड़े जाने पर पुत्तिस बहुत दिन तक अनेक प्रकार के प्रलोभन दिखाकर उन्हें सब घुप्ट बाँटें प्रकट कर देने के लिए बिरोध तय करती रही। पुत्तिस प्रताप से

कहती कि सब पुस्त बातें कह देने पर केवल प्रताप को ही नहीं बरम् उसके पिता को भी छोड़ दिया जायगा यही नहीं उसके बाबा पर से भी मुझमा उठा लिया जायगा उनकी सब सम्पत्ति फिर लौटा भी जायगी और इस सबके प्रस्ताव और भी कुछ पुरस्कार दिया जायगा। प्रताप की माता ने कितना कष्ट पाया है प्रताप के भी दण्डित हो जाने से माता की अवस्था कैसी खोचनीय हो जायगी और इस प्रस्ताव को वे कैसे सह सकेंगी यह सब बातें पुनिस अपनी स्वभावसिद्ध चतुराई के साथ बार-बार समझती थी। पुनिस की ये सब बातें विमिश्रित निर्मूल हो सी थी तो न बा। पहले-पहल तो वे पुनिस के साथ क्या-का देर ठीक तरह बातचीत करते थे। पीछे उन लोगों के साथ बात करना प्रताप को भावो कुछ-कुछ मत्ता लगने लगा। एक दिन पुनिसबाबों के साथ प्रताप की करीब तीन-चार घंटे बातचीत हुई। हम सब पास की निर्जन कोठरी में बैठे-बैठे दम बामकर जमीन-मासमान की बातें सोचने लगे सम्बेह हुआ कि जबकी बार प्रताप फूट पड़ेगा। पीछे मुझमा प्रारम्भ होने पर जब हम सबको प्रायः दिनभर हकट्टा पड़ने का सुयोग मिला तब मामूम हुआ कि सब ही प्रताप का मन बहुत विचलित हो गया था। यहाँ तक कि अन्त में एक दिन प्रताप ने पुनिस से कह दिया कि वे एक दिन और सब बातों पर विचार कर में फिर कहना होगा तो कह देंगे। किन्तु जबसे दिन जब पुनिस प्रताप से मिलने आई प्रताप बोले, "बेखिए बहुत सोचा-विचार अन्त में तब किबा है कि कोई बात नहीं सोझूंगा। अभी तक तो केवल मेरी ही माता कष्ट वा रही है किन्तु यदि मैं पुस्त बातें प्रकट कर दूँ तो और भी कितने लोगों की माताएँ ठीक मेरी माता के समान कुछ पाएँगी, एक माँ के बहने और कितनी माताओं को तब हहाकार करना होगा।"—मन के एक बार पीछे फिसल पड़ने पर उसे फिर अपनी बचत लौटा लाना कितना कठिन कार्य है वह विमताहीन व्यक्ति ही समझ सकते हैं।

महीं मामूम आज भारत में कितने ऐसे पिता हैं, जो सरपार केपटीतहजी की तरह सब जान-बुझकर अपने को और अपनी सम्पत्ति को इस प्रकार दैय के काम में बलि दे सकते हैं। भारत का दुर्भाग्य है कि प्रताप-सा बुद्धिमान इन अवस्था में नहीं है। बरेली जेल में अंग्रेजों का दण्ड भोगते भोगते उसका मरकर शरीर उस दिव्य आत्मा का साथ न निबाह सका। इसी प्रताप के साथ मैं हिली गया था और कई दिन तक हकट्टे काम करने का अवसर पाया था। उस समय प्रताप की

घायु लगमग बाईस बरस की रही होती। दिल्ली में हमने इस यात्रा में छिना काय किया यह दूसरे परिच्छेद में लिखा जाएगा।

## ( 2 ) मुसलमान विप्लवदल की कहानी

पहले ही कह चुके हैं कि पंजाब का विप्लवायोजन विफल हो जाने के बाद मुसलमान विप्लव दल के साथ हमारे दल का पहला-यहल परिचय हुआ। इस बार दिल्ली में रहते समय इस विप्लव दल के साथ हमें धीरे धीरे अनिष्ट परिचय करने का अवकाश मिला।

इस मुसलमान विप्लव दल के विषय में हमारे बेचबारी एकदम कुछ भी नहीं जानते कारण कि इनका काम-काज प्रकट रूप से कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वत तुर्की इटैलियन युद्ध के समय से ही भारत में इस विप्लवदल का सुषपात हुआ है। उसी युद्ध के समय साधारण 1911 ई० में भारत के मुसलमानों ने युद्ध में मामलों की सेवा-सुभूषा करने के लिए तुर्की में एक दल (Medical Mission) भेजा। उस दल में अधिकतर मुसलमान लोग ही थे। पंजाब के 'जमींदार' पक्ष के सम्पादक श्रीमूठ जफरमसीदा भी उस दल में थे।

इस दल ने तुर्की के सुलतान और अम्प्राय स्वयंसे-श्रेणी मुसलमान सेनापतियों और राजकर्मचारियों के निकट विशेष सम्मान और आदर पाया। मेरे एक मुसलमान बन्धु मुझसे कहते थे कि उसी आदर की अधिकता से उनका भावा धर्म हो गया था। जिन्हें भारत में बल-बल पर लांछन और अपमान सहना होता था उन्हें अब तुर्की में राजा के प्रतिनिधि रूप में राजसम्मान के साथ समग्र तुर्की में भ्रमण करने का सुयोग मिला तब उनका भावा धर्म होना ही चाहिए था। भारत की आबहवा में रहकर इतने दिन तक मुसलमान समाज में किसी बेतना के लक्षण दिखाई नहीं दिए, किन्तु जब इसी मुसलमान दल के लोग तुर्की की स्वाधीन आबहवा के स्पर्श में आए और जब उन्होंने देखा कि यहाँ भी उनके स्वधर्मियों लोगों ने यूरोपवालों के देश में भी अपना आधिपत्य बराबर बना रखा है, और ऐसे एक स्वधर्मीसम्बा राज्य के नाश-वृद्ध-वधिता तक प्रत्येक व्यक्ति ने जब भारतीय मुसलमान दल को आदर के साथ अपनाया तब उनकी कितने ही समय की मोह निराशानो पक्ष भर में सड़ गई सहसा भारतीय मुसलमानों ने अपने को पहचान लिया। तुर्की इटैलियन युद्ध के फलस्वरूप भारतीय मुसलमान समाज में साधारण



कप से एक आभूषण के लक्षण दिखाई दिए थे। काशी में देखा मुनिने-मुनाहे और गाड़ीमान तक रोख तुर्की का संवादवागवे के लिए व्यस्त रहते थे। स्वयंभी लोगों की अनुवेदना किसी मुसलमान को कट के साथ धर्मन नहीं करनी पड़ती यह तो उसका जन्मत संस्कार होता है। इस साधारण आभूषण के सिवाय तर्की में मैडिक्स मिशन भेजने के बाद भारत के मुसलमानों में भी विप्लव का कार्य धारम्भ हो जाता है। रौलट रिपोर्ट में लिखा है कि अंग्रेजों के तुर्की इंटिरेनल युद्ध के समय तुर्की को सहायता न देने के कारण भारतवर्ष के मुसलमानों में असन्तोष का भाव फैल गया। पर हमारे विचार में यह बात असत्य है। अंग्रेज तुर्की की सहायता करते तो भी मुसलमानों में यह आशय प्रचलित नहीं था क्योंकि असत्य बात तो यह थी कि बाहर के आबात से बाहर के संस्पर्ध में जाने से एक अपने को बूझी हुई बाति जाय गई? अंग्रेजों के साथ उत बाति का क्या सम्बन्ध था यह दूतरीबात है।

जो हो इस मैडिकल मिशन के अनेक मुसल तुर्की के संस्पर्ध में जाने से विप्लव बम में दीक्षित हो गए और भारत में आकर उन्होंने मुसलमान सम्प्रदाय के बीच विप्लव का कार्य धारम्भ कर दिया। और तुर्की की पब्लिक में इन मुसलमानों में से किसी-किसी को भजवा इनके पञ्च के व्यक्तियों को भारतवर्ष में तुर्की राजदुत (Consul) नियुक्त कर दिया था। देश के जनताधारण को इन बातों का कुछ भी पता न मिल सका, किन्तु भारत सरकार इन सब बातों के अन्तर्गत और भी बहुत कुछ जानती है।

किन्तु मुसलमान विप्लव दस पहले से ही बाहर की मुसलमान धर्मियों की ओर ही विशेष लक्ष्य रखता था। इनको सब आया प्रतीता इसीलिए भारत के बाहर ही केन्द्रित थी। मुसलमान विप्लव दल के जिन लक्ष्य के साथ दिल्ली में पैरी बातचीत हुई थी उनके मजबूत सुना था कि इस विप्लव दल ने इसी बीच काबुल से भारत पर आक्रमण करने के लिए अनेक बार अनुरोध किया था। मैंने उक्त दिन उनके इस कार्य का और प्रतिवाद किया था। उन्होंने मुझे वह समझाने का प्रयास किया कि बाहर की किसी राजधर्मित की महापता के बिना भारत की विप्लव सेवका सार्थक न होगी मैंने भी उन्हें वह समझाने की चेष्टा की कि बाहर की महापता आने का यह धर्म न होना चाहिए कि बाहर की कोई राजधर्मित पादर भारत में दखल करे। उन्होंने मुझे वह मत से यह समझाना चाहा कि काबुलवासे भारत में आकर यहाँ स्थायी रूप से कभी न रहेंगे। हमें स्थायी

कराकर ही जमे जायेंगे। भारत के बहुत-से मुसलमानों की ऐसी ही चारबा है।

किन्तु इन्हीं मुसलमान लोगों ने बीच-बीच में कई बार हमारी बन से सहायता की थी। उनके साथ बातचीत करके जहाँ तक समझ सका हूँ उससे जान पड़ता है कि मुसलमानों का यह विप्लव दल सारे देश में एका साथ ही कार्य करता था। उनका यह विप्लव दल पंजाब के सीमान्त प्रदेश से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैल गया था। किन्तु हमारे जंगल के विप्लव दल में इतकम्बी का अन्त न था। पर सीमाय से बयान के बाहर उत्तर भारत में एकमात्र हमारा दल ही था इसीसे इतर इतकम्बी का कोई विशेष व्यवसाय न था।

हमारे दल से मुसलमान दल का यही मेरा वा कि हम लोग स्वाधीन भारत के बिस रूप की रक्षना करते थे, उस में हिन्दुओं के स्वावलम्बन की बात जमे रही हो हिन्दुओं की प्रजापता का कोई विचार न था एवं हमारी कार्य प्रजापती में मुसलमानों को प्रत्यक्ष रखने का स्वागत दूर रहा हम तो उन्हें दल में लीजने की ही चेष्टा करते थे। हमारे कुलागे पर मुसलमान यदि नहीं पाठे थे तो उसका कारण यह था कि मुसलमान सोम भारतवर्ष से हिन्दुओं की तरह प्रेम न करते थे। मुसलमानों के साथमिम्ने-जुमने से हमारी यह चारबा हुई है कि हमारे देश के मुसलमान लोगों का तुर्की मिश्र धरम, फारिस धरम काबुल की धोरभितना लिखा है भारत की धोर उतना नहीं है। वे तुर्की के धोर में अपने को भितना गौरवान्वित मानते हैं, भारतवासियों के हिन्दुओं के धोर में अपने को उतना गौरवान्वित नहीं मानते। मुसलमानों के मन के धाव बहुत कुछ ऐसे थे इसी कारण उनका विप्लव दल भी एक स्वतन्त्र रूप से गठित हुआ था। मनीम तुर्की के धावर्स से अनुप्राणित होकर भारत के अनेक मुसलमान विप्लववादियों ने भी विरम इस्लामिक (Pan Islamic) धावर्स को ग्रहण किया था इसीलिए भारत के मुसलमान विप्लव दल को केवल भारतीय विप्लव दल न कहकर भारत का मुसलमान विप्लव दल कहना संगत है। हमारे इन दोनों विप्लव दलों के सिवाय बिस्मी में धोर भी एक दल था धोर सम्भवतः धर भी है। यह दल कोई गुप्त समिति न थी। इस विषय की धासोधना धाने की गई है।

( 3 ) बिस्मी के निष्कलको दल की कहानी

इन्द्रप्रस्थ इस्तिनापुर धरवा बिस्मी हिन्दुओं के मन पर कैसा मोहपाम बाध

देती है। काल के बहकर में पड़कर कितने भिन्न-भिन्न राजवंश कितनी बेच बेचावर की जातियाँ धाकर हिस्सी के कितने नये-नये रूपों की सृष्टि कर गई, कितनी जातियों के उत्थान और पतन के बीच हिस्सी का इतिहास बहिन हुआ है और हिस्सी के इतिहास की तरंग के साथ भागो भारत का इतिहास भी उलबित होता रहा है। हिन्दुओं की गौरवमंजित हिस्सी बिदेसी विधर्मियों के दौरों तक धाकर धार्मिक-कीर्ति को नाशित करने लगी फिर इसी हिस्सी में ही बुग-मुग में भिन्न-भिन्न राजसक्तियों की परीक्षा करने लगी कितने संघर्ष, कितने राष्ट्र-विप्लव कितने विरोधों के बीच हिस्सी का प्राकृतिक इतिहास पठित होता है। इसीसे हिस्सी के इतिहास का अर्थ हो जाता है भारत साम्राज्य का इतिहास। और इस धाव-धमिल के संघर्ष के इतिहास में वहाँ हिस्सी का इतिहास पठित होता है वहाँ इसी हिस्सी में ही घनेक साधु-सम्प्रदायों का भी प्राविर्भाव होता है। मुसलमान प्राविपत्य के समय जैसे हिस्सी के निकट सतनामी सम्प्रदाय का प्राविर्भाव हुआ था वैसे ही अंग्रेजों के इस प्राविपत्य के समय इसी हिस्सी में निष्कर्मकी इस का प्राविर्भाव हुआ है। सतनामी सम्प्रदाय के समान यह दम भी बहुत ही क्षुद्र है। आज प्रायः तीस साल से यह दम हिस्सी में है। इन तीस वर्षों में ये लोग भारत की स्वाधीनता के लिए अमर्य पृथ्वी पर सत्ययुग को मान के लिए भगवान् के निकट नित्य प्रार्थना करते आए हैं। वे विश्वास करते हैं कि कसियुग समाप्त हो गया है और कल्किदेव के प्राविर्भाव का समय हो गया है। आजकल ये लोग प्रचार करते हैं कि कल्किदेव ने जग्य से लिया है और धीमे धीमे प्रकट होंगे। किन्तु इस धीमे का अर्थ क्या है अर्थात् ठीक कितने दिन में कल्किदेव दिखाई देंगे यह वे लोग नहीं कह सकते। वे लोग कहते हैं कि जब श्री भगवान् ने रामचन्द्र रूप में जग्य लिया था तब सारे भारत में केवल बारह ऋषि जानते थे कि श्रीराम भगवान् के ही अवतार हैं और लोग यह बात जानते भी न थे और उस समय विश्वास भी न करते थे। इसी प्रकार वर्तमान काल में भी ऐसे लोग बहुत नहीं हैं जो यह जानते हों कि भगवान् का अवतार हुआ है। ये लोग कहते हैं कि वर्तमान युग में भारतवर्ष में अनेक महापुरुषों ने जग्य लिया है, उनमें से अनेक अपने अपने रूप को नहीं जानते। जिस दिन उन महापुरुषों के सम्राट् अपने को प्रकाशित करेंगे उसी दिन ये सब अपनी सक्ति-सामर्थ्य की बात और अपने पूर्व जन्म की बात जान सकेंगे। इन महापुरुषों में से कई बड़े ही सक्तिपामी हैं एवं

इसमें मे कोई-कोई ऐसे भी हैं जो समझते हैं कि वे ही शायद भगवान् के अवतार हैं। वे लोग कहते हैं कि इस बार भगवान् ने ब्राह्मण के घर में जन्म लिया है, इसीसे वे सभी के पूज्य होंगे। अग्न्याग्न्य युगों में अग्निम आदि के घर जन्म लिया था इसी कारण उन्हें भगवान् का अवतार होते हुए भी ब्राह्मणों के घरों में भूमना पड़ता था इस बार वे ब्राह्मण के घर में जन्म ग्रहण कर सबसे पूजा ग्रहण करेंगे और ब्राह्मण के घर में जन्म लेने के कारण ही इस युग में उनका आचरण ऐसा होगा कि वैद्य-विद्वेज में ऐसा कोई न होना जा उनके किसी भी कार्य पर प्रेम्सी उठा सके। अग्न्याग्न्य युगों के अवतार-पुरुषों का आचरण ऐसा नहीं हुआ कि उनके चरित्र में कोई दोष न बिखाया जा सके किन्तु इस बार उनका आचरण ठीक भगवान् की ही तरह निष्कलंक होगा। वे लोग विश्वास करते हैं कि कस्मिन्सब सद्धर्मवादी होने पर भी किसी के विरुद्ध अस्व आचरण न करेंगे। वे लोग कहते हैं कि भारत की स्वाधीनता के लिए इस बार हिन्दुओं को अस्व ग्रहण न करना होगा, कारण कि भारत के जो धनु हैं जो पापी लोग हैं जिनकी प्रकृति बल और असुर भावों से पूर्ण है वे सभी आपस में ही मार-काट करके नष्ट हो जाएँगे और उनमें से जो बचे रहेंगे वे भी रोग महाकायी और दुर्मिष्ट में बदल जाएँगे। इस तरह इस बार पृथ्वी पाप भार से मुक्त हो जाएगी और इस प्रकार जो सत् प्रकृति के पुरुष हैं, वे ही बच जाएँगे और पृथ्वी पर सत्ययुग का आधिपत्य होगा। वे कहते हैं कि सत्ययुग का कार्य आरम्भ हो गया है एवं और कुछ बरतों के अन्दर ही संसार से पाप का शोध हो जायगा।

इसकी सामना की पद्धति झोटी थी जगत्तार कस्मिन्सब का नाम जगत्तार और उनके निकट भारत के और जगत् के संयत्न के लिए सामूहिक रूप से और व्यक्ति पक्ष रूप से निरूप्य प्रार्थना करना। वे कहते हैं भगवान् ही सब जगत् के एकमात्र कर्ता और मित्रता हैं, सब सब प्रकार से जगत् के सन्धारण होकर उन्हें स्मरण करना और उनकी ध्यान-धारणा करना ही हमारा एकमात्र कार्य है। संसार के सब कामें करते रहने पर भी भारत की स्वाधीनता और भारत के सर्वांगीण समस्त के लिए एक प्रार्थना करने के सिवाय और कुछ भी वे लोग नहीं करते—और वे लोग कोई संस्थाही भी नहीं होते। इनके प्रायः सभी सिद्धान्त निष्प्रबलियों के समान हैं। और भारत के विप्लव प्रयासी सब के लोगों को वे सब धन्य भी मानते थे, किन्तु कार्यक्षेत्र में और सब प्रकार से साधारण संसारियों की तरह होने पर

ये। और इनके साथ स्वामीजी का साक्षात् परिचय भी था। स्वामीजी की वस्तुतः भावि का इन्होंने ही सबसे पहले प्रकार धारण किया था।

इन्हीं के प्रभाव से दिल्ली के अग्राण्य कार्यकर्त्ताओं में भी ऐसा ही बर्म-बाव प्रकीर्ण हो गया था। इनमें से श्रीमत् लक्ष्मीनारायण और श्रीमत् मण्डीनाथ सास्ता का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अमीरचन्द और अक्षयबिहारी के साथ मेरी बँसी बनिष्ठता न हुई थी कारण कि वे पहले ही पकड़े गए थे। किन्तु इस बार प्रताप के साथ दिल्ली आकर लक्ष्मीनारायण और सास्ताजी के साथ कुछ बनिष्ठ रूप से मिलने का अवसर पाया।

दिल्ली के निष्कलंकियों की बात अक्षयबिहारी भावि सभी जानते थे किन्तु इनमें से लक्ष्मीनारायण निष्कलंकियों के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे मैं जिस समय की कहानी कह रहा हूँ उस समय लक्ष्मीनारायण बँधक पड़ते थे और निष्कलंकियों की तरह धंधेजी के गलरीक न फटकते थे।

अक्षयबिहारी और अमीरचन्द के पकड़े जाने पर दिल्ली के विप्लव दल का कार्यभार लक्ष्मीनारायण और मण्डीनाथ पर आ पड़ा। मण्डीनाथ आरसी के बड़े पण्डित थे और बड़ी अच्छी कविता लिख सकते थे। साता हरबाल सास्ता जी का बहुत-सी कविताएँ अपनी 'महर' पत्रिका में उद्धृत कर देते थे और हमारे मुँहमें से केवल इस किस्म की बातीब भावपूर्ण कविता लिखने के अपराध में ही उन्हें साठ बरस की कड़ी ज़ुब की सजा हुई थी। सास्ताजी भी धंधेजी लिखना-पढ़ना कुछ न जानते थे किन्तु आरसी भापा के सहारे जितना ज्ञान पाया था सफ़ता है वह सब उन्होंने पाया था। सास्ताजी का धर्मन्याय से विशेष प्रेम था, उनकी प्रकृति में ज्ञान की प्रवृत्ति ही विशेष पुष्ट हुई थी।

मैं इस बार प्रताप के साथ दिल्ली आने के पहले और भी कई बार दिल्ली आया था और अब से ही देखता था कि अक्षयबिहारी भावि की मिरपुठारी के बाव से दिल्ली में हमारा काम धाय-कुछ भी साये नहीं बढ़ रहा था। लक्ष्मी और सास्ताजी का उत्साह धीरे-धीरे मन्द हो जाता जाता था। दिल्ली परमार्थ के मामलों की घुनाई सतम होने के बाव पहले-पहल लक्ष्मी और सबकी अपेक्षा अधिक उत्साही थे और अनेक विपत्तियों के बीच में भी हमारे साथ मिलते-जुलते थे। पहले-पहल वे विपत्ति को परमाह्वान करके दल के अनेक कार्य करते थे किन्तु थोड़ा ही दिन में उनका उत्साह मन्द हो गया। धीरे-धीरे अवस्था ऐसी हो गई कि

सबसे सब सोक-संग्रह की बेटी बेचता न करते थे और धापी लोगों का उन्होंने संग्रह किया था वे भी भीम उस्ताही न होते। सख्तीनारायण के मन में एक और बात कमजोर बड़ों तथा संक्रियों के साथ बनिष्ठता होने के कारण उनमें यह परिवर्तन हुआ। उनके मन में कोई परिवर्तन न होने पर भी कमजोर के कार्य में निश्चेष्ट होते जाते और अधिकतर समय भयान् का नाम अपने और उनकी धारायता में ही घेबा देते। इस तरह बीरे-बीरे के हमार काम की सम्भालना करने लगे। वे स्वयं बिना प्रकार निष्कर्षों के प्रति ध्याय विस्वास रखते थे उसी प्रकार जिन कुछ कार्यकर्त्ताओं का संग्रह किया था उन्हें भी इसी निष्कर्षकी दम के विस्वासी नष्ट बना डालने लगे। फलतः हमारे काम में उनका बड़ा उस्ताह न रहा। अन्त में हमने धुना कि सख्तीनारायण जाली प्रार्थना करने के सिवाय हाथ से या कसम से और कुछ भी न करेगी और उनके धनुषायी भी उन्होंने के मार्ग का अनुसरण करेंगे।

इन सब कारणों से अनेक प्रकार से विप्लव की चेष्टा विफल होने के बाद हम और प्रतापसिंह लगे धिरे से कार्य चलाने के लिए दिस्ती धामे। हमारे दिस्ती धामे का यह भी एक कारण था। कीटक साहब के दिस्ती में न रहने से हमें अपना एक विशेष कार्य अन्त में स्वयिष्ठ ही रखना पड़ा किन्तु दिस्ती की विप्लव समिति के पुनर्गठन में हम पूर्ण सद्यसे लगे हुए।

दिस्ती में हमारे लिए मकान किराये पर ठीक कर देना, दिस्ती के पुराने कार्यकर्त्ताओं के साथ धालाप-परिचय करा देना आदि साधारण कामों को छोड़ सख्तीनारायण और कुछ न करते थे। अर्थात् दिस्ती का सब कामभार हमारे हाथों धीपकर उन्होंने विप्लव के कार्य से सुट्टी पाने का प्रयत्न कर लिया।

हम सोच दिस्ती में एक मकान भाड़ पर लेकर प्रायः पन्द्रह दिन रहे। दिस्ती से राजपूताना बहुत दूर नहीं है मैं दिस्ती में ही रहा और प्रताप को दो बार लय पुर भेजा। हमारी इच्छा थी कि राजपूताना के कुछ युवकों को दिस्ती में लाकर दिस्ती के विप्लव केन्द्र को सुगठित कर डालें। प्रताप राजपूताना में कार्य करते और मैं दिस्ती के कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलता-जुलता और उनमें से अपने दिन के मुताबिक धाकभी खाँदता। इस प्रकार दिस्ती में कुछ दिन काम करने के पक्ष-स्वल्प वास्ताबी के मन में बुझी हुई धाम फिर प्रज्वलित हो उठी। उन्होंने अपना पुराना लघुम फिर पा लिया। हमने देखा सख्तीनारायण के लक्ष्मी जास्ताबी ही

## ( 1 ) रासबिहारी का भारत त्याग

बारी का बुझार लेकर प्रताप के साथ बंगाल में मैं अपने केन्द्र में था उपस्थित हुआ। बंगाल में हमारी विप्लव समिति का केन्द्र वाकफ़ता के निकट एक गाँव। धनैक कारणों से वह गाँव का नाम अब भी नहीं लिखा जा सकता। इसी स्थान में मुझे पन्द्रह दिन तक छाट पर पड़े रहना पड़ा। और इसी स्थान के बुझकों ने वह समय बड़े यत्न से मेरी सेवा-सुधूवा की। प्रताप मुझे बंगाल में छोड़कर राज-पुताना चले गए। बात थी कि मैं स्वस्थ होने पर राजपुताना जाऊँगा और इस बार बड़े यत्न के साथ राजपुताना में विप्लव के केन्द्र स्थापित करने हूँ। परन्तु अब उनके साथ मेरी फिर भेंट हुई। अब हम दोनों ही पैल में थे।

मैं अब इस प्रकार बीमार होकर छाट पर पड़ा था तब पूर्व बंगाल के एक नेता श्रीकुल नयेन्द्रनाथसहज उन्हें मिलकर जानूँ प्रायः मेरे पास आया करते थे। उनके साथ परामर्श करके हमने निश्चय किया कि राजपुता को अब किसी प्रकार भी भारतवर्ष में नहीं रहने देना होगा। बहुत ही बुरी भयवान् धनैक प्रकार से उनको अब तक बचाते आए हैं। अब और अधिक उन्हें भारतवर्ष में बैठने देना गलत नहीं है। हमारा दल चोट के बाद चोट खाकर पीनने का सुयोग नहीं पाता। जिस समय हमारा दल उन्नति की ओर बढ़ता होना लगता है, ठीक उसी समय एक ऐसी बड़ी चोट उस पर आ गायती है कि उस चोट के बाद समूहमें मैं फिर कुछ दिन लग जाते हैं। बहुत दिनों पदम्य नामने की चोट समूहमें-अम्हामने

हमारा एक वर्ष बसा गया, उस चोट के बाद सम्मेलन कर फिर अब गवर्नमेंट पर धीरे धीरे की चोट करने लायक व्यक्ति-संघर्ष किया ठीक उसी समय फिर साहीर पदवग्न का मायसा हो गया। इस चोट ने हमें एकदम पगु कर दिया। इस चोट से हमारा पंजाब धीरे युक्तप्रदेश का बस भग्नप्राय हो गया। बंगाल में भिन्न-भिन्न वर्गों को चोट के बाद चोट सहनी पड़ी। इस अवस्था में रासबिहारी को भारत वर्ष में रखना हमें कुछ भी युक्तसमय न मान पड़ा क्योंकि दल का सम्मेलन और न रहने पर संघर्षों की विधि व्यवस्था के बिना टिका रहना किसी प्रकार सम्भव न था। रासूदा को जो हम लोग इतने दिन तक बचाए रख सके तो केवल अपने धार्मिकनियमन (संपन्न) के सुप्रबन्ध के चोर पर। दिल्ली पदवग्न के मामले के बाद रासूदा को पकड़ा देने के लिए साढ़े सात हजार रुपया इनाम की घोषणा की गई थी, उसके एक वर्ष बाद साहीर पदवग्न के मामले में रासबिहारी का कीर्ति कमाप प्रकाशित हुआ। इसके फलस्वरूप पंजाब गवर्नमेंट ने उन्हें पकड़ा देने के लिए और साढ़े सात हजार रुपया देने की घोषणा की क्योंकि उन्हें पकड़ा देने के लिए इस समय सब मिलाकर दस हजार रुपया इनाम था और बनारस पदवग्न के मामले के बाद युक्तप्रदेश की गवर्नमेंट ने साढ़े सात हजार इनाम और बढ़ा दिया। तब उन्हें पकड़ा देने का कुछ पुरस्कार साढ़े बारह हजार रुपये तक जा पहुँचा। इन सब कार्यों से हमने निश्चय किया कि रासूदा को इस बार भारत के बाहर भेजना ही होगा।

इतने दिन तक हम लोग एक बात की धोर बड़े उत्साहीन थे। हम इतने दिन तक समझते थे कि विप्लव वस्तुतः सुकहीने में काफ़ी देर है। इसीसे हमने इतने दिन तक उचित परिमाण में विदेश से अस्त्र-शस्त्र आने का कोई विशेष आयोजन नहीं किया था। किन्तु इस बार इस की अवस्था देखकर हमने समझ लिया कि उपयुक्त परिमाण में अस्त्र-शस्त्र रहें तो विप्लव आरम्भ करने में अधिक देर न होनी। इसीसे इस बार रासूदा को विदेश भेजकर नये तिरों से विप्लव का आयोजन करना तय हुआ। रासूदा भी देश छोड़ने से पहले कह गए थे “इस बार भारत के प्रत्येक युवक धीरे युवती को सहाय्य करना होगा, उसके बाद देखेंगे अपने किस तरह भारत पर शासन करते हैं।”

रासूदा पहले विदेश जाने के प्रस्ताव से बँसि सहमत न होते थे वे कुछ दिन धीरे प्रतीक्षा करना चाहते थे किन्तु हमारे अधुरोध को वे शक्त में न टाँस सके। किस



प्रकार, कम धीर कहाँ जागा होगा वे सब बातें रासूदा से जेंट होने के बाद ठीक की गई। बात थी कि रासूदा विदेश जाते ही सबसे पहले यथेष्ट परिमाण में मोडर पिस्तौलों और धतकी गोलियाँ भेज देंगे और बाद में विप्लव के लिए उपयुक्त परिमाण में दस्त्र-दस्त्र भेजने का बन्दोबस्त कर चुकी ही देश चले जाएँगे। किन्तु प्रकार दस्त्र-दस्त्र देश में था पहुँचेंगे और विप्लव धारण करने की विस्तृत आयोजना कैसी होनी चाहिए, यह सब विदेश के उपयुक्त और जानकारी समस्त कुशल व्यक्तियों के साथ परामर्श करके ठीक करने का विचार था।

काफी से रासूदा विनायक कापने को सब लेकर पहले सदिया माए और फिर विदेश जाने के पहले तक कसकता के पास ही कहीं रहे। विदेश जाने के बाद दिन पहले वे कसकते की ही एक कसकतपूर्ण बस्ती में जाकर रहे और एक दिन दोपहर हम और गिरिजा बाबू जाकर उन्हें जहाज पर बड़ा माए। वह मर्लन सन् 1915 की बात है। मैं और रासूदा एक पाड़ी में और गिरिजाबाबू दूसरी पाड़ी में जहाज तक गए। रासूदा का मुँहसे बड़ा ही प्यार था। रास्ते में रासूदा मुझे अपने अत्यन्त निष्ठ सौचकर मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बड़े स्नेह के साथ कहने लगे, "माई देश छोड़ते मुझे कितना कष्ट होता है यह तुमसे नहीं कह सकता देखो खूब सावधान होकर सुनो। माई देश के काम को ठीक ढंग पर लाकर तुम भी मेरे पास चले आना।" उनके साथ मेरी यही प्रथिम बात हुई थी।

इस प्रकार तब था कि देश में मार्गनिर्देशन (संयोजन) ठीक ढंग पर हो जाने के बाद मैं भी विदेश जाकर उनका साथ देना तारण कि मेरे नाम भी बारम्बार निकल पया था और देश में रहने से उस समय पकड़े जाये की बड़ी सम्भावना थी। बारम्बार निषत्तना तो दूर की बात है, यदि केवल पुसित की सन्देश बुद्धि में पड़ जाएँ तो भी काम करने में बड़ी असुविधा हो जाती है। देश में विप्लव-विप्लव स्थानों के विप्लवकारियों को परस्पर मिला देनेवाला कोई और रहता तो मैं भी रासूदा के साथ ही विदेश चला जाता किन्तु वैसे किसी और व्यक्ति के न रहने से कार्य की खातिर उस विपत्ति के बीच भी मुझे देश में ही रहना पड़ा। काफी छोड़ने हैं पहले रासूदा ने मेरी माताजी से यह प्रार्थना मे ली थी कि मेरे विदेश जाने के खर्च के लिए वे एक हजार रुपये दे देंगी। मैं ऐसे विप्लव कार्य में निष्ठ हूँ यह बात मेरी माताजी बहुत दिन से जानती थी और इन सब बातों में उनकी यथेष्ट सहानु-भूति थी थी। मेरे बहुत लोगों के लुफ्तों का कम था कि बगाली के घर में मुझे

ऐसी ना मिली थी।

रामूबा के विदेश जाने का रहस्यपूर्ण विस्तृत इतिहास लिखने का समय अभी नहीं आया। केवल इतना ही यहाँ बड़े देता हूँ कि बाहर से यह काम कितना ही रहस्यपूर्ण क्यों न दिखाई दे, घरेलू में यह बड़ा सहज और सरल था। इस प्रकार जाने के लिए केवल साहस और भयबान् का भरोसा करने के सिवाय और किसी चीज़ की आवश्यकता न थी। जिस समय रासबिहारी विदेश गए उस समय यूरोप की लड़ाई बरफ़ेंदर रूप से चल रही थी और उस समय विदेश जाना या विदेश से देश में आना कुछ कम कठिन बात न थी। इसके सिवाय रासबिहारी की-सी दशा के साहसी के लिए एक बपट्ट से डूबती बरफ़ेंदर छिरना कुछ कम खतरनाक न था। यद्यपि ही उस समय उनके पास हर वक्त सोनी भरी पिस्तौल रहती थी और हममें से भी कोई-न-कोई हर वक्त उनके मजदीक मौजूद रहता था। इसी से उन्हें बीस-बीस पकड़ लेना एक हिम्मत का ही काम था किन्तु सबसे अधिक वे भयबान् के अनुग्रह पर ही निर्भर रहते थे। जब वे अखिर बार कमलसे प्राण तक उठोने विवास्वर संग लेने में भी अनिच्छा प्रकट की थी। रासबिहारी का बदन दोहरा था इसीसे मेरी कारवा भी कि वे पीड़ विमकुल नहीं सकते। एक दिन मैंने उनसे पूछा यदि पुलिस पकड़ने आये तो आप बीड़ने की चेष्टा करेंगे कि नहीं? उसके उत्तर में हँसते-हँसते बोले कि वे विमकुल बीड़ न सकेंगे उस अवस्था में धार्मिक से धर्मसमर्पण कर देंगे। ऐसे ही और एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था कि उनकी धातु जब तक बुरी न होगी वे पकड़ न जाएँगे। धातु के ऊपर तो और किसी का हाथ नहीं है।

रासबिहारी अब आपाण में हैं। जहाँ वे आपाणियों को धंधेड़ी बढ़ाते हैं 'एशियन रिव्यू' मासिक पत्रिका की सम्पादकी करते हैं, आपाण के विविध स्वार्थों में भारतवर्ष के विषय में वक्तव्य आदि देते हैं और निम्न-निम्न सामयिक पत्रिकाओं आदि में लेख लिखते हैं। आपाण में बहुत पहले ही वे धंधेड़ों के हाथ बँदी हो जाते किन्तु आपाण के एक ऊँचे दर्जे के प्रकसर के विधेय पत्र और चेष्टा ने उस पात्रुत से छुटकारा पा सके। अब उन्होंने एक उच्च कुल की आपानी महिला का पवित्रहण किया है। और उन्हें एक पुत्र और एक कन्या-रत्न प्राप्त हुआ है। पुत्र का नाम है भारतवर्ष। हमारी भावना सम्भवतः इतने दिन में जैगता सीख चुकी है। रासबिहारी अब आपाण सरकार की प्रजा हैं।

बापान हैं। रातबिहारी ने सब बी बीके रस्य बुझिया और धर्म पत्रिकाओं धारि में भेजे हैं। उन्हें बापय बहुत भोग जागते हैं। उनसे उनका वर्तमान मत बहुत कुछ जाना जा सकता है। इसके सिवाय बापने कई बम्बुओं को भी उन्होंने मर एव लिखे हैं, यही उनका कुछ संक उद्युत कर चुका, इसीसे उनके वर्तमान मतमत का कुछ पता चल सकेगा।

( 1 )

Tokyo, Japan.

13.4.22

My dearest..

.....The idea that I could not protect...all from the inhuman... they were subjected to makes me restless. Of course I consoled myself with the fact that by passing through the agony of fire ...have come out a better and purer soul. But I did not like the tone of pessimism that pervaded some parts of letter. There is eternal life, so work is eternal. You need not be anxious about impurity even if there is any.....Of course there is no necessity of secret work, and I quite agree with you. Hitherto our knowledge of international situation was very meagre. We mostly confined our attention to India. But now I have come to understand a bit of international politics. This has greatly altered my former ideas. Please remember that we shall have to—rather we are destined to—take the problem of the world. It is India's mission to usher in a new era of real peace and happiness in the world. India's freedom is but a means to this end. It is not an end in itself ...

( 2 )

Tokyo

9th July 22

My dearest..

Your letter.. ..reached me yesterday. What did you wish

me to write ? And what was your heart's desire ? I think I was sufficiently clear in my letter. Of course there are many things which I cannot write in letters for obvious reasons and your curiosity about them must remain unsatisfied till we meet again. The most noteworthy thing however is that my whole outlook has been broadened and I gave you a hint in this connection in my last letter. Independence India must have. Because her independence is essential for the regeneration of the whole world. It is not the end in itself but it is a means to an end and that end is the destruction of Imperialism and Militarism and the creation of a better world for all to live in. It is India's mission and therefore your and my mission....I like Japan and I have come to adore her because I am convinced that she will stand for Asian Independence when time comes. When I came here first, the Japanese has little knowledge of the state of affairs in India. It is chiefly through our efforts and sacrifices that to-day every Japanese is closely following the trend of event in India. I have got many Japanese friends, from the cabinet ministers down to lawyers, M. Ps., journalists and students. Many books in Japanese about Gandhi and Indian movement have been published, and the papers and magazines are regularly carrying articles on India. This month a professor in the Tokyo Imperial University published a voluminous book in Japanese on India. Next month I am engaged to deliver lectures on Indian Situation for three days.. To-day most of the young men here are staunch advocates of Asian Independence. Even older men and responsible officials are in sympathy with the new awakening noticed from Persia to China. The most remarkable national trait (here) is patriotism. And the people are

ready to revere and love those who have the same characteristics. This is the reason that we are given protection. But for Japanese sympathy and love I would have been dead long ago... About going back to India well brother I do not want to return till India is free... Your Bowdidi is learning Bengali.

इसका भावार्थ यह है —

( 1 )

टोकियो जापान

19-4-22

प्राप्ति के , उन्हें मैं सामाजिक निर्वातनों से बचा नहीं सका यह भारना मुझे परमेश्वर प्रसीद किए रखती थी । जो हो, मैं बड़ी कहकर अपने को सम्मान देता था कि इस प्रकार भाव में लपकर ये भी निर्मल और सम्भव हो उठे । किन्तु भाई तुम्हारे वच में बयह-बयह को निराशासूचक बातें थीं वे मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लगीं । हमारा जीवन बनम्त है इसीसे हमारा कार्य भी बनम्त है । यदि सबकुछ तुम्हारे सम्बर कोई समित्तता हो भी तो बिन्ता की कोई बात नहीं अवश्य ही सब मुक्त कार्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है, इस विषय में तुम्हारे साथ मेरी पूरी सहमति है । अब तक हमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओं के विषय में कुछ भी ज्ञान न था । हमने अब तक भारत की घोर ही ध्यान रखा था । किन्तु अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कुछ-कुछ समझने लगा है । इससे मेरे बहुत विचारों में बहुत परिवर्तन हो गया है । एक बात याद रखो—हमें अन्त में तारे संसार का प्रयत्न हम करना होना हमारे ज्ञान में यही सिखा है । संसार में नवीन रूप लाकर अन्त और शान्ति की स्थापना का दायित्व भारत के ही शिर पर है । भारत की स्वाधीनता इसी उद्देश्य का साधन है, यह स्वयं उद्देश्य नहीं है ।

( 2 )

टोकियो,

० पुनार्द, 1928

प्राप्ति के तुम्हारी बिट्ठी कल मिली । लिखते हो मेरे पत्र हैं तुम्हारी माया पूरी नहीं हुई । तुम्हारे हृदय की इच्छा क्या थी ? मुझ को बचीत होता है अपने पत्र में मैंने सब बात स्पष्ट करके लिखी थी । अवश्य ही ऐसी घनेक बातें हैं जो पत्र में नहीं लिखी जा सकतीं । अब तक फिर हमसे मेट नहीं होती अब तक

उन बातों के विषय में तुम्हारी उत्सुकता पूर्ण नहीं हो सकती। तो भी सबसे बढ़ कर जानने लायक बात यही है कि मेरी दृष्टि पहले से बहुत विस्तृत हो गई है, इस बात का मैंने पिछले पत्र में भी संकेत किया था। पूरा स्वाधीनता भारत की चाहिए ही बल्कि उसकी स्वाधीनता पर सारे संसार का धुमकाड़ा निर्भर है। यह स्वयं एक सत्य नहीं प्रत्युत एक सर्व्वेय का सत्य है और यह सर्व्वेय है साम्राज्य-सत्ता और सैनिक आधिपत्य का संहार और सब लोगों के रहने की एक नये अन्धे संसार की सृष्टि। यही भारत का उद्देश्य है और इसीलिए तुम्हारा और मेरा उद्देश्य है, मैं आपान को बहुत चाहता हूँ और उस पर बड़ा करने लगा हूँ मुझ दृढ़ विश्वास हो गया है कि उपयुक्त समय माने पर आपान एशिया की स्वाधीनता के लिए तैयार उठाएगा। जब मैं पहले यहाँ आया, आपानियों की भारत की समस्या का कुछ भी ज्ञान न था। किन्तु अब मुख्यतः हमारी बैठे और स्वयं के कारण प्रत्येक आपानी भारत के गटना-प्रवाह की उत्सुकता से देख रहा है। तन्निमग्नता के सबसों से लेकर बकीसों पार्लियमेंट के मेम्बरों वन-सम्पादकों और विद्यार्थियों तक मेरे बहुत-से आपानी मित्र हैं। आपानी जगत् में योकी और भारतीय साम्प्रदायिक के विषय में बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और वन-यन्त्रियों में भारत पर लगातार लेख निकल रहे हैं। इसी महीने टोकियो इम्पीरियल विद्यापीठ के एक प्रोफेसर ने आपानी में भारत-विषयक एक विराट् ग्रन्थ लिखा है। अपने महीने मुझ भारत के विषय में तीन दिन व्याख्यान देने होंगे। आज यहाँ के बहुत-से नवयुवक एशिया की स्वाधीनता के कट्टर पक्षपाती हो गए हैं। उनके लोग और विशेषकर छात्र ही भारत से चीन तक फैली हुई नई जागृति से सहानुभूति रखते हैं। देशभक्ति तो आपानियों की भारतीय विवेकता ही है। और ये लोग बिना भी यह मुण देखते हैं जहाँ पर प्रेम और दया करने लगते हैं। यही कारण है कि हमें धरम मिमी है। आपानियों की सहानुभूति और प्रेम न मिथता तो मैं बहुत पहले से जान चुका होता। आई देश में आपन जाने के विषय में मुझ यही कहना है कि जब तक भारत स्वाधीन न हो मैं आपन माना नहीं जा रहा। तुम्हारी बीबी (मायन) बयाना सीख रही हैं।

इन पत्रों से रासबिहारी के मन की वर्तमान अवस्था के विषय में बहुत कुछ जाना जा सकता है। किन्तु वर्तमान अवस्था की बात छोड़कर जिस समय की अवस्था लिख रहा था उसी समय की बात फिर लिखता हूँ।

## (2) केन्द्र की कहानी

रासूरा भारत छोड़कर चले गए, उन्हें जहाज पर चढ़ाकर हम घोर विरिधा बाहु अपने केन्द्र में वापस आ गये। केन्द्र के साथ हमारा सम्बन्ध मूढ़ भविष्य नहीं था और ऐसा होने के अनेक कारण थे।

प्रथमतः केन्द्र के नेताओं के साथ हमारे राजनीतिक मतों में मेल न था। वे इस विप्लव समिति की स्थापना के धारम्भ से ही टैरिज्म (बात फँसाने) के पक्षपाती थे। उन्होंने जब तक देश में सशस्त्र विप्लव करने के लिए कोई चेष्टा न की थी। वे समझते थे कि यदि कुछ दिन तक देश के एक छोर से दूसरे छोर तक संघर्ष बर्नमेंट के ऊँचे कर्मचारियों का विरासत और कम से काम तमाम कर दिया जाय तो बर्नमेंट चलाकर देश को अनेक राजनीतिक अधिकार दे देंगी। और इस प्रकार हमारे के छोर से अधिकार के बाह अधिकार प्राप्त करते हुए भारत में पूर्ण स्वायत्तशासन तक ले लेना सम्भव है ऐसा उन लोगों के मन का विश्वास था। भारत के लिए पूर्ण स्वायत्तशासन ले लेने का ही मार्ग होता स्वाधीनता की प्रथम सीढ़ी पर पहुँच जाना, क्योंकि पूर्ण स्वायत्तशासन प्राप्त कर लेने पर भारत के लिए स्वाधीनता पाना कुछ कठिन बात न होती। वे यह भी कहते थे कि इस प्रकार प्रथम किसी और प्रकार स्वायत्तशासन चाहे बिना भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता पाना सम्भव नहीं है। उनका विरास था टैरिज्म (बात फँसाने) के द्वारा ही सशस्त्र में और लोहे सन में पूर्ण स्वायत्तशासन पाना जा सकता है। यह कार्य प्रभासी उन्हें अंशाल के किन्हीं स्वनामधन्य देशपुष्प नेता से प्राप्त हुई थी। किन्तु इस टैरिज्म को भी सार्थक करने के लिए देश का पूरा घटन करने की आवश्यकता थी यह भी वे न कर सके थे। जैसे किसी बघड़ के एक मैजिस्ट्रेट को मारना होता तो एक मुकदमा को विरासत लेकर उस जगह भेज देते यद्यपि पहले से उस जगह पर देश के घटन की कोई चेष्टा न हुई होती थी।

सुनिश्चित उपयुक्त और अधिकारी सब के बिना आवश्यक कोई कार्य भी सम्भव नहीं हो सकता और न भारत के लिए स्वायत्तशासन पाने का प्रथम स्वाधीनता पाना ही है ऐसे एक विराट और कठिन कार्य को सम्भव करने के लिए कैसे विरास और अधिकारी सब की आवश्यकता थी हमारे केन्द्र के नेता लोग यह बात भली प्रकार नहीं समझ सके। इसीसे उनकी मायका में अंशाल में कोई

भी विशेष दम नहीं उठ सकता होता। इनके दम का शुरुआती चरण की सीमा पार नहीं कर पाता। इस प्रकार कार्य करने से कृताय न होने की ही सम्भावना थी इसी से केवल इनके बल से कहा जा सकता है नास (Terrorism) की कोई चेष्टा सार्थक नहीं हुई। इस कार्यप्रणाली के विषय में इनके साथ मेरा प्रायः जोर विवाद होता था।

इस प्रकार दम का धारण केवल टैरिज्म रखता जाने के कारण ही मेरे समान धर्मों मुख्य इनके धारण में जो जान एक करके साथ न दे सकते थे। और इस प्रकार के नास का धारण सचमुच चिन्ताशील युवकों के हृदयों को आकर्षित नहीं कर सकता। यथार्थ में जब ठीक उदार और विचार धारण की प्रेरणा के बिना कोई व्यक्ति अपने जीवन की ओर अपने सर्वस्व की बाजी लगाकर देश के कार्य में योग नहीं दे सकता। इसीसे टैरिज्म के धारण पर लोक-संग्रह सम्भव न था। इसीलिए लोक-संग्रह के लिए सम्भाव्य अनेक धारण लाये जाते और विप्लव-समिति की भी कार्यप्रणाली के विषय में प्रायः सबको ही जोर धँबरे में रखा जाता। इस प्रकार केवल कुछ लोगों का संग्रह करके उनके द्वारा केवल टैरिज्म के काम कराये जाते यह बात हमारे मन के आश्रित न थी। रासबिहारी और उनके महाबलम्बी युवकों के साथ बातचीत होने के बाद जिस दिन पहले-पहल इन सब नेताओं के साथ मेरा परिचय हुआ उस दिन मैं एकदम स्तम्भ-सा हो गया था सोचता था वह फिर कैसे दम में आ चुका। उनकी बातों का प्रतिवाद मैंने उसी दिन किया था और रासबिहारी के साथ फिर बातचीत होने पर उनके भी इस विषय में सिकायत की थी। उसी दिन से रासबिहारी ने मुझसे कह दिया कि कर्मयोग और बर्गसंग्रह की बातों के विवाद अपनी कार्यप्रणाली के विषय में कोई बात इनके साथ फिर मत करना।

रासबिहारी बचपन से ही इनके संघर्ष में थे पर उनकी प्रकृति के साथ उनकी प्रकृति का मेल न था। जरा बड़े होकर जब वे बेहतराज्य लौकरी करने गए तभी वे अपने कार्य की चारा की अपने आप ही सृष्टि करने लगे। प्रकृति देवी जैसे सबसे पलायित ही अपने सब कार्यों की सृष्टि कर जाती हैं, यथार्थ भी जैसे ही अपने नेताओं से पलायित एक विशाल दम उठा कर जाती हैं, देशक कार्य मुख पाये बढ़ जाने के बाद केन्द्र के नेताओं को उन्होंने बहुत कुछ बतला दिया था। रासबिहारी इनके समान केवल नास (Terrorism) के पक्षपाती थे, इसी कारण उनकी



कार्यप्रणाली एक घोर ही क्रिस्म की थी। किन्तु इनके साथ यह का मत न रखने पर भी राक्षसिहारी विरोध और दसबन्दी के पक्षपाती न थे। इसी से इनके साथ वहाँ तक सम्भव होता था जिसबुझकर ही कार्य करते थे।

एक घोर कारण से भी केन्द्र के नेताओं के साथ हमारा भारी विरोध रहता था। वे नेता सोच समझते थे कि धार्मिकता का कुछ मर्म केवल वे ही सोच प्राप्त कर सके थे, इसी से उनके साथ मतभेद होते ही वे कह बैठे कि हम लोग विरक्तुल पारवात्य धारण में मतबाने हो गये हैं, मानो शात फँसने (Terrorism) की अपेक्षा वासिष्ठ विप्लव की पैदा अधिक पारवात्य धारण से अनुप्राणित थी। विरक्त वय के मत का सम्मेलन करने की यह प्रकटपत्र युक्ति धार्मिकता बहुत लोगों की जवान पर सुनी जाती है।

वे लोग धार्मिक प्रकार से प्रचार करते थे कि वैराग्य-साधना प्रथम ध्यान-धारणा और समाधि का मार्ग ही मयवान् को पाने का एकमात्र श्रेष्ठ मार्ग नहीं है। इसीसे वे लोग प्रचार करते थे कि संसार को त्यागें बिना संसार के सब कार्यों की ठीक प्रकार करते हुए संसार में प्रभावशाली होकर रहना ही श्रेष्ठ मार्ग है, किन्तु व्यवहारयोग में वे अपनी कुछ टोली को राजनीति के प्रयत्नपूर्वक पुनर्कर बनाने की भरपूर पैदा करते थे। इसी से हमारे साथ इनका निरन्तर ही विरोध होता। जिस दिन पंजाब का विप्लववादीजन विप्लव होने के बाद हमने इस केन्द्र में आकर सब हम जैसे के लिए धार्मिक भिया सही कि इन लोगों में चुटकी निकर इन से कहा था "बहुत क्रूर फाँद हो चुकी अब जरा सावध होकर बैठकर मयवान् की धाराबवा करो।"

हमारा विचार है कि इनकी प्रकृति विप्लव धर्म की विरोधी थी, इसी से वे लोग धार्मिक बटनाशक में पड़कर कदापि इस विप्लव के अन्तर से बहुत दूर हटते गए। वे लोग मूर्ख थे जिन कर्म और वैराग्य के बीच सम्भव करके चलने के धारण का प्रचार भले ही करते थे किन्तु कार्ययोग में और सब प्रकार से संसार के कार्य में लिप्त रहकर भी राजनीति से विशेषतः जिस राजनीति के धारण का अनुसरण करने से अंग्रेज सरकार के साथ विरोध होना जरूरी होता उस मार्ग से बड़े मेल के साथ मच-मचकर चलने की पैदा करते थे। निश्चय ही जब तक वे लोग दूसरे विप्लवियों के उत्पत्ति में से सब तक सब तरह से जीवन विप्लव की भी प्रभाव न करते हुए सब सब विप्लवियों की सहामाता करते थे किन्तु इनकी

रुद्धि दूसरी तरह की थी इसीसे इन्होंने प्रायः इन सब विप्लवियों का संग छोड़ दिया था। जिस प्रकार बीराम की प्रयुक्तिवाले महापुरुष पहले-पहले संसार घोर योग में निपट रहते हैं किन्तु स्वधर्मवश धीरे-धीरे उसी बीराम के मार्ग का ध्वस्तत्व कर धर्म में संसार त्याग देते हैं, उसी प्रकार हमारे ये नेता लोग पहले पहल विप्लव समिति के साथ धर्मरंज क्य से निपट थे पर स्वधर्मवश वे लोग सब प्रकार के विप्लव के समुत्थान से धीरे-धीरे दूर सरक गए और धर्म में निप्लव क्रम में योग देना तो इन्होंने छोड़ दिया लेकिन हाँ सब संसार को ही नहीं छोड़ा इसी प्रकार राजनीति को ही छोड़ा पर और सब प्रकार से समाज की सेवा में योग करते रहे।

इन सब कारणों से इनके साथ हुआ मन न मिलता था। जब तक रास-बिहारी देश में थे तब तक वे इनसे दूर-दूर रहने पर भी इनको बड़ा मानकर बसते थे, यत्नम होठा है इसका प्रमाण कारण यह था कि रासबिहारी बचपन से ही इन्हीं की गायकता में ऊपर उठे थे किन्तु कमरा रासुबा के चरित्र में भी ऐसा परि वर्तन हो गया था कि नाराज त्याग करने से पहले जब वे इनके पास अन्तिम बार आए थे तब वे रासुबा के व्यक्तिगत प्रभाव को देखकर कह बैठे थे "इसे किस प्रकार क्षमा करें ? इसे जो देखना उसीकी दृष्टि इस पर घटक बायबी इसे देख कर ही मानो मान्य होठा है 'हाँ एक मनुष्य—महस मनुष्य' बीठा है।" जिस समय की यह बात है उस समय इनके मकान की मरम्मत का काम चलता था इसी लिए कुत्ती मकदूर बादि नित्य मकान के भीतर बाया-बाया करते थे। इन सब कुत्ती-मकदूरों के जाने-पाने का स्वागत करके ही इन्होंने यह बात कही थी। एक दिन यही रासुबा के मुँह के समाज से किन्तु धर्म में धिप्य के प्रभाव से मुग्न हो गए थे। रासबिहारी के विदेश जैसे जान के बाप से कमरा हम लोग इन सब नेताओं से दूर हटते गए। इस समय बंगाल में जो सब विप्लव बल थे उनमें से बाका के विप्लव बल के साथ हम सबसे अधिक अनिष्ट क्य से मिल-जुलकर काम करते थे।

### ( 3 ) बाका अनुशीलन समिति की कहानी

बंगाल में सभी विप्लव बलों की चारपा भी कि बाका की अनुशीलन समिति दूसरी विप्लव समितियों के साथ मिल-जुलकर काम करने को अनिष्टक है, यद्यपि

बंगाल की कोई भी विप्लव समिति डाका की अनुशीलन समिति के साथ मिल बैठकर काम न कर सकेगी। किन्तु वे लोग यह न जानते थे कि डाका की समिति कमलनगर धरबा रासबिहारी के दल के साथ पूरी तरह मिल गई थी, और वह मिलबा मुरोपियन महामुख से बहुत पहले ही हो गया था। मेरी जहाँ तक जानकारी है उससे इतना कह सकता हूँ कि सब बोप-मुच मिलाकर यह डाका की अनुशीलन समिति बंगाल की सम्पूर्ण अनेक विप्लव समितियों की अपेक्षा बेहतर थी। इनके समान बड़ा दल बंगाल में और किसी विप्लव समिति का न था। पूर्व बंगाल और उत्तर बंगाल के प्रायः प्रत्येक जिले में इनकी छाया-बछायाएँ थीं। बहुतों समी मानते हैं कि संस्था और विस्तार में बंगाल के सब विप्लव दलों से वे बढ़े बढ़े थे। किन्तु पश्चिम बंग के विप्लव दल के नेता पूर्व बंग के दल को कम बुद्धिमान समझते थे। इसीसे पूर्व बंग के दल को वे विस्वास की दृष्टि से न देखते थे। पश्चिम बंग के विप्लव दल के कुछ लोग पूर्व बंगाल के कुछों की अपेक्षा अपने को अधिक संस्कृत और सुविविध (Cultured) समझते थे। इसके सिवाय डाका की अनुशीलन समिति को बंगाल के प्रायः सभी विप्लव दल परिभाष में छोटा होने के कारण ईर्ष्या की दृष्टि से देखते थे, इन्हीं सब कारणों से कमलनगर धरबा रासबिहारी के दल को छोड़कर बंगाल का और कोई दल भी डाका के अनुशीलन दल के साथ मिलकर एक बख्खद दल बड़ाकर लेने की इच्छा न था। मनुष्य का यह प्रकार बड़ी सामान्य वस्तु है। वह मनुष्य को ऊपर उठाने में जैसे सह्यमता करता है वैसे ही नीचे गिराने में भी कसर नहीं करता। यह प्रकार को सुबंनत करना बड़ा कठिन काम है इसी से प्रायः सभी व्यवहारीक मामलों की सृष्टि इसी प्रकार से हुई है। बंगाल में अनेक-अनेक विप्लव दल मिलकर एक बिगड़ दल में परिवर्तन न हो सके इसका मुख्य कारण इन अनेक-अनेक दलों के नेताओं की कुछ यह प्रकार-बुद्धि ही थी। बंगाल का कोई दल यदि दूसरे दलों के साथ मिल-जुलकर एक होने की चेष्टा नहीं करता और अन्त में बिगड़ करती पर भी हताश नहीं हो सकता तो इसी प्रकार के प्रभाव के कारण। इसीलिए बंगाल में अनेक सुद विप्लवदलों का अस्तित्व था। ऐसा जान पड़ता है मानो बंगाल में कायकर्ता उनकी अपेक्षा नेताओं की संख्या ही अधिक है। बंगाल में जो दल कुछों को भी एकत्र कर पाया वही एक नेता बनकर उड़ा हो गया एक बार नेता हो जाये पर फिर वे अन्य किसी दल के साथ मिल जाना स्वीकार न करती इसका प्रभाव कारण यही था कि वे

सब नेटा कहानेवाले सोचते थे कि इस प्रकार सम्भाव्य दलों के साथ मिल जाने के उनकी स्वतन्त्रता एवम् नष्ट हो जायगी। मेरा विचार है कि बंगाल के विन्म-विन्म छूट दलों के नेताओं के मन में ऐसा भाव था इसी कारण वे डाका के दल के साथ मिलना स्वीकार न करते थे, वे सोचते थे कि किसी बड़े दल के साथ मिल जाने से उनका झुझल प्रकट हो जायगा और उस बड़े दल में घाबर उनकी प्रधानता कुछ भी न रहेगी। बहुत बार मैंने स्वर्ग बंगाल के कुछ विन्म दलों को डाका दल के साथ मिलाने की चेष्टा की है निम्न किसी बार भी कृतकार्य नहीं हुआ। निःसन्देह ऐसा मिलान न होने का एक और भी विशेष कारण था। बंगाल के विन्म-विन्म विन्म दलों के बीच ऐसे कोई प्रतिभाधान् संस्थितपानी पुन्य नहीं हुए जिनकी व्यक्तिगत मोड़नी व्यक्ति के मन से सिंचकर विन्म-विन्म दल सम्य में एक दल में परिणत हो सकते। यद्यप्य ही जैसे किसी प्रभावशाली व्यक्ति के होने पर भी बंगाल के सब दल मिलकर एक हो जाते कि नहीं इस में भी सन्देह है।

चाहे जिस कारण से हो बंगाल के प्रायः सभी विन्म दल डाका की समिति के प्रति असन्तुष्ट थे। घाबर इसका एक कारण यह था कि पूर्व बंगाल की अनु-धीन समिति के प्रायः सभी सदस्यों के मन में कुछ ऐसे गर्व का भाव था कि उनके समान संस्थितपानी दल बंगाल में और कोई नहीं है। मान लें कि इसीलिए परिचय बंगाल के विन्म दलों का पूर्व बंगाल के दो-एक छोटे-छोटे विन्म दलों के प्रति बसा डेप न था वैसे इस डाका समिति के प्रति था। ऐसा होने का एक और कारण भी था। डाका समिति पुनिन बाबू द्वारा स्थापित हुई थी। और इन पुनिन बाबू की प्रकृति में स्वैच्छावादिता (egotism) का भाव अवाक्य रूप से प्रबल था। पुनिन बाबू सभामुख और किसी के साथ मिलकर काम करने के पक्षपाती न थे। पुनिन बाबू का आधिपत्य जहाँ चला भी कम हो नहीं पुनिन बाबू का रहना असम्भव होता, इस ध्येय में पुनिन बाबू और भारीन बाबू एक ही प्रकृति के धारणी थे। इसी कारण पुनिन बाबू की विद्यमानता में डाका की समिति और किसी समिति के साथ न मिल सकी, और बहुत कुछ पुनिन बाबू के कारण ही उसी समय ही बंगाल के सभी दल डाका समिति के प्रति असन्तुष्ट हो जाते हैं और समय बीतने पर वही असन्तोष की घायल बमछः बुरा रूप धारण कर लेती है। अन्त में मिल-जुलकर काम करने के लिए जो समझौते की प्रकृति (compromising attitude) होती चाहिए, पुनिन बाबू में उस

बंगाल की कोई भी विप्लव समिति डाका की अनुशीलन समिति के साथ मिल-जुलकर काम न कर सकेगी। किन्तु वे भोय यह न जानते थे कि डाका की समिति जम्मनगर घबरा रासबिहारी के दल के साथ पूरी तरह मिलाई थी, और यह मिलना यूरोपियन महामुख से बहुत पहले ही हो गया था। मेरी बहुत तक मान्यता है उससे इतना कह सकता हूँ कि सब बोय-गुप्त मिलाकर यह डाका की अनुशीलन समिति बंगाल की अन्याय्य घनेक विप्लव समितियों की अपेक्षा थोड़ा ही। इनके समान बड़ा दल बंगाल में और किसी विप्लव समिति का न था। पूर्व बंगाल और उत्तर बंगाल के प्रायः प्रत्येक जिले में उनकी शाखा-प्रशाखाएँ थीं। बहुतों की मान्यता है कि संख्या और विस्तार में बंगाल के सब विप्लव दलों के ये दल बड़े थे। किन्तु पश्चिम बंग के विप्लव दल के नेता पूर्व बंग के दल को कम बुद्धिमान समझते थे। हमीसे पूर्व बंग के दल को वे विश्वास की दृष्टि से न देखते थे। पश्चिम बंग के विप्लव दल के कुछ लोग पूर्व बंगाल के कुछों की अपेक्षा अपने को अधिक संस्कृत और सुशिक्षित (Cultured) समझते थे। इसके विषय डाका की अनुशीलन समिति को बंगाल के प्रायः सभी विप्लव दल परिभाष में छोटा होने के कारण ईर्ष्या की दृष्टि से देखते थे। इन्हीं सब कारणों से जम्मनगर घबरा रासबिहारी के दल को छोड़कर बंगाल का और कोई दल भी डाका के अनुशीलन दल के साथ मिलकर एक प्रचण्ड दल बनाकर लेने को इच्छुक न था। मनुष्य का घर्षकार बड़ी भयानक वस्तु है। यह मनुष्य को ऊपर उठाने में जैसे सहमता करता है वैसे ही नीचे गिराने में भी कसर नहीं करता। घर्षकार को सुसंभल करना बड़ा कठिन काम है। इसी से प्रायः सभी जगह घनेक घनघों की सृष्टि इसी घर्षकार से हुई है। बंगाल में निम्न-निम्न विप्लव दल मिलकर एक विप्लव दल में परिणत न हो सके इसका मुख्य कारण इन निम्न-निम्न दलों के नेताओं की कुछ घर्षकार-बुद्धि ही थी। बंगाल का कोई दल यदि दूसरे दलों के साथ मिल-जुलकर एक होने की चेष्टा नहीं करता और अन्त में चेष्टा करने पर भी इत्कार्य नहीं हो सकता तो इसी घर्षकार के प्रभाव के कारण। इसीलिए बंगाल में घनेक कुछ विप्लवदलों का अस्तित्व था। ऐसा जान पड़ता है मानो बंगाल में कार्यकर्ता उनकी अपेक्षा नेताओं की संख्या ही अधिक है। बंगाल में जो दल कुछों को भी एकत्र कर पाया वही एक नेता बनकर उड़ा हो गया। एक बार नेता हो जाने पर फिर वे अन्य किसी दल के साथ मिल जाया स्वीकार न करते। इसका प्रधान कारण यही था कि ये

उस नेता कहलानेवाले सोचते थे कि इस प्रकार धन्याय्य दलों के साथ मिल जाने से उनकी स्वतन्त्रता एकदम भंग हो जायगी। यैरा विचार है कि बंगाल के भिन्न भिन्न दल दलों के नेताओं के मन में ऐसा भाव था इसी कारण वे डाका के दल के साथ मिलना स्वीकार न करते थे वे सोचते थे कि किसी बड़े दल के साथ मिल जाने से उनका सुदृढ़ प्रकट हो जायगा और जब बड़े दल में शामिल उनकी प्रभावता कुछ भी न रहेगी। बहुत बार यैने स्वयं बंगाल के कुछ विप्लव दलों को डाका दल के साथ मिलाने की चेष्टा की है किन्तु किसी बार भी सफल नहीं हुआ। निम्नलिखित ऐसा मिलाना न होने का एक और भी विशेष कारण था। बंगाल के भिन्न-भिन्न विप्लव दलों के बीच ऐसे कोई प्रतिभावान् धर्मियाँ न पुरष नहीं हुए जिनकी व्यक्तिगत मोहनी शक्ति के बल से बिचकर भिन्न-भिन्न दल दल में एक दल में परिवर्तित हो सकते। यद्यपि ही ऐसे किसी प्रभावशाली व्यक्ति के होने पर भी बंगाल के उन दल मिलकर एक हो जाते कि नहीं इस में भी सन्देह है।

चाहे जिस कारण से हो बंगाल के प्रायः सभी विप्लव दल डाका की समिति के प्रति प्रसन्नोत्पन्न थे। प्रायः इसका एक कारण यह था कि पूर्व बंगाल की धर्म-सीसन समिति के प्रायः सभी सदस्यों के मन में कुछ ऐसे वर्ग का भाव था कि उनके समान धर्मियाँ दल बंगाल में और कोई नहीं है। जान पड़ता है कि इसीलिए परिचय बंगाल के विप्लव दलों का पूर्व बंगाल के दो-एक छोटे-छोटे विप्लव दलों के प्रति वैसा होप न था वैसा इस डाका समिति के प्रति था। ऐसा होने का एक और कारण भी था। डाका समिति पुनिन बाबू द्वारा स्थापित हुई थी। और इन पुनिन बाबू की प्रकृति में स्वेच्छाचालिता (autocracy) का प्रायः बंगाल के रूप से प्रबल भाव। पुनिन बाबू स्वयंभू और किसी के साथ मिलकर काम करने के पक्षपाती न थे। पुनिन बाबू का आधिपत्य बहुत बरा भी कम हो बहुत पुनिन बाबू का रहना सत्प्रभाव होता इस संघ में पुनिन बाबू और बारीन बाबू एक ही प्रकृति के प्रायः थे। इसी कारण पुनिन बाबू की विद्यमानता में डाका की समिति और किसी समिति के साथ न मिल सकी और बहुत कुछ पुनिन बाबू के कारण ही उसी समय से बंगाल के सभी दल डाका समिति के प्रति प्रसन्नोत्पन्न हो जाते हैं और समय बीतने पर वही प्रसन्नोत्पन्न की भाव क्रमशः बुरा बन जाय कर लेती है। प्रसन्न में मिल-जुलकर काम करने के लिए जो समझौते की प्रकृति (compromising attitude) होती चाहे, पुनिन बाबू में उस

जगकी देश भाषण आता हूँ यह खबर पाकर हमने समझा कि उन्होंने घर-घर पहुँचाने का कोई प्रण्डा बन्दोबस्त कर लिया है। किन्तु ठीक उसी समय एक और निस्वस्त सूत्र से हमने जान पाया कि सरकार बहादुर विदेश से घर आने के सभी संवाद जान गई थी और भारतवर्ष के तट के निकट बो-लींग मस्जिद भरे बहादुर भी कहीं पकड़ लिये गए हैं। पीछे 'रीसट कमेटी' की रिपोर्ट में घनेको बार्त पड़ी। विगत विप्लव युग के इतिहास का यह अंश अत्युत्तम मनिनीफिस्तो मुह प्रतीत 'बांगसाय विप्लवबाज' में विस्तृत रूप से आलोचित हुआ है। विप्लव युग के इस अंश को मैं मनिनी बाबू के अन्ध से ही कुछ-कुछ उद्धृत करके पाठकों की भेंट करेगा।



### ( 4 ) विदेश में भारतीय विप्लववादी गण

भारत की विप्लव वेष्टा को सार्थक करने के लिए विदेशी राजसक्ति की सहायता अत्यन्त आवश्यक है यह बात भारत के प्रायः सभी विप्लववादी स्वीकार करते थे। वे जानते थे कि पृथ्वी पर अनेकों के जो अनेक समूह सुविधा और सुयोग पाते पर वे भारतवासियों को भी अनेकों के विरुद्ध सहायता देने में पीछे न रहेंगे और यदि भारतवर्ष में जैसे उपयुक्त नेताओं का प्राविर्भाव हो जाय तो वे एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या की सृष्टि कर सकेंगे जिसके द्वारा पृथ्वी के अन्तिम आसी साम्राज्यों के बीच प्रतिद्वन्द्विता और ईर्ष्या का अनुपयोग करके वे भारतवर्ष को स्वाधीनता के उच्च शिखर पर ले जाने में समर्थ हो सकेंगे।

संसार में ऐसे बुष्टान्तों का प्रभाव नहीं है जहाँ प्रबल राजसक्तियों के परस्पर के हस्त के कारण अपेक्षाकृत दुर्बल जातियाँ प्रबलों के दास से कूटकारा पा गई हैं। एवं पुराने बमाने की अपेक्षा आजकल यह बात मान्य होता है और भी निश्चय रूप से कहीं वा सक्ती है कि पृथ्वी पर ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसके अने बुरे अथवा अस्वस्थ-मन के साथ पृथ्वी के अन्य देशों का कोई भी सम्बन्ध व्यवसाय स्थापन हो। इसी से भारत के विप्लववादियों की दृष्टि पहले से ही विदेश की तरफ आकर्षित हुई थी। किन्तु वे यह भी जमी प्रकार जानते थे कि भारत का विप्लव बल यदि उपयुक्त रूप से अन्तिमस्थानी न होना तो विदेशियों की सहायता भारतवासी ग्रहण न कर सकेंगे और सहायता ले सकनेवाले आरमी न रहें तो

सहायकों के रहने से भी कृप्य नहीं बनता। प्रबल की सहायता और प्रबल की दुर्बल की निपट सेने की जगह इन दोनों के बीच जो भेद है उसे भारत के विप्लव-वादी मूल समझते थे और ठीक इसी कारण से बहुत दिन तक जबतक पर में शक्ति न थी देश के विप्लव दल ने विदेशों की ओर दृष्टि नहीं मगाई थी।

किन्तु विप्लव जेन्टा के धारम्भ से ही इस प्रकार विदेशों की ओर दृष्टि रखी जाती तो पत बर्मेन युद्ध के समय भारत का विप्लवापीनन विभक्तन व्यर्थ न होता। भारतीय विप्लव दल में जैसे कोई दूर दृष्टिवाले प्रतिभावाले उपयुक्त पुरुष न रहने से ठीक समयानुसार वे देश को भी तैयार न कर सके और ठीक किस समय से विदेशियों के साथ सम्बन्ध मूल स्थापित करना उचित है, यह भी वे निर्णय न कर सके।

✓ विप्लववादी भारतवासियों में से सबसे पहले दयानजी कृष्ण बर्म विदेश गए और उनके संस्पर्श से और उनकी जेन्टा से उनके विदेशस्थ भारतीय युवक विप्लव बर्म में दीक्षित होते रहे। सन् 1905 के दिसम्बर महीने में दयानजी ने इस बात का विचार किया कि छः उपयुक्त भारतवासियों को छः हजार रुपया कृति देवे जिससे वे यूरोप अमेरिका और पृथ्वी के सम्प्राप्त स्थानों में भूमकर भारतवासियों को स्वाधीनता के मन्त्र में दीक्षित करने के लायक शिक्षा उपार्जन कर सकें। इसी समय एल० थार० राणा नामक एक महाराष्ट्र के सज्जन ने दयानजी के पास परित से इसी विषय का एक पत्र लिखा कि वे भी तीन भारतवासियों को छः हजार रुपया राहु कर्म के लिए कृति देवे और ये कृतियाँ राणा प्रतापसिंह शिवाजी और किसी स्वनामधन्य मूसलमान राजा के नाम पर समर्पित की जायेंगी। इसका उद्देश्य था इस प्रकार उपयुक्त शिक्षित भारतवासियों को भारत के बाहर भाकर विप्लव कार्य में उपयुक्त कार्यकर्ता रूप से तैयार कर देना। किन्तु इनकी जेन्टा से कोई विदेश कार्य हुआ कि नहीं मुझे वास्तुम नहीं।

ईसवी सन् 1906 में दिनाबक दामोदर सावरकर नामक एक प्रतिभावाले महाराष्ट्र-ब्राह्मण सज्जन में बैरिस्टरी पढ़ाई गए और इनके धाने पर दयानजी कृष्ण बर्म का कार्य मूल से ही से प्रगट हुआ। किन्तु ये भी विदेश की किसी भी राज शक्ति के साथ कोई भी सम्बन्ध-मूल स्थापित नहीं कर पाये।

विनायक सावरकर सज्जन में ही रहते थे। जब बंगाल के प्रसिद्ध हैमदास भी विभागत गए, किन्तु हैमदास बम और विस्फोटक पदार्थ बनाने की शिक्षा पाने की



खातिर ही विरोध नए थे। इसीसे उन्होंने भी विदेशी राजसत्ति के साथ कोई भी सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा नहीं की।

पंजाब के विस्थापित साक्षात् हरखपाल भी इस समय विस्थापित में थे एवं विस्थापित के विप्लववादियों के संस्पर्श में आकर वे भी पूरे उत्थान से विप्लव कार्य में जोड़ देने लगे किन्तु उन्होंने भी उस समय किसी राजसत्ति की सहायता लेने की ओर ध्यान नहीं दिया।

इसी बीच स्वदेशी आन्दोलन की प्रवृत्ति बाद में बंगाल प्रसारित हो गया और बंगाल के अग्रान्त युवकों के मन प्राण उस समय बुद्धिमान साधन में निपटि के मूह में कूब पड़ने लगे। इतने दिन तक केवल बमियों की ही सम्मान बैरिस्टरी प्रवृत्ति थी। ए० सी० एस० पढ़ने के लिए प्रवृत्ति विस्थापित के भोगविद्या के दुस्व प्रवृत्ति धाँवों देख घाने के लिए ही भारत के बाहर जाया करती थी किन्तु बंगाल के नवजागरण के प्रभाव से कई युवक देश सेवा के धाँव से उद्बुद्ध होकर और दूसरे ऐसे भी धनेकों जो देश प्रान्त सुबोध भले लड़के होने की स्वाति पाने से बंशित थे बिनकी कदाम प्रकृति की प्रस्थान गति देख की प्रवृत्ति में प्रकाशित होने का सुबोध न वाली थी—ऐसे भी धनेकों युवक अमेरिका में आ इकट्ठे हुए। इनमें से अमृत तारकनाथ दास के नाम से हम लोग सुपरिचित हैं।

स्वामीजी कृष्ण वर्मा लखन में कुछ दिन काम करने के बाद अन्त में काँस धाप धाने को बिचल हुए। इस समय पेरिस में एक विप्लववादी पारसी रमशी भी थी जिसका नाम था मैडम कामा।

साक्षात् हरखपाल भी इसी बीच एक बार देश आकर फिर अमेरिका वापस लगे आए। अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालयों में उन्होंने बीच में कुछ दिन हिन्दू दर्शन-शास्त्र के अध्यापक का काम भी किया। इसी समय तारकनाथदास भी अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में अध्यापक नियुक्त हो गए। इनके सिवाय और भी एक बंगाली सज्जन इस समय अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में अध्यापक का काम करते थे। यही 'बांगलाब विप्लववाद' में उल्लिखित सुरेन्द्रकर थे कि नहीं, कह नहीं सकता। अमेरिका में 'भार' दल स्थापित होने के कुछ दिन बाद साक्षात् हरखपाल और बंगाली अध्यापक ने एक बार अमेरिका के उत्कालीन ग्रेसी-जेम्स के साथ भेंट की और उनसे समुपरोध किया कि अमेरिका में भारतवासियों को बुद्धि-विद्या सीखने और अध्याप्य कई विषयों में सुबोध दिया जाए। अमेरिका

के प्रेसीडेण्ट ने सबसे भेंट हा की उनके किसी समूह को माना नहीं। इस प्रकार कार्य होकर उन्हें एक अन्य राजस्थान के पास अपना आवास रखा और इस राजस्थान का आवास स्वीकृत भी हो गया। इस घटना का इस पुस्तक के प्रथम भाग में (तीसरे परिच्छेद में) उल्लेख किया गया है। किन्तु अमेरिका के इस विप्लव दल के साथ भारत के विप्लव दल का बँसा सम्बन्ध था।

इसी समय या इससे कुछ पहले बंगाल की एक विप्लव समिति की ओर से एक धुक्क को बलिदान भेजा गया किन्तु ये अमेरिकी सरकार के ऊपर कुछ भी प्रभाव न डाल सके। विदेशी राजस्थान पर प्रभाव डालने के लिए जिस योजना और अभियान की आवश्यकता होती है, इन धुक्क में इसका अभाव था।

जो हो जिस समय अमेरिका में विप्लव दल एक विदेशी राजस्थान के साथ सम्बन्ध शुरू स्थापित करने में उत्तमार्थ हुआ उससे कुछ ही दिन बाद यूरोप का महायुद्ध छिड़ गया और जर्मनी हारवान, तात्कालिक आदि अमेरिका छोड़ यूरोप भाग गए। इनकी विप्लव की सुन्दर योजना इस प्रकार विफल हो गई।

जर्मनी पहले कौन्स्टीट्यूट भाग और फिर वेनेवा होकर बलिदान में अन्त्या भारतीय विप्लववाहियों के साथ था मिले।

यूरोपियन युद्ध आरम्भ होते ही असीमद जिते के एक समूह बर्मीदार धीमे महेन्द्रप्रतापसिंह स्विटजरलैंड गए। जर्मनी हारवान के वेनेवा आने पर महेन्द्र प्रताप के साथ उनकी भेंट हुई। जर्मनी हारवान की साथ वे बलिदान था उपस्थित हुए। इस प्रकार महेन्द्रप्रताप भारतीय विप्लव दल में था मिले।

जर्मनी हारवान आदि के आने आने पर अमेरिका के विप्लव दल का भार रामचन्द्र नामी एक विप्लववाही सज्जन पर डाला गया।

इससे पहले ही यूरोप में भारतीय विप्लववाही एक दल संघठित कर चुके थे इस यूरोपियन विप्लव दल के नेताओं में डा० अकबरी और धीमे धीरेम अट्टोपाप्याय प्रमुख थे।

ये धीरेम अट्टोपाप्याय हमारे अमीर अट्टोपाप्याय महाशय के पुत्र हैं। धीमेती धीमेती नामधू और 'समर' पत्रिका की वर्तमान सम्पादिका धीमेती मुनामिनी अट्टोपाप्याय इन्हीं धीरेम की ही बहनें हैं। धीरेम ने एक वर्षभर रोमन कैथोलिक धर्म का पालन किया है किन्तु इन धर्म में अन्तर्गत रहे पर

1 अन्तर्गत है—अन्तर्गत है। अन्तर्गत है अन्तर्गत है अन्तर्गत है।

भी इन दोनों के ही बर्ग-विश्वास इतने दृढ़ थे कि इनमें परस्पर इन बर्ग-विश्वासों के कारण बड़ी प्रशान्ति रहती रही से अन्त में इन्होंने घलघ रूपा धारम्भ कर दिया । जब भी इनमें से किसी ने दूसरा बिबाह नहीं किया और एक-दूसरे से दूर दूर रहने पर भी इनके प्रेम में कोई व्यतिक्रम नहीं हुआ । वह ही भुवती सब भी बट्टोपाध्याय महाशय का सब बर्ण-भार उठाती है ।

और, यूरोपियन महाबुद्ध धारम्भ हो जाने पर अमेरिका और यूरोप के विभिन्न विप्लव बलों के नेता बर्मनी में एकत्र हो गए और बर्मन सरकार के राज प्रतिविधियों के साथ परामर्श करके एक साथ भारत में विप्लव संघटन का आबोधन करने लगे ।

बर्मनी में जो सब भारतीय विप्लवी इकट्ठे हुए वे समर्थ से हरदयाल तारकनाथ, बरकतुल्ला बन्धुलाल, बरकतुल्ला हेरमलाल गुप्त बीरेन्द्र सरकार, महेश प्रताप और बन्धुलाल पिल्लै का नाम हम रीसट कमेटी की रिपोर्ट में देख पाते हैं । बन्धुलाल स्विटजरलैंड के विप्लव बल के सम्पादक थे । बीरेन्द्र बट्टोपाध्याय का नाम हमने बहुत बार पहले कागजों में देखा है ।

पहले हरदयाल आदि कई एक संजनों ने बर्मनी के बाहर से सम्बन्ध स्टाकहोल्म सहर से एक पत्रिका निकाली । यह पत्रिका निकालने का उद्देश्य था यूरोपियन देशों की भारतवासियों के प्रति सहानुभूति प्राप्त करना और अंग्रेज किस प्रकार इस बीसवीं सताब्दी में भारत पर दासन करते हैं उसका विस्तृत परिचय यूरोप वालों को देना । यूरोप और अमेरिका में भारत-विप्लव आग के प्रचार करने से कितना लाभ है, आज भी हमारे देश-नायक यह जमी प्रकार नहीं समझ सके क्योंकि यदि वे समझ पाते तो उस तरह अवश्य ध्याय देते ।

इस प्रकार अपने स्वार्थों की शिक्षा के लिए प्रचार-कार्य में अंग्रेज कितना स्वयं बर्ण करते हैं और कैसे विचारशील उपयुक्त व्यक्तियों को इस काम में नियुक्त करते और उनकी कौसी सहायता करते हैं यह हमारे देश-नायकों की नजर में अभी तक नहीं पड़ा इसीसे आज भी जब बिबेसों में कुछ भारतवासी इस बात का प्रचार करते हैं कि भारतवासी संसार में स्वाधीन होकर ही रहना चाहते हैं तब हमारे अपने देश में देश के वैधानिक विधिवादात्मक की महिमा का कीर्तन करते हैं । और, जाने दो इस बात को ।

एक तरह जैसे प्रचार का कार्य करने वाला दूसरी तरह जैसे ही भारतवासियों

कायस्थ-सस्त्र युद्धवादेन का भी आयोजन आरम्भ हो गया, सब कुछ हुमा पर समय पर कुछ भी न हुआ। चीन के छांपाई शहर में जर्मनी के वो राजप्रतिनिधि (German Consul General) थे, जहाँ के ऊपर यह घटनादि भिजवाने का सब भार था। फिर ये भी अमेरिका के वाशिंगटन शहर में वो जमन राजप्रतिनिधि थे उनके मायेदानुसार सब काम करते थे। इस प्रकार यूरोप और अमेरिका के सभी भारतीय विप्लव नेता जर्मनी के राजप्रतिनिधि और युद्ध-सुचियों की सहकारिता से भारत में विप्लव की धाम प्रज्वलित करने का आयोजन करने लगे।

जर्मन के विभिन्न विद्यापीठों में वो सब भारतीय मुक्त पढ़ते थे संघर्षों के साथ युद्ध छिड़ते ही जर्मन गवर्नमेंट ने पहले उन्हें छुट्ट कर लिया और पीछे उनमें से बहुतों को भारत में विप्लव प्रचार कार्य के लिए सहमत कर लिया और उनके हाथ में भरपूर रुपया देकर उन्हें भारत भेज दिया, सब भी सम्भवतः यूरोप के (भारतीय) विप्लववादियों के साथ जर्मन गवर्नमेंट की कोई बातचीत न हुई थी। इस प्रकार जर्मनी से रुपया लेकर वो देश में आए उनमें से प्रायः सभी ने बहु रुपया इकट्ठा कर लिया। समझे से केवल बो-एफ व्यक्तियों ने देश में आकर विप्लव दल के लोगों के साथ बैठ की। युरोपियन विप्लव दल यदि पहले से ही सतर्क और बेचन होकर कार्य करता तो ये सब विमृशत भट्ठाएँ होने की सम्भावना न पड़ती। रीसट कमेटी की रिपोर्ट पढ़कर तो मासूम नहीं होता कि यूरोप में बैठा कोई व्यक्तिवासी विप्लव दल या अमेरिका के 'गरर' दल ने ही यूरोप में आकर वो कुछ हो सका किया।

वो ही जर्मन एक्सपर्ट्स (विशेषज्ञों) के साथ परामर्श करके तय हुआ कि बर्मा के सीमा के पास ही भारत में विप्लवप्रवासी मुक्तों को युद्ध-विषयक कुछ-कुछ शिक्षा देकर बर्मा पर आक्रमण करना होया और जिस किसी उपाय से हो, विप्लव चलाने के लिए उपयुक्त धस्त्र-सस्त्र भारतवर्ष में विप्लववादियों के हाथ में पहुँचा ही देने होंगे। 'मकर' दल के कुछ शिक्षक जैसे भारतवर्ष में आए वे बंसे ही और भी बहुत-से शिक्षक उस समय अमेरिका चीन और मलय उपद्वीप में भी थे इनके द्वारा ही बर्मा पर आक्रमण करने का उद्योग चलता था। उस समय बटेदिया (बाबा की राजधानी) मनीसा (फिलिपाइनस की राजधानी) बेंकाल (स्वात की राजधानी) और छांपाई प्रादि स्थानों में भारतीय विप्लववादियों का माना-जाना इकट्ठा जाँची था।

इससे 'बहर' दल का आयोजन करने लगा, उससे बीते ॥ भारत के दल की बाहर के विप्लव दल के साथ मिल जाने की योजनाएं बनाई गईं। सम्भवतः 1915 ईसवी के करीबी महीने में यतीन बाबू के दल के बीच-बीच में नाम बदोनामिया बकाय गए, किन्तु इनके द्वारा कार्य कितना धीमे बढ़ा यह कह नहीं सकता। यतीननाथ साहिनी नामक एक युवक के युरोप के जाने के बाद ही उनके कथनानुसार यतीन बाबू के दल के नरेशनाथ धर्मन यात्र में पहले बटेविया गए और वहीं से असल कार्य आरम्भ हुआ। उसविहारी भी धर्मन यात्र में शामिल हो गए। बटेविया और बेकाय का सम्पूर्ण आयोजन सांसारिक के अर्थन कोमल बनरस के परामर्श से और 'बहर' दल की सहायता से ही चलता था। बटेविया के 'बहर' दल के साथ बंदास के दल का संघोष स्थापित हो गया था।

29 अप्रैल, 1915 के दिन सीलकोविका के सागरेडो बन्दर से मैबरिक बानी एक बहाज भारत के उपकुल की ओर प्रस्थित हुआ। वह बहाज पहले स्टैंडर्ड सायन कम्पनी का ठेका धारण करने वाले के काम धारा था। प्रीति सागकोविको की एक अर्थन कम्पनी ने इसे खरीद लिया था। चलते समय इस बहाज में सब निबकर पञ्चीत कर्मचारी और पाँच नीकर बने हुए स्थित थे। वे अपने को ईपनी कठमाले में पर न असल में भारतवासी ही। सागकोविको के अर्थन कोमल और विप्लव दल के रायचन्द्र के उद्योग से ही वह बहाज बेकाय गया था। बात की कि धानी लार्सन (Annie Larsen) नामक एक और छोटा बहाज अस्पादि लेकर इस मैबरिक के साथ रास्ते में मिलेया और लार्सन के अस्पादि मैबरिक से लेया। किन्तु धानी लार्सन समय पर मैबरिक से मिल न सका, इससे निबल होकर मैबरिक केबल कुछ भारतवासीयों और अर्थन अस्पादि (विशेषज्ञों) को लेकर बटेविया आ गया। बटेविया के बन्नी धर्मनारियों ने मैबरिक की जागतनप्री कराई। किन्तु कोई वापसिबनक वस्तु न पाकर मैबरिक को छोड़ दिया। इसी और धानीलार्सन (Annie Larsen) बल महीने के अन्त के अर्थन अस्पादि लेकर वापसिबन पहुँचा। किन्तु अमेरिका की सरकार ने वे सब अस्पादि जप्त कर लिए, वापसिबन के अर्थन कोमल ने उन सब अस्पादों के लिए बाका किया, पर अमेरिका सरकार ने उसे नार्मकर किया। मैबरिक अन्त में बटेविया से अमेरिका जाट धामा और वहीं नरेशनाथ (जिनका वर्तमान नाम जालवेन्द्रनाथ राय— एम० ए० राय है) अमेरिका नाम गए।

हेनरी एस० (Henry S.) नामक एक और जहाज घटना  
 मंडा या मया किन्तु वहाँ प्रिमिनाइन के अधिकारियों ने वे सब  
 ठरवा दिए। इस जहाज में बोहेन नामक एक बर्मन सेनापति थे  
 बर्मा की सीमा के निकट भारतीय विप्लववादियों को सामरिक दिया।  
 मारवा। ये सिमापुर में पकड़े गए। जावा के जमन कॉमिंस के साथ पचमर्ष  
 मरके मरेन्द्रनाथ ने ठीक किया था कि मैबरिक के साथ सब अस्थाधि बंधात में  
 जयमंगल के पास उतारे जाएंगे। जयमंगल में भी इस बात का सब आयोजन हो  
 गया था, पर मैबरिक आया नहीं। बुलाई, 1915 में संघर्ष सरकार को सब बातें  
 मालूम हो गई और उसके फलस्वरूप भारत में सरपकड़ प्रारम्भ हो गई।  
 किन्तु इसके बाद भी रासबिहारी ने फिर देश में अस्त्र धारण का आयोजन  
 किया। इस आयोजन के अनुसार दिसम्बर, 1915 में भारत में विप्लव प्रारम्भ  
 होने की बात थी। इस बात का आयोजन इस प्रकार का था कि एक जहाज अस्थाधि  
 लेकर अण्डमन के सब राजनैतिक कैदियों को मुक्त करके सीमा बर्मा पर आक्रमण  
 करना और दूसरे दो जहाज अस्थाधि लेकर भारत के तट पर आते। बंगाल के  
 विप्लव दल की सहायता करने के लिए सिमासठ हज़ार गिस्वर्ड (हार्नेट का चांदी  
 सिक्का) लेकर एक बोनी सज्जन भारत की ओर आ रहे थे। ये भी सिमापुर में पकड़े  
 गए। इनके पास रुपये के अतिरिक्त पिनाम के एक बंगाली का पता और कसकटे  
 के दो प्ले पाये गए। सिमापुर में सबनी मुखर्जी नामक एक और विप्लवी पकड़े  
 गए। उनकी मोटबुक में रासबिहारी का पताई का पता, पताई के दो बीनियों  
 का पता बल्लभ नगर के मल्लाल राम का पता कलकत्ता हाका और कृमिस्ता  
 के कुछ पते एवं स्वाम के एक सिक्का इन्जीनियर अमरसिंह का पता पाया गया।  
 पताई में सागातसासी हुई और बिना दो बीनियों के पते सबनी बाबू की मोटबुक  
 में पाये गए थे। उनका बात बहुत-से रिवास्तार और कई हज़ार गोभिया पाई गई।  
 पहले के आयोजन में यह ठीक हुआ था कि हेनरी एस० जहाज अस्थाधि लेकर स्वाम  
 के इन्हीं इन्जीनियर अमरसिंह के पास जाता और उन अस्थों आदि का कुछ पंज  
 अमरसिंह के बिस्मै रक्त देता। टीनट (सिटीजन) कमेटी की रिपोर्ट में कहा है  
 कि अमरसिंह की चांदी भी गई है किन्तु इन्हीं अमरसिंह के साथ मैरी थंडमन में  
 भेंट हुई थी। यह सब है कि इन्हें फौसी का हुजम हुआ था किन्तु दूसरे अनेक  
 विप्लवियों के साथ इन्हें भी फौसी के बदले आज़म कालापानी हो गया था।

जो कुछ घसपूर्य जहाज भारत की घोर भावे ने सुना था कि समर्थों से एक को जब सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध के नियमों के अनुसार पकड़ लिया था और एक को मुनठे हैं प्रबेशों के लड़ाई के जहाज एच० एम० एच० कार्नवाल (H. M. S. Cornwall) ने सम्भव के निकट हुआ बिना था। तीसरे जहाज का क्या हुआ कह नहीं सकता। इसी बीच मतीन बाबू के दस के एक और बुक भी छापाई जाये, किन्तु बड़ी मुश्किल से छापाई पहुँचते ही ने पकड़ लिये गए।

इस प्रकार विप्लव योजना की तीसरी चेष्टा भी व्यर्थ हुई। युरोपियन महा-युद्ध आरम्भ होने के एक वर्ष बाद तक भी भारत के बाहर आना-जाना बंदी कठिन बात न थी किन्तु जब संघ सरकार को विप्लव योजना के सभी सम्भावित बिन्दु पर तब से भारत के बाहर आना-जाना आत्यन्त कठिन कार्य हो गया और इसी कारण असम्पूर्ण जहाज प्रवेशों की प्रसार दृष्टि से बच न सके। इसके सिवाय जर्मनों को भी पश्चिमी सीमान्त के युद्ध में इतना व्यस्त होना पड़ा कि इधर के उस प्रकार ध्यान न दे सके। भारतीय विप्लव बल भी अपने अस्तित्व का ऐसा कुछ परिचय न दे सका कि विदेशी राज-सन्तियों की दृष्टि इधर घाय-से-आए बिचती। यदि युद्ध के बहुत पहले से ही भारतीय विप्लव बल विदेशों की घोर उस प्रकार ध्यान दे सकते तो अवश्य ही घोर तराजू का फल होता।

जो लोग यह सोचते हैं कि संसार की इम्पीरियलिस्टिक (साम्राज्यवादी) वर्गमेंटों से भारतीय विप्लववादियों की सहायता पाने की आशा बिलकुल दुराशा मान की उन्हें जान लेना चाहिए कि संसार की इन साम्राज्यवादी वर्गमेंटों की बरतार घबुटा के कारण ही तीन धन तक अत्यन्त बुरी अवस्था में रहने पर भी एकदम सहाय होकर पराधीनता की जकड़ में नहीं आया अफ़ग़ानिस्तान अरिठ, तुर्की आदि देश भी इसी प्रकार विभिन्न राजसन्तियों की सहायदृष्टि और सहायता पाकर ही कमसे कम एक-एक सन्तियों की जाति के रूप में परिणत होये जाते हैं, निम्नो बोधर युद्ध के समय जर्मनी ने बोयर्स की अत्यन्त-अत्यन्त द्वारा कम सहायता नहीं की और सभी निम्नो युद्ध के कारण तुर्की की सहा तो एकदम निहाल हो गई है कमालपाशा ने तो उस समय एक प्रकार से तुर्की वर्गमेंट के विरुद्ध ही निरोध की योजना करके मित्र सन्तियों के सम्मिश्रण को भी निकम्मा कर दिया किन्तु ऐसा हो सका आसीसियों की सहायता से और फिर आज भी एकदम आसीसियों पर ही बिलकुल निर्भर न रहना पड़े इसीलिए अमेरिका के साथ प्रयोग की जान

बहान बनाने की चेष्टा बस रही है।

✓सबसे बात यह है कि दुनिया में यदि कोई माया ऊँचा करके सड़ा हो स तो उसे सहायता का प्रभाव नहीं रहता चन्द्र की शक्ति के प्रभाव से ही छा मोड़नाएँ होती हैं चन्द्र की शीनता से ही कंवासी होती है, "बाहर से दिया। वा सकता है किन्तु मैना होता है अपने गुण से।'



## 5 | बर्मा की कहानी

भारतवासियों के प्रयास से बङ्गाल में जो विप्लव की चेतना हुई उसके बहुत पहले से ही वहाँ के स्वाधीनता-प्रवासी बर्बियों ने भी बहुत बार विप्लव का धाबी बन किया था। प्रथम में भी इस प्रकार के राजनीतिक अपराधों में सम्मिलित बहुत-से बर्बों ने। युद्ध समाप्त होने के बाद ही उनमें से प्रायः सभी को छोड़ दिया गया था। तो भी संश्लेष परबर्ममेंट इन सब विप्लव चेतनाओं को धन की दृष्टि से न देखती थी। ज्ञान पड़ता है कि उसका कारण यह था कि यह सब विप्लवान्मोलन एक व्यापक जातीय जागरण का फलन था, इसीसे बैसा अनिच्छासी भी न हो सका था। किन्तु भारतीय विप्लववादियों की चेतना से बर्मा में भी अत्यन्त निबिड़ रूप से विप्लव का धायोजन हो गया था। रीमट रिपोर्ट में लिखा है—“Burma, however has not been altogether free from criminal conspiracy connected with the Indian revolutionary movement. It has been the scene of determined efforts to stir up mutiny among the military forces and to overthrow the British Government.” अर्थात् “बर्मा भी भारत के विप्लवान्मोलन से सम्बन्ध पद्यों से बना नहीं रहा। ब्रिटिश सरकार को सबाक बालने और सेनाधों में विप्लव सड़ा कर देने की कुछ चेतनाओं की यह रोनस्पती बन चुका है।” किस प्रकार के कुछ चेतनाएँ (determined efforts) हुई थीं उसका कुछ सक्षिप्त परिचय देता हूँ।

पठ तुर्की इटालियन युद्ध के समय भारतवर्ष के मुत्तलमार्गों ने एक मीडिकल मिशन, अर्थात् युद्ध में घायलों की सेवा के लिए एक दल, तुर्की भेजा था। इस दल

में फौजबादर के निकट अकबरपुर के रहनेवाले अलीमहमद सिद्दीकी नामक एक लख मुक भी थे अपने संरक्षकों को पता दिए बिना ही उन्होंने दल में प्रवेश किया था और भारत का तट छोड़ने से पहले घर के लोगों को केवल एक पत्र से पता दिया था कि वे भारतीय मधिकल मिशन में शामिल होकर तुर्की जाते हैं।

तुर्की में कार्यरत इन्हें अकबर पाशा के साथ प्रायः चार मास तक समरोगन में ही रहना पड़ा। उस समय इन्होंने अकबर पाशा के जीवन की घनेक रहस्यपूर्ण कहानियाँ सुनीं। तुर्की-इटालियन और तुर्की-ग्रीक युद्ध के समय अंग्रेजों की कूट राजनीति की महिमा का तुर्क लोगों ने सर्वांगिक अनुभव कर पाया था अंग्रेजों की कूटनीति की कहानी, तुर्की के साम्राज्यविस्तार उस वंश टर्क (तख्त तुर्क) दल की कहानी किन्तु प्रकार इस लख तुर्क दल ने तुर्की में पहले-पहल अपने को प्रकट किया, किन्तु प्रकार इस लख दल ने मृतप्राय तुर्क समाज में नवचेतना का संचार करके विप्लव पथ में चलते हुए अम्बुसहमीय के समान प्रबल दुर्गन्ध और क्रूर तुलतान को परम्पुत करके तुर्की में नवीन निबन्धन राजप्रणाली का प्रवर्तन किया। ये सब बातें दिन पर दिन, अलीमहमद अकबर पाशा के पास स्वप्नाविध की तरह एकान्त में सम्मम होकर सुनते थे। मुस्लिम-जयत् की कितनी ही मर्न कहाँ, कितनी ही बीरता की कहानियाँ, कितनी ही अनुप्योचित अमिभ्यक्ति की घटनाएँ सुन-सुनकर उनका हृदय मानो एक अननुमृत घानम् से बिल उठता मुस्लिम-जयत् के बीरजमय उन्मत्त अभिष्य का चित्र उन्हें अवीर-सा कर डालता था। तुर्की के एक सर्वप्रधान यूरोप प्रसिद्ध सेनापति और प्रसिद्ध नेता को तुर्की के नाम-परिवर्तन के प्रधान अममम्न ने जब ऐसे एक प्रसिद्ध व्यक्ति भारत के एक मयम् लख मुक के साथ निःसंकोच दिस खोलकर बातें करते होते तब एक ओर वहाँ उनकी प्रशस्त उन्मत्त जाती फूलकर स्पन्दन करने लगी, वहाँ दूसरी ओर वैसे ही वही एक मुहूर्त में उनका मन भारत की उस हीनता और हीनतापूर्व बीबन-बाबा के प्रतिदिन के अपमानों की कहानी स्मरण कर मानो अन्तर्गत में ही ओर अंग्रेज-विद्रोही हो उठता और उनकी अमभियों का रक्त नाच-नाचकर बुन-बार वेग से उन्हें विप्लववाधियों के दल में खींचकर ला रहता।

पीछे अलीमहमद बाबि कई भारतवासियों ने तुर्की का देश देखने की इच्छा प्रकट की तो तुर्की के धिन्म-धिन्म स्थानों के राजप्रतिनिधियों ने बड़ा समारोह करके राज-सम्मान के साथ उन्हें अपना शारा देश दिखवाया। इस प्रकार देश में

अमच करते समय जब नगर-नगर में तुर्क गर-भारी हथ्ठु होकर ऊँचे स्तर में बबकार बुलाकर सगका बाहर करते जब राजपथ के दोनों ओर झरोखों में से तुम्बरियों की उत्सुक दृष्टि और उनके हावों से टपके हुए फूस उनके प्राँवों पर झड़ पड़ते, तब वे भारतवासी तुर्क देश को भारतवर्ष की भवेसा भी सीपुना अधिक धपमा समझकर चाहते सगते। स्वदेश में उन्हें प्राँवों के प्रचरीक को समुक्त मिलता उसके साथ वे इन तुर्कों के व्यवहार की तुलना किए बिना न रह सकते, इस प्रकार अमीरहमद बिप्सव मग्न में दीक्षित हुए और धन्य धमेक भारतवर्षीय मुसलमानों की तरह अमीरहमद भी तबब तुर्क (बैप टर्क) बल में धामिध हो गए।

इसी तुर्की-इटासियन युद्ध के समय पंजाब के एक और युवक, धबूर्तयव रंयून से ईजिप्ट गए और फिर ईजिप्ट से तुर्की आए। इन्हीं धबूर्तयव के धबुरोव और प्रस्ताव से तबब तुर्क बल के एक सदस्य, टाक्रिब वे को सन् १९१६ में रंयून भिजा गया। रंयून के एक मुसलमान व्यवसायी अहमद मुस्ता राऊर को टाक्रिब वे तुर्की का कौम्सल नियुक्त करा गए। पिछले युद्ध के समय यह मुस्ता राऊर ही तुर्की के कौम्सल रूप में रंयून में थे।

बलकान युद्ध सगप्त हो जाने पर धपका युरोपीय युद्ध धारम्भ हो जाने के बाव अमीरहमद देश में भोट आए और कुछ दिन बर बर रहकर अपनी स्त्री के धाधुयव धादि बेचकर कुछ थोड़ा धपका के अपना व्यापार करने के लिए रंयून जाने आए। कौम्स्टैन्टिनोपल से अयमधसी नामक एक और भारतीय मुसलमान को तुर्क लोयों ने दिसम्बर सन् १९१४ में तबब तुर्क बल का प्रतिनिधि बनाकर रंयून भिजा। अयमधसी और अमीरहमद सिद्दीकी दोनों ने रंयून प्राकर परस्पर निसमे के बाद तुर्की के मैतुल में जहाँ में बिप्सव-वह्यन्न धारम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में इन्होंने स्थानीय मुसलमानों के साथ वे पत्रह हवार धपका कम्दा कया कर लिया। इस कम्दा करने के सम्बन्ध में एक बात बहो रहे बिना नहीं रह सकती, यह यह कि बंधास के सम्पन्न व्यक्ति बिप्सवधादिकों की पन के कर भी सहायता न करते थे, इसी से बंधाल में राजनीतिक डकैती का प्राधुर्भाव धनिबाव हो गया था।

एक ओर बरि वे पैव-इस्लामिक (विश्व इस्लामिक) बल के मुसलमान बिप्सव का धाबोवन करते थे, तो दूसरी ओर अमेरिका का 'अरर' पल भी निरवेष्ट व

बा। बेमबन्द दामजी नामक एक मुजराती सञ्जन किसी समय रंगून से अमेरिका गए और अमेरिका में आते ही वहाँ के यहर दम में सम्मिलित हो गए। पहले-पहल वही बेमबन्द की सहायता से केवल बर्मा में 'गदर पत्रिका' खेजी जाया करती थी बूट के समय यह पत्रिका मुजराती हिन्दी और उर्दू की भाषाओं में छापी जाती थी। यूरोप के ग़ज़ के कारण बर्मा के मुसलमान लोग भी उत्तेजित हो उठे थे और इस 'गदर' पत्रिका के प्रभाव से उत्तेजना का झोट जन्म ले रहा था। इसी समय बम्बई में बिसोबी पस्टन के एक सैनिक ने अपने अग्रज अष्टर की हत्या करवा ली जिससे इस सेनादल को फिर यूरोप न भेजकर रंगून में रोक रखा गया। रंगून के मुसलमान 'गदर' अखबार के सहारे इस सेना में बिम्बब की बातों का प्रचार करते रहे, फलतः जनवरी 1915 तक यह सेनादल सुस्तमसुस्त बिम्बब धारण करने को उत्तेजित हो गया किन्तु सयाचार का आवास-भाव मिलते ही सेनापतियों ने इस दल को फटोर बन्द दिया। वो ही बिसोबी को भारत की विन्म-विन्म जेसों में भेज दिया।

इस समय सिगापुर में वो रेजिमेंटें थीं। उनमें से एक के साथ बर्मा के मुसलमान बिम्बबी दल का जोड़-तोड़ हो गया। सिगापुर के कासिममसूर नामी एक मुजराती मुसलमान ने रंगून में अपने बूब को पत्र लिखा उसमें तुर्की के जो कौंसल रजूम में वे उनक नाम भी एक पत्र बा। उस पत्र में लिखा था सिगापुर का एक सेनादल बिगोह करके तुर्की का साथ देने को तैयार है और इस समय तुर्की का एक लड़ाकू बहादुर सिगापुर में आना आसन्न है। यह पत्र अफेजों के हाथ लग गया और सिगापुर की रेजिमेंट को दूसरी जगह भेज दिया गया।

इसी बीच अमेरिका के 'गदर' दल के लोग भी सिगापुर में आ उत्तेजित हुए। इन्होंने एक ओर वहाँ उसी सिगापुर की दूसरी सेना के बीच प्रचार धारण कर दिया वहाँ दूसरी ओर बर्मा में भी अपने आसानी भजे। सन् 1916 के धारण में ही सोहमनास पाठक और इसलामी नामक गदर दल के दो व्यक्तिओं ने बेकोक से रंगून आकर अपना केन्द्र स्थापित कर दिया। यहाँ एक बात धोर करने की है कि 'गदर' दल में मुसलमानों की भी लिया जाता था किन्तु मुसलमान बिम्बब दल में हिन्दुओं के लिए स्थान न था।

सिगापुर की सेना में प्रचार करने का फल यह हुआ कि इस बार सपमसु ही बिम्बब धारण हो गया। यद्यपि इस सिगापुर के बिम्बबाभोजन के साथ पत्र

सोहनसाह ने उस स्वाभिमानी बमावार के ऊपर जरा भी धारीरित बल का प्रयोग नहीं किया। इस प्रकार धंधेवालों के पंचे में पड़ने का भय उनके सामने कुछ सुस्पष्ट या दृष्टा होती तो वे इस प्राणतोनुप बमावार के हाथ से रिवाजधर की सहायता से सधमर में छुटकारा पा सकते थे। किन्तु न जाने मयबान् ने उनके मन को उस मड़ी किस दिव्य-लोक में भेज दिया था—वे जानते उस दिन इस संसार में एकदम ये ही नहीं।

सोहनसाह जेल में डाल दिये गए सही किन्तु जेल के किसी नियम का पालन वे न करते थे। जेल के अधिकारी जेल के परिवर्धन के लिए माते तो सारे जेली जिस प्रकार धाँसि के मुताबिक उनको सम्मान दिखलाते थे, सोहनसाह बैसा न करते। वे कहते—“मैं धंधेवालों के राजत्व को ही सब दयाव और धत्याचार मानता हूँ तब धंधेवालों की जेल के नियमों का ही क्योंकर पालन करें?” जेल सुपरिन्टेण्डेंट जबवा जेलर उनके सम्मुख माते तो वे धीरे सबकी तरह सम्मान के लिए बठकर खड़े न होते। इसीसे जब जमा के साटसाहब सोहनसाह के पकड़े जाने के ठीक बाद ही जेल का परिवर्धन करने आए, तब जेसर साहब ने धत्याम संकोच के साथ सोहनसाह से प्रसुरोध किया कि वे कम-से-कम साटसाहब को सो सम्मान दिखाएँ, किन्तु वे इस पर सहमत न हुए। किन्तु ऐसे निमीक धीरे धात्यमर्षा पर इस प्रकार सुप्रतिष्ठित होते हुए भी सोहनसाह मनुष्य के साथ मनुष्य की तरह व्यवहार करते थे। कभी किसी प्रकार की धमकता नहीं दिखाते थे। कोई उनके साथ बात करने प्राण तो वे मरतापूर्वक यथोचित सम्मान करके उनसे बात करते। कोई उनके साथ खड़ा होकर बात करे तो वे भी खड़े होकर बात करते। इसीसे साटसाहब के सोहनसाह के पास जाने से ठीक पहले जेलर सोहन के पास आकर खड़े होकर बात करने लगे। इसीलिए साटसाहब के जाने पर नए सिरे से उन्हें खड़ा नहीं होना पड़ा धीरे इन प्रकार जेलर ने अपनी धीरे साटसाहब को यथोदा की उस बार रसा की।

साटसाहब ने प्रायः दो महीने सोहनसाह के साथ बातचीत किया। साटसाहब ने सोहनसाह से कहा प्रसुरोध किया कि वे समा पाँच में साटसाहब ने कहा कि वे केवल एक बार समा की प्रार्थना कर दें बल, उनकी प्रार्थना से रसा हो जायगी। सोहनसाह ने साटसाहब को धमी प्रकार समझाकर कहा कि इस समय जो कुछ सम्पाद या डोर-कुम्प हो रहा है, तब धंधेवालों की तरह से ही हो

रहा है धंभकों ने केबल बड़े के जोर से इस देश पर दखल किया है और बड़े के जोर से ही इस देश में शासन कर रहे हैं, इसलिये समा-प्रार्थना यदि किसीको करना चाहिए तो साटसाहब को ही—सोहनलाल ने यह सब बात साटसाहब को समझ देनी चाही।

काँची होने के दिन जब सोहनलाल को काँची के तल्ले पर खड़ा किया गया तब भी एक धंभेज मैजिस्ट्रेट ने उन्हें फिर एक बार समझाया कि जब भी यदि वे केबल मुँह से समा-प्रार्थना कर लें तो एक दम उनकी प्राण-रक्ष से रक्षा हो सकती है। इन धंभेज अधिकारी ने सोहन से कहा कि उनके पास आदेश पाया है कि प्रतिम बार एक दफा फिर सोहनलाल से समा-मिला माँगने के लिए धनुरोप किया जाय। जीवन और मरण के समिन्ध-स्मल में लड़े सोहनलाल के मुँह की ओर जेल के बर्मचारी और राग्गाधिकारी भवाक होकर ठाक रहे थे। सोहनलाल बीरे-बीरे बर्मचारी और राग्गाधिकारी भवाक होकर ठाक रहे थे। धंभेज हम से समा मुस्कुराने लगे और घनायास ही बोले—“जमा माँगनी हो तो धंभेज हम से समा माँगें मैं किसलिये तुम्हारे पास समा माँगने पाऊँगा?” धंभेज राग्गाधिकारी ने फिर भी सोहनलाल से बड़ा धनुरोप किया धनेक प्रकार समझाया कि बुधा प्राण डेकर कुछ लाभ नहीं होपा। अन्त में सोहनलाल कुछ सोचकर बोले—“बेसो यदि मुझे बिलकुल छोड़ दो और यदि मैं इच्छानुसार जाता जा सकूँ, तो समा प्रार्थना करने को प्रस्तुत हूँ।” धंभेज राग्गाधिकारी ने बुन्धित होकर कहा “बैसा कोई अधिकार उनके हाथ में नहीं है।” सोहनलाल ने कहा—“तो और क्या भी कर न करो अपने कर्त्तव्य का पालन करो और मुझे भी अपना कर्त्तव्य पूरा करने दो।”

सोहनलाल को काँची हो गई।

बर्मा के मुसलमान विप्लववादियों ने फिर बकरीद के समय विप्लव का आयोजन किया। किन्तु आयोजन पूरा न होने से विप्लव का दिन पच्छीम दिसम्बर तक हटा दिया गया। बर्मा की मिलिटरी पुलिस की एक बाराक में रिवास्तर दारनामाइट धारि बहुत-सी चीजें पकड़ी गईं और उसके बाद बर्मा के सब सन्देश बगल व्यक्तियों को रिजेंस ऑफिस इडिवा ऐक्ट के अनुसार नजरबन्द कर दिया गया। उसके बाद बर्मा में कोई उपद्रव नहीं हुआ है।

विप्लवियों की सभी चेष्टाएँ बार-बार स्वर्ण हुईं उसका फल यह हुआ कि स्वदेश में भीर बिदेस में भिन्न-भिन्न राजसक्तियों की बस्की में पिछते हुए उनकी साक्षात्कारों की सीमा न रही। स्वदेश की तो बात ही नहीं बिदेस में भी वे एक देश से दूसरे देश को मारे-मारे फिरते सवे भीर स्वदेश में मारत रसा घाईन' के नीचे जरा-सा सम्बेह होते ही बल-के-बल युवकों को जेलों में या पाँखों की नजर बन्दी में डेल दिया जाता। जिनके विप्लव तनिक-सा भी प्रमाण पाया गया उन्हें अंग्रेज सरकार के हाथ कठोर दण्ड खोचना पड़ा। धनेकों ने फाँसी के तख्ते पर जीवन दिया बहुतों को कालापानी हुआ। पुलिस का उत्पात या जेल की कठोरता न सह सकने पर कई युवकों ने आत्महत्या का साधन लिया इन सब करने करने में फिरने ही तब युवकों की माताओं के दिल मिष्टरता से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। विप्लव बल प्रायः भिन्न-भिन्न हो गया। विप्लवियों के बैठा या तो जेल में डाले गए, या फाँसी के तख्ते पर चढ़े। विप्लव बल अब इस प्रकार भिन्न भिन्न होकर देश के आरों ओर बिखर गया तब प्रत्येक स्थानों पर पुलिस के साथ उनके जो सब संघर्ष हुए, विप्लव युव के इतिहास में वे स्मरणीय रहेंगे।

पंचांग के विप्लवात्म्योत्थान की बन्नीयता भीर व्यापकता अब प्रकट हो गई, तब बर्तमानेष्ट जान गई कि इस विप्लव बल की अब किसी प्रकार प्रबहेतना करने से काम न चलेगा। भारत के प्रचीन विद्व और राजनीति-विचारर नेता लोग बहुत समय से यह बात कहते आते थे कि भारत का यह विप्लव प्रयास बिभ्रुत लड़कपन है, किन्तु अंग्रेज गवर्नमेंट यह बात धन्यी तरह जान गई थी कि इन विप्लवियों

को यदि कुछ दिन भी निविष्ण रूप से अपने समीप के अनुसार काम करने का अवसर और सुयोग मिल जाय तो भारत की अवस्था में सम्भव एक समूहपूर्ण परिवर्तन हो जायगा। भारतीय विप्लववादियों के लिए क्या-कुछ कर इतना सम्भव है, इसकी घोषण गवर्नमेंट जैसी कल्पना करती थी, भारत के राजनीतिक नेताओं ने वही कल्पना करी नहीं की। प्रष्टमान जाने से पहले कुछ ठीके प्रेरेण प्रतिकारियों के साथ मेरी इस विषय में दैनिक बार बातचीत हुआ करती थी। इनकी बातचीत से मैं समझ पाया था कि गवर्नमेंट भारत के भिन्न भिन्न धार्मिक समूहों में से एकमात्र विप्लववादी को चिन्ता करने लायक मिनती थी इसीसे इस गवर्नमेंट में जो कुछ बहर का इन्ही विप्लववादियों पर उसका प्रयोग किया गया। इसीसे पंजाब के विप्लव धार्मिक का पता लगते ही भारत सरकार ने भारत के मजदूरों के लिए भारत रत्न प्रार्थना के समान धारण कठोर शासन-प्रणाली जारी कर दी।

✓ इतिहास में जो विरकास से होता थाता है भारत की बारी में भी उससे चला नहीं हुआ। जब कोई पराधीन जाति आने लगती है तब तब आपराध को व्यर्थ करने के लिए ऐसी ही कठोर शासन नीति जारी की जाती है। विन्तु जाति जब सम्भव जाय उठती है तब संसार की कोई भी कठोर नीति उस आपराध को व्यर्थ नहीं कर सकती बल्कि इस तरह की कठोर दमन-नीति के द्वारा जाति की केवल शक्ति-वरीक्षा होती है। जाति में यदि सम्भव प्राणों की कुछ शक्ति हो तो यह सब कठोरता आपाति की स्फाट न होकर सहायक हो जाती है। इसीसे जाय राय के दिन राजकोष को वास्तव में कोष न समझकर भगवान् का अनुग्रह समझना उचित है। भारत के विप्लववादियों ने भी सम्भव करी भी इस दमन-नीति के लिए संघर्षों को बोधो नहीं ठहराया प्रत्युत वे तो यह सोचते थे कि इन सब कठोरताओं में से पुनरुत्थान भवमान् हमें जाति को पुनरुज्जीवित करने के लिए प्रार्थना करते हैं। वे जानते थे कि पराधीन जाति का स्वाधीनता प्रयास इन सब कठोरताओं में से पुनरुत्थान ही शायक होता है। सभी दमन-नीति मानो एक प्रकार के मील के पत्थर (Milestone) हैं। कौन पराधीन जाति स्वाधीनता प्राप्ति के पथ में कितनी दूरी है यह सब दमन-नीति ही मानो उसका परिचय देती है, भारतीय विप्लववादी वही विस्वास करते थे। इसी विस्वास के कारण वे सब कुछ-तात्कालिक प्रयत्न-बल से वह सब प्राणों के बलिदान से ही जाति में प्राणों का संसार होता



है, इसी विषय पर वे प्राणों की बलि देने से भी चबराते न थे।

बिर्सेस धौक इन्डिया ऐक्ट जारी होने के बाद है समरी टाटास (संक्षिप्त पुरस्के) धारम्भ हो गए। जारी-जारी से पंजाब में तीन पर्यन्त केत चले। प्रत्येक मामले में साठ-सत्तर प्राणों थे। इन सब मुकदमों के फलस्वरूप पंजाब में एक साथ सट्टाईस व्यक्तियों को फाँसी हुई। मेरठ पलटन में ग्यारह व्यक्तियों को फाँसी हुई। साठवीं राजपुत सेना में से कई व्यक्तियों को सम्भवतः दिल्ली में फाँसी हुई, जिन्हें फाँसी न हुई उन्हें राम लखी को कानापानी हुआ। ऐसी व्यवस्था के बाद भी पंजाब के बने हुए विप्लवियों के बीच फिर विप्लव की योजना चलने लगी। कुछ मकाली बल इन सब ऊँची विप्लवियों को जेल से हड़ाने के इरादे बाँटने लगे। ठिगनों के एक और दल ने घर-घर की घोर ध्यान दिया। उन दिनों बड़े-बड़े रेलवे-स्टेशनों पर और बड़े-बड़े पुलों के नीचे हुजिारबन्ध सिपाहियों का पहरा रहता था। एक बार विप्लवियों के एक छोटे-से दल ने जान पड़ता है, केवल साठ-आठ व्यक्तियों ने मिलकर समूह के पुल के सिपाहियों पर एक-एक हमला कर दिया। वहाँ बंदूक सिपाही पंद्रह मैनचीन राइफलें और शस्त्र साठ से पचास कारतूस थे। साठ-आठ विस्तारवादी विप्लवी साठ ही पचास कारतूस बमेल पंद्रह-बी-पंद्रह राइफल छीन ले गए। किन्तु उस समय बल की कुछ अच्छी विधि-व्यवस्था न होने से बोर्डे दिनों में ही बन्धुकों समेत पाँच विप्लवी मरने गए। इन पाँचों को फाँसी हुई। इसके पहले ही सट्टाईस व्यक्तियों को फाँसी हो चुकी थी। इन्हें फाँसी होने के बाद भी फिर से कुछ शिक्षा स्कूल-मास्टर्स ने मिलकर विप्लव की चारा की समुच्च रहने की कैला की सम्भवतः इसका सिलसिला धाब भी चलता होगा। डा० मधुरासिंह धारि कई विप्लवी भारत स्वाभने के बाद अफ़ग़ानिस्तान में से होकर भारत में और मेसोपोटामिया की भारतीय सेनाओं में विप्लव की बातों का प्रचार करते रहे। एक बार बटमा-कम से डा० मधुरासिंह भारत-अफ़ग़ानिस्तान के सीमांत प्रदेश में पकड़े गए। उन्हें भी फाँसी हुई। जो इस प्रकार फाँसी और कानापानी से बच पाए उनमें से अनेकों को इण्डर्नमेंट (नजरबन्दी) मोकमी पड़ी। जब मुग़ में बंशत और पंजाब की बितनी इण्डर्नमेंट और किसी ब्रान्त में नहीं हुई, और कानापानी और फाँसी उस बार पंजाब में ही और सब प्राणों की अनेका पषिक हुई।

उक्त प्रदेश में भी बलारस पर्यन्त मामले के बाद मैनपुरी की केन्द्र बकाफ़र प्रायः एक बरस-अर में ही फिर एक बड़ा विप्लव दल उठ खड़ा हुआ। इस विप्लव

रत की बात भी प्रायः दो-एक बरस के बीच ही प्रकाशित हो गई। इस प्रसंग में एक बात कह देना चाहता हूँ। इस में प्रायः कोई भी बिप्लबी दो मास से अधिक समय तक प्रकाशित रूप से काम न कर पाते थे। दो महीने के अन्दर ही या तो वे राज्य से दूर या बाहे में या उन्हें देश छोड़कर विदेश का माधव सेना पड़ता था। भारतवर्ष में अब तक प्रायः देखा गया है कि यहाँ बिप्लवियों का कामकाज और उनका परिचय दो बरस से अधिक समय मुप्त नहीं रह पाता।

बंगाल में उस समय फौजी और कासापानी की अपेक्षा गजराम्दी ही अधिक हुई। इन गजराम्दियों के कारण बंगाल का बिप्लव दल बहुत-कुछ टूट गया। तब यह बिप्लव दल भिन्न भिन्न भागों में बँटकर देश में बिखर गया। उस समय यदि बिप्लवियों के हाथ में उपयुक्त परिमाण में अस्त्र-यस्त्र रहते तो वे सरकार का राज्य बसाना असम्भव कर बात सकते थे।

उस समय तक रासबिहारी काशी में ही थे। एक दिन केन्द्र से संवाद आया कि बंगाल के प्रसिद्ध बिप्लवनेता श्रीमत् यतीन्द्रनाथ भूषोषाभ्याय को अज्ञातवास में रखा गया, और उन्होंने काशी में घाबर रहने की इच्छा प्रकट की है। हमने परामर्श करके देखा कि उन्हें काशी में बैचटके रखना कुछ ऐसी कठिन बात नहीं है किन्तु हमने यह भी देखा कि काशी के बाहर उनके दल की भूल-भूक के कारण काशी पर भी बिपत्ति आ सकती है। जिस दल की प्रत्येक विधि-व्यवस्था अपने नियन्त्रण के अधीन हो उसकी भूल-भूक के लिए दायित्व लिया जा सकता है, और उस व्यवस्था में भूल-भूक पकड़ना और उसका संशोधन करना भी अपनी ठाकुर में होता है। किन्तु जिस दल की विधि-व्यवस्था के ऊपर अपना कोई हाथ नहीं उसकी भूल-भूक पकड़ने का सुयोग कहाँ होता है? यह सब या कि बंगाल के बहुत-से सुदृढ़ दल यतीन्द्र बाबू के नेतृत्व के अधीन सम्मिलित हो गए थे, किन्तु वे पूर्व बंगाल की अनुदीप्त समिति के साथ अथवा अन्तर्गत के बिप्लवियों के अर्थात् रासबिहारी के साथ सम्मिलित हुए थे, और न होने की कोई चेष्टा ही करते थे, आपन जाने हैं पहले रासबिहारी ने उनके साथ भेंट करने की बहुत चेष्टा की किन्तु जिस किसी कारण से ही भेंट न हो सकी। और, जो भी हो जब यतीन्द्र बाबू के काशी आने की बात जनी तब हमने सब तरफ देखा मासकर उन्हें काशी में रखने का मार सेवा स्वीकार कर लिया किन्तु क्या जाने क्यों उन्होंने खुद ही काशी न आना ही ठग किया।

उस समय भी यतीन बाबू कमकता छोड़कर गए नहीं। एक दिन वे अपने पाबुरिबाबाद वाले एक मकान पर घाये हुए थे। वहाँ धीरे भी कई प्रकार विप्लवी थे। उस समय उसी घर में बटनाक्रम से बोले दिनों का परिचित एक भादमी था उपस्थित हुआ। इस भादमी पर वे मुप्यपर होम का सम्बन्ध करते थे, इसीसे यती प्रकार भाये-वीले बेक भाल करमे से पहुँचे ही विप्लविया में से एक ने इस बोले दिन के परिचित भादमी को देखते ही गोमी शाय थी। मुपिवा होती तो यतीन बाबू को यवर्नमेंट निरक्षय से फकड़ लेती। यतीन बाबू को बचाने की जातिर ही सम्पकत इस बुधक ने इस प्रकार गोली बाध थी थी। यह बात सच है कि यतीन बाबू ने गोली नहीं मारी, किन्तु इस व्यक्ति के बाह्य-डिक्लेरेशन (अरते समय के इन्हार) में यतीन बाबू के नाम पर ही गोली मारने का धमिबोध मया दिया। इस प्रकार यतीन बाबू के नाम पर फाँसी का परबामा बिबा मया। जब उस व्यक्ति को गोली ही मारनी थी तब फिर बाह्य-डिक्लेरेशन देने का सुबोध यों दिया मया यह कह नहीं सकता।

साधार यतीनबाबू को दूसरी बनह जाता पड़ा। यतीन बाबू के लिए एक निरापय स्वाग ठीक हुआ। वहाँ जाने का समय थाया तो यतीनबाबू अपने जाभियों से कह उठे, "जब तक मैं नली-जाँति न जान लूँ कि तुमने धीरे सबके लिए भी ऐसे ही निरापय स्वाग ठीक कर रक है, जैसा मेरे लिए दिया है, तब तक मैं तुम्हारा यह बन्दोबस्त मान नहीं सकूँगा हम सब बरखास्त किने हुए सिपाही हैं हर बड़ी मृत्यु का भादेस सुनने की प्रतीक्षा में हैं इसीलिए सबी एक संय रूना चाहते हैं जिससे एक प्रभावशाली मुठनेड़ (affective struggle) की जा सके which will create a moral impression जिससे जनता पर एक नैतिक प्रभाव हो सके।

घात में उनकी इच्छामुसार ही व्यवस्था हो गई, जिससे वे सोय पाँच व्यक्ति बालेखर के निकट एक घड़ा बनाकर रखे मने। इधर विप्लवाभ्योलन की बान नहीं हुमा। दूर बालेखर में रहते हुए भी यतीनबाबू विप्लव कार्य की परिचालना करते थे। यदि विप्लवी सोय भायकर फिर से विप्लव के कार्य में ध्यान न देकर निरपेष्ट होकर केवल अपने की मृप्य रखने का ही कबाल करते तो नामून होता है, कोई भी विप्लवी बकड़ा न जाता। विप्लवी सोय अपने की मृप्य रखकर की बरखर विप्लव कार्य में लिप्य रहते थे इसी कारण वे बार-बार निपति में पड़ते

ये। किन्तु केवल श्राव्य श्रवणा ही तो विप्लवियों का उद्देश्य न था। जीवन यदि देश के काम में न लगा तो जीवन समा रहने से क्या बनेगा यही भी विप्लवियों की चारणा। तब पर पूर्व परिच्छेद में उल्लिखित उसी बंदोब के पकीस ने जब विप्लवायोजन के सब सम्भाव्य सरकार के पास खोल दिये तब उसी विससिमे में कमकला में धीरे कुछ धर-पकड़ हुई। इसी सूत्र से फिर यतीन्द्रनाथ के घड़े का सम्वाद भी पुमिस को मिल गया। यतीन्द्रनाथ को भी पता लग गया कि पुमिस को उनका सुप्रास मिल गया। वे चाहते तो उसी समय भाग सकते थे, पर पुष्प प्राची के डर से यतीन्द्रनाथ भागना न चाहते थे। उद्देश्य सिद्धि के लिए यदि उन्हें दूसरी जगह जाना होता तब भी वे अपने साथियों को छोड़कर भागने की पड़ी न थे। अपने साथियों के जीवन और अपने जीवन में कोई भेद न देखते थे। इसीसे तब हुआ कि सभी एक संग ही जाएँ किन्तु उनके साथियों में से दो उस समय बाह्य भीत दूर गये जंगल में थे। उनका किसी प्रकार भी छोड़कर जाना नहीं हो सकता। यतीन्द्रनाथ अपने दूसरे संगियों को ले सँघेरी रात में पहाड़ी रास्ते से जंगल के बीचोंबीच अपने साथियों को जाने के लिए चल पड़े। अपरिचित रास्ते पर बाह्य भीत रास्ता तब करके फिर बाह्य भीत वापस आकर दूसरी जगह जाना प्रसंग था। तब भी यतीन्द्रनाथ का हृदय इसे प्रसन्न कहकर रुक नहीं सकता था। प्रसाध्य साधन ही उनके जीवन का बत था—उस दिन भी उस प्रसाध्य साधन में ही वे प्रसन्न हुए। लौटते हुए रात भीत गई। उस समय जंगल के छाव-छाव पार्श्व के पक्षों में नदी के किनारे-किनारे चौकिरी बँठ गई थी किन्तु इसना प्रयोजन होने पर भी वे बस्ती में घुसकर बालेश्वर की ओर भाग बसे। उनके साथ विससिय मनीरजन, गीरेन्द्र और व्योतिष ने बार सुबक थे। इस समय सबेरा हो गया था यौन के लोगों को पुमिस ने समझा दिया था कि एक सर्वकर उर्ध्वों का इस उनके हस्ताके में लिपा हुआ है, उन्हें पकड़ने प्रयत्न बकड़ा देने पर बड़ेष्ठ पुरस्कार दिया जायगा। पिछले दो दिन यतीन्द्रनाथ को सामाया सोला कुछ नहीं हुआ। दिन होपहर की धूप में उन्हें फिर भी घाम, नदी, नामे पार करके चलना पड़ रहा था। राह में एक नदी पार होते समय सामी से कहा कि सारा दिन उन्हें कुछ सामे को नहीं मिला, बोझ-सा भाव रीब दे तो उनके प्राण बर्ब किन्तु हिन्दू माझी अपने जम्म-जम्मानाओं के संस्कारों की रस्ता में ही व्यस्त रहा बाह्य की प्राव-रजा हो या न हो, बाह्य को मोहन करा के यह नरक जाने को

प्रस्तुत न था, वह बीच बाँटि का होकर बाह्यलों को किसी प्रकार बात राँवकर न दे सकता था। इसी कारण बात राँवने की हद्दी थी न दे सकता था। अगर पुलिस को भी सम्मान मिला गया कि यतीन्द्रनाथ अमुक गैर में से मुजर रहे हैं। यतीन्द्रनाथ के पीछे-पीछे सशस्त्र पुलिस बल बूट पड़ा। इस प्रदेश में यदि विपक्षियों का मार्गनिरोधन (संयन्त्रण) रखा होता तो उस विपक्ष में भी वे रक्षा पा सकते थे। किन्तु मार्गनिरोधन न रहने से उन्हें कमरा एक गैर से दूसरे गैर धामना पड़ा। इस प्रकार सम्मान के बाव बालेस्वर के निकट एक जंवल में घा उपस्थित हुए। उस समय जिले के मैजिस्ट्रेट और जिले के सुपरिण्टेण्डेण्ट चार्ज ड (सबल) पुलिस सर्चमाइट (search light) इलाहि खण्डबुड (akimish) का सब सरंजाम लंप लेकर यतीन्द्रनाथ के पीछे बीड़ते पाते थे। यतीन्द्रनाथ बल सहित घाने-घाने का रहे थे और पीछे पुलिस बल दो घावों में बैठकर जंवल के दोनों बाजू पर सर्चमाइट छोड़ते हुए कमरा एक-दूसरे के नजदीक होते हुए यतीन्द्रनाथ का पीछा कर रहा था। इस प्रकार जंवल में से जिसक वाला यतीन्द्रनाथ के लिए सम्भव न रहा। और भी हो गया। सब और निस्तार नहीं—पुलिस बहुत ही निकट थी। उस समय यतीन्द्रनाथ के साथियों ने सजस मेवों से प्रार्थना की—वे मरते हैं तो मरें यतीन्द्रनाथ कपटवेष से दूसरी जगह निकल जायें। किन्तु यतीन्द्रनाथ ने वह प्रस्ताव नहीं माना। वे बोले—“प्यारे माई, ऐसी विचार करो, हम सब पिता-माता की स्नेहमयी मोल स्त्री-पुत्रों का यादा-बन्दन बन्धु-भान्ज्यों का प्यार-कुमार और बर की मुक्त-शान्ति छोड़कर भागे हैं, एक सब काम करेंगे वही कहकर न? अब इस विपक्ष के समय वह सब क्योंकर छोड़ें? मनुष्य तो घमर नहीं है। एक-न एक दिन उसे मरना ही होगा। तब काबलों की तरह मरने से लाभ क्या।”

मुक्त करना ही सब पाया। एक और प्रायः हजार से अधिक मोबनामि, डाक पकड़े जा रहे हैं वह समझकर, हजिराखण्ड पुलिस सेना का साथ दे रहे हैं—दूसरी घोर है केवल पाँच विपक्षी। वे फिर जंवल छोड़कर बीच में घा बूटे। सब प्रमिता और राह की मेहनत से वे सभी हारे-बके थे। एक पीछे का घमा घबेना खरीदकर आ सेने का भी साथ न था। इसमें वे दोनों दलों में एक-दूसरे को देख मिया दोनों घोर से मोभी जमी। पुलिस की घोर के एक साइब विपक्षियों की घोर उस सबिक भागे बड़े उठी समय विपक्षियों की एक मोभी से

उनकी टोपी घासमान में उड़ गई। पुलिस के साहस फिर घागे न बढ़। बिम्बरी तोम ऊँची-नीची जमीन पर सेटकर मिथाना बाँधकर गोमो छोड़ने लगे। पुलिस की धीर से भी घाउ-ग्रवाह गोमियाँ बरसने लगीं। इस प्रकार प्रथम घात्रुओं के मुकाबले में बड़े-जदि, छोटे-म्यासे पाँच घासमी बच सक मुद्ध कर पाते ? बिम्ब बवों की गोमियाँ भी खतम होमे को धाई। वे सभी बायस हो गए थे। किन्तु बायस होने पर भी उन्होंने हथियार नहीं रखे। इतने में एक घातक गोमी घाकर चित्तप्रिय को घमर-घाम ले गई, और सब भी उस समय बुरी तरह बायस थे। यतीन्द्रनाथ उस समय साबियों से बोले 'घब घीर शक्ति शय करने से कुछ साम न होगा। चित्तप्रिय गया मैं भी बर्बूगा नहीं तुम घब बूबा प्राण्यन को घायक तुम फिर बिम्ब में कुछ काम कर सको' किन्तु छापी मोग सड़कर घाम देना चाहते थे पर यतीन्द्रनाथ उनके प्राण बचाया चाहते थे। घम में उन्होंने यतीन्द्रनाथ के घासहृष्यं यतुघोष से घातकसमर्पण कर दिया। बहुत खून गिरने से यतीन्द्रनाथ का घरीर घमलन होकर गिर पड़ा घास से उनका घसा धूख गया था। डूबती घाबाब में उन्होंने कहा 'पानी! बासक मनोरंजन के घरीर से उस बस्त रस्त-घाउ बह रही थी। किन्तु नेठा की इस घमिम घाफासा को पूर्ण करने के लिए वह उस समय भी पास के बसाउय से बाहर भिगीकर पानी सामे के लिए बल पड़ा। इस दृश्य से पुलिस के साहस भी शिथिल गए। वे मनोरंजन से बैठने को कहकर कोई बर्तन न होने से घपनी टोपी में ही बल घरकर मरते घाबमी के मुँह में डालने लगे। लगे में पानी पहुँचने पर यतीन्द्रनाथ के मुँह से बास निकसी उस समय स्निग्ध मधुर हँसी हँसकर वे साहस से बोले, "इस मामले में मैं ही घकेला उत्तरदायी हूँ हम मेरे साबियों ने घेरे घादेष का ही पालन किया है।" यतीन्द्रनाथ ने कटक के घस्पताल में घाम-स्वाक किया। मनोरंजन घीर नीरेम को फोटी हुई। ज्योतिष को घाजम कामेपानी की सजा मिली। यही ज्योतिषघम बच गए थे, इतीसे उनके घास से यह सब संवाह पाकर घाम हम देसबाधियों को दे सके हैं। घममन बेल में गाना कम निर्मात्यों को सह म सकने से ज्योतिषघम बहीं घामस हो गए थे। घाजकस मुता है वे बहधमपुर के घायलघाने में रहते हैं।<sup>1</sup>

1. बीजे कलफर्द में कहा था कि ज्योतिषघमनाथ बहरमपुर के घमलमने से कर्मघाती हो गए।

मृत्यु की ओर में बैठ हुए, कटक के फाँसी-घर के छोटे कोने से मनोरंजन और मोरेण ने जो प्रतिष्ठित चिट्ठी कमकसे भेजी थी उस घटीठ की स्फुल्लता कहानी प्रकाशित करते हुए छापी में कैसे-कैसे स्फुल्लता अनुभव होते हैं ! उन्होंने लिखा था—

चित्तप्रिय और बाबा (भैया) बने गए हम भी जाते हैं । पाया है पाप तोप पहले की तरह काम बसाएँगे । भयवान् बाप लोगों को सफलता दान करेंगे । बाबा हमारे जीवन की निजवाहकनी है । धनविद्या । धनविद्या ! जो बने गए उन्हें लौटा माने का कोई उपाय नहीं । किन्तु म्योसिए की मुक्ति के लिए क्या करना चाहिए, वह उनके स्वदेशवासी ही निश्चय कर सकेंगे ।”

इस चिट्ठी के प्रसंग से एक और चिट्ठी की बात बाद में आई । जीवनमार्गदर्शनी होते हुए भी उन्होंने कर्तव्य की छातिर देश के यवन के लिए सफल विप्लव का मार्ग पकड़ा था । 'निदेश' के खून के घण्टाघ में वे भी बर फाँसी की कोठरी में ऊँच से सब उन्होंने भी जीवन-मरण के बेसे ही सन्निवस्य से अपने विप्लव के छात्रियों के पास जो पत्र भेजा था उसका सार कुछ ऐसा था, “माई, मरने से डरे नहीं और जीवन की भी कोई साध नहीं है भयवान् जब जहाँ बीसी व्यवस्था में रहेंगे, बीसी ही व्यवस्था में समुष्ट रहेंगे ।” इन दो युवकों में से एक का नाम था मोदीचन्द्र और दूसरे का नाम था माधिकचन्द्र या बसचन्द्र ।

इन सब विप्लवियों के मर के तार ऐसे अँधे सुर में बँधे थे जो बाबा साधु और फ़कीरों के बीच ही पाया जाता है । इन सब विप्लवियों के जो प्रतिपक्षी थे वे धर्म भी धर्म के तार बिना छोड़कर इनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके । उन समाने के धुड़िया विभाग के सर्वोच्च बाबाकस कमकता के प्रभित-कमिशनर मि० टेनार्ट ने सुनते हैं परलोक वर प्रतिष्ठित बैरिस्टर मि० वे० एन० राय को वलीखनाथ के सम्बन्ध में कहा था “Though I had to do my duties I have great admiration for him. He was the only Bengali who died in an open fight from a trench. (वद्यपि मुझे अपना कर्तव्य पालना पड़ा पर मेरे दिल में उसके लिए बड़ा आदर है । वह एकमात्र बंगाली था

1. निदेश के मरुत का मर सन् 1913 में हुआ था । टीनर कमेटी को रिपोर्ट के निवार बहीन्य मरुत (मरुत के मरुत) में कलकत्ता कमेटी है ।

को एक सुनी लड़ाई में सख्त से लड़ता हुआ मारा गया)।" किन्तु टगार्ट साहब ने जिस समय यह बात कही थी उसके बाद घोर भी अनेक बंगाली ऐसी ही सुनी लड़ाई में काम आए, उनका भी बोझ-सा परिचय पाठकों को देता हूँ।

9 सितम्बर सन् 1915 को यतीनबाबू घोर उनके साथियों ने सुनी लड़ाई में प्राय दिए। किन्तु उसके बाद भी प्राय 1918 तक विप्लवियों के प्रस्थित का परिचय विशेष रूप से मिलता रहा। सन् 1916 के अन्तिम भाग में सुप्रिया विभाग के डिप्टी सुपरिन्टेण्डेंट बसन्तकुमार बट्टोपाध्याय पर, जो इससे पहले दो बार भारभयंकर तरीकों से बच गए थे तीसरी बार विप्लवियों ने हाथ छाड़ दिया। सन् 1917 में गोहाटी में विप्लवियों के साथ पुलिस का पट-मुड़ (skirmish) हुआ और सन् 1918 में बाका में फिर पुलिस के साथ विप्लवियों का संघर्ष हुआ जिसमें विप्लवियों के दो व्यक्ति मरे। पाबना में भी एक छोटी-मोटी मुठभेड़ हुई, इस सबके फलस्वरूप खून बहती तो जारी ही थी। इन सब संघर्ष मुठभेड़ों का बोझ-बहुत परिचय यहाँ है। सम्भवतः सन् 1916 में विप्लव दल की ओर से बिहार में विप्लववाद का प्रचार करने को बीरभूम के नलिनी बाकशि भागलपुर के कालेश में पहुंचे भेजे गए। कुछ ही दिन में इस बंगाली पर पुलिस की नजर पड़ गई। नलिनी पकड़ा छोड़कर फरार हो गए। नलिनी छात्रवृत्ति पानेवाले अच्छे विद्यार्थी थे, पर छात्रवृत्ति के संभ्रत में कौन पड़? नलिनी एकदम आसिब बिहारी बनकर बिहार के पहर-पहर में घूमने लगे। कुछ दिन बाद फिर पुलिस की नजर में पड़े। नलिनी बंगाल आए तब था सन् 1917 बंगाल का उस समय बुरा हाल और टेढ़े दिन थे—चारों ओर भी घर-घर का नाम लमाही, इन्टरनेट (नजरबंदी) डिपोजिशन (विधिवानुस) और गोसियों की बोझार! इसीसे बंगाल में रहना तब बेचटके न था। विप्लव दल में तब यह फैसला हुआ कि दल के अच्छे-अच्छे कार्यकर्त्ताओं को आसाम के किसी अच्छे स्थान में रिजर्व फोर्स (सुरक्षित सेना) के रूप में रखा जाए। फलतः नलिनी बाकशि नलिनी बोप नरेन बंगाली और अन्य अनेक लोगों ने गोहाटी (आसाम) में आकर आश्रय लिया। सोते समय उनके बिछोने के लगे मरी रिवास्तूर रहती थीर उम्मी में से एक-एक आदमी दो-दो पटि के लिए पहरेदार के रूप में लिङ्गी के नबरीक छात्रवृत्ति से बैठ रहता। कलकत्ते की पुलिस ने किसी विरफ्तार विप्लववादी के पास से गोहाटी का संवाद पाकर, 9 जनवरी सन् 1917 को यह मकान घर



लिया। पहरेदार ने पुलिस को बाते बेख सबको जमा दिया, पर चुपचाप ही। रिवास्वर धीरे-विस्तीर्ण हाथ में लेकर सभी बाहर आकर पुलिस पर पोमियाँ दागने लगे। इस एकाएक आक्रमण से पुलिस क्षिप्त-भ्रम हो गई, धीरे-धीरे बीच-बिचती भी पहाड़ की ओर खिसक गए, किन्तु तीसरे चर भगवन्त लक्ष्मण पुलिस ने आकर सारी पहाड़ी के आस-पास बेरा बांध दिया। दोनों ओर से मोर्चा बनी। बहुत-से आग्रह होकर बकड़े गए। इनमें से केवल दो जन पुलिस को बांध बचाकर भाग सके। इन दो में से एक यही नमिनी थे। स. दिन रास्ता बमकर पहाड़ पार होकर नमिनी सामर्थ्य स्टेसन पर आ पहुँचे। वह माया क्या सीधी बात थी? बहर साये धीरे-साये प्रतिदिन चढ़ाई-उतराई पर मोड़ें तोड़ने पड़े थे। सदा पुलिस की नजर से अपने को बचाते हुए, कभी बूम पर चढ़कर, कभी पहाड़ की चोटी पर—किसी चट्टान पर सोकर रात कटती था। बराबर तेज आत से पहाड़ की चढ़ाई-उतराई में चलते-चलते हाथ-पैर की लमिर्नों में बरारें पड़ गईं। छिर क्या केवल चलने का ही कष्ट था? पहाड़ की एक किस्म की चिपचिपी बिचड़ी नमिनी के माये धीरे-पीठ में चिपट गई, अनेक तरह से खींचने-झुटाने से भी वह नहीं छूटी। इस बिचड़ी का विष बढ़ जाने की पीड़ा से बर्बरित होकर नमिनी एकदम बेहाल हो गए। अस्तु भीत के आस-पास लड़ाई लड़कर आसाम की पुलिस के हाथ से बचकर नमिनी बिहार आए किन्तु वहाँ रहना निषिद्ध न था। वह रेल के छिर बंयाल बने आए। हाथड़ा स्टेसन पर उतरकर बिनके मिलने की आशा की भी उनमें से किसी को न देख पाया। संय में एक रिवास्वर था। कहाँ जाएँ? पल्लवाड़े के अधिक हो चुका था जब से न आता न सोना न कोई धीरे-मिबम रह्य था धीरे-दुद चुका था सहरीला कीड़ा सब भी माये धीरे-देह के चिपटा हुआ था हाथड़ा में ही नमिनी को तेज बुधार हो गया। माचार कोई अपाव न देखकर वे किमी के मंजान के एक पेड़ के नीचे लौ गए। धुँ के तरह दिन रात यहीं पड़े रहे। परसे दिन बैकवोय से उनके एक परिचित विपसी ने उन्हें देख लिया। उनके सब संयों में उस समय केवल के बिल दिखाने दिए। कमकसे में बिपसीबियों की अग्रता उस समय अत्यन्त शोचनीय थी भाव सभी बिपसीबियों के आ चुके थे। टका-पैसा सब किसी के हाथ में न था दो-चार बम को बाकी के के भी सब दीन आशा के साथ इपर-उपर धूमते छिरते थे। कलकसे की एक छोटी सी कोठरी में उन्हें रखा गया। केवल से उनकी मोर्छे धीरे-मुँह उठ गए बिपसी

मनस हो गई थी। तीन दिन तक बात करना भी मग्न रहा। इस प्रकार पैसा पाम न होने से बिकिस्ता कराए बिना दिन काटते रहे। इस मकान में उस समय केबल एक और बिम्बववादी अपने-आपको छिपाये हुए थे। मृत देह की पथोषित बिया करने को भी सोन कँसे छुट्टे, यह समझ में आता था। सन् 1918 में बिम्बबियों को बचसा ऐसी ही घोषणीय हो गई थी। किन्तु नलिनी इस केबल से भी मरे नहीं। मृत्यु और भी महनीय रूप में दिखाई देने के लिए उस समय तक डाका में प्रतीक्षा कर रही थी। बचे होकर नलिनी बुझते बिम्बव दीप का भार लेकर फिर डाका में आ रहे। नलिनी और ठारिपी मजूमदार एक ही मकान में रहते थे। सन् 1918 की 15 जून को मोर के समय पुलिस ने फिर नलिनी का मकान घेर लिया। फिर दोनों मोर से गोली चली। ठारिपी के धर्मों में बहुत गोसियाँ भपने से बने वहीं मरकर गिर पड़े। नलिनी ने गोली खाकर भी भागने की चेष्टा की परन्तु ठिठ बन्दूक की गोली से घायल होकर उनका शरीर भी जमीन पर सोटने लगा।

बिम्बववादी नलिनी बाबल प्रवस्था में अस्पताल में सेटाये हुए हैं—पुलिस नाम-बाम मेने में व्यय है—बाइंग-बिक्सेरेलान—मरते समय का इन्हार मांगती है।

मृत्यु-सम्पा पर भेदे हुए घायल बिम्बववादी असह्य मग्नबा सहते हुए मृत्यु की प्रतीक्षा में हैं। ऐसे समय साधारण व्यक्ति अपने को छिरा नहीं सकता बरन् इच्छा होती है कि उसके कार्यों को देखवासी भसी माँति जान जाएँ। जिनके लिए वह मरता है वे जान जाएँ कि किस प्रकार वह बूझों के लिए प्राप्त वे मवा साधारण मनुष्य की यही इच्छा होती है। किन्तु बिम्बववादियों की अपने को छिपाने की क्षमता साधारण नहीं होती। छिप्ता और साधना के बिना आत्मगोपन का बेसा सामर्थ्य आता ही नहीं। मृत्यु के समय भी इच्छा नहीं है, कोई उन्हें जान जाए, या कोई उनका 'मूल्य' समझ ले—कोई मैतेज (सन्नेस) नहीं है—'Unaccepted, unhonoured martyr' ही वह जाना चाहता है। वह नहीं चाहता

1. इस प्रत्य में अस्तुहयोग के दिन की रात या राती है जब प्रत्येक छोटे-बड़े नेता और दिन की इशतान होने पर भी कर्मका जन्मे 'मैतेज' मनुष्यों में दिक्ता अपना बरबा कर्मण समझने के।

कोई उस पर धातु बहावे कोई उसका नाम याद करे, कोई भी उसका पीठ याए !—इसीलिए मृत्यु-शय्या पर पड़े विप्लववादी के लीज कप्ट से उत्तर निकला 'Don't disturb please let me die peacefully' "तंग न करो माई मुझे शांति से मरने दो।

पुलिस ने बनेक प्रकार से बात निकालने की चेष्टा की—कहा नाम तो बताओ—वर कहाँ है ? किन्तु उसका वह एक ही उत्तर था 'don't disturb please, let me die peacefully'—रूपा कर धीर तंग न करो माई शांति से मरने दो।

इस प्रकार जो मृत्यु को महिमाय बना सकते थे इस प्रकार जिन्होंने घातक योजन करना सीखा था उनकी कहानी पर बेचबासियों ने क्या कबी छीर करके देखा है ? वे शीघ्र जीवन की सब प्राप्ति-प्रतीक्षा व्यर्थ रखकर संसार से एकदम निश्चिन्त हो गए हैं। प्रतिष्ठा की रत्ती भर भी कामना उन्होंने नहीं रखी। मृत्यु के दरवाजे पर पहुँचकर, जहाँ कोई बात पूल जाने का डर नहीं वहाँ भी ब्यापि का निषेध करके वे शांति से मरते हैं। वे अपने कम से बहि किसी को दूख करना चाहते हैं तो अपने ही घस्तरारमा को इसीलिए किसी धीर से कुछ भी अपेक्षा न रखकर शांति से मरना चाहते हैं। संसार की किसी चीज की भी चाह नहीं है वे केवल देने के ही बनी हैं।

इन सब विप्लवियों कोन जाने क्या कहकर पुकारना चाहिए ? शायद वे पापम से या घायर वे भ्रातृ निर्दोष बालक थे क्योंकि हमारे इस समाजे देश के धर्म सेता धीर राजनीति-विद्यारय विचक्षण पंडित इन्हें इन्हीं धर्मों से पुकारते रहे हैं।

इन विप्लवियों का सबसे बड़ा शोष काम पढ़ना है, वहीं था कि वे अपने उद्देश्य-साधन में कृतकार्य नहीं हो सके। मास के बाद मास और वरत के बाद वरत विप्लव के लिए अत्यन्त परिश्रम करने के बाद भी वे केवल एक बड़ी व्यर्थता का ही उपार्जन कर सके ? जिस पत्र का अन्तिम परिणाम केवल व्यर्थता हो वह पत्र क्या भ्रातृ नहीं है ? इस व्यर्थता का कुछ भी मूस है ? भारत के धर्म सेता धीर विचक्षण समासोन्नत विप्लवियों से ऐसे ही प्रश्न प्रायः करते रहे हैं।

व्यर्थता के एक ही पहलू पर हमारा ध्यान जाता है किन्तु इस व्यर्थता की पाइ में अपय की घेष्ठ सम्पत्ति किस प्रकार अपने को दियाए रहती है विप्लवताओं के द्वारा किस प्रकार धर्म का संसार होते-होते एक दिन इस व्यर्थता के बीच

साबकठा घाकर दर्पण देती है। विपक्षता और पराजय के निराशा-वेदना पूरक सबसाह के समय में इन सब बातों का हम में से बहुत-से हृदयंगम नहीं कर पाते। सभी समाजों में सभी समयों में विपक्षी लोगों पर समाज के बिज और धमिले लोग हँसते और सांछन लगाते रहे हैं। इसका कारण यही है कि प्रायः सभी देशों के सभी विपक्षियों की पहली चेष्टाएँ व्यर्थ हुई हैं और समाज के बिज और धमिले लोग इसी व्यर्थता के माप से ही सब विपक्षों पर बिपार करते रहे हैं। उसी निबम से भारत के विपक्षवादी भी बिज और धमिले लोगों के मत में प्रान्त-मन के घापी हैं। और इन समाजोपकों में से जो बड़े ही प्रवीण और होशियार हैं वे इन विपक्षियों को 'ईडियट' (बुद्ध पायस) कहने में भी संकोच नहीं करते। भारत को लक्ष्यप्रतिष्ठ वास्तिक पक्षिका 'मॉडर्न रिब्यू' के विचक्षण सम्पादक ने विपक्षियों को निर्देश करके कहा था कि 'यदि भारत में कुछ भी लोग सक्षम विपक्षवादी हैं तो भारतवासियों को निश्चय से अपनी बुद्धि-विवेचना पर उन्हें करना होगा।'

विपक्षियों और समाजोपकों में येद वही है कि विपक्षी लोगों को अपने धार्य पर झटूट बड़ा है, इसीलिए उन्हें घद्भुत निष्ठा के साथ अपने धार्यों को और जानेबाने सब पर चमत्ते हुए जीवन बिताया है, और इन समाजोपक लोगों ने धाराम-बीकी पर बैठकर समाजोचना करने को ही जीवन का पेदा बना बाधा है और बहुतों का तो यह समाजोचना करना ही जीविका प्रबंध करने का मुख्य प्रयत्न हो गया है। जीविका कमाने के लिए अनेक बातों का हिसाब करके चलना होता है, किन्तु इस प्रकार हिसाब करके चलने से हमेशा सत्य की धर्मदा को झटूट रखना शायद सम्भव नहीं होता। इस सबके अभाव में विपक्षियों में और इन धारे समाजोपकों में एक और भी बड़ा येद है, विपक्षियों के नजदीक जो चीज 'Faith' (यथा) है समाजोपकों के लिए वह केवल 'Opinion' (सम्पत्ति) है। यह 'सम्पत्ति' प्रायः सफलता का मोह पार नहीं कर सकती। इसी लिए कलाफल पर धर्मर होकर ही बहुधा 'सम्पत्ति' बमती है। किन्तु जो लोग इतिहास-अष्टा के आसब पर बैठते हैं वे इस 'सम्पत्ति' की परभाव नहीं करते वे निष्ठावान् और यथा-सम्पन्न व्यक्ति होते हैं। विपक्षता उन्हें यथा भ्रष्ट नहीं कर पाती। इसी कारण इतिहास में वे चिरस्मरणीय हो जाते हैं, इसीसे वे यथा सम्पन्न व्यक्ति ही बनने में कुछ स्थायी काम कर जाने में सफल होते हैं।

भारत के विपक्षवादी भी ऐसे ही यथा-सम्पन्न व्यक्ति थे। भारत के इन

विप्लवियों की ओर निर्दोष करके ही प्रसिद्ध कानून-वेत्ता बैरिस्टर मार्टन लाह्व ने एक बार कहा था "वे सब विप्लवी अपने धर्माप्य साधन में व्यर्थ कार्य नहीं हो पाते इसी कारण धर्म के सरकार के अपराधी हैं किन्तु यदि वे अपने उद्देश्य को सफल कर सकते तो फिर यही सत्तार में स्वदेश भक्त और तथा साधक कहकर पुनः जाते।"

भारतीय विप्लवियों ने जो मार्ग ग्रहण किया था उस मार्ग से ही भारत की मुक्ति होती कि नहीं कौन कह सकता है। सायब उन्होंने उभट्टा ही रास्ता ग्रहण किया हो, किन्तु उनके साथ हुमायूँ यत् नहीं मिलता इसी कारण तो उन्हें 'ईरिबट' (बुद्ध) कहना उचित नहीं है। न जाने संसार के सम्म भोगों में भारतवासियों के मान इकट्ठ की इन विप्लवियों के हाथ धक्का रखा हुई है भयवा इनके विरोधी समाजोपकों की मुक्तिओं के जोर पर। तो भी यह बात तो हम जानते हैं कि यत् साठ बरसों तक ब्रह्म कृष्ण विप्लववाधियों के सभी प्रयास निष्फल हुए के बाद प्रथम प्रतापी प्राप्तिवा की राजकृति के विरुद्ध इटली के मुन्नी पर विप्लववाधियों ने पहुँचे-पहुँच सिर उठवा था तब इन देशों के विप्लववाधियों को भी देखे ही व्यर्थ और मामियाँ सहनी पड़ती थीं। साठ बरस के अनन्त परिश्रम के बाद अनेक बाधाओं और व्यर्थताओं में से गुजरकर सारे जगत् की उम्मेदा और प्रतिकूलता को सहकर धाव कृष्ण विप्लववाधियों की यात्रा सफल होने का रही है। प्रायः बीस बरस की कष्टमय के बाद कितने तबान कितने कष्ट और कितनी अपमानों को जाँकर इटली में स्वाधीनता पाई थी। किन्तु जो इस मुक्ति-यत् के प्रथम यात्री थे उन्हें उनकी पहली विप्लव वेष्टियों के व्यर्थ होने के दिन कितनी निन्हा सहन न करनी पड़ी थी। इस प्रसंग में प्राचरित और टी० मेकिन्ली की विरम्भरणीय बात याद दायी है—*"Any man who tells you that an act of armed resistance—even if offered by ten men only—even if offered by men armed with stones—any man who tell you that such an act of resistance is premature, imprudent, or dangerous, any and every such man should be at once spurned and spat at, for remark you this and recollect that somewhere and somehow and by somebody a beginning must be made and that the first act of resistance is always and must be ever premature,*

imprudent and dangerous" अर्थात् "कोई धारमी जो तुम्हें यह कहे कि एक सशस्त्र मुकाबला—चाहे इस धारमी ही ऐसा मुकाबला करे—चाहे उन धारमियों के पास परपरों के तियाय और कोई हथियार न हो—कोई धारमी जो तुम्हें कहे कि ऐसा मुकाबला अपरिपक्व है, अनुसमन्वी का काम नहीं है या खतरनाक है अत्येक ऐसा धारमी सात सामेनायक और भूँह पर बूँका जाने लायक है। क्योंकि यह बात समझ लो और याद रखो कि कहीं-न-कहीं किसी न किसी तरह और किसी-न-किसी को मुकाबले का धारम्भ करना होगा और मुकाबले का पहला काम हमेशा अपरिपक्व और खतरनाक होता है और होना ही चाहिए।'

मैंने अपनी सक्ति के अनुसार इन विप्लवियों का एक संक्षिप्त कमबख्त इतिहास लिखने की चेष्टा की है। किन्तु इतिहास का प्राप होता है—जजमेष्ट—निर्बय। इस जजमेष्ट (निर्बय) के बिना इतिहास जाली बटना-बनिका (chronicle of events) रह जाता है। इसीसे मैं बड़-ब-बड़ घटनाएँ छोड़कर और अनेक बातों को भी नै भाया हूँ और विप्लवियों की मैंने प्रशंसा की है इससे कोई वह न समझे कि मैं विप्लववाद का प्रचार कर रहा हूँ। मैं कहना चाहता हूँ कि उनके साथ हमारा मतभेद रहने पर भी उनके चरित्र-बल को हम अस्वीकार नहीं कर सकते। किन्हीं के साथ मतभेद रहने से ही उनसे बूझ करना या उनको पामी-बसीब करना तो असीष्ट नहीं है, और विप्लवियों के विरोधी प्रवेज राज्याधिकारियों ने भी इनके चरित्र की भरपूर प्रशंसा की है, इससे वे (प्रवेज) भी सक्-मुब विप्लववादी नहीं हो गए।

इतिहास लिखने बैठा हूँ इसीसे भारतीय विप्लवियों को भारतवासी किस दृष्टि से देखते थे, क्यों इस दृष्टि से देखते थे और उन्हें किस दृष्टि से देखना सचित है? इन सब विषयों की भी धामोचना कर गया हूँ। विप्लवियों ने एक-मुब पागलपन किया था कि नहीं, यह नहीं जानता हूँ तो भी उनके पागलपन की बात सुनकर रवि बाबू की एक कविता के कुछ पद याद आते हैं—

“कोन धालोले प्राणेर प्रपीप  
ज्वालिए तूमि बराम पास”

साधक ओगो प्रेमिक ओगो  
पावन ओगो नरम धातु।”

“हे साधक, हे प्रेमिक, हे पावन, तुम इस भूमि पर धातु हो—किस व्योमि  
से प्रार्थों के प्रदीप को जलाकर तुम इस भूमि पर धातु हो।”

---

1 इस जन्म के कुछ और बहिष्कृत, 'आत्मवेद' में प्रकाशित, व्योमि-प्रकाश के एक लेख और 'हंस' में प्रकाशित 'बहिष्कृत' की जगहों से लिखे गए हैं।  
—लेखक

## 7 | विप्लव का प्रयास व्यर्थ क्यों हुआ ?

भारतीय विप्लवियों के सभी प्रयास क्यों व्यर्थ हुए। यह जानने के लिए पहले यह समझ लेना होगा कि वे चाहते क्या थे ? उनका उद्देश्य भतीसीठिसमने बिना यह जानना भी कठिन होगा कि वे कहाँ तक विकसत हुए, कहाँ तक नहीं, और उनकी इस विकसतता का कारण क्या था। इसीलिए उनकी इस व्यर्थता का कारण सोचने से पहले उनका उद्देश्य क्या था इस विषय की कुछ आलोचना करना आवश्यक है।

भारतीय विप्लववादियों का उद्देश्य क्या था इस विषय पर कहने को इतनी बातें हैं कि वहाँ पर उनकी पूरी आलोचना सम्भव नहीं है। कारण कि यह आलोचना करने के लिए भारत के राष्ट्रसेवा में इस विप्लव के प्राविर्भाव से प्रारम्भ कर उनकी क्रमिक परिणति के इतिहास की भी आलोचना करना आवश्यक हो जाता है, और इस प्रकार यह आलोचना इतनी बड़ी हो जाएगी कि हम आलोच्य विषय से बहुत दूर आ पड़ेंगे। इसीलिए इन सब आलोचनाओं को किसी भीर समय करने की इच्छा है। इस समय केवल अपना विषय समझाने के लिए बितनी आलोचना आवश्यक प्रतीत होती है, उतनी ही कहेंगे।

भारतीय विप्लव दल के बीच चाहे कितने ही मतभेद क्यों न रहे हों, परन्तु इस विषय में सभी सम्पूर्णतः एकमत के कि भारत को अखण्ड स्वाधीनता प्राप्त करनी ही होगी अर्थात् भारत भिन्न कोई भी जाति भारत के जले-बूरे की विचारकर्ता होकर भारत के मंगल के लिए भारत के किसी भी काम में हस्तक्षेप न कर सके— भारत के लिए किस प्रकार की शासन-प्रणाली सबसे अधिक संयोजकारी होगी इस



विषय के विचारकर्ता और परिभासक भारतवासी ही हों। भारत का सामाजिक धार्षिक क्या होगा, भारत में सामाजिक समस्या का समाधान किस प्रकार करना सबसे अधिक मनसजग होना भारतीय राष्ट्रों के साथ भारत किस प्रकार का सम्बन्ध-सुख स्थापित करेगा, भारत के व्यवसाय-वाणिज्य को किस प्रकार परिभाषित करने से भारत का और जगत् का मंगल होना इन सब बातों को भारतवासी ही जैसा ठीक समझें वैसा ही हो और किसी भी राष्ट्र का उसमें कोई हाथ न रहे—यही ही भारतीय विप्लवियों की दुराकांक्षा। भारत की यह स्वाधीनता ब्रिटिश साम्राज्य के बीच रहकर किसी तरह भी सम्भूत नहीं रह सकती बावजूद जिस प्रकार निःसंशय रूप से अपने माता पिता को पहचानता है, भारत के विप्लवी भी यह बात उसी प्रकार निःसंशय रूप से जानते थे। इसीसे भारतीय विप्लवियों की सब चेष्टाओं की बड़ में यह बात थी कि भारत को इस प्रकार शक्ति सामर्थ्य-सम्पन्न कर दिया जाय जिससे वह भारत-विप्लव सभी प्रायियों के हाथ से सब प्रकार से छुटका पा सके। इस भारते पर राष्ट्रों के समूह में अंधेरा घपवार नहीं है बल्कि साम्राज्य रूप से इन अंधेरों के साथ ही पहला संबंध आरम्भ होता है। कारण कि अंधेरों का ही साम्राज्य रूप से भारत की सब समझाया-माफ़ाताओं और भारत के सब उद्यमों के साथ बनिष्ठ रूप से संसर्ग है और वे सोच यह समझते थे कि भारत को इस प्रकार स्वाधीन करने का सबसे मुख्य उपाय है भारत की क्षम शक्ति को जानूँ कर देना—इस क्षम शक्ति के धारकों को ही केन्द्र बनाकर हमारे विप्लवियों ने अपनी सर्व कर्म दृष्टि को नियमित किया था। महारमा पाँची का भारत के राष्ट्र-क्षेत्र में प्राविर्भाव होने से बहुत पहले से ही हमारे विप्लवियों को इस क्षम धारकों और बाह्य धारकों के विषय में बहुत ध्यानोद्योग और दृष्टि करने पड़े हैं। उन बाह्य धारकों का विचार और विस्तेषण करने की जगह यहाँ नहीं है, समझ और सुयोग मिलने पर किसी और जगह यह करने की इच्छा है। जो भी, संश्लेष से यहाँ इस सम्बन्ध में केवल दो-चार बातें कह देना बुरा न होगा। यथार्थ बात तो यह है कि बाह्य धारकों और क्षम धारकों में सब-सब कहे तो कोई भेद नहीं है क्योंकि बाह्य धारकों की अन्तिम परिणति यहाँ होती है क्षम धारकों की भी अन्तिम परिणति ठीक यहाँ होती है। अर्थात् क्षम धारकों की पुरख जग प्रकृति-ज्ञान का व्यवसाय करके जीवन को निवर्तित करते हैं जब उसका जो फल होता है बाह्य धारकों का पालन पुरख भी

वैसे ही प्रकृति ज्ञान का व्यवस्थित सेकर जीवन बिताएँ, तो उसका भी वही एक ही फल होता है। यथात् यह जगत् ब्रह्म का ही प्रकाश है और ब्रह्म ही कभी सगुण और कभी निर्गुण रूप में अपना प्रकाश करते हैं, यह विषय ब्रह्माण्ड को निश्चय भये भये रूपों में परिचित होना है वह भी उसी ब्रह्म का ही सगुण प्रकाश है और जो अनिर्वचनीय है जो मूढ़ से प्रकट नहीं किया जाता जहाँ जाकर मन बुद्धि धक्का खाकर प्रवेश करने में असमर्थ होकर वापस लौट आते हैं जिसे किसी भी विधेय से विधेयित नहीं किया जा सकता यथात् जो ब्रह्म का ही निर्गुण स्वरूप है—उस निर्गुण और सगुण ब्रह्म में वचार्थ में कोई भेद नहीं है उस ज्ञान की उपलब्धि करना ही ब्राह्मण्य और ज्ञान आदर्श का अन्तिम लक्ष्य रहा है। वेदान्त के इस आदर्श का अनुसरण करें तो ब्राह्मण्य और ज्ञान धर्म में सचमुच कोई भेद नहीं रहता, किन्तु वेदान्त के इस धर्म को सब लोग स्वीकार नहीं करते भारत के सब सम्प्रदाय यह बात नहीं मानते कि ब्रह्म का सगुण स्वरूप सम्भव है। वे कहते हैं मुना तीव्र ब्रह्म का रूप भेद सम्भव नहीं है ब्रह्म ही एकमात्र वस्तु है, और सभी धर्मित्व है ब्रह्म के विभाव और किसी वस्तु का वचार्थ रूप में कोई अस्तित्व नहीं है—आपाततः उनका होना प्रतीत होता है पर वह असंभव है, यही ब्रह्म माया है। यह माया कहाँ से आई और इस माया का स्वरूप क्या है ? इस सम्बन्ध में वे कहते हैं कि वह कहा नहीं जाया वह अनिर्वचनीय है,—इसीसे वे संसार को भी धर्मित्व कहते हैं और इसीसे उनके जीवन का ध्येय आदर्श रहा है इस संसार को त्यागकर संसार के रास्ते से दूर जाकर निर्जन में जग में परब्रह्म में युष्म में रहकर यथात् श्रद्धा सेकर उपस्था करना अपमान की धाराधना करना। ब्राह्मणों द्वारा परिभाषित हिन्दू समाज का यही संतापन और सर्वश्रेष्ठ आदर्श रहा है यह बहुतों की चारखा है इस आदर्श को ही जो मानव-समाज के सम्मुख श्रेष्ठ आसन पर प्रतिष्ठित करना चाहते हैं वे ब्राह्मण्य धर्म के पक्षपाती हैं, इसी आदर्श का मैंने ब्राह्मण्य धर्म कहकर उल्लेख किया है। और ज्ञान धर्म कहने से मेरा प्रयोजन इस आदर्श से है जिस आदर्श में इस निम्न गूढतम परिवर्तनशील जीवन-वस्तु को निष्ठा माया कहकर उड़ा नहीं दिया जाता जिस आदर्श में इस जीवन-जगत् को इस संसार की निर्गुण ब्रह्म से धर्मित्व समझा जाता है, जिस आदर्श की प्राप्तिके लिए इस संसार की प्रत्येक सत्ता न करके दृष्टात्याग न करके इस संसार के भले-बुरे को दृष्ट-अनिष्ट को हिंसा अहिंसा को राक्षस-देव को समस्तुम्भ समस्तकर इस भीषण संज्ञात्मकता में रहकर ही ब्रह्म

ही जीवन-मार्ग है और इस जीवन-मार्ग में जो कुछ भ्रम या भ्रष्ट है वह सभी ब्रह्म का ही स्वरूप है, इस साथ ही उपसम्पत्ति करने के लिए सांसारिक कर्म में मग्न रहकर ही भर्त्ता सांसारिक कर्म के साथ ज्ञानयोग को मुक्त करके, कर्मयोग के यत्न में जो साधन करना होता है, इसको ही मैं ज्ञान भर्म कहकर पुकारता हूँ। इन दोनों मार्गों में सचमुच ठीक ईद रहा है। एक का आधार है कुछ और दूसरे का आधार वही कुछसा के बीहृत्त्व एक का आधार है श्री वैतथ्य और दूसरे का आधार भुव मोहित। एक के आधार का अनुसरण करने पर इस संसार को धनित भावा-ज्ञान कहकर इसकी धनता और धनहेमना करनी होती है और दूसरे के आधार की प्राप्ति करने के लिए इस संसार को नित्य नये-नये रूपों में उजाकर बुझना होता है, भुव-भुव में सृष्टि की उद्दाम प्रेरणा से इस संसार को ठोड़-छोड़कर, बुर-बुरकर छिद्र नये छिद्रे से गड़कर बड़ा करना होता है। कभी ज्ञान के धातुक में बयद् की उद्भासित करके कभी सद्ग की धार से रण्ड का लोत बहाकर, पुष्पी को रैनकर, कभी जैन के प्रवाह में गरिनी सुन्दरी को स्नान करके, संसार के तीर्थों को मधुसुत काटीबरी के साथ विविध धामाधों में धनैक रंकों में रंपीन स्निग्ध और उज्ज्वल करके विस्मयकर बना डालना होता है।

मार्गों का यह सब ईद केवल वाक्चातुरी धनवा भाषा का ईद ही न वा इस दल में बिम्बों में बिज आधारों की श्रेष्ठ सवध उन्हीं उड़ी आधारों के पीछे सारा जीवन खड़ीठ किया इस प्रकार कितनी वे हैं। बर-बार छोड़कर संसार का भाषय निवा और धनैकों के ठित-ठित करके पूर्ण रूप से अपने परिवारवालों और राज्याधिकारियों द्वारा धनैक कष्ट भोगते हुए जीवन के मोय-विनाश को तुच्छ समझकर विपत्ति के बीच ही जीवन बिता दिया। जो भी हो बिम्बवियों ने बर्त नाम काल में ज्ञान आधारों को ही श्रेष्ठ धाधन दिया वा। इसीसे इस ज्ञान आधार का ही वे भारत के जनसाधारण में प्रचार करने का प्रयास करते रहे।

इस प्रकार से बिम्बजी भोग भारत के सरीब-से-सरीब जनसाधारण तक को ही सबझते थे, किन्तु किस प्रकार वे सरीब-से-सरीब जनसाधारण तक अपनी धनित-वाएँ व्यक्त करेंगे और किस प्रकार सचमुच ही इन जनसाधारण की धनितवाएँ धनित्य रह सकेंगी इस के समाज में इनी और विद्वानों के बीच जनीदारों और धनकी रीय के बीच, बनी व्यवसायपतिधों और नुली-नबुरों के बीच रैपी और विदेशी व्यवसायपतिधों के बीच बरस्पर जो धनैक स्मारों के ईद उपस्थित हो गए हैं, और

इन विप्लव स्वार्थों के सफल होने के कारण भारत में जा अनेक प्रकार की अप्रामाणिक, अनेक प्रकार के वैयक्तिक अनेक व्यापारों अनेक व्यापारों और अनेक भीषण रक्तपातों की सृष्टि हो रही है। इन सब झड़ों को कैसे मुक्तप्राप्त होगा और यथार्थ विप्लवी होने पर राष्ट्र के समान समाज को भी बुर-बुर कर भरे सिरे से गड़ना होगा ये सब बातें भारत के विप्लवी सोच अभीमांति हृदयंगम नहीं कर पाए, और इन सब समस्याओं की धार ध्यान देते हुए भारत के भावी राष्ट्र को सब ही किसी विशेष रूप में गढ़ना होगा यह बात भी उन्होंने सम्पूर्ण विप्लव के साथ नहीं सोची थी। वे सोचते थे कि ये सब बातें स्वाधीनता पाने के बाद देखी जाएँगी। तो भी अधिकार विप्लवियों का यही मत था कि भारत की राष्ट्र-शासन-व्यवस्था की नींव समस्त जन के सहर्ष पर ही स्थापित होगी। इस व्यापार में अधिकार विप्लवी राजा के लिए कोई स्वान नहीं रखते थे। अधिकार इसलिए कहता हूँ कि इनमें ऐसे भी कुछ व्यक्ति थे जो सोचते थे कि यदि भारत के कोई स्वाधीन कहलानेवाले राजा भारत के इस स्वाधीनता समर में प्राण और मन से योग दें तो उन्हें भारत का सम्मान दिया जा सकता है, और जब इसमें भारत का राष्ट्र संघटन इंग्लैंड की पार्लियामेंट के अनुसार गठित होगा। महाराष्ट्र में 'अभिनव-भारत' नामक गुप्त समिति की ओर से "Chronicle of Indian Princes," (सर्वात् भारत के राजाओं अपना राजा बन लो) तीर्थ की एक छोटी-सी पुस्तिका का मुद्रण के प्रचार किया गया था उसमें बड़ी-बड़ी के राजा भावकबाहू का स्पष्ट रूप से उल्लेख करके ही उपर्युक्त भाव का प्रचार किया गया था। पंजाब के सिक्खों में से अनेकों की इच्छा थी कि भारत में फिर सासना राज्य स्थापित किया जाय। फिर विप्लवियों में से अधिकार हिन्दू ही थे इसलिए उनके बीच किसी-किसी के दिल में वह इच्छा मुद्रण के भी कि भारत के स्वाधीन होने के माने हिन्दू राज्य की पुनः स्थापना के होंगे। किन्तु कमजोर यह भाव बिलकुल मुद्रण हो जाता है, और अन्त में यद्यपि वे मुख्यतः हिन्दुओं के स्वावलम्बन के ऊपर ही मरोखा करके अपने कार्य में भागे बढ़ते थे, तो भी स्वाधीन भारत की कल्पना में भारत की किसी भी जाति को उन्होंने दूसरी जाति के अधीन कर रखने का संकल्प नहीं रखा, यद्यपि भारत की स्वाधीनता के लिए भले ही हिन्दू मुख्यतः परिश्रम करें तो भी स्वाधीन भारत में प्रत्येक जाति का समान अधिकार रहेगा यद्यपि प्रत्येक जाति का स्वार्थ सम्बन्ध रहेगा यही था भारतीय विप्लवियों का राजनैतिक धारणा।

हमारे देश के प्रायः सभी लोग एक मुर से कहते रहे हैं कि भारत का विप्लव प्रयास बिलकुल ही व्यर्थ हुआ है और इस प्रकार उसका व्यर्थ होगा ही अमरव्यापारी वा । वे कहते हैं वर्तमान युग में नवीन वैज्ञानिक उन्नति के कारण किसी भी राज-शक्ति के विप्लव कोई प्रवासात्मिक शक्ति की सहायता से विप्लव नहीं कर सकती, और वे सोचते हैं कि संवेकों के समान हम को सामरिक शक्ति की सहायता से हरा कर स्वाधीनता पाने की कल्पना करना भी बिरा पावकल्पन है इसी से वे भारत के विप्लवियों को पापन और अविश्वेकी प्रमत्ता निर्वोच समझते थे और समझते हैं ।—प्रवरय ही इन सब समालोचकों की बातें यदि सत्य हैं तो भारत को बिर काम तक पराधीन ही रहना है, कारण कि पूर्ण स्वाधीनता पाने का और कोई रास्ता भी वे समालोचक लोग दिखा नहीं सके और इस प्राच्युक्तिक युग में जो एक और बर्मेनी के विप्लव दलों ने प्रथम राज-शक्ति को हरा दिया है वह बात न मानने का भी तो कोई कारण नहीं है, इसी से यह कहना जान पड़ता है व्यक्तिगत न होकर कि वर्तमान युग में कोई भी प्रवासात्मिक सुप्रतिष्ठित राज-शक्ति का विप्लव के रास्ते से सामरिक शक्ति की सहायता से हरा नहीं सकेगी और भारत के विप्लव दल के साथ एक और बर्मेनी के विप्लव दलों की तुलना करने से एक बात विशेष रूप से हमारे ध्यान में आती है कि बर्मेनी और कभी विप्लवियों को अपने ही लोगों के विप्लव प्रयास धारण करने पड़े थे परन्तु किसी विदेशी राज-शक्ति के साथ मझाई हो तो सारे स्वयंसेवाश्रितों की सहाय्युक्ति और सहायता पाने की अपेक्षा संभावना रहती है । इसी से विदेशी राज-शक्ति के विप्लव विप्लव करना विविध बार (गृह युद्ध) करने की अपेक्षा अनेक संघों में सहज है । तो भी यह बात तो सच है कि भारत का विप्लव प्रयास व्यर्थ हुआ और कश्मिरी और बर्मेनी के विप्लव प्रयास सफल हुए हैं । यह बात सच भले ही है, किन्तु इन व्यर्थता के कारण के विषय में ही तो हमें को ध्यान में रखना है, और यही मैं इस कारण का ही अनुसंधान कर रहा हूँ । भारतीयों को उचित विप्लव के पक्ष में जाना चाहिए कि नहीं इसकी मैं कोई धारणा नहीं कर रहा हूँ । वहाँ पर तो केवल अपने विप्लव प्रयासों की प्रभाव-मुक्ति का ही विश्लेषण कर दिखाने की तकनीकी चेष्टा की है । एक बात बातक मन में रखें कि मैं अतीत की बातों की धारणा कर रहा हूँ और अतीत की धारणा करना ही इतिहास लिखते समय ठीक है इसी से विप्लव में क्या होना चाहना क्या होना उचित है यह मेरा धारणा विषय नहीं है । अतः,

जो भी हो, जो हम कह रहे थे उसी पर फिर धा जाएँ हम कह रहे थे कि भारतीयों का विप्लव प्रयास व्यर्थ क्यों हुआ ?

धनेक लोग कहते हैं कि उपयुक्त समय नहीं आया था इसी कारण भारतीयों का विप्लव प्रयास व्यर्थ हुआ, यर्थात् विप्लव प्रयास को सफल करने के लिए जो परिस्थिति उपलब्ध है वह परिस्थिति भारत में अब भी नहीं है भारत के जन-साधारण सचमुच विप्लव करना नहीं चाहते इसीलिए विप्लव का प्रयास व्यर्थ हुआ। भारतवासी सचमुच स्वाधीनता नहीं चाहते, पराधीनता की श्रमा को सब ही धनुमन नहीं करते इसी से वे विप्लव पथ में अग्रसर नहीं होते बहुतों के मत में विप्लवियों के असफल होने का यही सर्व प्रधान कारण है।

किन्तु भारतवासी सब ही स्वाधीनता नहीं चाहते, पराधीनता की श्रमा को धनुमन नहीं करते यह तो मैं नहीं मानता किन्तु उस स्वाधीनता को पाने के लिए जिस त्याग, जिस वीरता की आवश्यकता होती है भारतवासियों में उन सब गुणों का एकत्रय अभाव है, यह बात मैं मानने का भी तो कोई कारण नहीं है। किन्तु जो लोग यह कहते हैं कि देश के अधिष्ठित जन-साधारण (Mass) ने इस विप्लवान्धोत्थन में योग नहीं दिया इसी कारण विप्लव का प्रयास व्यर्थ हुआ उसकी बात भी कुछे ठीक नहीं मानूम होती—कारण कि विप्लवियों ने कभी किसी भी दिन प्रकट या गुप्त रूप से देश के किसानों घरवा कुसी-मजदूरों को इस विप्लवान्धोत्थन में भाग लेने के लिए पुकारा ही नहीं देश के अधिष्ठित लोगों ने जब जिस रूप में जन-साधारण (Mass) को पुकारा है जन-साधारण ने धनेक त्याग करके भी बहुतों इस पुकार का उत्तर दिया है। देश के अधिष्ठित लोग धरम कर्तव्य को समझ लेने पर भी जो काम नहीं कर सकते देश के अधिष्ठित जन-साधारण धनेक बार अपनी सहज बुद्धि से यह काम बनायास ही कर आते हैं। घरघर अधिष्ठित जनता कर्तव्य की खातिर बहुत दिन तक त्याग धनका कष्ट स्वीकार नहीं कर सकती इसी से अधिष्ठित जनता के अग्रसर पर निर्भर करके कोई भी बड़ा या स्थायी कार्य करना सम्भव नहीं।

और जो लोग यह कहते हैं कि देश के अधिकांश लोग अधिष्ठित हैं इसीलिए भी विप्लव का प्रयास सार्थक नहीं होता और जब तक देश के अधिकांश लोग अधिष्ठित नहीं होते, तब तक विप्लव का प्रयास व्यर्थ होगा ही, इनसे मैं इस का दृष्टान्त दिलाकर कह सकता हूँ कि विप्लव प्रयास की सार्थकता अथवा व्यर्थता

देश के लोगों के लिखना-पढ़ना जानने न जानने पर निर्भर नहीं करती।

तो फिर भारत का विप्लव प्रयास क्यों हुआ ? किन्तु सच ही क्या भारत की विप्लवियों का इतना त्याग इतना धर्ममय साहस सब एकदम क्यों ही हुआ है ? इन्होंने कितने ही कष्ट सहे, कितनी ही विषम विपत्तियों के बीच ऐसी विप्लव के साथ धमिलित रहे कितनी ही बुर्जुवावादों के तीव्र आघात कितने ही विद्रोह आतकों के निर्बल व्यवहार और कितनी ही पराजयों की मर्मपीड़ा सहकर ऐसी दुर्बल मनीष बुद्धि के साथ वे बार-बार अपने संकल्प की सावना में प्रवेश रहे, यह सब क्या सच ही एकदम क्यों हो गया ! आज अन्तिम के आदर्श में क्या देश में कुछ भी प्रतिष्ठ नहीं पाई ? मरने का कर क्या भारतवासियों के मन से कुछ भी दूर नहीं हुआ ? देश के सम्मान्य प्रकाश आन्दोलनों पर विप्लव आन्दोलन क्या किसी तरह का भी प्रभाव नहीं डाल पाया ? बर्ष पॉलिटिकल (विश्व की राजनीति) पर, संसार के सम्य देशों में क्या भारत का यह विप्लवान्दोलन कुछ भी छाया नहीं डाल सका ? यद्यपि इस विप्लवान्दोलन के कारण भारत का गौरव समुद्र की लहर में कुछ भी नहीं बढ़ा ? इस सम्बन्ध में हार्बर्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ऐवर लिखित 'पैन-जर्मनिज्म' जर्नल की छठ 'जर्मनी एन्ड दि नेक्स्ट वार' इत्यादि जर्नलों की ओर ध्यान देने का पाठकों से अनुरोध करता हूँ—इससे वे मेरी बात का तात्पर्य बहुत-कुछ हृदयंगम कर सकेंगे।

बहुत लोग कहते हैं कि विप्लवियों के व्यर्थों के कारण संघर्ष की अपेक्षा धर्मपक्ष ही अधिक हुआ अंग्रेज सरकार को इन विप्लवियों के कारण ही प्रजा पीड़न का अधिक सुयोग मिल गया है इसी से मिरव मये-नये कठोर-से-कठोर कानूनों के सहारे भारत के बीच जुने आन्दोलनों में भी अंग्रेज सरकार अनेक प्रकार से बाधाएँ डाल पाई हैं। पर सच बात यह है कि सच प्रकाश आन्दोलन का बचन होने के बाद से ही विप्लव का कार्य-कलाप प्रकाशित होने लगा है, और रोमन कमेट्री की सिबीजन रिपोर्ट में अंग्रेजों ने क्याचिस् समझान में ही इस प्रकार सब विषयों की आलोचना की है जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि विप्लवियों के प्रत्येक उद्योग के कारण ही बारी-बारी अंग्रेजों ने भारत की राजनीतिक अधिकार लिए हैं।

यह बात भी अक्षय ही बहुत लोग स्वीकार करते हैं कि भारत को भी कुछ सामान्य राजनीतिक अधिकार मिले हैं वे बुद्धत भारत के इन बुद्धित विप्लवियों

के प्रभाव से ही मिले हैं ।

सौर, जो जी हो, विप्लवियों ने जो चाहा था वह तो नहीं हो पाया विप्लवी देश को स्वाधीन करना चाहते थे सा वे कर नहीं सके विप्लवियों की मुख्य बेव्ढा व्यर्थ हुई ।

मैं समझता हूँ चिन्तनशील प्रतिभावान् जपयुक्त नेता का धमाका ही इस व्यर्थता का सबसे बड़ा कारण था । उस या जर्मनी के विप्लव दल के बीच ऐसे बहुत व्यक्ति हैं या थे जो संसार के अनेक चिन्तनशील व्यक्तियों में आसन पाने योग्य थे किन्तु भारतीय विप्लव दल में ऐसे कोई भी चिन्तनशील चरितमान् व्यक्ति न थे जिन्हें ठीक बिसर (विचारक) कहा जा सके इसीसे भारतीय विप्लव दल अपना प्रचार-कार्य, करना चाहिए, कुछ भी नहीं कर पाया और इसीलिए इस विप्लव दल का प्रभाव बीस नहीं दिखाई दिया जैसा होना चाहिए था । यह भले ही सच है कि भारत के इस विप्लववाद के अन्दर विवेकानन्द का स्वतन्त्र भावार्थ वर्तमान था और भारतीय विप्लवियों में से अधिकतर इसी महापुरुष की प्रेरणा से अनुप्राणित थे किन्तु विवेकानन्द के समान कोई भी प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति सालाफ रूप से इस विप्लव दल में न थे । श्री अरविन्द भोव और साहा हरदत्त यदि अन्त तक इस दल में रहते तो ज्ञान पड़ता है, कि विप्लव दल का यह ईश्वर बहुत कुछ दूर हो जाता किन्तु वे भी अन्त में इस दल को छोड़ गए । इन्हीं अरविन्द के प्रबंध में मेरे एक परिचित व्यक्ति मुख्ये एक प्रसिद्ध कविता के कुछ एक पद कहा करते थे यहाँ उन्हें उद्धृत करने का समय नहीं राक सकता है—

He is gone to the mountain  
And he is lost to the forest  
The spring is dried in the fountain,  
When the need was the sorest

इस प्रकार के चिन्तनशील प्रतिभावान् पुरुषों की बात छोड़ भी दें तो इस विप्लव दल में किसी बड़े साहित्यिक, किसी बड़े समाचार पत्रों के लेखक अथवा किसी बड़े कवि ने भी योग नहीं दिया । एक तरह से कह सकते हैं कि इस विप्लव दल में इन्टेलिज्जुअल्स (Intellectuals) नहीं थे और इस प्रकार के लोगों का विशेष अभाव था, इसी कारण वह विप्लव दल प्रचार कार्य की ओर प्रायः



(विभारक) हैं वे पण्डित हुए बिना भी पोषी पड़ने या परीछाएँ पास करने में बड़ी बोध्यता दिखाए बिना भी संसार के अनेक अद्भुत विस्मयजनक रहस्यों की बोधना कर सकते हैं ।

विप्लवियों के कार्यकलाप को बहुत लोग पागलपन कहते हैं । वे कहते हैं विमात्र में कुछ खराबी हुए बिना कोई विप्लव दल में बोल नहीं दे सकता ।— विप्लवियों के धन्द्वर सुनते हैं सुबुद्धि का—अमलमन्त्री का विरोध समाप्त है—विष्णु उबिवाबू ने कहा है—‘सुबुद्धि नाम का पदार्थ मर्त्यलोक में पाया जाता है किन्तु ऊँचे दर्जे का जो आसिद्ध पागलपन है वह वैवर्लोक की वस्तु है । इसी से ज्ञान पड़ता है कि सुबुद्धि की गड़ी हुई चीजें टूट-फूट पड़ती हैं । और अमलपन बिन बीजों को चढ़ाकर जाता है वे बीज की तरह अंशकों के अंशक रणा जामती हैं ।

## तृतीय खंड

सन् 1920 के बाद उत्तर भारत में विप्लववादी आन्दोलन



## 1 | रिहार्ड की सूचना

वह दिन घाब भी मुझे खूब बाद है। बाड़े का मीसम वा भीर वा सन् 1920 का करवरी महीना। मैं सेस्पुसर जेल के अस्पताल में बीमार पड़ा था। एक ऊँची अफसर ने आकर मुझे इतिहास भी कि जेलर साहब आपको अफसर में बुला रहे हैं। सुनते ही सिर से पैर तक धाय लग गई। फिर वही बात फिर वही बुझ फिर वही अफड़े की मौखिक दिखाई देने लगी। क्योंकि पोर्ट ब्लेयर की सेस्पुसर जेल में प्रायः ऐसा हुआ करता था कि जेल के अधिकारीगण, ऊँची-अफसर से लेकर जेलर और सुपरिन्टेण्डेंट तक वहाँ के राजनैतिक बन्धियों को मीका-बेमोका बायब-माबाब तरीकों से तंग करना चाहते थे। और ऐसे अवसरों पर जेल के अधिकारीमनों के साथ राजबन्धियों का खूब झगड़ा हो जाता था। कभी-कभी इन झगड़ों के परिणाम में राजबन्धियों की मृत्यु तक हो गई है। ये सब बातें अफसरमन के जल-जीवन के अन्तर्गत आती हैं। लेकिन ये सब बातें किसी बूझरे स्थान पर लिखने की इच्छा है। वहाँ इतना ही कह देना पर्याप्त है कि मेरे समय में और मेरे अफसरमन आने के पहले भी उष्ण पक्का राजकर्मचारियों की प्ररणा से ही अफसरमन के जल अधिकारी राजबन्धियों से इस प्रकार कठोर व्यवहार करते थे। इसलिए जब उस ऊँची अफसर ने आकर मुझे जेलर साहब का हुक्म सुनाया और यह कहा कि जेलर साहब आपको अफसर में बुला रहे हैं तो मेरे मन में स्वतः ही एक विरोध की भावना पैदा हो गई कि मैं तो अस्पताल की आरुणाई पर बीमार पड़ा हूँ फिर भी इस हालत में भी अफसरसाहब मुझे अफसर में बुला रहे हैं। और न ही मुझे यह बताया हुआ कि मुझे अपमानित और तंग करने के लिए ही जेलर ने

ऐसा हुआ दिया है। यदि मैं नहीं जाता हूँ तो बेसर से भगड़ा होता है और यदि जाता हूँ तो मेरा अपमान होता है और यदि भगड़े को बचाने के लिए मैं इस अपमान को भी सह सेता हूँ तो मैं अपने मिर्चों की दृष्टि में मिर जाता हूँ। अब घर के लिए इन सब भावनाओं ने मेरे मन में एक कठिन समस्या पैदा कर दी। लेकिन उसी क्षण मैंने इन समस्याओं की सीमांता भी कर दी। मैंने उस ऊँची पड़ोसर से कहा कि मैं बहुत कमबोर हूँ बपतर नहीं जा सकता। वह ऊँची बला गया लेकिन बोड़ी ही बेर में फिर वापस आया और कहा कि बहुत बकरी काम है बेसरसाहब आपको बपतर में ही बुना रहे हैं। यह सुनकर मुझे बड़ी चिन्ता हुई। तरह-तरह के ज्वास बोड़ने लगे कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि कोई मेरी लिखी हुई पुस्तक बिट्टी पकड़ी गई हो या कोई नया भगड़ा तो नहीं खड़ा हो गया। बात क्या है कि मैं अस्पताल में बीमार पड़ा हूँ फिर भी बपतर में ही बुनाने पर इस क्रूर बोड़ है। लेकिन मुझे ज्वासा सोचने का मौका न था। उस दिन मुझे बुखार न था और न मैं इतना कमबोर ही था कि बपतर तक जा न सकता। ऐसे अवसरों पर घर में तो यह सबाल ही नहीं पैदा होता कि धाचरसकता पड़ने पर बिस्तर से उठकर किसी से मिलने जाएँ या न जाएँ। यहाँ तो धारम-सम्मान का सबाल था। असली बात तो यह थी कि एक राजबन्सी को बीमार अवस्था में कँडे कोई बेसर बपतर बुना सकता है। अब तो भगड़े की मौबत साफ नजर आई, परन्तु मैंने सोचकर निश्चित किया कि भगड़ा नहीं करता चाहिए। क्योंकि धमी बोड़े ही दिन पहले काळी भगड़ा हो चुका था। अब मैं जितना दुर्बल था उससे कहीं अधिक दुर्बल बनकर धीरे धीरे बेसर के बपतर की ओर चल पड़ा। अब बेसर के सामने पहुँचा तो उसने तो बड़ी प्रसन्नतापूर्वक बोस्ताने के तौर पर भाइर के साथ अपनी कुर्सी के पास एक बेंच पर बैठने को कहा। मैं तो एक दूधन का इस्तजार कर रहा था। यह बुझ बैसकर कुछ जकित-सा रह गया। और धमी बैठा भी न था कि बेसर एकाएक कहने लगा "Cheer up man, you are released"— 'यया मुक्त हो पार मौज करो अब तो तुम छूट गए। मुझे इस अवसर पर यह संवाद सुनने की धाशा न थी यद्यपि मुझे यह बड़ बिरबास था कि बोड़े ही दिनों के अन्तर में अबस्य जाऊँगा। 18 अगस्त 1910 को मैं कामे पानी पहुँचा था। उस दिन से ही मैं सदा यह कहा करता था कि अपने घुमाइसबे साल की अवस्था में मैं अबस्य छूट जाऊँगा। ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उस

निश्चित समय के बाद भी मुझे जेल में रख सके। उस समय कालेपानी में कोई ऐसा राजबन्धी न था जो इस बात को न जानता हो और जिसने इस बात को लेकर गैरी हंसी न चढ़ाई हो। मेरे इस बड़बिस्बास के मूल में भृगुर्त्तिहिता की एक अभिप्रेता की निश्चये बारे में ग्रन्थ स्थान पर कुछ सिर्क्या। महामुख शान्त हो जाने के बाद जब मायूसी क्षणियों को तो बहुत-कुछ माझी दे दी गई थी और राजबन्धियों में से कुछ से यह कहा गया था कि सात पीछे एक महीने की माझी तुम लोगों की ईद में की गई, अब तो अबस मेरे मन में कुछ नाउम्मीदी-सी घा गई थी। इस अवस्था में बेसर ने मुझ मुक्ति का संवाद सुनाया। लेकिन यह संवाद सुनकर मेरे मन में कुछ विषय उत्साह नहीं पैदा हुआ क्योंकि मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि छूटना तो मुझे था ही, जो अवसर होना था वही तो हुआ मानो यह कोई असाधारण बात न थी। इसलिए मैंने बहुत आन्तिपूर्वक अपनी मुक्ति का संवाद सुना। मेरे इस अस्वाभाविक आग्रह को देखकर बेसर ने कहा, "What is the matter with you young man? It seems you do not want to go home. Cheer-up man you are released"—"बरे। तुम्हें हो स्वा गया है? मालूम पड़ता है कि तुम घर नहीं जाना चाहते। बात क्या है? तुम कुछ क्यों नहीं हो रहे हो? मीन करो, अब तो तुम छूट गए।" मैं मुस्कराने लगा। मैं अपने स्वाद पर बापस जमा आया। बीरे-बीरे मुक्ति पावे का उत्साह मेरे मन में बढ़ता गया। अस्पताल में जिस बयह मैं रहता था उसके नीचे ही एक नम्बर की बीरक का आगम था। इस आगम में बीरेन्द्र उपेन्द्र, हेमचन्द्र हर्यादि अखिल पुराने आन्दिकारी स्वयं अपना जीवन बताया करते थे। भारतवर्ष में जो सर्वप्रथम आन्दिकारी पद्धत्य का मुकदमा जमा था उसी आन्दिकारता बम केस में इन सबने आजीवन काले पानी की छत्रा पार्ई थी। कुछ दिन आश्वयुज में रहने के बाद मुझे वत उठाते-उठाते वे सोम पुर्वज निश हो गए थे। मेरे सामने कालेपानी में राजबन्धियों के साथ जेल-अधिकारियों के मिलने संघर्ष हुए और उसके परिणामतः मिलनी पूर-हड़तालें एवं काम बन्द रखने की हड़तालें हुईं जिनमें से किसी में भी इन लोगों ने किसी प्रकार का भाग नहीं लिया था, बल्कि मेरी नजरों में वे सोम जेल-अधिकारियों के विस्वासपात्र बन गए थे। इनकी चारबा भी कि इन सब हड़तालों में भाग न लेने से एवं जेल-अधिकारियों के पक्ष में रहने से सम्भव है, छूटने में बहुत-कुछ सहायता मिले। इसलिए इन लोगों ने ग्रन्थ राजबन्धियों के विरुद्ध

बादर हमेशा जेल-अधिकारियों का ही पक्ष लिया था। इन सब बातों से राज बन्धियों की चला इनकी तरफ से हट गई थी। इनमें से ओप भी यह समझते थे कि जेल-अधिकारियों से हमेशा संघर्ष करने का परिणाम क्या होता है। यह इन दूसरे राजबन्धियों को सभी मामलों में हमेशा ऐन वक्त पर, जब उनकी दिखाई के प्रश्न पर विचार करने का अवसर था। परन्तु मैंने तो जिस दिन से कातेपानी में रहने लगा था उसी दिन से लेकर मुक्ति पाने के दिन तक हमेशा जेल-अधिकारियों के खिलाफ राजबन्धियों का पक्ष ही अपनी धारणा के अनुसार ग्रहण किया था। इसलिए जब मुक्ति का आनन्द प्राप्त समाचार मुझे मिला तो मेरे दिमाग में सब प्रथम बड़ी इच्छा हुई कि इन दुरिदय राजबन्धियों को बाहर अपनी मुक्ति की बात सुनाऊँ और यह समझ दूँ कि राजनीति के मार्ग में दुरिदय और राजबन्धियों से है हमेशा साथ नहीं होता है। मन में बड़ी आस बने हुए, जेल के पास से लौटकर मैं सीधा बरामदे में धाकर बढ़ा हुआ था और जेल-अधिकारियों को बुलाकर अपनी मुक्ति की बात सुनाई। जेल-अधिकारियों ने, मेरी बात सुनी मुझे बसाई दी था न ही, मुझपर हट की रक्षा के हरे पर घाई की व की कि कभी-कभी विराम कर लिया और मुझे बतलाकर बापस लौट गए। मैं अपनी चारपाई पर लौट आया। जब छोड़े जा रहा था के बाद मुझे यह बात नहीं है कि चारपाई पर धाकर मैंने स्वा सोचा और उस समय मेरे दिमाग पर क्या मुझरी। इतना समय बाद है कि मैं मुक्ति का संवाद पाकर बचक नहीं हुआ था। केवल एक बातना सर्वोपरि मुझे विफल कर रही थी। मैं वहीं सोचकर परेशान हो रहा था कि कैसे मैं अपने साथियों के सामने धाकर बढ़ा हुआ। जिस दिन मैंने यह सुना कि मैं मुक्त हो गया हूँ उस जेल में रहते हुए भी उसी दिन से मैं यह एकाएक अनुभव करने लगा कि मैं अब इस जेल का रहनेवाला नहीं हूँ मानो मैं यहाँ परित्यक्त हूँ जो बड़ी टहर कर बाद को जाता था। मेरे और सब साथियों के चेहरे अब मुझे यह बात थी और उनके आनन्द हीनान्तर बात का बंध उनके चेहरों पर लिखा है। यह बात थी तो मेरे लिए यह दुःख असहनीय हो गया। इस दुःख को देखते हुए मैं अपनी मुक्ति के आनन्द से कुछ भी हर्षानुस्त नहीं हो पाया। मुझे इस समय बाद नहीं कि उस दिन मेरे साथ असमंजस में और भी कोई राजबन्धी थे या नहीं।

जेल में हमें बतलाया था कि अभी हमें करीब बीस दिन आनन्द जेल में ही रहना पड़ेगा। कैंदियों को से जानेवाला कहावत अभी सम्भव क्या हुआ है। यह

बहाब बापस आया तभी मुझे बस पर सवार कराया आया इन बीस दिनों तक मुझे जेल के अन्दर ही रहना पड़ेगा। जेल का ही जीवन नसीब होना तो दूसरे कैदियों की तरह रात को कोठरी में ही सोना पड़ेगा। मैंने एक बार यह प्रस्ताव दिया था कि कम-से-कम एक बर्रका तो मुझे जेल के बाहर अम्बरन टापू का दृश्य देखने का मौका दिया जाए। आबाम्म कासेपानी की सजा लेकर आए, बार सात तक जेल के अन्दर ही रहे, सब अम्बरन की तरफ सीटमें के पहुँचे तो एक स्वाधीन व्यक्ति की तरह अम्बरन टापू को देखने का मौका मिले। लेकिन मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। यह अजीब परिस्थिति थी कि मैं रिहा भी कर दिया गया था लेकिन बीस दिन तक जेल के बाहर भी नहीं जा सकता था। खाना, पीना रहना जेल के अन्दर ही दूसरे कैदियों की तरह ही होता रहा।

आबाम्म कासेपानी की सजा पाकर सात के प्रति दिन, प्रति बड़ी जिस सुषमसर की बात जोड़ रहा था वह दिन था गया। लेकिन अब वह दिन आया तो वह कल्पनासीत दुर्ग मैंने क्यों नहीं अनुभव किया? इसका उत्तर आज भी मैं ठीक तरह से नहीं दे सकता। दूसरे बहुत-से कैदियों को मैंने छुट्टी हुए देखा। उन कैदियों के हवाईम की सीमा नहीं रहती थी। वे चाहे से बाहर हो जाते थे, स्वप्ना कित्ती की तरह विज्ञान होकर वे हजर-जबर घुमा करते थे। मुझे ठीक मालूम है कि मैं विज्ञान नहीं हुआ। सम्भव है कि अपने दूसरे साधियों की अवस्था को सोचकर मनमाने ही मैं अपने हृदयानेय को कुछ तरीके से संयत कर पाया। ऐसी परिस्थिति में अस्पताल की छोड़कर अपनी बीरक में मैं अपने साधियों के बीच बापस आया।

अस्पताल से अपनी बीरक में सीटने तक जेल-भर में यह समाचार फैल गया कि भारत के सर्वप्रथम परमग्न केस के लंबी बारीक जर्जर एवं हेमजर्जर भी छूट गए हैं। और वे भी मेरे साथ एक ही जहाज में स्वदेश लौटेंगे। उन्हें भी मेरी तरह अभी बीस दिन तक भीर जेल में ही रहना पड़ेगा।

बीरक में पहुँचते ही मेरे सभ साथी मेरे पास आ खड़े हुए, चारों तरफ से मुझ पर लिया घोर सब बातें पूछने लगे। अपने कल्पना-बैरों से जो निम मैंने देखा था वही दृश्य मेरे सामने आया। अभी बी-एक दिन ही पहले जिन साधियों के साथ हम अपने अन्धक के दिन बिता रहे थे, आज वहाँ साधियों के बीच होते हुए भी कंठे उन्हें और समझने लगे मानो मैं भीर मेरे वे साथी को अत्यंत असह्य बुझिया के



निवासी हैं। यह बात कहने की गंभीरता, हमसे प्रत्येक ने अपने अपने स्थाव में इस बातका अनुभव किया। एक तरफ मुझमें धानम्ब की लगी हुई धाँसा की बूझी तरफ बेचना की स्फुट व्योमवा। यह धनीय परिस्थिति भी अपने धनवान में ही मैं यह अनुभव कर रहा था। अपने स्वाभाविक धनपूर्व कल्पनाशील धानम्ब को व्यक्त करना इस अवस्था में तो नितास्त अपराध ही हो गया। इस प्रकार वे धनवाने ही प्रतिफल अपने भावों को विपत्ति का व्यर्थ प्रमाण करता रहा।

सम्भव है, मेरे साधियों के मन में बन्धन में पड़े रहने की बेचना के साथ मुक्ति पाने की भी सीध धाँसा की धमक बिलसाई की हो। सम्भव है कि बन्धन में मुक्ति न पाने की धाँसा से वे धाँसा बेचना का अनुभव कर रहे हों।

उनमें से जो सबसे कम उम्र का युवक था उसने मुझे एक पुस्तक स्मृति विद्वत्-स्वल्प माँदी। मैं उस समय सब-कुछ न देखता था, मैंने तब अपने पुस्तकों में से एक पुस्तक उसे दे दी। इस प्रकार मैंने अपनी सब पुस्तकें से स्मृति लेन निवासी बहुत-से राजबन्धियों को स्मृतिविद्वत्-स्वल्प दे दी। मेरे लिए पुस्तकों से अधिक और कोई प्रिय वस्तु नहीं है। मैं कोई बनी व्यक्ति नहीं था। बीसह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही मेरे पिता का देहान्त हो गया था। पिताजी ईसाई धर्मपाति में कुछ छोड़ गए थे उसीसे हम बार माहरी तथा मेरी विधवा माता का निर्वाह हो रहा था। मुक्ति के बाद भी, इन पुस्तकों में से कुछ तो प्रायः अनुभव ही हैं, तथापि उनके लिए भी बीते-बी कब में रह गए। उसी कब से मुक्ति पाने के दिन मैं क्या न देख सकता था। केवल एक पुस्तक मैंने अपने पास रख ली। यह पुस्तक भी ईसाइयों की धर्म-पुस्तक—होली बाइबिल और इसमें मेरे पिताजी के हस्ताक्षर थे। मैंने अपने साधियों को जो पुस्तकें दे दी थीं उनमें से किसीके नाम मुझे याद हैं वे हैं—

1. Liberation of Italy by Countess Matrimengo ceseresco

2. Life of Voltaire by Morley

3. Life of Rousseau by Morley

4. Life of Gladstone by Morley

5. बुद्ध जीवनी—डॉ॰ रामदास शैल ।

6. दो-तीन वर्ष के भारतवर्ष और प्रवासी धार्मिक पत्रों की पत्रावली।

अन्य समयम आठ-दस पुस्तकें भी थीं, जिनका नाम मुझे इस समय याद नहीं

है। इनमें पहली पुस्तक बायबल लाइब्रेरियों में छोड़कर ग्रन्थगृह नहीं मिल रही है। और कुछ-बीबनी दुष्प्राप्य है। बारीन्द्र और हेमचन्द्र के पास सी-टो-सी से भी अधिक धर्म ग्रन्थ पुस्तकें थीं। वे सब पुस्तकें वे अपने साथ बापस ले आए थे। बहाउ दान में सभी कुछ दिन बाकी थे कि इतने में खबर आई कि सन् 1919 के संवाद के माथेन-आ में सभा पाए कैदियों में से बंठारह कैदी रिहा किये गए, ये भी सब मेरे ही साथ एक ही बहाउ में भारत बापस भेजे गए।

बैरक में लौटने के बाद यह भी पता चला कि जिस दिन मुबह जेलर ने मुक्ति का संवाद सुनाया था, उसी दिन करीब दस-प्यारह बने जेल के सुपरिन्टेण्डेण्ट ने बारीन्द्र, हेमचन्द्र और जैनेश को भी उनके मुक्त होने का संवाद सुनाया था। बारीन्द्र और हेमचन्द्र हमेशा दफ्तर आया-जाया करते थे। जेल के दफ्तर एक छोटा-सा छायाछाया था। इसका सब काम बारीन्द्र के सुपुर् किया गया था। जेल में जिल्दसाजी का काम भी होता था। यह काम हेमचन्द्र के सुपुर् था। अपने काम के विलसिले में वे हमेशा दफ्तर आते-जाते थे। जिस बड़ी सुपरिन्टेण्डेण्ट ने हमको मुक्ति की बात सुनाई, उस सब बारीन्द्र और हेमचन्द्र बताते थे उनके पैर कांपने लगे वे कहीं लड़के यह भूल गए। उन्हें यह होश न था कि वे कठिन भूमि पर खड़े हुए हैं। सुपरिन्टेण्डेण्ट ने जो कुछ काम बताया उनके कान के दफ्तर वह कुछ न गया। वे नीचबके रह गए। बैरक में बापस आये। भगवन्त की वात्सल्यको सुनाई एवं फिर दफ्तर लौट गए दुबारा काम को सम्भलने के लिए।

जब तक छूटने की बात नहीं थी तब तक भी मर के पढ़ने की कोशिश करते थे। रिहाई पाने के करीब छान-भर पहले से बारीन्द्र के छापेछाने में हम काम करते थे। मुबह बस बने तक काम करते थे। काम करने के बाद नहाते थे, स्नाना जाते थे एवं बाह को प्रायः धर्मिकाध दिन पढ़ने में लग जाते थे। जिस किसी दिन रोटी खाने के बाद भी कुछ सरकारी काम था जाता था उस दिन बहुत ही कुछ सगता था।

जिस दिन बेल महाकुछ का अवसान हुआ था उस दिन बारीन्द्र इत्यादि के मन में तीव्र भासा का संचार हुआ था। जिस सुपरिन्टेण्डेण्ट सेकर मरे ने इस अवसर पर भाषा दिखाई थी कि "सम्भव है कि तुम लोग बूट जाओ। मैंने बंदास सरकार से तुम लोगों को छोड़ने के बारे में खोरखार सिफारिश की है।" यह बय-दिवाला पाकर बारीन्द्र बरीरह के पैर जमीन पर नहीं बड़ते थे। एक दिन भापस में यह

कि उन्होंने मुझे तीन रुपये भी दिए थे। बाकी सर्ब ही सरकार का ही था। कूटने समय भी दो-दो करके हम सब कुतबेवालों को कठार में खड़ा कर दिया गया। कूटने के दिन भी ब्रिटिशिन के साथ फाटक की तरफ चले। जिस दिन मैं काले पानी पिया था उस दिन भी मुँह पर हँसी भी थी मैं स्पर्शा था। धाव कूटने के दिन भी मुँह पर हँसी थी थी मैं स्पर्शा था। मुझे जब याद है जिस दिन सर्वप्रथम मैं कालेपानी पहुँचा उस दिन मेरे मन में क्या भावनाएँ थीं। एक तो मुझे बड़ा विश्वास था कि मैं बन्दी कूट जाऊँगा इसलिए मेरे दिल में बेचना का बखर बसाया न था। दूसरी बात यह भी कि मेरे मन में यह भासा भी कि बायीं छपेन्द्र हत्यादि जो बहुत-से राजबन्दी पहले ही से कालेपानी में हैं, वे बखल ही दूसरे जानेवाले राज बन्दीयों के लिए रास्ता साफ कर रहे होंगे। इसलिए मुसीबत को सामने देखते हुए भी उस दिन मन स्वादा खंखन नहीं हुआ था। लेकिन दो-चार दिन में ही मेरा यह भावा-वास धिन्ध-धिन्ध हो गया। जिसके दिन बीतते गए, स्पर्श भी बढ़ती गई। धाव कूटने के दिन रोने की तबीयत हो रही थी और हर्ष भी मैं दिया हुआ था। जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे ही हर्ष की भावा बढ़ती गई और निराशा का भाव लुप्त होता गया। लेकिन कूटने के दिन सचमुच आँसुओं को रोकना एक मुसीबत हो गई।

फाटक के बाहर घाते ही पंजाब के सिख राजबन्दीयन धनधेरी विनाश से बच दिया कमिठ करके 'सत्य भी प्रकाश' के नारे लगाने लगे। एक ने कहा—'जो बोले सो निहान' और सबों ने प्रत्युत्तर में एक स्वर से कहा—'सत्य भी प्रकाश'। फाटक के अन्दर तक कठिन ब्रिटिशिन था। फाटक के बाहर भी एक प्रकार से जेलखाना ही था। लेकिन जब वे नारे लगने लगे तो जेलघाने के अधिकारीयन डानते ही रह गए। लेकिन बितने ज़ोरों से यह नारे लगने लगे उसने ही ठीक रूप से मेरे हृदय को यह भावना लगने लगा कि जेल के अन्दर बितने राजबन्दी इस जड़ी बन्द हैं और जो कोठरियों में पड़े हुए हैं उनके हृदयों पर इस निशा का क्या प्रसर पड़ता होगा। हर एक नारे के साथ मेरे रोई-रोई लड़े हो जाते थे। मुझ का समय था, चारों दिशा में शान्ति विराज रही थी। ब्रिटिशन्-बन्दी समूह फैला हुआ था और उसके बीच में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हरे पेड़ और पोखे से भरी हुई घुँघूँरी छोमा दे रही थीं। सिख लोगों के लयाये हुए नारे चारों दिशाओं में मूँक रहे थे। लेकिन कठार सभी बनी हुई थी और वैसे ही पूर्ववत् सब लोग ओढ़े-ओढ़े थे

कड़े हुए थे। जब कई बार नारे लगे गए तो हम सोच घामे बड़े। नारों की बगल सब पंजाबी भाषा में बोलने लगे। उसकी एक कड़ी मुझे धाव भी धार है—  
 'चिड़ियों से मैं बाब लड़ाऊँ, तभी मोविन्दसिंह नाम बरछाऊँ। पहले की ही तरह से दो-तीन धारमी इस नाम की एक कड़ी को धुक करके बाद को समान धारमी जसे दुहराते। सब छो मेरी धाँसों में धाँसु सर साध। सभी तक एक भावना दिल में बची हुई थी सब यह समझ पड़ी। अन्धमन में रहते हुए प्रत्येक दिन मैंने जी-जान लगाकर यह प्रयत्न किया था कि छूटने के बाद फिर से राजनीति में काम करने के लिए अपने को सर्व प्रकार से उपयुक्त बनाऊँगा। जिस दिन मुझे युक्ति का संवाद मिला उस दिन एक सत्र के लिए मेरे दिल में यह खयाल हुआ कि जिसके लिए मैंने धाव तक तैयारी की है वह समय धाव था क्या। क्या मैं धाव उस दिन के लिए तैयार हूँ? चिड़ों के ये धामे तुलकर कल्पना के नेत्रों से इन मयस-जमाने के दुस्म देखने लगे। पुन मोविन्दसिंह ने चिड़ियों से बाब को पछास किया था। धाव इस नवीन युग में एक नवीन पुन मोविन्दसिंह की धावस्यकता है। मैंने मन ही-मन यह सोचा कि जो नई जिम्मेदारी मेरे सिर पर धा रही है, क्या मैं उसके लिए तैयार हूँ? मेरा जीवन तो ज़रत हो ही गया, इस पुनर्जन्म के बाद से क्या अपनी जिन्दगी पर मेरा व्यक्तिगत अधिकार है? क्या मेरा जीवन धा समाज के कानों में ही म्योछावर न होना चाहिए? इस बावना ने मुझे उठ पड़ी सतावना कर दिया। हम लोग समुद्र के किनारे धा पहुँचे। समुद्र के पानी को स्पर्श करते ही मैंने ऐसा समझ कि यही पानी मेरी प्रिय मातृभूमि का भी स्पर्श कर रहा है। उसे स्पर्श करके मानो मैंने मातृभूमि का भी स्पर्श कर लिया। मैंने ऐसी कल्पना की कि मानो इस समुद्र का पानी जीवन की तरह बिसा हुआ है। उसका एक छोरे बारत वर्ष को छोरे दूसरा छोरे मुक्त स्पर्श कर रहा है। नाव पर तवार होकर कुछ दूर जाने के बाद बहाव मिला। बारीक बरछा के कुछ पुराने मित्रवैवासे केना धारि फल-मूल घेंट करने के लिए से साध थे।

जब कालेपानी घाए थे तो बहाव में मिश्र बगल भाल इत्यादि भाषा जाता है, उड़ी सबसे नीचे की तरह में हम मधुप्यों की जे-जानवार वस्तुओं की तरह सादा गया था जिस पर भी वीरों में बैड़ियाँ भी पड़ी थीं और सभीन लिये हुए विपादियों का पहरा था। धाव मुक्ति के दिन ऐसा नहीं हुआ। हम लोग जाकर डेक पर बैठे। वीरों में बैड़ियाँ न थीं न कोई पहरे का इन्तजाम। धाव जलबूध होने

सब कि हम सोच सचमुच छूट रहे हैं। बिल में घाया क्या इयर-उपर या सकरी है घूम-नामकर कुछ देखा सकते हैं ? तो देखा कि कोई मना करनेवाला नहीं है। स्वाधीनता पाने की यह प्रथम अनुभूति थी। जहाज में इयर-उपर बाहर में घूमने लगा। इयर देखा, उयर देखा, कहीं पर कैसे धावनी सवार है इनिंग किपर है जहाज पकाने की जगह कहीं है और कहीं स्नानागार और बाथगार है। खाना भी मना करने लगी और सोचा सब छूट गए। सब जाने-बीने की ठिक हुई। हिन्दुओं के लिए खाने का कोई इन्तजाम न था। या तो जमा-बनेला बजाकर रहो या जहाज के मृतसंग जहाजियों के हाथ का पका हुआ भोजन खाओ। बापेल घूम-नामकर जहाज के स्तरों के साथ जाने-बीने का कुछ मनोरंजन कर आए। इस इन्तजाम में हम बार बारमी सामिस थे—बापेल, जेपेल, हेमजेल और में। यहाँ पर यह बतला देना आवश्यक है कि जाने-बीने की सुझाव में हम लोगों ने कभी भी कोई परदेन नहीं किया। हाँ जबकि ही गो-मंसि धाव तक नहीं जाया। लेकिन जब विचार करने बैठते हैं तो बहुत के मांस में और बजड़े के मांस में क्या अन्तर होया यह समझ में नहीं आता। यह तो समझ में आता है कि भीति की दृष्टि से किसी भी प्रकार के मांस का खाना अनुचित है अन्त्या है प्रयोग है और अन्त्या है कि बहुत-से प्रसंगों पर हानिकारक भी है। सोम के रथ में आकर आत्मन के प्रत्यास के कारण एवं संय-सोह्यत की वजह से अक्सर मांस का निता है। और कभी-कभी दूसरे प्रकार के संय-सोह्यत के कारण मैंने कई दफा मांस खाना छोड़ भी दिया और फिर धुक भी कर दिया।

जब कानेपानी को आए थे तो बरसात का मौसम था। बार दिन और तीन रत जहाज में रहना पड़ा था। जब वापस जाने के वक्त भी बार दिन और तीन रत जहाज पर रहना पड़ा। आकाश साफ था। नय-मयस में कोई बंधनता न थी। जहाँ तक मुझे याद है पंजाब के मार्गस-नों के डेरियों को हम लोगों से घना रखा गया था और सम्भवतः उनके पैरों में डेरियों की भी और घाव उनके यह भी कहा गया था कि पंजाब में से जाए बाहर ही से लोग छोड़े जाएँगे। लेकिन मुझे ये सब बातें सब ठीक याद नहीं हैं। सम्भव है मैं कुछ बलती कर रहा होऊँ। यह भी याद है कि हम बार बारमी एक तरह से और मार्गस-नों के डेरी दूसरी तरह से। हम लोगों की रिहाई के सतिफिकेटी में आस-बसत के कौतम में 'केमर' लिखा हुआ था, यानी न पवाका अन्त्या और न पवाका अन्त्या। और रिहाई के

कारण के कॉलम में यह लिखा था कि 'भारसाह के ऐगाम के सिलसिले में रिहा किए जा रहे हैं'। एक और लक्ष्य करने की बात यह थी कि रिहाई के सिलसिले में यह लिखा था 'कारखानेमें एन्ड्रिय इम ए टेलीग्राम' अर्थात् बिट्टी-यन् व्यवहार के बाद प्राप्तिर में तार आया तब छूटे। मेरे जीवन की यह एक खूबी है कि आज तक जीवन-भर मेरा कोई काम निविन्त रूप से सहज सरल तरीके से कभी भी नहीं हुआ। मुझे हमेशा कठिन-से-कठिन बाधाओं का सामना करना पड़ा है। छूटते वक्त भी प्राप्तिरकार तार आता तब छूटे। प्राप्तिर छादी के सिलसिले में भी मुझे कोठों बैदल चलना पड़ा तब जाकर कहीं नकली को देखना नहीं पड़ा। इसी तरह से इस शीते-बी पुनर्जन्म के बाद फिर जब मैंने माया प्रारम्भ की तो पय-पय पर मुझे कठिन बाधाओं का सामना करना पड़ा।

घरेलों के बच्चों को मैंने बहाव पर इन्तर-उन्तर निस्संकोच घुमते हुए देखा। बहाव के वितकुम एक किनारे से ऊपर के बेच से नीचे की डेक में जाने की एक सीढ़ी थी। बोड़ी-सी ही असावधानी के कारण बच्चे इस सीढ़ी से गिरकर असाह समुद्र में जा गिर सकते थे लेकिन निस्संकोच से बच्चे नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे आया जाता करते थे कृश-श्रीवा करते थे। इनकी बैलभात के लिए कोई साधन नहीं था। इस क्षण में मेरे मन पर अपनी यम्मीर छाप गया थी। मैं हैरान रह गया कि कैसे इनके माँ-बाप निविन्त होकर, जैन से मतलब बैठे होंगे। क्या हम भारतवासी इस प्रकार ऐसे घबराह पर बेडिक बैठे रह सकते हैं ? मैं अपने को काफ़ी हिम्मत वाला समझता हूँ लेकिन मेरे लिए आज भी ऐसा सम्भव नहीं है। एक और भी बुरा भाव भी मुझे बाध है। मैं उस बहुत घाव था। बनारस के मनीस कॉलेज में पढ़ता था। इन्दीय सीम-भार बने शास को कॉलेज के प्रायण में होता हुआ कहों जा था। सामने देखा कि कॉलेज के प्रिंसिपल मिस्केन्ट साहब एक प्रोफ़ेसर के साथ जा रहे हैं। प्रिंसिपल साहब का एक धिसु-सन्तान जमीन पर खेल रहा था। पास ही आया बैठी थी। वह धिसु पेड़ पर चढ़ने को गया। आया ने रोका तो प्रिंसिपल साहब ने आया को समझाया कि बच्चों को उनकी यतिविधि में कभी रोका न करो। पेड़ पर चढ़ना चाहता है, तो चढ़ने दो। तुम देखती रहो कि वह गिर न पड़े।

जिनके साथ मुझे बार दिन तीन रात हर थड़ी एक साथ रहना पड़ा उनकी मनोवृत्ति एवं मार्गसिक मुकाब के साथ मेरा कोई ऐक्य न था। सम्भवतः

हमारे हर एक की दुनिया असम-असम थी। हम अपनी दुनिया में विचारण कर रहे थे। वे किसी और दुनिया में विचारण कर रहे होंगे। आपस में मौखिक बातचीत तो होती रही। ईश्वर भी वे लेकिन एक-दूसरे के हृदय की स्पर्श नहीं कर पा रहे थे। यह धर्मनिरपेक्ष की बात एक-दूसरे से छिपी हुई भी न थी। मानो हर एक के दिमाग के सामने एक पर्दा पड़ा हुआ था और उसी पर्दे की भाङ्ग में रहकर हम लोग एक-दूसरे से बातचीत कर रहे थे।

ऐसी परिस्थिति से उत्पन्न मैं कभी-कभी सिख-भाईयों के पास जाता था। लेकिन वहाँ भी दिल को ससम्पर्क नहीं मिलती थी क्योंकि हम लोगों का मानसिक विकास विभिन्न मार्ग से अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार विभिन्न ध्येय को निशे हुए हुआ है। इतने धारमियों के साथ रहते हुए भी मैं यह अनुभव करता था कि मैं कितना अकेला हूँ। क्या करता, मकसूर थी। पाठक यह महसूस कर सकते हैं कि मैं इस आनन्द के बिना कितना निराश्रित रहा।

इसी कड़ाक पर अखण्ड टापू के अग्रज डिप्टी-कमिशनर एवं कई एक बंदाजी मेंडीकल ऑफिसर हिन्दुस्तान आपस लौट रहे थे। बारीक बारीक से इन लोगों का परिचय था। इन लोगों से मिलने के बाद एक बड़े बारीक हम लोगों के पास आकर कहने लगे कि हिन्दुस्तान की हालत बहुत नाबुक है। अब यह नहीं पता चलता कि कौन मित्र है और कौन शत्रु। स्कूल के हेड-मास्टर, टीचर, डॉक्टर और छात्र इन में सब व्यक्तिगत पुनिस के आदमी भरे पड़े हैं। पड़ोस में जो रहते हैं उनमें कौन व्यक्तिगत पुनिस के हैं और कौन नहीं यह कहना बहुत मुश्किल है। दूसरे ओर के पर डिप्टी-कमिशनर मुहम्मद साहब से मिलकर सीटने के बाद बारीक यह कहने लगे 'मैं मुहम्मद साहब बड़ भरोसावाज हूँ। उनसे बहुत दूर तक बातचीत की। मुल-मुल की बात पूर्ण। वहाँ रहते इरफानि बातें होती-होती अस्मासकर की बात आई। मुहम्मद साहब ने अकसर हृदय से यह कहा कि 'अस्मासकर का मन बड़े ठोके स्वर से बँधा हुआ था। इसी प्रकार से सिख राजबगिचों के बारे में बातचीत हुई। सिखों के साहब एवं उनकी बिरोधी पक्ष के सामने लड़ होने की शक्ति की बहुत प्रशंसा की। ऐसा कहते हुए बारीक ने इस शुभ मुहूर्त में यह स्वीकार किया कि जो राज बंहीन जेल अधिकारियों के विरोध में खड़े हो रहे हैं वह धारम-सम्मान के लिए हमें लड़ा करते थे वे मजबूत थे और वे और सराहनीय थे। उनके मुकाबले में बारीक ने अपनी कमजोरी स्वीकार की।

महाँ पर उस्तासकर का कुछ परिचय दे देना आवश्यक है। इनके पिता धिबपुर में इजितीदारिम कमिश्न के प्रोफेसर थे। वारीम्वर वीरह के दस में शामिल होने के पहले ही उस्तासकर ने अपने घर में ही एक रसायनागार बना लिया था और वहाँ पर वह विस्फोटक पदार्थ के विषयों में परीक्षण किया करते थे। उस्तासकर बड़े बिचारशील और धार्मिक प्रवृत्ति के मनुष्य थे। वारीम्वर का दस इनके दस में शामिल होने से बहुत पुष्ट हो गया था। धुकदमे के दौरान में बयान देते समय उस्तासकर ने यह कहकर औरत धमकाया कि 'धमक बम है धमक स्वात पर जो औरत-सीता बिबाई बी वह मेरे ही हाथ का बना हुआ था। एक बलासत के कम्बरे में एक राष्ट्रीय संगीत पाकर उस्तासकर ने सबको की मृत्यु कर दिया था। प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता स्व० विपिनचन्द्र की एक कम्बरा के साथ उनका प्रलय हो गया था और बिबाई की बात स्थिर हो चुकी थी, परन्तु इस बीच में धमीपुर पड़वन्त के मामले में उस्तासकर गिरफ्तार हो गए और उन्हें सजा हो गई। विपिनचन्द्र की बड़की ने धाब तक धापी नहीं की। जब तक उस्तासकर जेल में थे तब तक तो कोई बात ही नहीं थी। जेल में उस्तासकर का मस्तिष्क विकृत हो गया है, वह जानकर एक सजने धापी न करना ही उचित समझा। वहाँ तक मुझे मालूम है उस लड़की ने फिर धापी नहीं की।

गण्डमन के जेल में रहते हुए उस्तासकर एक दिन कहने लगे कि मास्टर क्यों मैं जेल की मजदूरत करूँ। एक बायी के लिए जेल में भी बसावस का रास्ता प्रस्थित करना ही मुनासिब और इरजत का रास्ता है। इस तरह से जेल में कई बार जानून तोड़कर उस्तासकर ने तरह-तरह की सबायें पाईं। एक हफ्ते जेल के बाहर कड़ी धूप में ईंट की बट्टी में काम करते समय पहले की तरह काम करते से इनकार कर दिया। उस्तासकर और उनके कुछ साथियों को जेल में ले जाया गया और उनका कोठरी में दीवास में भेजे हुए लोगों के हस्ते से हथकड़ी में बांधकर इन्हें बाड़ा कर दिया गया। इसे जेल में लड़ी हथकड़ी कहा करते हैं। जानूनम वह एक दिन में आठ बटे तक ही सगाई जाती है एवं लगातार सात दिन से अधिक ऐसी लड़ी हथकड़ी लगाने का हुनम नहीं है। लेकिन जेल के अधिकारी जब जब किसी कैदी को ससाना चाहते हैं तो हम सब जानूनों की पाबन्दी नहीं की जाती। बज्जर के कामकाज में कार्रवाई जानून के हिसाब से सही तौर से रखी जाती है, लेकिन धमल में कुछ और ही होता है। अगर कोई कैदी बलासत के मामले



यह सब बातें साबित करना चाहे तो यह पैरमूर्मानि-सी बात है, क्योंकि बेत के अधिकारियों के खिलाफ कोई यबाह नहीं मिल सकता। और जो कुछ हो उस्तास कर को लड़ी हकड़ी ही हासत में ही एकसौ तीन या एकसौ चार दिनी बुझार भा गया। फिर भी वे लड़ी हकड़ी में ही रहे गए। इस हासत में वे बेहोश हो गये। बेहोशी की हासत में वे अस्पताल भेजे गए एवं जब उन्हें होश आया तो देखा गया कि वे पागल हो गए हैं। यही उस्तासकर कहा करते थे कि चाई सब ऐसे मामलों के परसे पड़े हैं कि वे हाइ कार्पे मांस पाएँ जमड़ी से उपजती बनाएँ। अख्खन के डिप्टी-कमिशनर सुबस साहब उस्तासकर के विषय में बहुत ऊँचे अयास रखते थे।

जब बारीन्द ने आकर सुबस साहब की बातें सुवाई और इस चित्तचिते में उस्तासकर का जिक्र आया तो मुझे उस्तासकर के बारे में ऊपर लिखी बातें मालूम हुईं। वे सब बातें सुनकर पिछले दिनों के वे नजारे घाँवों के सामने झूमने लगे और मैं सहज-सा गया। उस समय के इतने आत्माचारों की रोमांचकारी कहानी देने सुनी जिसे वहाँ पर भिजाने की हिम्मत मुझमें नहीं है, क्योंकि अदासत के सामने इन सब बातों का समुत्त में नहीं दे सकता।

जब मैं कासेपानी आया था तो प्रकृति विकर भी। अक्सर का महीना था। घाँबी-पानी और बाबल का मरजना अहास के नीचे की तरह मैं बैठे-बैठे ऐसा मालूम हो रहा था मानो एक प्रलयकारी बाढ़ में बुनिया डूब रही है। सब सौंठे बस्त प्रकृति शान्त भी मानो हम सबके छूटने से चारों दिशाओं में प्रफुल्लित हो रही हो। रात में हम हुआ कि प्रातःकाल यह देखना है कि समुद्र के बीच से सूर्योदय कैसे होगा। सोते-सोते जब पहले घाँव कुसी से देखा कि चारों दिशा में जवा की लानी स्मित ज्योति से उपमानित हो रही थी। मैं उठ कहा हुआ। समस्त कि बनत भा गया है। सूर्योदय सब लोभे ही वासा है। देखा कि हेमचन्द्र भी पट बैठे हैं। मैंने धीरों को भी जमाना चाहा लेकिन हेमचन्द्र ने कहा धमो घोड़ा धीर देख से कि मुबोरस में कितनी देर है। हम दोनों जेक के किनारे आकर पड़े हो गए। रेलिंग की पड़ककर धिठिल की ओर टकटकी लगाये लाकते रहे। नीचे समुद्र का पानी उच्छलित हो रहा था। हम सोपों से मे जितो के पास बड़ी तो भी ही नहीं। पता नहीं चल रहा था कि बनत कितना हुआ। लड़-लड़े हम सोन थक गए लेकिन उबा के अफास में कुछ धंवर नहीं हुआ। जब भी हमारे सामियों में से कोई जवा

न था। मैं धीरे-धीरे हमचक्कर बहाव में इधर-उधर घूमने लगे ताकि किसी मूरत से पता चले कि कस्त क्या है। धायद स्टुमर्क के पास से पता चला कि धमी ठो ठीन ही बना है। दिस में धायद धमी बोझा धीरे सेटे रहें, लेकिन हमचक्कर ने मुझे रोक लिया धीरे दोनों डेक बेयर में बा धायद किसी धीरे नीच पर बैठ गए। ठीन बने से डरीक साड़े पाँच बजे तक बों ही बँठे रहे। धायदर्य की बात तो यह थी कि समुद्र में उपा की स्थिति तीन-तीन घण्टे तक डरीक-डरीक एक-सी रही। साड़े चार या पाँच बजे से मेरे घुसरे सापी भी पास आ गए। चारों दिशाओं में तो कनाला छा गया लेकिन जिस केन्द्र से चारों दिशा में यह ज्योति विकीर्ण हो रही थी उसका धमी भी कोई पता न था। हम सब धस्किर हो गए। केबल हर बड़ी यही सोचते रहे जाने समुद्र में सूर्योदय कैसे होता है। यह इन्तजारी सब बुरी लगने लगी। लेकिन जिस दुस्य को देखने के लिए चप्पों से बँठ हैं सब उस दुस्य को बिना देखे कार्य कैसे? एकाएक सबका मन बचन हो उठा धीरे हाथ कसाकर सबों ने इशारा किया कि वह सूर्योदय का प्रारम्भ हुआ। सबों ने देखा एक ज्योति-पुंज समुद्र से धीरे धीरे उभर रहा है। चारों दिशा में धकाह पानी धीरे पानी। धनन्त का धामास कुछ मिलने लगा। एक तरफ सूर्योदय हो रहा है दूसरी तरफ धनन्त मानव मुँह होकर बर्छनीय हो रहा है। मानो धान्त धीरे धनन्त का मिसन हो रहा हो। मस्तक के ऊपर धनन्त धाकाध नीचे धनन्त घटा के बीच एक हुमाय ही बहाव इच्छापूर्वक एक विक्षेप दिशा की तरफ धसाध्य साधन करने की माँति इस धनन्त दिशा को पार करने की अवश्य चेष्टा कर रहा है धीरे दूसरी तरफ ज्योतिपुंज की मति से भी यह प्रतीत होता था कि धनन्त के साथ धान्त का मिसन है। धीरे हम निताण्ट दिशाहीन होकर घटक नहीं रहे हैं। सूर्य का उदय धन प्रत्यक्ष हो रहा था। धर्मयोसाकार ज्योतिपुंज समुद्र के ऊपर बिछाई दे रहा है। लेकिन स्वतः रूप में सूर्यास्त के समय जैसे यतोहर रूप से धनधनीय साहित्य के साथ सूर्य बिछाई देता है समुद्र के बीच सूर्योदय के समय वह साहित्य न था। उस दिन धाकाध में एकधन मेघ न थे। सम्भव है इतीसिए सूप की क्रिनों से कोई रंग बिखर नहीं रहा था। समुद्र के बीच सूर्योदय के समय एकमात्र विचित्र बात हम सोचों ने यह देखी थी कि धनानक वह ज्योतिपिंड जो धमी तक बूटाकार पानी के ऊपर बिछाई दे रहा था मानो एकाएक पानी से बूट कर धनय हो गया धीरे धाकाध में सूर्य के रूप में बिछाई देने लगा। इस विचित्र

कूबने को छोड़कर समुद्र में सूर्योदय के बख्त भीर कोई धॉक्रेविटन स्पूटो हम सोपों में नहीं दिख पाई। कूब ने तो कहा कि यही समुद्र में सूर्योदय की स्पूटी है। नृपा तीन घंटे बरबाद हुए।

हम सब अपनी जगह पर बसे आए भीर हँसी-दिस्वामी में बख्त बिठाने लगे। जाने-जीने की कोई जास थीर तो मिलने को थी नहीं भीर न पससे पैसा ही था।

आकाश की तरफ या शिथिल की तरफ देखने में यह पता नहीं चलता था कि हमारा जहाज किसी तरफ घबराह हो रहा है या नहीं। लेकिन नीचे पानी की तरफ देखने से प्रतीत होता था कि किसी भ्रष्टा दिसा की तरफ हमारा जहाज जाने बड़ रहा है। घनघन समुद्र में एकमात्र घपने ही जहाज को पानी के ऊपर तैरते देखकर जैसे एक घोर घनघन का घर्ष घनुषक करते थे जैसे ही दूसरी घोर मेरे मन में एक घसहायता की भावना एक प्रकार की घण्यत घासका की सृष्टि करती थी। मैं जहाज के पीछे की तरफ चला गया। उस निर्जन स्थान में घकने लगे होकर मैं देखता था कि कैसे हमारा जहाज घबाह समुद्र पर तूण्य-सा बिखोम पैदा करके समुद्र पर पानी का रास्ता बनाता चला जा रहा है। मन में घावा कि यदि हम फिर जाएँ तो क्या कोई सहायता हमें मिल सकती है। बोकी देर में फिर वही बात याद आई कि मेरा जीवन तो समाप्त हो चुका था मेरी इस नई दिस्वामी पर मेरा क्या अधिकार है? दिवा-स्वप्न देखने लगा। क्या फिर देव-सेवा के कार्य में निर्मीकता के साथ घपने जीवन को लगा पाऊँगा? मुझे याद आया कि मेरी माता बिचका है और मैं आज तक किसी भी प्रकार से अपनी को लौकिक दृष्टि से मुखी नहीं कर पाया। क्या अब लौटकर घपनी माता के लिए कुछ कर पाऊँगा? अब तो माताजी घावी के लिए घबरस कहेंगी। घारी मैं घबरस करूँगा लेकिन घारी करने के बाद क्या मैं फिर त्याग के रास्ते को घृण कर सकूँगा? इसी सब भावनाओं में मैं तल्लीन था। जब मैंने एकाएक सिर उठाया तो देखा कि हेमचन्द्र मेरे पास छड़े हुए हैं। उनके घाघह करन से मैंने घपने मन की सब बातें बतलाई।

हेमचन्द्र घानूनघो एक घति घद्वय सज्जन थे। जब जेल में आए हूँ तो वह घबस्त जवान रहे होये। लेकिन जिस दिन मैंने प्रथम बार घण्यमन की जल में कदम रखा था उस दिन जब मैंने दूर से हेमचन्द्र को एक स्टूस पर बैठे देखा उस दिन का दुर्य मैं अभी नहीं भूल सकती। शरी के बाद साथ से घपावा सज्ज हो गए हैं घारी तक बात बटक रहे हैं घाघ में चला है और रंग बहुरी। मैं यह सोचने

तथा कि भारत के स्वाधीनता संग्राम में इन सज्जन ने अपने नाम सफेद कर लिये, सान्नों से जल में पड़ हुए हैं। मुकर्मकम भिन्नतसील सम्मीरता-मंडित दिशाई दे रहा है एकाग्रचित्त से कोई कितना पड़ रहे हैं।

कालेपानी में भाकर एक नवीन युवक बलवित्त होकर उन्हें इस तरह से टकटकी लगाकर देख रहा है हेमचन्द्र को इस बात की कोई खबर नहीं। अपने देश से सहसा चील की दूरी पर समुद्र-परिवेष्टित एक छोटे-से टापू के कारागार में एक श्रौं के साथ एक नीलबान का इस परिस्थिति में घिसना घात्र श्री मुझे पाद है। वे वही हेमचन्द्र हैं जो अपनी आघात बैचकर फांस चले गए थे बम हत्यादि बनाना सीखने के लिए। जिस समय हेमचन्द्र इस वैप्यविक मनोवृत्ति को लेकर फांस गए थे उस समय भारत के राष्ट्रीय क्षेत्र में किसी नेता ने भी यह कल्पना नहीं कर पाई थी कि भारत के नीलबानों में देश को स्वाधीन करने की इतनी प्रबल आग्रहपूर्ण आंतिकारी भावनाएँ छिपी हैं।

आज वही हेमचन्द्र बारह साल जल-जीवन व्यतीत करने के बाद घर वापस आ रहे हैं। घर में उनके स्त्री है एक एक पुत्र। बारह साल में अष्टमन में उन्होंने जिसकी पुस्तकें एकत्रित की थीं अपने पुत्र के लिए आज वे सब पुस्तकें अपने साथ लिये जा रहे हैं। जो युवक काले पानी में डूबकर रहते ही उनकी बैलकर दंड रह गया था आज मुक्ति पाने के दिन जहाज में वे उसके ही पास भाकर मित्र की तरह बैठे हुए हैं और बहिष्य की आवाज और आकांक्षाओं की बातें पूछ रहे हैं।

दिन योंही बीत गया। आज बहान पर आखिरी रात थी। हम सब भात भूमि के कूटीय था गए हैं। बहुबाधित तटभूमि अभी दिखाई नहीं दी है। सम्भव है कम दिखाई दे। बहान में बिजली की बलियाँ कापी जल रही थीं। चारों दिशाओं में सफरार छा रहा था। आकाश में नक्षत्र चमक रहे थे। मित्रिज स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था। अमन्त घन-अच्छल अतल समुद्र में समा गया था। मैं भी कहिए कि सीमाहीन समुद्र असीम तल में समा गया था। इस असीमता के बीच में जल के बुदबुदों की तरह हमारा जहाज समुद्र की सहरा के ऊपर मासमान था। चारों की बजह से अचकार समुद्र के बीच अमानक आसून हो रहा था। मैं डेक पर रेलिंग के फिनारे खड़ा था। नीचे समुद्र की सहरें बज रही थीं। अघर बहान पर बिजली की बलियाँ न हमसी तो नीचे की सहरें बिसकुल न दिखाई देतीं लेकिन बिजली की बलियों की रोशनी के कारण नीचे सहरों का भीषण रूप मिले

देखा। यह दृश्य भी दृष्टना सम्भव नहीं। भवानो भयं भीषणं भीषणानाम् इति श्लोक की पंक्तियाँ सुनी ही थीं। अब यह दृश्य आँखों देखने का अवसर प्राप्त। छोटी-छोटी बत्ती के सहारे पहल धर्मकार ने मानो आँखों के सामने रूप चित्र किया हो। धर्मकार का भी रूप होता है। यह पहले-पहल ही अनुभव किया। सहर्ष उमड़ रही हैं, लेकिन वह पानी नहीं साभूम हो रहा है। यदि हम अचानक पानी में गिर पड़ें तो कुछ अनिर्देश्य घटना कराना लोक में या पहुँचने इसका कोई ठीक ठिकाना नहीं है। काम की कराम आवा मानो सब सहर्षों के रूप में समझ रही है। धर्मकार को भी देखा जा सकता है। जिन्होंने देखा है वे ही स्वीकार कर सकते हैं दूसरे नहीं।

सम्भव है रात को किसी समय वाइलट हमारे बहाज में सवार हो गया हो। प्रातःकाल सुदूर में एक रेखा की तरह स्वच्छ भूमि को रेश बाँटा था, ऐसा मुझे लगता है। नदी और समुद्र के संगम-स्वम को कुछ समय में पार किया था वह मुझे ठीक याद नहीं। अभी भी समुद्र का या नदी का नहीं थी, मैं इसको भी ठीक नहीं कह सकता था।

बीस दिन समुद्री पक्षियों को समुद्र में मछली का शिकार करते हुए देखा। एक बार मछलियों को भी बोझी दूर तक बढ़ते हुए देखा था। वे समुद्री पक्षी जिन्हें धंसेली में खिराई कहते हैं। अश्मन टापू से दो सी मील की दूरी तक दिखाई दिए, और इधर भी मारुत की तटभूमि से ही मील की दूरी पर दिखाई दिए होंगे। अब मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है लेकिन वहाँ तक मैं स्मरण कर सकता हूँ वे समुद्री पक्षी बीच समुद्र में नहीं दिखाई दिए थे। यूरोपियन वृक्ष और तिनियाँ इन पक्षियों के खाने के लिए कुछ फेंक दिया करते थे। समुद्री पक्षी इसलिए बहाज के बाँध-पाँध भूख जड़ा करते थे। इन साहस्यों की मरीसत इन पक्षियों की जीभों पर देखकर हम भी धामन्य उपभोग करते थे।

हमबर्ग ने कहा कि हम लोग रात में बंगालागर संघर्ष कर चुके हैं। प्रातःकाल में भी बहुत दूर पर जो शीत रेखा दिखाई दे रही थी इसमें संदेह है कि यवार्थ में वह रेखा तटभूमि की छोटक भी या नहीं। हम लोगों में बात छिड़ी कि जाने कितने दिनों में हममें बहाज बसानेवाले धादमी वाइलट इत्यादि पैदा होंगे। कितना दिन बढ़ता गया उसनी ही तटभूमि की रेखा निरन्तर होती होती गई। वह दृश्य बड़ा मनोहर था। अब दृष्ट्य रूप से तटभूमि दिखाताई नहीं मनी थी,

सेकिंग इन्टर पानी का प्रसार समुद्रवत् ही था। एक तरफ जल का अनन्त प्रसार, दूसरी तरफ सटभूमि का इंधित, यह सात धीरे धनन्त का सम्मेलन बहुत ही हृदयवाही होता है। केवल धनन्त से हमारा काम नहीं चलता और न केवल सात से ही हम घुट रह सकते हैं। धनन्त समुद्र में भी बाधमान न जहाज मेरे साथी के जहाज के मिठासी भी साथी के सम्भव है इसलिए वहाँ पर सात धीरे धनन्त का भिन्न रहा। लेकिन भिरे धनन्त में भी चबरा जाता है। सम्भव है मुझसे धनी भी बाधमाएँ प्रवण हैं इसलिए धनी केवल धनन्त से भी चबराता है। एक दृश्य श्री रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानन्द को कुछ अनुभव कराया था। स्वामी विवेकानन्द बकपुकर कहने लगे थे, "धनी मेरे माता-पिता हैं भाई कहने हैं।"

दिन बढ़ता गया क्यामस सटभूमि धनन्त हमारे करीब घाटी गई। जल स्वाभलता के बीच समुद्रों को काम करते देखकर हमने एक धनोर्ध्व धनन्त का अनुभव किया। इन समुद्रों को देखते ही मानो इनके परिवार-वर्ग को भी मैंने देखा। उनके गृहस्थ-जीवन के सुख-दुःख को इनकी कर्म-प्रवेष्टा के साथ पकित देखा। क्रमशः पुरुष के साथ नारी को भी चलते फिरते देखा। छोटे-सोटे नव और नवियाँ इस समुद्रमासी नदी में साकर सम्मिलित हुई हैं। इसके किनारे-किनारे सटभूमि के मान्य में बेटी दिखाई देने लगी। इन बेतों के बीच काम बसे हुए थे। सब भी नदी बहुत प्रसारित थी। सटभूमि बने बूझों से सोभावमान थी। नदी के दोनों ओर हरिवासी धीरे-धीरे पानी—यह वृक्ष बढ़ा मनोहर था। इस नद-नदी-हरिवासी-परिवेष्टित साम-जीवन को देखकर मन में धनोर्ध्व प्रसन्नता होती थी। कुछ दिनों से पारिवारिक जीवन से धनय होने के कारण मन में—धन-त्वस में पारिवारिक जीवन के प्रति स्तुहा बनी हुई थी। इसके कारण या सम्भव है बन्धन-बन्धन के संस्कार के कारण पाँच साल के बाद जब मैंने स्त्री-पुरुष परिवेष्टित पुरुष को नर-महस्वी के काम में लया हुआ देखा तो हृदय में एक दम्भास-सा पैदा हुआ। सम्भव है, श्रीमार्थ जीवन धनोर्ध्व करते-करते वाष्पस्थ-जीवन के प्रेमास्वादन की धनोर्ध्व भिन्ना के कारण ही मैं चारों ओर की प्रकृति में इतना अनुभव कर रहा था।

दोपहर के बाद जब दिन हमने को हुआ तो हमारा जहाज मोर्गो से भरपूर सटभूमि से बिरी लकीर्ण नदी के भीतर से गुजर रहा था। मैं धीरे धीरे धनन्त पाठ

पास खड़े थे। कारवार के सिमसिमे में मास से लबी हुई बड़ी-बड़ी मोक़ाएँ इधर उधर धा-जा रही थीं। अर्धनग्न मस्नाह इन गावों को ले रहे थे। कमर के नीचे धीरे-धुटने के ऊपर तक ही वे कुछ कपड़े लपेटे हुए थे। सुबह से शाम तक कठिन परिश्रम किया करते थे। इन्हें बूँप और पानी की समान रूप से धबहेलगा करने पड़ती थी।

इन अर्धनग्न मस्नाहों को देखकर हेमचन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा कि बेसो बेस में ऊँदियों को फिर भी कपड़ा तो पहनने को मिलता है। बेस के अन्दर बूँप और पानी में ऊँदियों से तो काम नहीं लिया जाता। काम करने की एक सीमा तो है। लेकिन ये हमारे आजाद बेसबासी अर्धनग्न अवस्था में दिन कठिन परिश्रमों का सामना कर रहे हैं। बात तो सच थी, लेकिन मुझे वह पसन्द नहीं आई। मुझे ऐसा लगा कि बेस के अधिकारीयों के पक्ष में यह बर्तीम थी जा रही है। अण्डमन बेस के क्रूर एवं निर्भय अधिकारीयों के पक्ष में कोई बात सुन सकना मेरे लिए सह्य न था। मेरे पिता की बेचनी ने मेरे चेहरे को अवश्य विकृत कर दिया होगा। मैंने अपने उस विकृत चेहरे को अपनी आँखों से देखा। मैंने उत्तर में हेमचन्द्र से कहा कि अपनी स्वाधीन इच्छानुसार चाहे कितनी भी मुसीबत हम बर्दाश्त कर लें वह सब बबारा है। लेकिन जिस मुसीबत को सेलने के लिए मुझे मजबूर किया जाए वह चाहे कितनी भी बड़ी हो, वह पहाड़-सी चारी नाजूम होती है। मानूम नहीं हेमचन्द्र ने इसके उत्तर में क्या कहा था। दिन डलने लगा नहीं बीरे-बीरे संकीर्ण होने लगी। मानूम होने लगा कि अब कसकटा निकट है। जन कोलाहल से जटी विद्याल नगरी की याद आते ही मन में एक अजीब चंचलता पैदा हुई। कहीं धनु से बिरे अण्डमन के कारवार का जीवन और कहीं बोरों से भरी-पूरी बस्ती के बीच विद्याल राजधानी जहाँ की मधुर स्मृति कारवार की काल-कोठ-रियों में हमें निरन्तर प्रमुख्य कटती रहती थी। मुक्ति का पुरा आस्वादि पाने के लिए मन व्यग्र हो उठा। यह हम जानते थे कि भारत में किसी को पता भी नहीं है कि अण्डमन के राजबन्दी मुक्त होकर वापस आ रहे हैं। कमकता के बम्बरवाह में किसी भी सुपरिचित स्नेहापूर कमनीय मुख के देखने की आशा न थी। महत् के बाव पर सीट रहे हैं। असीम कुछ की भेलने के बाद स्नेहीमन परिवेष्टित संघार में लौट रहे हैं। ऐसे अचर पर दिन चाहता था कि स्वदेश की भूमि पर सर्वप्रथम रुदन रखते समय किसी स्नेही से मुलाकात हो जाए, लेकिन यह दुराणा

मात्र थी। जेब में रहने समय जब हम दिन बहाने के लिए बातें किया करते थे तो एक दिन सपेग्रनाथ ने यह दृश्य चींखकर हम लोगों का मन बहुमाया भा विमाना रूप सोय छूट रहे हैं। श्वेत ऐरावत धाकर झूठ उठाकर गंध पुष्प-मास्य उठा रहा है और दण्डाभाषाई बस्त्रालंकार से भूशोभित होकर सब-निगाह स हम सोय का स्वागत करने के लिए चारों दिशाओं में खड़ी हैं। कल्पना ही से अब कासेना है तो फिर बसी मला किसी भी बात की क्यों रखें। बंशित जब इस तरह के दिन बहाना करते हैं। धाज जब जीते जी हमारे जन्म के आस्वादन का समझाया एक बहुबांछित कलकला महानयनी समीपवर्ती हो धाई तो उत्साह साव मन में एक विषाद की छाया भी थी। यममें सीधे बाधना थी कि जहाँ से उठरते वस्तु किसी स्नेही से मुलाकात हो लेकिन हम जानते थे यह महान होने का।



सो करो। क्रांतिकारियों के साथ ये उतनी गहरी सहानुभूति रखते थे जितनी मुक्ति पाने पर कलकत्ते में क्रम रखते ही धाब सीधा मैं उन्हीं बी० सी० बटर्फी के मकान की तरफ रवाना हो गया। मुझे उनके स्वाग का ठीक पता नहीं था। कालीबाट में ट्राम से उतरकर मैंने एक बुधक से बी० सी० बटर्फी का पता पूछा। चौभाग्य से इस बुधक ने मेरे साथ बहुत सहानुभूति बिछाई। लेकिन जितनी धाबा की उतनी सहानुभूति नहीं मिली। पहले तो इस बुधक ने मुझे यों ही समझ के दासना बाढ़ा कि धमक रास्ते पर जाने पर मस्तब्य स्वाग को पहुँच जाऊँगा। लेकिन जब मैंने बताया कि मैं अपनी सीधा कालेपाणी से जा रहा हूँ यदि धाप क्रयापूर्वक मेरे साथ हो लें और बी० सी० बटर्फी साहब का मकान बिछसा दें तो मैं बहुत अनुगृहीत हूँगा। इसपर पहले तो यह बुधक हँसकियाया लेकिन मेरे अनुरोध करने पर वह मेरे साथ हो लिया। कालीबाट से बालीगंज तक एवं पुनः बालीबाट से कालीबाट तक इस बेचारे ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। कालीबाट से बालीगंज काड़ी दूर था।

प्रथम साक्षात् मैं बटर्फी साहब ने मुझ नहीं पहचाना, लेकिन एक दो सत्रों के बाद ही वे कुर्सी से कूबकर उठे हो गए और चौककर मेरे गले से भग गए। फिर हमें प्रेम और भादर के साथ अपने पास बैठाया और टेबुल पर से मेरी ही लिखित एक चिट्ठी उठाकर मुझे बिलसाई। यह चिट्ठी मैंने अण्डमन से अपने माई को लिखी थी। मैंने लिखा कि इस चिट्ठी में कई स्वाग पर स्वाही से कुछ माइमें इस प्रकार सीप-पोत दी गई थी कि पढ़ी नहीं जा सकती थी। इस चिट्ठी में और बातों के साथ मैंने यह भी लिखा था कि भारत में अब नया दासन बिबाग प्रचलित होने वाला है। अधिकारीजन यह कह रहे हैं कि भारत को अपनी राजनीतिक उन्नति के लिए पर्याप्त अवसर दिया जाएगा। यदि यह बात सच है यदि इन्हीं एवं फ्रांस की तरह हमें भी अपनी उन्नति के लिए उचित धौका मिले तो ऐसा काल पामल होगा जो कि सामान्य जन-सरायी के रास्ते को ही पहल करेगा और यों ही अपनी जान को जोखिम में डालकर बन्धुक और तलवार के रास्ते को मस्ति दार करेगा। क्रांतिकारीजन सबभूष पामल तो हैं नहीं। यदि अधिकारीजनों का कहना किसी हकीकत है तो उन्हें अवश्य राजबन्धियों को छोड़ देना चाहिए। इस चिट्ठी को मेरे माईसाहब ने बी० सी० बटर्फी के पास भेज दिया था। बी० सी० बटर्फी साहब ने यह चिट्ठी दिसमाकर मुझे यह कहा कि उन्होंने इस चिट्ठी को अपने कमुर की मुखेदनाय बन्धों को दे दिया था। उन्होंने असेम्बली में इस चिट्ठी

के बाजार पर राजबन्धियों को छोड़ने के लिए जोरदार धपील की थी एवं उनके राज-भूखों को यह चिट्ठी बिललाई भी थी। बी० सी० बटर्जी ने यह भी कहा कि वे स्वयं माटेयू साहब से इस सम्बन्ध में मिले भी थे। उनके मुँह से मैंने यह भी सुना कि जिस समय वे मैनपुरा केस की पैरवी कर रहे थे उसी समय सभाद की घोषणा का पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें राजबन्धियों को छोड़ने की इच्छा प्रकट की गई थी। सी० आई० डी० के डिप्टी-इंस्पेक्टर जमरस सैम्ब्स साहब भी उस समय बटर्जी साहब के पास ही थे। सैम्ब्स साहब ने बटर्जी साहब से कहा कि छपीम्ब की माता से माफी की दरखास्त दिसवाई। और इसपर उन्होंने स्वयं सिफारिश कर देने को कहा। बटर्जी साहब ने तार से मेरे मामा को इस बात की इतिमा दी। मामा ने माताजी के मार्फत दरखास्त दिसवाई। सैम्ब्स साहब ने इस दरखास्त पर सिफारिश लिख दी। यह इसी सबका परिणाम हुआ कि मैं कारावास से मुक्त हो गया और बी० सी० बटर्जी से यह सब मुझमें का सीमाय्य मुझे प्राप्त हुआ।

। बी० सी० बटर्जी ने मुझे तेईस साल की अवस्था में देखा था। जब जब मैं लौटकर आता तो मेरी अवस्था अट्ठाईस साल की थी। बाल बहुत बढ़े-बढ़े हो रहे थे। बकरे की बाड़ी की तरह मेरी बाड़ी भी बढ़ी हुई थी। इसीलिए प्रथम दर्शन में तो बटर्जी साहब मुझे पहचान नहीं पाए थे। बटर्जी साहब ने जाहा कि मेरे भाई को तार द्वारा मेरी रिहाई का सबाद भेज दें। मैंने मना दिया। मैंने जाहा कि प्रचानक घर में जाकर लड़ा हो जाऊँ। बहुत हर्ष के साथ बटर्जी साहब से विदाई ली। एक मुक्त डेटेयू भी बटर्जी साहब के पास बैठे थे उनसे भी विदाई ली। पुनः अपने उस अपरिचित युवक के साथ कालीघाट में बापल सीट घाए। रास्ते में मैंने इस युवक के साथ राजनीतिक मामलों पर बातचीत की। कसकता में क्रदम रखने के बाद रंगस्ट भरती करने की मेरी यह सर्वप्रथम चेष्टा थी। कालीघाट में मेरे जेबे में भाई रहते थे। मुझे पता था कि वह कहाँ रहते थे। बटर्जी साहब के यहाँ से लौटने के बाद मैं सीमा भाई के पास नहीं आया। मैं तो सबसे पहले इस युवक का ही घर देखने जाता गया, तब कहीं बाद की भाई के पास आया। लेकिन दुःख के साथ बताना पड़ता है कि रंगस्टी का मेरा यह प्रथम प्रयास विफल रहा। यह युवक मेरे काम में सहायक नहीं हुआ। इस वक्त तो मैंने सिर्फ इस युवक का केवल घर ही देख लिया एवं जोड़ी-बहुत राजनीतिक घामोचनार्थे कीं। बाद को मैं जब कसकता आया तो मैंने फिर एक बार धीमा किया एवं कुछ दिनों तक यह प्रयास करता रहा

परछाई से भी मुझे बिल भी। पुलिस के डारा जीवन में बहुत-कुछ दुःख पाया या सम्भवतः इसीलिए पुलिसवालों की हवा से भी चिड़ पैदा हो गई थी। कालेपानी के पाँच सात काटने में बिलभी भी पीका मालूम हुई हो उसके मुखाबिसे में भास दिग्भी के पाँच बंटे बहुत भारी प्रतीत हुए। आखिर इसका भी अन्त हुआ। पुलिस बासे हमें फिर हावड़ा स्टेशन से गए। छँदियत यह थी कि सब की बोड़ा जोड़ा नहीं आया पड़ा। जालीस-मचास मुबल यन्त्रियों के लिए कागजात के आधार पर पुलिसवालों ने टिकट कटवाया। स्टेशन पर टिकट देनेवाली ऐम्प्लो-इन्डियन मेम साहिबा टिकट देते-देते चिड़ गई और अपयत्न कहने लगीं। मैं साबने ही टका था। सम्भव है मुस्कटाता रहा होऊँ। बिल में तो मैं हँसता ही था और सोच रहा था जलो मेरी भी बिलती बचमाओं में हो गई। मैं डर रहा था कि कहीं पुलिस घर तक मेरे साथ न जने। लेकिन जब टिकट मेरे हाथ में लेकर पुलिसबासे जने गए तो मानो मनो बोझ सिर से उतर गया। रेल के छोटे-से बिम्बे में तो प्रभवय रहे लेकिन मैंने यहीं सर्वप्रथम यथार्थ स्वच्छन्दता अनुभव की। मानो मैं बह्नी-तह्नी बिचरने लग गया हूँ। रेल की रफ्तार धुंके भीमी मालूम पड़ी। भूकान में सवार होकर यदि मैं घर पहुँच सकता तो मानो भी को कुछ तत्सन्नी होती। रात बंसे बीती मुझे याद नहीं। जाड़े के दिन थे। मेरे पास न कोई बिस्तर या न पहनने के पत्रं कपड़े। बायीं का बिधा हुआ एक कोट और एक बोरी और कुछ पैने मेरे पास थे। जस के दिने हुए कुछ कपड़े भी साथ थे।

मुझे खूब याद है भोर होते ही मैं बनारस पहुँचा। अचानक में छूटने का जो आनन्द है वह मुझ बनारस पहुँचने पर ही मिला। मेरे लिए बनारस से त्रिव भूमि संसार में और कोई नहीं है। मेरी यह अग्रभूमि है शिशु अवस्था मैंने यहाँ पर कसे बिठाई, मुझे यह याद नहीं और बाल्यावस्था मैंने वहाँ बिठाई नहीं लेकिन जीवन का जो अन्त अंत है जो मधुरतम माग है अपनी बही किशोरवस्था मैंने बनारस ही में बिठायी है। इसलिए मेरे जीवन की मधुरतम स्मृति बनारस के बाबू मण्डस में बनारस की भूमि के प्रति रज-रज में अन्तर्गत के लिए बिजड़ित है। स्टेशन से जब घर की तरफ जाता तो प्रति क्षण आनन्द की भाषा बड़ती गई। लेकिन जिस जग मैंने इसके से अंतरकर गली के भीतर रुकन रखा तो मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि रुकन के नीचे की भूमि भी मानो कठिन एवं स्थिर नहीं है मानो वह भूमि भी आनन्द के स्पर्श से अँबल हो रही थी हिल-जुल रही थी। मैं

बलकर बर नहीं धाया बहिरु दीड़ता हुआ बर पहुँचा । गया हबमावेग की प्राकर्षण समित बरिभी की मध्याकर्षण राक्षि ही की धरत है कि अण्डमन से जब बसे तब से लेकर बर पहुँचने तक वह प्राकर्षण का वेग बढ़ता ही गया धीर बर के पास धाकर धाधिर मुझे रोड़ना ही पड़ा । मकान के पीछे के कमरे का बंमसा लुसा हुआ था । मैं मुहूर्त भर जगले के सामने धाकर खड़ा हो गया । कई एक मुबक नहीं भेटे हुए थे । इनमें मेरे दो भाई रवीन्द्र धीर बितेन्द्र भी थे । रवीन्द्र मुझे देखते ही हर्षोत्फुल्ल स्वर से नाति उचक कण्ठ से बिस्सा उठे, "घरे दादा हैं । रवीन्द्र बिस्वरे ही ऐसे उचक पड़े मानो नीच से किसीने खोर का बक्का देकर उन्हें ऊपर फेंक दिया हो । बूमकर बरबाजे होते हुए अन्दर घाये एक हरएक को मैंने छाती से जोर से लिपटा लिया । मेरी यह नई बिन्यासी थी । मेरा यह नया बन्म प्रारम्भ हुआ ।

जिस रोज मैं बर पहुँचा उसके पहले दिन ही मेरे कमिष्ठ भाता का सपनमन संस्कार हो चुका था । बर में यह किसी को पता न था कि भाब यहाँ था पहुँचूँगा । मैंने सबसे पूछा, माताजी कहाँ हैं ? माताजी बबल के मकान में कुछ काम में गई हुई थीं । मैं पूछताछ कर ही रहा था कि इतने में वे धा गईं । मुझ देखत ही धामन्ध के मारे गो पड़ी धीर कहने लगी "बेटा भरा, धा गए हो मेरा बेटा धा गए हो ।" धीर मेरे छिर पर, मेरे बदन पर मेरे कण्ठ पर धीर हाव-पर-हाव करने लग गईं । कहने लगीं "जाने कितनी मुसीबत तुमने भंजी ।

मैंने जब सबसे छोटे भाई को देखा तो मुझ एक धमीम-सा बक्का पहुँचा । इस कमिष्ठ भाता की आठ साल की उम्र में बर पर छोड़ धाया था । मेरे मन में धभी तक उसकी बही आठ साल की कममीम मूर्ति बनी हुई थी । धन जब मैंने इसको देखा तो उस कममीम मूर्ति के साथ इसका कोई साबूय नहीं पाया । मैंने कल्पना नहीं की थी कि अनेग्रमाज को जब देखूँगा तो उसको किसी धीर मूर्ति में देखूँगा । बीबन का एक अण्माय समान्त हुआ धन इसरा प्रारम्भ होता ।

## 4 | बन्दी साथियों की चिन्ता

बार पहुँचने के दो-एक घंटे के आखिर ही पुराने भित्तनेवालों में से एक वृद्ध मेरे पास आए। इनका नाम था—जितेन्द्रनाथ मुकुर्जी। कलियुग छोड़ने के समय आप मेरे सहायी थे। लेकिन आप मेरी गुप्त समिति के सदस्य नहीं थे। जैसे भाईजों से मिलते हुए हम एक-दूसरे से मिल पट गए थे वैसे ही देखते ही इनसे भी मिल पट गए। बनारस के पुराने साथियों में से कोई भी मुझसे मिलने नहीं आया। इनसे देश की राजनीतिक स्थिति पर बातचीत होने लग गई। मुझे प्रसीमांति स्मरण था कि देश पहुँचते ही मेरा प्रथम कर्तव्य क्या है। मैंने जितेन्द्र से पूछा "कहो मासवीयजी आवश्यक कहाँ है? मुझे मासवीयजी से मिलना है। मैंने इन्हें अण्डमन की स्थिति बताई कि कैसे वहाँ पर बुढ़ी राजबन्दी पड़े-पड़े सड़ रहे हैं कैसे घाई परमा नन्द कोठरी में एकाएक बन्द कर दिये गए हैं। भारत भूमि से निरान्त विच्छिन्न होने के कारण अण्डमन टापू से दूर की कोई कहानी भारत पहुँच नहीं पाती है। राजबन्दीयों की मुक्ति के लिए कैसे क्या किया जाय? जितेन्द्र मुकुर्जी से पता चला कि महामना पं० मदनमोहन मासवीयजी बनारस में ही हैं एवं सम्भवतः आज हिन्दू प्रतिनिधित्वी कोट की मोटिंग होगी और वहाँ मासवीयजी से हम मिल सकते हैं। रोटी खाकर बी काम करना ठीक हुआ। एक तो मासवीयजी के पास जाना वृद्ध मैजिस्ट्रेट के पास जाकर अपने घाने की सुचना देना।

रोटी खाकर हिन्दू स्कूल पहुँचे। नाकई मोटिंग हो रही थी। मैंने एक स्थान पर यह लिखकर मासवीयजी के पास भेज दिया "Coming straight from the Andamans an interview may be allowed in connection

with the cases of Bhai Parmanand and other Political prisoners.

Sachindra Nath Sanyal"

स्मिप पहुँचते ही पश्चिमी एवं डाक्टर मन्मथप्रसाद फौरन बसे गए। इस सब एक छोटे से कमरे में बैठ गए। मेरे लिए यह एक सीमास्थ की बात थी कि डाक्टर मन्मथप्रसाद ने मुझे पहचान लिया। सम्भव है, मेरी स्मिप को पढ़ते ही पहचान लिया हो। मासपीयपी के सामने डाक्टर मन्मथप्रसाद मेरी खूब प्रशंसा करने लग गए। मैंने देखा कि समूह छोटी-छोटी बातें भी खूब याद थीं। वे जब मेरी प्रशंसा कर रहे थे तो मैं अब-ही-अब हँस रहा था। हँसने का कारण था।

एप्टुस पास करके मैं स्वीस कमिज में भरती हुआ था। डाक्टर मन्मथप्रसाद उस समय पश्चिमाश्रम के सम्पापक थे। मैं उनका छात्र रह चुका था। मैं आज तक बितने सम्पापकों के पास पढ़ा हूँ उनमें से आप ही ऐसे सम्पापक थे जिनके छात्र अनुमत कम नहीं होते थे। आप लड़कों हैं खबरन सब काम कर लेते थे। लेकिन आपका Task करने के बावज़िर कमिज का भीर कोई काम हो नहीं सकता था। स्कूल में नभित में मैं प्रायः सब प्रतिष्ठत थंक (Fall marks) पावा करता था। अब कमिज में आकर राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण कुछ पर्याप्तकारी भारत में फेरकर कमिज का काम बधोचित नहीं कर पाता था। पहले-पहल तो मैं डाक्टर साहब का काम पूरा कर देता था और मेरी निगती धन्य नज़रों में होने लग गई थी। इसलिए डाक्टर साहब अपनी निकटतम सामने की बेंच में दूसरे धन्य नज़रों के साथ ही मुझे भी बैठाते थे। लेकिन पाड़े ही दिनों में मेरा क्सास का काम हीनर पड़ गया। अतः फिर दूसरी बेंच में बैठना पड़ा, और फिर तीसरी में। जिस छात्र से डा० मन्मथ प्रसाद आत्मन्त प्रसन्नमुष्ट हो जाते थे उसे वे आखिरी बेंच पर बैठाते थे एवं उसके साथ ऐसा व्यवहार करते थे मानो वे हैं ही नहीं। फिर उनको न वे कोई Task देते न लेते थे न उनसे बोधते थे। ऐसे लड़कों को वे Non-entity कहा करते थे। आप नहीं चाहते थे कि उनके साथ कोर्टबुक को छोड़कर और कोई किताब पढ़ें। आप प्रायः उपमास आदि पढ़ा करते थे तो उनसे कियाकर ही पढ़ा करते थे। मैं डा० साहब के क्सास में Non-entity रह चुका था। इसी हासत में एक दिन मैं आन-बुझकर पाठ्य पुस्तक के अलावा एक अंग्रेजी किताब क्सास में ले आया था और उसकी मैंने किताबों में सबसे ऊपर रखा था, यह देखने के लिए

कि डा० साहब इस किताब को बेसबर मुझे कुछ कहते हैं या नहीं। रामकृष्ण मिशन के स्वामी प्रभेशानन्द के अमेरिका में प्रवृत्त व्याख्यानों का संग्रह India and her people नाम से मुद्रित हुआ था। इसी पुस्तक को मैं क्लास में ले आया था। डा० मंगेशप्रसाद ने मेरे पास से गुजरते हुए किताब को देखा देखकर उठा लिया किताब के पन्नों को इधर-उधर उलटकर थोड़ा-सा देखा और फिर किताब को यथास्थान रख दिया। मैं देखना चाहता था कि वे मुझे डाँटते हैं या नहीं। क्लास में तो मेरे साथ उनके ऐसे छात्रकुमार थे लेकिन धातु मानवीयजी के सामने वे मेरी किठनी प्रशंसा कर रहे थे इसका थोड़ा-सा कारण यवत्त्व है। कलियुग में पढ़ते समय हम लोगों ने अपनी बेप्टा से, अपने ही उद्योग से एक स्कूल खोला था। वह स्कूल मित्रित तक पहुँचा था। इस स्कूल के बापिस्कोस्व के घर घर पर हम लोगों ने डा० मंगेशप्रसाद को समापति का प्राप्त प्रहण करने के लिए निमन्त्रित किया था। हम अन्तिम परीक्षा के पहले Nov-ething नहीं रह गए थे।

मानवीयजी ने सब बातें सुन ली और बाहिर में कहा कि मुझे सिबकर एबिस्ट्री पत्र द्वारा सब बातें सूचित करो। मैंने गोरखपुर जाकर ऐसा ही किया था। Acknowledgement due की रसीद तो मुझे मिल गई। लेकिन मानवीयजी ने राजनीतिक क्रियाओं की मुक्ति के लिए एक आशय भी नहीं उठाई।

जितेन्द्र मुकजी एवं मेरे भाइयों का कहना था कि आजकल युक्त प्रदेश में उदीयमान नेता परिणत अनाहुरमानजी नेहक हैं। यदि वे राजनीतिक क्रियाओं का प्रयत्न उठाएँ तो कुछ काम हो सकता है।

मैं बनारस में दो ही दिन ठहरा और फिर गोरखपुर चला गया। मेरे साथ मेरे सर्वकनिष्ठ भाई भूपेन्द्रनाथ थे। बनारस पहुँचने के समयसे मैं आग्रयण कासेपानी की सजा के प्रतिरिक्त मेरे ऊपर यह भी बण्ड था कि मेरी तमाम आयदाय छीन ली जाय। बनारस में जिन मकान में हम सोय रहते थे वह मेरी घाजी का मकान था। मुझे सजा होने के बाद पुलिसवालों ने हम मकान को अपने कब्जे में कर लिया था। मकान के साथ बिस्तरे घादि भी जो कुछ मकान में थे पुलिस के ही व्यवहार में आए। घाबाद जो पुलिसवाले रखवाली के तौर पर उस मकान में रहते थे वही वह सब सामान अपने इस्तेमाल में ले आए। उस समय में मेरी माताजी मेरी घाजी

मेरी मौसी जब मौसी की पानी हुई एक लड़की थीर मेरा सबसे छोटा भाई मेरे पकड़ जाने के बाद सब धुँई घर में रह गए थे। जब पुलिस ने मकान को घेरे जमाने में कर लिया तो इनके रहने के लिए स्थान न रहा। ऐसी विकट परिस्थिति में मेरे मामा इन सबका गोरखपुर ले आए। जब मैं कालेपानी से छूटकर मामा तो मेरे भाई की इत्यादि गोरखपुर में मेरे मामा के पास ही थे। मेरी शादी मेरे चाचा के पास चली गई थी।

गोरखपुर से मैं एक दफे ५० बजाहरसालकी से मिलने आया। राजनीतिक बन्धियों के विषय में और विशेषकर कामपानी में स्थित गोर बुद्धि में पड़े हुए बहुत-से सच्ची सजा पाये हुए राजबन्धियों के प्रति जबाहरसालकी की दृष्टि में प्रकटित की। जबाहरसालकी सब बातें सुनकर बह कह उठ—“हम लोग तो स्वयं ही जेल जाने का इन्तजाम कर रहे हैं और आप दूसरों को झुड़ाने की बातें कर रहे हैं।” मैं उनके मुँह की तरफ ताकता ही रह गया और सोचने लगा कि मैं इनसे और क्या कहूँ। मैंने यह समझ लिया घबरे ही भावनी हुए बन्धु दूसरों के दुःख को समझना सहज नहीं है। यदि जबाहरसालकी अपने दस के दावनी होते तो वे मेरी प्रार्थना के महत्त्व को अनुभव कर पाते। और शायद यह भी बात थी कि जब सरकार के साम झुकना ही करना है तो फिर सरकार से किसी बात के लिए अनुरोध कैसे किया जाय। मैं बहुत गालज्मेद हो गया।

सितम्बर, सन् 1950 में कमकता में स्पेशल कांग्रेस हुई। भारत के प्रत्येक राजनीतिक नेता की दृष्टि उस समय महात्मा जी के Non-cooperation प्रस्ताव पर लगी हुई थी। वहाँ भी कुछ काम नहीं बना। कांग्रेस में तो हम कुछ कर नहीं आए लेकिन दूसरे मुक्त राजबन्धियों को साथ लेकर मैं सासा राजपतराय के पास गया। डॉ. इन्दिरा पोलिटिकल सफरतें काफेस में समापति का मासन सुसाजित करने के लिए उनसे अनुरोध किया। राजपतरायजी राबी हो गये। उनके समापति में इन्डियन एसोसियेशन के हाल में डॉ. इन्दिरा पोलिटिकल सफरतें काफेस हुई। इस काफेस की बुझाने में प्रतिय बीरिस्टर वी बी० सी० बटजी एक कमकता के पुराने क्रान्तिकारी नेताओं की विशेष सहायता मिली थी।

बहुतों ने बतुवा की। किसी की बतुवा हृदयपात्री की और किसी की शुल्क। स्व० स्वामनुष्यर चकवर्ती ने हृदयप्रेम से पक्ष्य होकर सबसे लंबी स्वीच की तैकिय



उनकी स्वीकृत मर्मसूची नहीं हुई। बन्धुता बैठ-बैठे वे समापति के छीर के ऊपर घा मिराते थे। मूल बातें थे कि समापति के घासन पर भी कोई बैठा है। पंडित मदनमोहन मालवीयजी ने जो बन्धुता की उससे अतिशयोक्ति के प्रति सहानुभूति रखनेवासे बहुत कुछ प्रभावित हो गए। इसके प्रत्युत्तर में कलकत्ता के बैरिस्टर पण्डित एन० राम जी० शर्मा० बटजी इत्यादि ने मालवीयजी को कुछ बातें सुनाई। लेकिन इस काफेन्स में स्वर्गीय एनीबेसेन्ट महोदय ने जो मर्मसूची एवं धर्म स्थिती बन्धुता की की उसकी तुलना की बन्धुता जीवन-मर में धीर नहीं मिली। उस दिन यह पता चला कि बाग्यी किसे कहते हैं। वे वृक्ष जीवन में भूमे नहीं बा सकते मानो एक स्वेत प्रस्तर मूर्ति जीवन होकर गिरफ्तार रूप में लड़ी है कभी-कभी हाथ धीरे धीरे थोड़ा-थोड़ा हिल जाता है केवल मोठ बस रहे हैं। धीरे उस प्रस्तरमूर्ति के मुख से मानो स्वयं सरस्वती हृदयप्राहिनी धापा उद्गीर्ण कर रही है। मालवीयजी सक्रिय हो गए। तमाम हाल में मानो बिजली का संचार हो गया। मामा साजपठरायजी ने समापति के घासन से यहाँ तक भी कह डाला कि इन राजबन्धियों में ऐसे घाबरी भी हैं जिनके कूते के पीछे जोसने सामक यहाँ के साटसाहूब भी नहीं। मीटिंग समाप्त होने के बाद मालवीयजी ने apology (क्षमा-बाचना) के छीर पर कुछ कहा जिसका प्रभाव यह था कि उनके कहने का मतलब तो यह-यह कुछ धीरे वा इत्यादि। इस प्रकार से राजबन्धियों के लिए कुछ प्रोपेन्डेंडा किया गया।

उसी साल नागपुर में जो कांफ्रेंस हुई उसमें घटनाक्रम से मैं Subjects Committee (विषय निर्वाचनी समिति) में पहुँच गया। महारमाजी के घसह योग आन्दोलन के कारण राजनीतिक barometer बहुत ही बढ़ा हुआ था। सरकार के साथ बुरा झगड़ा भौन लिया था रहा था तब कसे उसी सरकार से यह अनुरोध किया जाय कि राजबन्धियों को छोड़ दो। मैंने एक विपिनचन्द्रपालजी से बहुत अनुरोध किया कि कुछ तो हवें करना ही चाहिए। मेरे कहने पर विपिन चन्द्र ने एक प्रस्ताव तैयार किया। मैं उसी प्रस्ताव पर रोजी हो गया धीरे उसे विषय निर्वाचनी (Subjects Committee) समिति से पास करवा लिया। नागपुर कांफ्रेंस के अधिवेशन में भी स्व० विपिनचन्द्रपाल ने इस प्रस्ताव को रखा धीरे इसका अनुमोदन दूसरों के साथ मैंने किया। जीवन में सर्वप्रथम घाम घमा में इसी मोके पर मैंने व्याख्यान दिया था। हम कांफ्रेंस में बीस हजार के करीब इन्हीं

बेदुस थे। मैं ही ऐसा सबप्रयत्न बगासी था जिसने कांग्रेस में हिन्दी में वक्तुता हो  
 हो। धात्रकल के हिन्दू महासभा के समापति बैरिस्टर श्रीयुक् विनायक रामोदर  
 सावरकरजी के छोटे भाई श्रीनारायण रामोदर सावरकर के पास मैं मच पर  
 बैठ हुआ था। व्याख्यात होने के बाद जब मैं डा० सावरकर के पास सीट माया  
 तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारे व्याख्यात से लोग रो पड़े हैं। प्रस्ताव का पूरा  
 मसविदा मुझे इस वक्त याद नहीं है। संभव है ऐसा रहा हो—*This congress*  
*sends its message of hope and sympathy to all political prisi-*  
*oners incarcerated in the different Jails of India and in the*  
*distant Andamans Islands* यर्थात् 'भारतवर्ष की विभिन्न जेलों में एवं  
 पण्डमान के सुदूर टापू में जो भारतीय राजबन्दी पड़े सड़ रहे हैं उनके लिए यह कांग्रेस  
 की महासभा सहानुभूतिपूर्ण और भासा का संदेश भजती है। इसके बाद प्रस्ताव  
 में कुछ और भी छन्द थे जो कि मुझे याद नहीं हैं। मेरी और श्री विपिनचन्द्रपालजी  
 की सभाइ से यह प्रस्ताव बना था एवं स्व० बेशबाबु चित्तरजनदासजी की  
 सहामता से यह प्रस्ताव कांग्रेस से पास हुआ। विजयरावभाबायजी ने जो कांग्रेस  
 के समापति थे मुझे पाँच मिनिट-भाष का समय दिया था। पण्डमान से देश सीट बाटे  
 ही बम्बई में डाक्टर सावरकरजी को मैंने पत्र भेज दिया था और लिखा था कि राज  
 बन्धियों की मुक्ति के लिए कुछ करना चाहिए। इसके बाद डाक्टर सावरकर और  
 मैं दोनों सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के पास गए। सुरेन्द्रनाथजी ने पहले तो यह कहा कि  
 हमें तो तुम लोग जाती दिया करत हो। इसके बराबर मैं हमने उनकी यकीन  
 दिलाया कि राजनैतिक बन्धियों के लिए उन्होंने बितना काम किया है उतना और  
 किसी ने नहीं किया है। बात सच भी थी। हूबय से जो बात कही जाती है उसका  
 पसर भी होता है। सुरेन्द्रनाथजी ने सब कोट इराफि कर लिया। यहाँ पर एक  
 बात कह देना आवश्यक है कि हम दोनों सुरेन्द्रनाथजी के पास विनायक रामोदर  
 सावरकरजी के विषय में ही कहने गए थे।

राजबन्धियों की रिहाई के लिए मैंने जो कुछ किया वह कुछ भी नहीं था।  
 ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने ही जिसे चाहा, उसे छोड़ा। महात्मा गांधी के सत्याग्रह  
 आन्दोलन के कारण भारत के राजबन्धियों का प्रश्न बन-सा गया। भारत के राज  
 नीतिक बाठावरण में स्वाधीनता के प्रश्न में सभी भारतीयों के हूबय की चर भी  
 बेचैन नहीं किया था। यही कारण था कि जिन लोगों ने भारतवर्ष को स्वाधीन

उनकी स्वीच मर्मस्पर्शी नहीं हुई। बन्धुता बेटे-बेटे के समापति के शरीर के ऊपर घा गिरते थे। भूम जाते थे कि समापति के आसन पर भी कोई बैठा है। पंडित मदनमोहन मालवीयजी ने जो बन्धुता की उससे अंतिकारियों के प्रति सहानुभूति रखनेवाले बहुत कुछ असम्पुष्ट हो गए। इसके प्रत्युत्तर में कसकता के बेरिस्टर गज के० एन० राय बी० सी० बटर्जी इत्यादि ने मालवीयजी को कुछ बातें सुनाई। लेकिन इस कांग्रेस में स्वर्गीय एनीबेसेण्ट महोदय ने जो मर्मस्पर्शी एवं प्रोजेक्टिवनी बन्धुता की थी उसकी तुलना की बन्धुता जीवन भर में घीर नहीं मिली। उस दिन यह पता चला कि वाग्वी किसे कहते हैं। वे वृक्ष जीवन में भूते नहीं जा सकते मानो एक श्वेत प्रस्तर मूर्ति जीवनस्त होकर निवचन रूप में लकी है, कभी-कभी हाथ घीर छिर बोझा-भोझा हिल जाता है केवल घीर बस रहे हैं। घीर उस प्रस्तरमूर्ति के मुक्त से मानो स्वयं सरस्वती हृदयवाहिनी जाया उद्गीर्ण कर रही है। मालवीयजी लज्जित हो गए। समाम हल में मानो विजली का संचार हो गया। मामा माजपतरायजी ने समापति के आसन से यहाँ तक भी कह डाला कि इन राजबन्धियों में ऐसे आशय भी हैं जिनके भूते के क्रीते जोमने सावक नहीं के साटसाहब भी नहीं। मीटिंग समाप्त होने के बाद मालवीयजी ने apology (क्षमा-याचना) के शीर पर कुछ कहा जिसका आशय यह था कि उनके कहने का मतमब तो यह-वह कुछ घीर था इत्यादि। इस प्रकार से राजबन्धियों के लिए कुछ प्रोवेनैन्सा किया गया।

उसी साल नामपुर में जो कांग्रेस हुई, उसमें बटनाचक से मैं Subjects Committee (विषय-निर्वाचनी समिति) में पहुँच गया। महारामजी के अवह घोष आन्दोलन के कारण राजनीतिक barometer बहुत ही चढ़ा हुआ था। सरकार के साथ जब झगड़ा जोम लिया जा रहा था तब कैसे उसी सरकार से यह अनुरोध किया जाय कि राजबन्धियों को छोड़ दो। मैंने स्व० विपिनचन्द्रपालजी से बहुत अनुरोध किया कि कुछ तो हमें करना हो चाहिए। मेरे कहने पर विपिन चन्द्र ने एक प्रस्ताव तैयार किया। मैं उसी प्रस्ताव पर राखी हो गया और उसे विषय निर्वाचनी (Subjects Committee) समिति से पास करवा लिया। नामपुर कांग्रेस के परिषेसन में भी स्व० विपिनचन्द्रपाल ने इस प्रस्ताव को रखा और इसका अनुमोदन दूसरों के साथ मैंने किया। जीवन में सर्वप्रथम ग्राम समा में इसी चीके पर मैंने व्याख्यान दिया था। इस कांग्रेस में बीस हजार के ऊपर डेनी

वेत्स से। मैं ही ऐसा सभप्रथम बगाली था जिसने कांग्रेस में हिन्दी में बयानूता दी हो। साबरकर के हिन्दू महासभा के समापति बैरिस्टर श्रीगुरु विनायक रामोदर साबरकरजी के छोटे भाई भीनाराम रामोदर साबरकर के पास मैं मच पर बैठा हुआ था। स्वास्मान बेन के बाद जब मैं डा० साबरकर के पास लौट आया तो उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हारे व्याख्यान स जोष रो पड़े हैं। प्रस्ताव का पूरा मसविदा मुझे इस वक़्त याद नहीं है। संभव है ऐसा रहा हो—*This congress sends its message of hope and sympathy to all political prisoners incarcerated in the different Jails of India and in the distant Andamans islands* अर्थात् 'भारतवर्ष की विभिन्न जेलों में एवं दूरस्थ आन्दमन द्वीपों में जो भारतीय राजबन्दी पड़े सड़ रहे हैं उनके लिए यह कांग्रेस की महासभा सहाय्यपूर्वक और आशा का संकेत भेजती है।' इसके बाद प्रस्ताव में कुछ और भी शब्द थे जो कि मुझे याद नहीं हैं। मेरी और श्री विपिनचन्द्रपालजी की सलाह से यह प्रस्ताव बना था एवं स्व० देवबन्धु चित्तरामदासजी की सहायता से यह प्रस्ताव कांग्रेस से पास हुआ। विजयराजवाचार्यजी ने जो कांग्रेस के समापति में मुझे पाँच मिनट-मात्र का समय दिया था। दण्डभक्त से देस खीट पाते ही बम्बई में डाक्टर साबरकरजी को मैंने पत्र भेज दिया था और लिखा था कि राजबन्धियों की मुक्ति के लिए कुछ करना चाहिए। इसके बाद डाक्टर साबरकर और मैं दोनों सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के पास गए। सुरेन्द्रनाथजी ने पहले तो यह कहा कि हमें तो तुम लोग आशी दिया करते हो। इसके अलावा मैंने उनको पकीज दिखाया कि राजनैतिक बन्धियों के लिए उन्होंने जितना काम किया है उतना और किसी ने नहीं किया है। बात सच भी थी। हृदय से जो बात कही जाती है उसका प्रसर भी होता है। सुरेन्द्रनाथजी ने सब गीट इत्यादि कर लिया। यहाँ पर एक बात कह देना आवश्यक है कि हम दोनों सुरेन्द्रनाथजी के पास विनायक रामोदर साबरकरजी के विषय में ही कहने गए थे।

राजबन्धियों की रिहाई के लिए मैंने जो कुछ किया वह कुछ भी नहीं था। ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने ही जिसे चाहा उसे छोड़ा। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन के कारण भारत के राजबन्धियों का प्रश्न बख-सा गया। भारत के राजनीतिक आन्दोलन में स्वाधीनता के प्रश्न ने सभी भारतीयों के हृदय को पकड़ भी नहीं छोड़ा था। यही कारण था कि जिन लोगों ने भारतवर्ष की स्वाधीन

करने के लिए अपने जीवन को निष्ठावर कर दिया था उसके लिए भारतवासी एक प्रकार से जवाहीर थे। भाव भी भारत की रक्षा कुछ अधिक भावाग्रह नहीं है। भाव भी भारत के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के मन में स्वाधीनता की भाव नहीं पैदा हुई है। भद्रबिन्दू और विजय के समय में स्वाधीनता का ही प्रश्न अन्तिम रूप से राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के सामने जीवन का प्रिय सन गया था। यही कारण है कि बंगाल का अन्तिकारी आन्दोलन तीस साल तक दमन-अक्रान्ति पर भी दब नहीं सका। आखिरकार बंगाल के गवर्नर भारत के साठ साहस एवं ईमान के मन्त्रियों को मजबूर होकर यह कहना पड़ा था कि जब तक उन्हें बंगाल की जनता की सहायता नहीं मिलती है तब तक वे आन्तिकारी आन्दोलन को दबा नहीं सकते।

बनारस में भागवतीयजी से मिलने के बाद मैं श्रीर विवेक मुकुर्जी सीने कस बटर के यहाँ चले गए। ऊपर लिख चुका हूँ कि छूटने के समय मुझे जो सटि फ्रिकेट मिला था उसमें एक हिदायत यह थी कि अपने स्थान पर पहुँचने पर बिना कलक्टर को मैं इतना दे दूँ कि मैं कामेपानी से बापस आ गया हूँ। इसी हिदायत के मुताबिक मैंने बिना-कलक्टर को अपने जाने की इत्तमा कर दी। कलक्टर ने कहा कि पुलिस सुपरिन्टेण्डेंट को इतना दे दो। यह बात बहुत बुरी मानूम हुई लेकिन आखिर पुलिस सुपरिन्टेण्डेंट के दफ्तर पर चले गए। लेकिन वहाँ पर असिस्टेंट पुलिस सुपरिन्टेण्डेंट ही मिले। उनको भी मैंने अपने जाने की इत्तमा कर दी। उन्होंने कहा कि सुपरिन्टेण्डेंट अभी नहीं हैं। मैंने कहा कि वह हों या न हों मैंने अपना प्रार्थन कर दिया और जब मैं आ रहा हूँ। उन्होंने मेरा नाम और पता नोट कर लिया। नतीजा यह हुआ कि मेरे ऊपर पहरा लग गया। वहाँ तक मुझे याद है अखबार से सीटकर बनारस में सिर्फ एक दिन रहा। दूसरे दिन अपने कमिष्ठ माई भूपेन्द्र को लेकर मोरसपुर चला आया। मोरसपुर में दो बार महीने पड़ा रहा। यह दो-बार महीने मैंने निरिच्छ होकर कुछ प्राराम से बिठाए। लेकिन प्रतिदिन मेरे मन में यह घटकता रहा कि आखिर मैं उचित रूप से जीवन व्यतीत कर रहा हूँ या नहीं। मैं प्रतिदिन यह प्रश्न पूछ रहा था कि फिर कैसे मेरे घिरे से काय प्रारम्भ करे। मैं एक बड़ा कलकत्ता आना चाहता था लेकिन पास में पैसा न था। मोरसपुर से एक साप्ताहिक पत्र 'स्वदेश' नाम से निकलता था। उसके सम्पादक श्री बजरबारी त्रिवेदी से मैंने परिचय प्राप्त कर लिया। बहुत इसारे से मैंने एक दिन उनसे अपनी मनोमिनाया

व्यक्त की। बसकता जाने की इच्छा प्रकट करते हुए मैंने उनसे सहायता माँगी। मुझे प्राप्ता तो मिली लेकिन सहायता नहीं मिली। इसी बीच में मैं एक दिन इसाहाबाद पंडित बहादुरनाथजी से मिलने के लिए गया एवं घण्टमन की वजा मिलकर रबिस्ट्री द्वारा पं० मरमपीतुम मासवीप्रजी के पास भेजी। इन सबका जो कुछ परिणाम हुआ उसे मैं पहले बता चुका हूँ। किसी कामकास एक दिन बनारस गया। वहाँ पर अपने पुराने साथी श्री प्रियनाथ भट्टाचार्य एवं श्री सुरेश लाल भट्टाचार्य से मिला। इन लोगों से मैंने संगठन-कार्य का प्रस्ताव किया। इसका जोड़े ही दिनों के पान्तर ही० घाई० बी० के डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल मिस्टर बिर्न के पास से मेरे माई के पास इतना घाई कि मैं फिर संगठन की बातचीत बना रहा हूँ। मुझे प्राश्न्य हुआ। बाद को पता चला कि प्रियनाथ भट्टाचार्य न छूटने के पहले ही एक लम्बा इकरारनामा पुलिस को दे दिया था। इसके बाद से मैं फिर कभी प्रियनाथ से नहीं मिला।

घाबेघ में बोलों ही तरफ से क्याबतियाँ हुए ।

और, कुछ भी हुआ हो अण्डमन से लौटने के बाद एक बफा मुझे सैन्ड्स साहब से मिलने वाला ही था । गोरखपुर में घाने के बाद जाँच करने पर मामूम हुआ कि सैन्ड्स साहब कृपिमा बिमान से भ्रमण होकर साधारण बिमान में दिल्ली इन्स्पेक्टर बनारस के पय पर हैं और इस समय फैजाबाद में हैं । फैजाबाद में मेरे एक बड़े पुराने मित्र आचार्य नरेन्द्रदेव भी रहते थे । सैन्ड्स साहब से मिलने का मैंने यही अण्डमन अवसर समझा । सैन्ड्स साहब से मिलने के बहाने नरेन्द्रदेवजी से भी मिल सँगा ।

मैं फैजाबाद बसा गया और सैन्ड्स साहब से मिला । मुझे क़रीब इस मिनट तक एक कमरे में ठहरना पड़ा । बमस के कमरे में सैन्ड्स साहब एक बर्कती के मामले की तहकीकात कर रहे थे । इतनी शान्तिपूर्वक बातचीत हो रही थी कि किसी को यह पता भी नहीं चल सकता था कि कमरे में कोई है भी । जब सैन्ड्स साहब हमसे मिले तो बड़ी मन्त्रतापूर्वक छिप्पाचार के साथ हाथ-में-हाथ मिलाकर मुझे अपने पास बैठाय़ा और कहा कि रस्सी को एक तरफ घाय सोप पीच रहे व और दूसरी तरफ हम लोग । अब रस्सी लिचाई छरम हो गई । अब प्रागे चलकर क्या करने का इरादा है ? मेरी सलाह है कि किसी का काम करो जो कुछ करो उनमें अगर मेरी मदद की जरूरत हो तो मुझे बतसाना मैं मदद करने के लिए तैयार हूँ । मैंने सैन्ड्स साहब से कहा था 'मैं पढ़ना चाहता हूँ और घाय इतना कर बीजिण कि मुझे किसी बालेज में भर्ती होने में बिबकत न पड़े ।' मैंने देखा सैन्ड्स साहब को यह बात ज्यादा पसन्द नहीं आई । लेकिन मेरे मुँह पर तो उन्होंने यही कहा 'मेरी मदद से यदि तुम बालेज में भर्ती हो सको तो मैं मदद करने के लिए तैयार हूँ । लेकिन बालेज के अधिकारियों पर मेरा कोई अधिकार नहीं है ।' मैंने कहा 'पुलिस की तरफ से बाधा घाने पर किसी बालेज में भर्ती नहीं किया जा सकता ।' सैन्ड्स साहब न कहा 'इतना हम कर देंगे कि पुलिस की तरफ से बाधा न आए ।' मैं मन-ही-मन समझ गया कि मेरे लिए बालेज में भर्ती होना असामान्य नहीं है । इनके बाद मैं नरेन्द्रदेवजी से मिलने बसा गया । जब मैं नन् 1910 और 1911 में बर्लीन बालेज में पढ़ता था तभी मे नरेन्द्रदेवजी से मेरी जान-पहचान है ।

कई बारनों से मैं गोरखपुर छोड़ना चाहता था । मेरे सीसरे भाई जितेन्द्र ने

धन बी० ए० पास कर लिया तब सभी ने समझ ही कि जितेन्द्र को धन एम० ए० पढ़ना चाहिए। जितेन्द्र एम० ए० पढ़ने के लिए कठिई राजी नहीं हुआ। संयोगवश जितेन्द्र को इसाहाबाद में एंग्लो-बंगाली प्रिक्सि स्कूल में हैबमास्ट्री मिस पई। जहाँ तक मुझे याद है जितेन्द्र ने इस पद पर साल भर तक काम किया। इसके बोरे ही दिन पहले में कमिज में मर्ती होने के लिए इसाहाबाद धावा था। मैंने म्योर सेण्ट्स कमिज में नाम भी लिखा लिया था लेकिन दो ही दिन के बाद प्रिंसिपल साहब ने मुझे वपनर में बुलाया और कह दिया कि तुम इस कमिज में नहीं लिए जा सकते। मैंने सेन्ट्स साहब की दुहाई की लेकिन कुछ बस न चला। मुझ कुछ लुची भी हुई और कुछ बुल भी हुआ। बुल होना वो स्वाभाविक ही था, लेकिन मन-ही-मन लुची भी इसलिए हुई कि जना इतहास देने से छुट्टी मिली। कही फेंस हो जाते वो दुष्टता की सीमा न रहती। फिर कायस्थ पाठशाला के प्रिंसिपल डा० ताराचन्द से जाकर मिले। मानूम हुआ कि प्रिंसिपल ताठसाला सामा हरदयास के छात्री हैं एवं सबकी उनसे रिश्तेदारी भी है।

मैं जिन विषयों को साथ-साथ सेना चाहता था वे मुख्य कायस्थ पाठशाला में नहीं मिले। फिर भी मैं मर्ती हो गया। लेकिन दो-चार दिन के बाद छोड़ दिया। कारण मुझे धर्मियेष्ट विषयों का संयोग न मिलने से पढ़ने में उत्साह नहीं मिला। संभव है, फेंस होने का धन भी मन में छिपा हो।

इसी समय के मैंने सर्वात्म्य-कारण से आन्तिकारी बस के पुन तबठन का काम प्रारम्भ कर दिया। यह पहले ही बतला चुका हूँ कि बन्दमन से लौटते ही बमारस में हमारे पुछने छात्री भी जितेन्द्रचन्द्र मुकर्जी हम से धाकर मिले। मैं जानता था कि जितेन्द्रचन्द्र मुकर्जी आन्तिकारी बस में सम्मिलित नहीं होंगे। इन्हीं के छोटे भाई थी बीरेन्द्रचन्द्र मुकर्जी इसाहाबाद में पढ़ते थे। वे बी० एस्-सी० प्रथमा के सहित पास करके धन एम० ए० में पर्यघास्य लेकर पढ़ने लगे थे। उनमें धन राजनीतिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रबल उत्साह पैदा हुआ था। जितेन्द्र की तरह बीरेन्द्र भी इसाहाबाद में मुझसे मिलने आए। एक ग्राहक को वाकर इकालवार बीसे पुछ होता है या बीसे किसी निद्रिया को देखकर बाज प्रसुम्न होता है, बीसे ही बीरेन्द्र को देखकर मैं मन-ही-मन में प्रसुम्न हुआ और प्रसुम्न हुआ। मैंने देखा कि सउसन निम्नव प्राण्डोसन के प्रति बीरेन्द्र का सजना सरसाह नहीं है जितनी बहानुभूति उनकी माहिधायक यद्यहयोग के प्रति थी। फिर भी मैंने धागा



नहीं छोड़ी। परिण्य में इनके बारे में बहुत कुछ कहना है इसलिए यहाँ पर इसकी उपक्रमशिका-यात्र कर ली। जैसे किसी अन्धे साहूक को पाकर भी जब दुकानदार बिज्जी नहीं कर पाता है या बाबू जैसे अपने धिक्कार को सामने पाकर भी कभी कभी बूक जाता है और विफल मनोरथ हो सिम्त होता है उसी प्रकार भीरेन्द्र को अपने इस में सम्मिश्रित न कर पाने के कारण मैं मन में बहुत सिम्त हुआ। मैं पोरबपुर वापस छोट आया।

कामेराजी जाने के पहले मैं एक प्रकार से छात्र-जीवन ही व्यतीत कर रहा था। कमाने की फिक्र नहीं थी। घर का खाता या मनमाना काम किया करता था। जब कामेराजी से छोटने के बाद मैंने अपने को उम्र में भी कुछ बड़ा पाया और सामित्य-बोध भी मैं पहले से कहीं अधिक मात्रा में अनुभव करने लगा। जीवन में अब ही सर्वप्रथम मैंने वह अनुभव किया कि अपने भोजनान्धावन के लिए अब मुझ अपने उपार्जन पर ही निर्भर करना पड़ेगा। मेरी समस्या इस समय कड़ी सत्ताईस बर्ष की थी। अर्थोपार्जन के लिए आज तक मैंने अपने को तैयार नहीं किया था। अब मुझ एक तरफ तो अर्थोपार्जन की संकट का सामना करना पड़ रहा था दूसरी तरफ मेरा यह प्रबन्ध आग्रह था कि मैं अपने जीवन के स्वप्न को वास्तविक जगत् में रूप बाध दूँ। प्रणयन से छोटने के बाद यह समस्या जैसे गम्भीर रूप से दिखलाई पड़ी थी आज बठावह शाम के बाद भी वही समस्या और भी कठिन एवं गम्भीर रूप में जीवन-मथ में आकर खड़ी हुई है।

इसी समय संकड़ों की संख्या में बंगाल के नजरबन्द कबी छूटने लगे। इन सब के सामने भी वही समस्या थी। कसकता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध बैरिस्टर श्रीमंत बी. सी. चटर्जी ने इस समस्या को हल करने के लिए कुछ रूपए इकट्ठे किए थे। एक बड़ा-सा मकान किछए पर लिया गया था। राजबन्दीमय मुक्त हो होकर इस मकान में आकर ठहरते थे। लोगों समय भोजन का अच्छा प्रबन्ध था। यहाँ पर महीना-पन्द्रह दिन तक भोग ठहर सकते थे। बंवास के विभिन्न तिरों से राज बंगी यहाँ आकर ठहरते थे। श्रीमंत बी० सी० चटर्जी साहब एवं संयमेन्त त्रिनिथ यन एसोसिएशन की तरफ से यह व्यवस्था की गई थी। घाये चलकर अर्थोपार्जन के लिए भी इसकी तरफ से सहायता मिलती थी। अन्धकार में ये सब बातें गड़कर मैं भी बेनियापुकुर सेन में स्थित इस मकान में आकर उपस्थित हुआ। बंगाल के तमाम राजबन्दीमयों ने यहाँ पर मिलने का प्रबन्ध मिला। यहाँ पर

बीसियों राजबन्दी ऐसे मिले जिनको दौलतकर मग में किसी प्रकार की भी धाधा का संचार नहीं हुआ। एक ही समय में इस मकान में कम-से-कम पचास राजबन्दी ठहरते थे। सब जगह में घुम-घुमकर देखा करता था कि ये राजबन्दी किस तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं क्या सोचते हैं क्या बातें करते हैं। इनमें से अधिकतर को मैंने ऐसा पाया कि इनके बारे में मैं यही सोचता रहा कि शान्ति यह क्यों और कैसे राजबन्दी हुए थे। बहुतों ने पुछने साधियों से भी मैं बिना भविष्य के बारे में बहुत बातचीत भी हुई लेकिन सबके सामने वही कठिन समस्या थी जो कि सौतस्विकी नदी का पानी प्रच्छन्न बेस से बहकर ग्राम धीर बनपद में धाधा पाकर ठहर जाता है, उसी प्रकार से विप्लववाद का प्रबल प्रवाह सभी थोड़ी देर के लिए बाधा पाकर ठहर गया है। समय धीर अक्सर मिलने पर जिस प्रकार बाँध के टूटने पर बाढ़ आ जाती है उसी प्रकार बंगाल में फिर कान्ति की सहर चारों दिशा में उमड़ पड़ेगी। जिस प्रकार बाढ़ के कारण गृहस्थ विस्थापित हो जाता है धीर कहीं ठहरने का प्रामय ढूँढ़ करता है उसी प्रकार से मुक्ति पाकर विप्लववादी राजबन्दीगण जन-कोसाहसपूर्ण संसार में आकर अपने को निरान्त प्रामय हीन अनुभव कर रहे थे। कहीं पर टिकने का ठहरने का स्थान ढूँढ़ रहे थे। पिछले युग में जो लोग विप्लववादी धाम्नीमन के कर्मचार थे जैसे बारीन्द्र धीर जेम्सनाथ उनके समान बुद्धि-शक्ति सम्पन्न विचारशील प्रतिभावान् मतिष्क परिचालन में तत्पर क्षमिधामी लेखक एवं कार्यकुशल नेता मैंने अपने युग में धीर किसी को नहीं देखा। अष्टमन में बैठे हुए एक दिन बारीन्द्र ने परिपुन प्रवक्ता के धर्मों में तिरस्कारपूर्वक धाँस मुँह बनाकर यह कहा था 'जो रास्ता मैंने एक पर्वत विजलाया बंगाल प्राय भी इतने दिनों तक उसी एक रास्ते का अनुसरण करता धाया। प्राय भी बंगाल के विप्लववादी कोई नया रास्ता नहीं निकाल पाए। बात कुछ बयाबा भूठ न थी।

धमी मेरे पुछने साधियों में से सब नहीं छूटे थे। जो लोग छूटे गए थे उनसे मैं मिला। लेकिन मुझे समीप नहीं हुआ। पड़ोसी बात तो यह थी कि जिनसे मैं मिला वे पुछने कार्यकर्ता ही अक्षय थे लेकिन मेरे साथ उनके तात्सुकाय पहले न थे।

बस मैं अष्टमन से छूटकर धाया जा तो धीयुत बी० सी० चटर्जी साहब ने

मुम्बे एक बात कही थी जिसका उत्तेज यहाँ कर देना आवश्यक है । मैंने प्रथम से एक बिट्टी में ऐसा लिखा था कि यदि ब्रिटिश सरकार भारतवासियों को मर्णा में यह मौका देती है कि हम अपने देश की मलाई के लिए जो ठीक समझें उसे कर सकें तो गुप्त पद्धति के द्वारा जून-सराबी के रास्ते से आम को लेकर हम बिलबाड़ क्यों करें । जटर्नी साहब ने मुम्बे यह कहा था कि 'ब्रिटिश सरकार सचमुच ऐसा व्यवहार हमें देगी इसलिए अब तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने बिल से आटेगू के सुधार को लेकर काम करो और गुप्त पद्धति के रास्ते को खान दो । इसी भासा से और इसी बिबाध से सरकार ने तुम्हें छोड़ दिया है । मैंने बंबा में यह कहा था कि "बिनायक रामोदर साबरकर ने भी तो अपनी बिट्टी में ऐसी ही भावना प्रकट की थी जैसीकि मैंने की है तो फिर साबरकर को क्यों नहीं छोड़ा गया और मुम्बे को क्यों छोड़ा गया ? यदि आपकी बात सत्य होती तो साबरकर को भी छोड़ना चाहिए था । मैं तो यह समझता हूँ कि मेरे छूटने और साबरकरजी के न छूटने में दो बातें हैं । एक तो यह कि बंगाल के बममत्त ने मेरे जैसे राजनीतिक बन्धियों को छोड़ने के लिए प्रबल प्रयत्न किया था । राजबन्धियों की टिप्पण के मूल में यही बात बहुत बड़ी थी । लेकिन महाराष्ट्र में सत्ता तीव्र चान्दोलन नहीं हुआ जैसाकि बंगाल में हुआ । दूसरी बात साबरकरजी के न छूटने में यह भी कि साबरकरजी और उनके दो बार साधियों की गिरफ्तारी के बाद महाराष्ट्र में अतिकारी चान्दोलन समाप्त-सा हो गया था । इसलिए सरकार की यह डर था कि यदि साबरकर इत्यादि को छोड़ दिया जाय तो ऐसा न हो कि फिर महाराष्ट्र में अतिकारी चान्दोलन प्रारम्भ हो जाय । इसके अतिरिक्त एक बात यह भी थी कि साबरकरजी के द्वारा इलेक्ट के एक संदेश की हत्या हुई थी । इस पर ब्रिटिश सरकार को विशेष श्रेय था । राजबन्धियों की मृति के समय सरकार ने यह नीति बना ली थी कि जिस पर किसी की हत्या करना या डकैती करने का अपराध लगाया गया था उन्हें न छोड़ा जाय । इस नीति के अनुसार भी साबरकर नहीं छोड़े जा सकते थे । कारण उन पर हत्या करने का अपराध लगाया गया था ।" जटर्नी साहब ने इस पर यह कहा था कि "बात सप्तम में यह है कि मराठों के ऊपर संशयो का बिमजुन बिबाध नहीं है । बंगालियों के ऊपर संशयो सरकार यह भरोसा कर रही है कि बंगाली प्रेमा कहेंगे जैसा करते लेकिन मराठों ऐसा कभी नहीं कर सकते । इस बात को नुमकर मैंने मन-ही-मन कुछ जगजा अनुभव की

धीरहंसा भी। जल्दा इसलिये अनुभव की कि राजनीतिक दृष्टि से चटर्जी साहब महाराष्ट्र को उच्च स्थान दे रहे थे और बंगालियों को भ्रम से ऐसा स्थान दे रहे थे कि राजनीतिक दृष्टि से दूरदृष्टिपूर्व नहीं कह सकते। हंसा इसलिये कि चटर्जी साहब भी समझ रहे हैं कि प्रंज सरकार हमें अपने धार्मिक को प्राप्त करने के लिए पुष्प धनकाश देगी। मैं जानता था कि ब्रिटिश सरकार कभी भी यह मौका नहीं देगी इसलिये हमें अवश्य अति का मार्ग ग्रहण करना ही पड़ेगा और खुले तौर पर मैंने चटर्जी साहब से यह कहा भी था कि यदि ब्रिटिश सरकार हमें पूरा मौका देती है अपने देश को उस सीमा तक पहुँचाने के लिए जिस सीमा तक प्रंजों ने अपने देश में अपने राष्ट्र को पहुँचाया है तभी एकमात्र उसी अवस्था में ही यह बात भी सही होती कि सचरन अति के मार्ग को छोड़कर भी हम धार्मिक बढ़ सकते हैं।

धनकी बार फिर जबकि मैं बेनियापुकर के मकान में ठहरा हुआ था तो चटर्जी साहब से मेरी बातचीत हुई थी। चटर्जी साहब मुझे यह समझाते थे कि हम किसी एक स्थान को चुन लें और वहाँ पर स्थिर होकर जम जाएँ। उसी स्थान को केन्द्र मानकर राजनीतिक मुद्दों के द्वारा जो अवसर प्राप्त हों उनका पूर्ण उपयोग हम सब करें। चटर्जी साहब की मनोवृत्ति को समझने के लिए उस समय के राजनीतिक बातावरण को समझना नितांत आवश्यक है। अतिकारी मनोवृत्तिवालों की भी परिस्थिति को समझने के लिए इस बात को समझ लेना नितांत आवश्यक है।

## 6 | चेम्सफोर्ड सुधार और असहयोग

जेल में बैठे हुए भी हम यह देख रहे थे कि माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार के बारे में हमारे नेताओं में तीन प्रकार की मनोवृत्ति दिखाई दे रही थी। एक तो मदनमोहन मालवीय स्वामी गरम मनोवृत्तिवाले नेतामन यह चाहते थे कि बिना किसी प्रकार की कोई वक्तव्य देना किये पूर्ण व्यक्ति से इस सुधार को काम में लाया जाय। दूसरी मनोवृत्ति के कुछ नेता यह चाहते थे कि इस सुधार को एकदम ठुकरा दिया जाय। तीसरी मनोवृत्तिवाले कुछ ऐसे नेता भी थे जोकि इस नए सुधार से कामकाजी चलाया चाहते थे लेकिन वे यह भी चाहते थे कि पूर्ण स्वतन्त्रता के प्राप्ति को प्राप्त करने के लिए भी राजनीतिक आन्दोलन को ऐसे मार्ग पर चलाया जाय जिससे देशवासी इस नये सुधार से सन्तुष्ट न होकर घाये बढ़ने के लिए तैयार हों।

जेल में बैठे-बैठे विभिन्न प्रवेश के राजबन्धियों में यह झूँक सभी पड़ी थी कि कौन-सा प्रांत सबसे ज़्यादा मनोवृत्ति का परिचय देता है अर्थात् माण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड के सुधार को कौन-सा प्रांत सबसे ज़्यादा रूप में ठुकराता है। इस बात को देखने के लिए अखिल भारत के राजबन्धियों में विशेष उत्सुकता रहती थी। कभी-कभी अहिंसकारी होने पर भी हम यह भूल जाते थे कि हम नये सुधारों को ठुकरा देना एक बात है और उनका अनुयोग करना और बात है।

अखिल भारत से सौटकर हमारे सामने बड़ी प्रश्न फिर था खड़ा हुआ। बी० सी० बटर्फी साहब उन व्यक्तियों में से थे जो आत्मिकारी आन्दोलन की आवश्यकता समझते थे लेकिन इन नए सुधारों को ठुकरा देना नहीं चाहते थे। महारामा मांजी एक समय बिसपुत्र मोडरेट थे लेकिन समय के कर से वे कमरा मोडरेट भीति

का त्याग रहे थे। सम्भव है प्राण भी महात्मा गांधी मॉन्टेट मनोवृत्ति को सम्पूर्ण  
तथा त्याग नहीं पाए हों। सी० आर० दास काष्ठिकारी न होने पर भी काष्ठि-  
कारियों के प्रति गहरी सहानुभूति रखते थे। उन्हें यह सहानुभूति जितनी उनके  
स्वयं को देखकर होती थी उतनी ही राजनीतिक दृष्टि से भी होती थी क्योंकि  
वे यह समझते थे कि काष्ठिकारी आन्दोलन के कारण भारत के दूसरे सब आन्दो-  
लनों को बल पहुँचता है। तिलक और सी० आर० दास क्रूर-करीब एक ही  
मनोवृत्ति के थे। सी० आर० दास को अपनी राजनीति में भागे हुए बोरे ही दिन  
हुए थे। अपनी पुर बस केत में यी अरविन्द घोष की परीची करते समय उनमें कुछ-  
कुछ काष्ठिकारी भावनाएँ भागे सभी थीं।

तिलक और दास माष्टेयू-बैम्सफोर्ड सुधारों को ठुकराना भी नहीं चाहते थे  
और उसे पूर्ण रूप से स्वीकार भी नहीं करना चाहते थे। मोतीलालजी तो पहले  
मॉन्टेट के लेकिन उनके ऊपर उनके पुत्र का प्रभाव कमच बढ़ रहा था। इन सब  
विभिन्न नेताओं की परस्पर विरोधी मनोवृत्ति के संघर्ष में आकर भारत की राज-  
नीति एक विचित्र मार्ग पर चल पड़ी थी। महात्मा गांधी की मनोवृत्ति न उस  
काष्ठिकारी थी और न सब ही है। लेकिन उनके महान् व्यक्तित्व के कारण भारत  
की राजनीति पर उन्हीं का प्रभाव सबसे अधिक है।

महात्माजी के नेतृत्व में यह तय हो गया कि माष्टेयू-बैम्सफोर्ड सुधार एकदम  
ठुकरा दिया जाए। बंगाल के काष्ठिकारियों में से अधिकार की यह राय थी कि  
इस नये सुधार को जहाँ तक हो सके, काम में लाया जाए। सी० सी० बटर्फी की  
भी वही राय थी। लेकिन इस समय मुक्त राजवन्शीगर्जों ने एक साथ बैठकर किसी  
नीति का निर्णय नहीं किया था। अभी कुछ प्रभावशाली काष्ठिकारी तथा मुक्त  
नहीं हुए थे। भारत के राजनीतिक आन्दोलन का नेतृत्व इसी समय से कमच  
महात्मा गांधी के हाथ में अनिवार्य रूप से आ रहा था। काष्ठिकारीमन इस बात  
को पसन्द नहीं कर रहे थे। सी० आर० दास भी महात्माजी के पक्ष में नहीं थे।  
तिलक पास सी० आर० दास साजपतराय इत्यादि पुराने समय बस के नेतामन  
महाराजी के साथ नहीं थे।

महामन से सीटने के बाद मैंने उत्तर भारत में जो काष्ठिकारी आन्दोलन  
की सृष्टि की थी उसको समझने के लिए एक और तो उस समय की राजनीतिक  
परिस्थिति को समझना आवश्यक है दूसरी ओर कुछ ऐसी बातें हैं जिनका बिना

समझे 1920 के बाद के विप्लववादी धाम्बोलन को समझना कुछ कठिन है। इसका एक कारण यह है कि भारत का विप्लववादी धाम्बोलन किसी एक ही संस्था के द्वारा परिचालित नहीं हो रहा था। सन् 1920 के बाद मैंने जिस तरह से फिर क्रांतिकारी धाम्बोलन के कार्य को हाथ में लिया इसको समझने के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि मैंने किसी पुरानी संस्था के साथ मिलकर काम किया था नहीं और यदि किसी संस्था के साथ मैंने सहयोग किया तो उस संस्था के बारे में भी कुछ बातें जान लेना आवश्यक है। इसके प्रतिरिक्त यह भी समझ लेना चाहिए कि भारत के युक्त धाम्बोलन में भी कुछ समझदारी थी और इन इन समझदारी के कारण समुच्च के चरित्र में कितनी ही कठिनाई अभिव्यक्त रूप से आ जाती है। इसका परिणाम मिलने से भी कुछ लाभ होगा।

यह बोझी-सी पुरानी बातें बतला देना आवश्यक है। सन् 1908 में कलकत्ता में मेरे पूज्य पिताजी की मृत्यु हुई थी। सन् 1909 से मैं बनारस में रहने लग गया। जब मैं कलकत्ता में रहता था तभी प्रसिद्ध अनुशीलन समिति की कलकत्ता शाखा में भर्ती हो गया था। बनारस में आकर मैंने इस समिति की एक शाखा अपने यहाँ खोल ली। इस अनुशीलन समिति का इतिहास लिखने की आवश्यकता यहाँ नहीं है। इतना ही कह देना पर्याप्त है कि बनारस की अनुशीलन समिति की दो शाखाएँ थी—एक का केन्द्र था हाका बूखरी का केन्द्र था कलकत्ता। मैं कलकत्ता केन्द्र के प्रत्यर्पण था। बनारस में जब मैं इस समिति की शाखा खोल चुका था तो पहले भलीपुर कॉम्परेसी के बाद बंगाल की सरकार ने इस समिति को प्रतिबंधित घोषित कर दिया था। इसलिए हमें भी बनारस की समिति का नाम बदल देना पड़ा। अनुशीलन समिति से बदलकर अब इसका नाम हो गया युवक सम्मेलन। लेकिन धीतर-धी-धीतर मैं कलकत्ता की अनुशीलन समिति से सम्बन्ध रखना चाहता था। लेकिन घटना-क्रम के फेर में ऐसा हो नहीं पाया।

उत्तर बारीगढ़ गांधी के प्रयत्न विफल हो जाने के बाद उसी संस्था के जो प्रमुख व्यक्ति थे उनके कार्यक्रम का केन्द्र कलकत्ता के पास कोसीसी बस्ती चन्द्रनगर बन गया था। इस केन्द्र से गांधी के प्रतिष्ठित नेता श्री रासबिहारी बोस देखागून पहुँचे। श्री रासबिहारी अपनी कार्यकुशलता के द्वारा पंजाब में एक प्रजा दल बना चुके थे।

हाका अनुशीलन समिति के नेता श्री पुतिनबिहारीदास थे। पुतिनबिहारी

को साठ सात की कामेपायी की सजा हो गई थी। पुमिनबिहारी के बाद डाका अनुशीलन समिति के जो लोग नेता के स्थान में काम कर रहे थे, उन्होंने अपने काम की गरज से चन्द्रनगर के दस के साथ सहयोग से काम करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय चन्द्रनगर दस के नेता थे श्री सिरिपचन्द्र घोष और मोदीशान राय। डाका अनुशीलन समिति मोदीशान राय के साथ मिलकर काम तो करती थी लेकिन उस समिति के नेतायन अपने दस के संगठन को सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रहे थे। चन्द्रनगर का दस बंगाल में कुछ बढ़ा गया। लेकिन रासबिहारी ने पंजाब में अपना पूरा-पूरा संघटन किया था।

संयोगवश धुमते-धुमते में चन्द्रनगर के दस में आकर शामिल हो गया था। मैं पकौह में रहता था इसलिए रासबिहारी के अधीन मुझे रखा गया। श्री रासबिहारी एक अत्यन्त कार्यकुशल नेता थे। चन्द्रनगर में दस बनाने का केन्द्र था इन सब कारणों से डाका अनुशीलन समिति के साथ रासबिहारी का अत्यन्त प्रसिद्ध सम्बन्ध हो गया था और रासबिहारी के जरिए से डाका अनुशीलन समिति के मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओं के साथ मेरा भी प्रसिद्ध परिचय हो गया था। वह सब होने में समय लगा था। डाका अनुशीलन समिति के साथ चन्द्रनगर के दस का जो सहयोग हो रहा था उसकी एक बात यह भी कि उत्तर भारत में डाका समिति स्वतन्त्र रूप से अपने किसी छात्रों को नहीं भेजेगी। उत्तर भारत में जो काम होना उसका समस्त उत्तरदायित्व रासबिहारी पर रहेगा। यदि डाका समिति के कुछ प्राबली रहे तो उनका भी सम्बन्ध रासबिहारी के साथ ही रहेगा डाका के साथ नहीं। मैं डाका समिति के कुछ सदस्यों के जरिए से चन्द्रनगर के दस में आ पहुँचा। ऊपर कही बात के अनुसार मुझे श्री रासबिहारी के अधीन रहकर काम करना पड़ा।

उस समय डाका अनुशीलन समिति के सबसे बड़े-बड़े कार्यकर्ता थे श्रीप्रतुस चन्द्र मंगोली श्री त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती श्री नरेन्द्रनाथ सेन श्री रमेशचन्द्र धाबाय श्री रमेशचन्द्र जीबरी और श्री नमिनीकिशोर मुह। इनमें से एक नरेन्द्रसेन को छोड़कर और सबने मैं जून परिचित था।

अधमग में जाने के पहले गिरफ्तारी के दिन तक मेरे साथ डाका अनुशीलन समिति का सम्बन्ध सहयोग था। यह बात तो थी कि रासबिहारी के जापान जते जाने के बाद डाका अनुशीलन समिति के बचे-बचाए नेताओं ने अपनी सब बातें मुझे बता दी थीं। लेकिन इनके आचरण से मुझे वह अनुभव हो रहा था कि मुझे पूर्ण रूप से



अपनी सब बातें बताने में ये भीरे-भीरे कमरा धागे बड़ रहे थे। अठार सतर भारत का बल और हाका अनुशीलन समिति कमरा एक-दूसरे के साथ अधिक-से-अधिक सहयोग करने के लिए धागे बड़ रहे थे। ऐसी अवस्था में ही मैं गिरफ्तार हो गया था। अब अख्तियार से सीटने के बाद हाका समिति के नेताओं के साथ वही प्रकार से विचार-विमर्श करने के पहले मैं कोई असंग कार्यक्रम बनाना नहीं चाहता था।

बनारस केस में गिरफ्तार होने के बहुत पहले भी मैंने बहुत बड़ा बंसा के विभिन्न कमितकारी बलों को मिलाने की बहुत चेष्टा की थी, लेकिन कृतकार्य नहीं हुआ था। अब अख्तियार से सीटने के बाद भी मैंने फिर चाहा कि भारत के समस्त कमितकारी दल एक साथ मिलकर एक व्यक्तिवादी संघठन बनाएँ। बैनिपापुर के मकान में रहते समय बंगाल के विभिन्न कमितकारी नेताओं के साथ मैं मिलता रहा। दूसरे दलों के प्रमुख नेताओं में से मैं जिन्हें अच्छी तरह से जानता था, वे थे श्री जयप्रसाद मुखर्जी श्री विपिनचन्द्र बंगोली, श्री मनोरंजन मुन्श, श्री अरबिन्द गुह इत्यादि। उस समय एम० एन० राय नरेन्द्रनाथ महापात्र के नाम से परिचित थे। वे सब उस समय बंगाल के प्रसिद्ध कमितकारी श्री यतीन्द्रनाथ मुखर्जी के अधीन काम कर रहे थे। अख्तियार से छूटने के बाद मैं इन सब परिचित नेताओं से मिला था।

एक तरह महात्मा गांधी अपने सत्याग्रह आन्दोलन के लिए तैयारी कर रहे थे। दूसरी तरह बंगाल के कमितकारी नेतागण अपने लेख और पुस्तकादि द्वारा कमित की भावना फैलाने का प्रयत्न कर रहे थे। श्री अरविन्द के बाद बंगाल में उत्प्रेक्ष-बोध्य नेता जुने आन्दोलन में और कोई नहीं रह गए थे। श्री० प्रार दास, विपिनचन्द्रपाल ब्योमकेय अकर्मर्ती और कुछ हद तक श्री० श्री चटर्जी और स्वाम मुखर चटर्जी श्री जुने आन्दोलन में बधायापित भाग ले रहे थे। उधर महाराष्ट्र में तिसक एवं पंजाब में माता सायबतराय जीवित थे। श्री मदनमोहन मालवीय की गिनती नरम दल वालों में थी। पं० जवाहरलाल नेहरू कमरा जुने आन्दोलन में भाग लेन लगे थे। पुनः क प्रभाव के कारण मोतीलाल नेहरू भी तमच उच्च दल की तरह मुझसे मने थे।

मेरी गिरफ्तारी के पहले ही महात्माजी भारत में आ चुके थे। उन्होंने जुने ग्राम कमितकारियों से यह आदेश दिया था कि वे युक्त मार्ग को छोड़कर यदि महात्माजी के मार्ग में आ जायें तो देश का बहुत क्षय हो। सन् 1919 के

सत्पात्रह धान्दोलन के बाद भारत के राजनीतिक जग में महात्माजी ने अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया था। जलियाँवाला बाग की घटना के बाद मोतीलाल नेहरू भी क्रमशः महात्माजी की तरफ झुक गए थे।

महात्माजी के व्यक्तिगत चरित्र के साथ न सी० धार० दास का ही मुकाबला हो सकता था और न मोतीलाल नेहरू का ही। उनके मुकाबले में विशिष्ट चरित्रवान नेता खबर कोई थे तो वे लोकमान्य तिलक और काला सावताराम ही थे। विपिनचन्द्रपाल का प्रभाव उनकी व्यक्तिगत दुर्बलता के कारण बहुत घट रहा था। इन्हीं सब से घोटने के बाद उनका जो विरक्तारी हुई और उस गिरफ्तारी के समयवासीजी ने जो दुर्बलता दिखाई इसके कारण उनका नेतृत्व समाप्त-सा हो रहा था। सी० धार० दास में कुछ विशेषताएँ थीं जो कि क्रमशः बरिस्तुत होने लगीं।

वीरुत सी० धार० दास० एक घोर बड़ मापी बैरिस्टर थे दूसरी घोर वे बड़े ही हृदयवान् व्यक्ति थे। एक तरफ जैसे उन्होंने लाखों रुपये कमाए, दूसरी तरफ वैसे ही उन्होंने दान में चुकी वनों की सहायता में, एवं भोम-ऐरवर्म में भी अपनी कमाई लूब खर्च की। उनके पिता बाराह ह्वार कमा कर्ज रखकर दुनिया से चल बसे थे। कर्जदा सी० धार० दास से कानून की सहायता से यह स्वभा बसूल नहीं कर सकते थे। सी० धार० दास ने दियामदारी की परख से जनसानियत के तकाबे के कारण बिलायत में अपना अध्ययन समाप्त करने के बाद स्वदेश में लौटकर कर्जदारों का तमाम कपया धीरे-धीरे वापस कर दिया। सी० धार० दास के चरित्र में जो बड़ता एवं बल था उसके मूल में पड़े कुछ से कातर होना एवं स्वाभिमन्य ही और उसके साथअपने संकल्प को कार्यरूप में परिणत करने की प्रबल शक्ति भी थी। पहले अलीपुर बम कोंग्रपरेसी केस के समय भी अरविन्द की परखी करते हुए भारत के नास्तिकारी धान्दोलन के साथ सी० धार० दास का कुछ परिचय हुआ था।

यदि चाहते तो मो जी० सी० अटर्नी भी सन् १९२० से बंगाल के प्रसिद्ध नेता बन जाते, लेकिन अटर्नी साहब राजनीतिक क्षेत्र में सी० धार० दास की तरह प्रबलीर्ण नहीं हुए। श्री अरविन्द के बाद बंगाल में सी० धार० दास ने ही राजनीतिक धान्दोलन को अपने हाथ में लिया।

बंगाल के लगे धान्दोलन के प्रमुख नेतापत्र भारतीय नास्तिकारी धान्दोलन के निम्नक नहीं थे। नास्तिकारी धान्दोलन के धार्तकबाद के प्रति अन्तर में सहानु-भूति रखते हुए भी वे जाण खुबे तौर पर धार्तकबाद की निन्दा तो करते थे लेकिन

कटूति नहीं करते थे। स्पष्ट मामूम होता था कि इन लोगों की सहानुभूति नास्तिककारी दल के प्रति है। और कभी-कभी तो नास्तिककारियों को फाँसी होने के घबराहट पर खुले धान्योत्सव के ये नेता इस प्रकार से समझना के साथ बीरब की मर्त्या को प्रमुख रखते हुए ऐसी ही धान्योत्सव करते थे जिसके परिणामतः नास्तिककारी भावना को प्रोत्साहन ही मिलता था।

भारत के दूसरे प्रांतों में अभी तक बुना राजनीतिक धान्योत्सव कहने सामक कुछ भी नहीं हुआ था। संभवतः स्वर्गीय लाजपत राय के कारण पंजाब प्रान्त बंगाल का छोड़कर भारत के अन्य प्रांतों से अधिक जागृत था। इसलिए हम देखते हैं कि पंजाब और बंगाल में नास्तिककारी धान्योत्सव बसा पनपा ऐसा और किसी प्रान्त में नहीं पनपा। बम्बई प्रान्त में राजनीतिक जागरण स्पष्ट था। लेकिन लोकमान्य तिलक के बाद बम्बई प्रान्त में किसी उपयुक्त नेता का प्राविर्भाव नहीं हुआ। लोकमान्य तिलक का ज्ञान तक मध्यस्थ में ऊँच रहे। इस बीच महाराष्ट्र और गुजरात ने भारत के राजनीतिक धान्योत्सव में विशेष महत्त्वपूर्ण भाग नहीं लिया। उद्योग-वर्तियों की उन्नति बम्बई प्रान्त में जैसी भी ऐसी और किसी प्रान्त में नहीं थी। लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में महाराष्ट्र भारत के दूसरे प्रांतों से पीछे नहीं था। लेकिन तिलक के बाद उपयुक्त नेता न रहने के कारण महाराष्ट्र एवं गुजरात की प्रगति रुक-सो गई। कुछ प्रान्त में अभी पंजाब और बंगाल की प्रगति नहीं हुआ था। बिहार में अभी तक न कोई राजनीतिक धान्योत्सव ही हुआ था और न किसी प्रभावशाली नेता का ही प्राविर्भाव हुआ था। सम्भवतः बिहार प्रान्त भारत में सबसे पिछड़ा हुआ प्रान्त था। मद्रास प्रान्त की हालत भी बिहार से कुछ अधिक अच्छी न थी।

लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक क्षमता में घबराती हुई, भारत की हालत एकदम पलट गई। अभी तक राजनीतिक और नास्तिककारी धान्योत्सव के कारण भारत में बोझिलता जागृत हो चुकी थी। धान्योत्सव जाने के पहले कुछ प्रान्त के शहर के घास-पास के देहातों में भी भी अराधित का नाम देने सुना था। बम पार्टी के नाम से भारत के नास्तिककारी धान्योत्सव का परिचय जन साधारण को प्राप्त हो चुका था।

इसके प्रतिरिक्त युरोपियन महायुद्ध के कारण भी संसार भर की हवा पलट गई थी। भारत में भी घाम बनता में इसका घंटा पहुँचा। इस घमूठपूर्ण परिचय का परिचय सब मिला जब महात्मा गांधी अपने कार्यक्रम को लेकर भारत

के राजनीतिक धर्म में कूट पड़े।

महात्मा गांधी भारत के नास्तिकारियों के प्रति विभाव रूप से प्रकट हुए थे। इनके त्याग और इनके साहस से महात्मा भी समझ गए थे कि ऐसे ही त्याग और साहस के साथ यदि भारत के राजनीतिक नेतागण कार्यसेव में धनार्थी न हुए तो उनके काम का असर प्रजा या सरकार पर कुछ भी नहीं पड़ेगा। कांति-कारी आन्दोलन को दबाने के लिए रीतट कमेटी की एक भीषण योजना प्रकाशित हो चुकी थी। महात्मा गांधी ने इस आयोग के विरुद्ध तीव्र रूप से आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन को शुरू करने के पहले अम्बराम में महात्माजी ने अपनी सक्ति की परीक्षा कर ली थी। बेकने में और काम में भी बिहार प्रान्त भारत में सबसे पिछड़ा हुआ प्रान्त था। अम्बराम बिहार प्रान्त में ही था। इस अम्बराम क जिले में महात्माजी ने सर्वप्रथम सक्रिय किन्तु शान्त विप्लव प्रारम्भ किया था और वहीं बेका गया कि जिस प्रान्त को पिछड़ा हुआ समझा गया था वह भी महात्माजी के नेतृत्व में सुप्रतिष्ठित ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध बिद्रोह करने को तैयार हो गया। महात्माजी ने अपने धारम चरित्र में इस बात को स्वीकार किया है कि सन् १९१८ में पहली बंध व्यापक रूप से उत्पन्न हुए धारम करने के पहले महात्माजी पंजाब नहीं गए थे एवं उस प्रदेश में उन्होंने अपने आन्दोलन का कोई प्रचार भी नहीं किया था इसलिए महात्माजी ने यह धारा नहीं की थी कि पंजाब देश में भी उनका सम्बाधन आन्दोलन जरा भी खोर पकड़ता। ये बातें महात्माजी की आपबीती में मिलेंगी। मुक्त प्रान्त में भी महात्माजी ने अपने विद्वान्त का कुछ भी प्रचार नहीं किया था। मुक्त बाव है मेरे धर्ममन जाने के पहले मोडीलासजी ने इलाहाबाद में महात्माजी के South Africa (दक्षिण अफ्रीका) आन्दोलन के विमर्शों में समा की थी। उस समा में न धर्मिक धारमी साथे से और न कोई ओप दिखलाई दे रहा था। लेकिन महात्मा के बाव महात्मा जी बाव अपने नवीम कार्यक्रम को लेकर मैदान में कूट पड़े तो समस्त भारत में उनके धारम की समीक प्रतिध्वनि सुनाई पड़ी। महात्माजी के स्वीकार किया है कि समस्त भारत ने जिस प्रकार से महात्माजी के धारम का उत्पुष्टा के साथ उत्पुष्टर दिया उसकी आधा उन्हें न थी। समस्त देश मानो उपयुक्त नेता की अपेक्षा कर रहा था। महात्माजी जैसे महात्मा नेता यदि कार्यसेव में धनार्थी न होते तो साथ ही भारत में धारम की बीड़ी बानुति होती। उपयुक्त नेतृत्व के

कारण भारत की जन-सक्ति का परिचय मिला।

महात्माजी के आन्दोलन के प्रारम्भ होने के पहले ही भारत की जनता में जागृति पैदा हुई थी। और यह जागृति उत्तरोत्तर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध उग्र से उग्र रूप धारण कर रही थी। यदि महात्माजी की तरह महाप्रतिभावान नेता भी जनता के इस रुख के विरुद्ध जाते तो उन्हें भी पराजय स्वीकार करनी पड़ती। इस बात का भी प्रमाण महात्माजी की आगामीती में ही है। जिस सम्पारण जिले में महात्माजी अपना निरोध आन्दोलन सफल रूप से चला पाए उसी सम्पारण जिले में जब महात्माजी ने अंग्रेज सरकार को मदद देने की वरख से अपने आदमी भेजे तो जनता ने महात्माजी का साथ नहीं दिया। यहाँ तक कि महात्माजी के आदमियों को बाँध-बाँध जाने के लिए कोई सचारी तक नहीं मिला। अर्थात् जनता में जागृति हो चुकी थी। महात्माजी ने उस जागृति से लाभ उठाया और भारत का प्रसूत अस्वाभ किया। भारत के अन्य नेतामन ऐसा नहीं कर पाए। यही महात्माजी की एक महान् विशेषता है।

1919 के अत्यन्त दुःखदायक आन्दोलन के परिणामस्वरूप अमृतसर में जर्मिया वाला बाम का मृदस पोलीकांड हो गया। समस्त अल्प संसार स्तम्भ रह गया। अंग्रेजों के साथ अमेरिकनों की सम्वि भी। ऐसी परिस्थिति में ही भारत के इन बहुत-से राजबन्दी मुक्त किये गए। इसी परिस्थिति में अखण्डन है मुक्त होकर मैं भी भारत में वापस आया।

मुक्त राजबन्दीयों में से बहुत-से राजनीति से अलग होकर नृहकार्य में लग गए। लेकिन ऐसे भी बहुत-से रहे जिनका यह विश्वास बना रहा कि सशस्त्र अग्नि को छोड़कर और किसी रास्ते से भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। बैनिबा पुरुर के मकान में रहते समय बंगाल के विभिन्न अग्निकारी दलों के सदस्यों से मैं मिला। लेकिन अभी तक बहुत-से अग्निकारी नेतामन मुक्त नहीं हुए थे। जैसे किसी विधान मगर में घाग सग लाय धक्का भीषण बर्बर से यदि कोई सहर विप्लव हो जाय या यदि कोई अंग्रेज भीषण बाढ़ के कारण अस्त-व्यस्त हो जाय और कोई इन सब दुर्घटनाओं के बाद उन सब प्राप्ति की भी क्या होती है उसे देखे वस भारत के अग्निकारी दलों की भी इन दिनों बड़ी समस्या हो रही थी। जैसे भीषण अकम्प के बाद पुन निर्माण कार्य प्रारम्भ होता है वैसे ही भारत में फिर से अग्निकारी आन्दोलन का पुनर्पटन प्रारम्भ हुआ।

## 7 | जमशेदपुर में मजदूर संगठन

सन् 1920 में महात्माजी का सत्याग्रह आन्दोलन समाप्त हो जाने के बाद ही मैंने पूर्ण रीति से विप्लव दल का संगठन प्रारम्भ किया था। लेकिन इसमें कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ा उसका कुछ हाल वहाँ दे देना आवश्यक है। जैसाकि मैंने पहले ही उल्लेख कर दिया है मेरी तरफ से दूसरे अनेक मुक्त राजबन्धियों के सामने भी सबसे कठिन प्रश्न यही था कि कैसे अपनी प्रापिक स्वतन्त्रता प्राप्त करें। कभी सोचा किताब की दुकान खोलें जिससे पढ़ने-लिखने की कुरसत रहे। विप्लव के कार्य को जमाने के लिए किताबों की दुकान उपयोगी होगी। लेकिन इसके लिए बहुत रुपये की आवश्यकता थी। इसलिए इस खयाल को छोड़ना पड़ा। कभी सोचा छापाखाना खोलें। छापेजामे की सहायता से प्रचार कार्य का भी काम शुरू जमेगा। पुस्तकें भी प्रकाशित की जाएंगी। लेकिन इसके लिए भी कम-से-कम दस हजार रुपये की आवश्यकता थी। बाबिरफार इस खयाल को भी छोड़ना पड़ा। फिर सोचा एक नितातखाने की दुकान खोल दें। सोचा कि सायद एक-दो हजार रुपये की लागत में ऐसी दुकान खोल सकते हैं। पिता की कमाई के कुछ रुपये माँ के पास थे। मेरी माँ धीरे-मेरे सब भाई मेरे ऊपर भरोसा बिक फोर डाल रहे थे कि मैं किसी काम में सग जाऊँ। सी० भाई० बी० के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल ने हमारे मामू की जिज्ञासा कि मुझे ऐसे काम में लगाया जाय कि जिससे दूसरे किसी उत्तम में पढ़ने का अवकाश हो न मिले। इसलिए सी० भाई० बी० बी० यह चाहते थे कि मेरे लिए जमीन से सी जाय धीरे में खेती के काम में लगा दिया जाऊँ। मैंने इस काम को स्वीकार नहीं किया। बाबिर

बिसातछाने की दुकान खोलने की ठहरी। वह कहीं खोली जाए? यदि मौके का स्थान न मिले तो दुकान का खोलना ही व्यर्थ है।

बिसातछाने की दुकान के लिए मौका ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कमकत्ता। सहर को छान वाला। सुबह से शाम तक जयह की ललाच में घूमते थे। घूमते-घूमते बक जाते थे। एक दिन बमाल्ट होकर जिस से ऐसा खयाल पैदा हुआ कि यदि मैं धीरठ होती तो मेरे लिए भीबिका उपार्जन करने का कम-से-कम एक रास्ता तो खुला रहता ही जैसाकि मैंने कमकत्ता की बीसों सड़कों के बंगसे पर बैठी हुई धीरठों को देखा था। मेरी मौखों में धीरू पा जाते थे। मैं सोचा करता था धाखिर दूसरे देशों के शान्तिकारीमण कैसे निर्बाह करते होंगे। इस बात की खोज में मैंने बहुत-सी किताबें पढ़ीं लेकिन मुझे कुछ पता न चला। टामस्ताय ने एक स्थान पर ऐसा लिखा है कि जिस पुस्तक में जिस बात की भाषा करते हैं उस पुस्तक में उस बात को छोड़ कर धीर बहुत-सी बातें मिलती हैं लेकिन जिस बात के लिए पुस्तक लिखी गई है वह बात उस पुस्तक में बहुत कम मिलती है। बिप्लववाहियों के बहुत-से ग्रन्थ पढ़े लेकिन वे सोय भपना निर्बाह कैसे करते थे इसका पता मुझे नहीं चला। सिर्फ एक पुस्तक में फ्रायडकिन साहब ने जो कुछ लिखा है उससे ऐसा मामूम होता है कि उस में भी शान्तिचारियों की बेसी ही बुर्खा होती थी जैसी कि हमारे देश में होती है।

कमकत्ता में रहकर मैं काम-काज की खोज कर रहा था। उधर मेरी माँ मेरी शारी के लिए लड़की ढूँढ़ने बंगाल घाई थी। कुछ स्थानों पर माँ के साथ मुझे भी जाना पड़ा। इसी विलसिमे में अपने कुछ दूर के रिस्तेदारों के बाठभीठ करने के बाद यह तय हुआ कि इन रिस्तेदारों के साथ मिलकर कमकत्ता के पास बर्तबान जिसे के कामना नामक खज-किबीजग में ईंट बनाने का कारखाना खोले। कुछ महीने तक इस काम में मुझे लजना पड़ा। ऊपर से तो काम करते थे भी मैं रोते थे।

कामना में काम करते समय मैंने बन्दी जीवन सिखना प्रारम्भ दिया। दिन भर काम करता था रात को लिखा करता था। पढ़ने का समय कोटा ही मिलता था। वहाँ के मौजवानों से भी मिलने का प्रयत्न किया करता था। काम के विलसिमे में कभी-कभी कमकत्ता जाना पड़ता था। ऐसे घबसरो पर फन्नी कभी देखता था कि बाकु-थोड़ियों की सहायता के लिए मौजवान भोग टोसी बना कर सड़क की दुकानों पर से बग्गा तंगह कर रहे हैं। इन प्रकार से मौजवानों की

बेच-सेवा की जगह को देखकर येरा हूबब पिचम जावा करता था। उसके साथ अपनी सूना करते हुए अपने प्रति मिठास कुछ होता था। सोचता था मैं क्या चाहता था और क्या कर रहा हूँ। अपने को कर्तव्य बहुत होते देखकर मैं रो पड़ता था। ट्राम में बैठ हुए रोगा भी तो मुश्किल था। दूसरे आदमी घाँस में धाँसू देख कर क्या कहेंगे। इसलिए दूसरों की धाँसू बचाकर अपनी धाँसू पौछा करता था।

मेरे हंट के कारोबार में लपने के पहले कलकत्ता में कांसेस का अभिवेसत हो चुका था। इसका उल्लेख पहले ही कर चुका हूँ। जिन दिनों मैं हंटों के कारोबार में लगा हुआ था उन दिनों में कांसेस का बिसेप कोई काम नहीं हो रहा था।

हंट का कारबार बरसात के दिनों में बन्द होता है। इस कारबार में रुकने लगा दिए से जब तक मैं इस जायत को बसून नहीं कर लेता तब तक मैं इस कारबार को बंद छोड़ सकता था। निश्चय तो मैंने कर लिया था कि इस कारबार को छोड़ दूँगा। इस कारबार को छोड़ने के पहले मेरी धाँसी हो गई। घन्ट में मैंने अपने कारबार को अपने रिश्तेदारों के हाथ बेच दिया। मुझे एक हजार रुपये का भाटा हुआ। जाने-पाने का खर्च और मेहनत तो चलन ही रही।

हंट के कारबार के बाद बी० एन० रेलवे में मैंने पचास रुपए की एक नौकरी कर ली। इस नौकरी का अनुभव कैसा रहा इस स्थान पर इसकी कोई बर्णना नहीं करना चाहता। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि एक दिन घात-दुश्चा भी करने की इच्छा हुई थी। इतने में एक दिन मेरे पास जमशेदपुर से एक आदमी आया। जमशेदपुर की मजदूर समा के सभापति श्री एस० एन० हुलदारजी ने इन्हें मेरे पास भेजा था। जमशेदपुर का मजदूर संगठन दुश्ता था रहा था। वहाँ के मजदूर संघटन की सम्भावना के लिए हुलदारजी मुझे जल में लबाना चाहते थे। वेच धन्नु सी० धार० दास की परमपत्नी हुलदार साहब की बहन बनती थीं। डेढ़ ती रुपए मासिक वेतन पर मैं जमशेदपुर में सेबर बुनियाद के काम पर चला गया। बी० एन० रेलवे के सपतर के हेड क्लर्क ने मुझे बोझ-सा समझना आहा कि रेलवे की नौकरी में स्थिरता है। सेबर बुनियाद की नौकरी में कोई स्थिरता नहीं है। ऐसी ह्दा में मेरे लिए रेलवे की नौकरी को छोड़ देना उचित होगा या नहीं, यह बात अच्छी तरह से सोच लेनी चाहिए। लेकिन मैं तो नौकरी करना चाहता ही न था। इसलिए जमशेदपुर के मजदूर संगठन के काम को मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। याने मेरे लिए यह एक बड़ी भागीदारी था। रेलवे की नौकरी को छोड़



कर जमशेदपुर चला गया। नौ महीने तक मजदूर संगठन का काम किया। जमशेदपुर में पचहत्तर हजार मजदूर काम करते थे। नौ महीने रात-दिन काम करते हुए मैंने मजदूर संगठन के बारे में यथेष्ट अभिज्ञता अर्जन कर ली। जमशेदपुर में काम करते समय कांग्रेस के मागपुर अधिवेशन में सम्मिलित हुआ। इस अवसर पर भारत के समस्त प्रांतों के कामिकारी व्यक्तियों से जान-बहुचान भेल-मुलाकात हुई। इस अधिवेशन में राजनीतिक दलों के लिए जो कुछ किया जा उसका उल्लेख पहले ही कर चुका हूँ।

महारमाजी का सत्वाग्रह आन्दोलन खोरोँ में चला जा। उसका इतिहास यहाँ पर लिखने की आवश्यकता नहीं है। जिसने दिन यह आन्दोलन चलाया, मैं जमशेदपुर में मजदूर संगठन का काम करता रहा। महारमाजी का सत्वाग्रह आन्दोलन जब निर्जीव होने लगा तब मैंने सोचा कि अब अपने कामिकारी दल का काम प्रारम्भ करना चाहिए। जमशेदपुर के काम से दो बार हस्तीका दिया लेकिन दोनों बार सेबर यूनियन की कार्यकारिणी समिति ने मेरे हस्तीके को स्वीकार नहीं किया। सेबर यूनियन से डेढ़ सौ रुपया लेना मैं ठीक नहीं समझता था। इसके प्रतिरिक्त कामिकारी दल का संगठन करना मजदूर संघन की जिम्मेदारी को लिये हुए सम्भव नहीं था। मजदूर संघन के काम में यदि कोई सोलह घण्टा मन और बीबीस घण्टे का समय नहीं बचाता है तो इस काम को ठीक प्रकार से कोई भी नहीं कर सकता। और यदि कोई मासिक वेतन लेता है तो मजदूर संघन के काम में उसे अपना पूरा समया लगाना उचित है।

जबसे मैंने जमशेदपुर की सेबर यूनियन का काम हाथ में लिया था तबसे यूनियन की काफ़ी उन्नति हुई थी। मेरे जाने के पहले यूनियन का बच्चा कुछ भी बसूस नहीं हो रहा था। मेरे जाने के बाद एक तो मुझे इसी बच्चे में से डेढ़ सौ रुपया माहवार मिलता करता था। इसके अलावा मैंने एकादशघण्टे और पॉलिश बलर्क भी पचास रुपया माहवार परमियुक्त किया था। इन सब पणों को चलाकर भी यूनियन की तहबीत में एक हजार से ऊपर रुपया भेजना कर लिया था। इस हामत में मेरे लिए डेढ़ सौ रुपया माहवार लेना ब्यादा बै-मुनासिब न था। लेकिन फिर भी मैंने यूनियन के काम को छोड़ देना ठीक समझा। यदि मुझे कोई दूसरा व्यक्ति मिल जाता जोकि कामिकारी संघन के काम की संभाल सकता तो मैं यूनियन के काम को न छोड़ता। बंगाल में कामिकारी व्यक्तियों की कृष्ण कमी

तो भी नहीं। तो फिर मुझे यूनिन का काम क्यों छोड़ना पका ?

क्योंकि मैंने पहले ही बतला दिया है भारत में एक ही संस्था बिप्लव के मार्ग से भारत को स्वाधीन करने के काम में नहीं लगी हुई थी। मेरे अध्यक्ष से लौटने के बाद डाका धम्वीमन समिति के नेताओं ने मेरे साथ मुझे दिस से छहमोन नहीं दिया। राजबिहारी के रहते समय डाका समिति का जो स्तर था वह नहीं रहा। डाका समिति इस नई परिस्थिति में बसा करना चाहती थी इस विषय को लेकर उसके नेताओं ने मेरे साथ किसी प्रकार का भी विचार-विमर्श नहीं किया। धी पुनिनबिहारीरास डाका समिति के सर्वमाग्य एवं सबसे पुराने नेता थे। राजबिहारी के छूटने के बाद डाका समिति का नेतृत्व धी पुनिनबिहारी के हाथ में था। इन पुनिनबिहारी के साथ मैं अध्यक्षमन में रह चुका था। पुनिन बिहारी कैसे डाका समिति के नेता बन गए थे यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी। न कुटि में न अध्यक्षमन में, न विचारधीनता में और न समझदारी में ही पुनिनबिहारी की कोई विशेषता थी। ऐसे तो वे बी० ए० तक पहुँचे लेकिन उनकी मानसिक प्रकृति निराश ठहरी। सामाजिक प्रश्नों को लेकर न कभी उन्होंने किसी से कोई विचार-विमर्श या विचार-विनिमय ही किया और न सामाजिक या राजनीतिक समस्याओं पर किसी हुई विचारों को पढ़ने में कोई रुचि ही दिखलाई। अध्यक्षमन में रहते समय अधिकारियों के साथ उनका कभी कोई संघर्ष नहीं हुआ। जिस समय अध्यक्ष राजबन्दीमन मनमान करते थे सबका सब प्रकार से बेत अधिकारियों के साथ आत्म-समर्पण की रस्ते के लिए उपमाओं का प्रतिपादन करने के लिए सड़ा करते थे तो उस समय पुनिनबिहारीजी क्षिपकर इन कंकटों से घलन करते थे। एक बात तो समझ में आती है कि हरएक प्रकार का कुछ और कष्ट जहाँ के लिए हरएक आदमी तैयार नहीं हो सकता और ऐसी घाघा करना भी उचित नहीं है लेकिन जो व्यक्ति ऐसा कर सकता है हृदयवान अपने मनुष्य के लिए यह स्वाभाविक है कि वह उस व्यक्ति के प्रति सहायुभूति सम्पन्न धनस्य होगा। यदि ऐसा व्यक्ति बीरों का साथ नहीं भी देता है तो भी उसके आचरण से सहज ही में सरलता के कारण समवेदना का और सहकारी होने का भाव उपकता है। पुनिनबिहारी में मैंने इस प्रकार की कोई आशना नहीं पायी। अपनी मनुष्य चरित्र मानने की अभिलता से मैंने यह समझ लिया था कि पुनिनबिहारी में नेतृत्व की कुछ भी योग्यता न थी। इसलिए अध्यक्षमन में रहते हुए ही मैंने यह

निश्चय कर लिया था कि छूटने के बाद उनके हाथ में किसी प्रकार से भी काम नहीं कर सकता। पुनिनबिहारीजी में मात्र योग्यता की ही कमी हो केबल वही बात नहीं थी नेतृत्व के लिए वे सर्वथा अयोग्य थे। वे धिक्कित समाज में बैठकर सामारण प्रश्नों पर भी युक्तिपूर्ण रूप से बातचीत नहीं कर सकते थे। एक दफा उन्होंने जिस बात को जिस प्रकार से प्रवृत्त कर लिया फिर उस बात को दूसरे प्रकार से समझने की शक्ति उनमें नहीं थी। अधिक क्या कहूँ उनके प्रति मेरे दिल में रसी-भर भी अट्टा नहीं थी।

पुनिनबिहारी के छूट जाने के बाद डाका प्रगुसीसन समिति उन्हींके नेतृत्व में काम करने लग गई। डाका समिति के अन्य नेतागण भी पुनिनबिहारी के प्रति अधिक भ्रष्टाचार नहीं थे। फिर भी उन्हे प्रारम्भ में पुनिनबिहारी को नेता मानना ही पड़ा।

महाराजाजी का सत्वाग्रह ग्राम्पोसन खोरो पर चलने लगा। देवबन्धुदास ने भी इस बढ़ती हुई लहर का साथ देने का निश्चय कर लिया। दासजी ने बाहा कि पुनिनबिहारी में एवं एक-दो और काम्बिकारी नेता उनका साथ हों। मैं उस समय ईट के कारबार में बुरी तरह फँसा हुआ था। इस कारण मन में प्रबल इच्छा रहने पर भी मैं दासजी का साथ नहीं दे पाया। पुनिनबिहारी में कुछ योग्यता तो थी ही नहीं फिर सत्वाग्रह में भी उनका विश्वास नहीं था। जो हो पुनिनबिहारी ने भी दासजी का साथ नहीं दिया। बंगाल के काम्बिकारी दल के दूसरे नेताओं में दासजी का साथ दिया। मैंने भी बहुत मर्तबा बाहा कि बर का सब काम छोड़कर तुमने राजनीतिक ग्राम्पोसन में भी-भाग से लग जाओ। कभी-कभी ऐसा समय आता है कि ऐसा न करके मैंने सारी झुल की। लामपुर कांग्रेस में मैंने हिम्मी भाषा में वक्तुता दी थी। उस वक्तुता को सुनकर दासजी ने ऐसी इच्छा प्रकट की थी कि मैं दासजी के साथ मिलकर मजबूर ग्राम्पोसन को कांग्रेस ग्राम्पोसन की एक शाखा बना दूँ। लेकिन दासजी के एक मित्र बैरिस्टर श्री निधिलेनजी ने स्पष्ट शब्दों में एक बात मुझे बमझा दी कि धार्मिक दृष्टि से यदि मैं स्वाधमम्बी नहीं होता हूँ तो राजनीति के क्षेत्र में मैं अपना भासन क्या नहीं पाऊँगा। मैंने दासजी की इच्छा का उत्तेज किया। तिस पर भी सेनसाहब ने अपनी राय बरली नहीं। मैंने भी सेनसाहब की मुक्ति को पसन्दीकार नहीं किया। परिणामतः मैं बमरोरपुर में सेबर मुनियन के बैठन भोगी भार्यनाइविय सेक्टररी का काम करता रहा।

दुपर बंगाल के दूसरे काम्बिकारी दलों के नेता श्री सुरेन्द्रनाथ बोस

श्री विपिनबिहारी गंगोत्री इत्यादि ने बैसबग्मुदास के साथ सत्याग्रह धाम्योसन में अपने दलों को अच्छी तरह से सगा दिया ।

जैसा मैंने पहले बताया है, धनुषीसन समिति के दो केन्द्र थे । एक केन्द्र डाका में था और दूसरा कमकता में । कमकता धनुषीसन समिति के सदस्यमण कमकता के प्रग्य नागिकारी दलों में शामिल हो गए । कमकता धनुषीसन समिति का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रहा । श्री यदुगोपालजी मुकुर्जी कमकता धनुषीसन समिति के धनुषी सदस्य थे । मैं भी कमकता धनुषीसन समिति का सदस्य रह चुका था । धनुषीसन जाने के पहले मैंने कहा था कि यदुगोपाल जी मेरा परिचय हो चुका था । धनुषीसन समिति का पुनर्गठन करें । लेकिन यदुगोपालजी ने इसका विरोध प्रदर्शित किया । मैं बमारस में अपना समलन करता रहा । जब धनुषीसन से लौटने के

बाद जब मैं बमबेदपुर में लेकर मूनिमन के काम में था तो यदुगोपालजी ने मुझे अपनी पार्टी में शामिल होने के लिए कहा । धनुषीसन जाने के पहले तक मैं डाका समिति के साथ मिलकर काम कर रहा था । इस कारण मेरे लिए यह उचित था कि पहले मैं डाका वालों से मिलकर इस बात को जान लूँ कि मेरे साथ वे लोग क्या छूटने से काम करने के लिए तैयार हैं या नहीं । डाका समिति के बिना नेठा नेठा छूटने को बाकी थे । इसलिए उनके छूटने की प्रतीक्षा कर रहा था । लेकिन जब मैं समझता हूँ कि यदुगोपाल से न मिलना मेरे लिए एक और समस्या हो गई ।

एक बात और हो रही थी जिसका पता पहले मुझ न था । पुतिनबिहारीदास ने सी० धार० बास का साथ तो दिया ही नहीं उल्टे सी० धार० बास के विरोधी बल के प्रायमियों से मिलकर वे सत्याग्रह धाम्योसन के विस्थापन प्रचार-कार्य करने लगे थे । बैरिस्टर एस० धार० बास सी० धार० बास के धारणीय थे और उस समय बमबेदपुर एडवोकेट थे । एस० धार० बास और उनके अन्य राजमन्त्र बग्मु बास मिलकर सत्याग्रह धाम्योसन के विस्थापन प्रचार-कार्य चलावा चाहते थे । डाका समिति को मिलता था । इन रूपों से 'संघ' नामक एक साप्ताहिक पत्र एवं 'हूक कबा' नामक पत्र निकलते थे । मुझे यह पता न था कि राष्ट्रीय धाम्योसन के विस्थापनवादियों से क्या लेकर यह साप्ताहिक पत्र निकाला जाता

था। मैं इस पत्र में लेख दिया करता था। लेखन की एक बीबनी सिखनी प्रारम्भ की थी। इरीब चार धम्याय लिख भी चुका था। इतने में एक दिन कलकत्ता में महुमोयान से मेरी यातचीत हुई। पता चसा कि 'हक कथा' किछ डब से निकलता था। 'संज्ञ' की भी जन्म-कथा सामूम हो गई। डाका समिति के साथ मरा सम्बन्ध पहले से ही कुछ घण्छा नहीं रहा। इस सब बातों को सुनकर डाका समिति के प्रति मेरी घमड़ा घोर बढ़ गई। डाका समिति के किसी नेता को भी मैंने ऐसा नहीं पाया था जिनकी योग्यता की तुलना बारीन्द उपेन्द्र या हेमचन्द्र इत्यादि से कुछ भी हो सके। डाका समिति की सबसे बड़ी बात यह थी कि वह संगठित थी। बंगाल के दूसरे अन्तिकारी दल प्रलय-धमन टोमियों में बँटे हुए थे। संगठन की दृष्टि से एक तो छोटी-छोटी टोमी होने के कारण एक से छोटी-छोटी टोमियाँ अपने स्वतन्त्र अस्तित्व को कायम रखना चाहती थीं इस कारण से भी डाका समिति को छोड़कर बंगाल के दूसरे अन्तिकारी दल संगठन की दृष्टि से दुर्बल थे। लेकिन बंगाल के दूसरे अन्तिकारी दलों के नेतागण व्यक्तिगत एवं एकता की दृष्टि से डाका समिति के नेतागणों से कहीं उच्च थेकी के थे। मेरी आदिक सहाय्य भूति बंगाल के दूसरे दलों के नेताओं के प्रति थी। लेकिन अभी मैं 'प्रीतोक्य चक्रवर्ती' नामक डाका समिति के एक प्रतिष्ठित नेता के छूटने की प्रतीक्षा कर रहा था। ऐसी परिस्थिति में मरे लिए बंगाल के किसी भी अन्तिकारी दल में शामिल होना सम्भव नहीं था। मैंने एक प्रकार से तो निश्चय कर लिया था कि मुक्त प्राप्त एवं पनाब में स्वतन्त्र रूप से अन्तिकारी दल का संगठन प्रारम्भ कर दूँ फिर बाद को निश्चय करूँगा कि बंगाल के किस दल के साथ हम सहयोग कर सकते हैं।

यह बात सब है कि कुछ सरकारी प्रतिष्ठानों से अपना लेकर डाका समिति कुछ हद तक अपना संगठन कर पाई थी। लेकिन राष्ट्रीय धामोसम का विरोध करने के कारण बंगाल में इसकी बहुत बयनामी फैल रही थी। इस कारण इस समिति के सदस्यों में असन्तोष फैल रहा था। ऐसे अवसर पर एक बात घोर फैली। पुमिनबिहारी बाबू ने एस० चार० दास को बंगाल के कुछ अन्तिकारियों के नाम की एक तालिका दे दी थीर यह सूचना भी उनके साथ दे दी कि ये लोग फिर अन्तिकारी धामोसम की संवारी कर रहे हैं। इस बात के फैलने के बाद पुमिनबिहारी को डाका समिति से असम हो जाना पड़ा। पुमिनबिहारी की

राजनीतिक मलु तो पहले ही हो चुकी थी। जब इस बार उनकी धर्मी निकली। बंगाल के मुख्य राजबन्दीयों ने बंगाल के मासिक और साप्ताहिक पत्र और पत्रिकाओं में आन्तिकारी आन्दोलन के बारे में सूत्र बिखाना प्रारम्भ कर दिया था। बंगाल की जनता की सहानुभूति भी इन राजबन्दीयों के प्रति ध्वज-से-ध्वज की। वहाँ के शिक्षित एवं अधिक्षित जन भी दिन से यह चाहते थे कि विप्लव नावियों की उत्पत्ति हो। बंगाल के कुछ जनों ने भी इस सहानुभूति को राजनीतिक मामलों का पल्ला देते समय भी काय रूप में दिखलाया। मेरे अग्रजमन जान के पहल सर आधुवोप मुखर्जी के सामने एक मामला पेश हुआ था जिसमें बार नव युवक बम बनाने के अग्रजमन में धमियुक्त थे। आधुवोपजी ने इन बार में से तीन को छोड़ दिया और एक को सजा दे दी। बार में आपस में बात करते हुए आधुवोपजी ने कहा था कि यदि मैं बारों को छोड़ देता तो सरकार धपील करती और फिर बारों को मजा हो जाती। इसलिये मैंने एक को तो पूरी सजा दे दी और तीन को छोड़ दिया। ऐसी हालत में सरकार के लिए धपील करना कुछ कठिन बात हो जाती है। बंगाल में ऐसे और भी कम हुए हैं जिन्होंने राजनीतिक मामलों में पंखला देते समय अपनी सहानुभूति को कार्य रूप में परिणत करके बिखलाया है। सरकारी मीकरी में भी जो बंगाली थे वे भी आन्तिकारी आन्दोलन के प्रति सहानुभूति सम्पन्न थे।

ध्विबी मासिक पत्र 'हिन्दु रिभ्यू' ने कुस्म-कुस्मा सिखाया कि 'आन्तिकारियों के एक-एक आतकवादी काम पर सरकारी मुसाबिन भी उत्सहित हो उठता है। ऐसी परिस्थिति में भी महारमाजी न कम अपना अहिंसामक आन्दोलन बोरों से प्रारम्भ कर दिया तो विप्लववादी आन्दोलन को मजहरी चोट पहुँची। महारमाजी के सरवाग्रह आन्दोलन के कार्यक्रम के अनुसार जल जाना ही सबसे बड़ी बात थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि महारमाजी के नेतृत्व में भारत का जन आन्दोलन बरम घिबर पर पहुँचा। जनता में सिटिप हुकूमत के बिन्दु बिन्दोह करने का माहा कुछ सीमा तक पैदा हुआ। जिस दिन से महारमाजी ने भारतीय जन आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ किया उस दिन से महारमाजी ने भारतीय जन आन्दोलन में भाग लेने का धर्म है जल जाना मुगीबत सहना और कम-से-कम अपना पूरा समय राष्ट्रीय काम में लगा देना। इसके पढ़ने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में अन्तिकारी संस्था ही एकमात्र ऐसी संस्था थी जिसकी काम-अगामी

में व्यपन्न साहस बुद्धिमयीय बीरता चरम स्वार्थ-त्याग धात्मरिक्ता एव परम जगत् की निदान्त आश्चर्यकता थी। महात्माजी के राष्ट्रीय क्षेत्र में घाते से पहले भारतीय जन-धाम्बोजन के नेताओं में वो प्रकार की मनोवृत्ति के कारण उनमें धात्म-विरास की मर्यादा का समान धीब बढ़ता था। इसलिये ये नेतागण संवेद सरकार से धावेन निवेदन करना ही जानते थे। हमकी धारणा यह थी कि हमकी विजलाकर धबबा दूसरों का धमुयह-धार्थी न होकर, अपने राष्ट्र के बल पर ही निरर रहते हुए हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे देश में इन नेताओं को निबल कहते थे। दूसरी मनोवृत्तिवाने नेताओं में ये बातें नहीं पाई जाती थी। इन दूसरे नेताओं में यह स्पष्ट भावना पैदा हो रही थी कि भीब धांगकर बुनिया में कभी भी कोई राष्ट्र पुनर्नवी के पक्ष से अपने को मुक्त नहीं कर पाया है। इसलिये ये नेता यह चाहते थे कि राष्ट्रीय धा-जोमन को ऐसे मार्ग पर चलाना जय जिससे जगत् में साहस त्याग धीर बिद्रोह भी भावना पैदा हो। हमारे देश में इन नेताओं को एकसद्वीमिस्ट कहते थे। इन एकसद्वीमिस्टों में भारत के सामने पूर्व स्वतन्त्रता के ध्येय को निदान्त स्पष्ट धब्बों में निर्मल रूप में ऐसी धात्मरिक्ता के साथ ऐसी धविधन धब्बा के साथ ऐसे मर्मस्पर्शी धब्बों में ऐसी जर्ममयी जनकार के साथ रता था कि भारत के सभ धममधुबक धाबों की बाबी लवाकर राष्ट्रीय बलिबेबी पर अपने को स्वीछाकर करने के लिए बैचन हो उठे थे। इस धन्तिम ध्येय के प्रचार के परिणामतः जिस विप्लव धाम्बोजन की सृष्टि हुई थी धाब वालीत साल के धममयीय बीबन के होते हुए भी वह धाम्बोजन बब नहीं पाया मेधिम फिर भी विप्लव-धाम्बोजन जन-धाम्बोजन नहीं बन पाया। तिसक धरविन्द साजपठ धीर विपिनचन्द्र के नेतृत्व में भारत का जन-धाम्बोजन विप्लव के मार्ग में धमम धावे बढ़ रहा था कि इतने में धरविन्द राजनीतिव क्षेत्र से धमम हो गए। तिसक धा धाम के लिए जल में बन्द पड़े रहे साजपठ भारत के बाहर बने गए, विपिनचन्द्र बुद्धिम पड़ गए। ऐसी धमस्या में महात्माजी राजनीति के क्षेत्र में धबठील हुए। महात्माजी के साथ-साथ भारत के राष्ट्रीय धाम्बोजन में धम्य धीर भी धविधधार्थी नेताओं का धाविर्भाव हुआ। धभी तरह इन नेताओं का कोई पता ही न था। महात्माजी का साथ देने के पक्षे बाबू राजप्रसाद का क्या धाठिल था ? पंडित जवाहरलालजी को सन् 1919 में कील जानता था ? सुभाषचन्द्र बोस सन् 1919 में विमानत में एन छात्र माध थे। मोतीलालजी की विनयी

लिबरलों में भी गरम धारणियों में थी। इसाहाबाय में तिलक के भागमन के समय जोय ऐसी तरकीबें सोचते थे कि जनता की तरफ से उमका शानदार स्वागत म हो। महात्माजी के राष्ट्रीय क्षेत्र में अवतीर्ण होने के कारण एक मोर जैसे जनता में बिद्रोह की भावना फैलने लगी उसी प्रकार से दूसरी मोर एक मवीन नेताओं के दल का प्राविर्भाव हुआ। महात्माजी की विशेष दैन में ऐसे नेताओं का प्राविर्भाव होता भी एक विशेष महत्वपूर्ण बात है।

बिप्लव-ग्रान्दोलन में भाग लेने का यर्थ होता है फाँसी जाना या ज़ममर के लिए कासेपानी के टापु में ज़िन्दा दफनाये जाने की तरह बहुत ही बुरा। इतना स्पष्ट और इतनी कठिनाई को सहने के लिए अधिक धायमी नहीं मिल सकते। लेकिन महात्माजी के ग्रान्दोलन में भाग लेने से बोझा त्याग और बोझी भुवीवत सहने से ही काम चल जा सकता है। इसलिए महात्माजी के ग्रान्दोलन में सहर्षों की संख्या में भारतवासियों ने भाग लिया लेकिन महात्माजी के कार्यक्रम के धनुषार भारतवर्ष की किस प्रकार से पूर्ण स्वतन्त्रता मिल सकती है, यह बात मेरे जैसे नवयुवकों की समझ में नहीं आती थी। सहर्षों की संख्या में जैसे जाने ही से किस प्रकार से राज धनित प्रजा के हाथ में जा जायेगी यह बात हम लोगों की समझ में नहीं आती थी। इसलिए मेरे जैसे नवयुवकों ने यह मान लिया था कि सफल क्रांति की संघाती तो करनी ही पड़ती। तथापि महात्माजी का सत्याग्रह ग्रान्दोलन जिस समय प्रबल रूप से चल रहा था उस समय क्रांतिकारी ग्रान्दोलन के लिए बातावरण ऐसा बन गया था कि अधिक-से-अधिक संख्या में युवक नृत् सत्याग्रह ग्रान्दोलन में भाग लेने लग गए। महात्माजी ने यह कह दिया था कि हम एक शासक के अन्दर स्वराज्य ले लेंगे। लेकिन क्रांतिकारी ग्रान्दोलन के लिए उपयुक्त संघाती की आवश्यकता होती है और इसके लिए दो बातों की सख्त आवश्यक है— एक तो प्रजा में राजनीतिक जागृति पर्याप्त परिमाण में होनी चाहिए, दूसरे सफल क्रांतिकारी आयोजन के लिए ऐसे बातावरण की आवश्यकता होती है जिसमें हम सोय प्रत्यक्ष में रहकर शासनकर्त्ताओं के अग्रह को आयुत न करते हुए बहुत दिनों तक कठिन परिश्रम करने का अवसर प्राप्त कर सकते हों। यदि हम अधिक से-अधिक संख्या में जल में गए और वह भी ऐसा काम करके नहीं गए जिससे कि ब्रिटिश सरकार की घमटनों में समावत की भावना जैसे तो ऐसे जैसे जाने से बचा जाय। और न जाली बिद्रोह की भावना फैलाने से ही काम चलता है। इसके



लिए तो बहुत ही श्रुंखलाबद्ध संघठन की आवश्यकता है। यह संघठन कौन करेगा और कब करेगा? इन सब कारकों से जिस समय महात्माजी का सत्याग्रह आन्दोलन पोर्टों पर चल रहा था उस समय जमशेदपुर में मजदूर संगठन का काम करना ही मैंने उचित समझा।

जब महात्माजी का बारदोशी कार्यक्रम स्वर्गित हो गया और महात्माजी विरफ्तार हो गए तो सत्याग्रह आन्दोलन का प्रथम अध्याय समाप्त हो गया और देश के सामने दूसरा कोई कार्यक्रम नहीं रहा।

महात्माजी के विरफ्तार होने के पहले ही मैंने चाहा कि जमशेदपुर के मजदूर संगठन के काम से छुट्टी ले लूँ और बिप्लव का काम आरम्भ कर दूँ। इसके लिए मैंने दो बार जमशेदपुर के मजदूर-संघठन के कार्यकर्ताओं के पास त्यागपत्र भेज दिया लेकिन उन कार्यकर्ताओं ने मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया। वे सोच नहीं चाहते थे कि मैं मजदूर-संगठन के कार्य से घटाय हो जाऊँ। जब तक महात्माजी विरफ्तार नहीं हुए, तब तक मैंने भी मजदूर-संघठन के कार्य को छोड़ने की जिद नहीं की। महात्माजी की गिरफ्तारी के बाद मैंने ठान लिया कि अब समय नष्ट नहीं करना चाहिए और बिप्लव के काम को हाथ में उठ लेना चाहिए।

मजदूर संघठन का काम भी निरन्तर आवश्यक काम है यह मैं समझ रहा था। लेकिन सरस्व बिप्लव के लिए भी संगठन का कार्य करना मजदूर संघठन के कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है ऐसा भी मैं समझ रहा था। मैंने यह समझ लिया कि मजदूर आन्दोलन तो देशव्यापी विराट् सशस्त्र बिप्लव आन्दोलन को एक घाला मात्र बन कर रहा है नहीं तो केवल मजदूर संगठन के कार्य से हम देश को स्वाधीन नहीं कर सकेंगे।

बमाल की राजनीतिक परिस्थिति को देखते हुए मैंने यह निश्चाय कर लिया था कि मुझे धकेला ही उत्तर भारत में यर्जान् पंजाब और कुश्त प्रान्त में काम करना पड़गा। ऐसी परिस्थिति में मैंने तृतीय बार जमशेदपुर की मजदूर समा की कार्यकारिणी समिति के पास अपना त्यागपत्र भेजा और चबकी बार मैंने जिद की कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जाय क्योंकि मुझे थक चुकत प्रान्त में जाना ही पड़गा। मेरी जिद के कारण चबकी बार मजदूर समा की कार्यकारिणी समिति ने मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। मैं जमशेदपुर छोड़कर इलाहाबाद जमा आया। उन दिन से यर्जार्ज का मैं मैंने उत्तर भारत में बिप्लव काम आरम्भ कर दिया और जीवन का एक नया अध्याय पुनः आरम्भ हो गया।

## 8 | क्रान्तिकारी दल का पुनर्गठन

(1)

सन् 1931 में जमशेदपुर के काम को छोड़कर मैं इसाहाबाद जाता था। इसके पहले ही मेरी साखी हो चुकी थी। जिस दिन मैं बनारस से घाटी के लिए रवाना हुआ था उस दिन मेरे कुछ पुराने साथी मुझे ऐसा कुछ कहने लगे थे कि मानो मैं घाटी करके कर्तव्य से म्युक्त हो रहा हूँ। उनके ठेठवार शब्द उस दिन मेरे हृदय को कूब चुने थे। जमशेदपुर से सौटकर मैंने उन दोस्तों की तलाश की। बनारस पहुँचने के बाद जिसने व्यक्तियों के मुक्तप्राप्त में विप्लव कार्य को संस्थापित या उनमें से वे भी थे जिन्होंने मेरे विवाह पर आपत्ति की थी। जिस दिन इन्होंने मुझे ठेठवार शब्द कहे थे उस दिन एक तरफ तो मुझे आशा लगती थी दूसरी तरफ मैं भी मुझे आश्चर्य ही प्राप्त हुआ था। कारण कि मेरे दिमाग में यह आशा बाधित हुई थी कि अपने काम के लिए मुझे आसानी मिलने में दिक्कत नहीं होती। जमशेदपुर से सौटने के बाद जब मैंने इन्हें अपने काम के लिए आह्वान किया तो वे मेरे साथ हो लिए। अभी तक हाका अनुशीलन समिति का कोई प्रतिनिधि मुक्तप्राप्त में नहीं आया था।

जमशेदपुर से सौटने के बाद एक महीने के अन्दर ही मैं गोरखपुर से बनारस आया और अपने पुराने साथियों की तलाश करने लग गया। उस समय अपने पुराने साथी थी सुरेशचन्द्र मट्टाचार्य से बिभा। अपने एक और साथी प्रियनाथ मट्टाचार्य के सामने सुरेशचन्द्र के साथ संयुक्तकार्य के बारे में बातचीत हुई। मुझे उस समय

यह पता न था कि प्रियनाथ ने बहुत पहले ही पुलिस के पास एक लम्बा बयान दे दिया है। इस बात को मैं पहले ही बता चुका हूँ कि अख्तर से सीटने के बाद पहले महीने के अन्तर ही मुख्तारबाबू से मेरी जो बातचीत हुई थी उसकी रिपोर्ट पुलिस के पास पहुँच गई। यू० पी० के लुफिया विभाग के जो प्रमाण थे उन्होंने मेरे भाई के पास एक डेमी घोफीथियम बिट्टी भेजी जिसमें लिखा था कि तुम्हारे भाई फिर संगठन करने के बारे में बातचीत बसा रहे हैं। उन्हें होसियार कर दो। इनकी स्त्री धीर मेरे भाई इलाहाबाद में ऑक्सफोर्ड होस्टल में रहते थे। मेरे भाई एम० ए में पढ़ते थे। धीर बियेन साहब की स्त्री शायब बी ए० बा एम० ए० में पढ़ती थी। मुझ ठीक पता नहीं। पी० बियेन सन् 21 धीर 22 में सम्भव है ए० टू० डी आई० बी० सी० आई० डी० थे। ए० टू० डी० आई० बी० सी० आई० डी० लुफिया डिपार्टमेंट में राजनीतिक विभाग में प्रमाण होते हैं। जिस दिन लुफिया विभाग के समान कागजात बिद्रोहियों के हाथ आएँ उस समय ही यह पता लगेगा कि मुक्त प्रांत में महापुरुष के बाबू विप्लव कार्य का पुनः संगठन मैंने ही सर्वप्रथम प्रारम्भ किया था नहीं। वही तक मुझे ज्ञात है अख्तर से सीटने के बाद मैंने ही सर्वप्रथम मुक्त प्रांत में विप्लव का संगठन पुनः प्रारम्भ किया था।

सन् 1920 में मायपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हो जाने के परचायु डाका अनुशीलन समिति के प्रमुख नेता श्री अनुलक्षन्त गाँवसी को साथ में ले कर आगरा इलाहाबाद बनारस लखनऊ इलाहाबाद सहितों में घूमा था। उस समय तक भी डाका अनुशीलन समिति के ठरक से कोई व्यक्ति यू० पी० से नहीं भेजा गया था। लेकिन उस समय मैं यू० पी० में एक-दो बरके अपने आवासियों का संग्रह कर रहा था। जैसे प्रदुल गाँवसी अपनी बात मुझे नहीं बतलाते थे, जैसे ही मैं भी अपने बातें उन्हें नहीं बतलाता था। इसीलिए सम्भव है उनके दिमल में यह खबर फैला हो गया हो कि शायद मैंने अभी अपने प्रांत में विप्लव कार्य प्रारम्भ नहीं किया है।

जिस समय मैं जमशेदपुर में मजदूर संगठन का कार्य कर रहा था उसी समय अद्विप में विप्लव कार्य चलाने के लिए अथ-संग्रह का काम भी कर रहा था। डाका अनुशीलन समिति से अलगमुष्ट होकर बी-एक व्यक्ति मैंने पाग घाए थे, लेकिन वे व्यक्ति अपने सकल्प में कुछ नहीं रहे। जिस समय मैं जमशेदपुर से इलाहाबाद के लिए रवाना हो रहा था उस समय विप्लव कार्य करने के लिए मेरे पास कुछ बन था मया था। मेरे लिए यह एक परम सीमाव्य की बात थी कि उत्तर

भारत में विभिन्न कार्य करने के लिए बनी व्यक्ति मुझे नियमित रूप से सहायता देते रहे।

इलाहाबाद पहुँचकर मैंने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं से मुलाकात की। कांग्रेस के विभिन्न कार्यकर्ताओं से भी परिचय प्राप्त करने लगा। इलाहाबाद के विभिन्न होस्टलों में जाकर मैं मोरचानों से परिचित होने की चेष्टा भी करने लगा। कांग्रेस के नेताओं में से एक-आध मेरे साथ सहानुभूति से व्यवहार दिखलाई लेकिन कार्य क्षेत्र में वे लोग एक कदम भी धाये नहीं बढ़े। बनारस पद्मनभ केस के बाद मैं पुरी में एक पद्मनभ केस बना बा। इसके साथ हमारे पुराने दल का कोई सम्बन्ध न था। अतएव यह बात निश्चयेष्ट है कि बनारस केस के बनने के कारण ही मू० पी० के वृत्ते मोरचानों में भी मानिकारी कार्य करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई थी। इलाहाबाद में जाकर मैंने कहा कि मैं पुरी केस के वृत्ते हुए व्यक्तियों से मेरा परिचय हो जाए। इस प्रकार से लोग कल-कलते मैं पुरी दल के एक नेता श्री देवनायकजी का पता लगा। इलाहाबाद में ही उनसे मुलाकात हो गई। मेरे सफ़र में आपने एक दिन जाना भी बताया। बाद की इनसे धारण में जाकर मिला। श्री देवनायकजी ने मैं पुरी केस के बारे में समझाया मुझे बताया। आहवापुर निवासी श्री रामप्रसादजी बिस्मिल भी मैं पुरी दल में एक प्रमुख व्यक्ति थे। श्री देवनायकजी से पता लगा कि रामप्रसादजी और देवनायकजी में एक भीषण विरोध है। मेरे लिए अब यह एक समस्या हो गई कि इन दोनों व्यक्तियों में से किसको अपने दल में लूँ। मेरे दिमाग में एक सन्देह पैदा हुआ कि यदि देवनायकजी को साथ लेता हूँ तो सम्भव है कि रामप्रसादजी मेरे साथ न आएँ और यदि राम प्रसादजी मेरे साथ आते हैं तो सम्भव है देवनायकजी मेरा साथ न दें।

देवनायकजी से मैंने कहा कि आप देहात की छोड़कर आगरा में जाकर बस जाएँ। देवनायकजी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। श्री देवनायकजी ने मुझे आगरा में कुछ बातें बताई थीं जिनका इस स्थान पर उल्लेख कर देना निरास्य प्रासंगिक होगा। एक तो देवनायकजी ने मुझे यह प्रथमी प्रकार समझाया कि अब मुझे अकस्मिक आन्दोलन में रुच्य रखना चाहिए। दूसरे, उन्होंने रामप्रसादजी के बारे में कुछ ऐसी बातें बताई जिसे इस स्थान पर वर्णन करने में मन संतुष्टित हो जाता है। देवनायकजी की बात पर यकीन कर लेने पर राम प्रसादजी को दल में ले लेना निहायत अनुचित मान पड़ता था। लेकिन मैंने दल

मैं सोचा कि देवनारायणजी और रामप्रसाद के बीच परस्पर घोर विद्रोह है इस लिए देवनारायणजी की बातों पर प्रुष रूप से विश्वास करना उचित नहीं है। प्रकाश भान्दोलन में मैं भी लगना चाहता था इसलिये देवनारायणजी की इस बात को मैंने सर्वांगिकरण से स्वीकार कर लिया। देवनारायणजी से बातचीत करके मुझे बहुत-कुछ प्रसन्नता हुई। वे बहुत मज्जीर प्रकृति के समझदार भावमी थे। लेकिन हमारे देश का यह परम दुर्भाग्य है कि मज्जीर प्रकृति के समझदार व्यक्तियों ने निहायत ही कम संख्या में भारतीय विद्रोह भान्दोलन में भाग लिया है। पता नहीं यह परम दुर्भाग्य या सीमाव्य की बात हुई कि श्री देवनारायणजी ने अपने बारे को पूरा नहीं किया। उनसे बातचीत करके यह तथ्य हुआ था कि देवनारायणजी अपने गाँव को छोड़कर भावरा में जाकर अपना केन्द्र स्थापित करेंगे। यदि देवनारायणजी ऐसा करते तो उत्तर भारत का विप्लव भान्दोलन और भी औरतमय रूप धारण करता।

इतिहास के पृष्ठों में 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् वा ब्रूयात् सत्यं धर्मियम्' इस वाक्य का स्थान नहीं है। लेकिन मैं ऐसा कुछ निश्चिन्ता नहीं चाहता जिससे शान्तिकारी भान्दोलन को बचका पहुँचे। तथापि एक बात यहाँ यह कह देना निवृत्त भावश्यक है कि शान्तिकारी भान्दोलन गुप्त और वृक्षमय रूप से होने के कारण घणाश्रमीय एवं अनुपपुक्त व्यक्तियों का इस भान्दोलन में शामिल हो जाना एक विषम संकट का कारण हो जाता है। शायद भी मुझे अत्यन्त यम है कि यदि योग्य व्यक्ति शान्तिकारी भान्दोलन करना आरम्भ कर देता है तो कुछ हदबलासे स्वाधी साहसी मुक्त तो उसे भिन्न जाएँ लेकिन विचारशील एवं योग्य नेतृत्व के अभाव से इन सब नवयुवकों का समुच्च जीवन सार्थक होने नहीं पाएगा। बंगाल में ऐसे बहुत-से तुच्छ अयोग्य छोटे-छोटे विप्लवी दलों से मैं जूझ परिचित रहा। मुझे इस बात की आशंका रही कि यू० पी० में भी वैसे ही अयोग्य व्यक्तियों के नेतृत्व में बंगाल की तरह भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी पार्टियाँ न चढ़ी हो जाएँ। जिस दिन मैंने अष्टमन में सौटकर सचप्रथम यू० पी० विप्लव दल का संगठन पुनः आरम्भ किया था उस समय यहाँ पर और कोई दल काम नहीं कर रहा था।

सन् 1920 में अगस्त-सितम्बर महीने में कलकत्ता में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ था। उस अवसर पर कलकत्ता के प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री बी० सी० चटर्जी साहब ने मैगपुरी बेंच के एक मुक्त राजबन्दी के साथ मेरा परिचय करा दिया

था। उनका नाम है श्री चन्द्रधर चौहरी। उनकी यात्रों में मैं उस दिन जो थोड़ा प्रीर धार्मिकता देखी थी उससे यह अनुमान किया था कि यह व्यक्ति जिस काम को हाथ में लेगा उस काम के पीछे सर्वस्व दे देगा। सच तो यह है कि चौहरीजी को देखकर तत्काश ही मेरे मन में जो भावना पैदा हुई थी उसका संघेजी नाम है Fanatical zeal लेकिन बुर्जुआ की बात है कि इनसे बाह को फिर भिन्नने का प्रयत्न मुझे नहीं मिला। मुझे इस बात ठीक याद नहीं है कि चौहरीजी सन् 31 के धान्दोलन में विरक्त हो गए थे या नहीं। सम्भव है हो गए हों और इसीलिए संभव है फिर बाह को उनसे मेरी मुलाकात नहीं हुई। ये विचारें खर्च पर छोड़ गए थे। जिस सत्रों पर सत्रों के समय से एक सत्र यह भी की कि परि सर कार के विरक्त किसी धान्दोलन में चौहरीजी नाम लेंगे तो उन्हें फिर पुरानी जेल पूरी काटनी पड़ेगी। इस कारण जब चौहरीजी ने सत्ताग्रह धान्दोलन में भाग लिया तो जिला-कमिश्नर ने उन्हें बस्तर में बुलाकर यह इरादा सुनाया कि तुमने सरकार के विरक्त धान्दोलन में भाग लिया है इसलिए तुम्हें अपनी पुरानी जेल फिर काटनी पड़ेगी और तुम यहाँ से सीधे जेल जाने आओगे। संभव है, यह सन् 1921 की बात है। इनसे जो मुझे याद भी यह भी ही विस्तीर्ण हो गई।

मैं स्वयं जान न था। एवं पहले कभी इलाहाबाद में रहा नहीं था इसलिए श्री इलाहाबाद के युवक-मंडली से मेरा कुछ भी परिचय न था। अभितकारी धान्दोलन की सफलता युवक-मंडली पर ही निर्भर रहती है ऐसी मेरी समझ थी। अभितकारी धान्दोलन के बारे में मेरी धारणा यह थी कि मध्यम श्रेणी के युवक बूढ़ ही अभितकारी धान्दोलन का नेतृत्व कर सकते हैं। यह बात सच है कि संघर्ष के समय किसान-मजदूरों की श्रेणी से ही आदमी निकलेंगे जो मर्चा में सिपाही का काम करेंगे। लेकिन सिपाही अपना नेतृत्व स्वयं नहीं कर सकता। इतिहास में बहुत बड़ा ऐसा देखा गया है कि राष्ट्रीय उद्यम-मुपम के प्रयत्न पर सेनाबल तथा सर्वशक्ति बल आते हैं। तब स्वाधीनता के स्वप्न पर प्रजातन्त्र की बगल सामरिक तन्त्र स्थापित हो जाता है। इसका प्रतिकार तभी हो सकता है जब प्रजा में अपनी नेतृत्व करने की क्षमता पैदा हो। अभितकारी उद्यम-मुपम के इतिहास आदि पढ़कर अभी तक मेरी यही धारणा बनी रही कि मध्यम श्रेणी के विरक्त सम्प्रदाय से ही भारत के भावी समाज-संगठनकारी गण निकलेंगे। महत्वा श्रेणी के प्रतुलनीय धान्दोलन के बाद भी मेरा यह बड़ा विश्वास बना

रहा कि भारत की घायल जनता उपलब्ध-उपलब्ध के लिए मिलनी तयार है उनका नेतृत्व करनेवाले उपयुक्त व्यक्तियों का जतना ही सम्मान है। एक बात तो यह थी। दूसरी बात यह थी कि महात्माजी और उनके अनुयायीयन प्रबल रूप से आन्दोलन के दूसरे प्रतिष्ठित नेतागण भारतवर्ष को पूर्णरूप से स्वतन्त्र बनाने के लिए सचेष्ट तो थे ही नहीं बल्कि वे नेतागण भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को धनीक स्वयम्बत् समझा करते थे। वे कभी भी यह विद्वान नहीं करते थे कि भारतवर्ष को स्वाधीन करने का प्रश्न वास्तविक अर्थ का प्रश्न है। ये सब लम्बे प्रतिष्ठित नेतागण यह समझते थे कि कुछ बहके हुए भारत के मौजवान भारत को स्वाधीन करने का स्वप्न देखा करते हैं। यह प्रश्न प्राये दिन का प्रश्न ही नहीं है। भारत के सर्वमान्य नेतागण स्वाधीनता के प्रश्न को व्यवहार में लाने योग्य समझते ही न थे। सम्भव है आज भी वे ऐसा ही समझते हों। महात्माजी और उनके साथियों का कहना है कि 'स्वाधीनता स्वाधीनता करके बिस्मामे से क्या होता है। जो लोग ऐसा बिस्मामे करते हैं वे लोग आज तक कुछ करके दिखाया भी सके हैं? जो कुछ कर सकते हैं वह तो करते नहीं? व्यर्थ का धोर मचाते हैं। लेकिन भारत को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र करने के प्रश्न को जो बुद्धकबन्ध व्यावहारिक रूप में लाना चाहते थे? वे ऐसा समझते थे कि भारत को स्वाधीन करने के लिए जो कुछ करना चाहिए, उसके लिए भारत के प्रकाश आन्दोलन के नेतागण प्रस्तुत नहीं थे। और इसीलिए वे भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को व्यावहारिक प्रश्न नहीं समझते थे। कान्तिकारियों और कांग्रेस के नेतागणों के दृष्टिकोण में यही सबसे बड़ा अन्तर है। इस दृष्टिकोण में ऐसा अन्तर रहने के कारण कान्तिकारी और कांग्रेस-आन्दोलन के मार्ग में भी बहुत अन्तर है। यस्तु इस स्वान पर अन्तिम-कारी मार्ग के बारे में मैं कोई विशेष विचार-विमर्श नहीं करना चाहता। यहाँ पर इतना कहना पर्याप्त है कि मैं जमशेदपुर से लौटकर बुद्धक बन्धों में ही काम करना चाहता था।

मेरे लिए इसाहाबाद के बुद्धकबन्धों से परिचित होने के लिए कोई सहज और सरल उपाय नहीं था। इसलिए मैंने प्रतिदिन इसाहाबाद के विभिन्न होस्टलों में जाना प्रारम्भ कर दिया। जान-बूझान तो किसी से भी ही नहीं। जहाँ बैठता था कि दो-तीन मौजवान बरामदे में लड़े होकर बातचीत कर रहे हैं उनमें पास थोड़ी दूर पर मैं भी आकर बैठा हो जाता था। उनकी बातें सुना करता था। खबर

यह रहता था कि यदि ये युवकगण राजनीति के बारे में कुछ बातचीत करने लगे तो मैं भी धक्कर देकर उसमें शामिल हो जाऊँ। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि इलाहाबाद में मिलते दिन ऐसी टोलियों के पास बड़े होकर इन लोगों का वाता-  
साप मृता। उनमें से एक दिन भी इन लोगों को किसी भी राजनीतिक सामाजिक  
या साहित्यिक प्रश्नों पर बातचीत करते हुए नहीं पाया। इन लोगों की बातचीत  
इतनी दुर्नीतिपूर्ण एवं मनीष होती थी कि उनके पास बड़ा रहना भी धपवान  
जनक एवं प्रशोषितकाधी मानलूम हाता था। इलाहाबाद के बड़े-बड़े होस्टलों में  
मैंने शामद ही किसी के कमरे में कोई साक्षिक पत्र देखा हो। जो दो-चार प्रच्छे  
बड़के होते व वे अपने पड़ने-मिलन में ही मग्न रहते थे और कुछ धाम केन-कुदमें  
लगे रहते थे। सन् 1920-21 में कितना बड़ा आन्दोलन हमारे देश में होता रहा  
लेकिन हमारे युवकगण के मन को इस आन्दोलन ने कितना छोड़ा स्पष्ट किया।  
मैं एक प्रकार से हताश हो गया। मैं बीच-बीच में बनारस भी जाता रहा और  
कानपुर भी। सुरेशबाबू कुछ दिन कानपुर के 'प्रताप प्रेस' में काम करते रहे और  
कुछ दिन 'वर्तमान' के संपादक में। बनारस में भी सुरेशबाबू मुकजी नामक एक बड़े  
पुराने ठाकी थे। इनकी सहायता से श्री राजेन्द्रबाबू साहिबी नामक एक युवक से  
मेरा परिचय हुआ। इनके मताना एक और पुराने साकी भी थे किन्हीं यैरी  
बादी के समय कुछ चुमती हुई बाँटें मुझे कही थीं। वे भी मेरे साथ काम करने  
लगे थे। इनका नाम अपने समयके के लिए यहाँ पर धारकनाथ रत्न देता हूँ।  
उत्तर कानपुर में कहाँ तक मेरा जयाम है, सुरेशबाबू की सहायता से श्री रामदुसारे  
मिनेबी से बात-वहचान हुई। सुरेशबाबू की सहायता से और भी दो सज्जनों से जस-  
पहचान हुई। इनका नाम है श्री बीरमत्र विचारी एवं श्री मन्नीलालजी धरस्वी।  
उक्त समय मन्नीलालजी एक राष्ट्रीय स्कूल के हेडमास्टर थे। धरस्वीजी इलाह-  
बाद बुनिवर्सिटी के प्रेकुएट भी थे। श्री राजेन्द्र साहिबी जी० ए० में पढ़ते थे।  
इलाहाबाद में काँग्रस कार्यकर्ताओं के साथ मैं मिलने-जुलने लग गया। इस प्रकार  
से दो तीव्रवान् मुझे मिले—एक श्री बनवारीलालजी दूसरे श्री लक्ष्मणबाबू बनर्जी।  
इन्हें काँग्रसवाले मोड़ भी बड़ा करते थे। इनकी सहायता से पत्नीय के ठाकुर  
बालराम के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ मेरा परिचय हुआ। वे भी हमारे साथ  
काम करने लगे। इलाहाबाद के श्री बनवारीलाल की सहायता से रायबरेली में  
भी कुछ हमारे साथी बन गए, जिनका नाम भाबू भी बतलाना उचित नहीं



हागा। प्रभीषण के ठाकुर साहब की सहायता से फतेहगढ़ पहुँचा एवं घसीपड़ तहसीलों में भी पहुँचा। जहाँ तक मुझे स्मरण है इन्हीं ठाकुर साहब की सहायता से मेरठ में श्री विष्णुधरजी कुबसिध के पास पहुँचा। इस वक़्त मुझे ठीक स्मरण नहीं है कि कुबसिधजी की सहायता से श्री रामबुलारेजी के पास पहुँचा या ना नहीं। श्री विष्णुधरजी की सहायता से श्री महाबीर रयागीजी से ज्ञान-महान्न हुई। श्री महाबीर रयागी की सहायता से साहजहाँपुर में श्री रामप्रसाद बिस्मिल घोर श्री अष्टफकउस्माजी के पास पहुँचा। कानपुर के श्री मन्नीसाल धवस्थी की सहायता से फतेहपुर पहुँचा। सन् 1923 के अन्तर इन घाठ जिलों में मेरा काम फ़ैस गया। लेकिन वह काय एक दिन में नहीं हुआ। सम्भव है सन् 1922 के अन्त तक बाका अनुसूचित समिति की तरफ से कोई प्रतिनिधि बनारस पहुँचे हों। सन् 1921 में नागपुर कांग्रेस से बीटने के पश्चात् जब बाका अनुसूचित समिति के श्री प्रतुल गांगुली के साथ मैं बनारस आया था उस समय अर्थात् सन् 1922 के प्रारम्भ में बनारस में बाका समिति के कोई प्रतिनिधि उपस्थित नहीं थे। यद्यपि श्री प्रतुल गांगुली के कुछ परिचित व्यक्ति उस समय बनारस में हिन्दू कमिज में पढ़ते थे परन्तु इन छात्रों से प्रतुलजी ने मेरा परिचय नहीं कराया। अर्थात् उस समय फिर मैंने वह अनुभव किया कि प्रतुल गांगुली अपने बल की सब बातें मुझे बताना नहीं चाहते थे। सन् 1922 के अन्त तक मेरा कार्य बहुत-कुछ बदल रहा था। इसे संगठन न कहकर संगठन का एक डीना कहना ही उचित होगा। मुझे इस वक़्त ठीक याद नहीं है लेकिन जहाँ तक मुझे याद है सम्भव है सन् 1922 में ही मैं भगतसिंह के पास लाहौर पहुँच गया। जिस प्रकार से मैं इलाहाबाद के होस्टल में नवयुवकों को डूँढ़ता फिरता था उसी प्रकार से एक दिन फतेहगढ़ में अपने अजीब तरीके के कारण एक प्रतिभावान नवयुवक के पास जा पहुँचा जिसकी सहायता से अन्त में मैं भगतसिंह के पास भी पहुँच गया। इसका एक पूरा इतिहास है। वह जैसा रोचक है वैसा ही कौतूहलपूर्ण भी है।

अमरोदपुर से इलाहाबाद लौट आने के पक्ष में दो-तीन बार कलकत्ता गया था। कलकत्ता में विभिन्न आभिकारी बल के आश्रमियों से समय-समय पर बातचीत करता रहा। इलाहाबाद लौट आने के बाद भी मैं कई बार कलकत्ता गया। जिस प्रकार युक्त प्रान्त में मैं अपना संगठन कार्य करने की चेष्टा कर रहा था उसी प्रकार कलकत्ता में भी मैं अपना एक बल बनाना चाहता था। अमरोदपुर में रहते

समय भी मैं निरागस्त असावधान नहीं रहा। समय पाकर मैं कभी नहीं झुका।

एक दिन कलकत्ता के मिर्ची पार्क में मैंने देखा कि कुछ मात्र मीठवान एकत्र होकर बातचीत कर रहे हैं। मैं भी उनके पास जाकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में मामूम पड़ा कि ये सब मीठवान धार्मिक राजनीतिक प्रश्न पर बातचीत कर रहे हैं। मैंने भी इन लोगों के वार्तालाप में धीरे-धीरे योग देना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार इस टोमी के साम मेरा कृत्र परिचय हो गया। इनमें से एक मुखक महात्त्व प्रच्छेदर के थे। लड़ाई के समय ब्रिटिश सेना में सिपाही के रूप में इच्छा और बैसोपोगमिया तक पहुँच गए थे और अपनी कार्य-कृत्यता के कारण पसटन में छोड़वा भी पा चुके थे। जिस समय का मैं वस्तेब कर रहा हूँ उस समय आप यूनिवर्सिटी कोर में एक प्रच्छेदराधिकारी थे। इबेर आप इंडीनियरिंग कंसिज में भी पढते थे। इनकी सहायता से बंगाल में कुछ और नवमुखों से मेरा परिचय हुमा। लेकिन अनुसीजन समिति के किसी भी सदस्य को मैंने कभी कुछ बताया नहीं कि मैं क्या कर रहा हूँ और क्या नहीं कर रहा हूँ। एक दफा डाका अनुसीजन समिति के प्रमुख नेता श्री प्रमुखप्रद रायुसी से मैंने यह कहा था "माई! पता नहीं मैं आपके जलकर फिर काम करूँगा या नहीं। यदि मैं काम करना छोड़ दूँ तो मेरे जितने रिशोर्वर (अनुवामी व्यक्ति और छात्र) हैं सब आप लोगों के सुपुर्वं कर दूँगा और यदि मैं काम करता रहूँगा तो आप लोगों को बता दूँगा कि ऐसा कर रहा हूँ या नहीं। लेकिन तुम सोच लो किम खोसकर मेरे साथ प्रविष्य के बारे में बातचीत कुछ करते ही नहीं हो। इस तरह कैसे काम बन सकता है! सहयोगिता हो तो दोनों तरफ से हो। यदि तुम मेरे साथ जुनकर बातचीत नहीं करोगे तो मैं भी किस प्रकार से तुम लोगों के साथ दिन खोसकर काम करूँ। मेरे लिए मुसीबत की बात यह भी कि कलकत्ता के विभिन्न अन्ति काफी दल के भादमी यह समझते थे कि मैं डाका अनुसीजन समिति में शामिल हूँ। इबेर डाका अनुसीजन समितिवाले मेरे साथ धुमि दिन होकर काम नहीं करना चाहते थे। डाका समिति के एक और प्रमुख नेता श्री रमेचन्द्र चौधरी ने तो एक दफा प्रसंग में जाकर ऐसा भी कहा था कि 'संगठन के बारे में आपसे हम लोग कुछ सीखना नहीं चाहते।' इन सब कारणों से मैंने भी समझ लिया था कि मुझे मकेला ही सब काम करना पड़गा। एक तरफ जैसे डाका अनुसीजन समिति के नेतामय मुझ अपनी सब बातें नहीं बताना चाहते थे? बेध हो दूसरी तरफ वे यह

भी नहीं चाहते थे कि मैं उनसे प्रथम हो जाऊँ। इसलिए उनकी हमेसा यह नीति रहती थी कि हर प्रकार से मुझे अपने दल में रखने के लिए तरह-तरह की कोशिशें करते थे। धीरे मुझे समझाना चाहते थे कि मुझे अपनी सब बातें बता देने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। काम करते-करते सब बातें स्वयं ही जान जाऊँगी। उनकी यह दुरंती जान मुझे पसन्द न थी। इसलिए मैं उनसे हमेसा बन्नी नाटा करता था। मैंने उन्हें समझाने नहीं दिया कि मैं भी कुछ काम कर रहा हूँ। सन् 1922 के अन्त तक मुझे पता चला कि डाका समिति ने अपनी तरफ से एक धादमी बनारस को भेज दिया है। जब कभी मैं बनारस जाता था तो यह व्यक्ति मेरे पास आकर मेरे साथ बातचीत करने की चेष्टा करता था। इनका नाम था श्री सतीशचन्द्रसिंह। मैंने कसकता में इनकी कई बार देखा था। इनसे मैत्र प्रोढ़ा बहुत परिचय था। जिस समय मैं बनारस पड़गम मामसे के सिलसिले में बैस में था उस समय श्री सतीशचन्द्रसिंह बिहार में काम करने आए थे। श्री सतीशसिंह कुछ पढ़े-लिखे धादमी नहीं थे। राजनीति बहुत क्या समझते होंगे मैं कह नहीं सकता। उनमें एक सच्चे सिपाही के सब गुण अवश्य थे। लेकिन केवल सिपाही मान होने से ही तो संगठन का कार्य ठीक प्रकार से नहीं हो सकता। मुझे तो कुछ के साथ यह भी कहना पड़ता है कि बारीश्र उपेग्र हैमचन्द्र इत्यादि के मुकाबले क जास्तिकारी नेता बंगाल घर में धीरे पैदा नहीं हुए। श्री घरबिन्द के समय जास्तिकारी धान्दोलन का नेतृत्व-जैसे उपर्युक्त विशेष व्यक्तियों के हाथ में था बैसा बाब को नहीं रहा। डाका अनुद्योलन समिति के नेताओं का बौद्धिक विकास निदान्त अपूर्ण था। वे यह नहीं समझ पाते थे कि जास्तिकारी धान्दोलन भारत के राष्ट्रीय धान्दोलन की एक शाखा मात्र है। भारत के राष्ट्रीय धान्दोलन के मूल में एक गरीब राष्ट्र एवं गरीब सभ्यता की सृष्टि की प्रेरणा है। वे सब बातें न वे समझते थे न इन सब बातों से उनका कोई सम्बन्ध ही था। इतिहास दर्शन साहित्य इत्यादि से बंगाल के जास्तिकारी नेतागणों का कोई विशेष परिचय न था। डेटिम्पू की हानत में वे नेतागण कुछ-कुछ पढ़ने-पढ़ाने लगे थे। लेकिन इनका पढ़ना धारम्य धर्म्यवस्थित होता था जैसे चीन के बारे में बर्ट्रेंड रसेल की एक किताब पढ़ी लेकिन जनयातसेन की बीबनी या उनके लेख आदि नहीं पढ़े। संसार की राज्य-जास्तियों के इतिहास से इन लोगों का कोई परिचय न था। डेटिम्पू रहते समय भी इन लोगों में से अधिकतर ने पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि नहीं दिखाई।

मैंने इन लोगों में से बहुतों के साथ जू महीने लगातार दिन-रात धनीपुर सेप्टुन बेल में बिताए हैं। मैं इन लोगों के बारे में बहुत धक्की तरह जानता हूँ। माजकम के प्रसिद्ध नेता श्री मागबेन्द्रनाथ राय जब बंगाल में श्री नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य के नाम से काम करते थे उस समय इनकी मिनती कोई प्रमुख नेताओं में नहीं थी। प्रायः बंगाल के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री यतीन्द्रनाथ मुकुर्मी के मातहत रहकर काम करते थे। इनमें प्रतिभा थी लेकिन यूरोप और अमेरिका में जाकर ही उस प्रतिभा का विकास हुआ। श्री यतीन्द्रनाथ मुकुर्मी भी कुछ विषय पढ़े-लिखे विद्वान नहीं थे। लेकिन उनमें धर्मसुत कवेद्यस्ति थी। श्री पञ्चबिहारी भी इसी प्रकार से कुछ विषय पढ़े-लिखे विद्वान् नहीं थे। लेकिन उनमें भी प्रचण्ड शक्ति थी। फिर भी डाका धनुषीमन समिति के नेताओं के साथ बंगाल के ग्राम क्रान्तिकारी दलों की तुलना करने पर मेरी खट्टा डाका समिति के नेताओं के प्रति नहीं जाती थी। श्री विपिनचन्द्र गोमुनी, श्री मधुनोपाल मुकुर्मी श्री मोठीनाथ राय श्री विरीसचन्द्र बोप इत्यादि नेताओं के राष्ट्रीय बुद्धिकोष डाका समिति के नेताओं से कहीं व्यापक एवं धन्तव्य पटिपूर्ण थे। यह बात सत्य है कि डाका धनुषीमन समिति में ऐसे बहुत-से सदस्य थे जिनकी धर्मिक एवं जिनका मानसिक झुकाव डाका समिति के नेताओं से अधिक धार्मिक एवं प्रतिमास्यक था। लेकिन इन सब प्रतिमास्यी नवयुवकों को उचित व्यवहार नहीं मिलता था जिससे वे अपनी प्रतिभा का पूर्ण विकास कर पाते। डाका समिति का कार्यक्रम ऐसा नहीं था जिसके कारण प्रतिमास्यी नवयुवकों को यह व्यवहार प्राप्त होता कि वे साहित्य लेखन द्वारा या मासिक-साप्ताहिक पत्रों में लेख लेखकर या मंच पर खड़े होकर वक्तुता देने में अपनी प्रतिभा को व्यक्त करने की प्रेरणा अनुभव करें। जब कहीं किसी संघठन के काम में किसी को श्रेय की आवश्यकता होती तो डाका समिति के नेतागण ऐसे व्यक्ति को चुनते थे जिसमें सिपाहियाना गुण तो अवश्य रहते थे लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से अध्ययन की दृष्टि से उसमें ऐसे गुण नहीं होते थे जिनसे वे समाज के स्पष्ट नवयुवकों को या समाज के प्रतिष्ठित गण्यमान्य व्यक्तियों को अपने चरित्रवत्त से अपनी प्रतिभा से अपने कार्यक्रम के प्रति आकृष्ट कर सकें। इसका मूल कारण तो यह था कि डाका समिति के नेतायन स्वयं इस बात को नहीं समझते थे कि क्रान्तिकारी आन्दोलन विराट् राष्ट्रीय आन्दोलन की एक शाखा मात्र है एवं इन नेताओं में राष्ट्रीय आन्दोलन के मूलत्व करने की योग्यता

नहीं थी। इस दृष्टि से सम्भवतः भारत के दूसरे क्रांतिकारी बलों में भी उपयुक्त नेता नहीं थे। यही कारण था कि भारत के दूसरे क्रांतिकारी बलों का कठित्व भी वैसा होना चाहिए था वैसा नहीं हुआ।

श्री सतीशचन्द्रसिंह से बल-संगठन के बारे में मैंने कभी कुछ बातचीत नहीं की। यदि कोई व्यक्ति किसी काम में जुटा रहे तो अवश्य ही उसे कुछ सफलता प्राप्त होती है। इस दृष्टि से सतीशचन्द्र ने भी दो बार नवयुवकों को बना कर लिया था। डाका समिति के नेतायनों ने मेरे साथ कोई परामर्श न करके ही श्री सतीशचन्द्र को बनारस भेज दिया। इस बात से भी मैं समझ गया कि डाका समिति मेरी अपेक्षा न रखकर ही युक्त प्रान्त में भी अपना संगठन बढ़ाना चाहती है। मेरे और डाका समिति के बीच जो फाट था वह इससे और भी बढ़ गया।

इनरसुरेशचन्द्रजी की सहायता से एक प्रतिभावान नवयुवक से मेरा परिचय हुआ। इनसे बातचीत करने पर मुझे यह विश्वास हो गया कि इस युवक में साहित्यिक रुचि है। बाद को इनके दो-एक लेख भी पढ़े। उसके उस समय के एक लेख का प्रभाव मात्र भी मैं भूल नहीं पाया। उस लेख का शीर्षक था—'माँ'। इस लेख को पढ़कर मैंने इस युवक से कह दिया था कि यदि आप साहित्य की रचना करते रहें तो हिन्दी लेखकों में आप अग्रणी हो सकते हैं। लेकिन आपको चाहिए कि अंग्रेजी बमसा एवं हिन्दी-साहित्य से खूब परिचित हो जाएँ। ये अंग्रेजी प्रामाण्य ही न थे। ये प्रतिभावान युवक 'प्राज्ञ' से 'उग्र' नाम से अपना लेख दिया करते थे। प्राज्ञ व सब बातें स्मरण करके मैं बड़े-छोटे पोरब अनुभव करता हूँ एवं यह धारणा-मुद्रि भी अनुभव करता हूँ कि एक यथार्थ प्रतिभावाली युवक को मैंने उसकी तरफ धनसा में ही पहचान लिया था। प्राज्ञ अंग्रेजी में हिन्दी-साहित्य में अपना मुनिदिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। जिस दिन मैंने उन्हें पहचाना था उस दिन उन्होंने साहित्य में पदार्पण मात्र ही किया था। और उस दिन उन्हें हिन्दी संसार में कोई विशेष रूप से जानता भी न था। हम लोगों के साथ परिचय होने के बाद ही, सम्भवतः उन्होंने 'माँ' नामक लेख लिखा था। मुझे भर्त्सक बुल है कि अंग्रेजी के द्वारा हम लोगों का सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ नहीं हो पाया। और मुझे यह भी धारणा है कि अंग्रेजी ने मेरे कपनानुसार अंग्रेजी दर्यादि साहित्य से बेसी रुचि नहीं दिखाई जैसी मैं चाहता था। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि उनकी लेखनी में धारणा यही है? लेकिन उनकी रुचि में परिवर्तन हो जाने के

कारण उनका सृष्ट साहित्य समाज को आसामुख्य कल्याणप्रद सिद्ध नहीं हुआ यह भी बात है। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे प्रतिभाशाली लेखक हैं। उनकी सहायता से हमारे मन को एक ऐसा महत्वपूर्ण लाभ हुआ कि जिसके लिए हम सब सदा उनके कृतज्ञ रहेंगे। इस विषय का उल्लेख यथास्थान किया जायगा।

धर्ममन से सौतेले के बाद मुझ बनारस में रहने का अवसर नहीं मिला? इस कारण बनारस में मैं बंसा संगठन नहीं कर पाया वंसा होना उचित था। निजी सांसारिक कारणों से मुझे इलाहाबाद में रहना था। बनारस में धर्म तो मुझे जिसने व्यक्ति मिले थे उनमें श्री राजेश्वरनाथ साहिबजी एवं श्री बेचनरामजी धर्म विशेष उत्तम बोध्य थे। इसके अतिरिक्त और जिसने व्यक्ति हमारे मन में आए थे उनमें से बहुतों ने बाद को काम करना छोड़ दिया। श्रीधर्म की बात है कि हममें से किसी ने भी बाद को विश्वासघात नहीं किया।

इलाहाबाद में राष्ट्रीय विचारमंच की सहायता से कुछ धारमी मिले। उनमें से एक थे श्री बनारसीनाथ। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में से श्री केसवदेव मानवीय के साथ मेरा परिचय हुआ। इनके एक भाई श्री कपिलदेव मानवीय के साथ बहुत दिनों से मेरी तथा मेरे परिवार-मर की आन-महलान थी। मैं प्रायः कपिलदेव की के पास आया-आया करता था। केसवदेवजी प्रायः मुझे अपने भाई के पास घाँटे-जाँटे बैठते थे। केसवदेव स्वयं ही मुझसे आकर मिले थे। इस समय आप मेरे साथ काम करने को तैयार हो गए थे। उनकी सहायता से और श्री नवयुवकों से मेरा परिचय हुआ था। इस प्रकार से धीरे-धीरे मेरा मन बढ़ रहा था। एक दिन केसवजी ने मुझे बताया कि कानपुर में एक प्रतिभावान नवयुवक है जिससे अपने कार्य के बारे में बातचीत की जा सकती है। इस नवयुवक का नाम था श्री बालकृष्ण धर्मा। केसवजी के भाषण से यह निश्चय हुआ कि केसव कानपुर आकर बालकृष्ण को मेरे पास बुला लाएँगे। एक दिन वे प्रातःकाल बालकृष्णजी को साथ लेते हुए मेरे पास आए। बहुत देर तक बातचीत हुई। अन्त में मैंने इस प्रकार से अपनी व्यक्ति प्रस्तुत की कि अदूर भविष्य में फिर लड़ाई छिड़ने की आशंका है यदि हम उपयुक्त तैयारी कर सकें तो उस अवस्था में हम एक बार फिर स्वाधीनता को प्राप्त करने की चेष्टा कर सकते हैं यदि हम धर्म से तैयारी नहीं करते हैं तो अवसर जाने पर भी हम कुछ नहीं कर पाएँगे। लेकिन कोई

बुद्धि काम नहीं आई। धानकृष्णजी ने कहा कि अभी धीरे सड़ाई की कोई संभावना नहीं है और अभी वह समय भी नहीं आया है कि हम ज्वलिकारी मार्ग से पद्मग्न की रचना करें। आधा भ्रम की मर्यादित पीड़ा से मैं व्यथित हो उठा।

## 9 | कान्तिकारी दल का पुनर्गठन

(2)

इस समय श्री रासबिहारी से मेरा पत्र-व्यवहार होता था। वे सब पत्र मैं कैलाशजी के पास रख देता था। मेरे गोपनीय पत्राचार श्री कैलाशजी के नाम पर भाँटे थे। कैलाशजी का पुत्र बगवारीसाल का पुत्र और गुरुनाराय बनर्जी उर्फ मोदू का पुत्र अक्षय-अक्षय बड़ रहे थे। वे सब पुत्र एक-दूसरे को नहीं जानते थे। बनारस के पुत्र इलाहाबाद के पुत्र को नहीं जानते थे। इलाहाबाद के पुत्र अमीरद या फतेहगढ़ के पुत्र को नहीं जानते थे। इस प्रकार से जिसने पुत्र तैयार होते जाते थे वे सब एक-दूसरे को नहीं जानते थे। यह मैं पहले ही बता चुका हूँ कि बगवारीसाल की सहायता से रायबरेली और प्रतापगढ़ में इन लोगों का दल बनने लग गया था। इस बीच में सन् 1923 के अन्त में गया में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के समय 'बम्बी जीवन' प्रथम भाग की बोलीन श्री कापियाँ छापाखाने से निकल चुकी थीं। उन प्रतियों को लेकर कलकत्ता होते हुए मैं गया पहुँचा। गया में पंजाब से भागे हुए व्यक्तियों से बातचीत की। काले पानी से लींटे हुए कुछ सिख युक्त-राजबन्धियों से मुलाकात की। उधरमें भाई प्यारसिंह भी एक थे। भाई प्यारसिंह बहुत मेन से भाकर मेरे नशि लग गए। कुछ-कुछ की बहुत बातें हुईं फिर काम की बातें हुईं। मैंने ऐसा अनुभव किया कि सम्भव है प्यारसिंह सब धाये नहीं बढ़ेंगे। गया में मुझे एक बात यह भी मालूम हुई कि बम्बई से श्री एस० डायि भाये हुए हैं और बंगाल के विभिन्न कान्तिकारी बलों के नेताओं से बातचीत कर



रहे हैं। दुर्भाग्यवश मेरे साथ उनकी मुलाकात नहीं हुई। इसी बीच में श्री प्रभुस पांगुली से मेरी फिर बातचीत हुई थी। बनारस के श्री सतीशचन्द्रसिंह के बारे में बातचीत छिड़ने पर मैंने यह कहा था कि बनारस में जैसे उपयुक्त व्यक्ति की आवश्यकता है। श्री सतीशचन्द्र उस श्रेणी के नहीं हैं। बहुत सम्भव है कि मेरे ही कहने पर सतीशचन्द्र को बनारस से वापस बुला दिया गया और उनकी जगह पर श्री योगेशचन्द्र पटवर्दी बनारस आए। अब सोसह साल की सब बात अच्छी तरह याद नहीं हैं। मुझे इतना प्रत्यक्ष याद है कि यथा मैं मैंने श्री सुरेशचन्द्र मट्टाचार्य सरदार प्यारसिंह पंजाब के कुछ और व्यक्ति जिनका नाम मैं आज भी लेता नहीं चाहता क्योंकि वे आज भी गिरफ्तार नहीं हुए और बंगाल के कुछ व्यक्तियों से मिलकर प्रविष्ट की कार्यप्रणाली के बारे में बहुत कुछ बातचीत की थी। प्रत्यक्ष ही हम सब एकत्र बैठकर बातचीत नहीं करते थे क्योंकि हम लोगों के इस की यह नीति थी कि विभिन्न प्रान्त के कार्यकर्ताओं में ज्ञान-प्रदान बिनाभी कम हो उतना ही अच्छा।

जब कांग्रेस मे मेरे रविवे को देखकर मेरे एक रिश्तेदार के घिस में यह समझ पड़ा हो गया कि मैं फिर कुछ ऐसा काम करनेवाला हूँ जिससे संकट का भाना प्रतिबन्ध है। मेरे ये आत्मीय घर में जाकर कहने लग गए कि शचीन्द्रनाथ फिर बढ़बढ़ी करनेवाले हैं। श्री सुरेशचन्द्र मट्टाचार्य भी जोसकर मेरे साथ सहयोगिता करते थे उनसे यदि किसी बकौती करने या किसी घाबरी को मोसी मारने को कहा जाये तो प्रपाय से ऐसा कहा जाएगा। जिस व्यक्ति से जितना काम लेना उचित है यह न जानने पर बल का संगठन करना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि हम लोगों की एक मयतसिंह की मिरपटारी के बाद हमारा बस टूटन लग गया था। मैं जानता था कि श्री सुरेशचन्द्र आदि से कितना काम लिया जा सकता है। श्री सुरेशचन्द्र बड़े चरित्रवान साहित्य में रुचि रखनेवाले, विचारशील और धारदवादी युवक थे। विप्लव-कार्य में शामिल होने से कितना संकट है इसे वे जानते थे। यह जानते हुए भी हमारा साथ देने में सुरेश बाबू कभी पीछे नहीं हटे। मेरे पास उनकी बस समय की एकचिट्ठी की नकल आज भी मौजूद है। उनके बचनों से यह पता चल सकता है कि सुरेश बाबू कैसे उच्चकोटि के विचार रखनेवाले कुछ हद तक के युवक थे। गया कांग्रेस में सुरेश बाबू ने मेरा जूब साथ दिया।

जब कांग्रेस से लौटने के बाद इलाहाबाद में मैंने एक छोटा-सा मकान किराए

पर ले लिया। जैसे मैंने मयतसिंह को अपना घर छोड़कर निकल आने को कहा था वैसे ही फतेहगढ़ के मायनाइबर भी खेराभासजी को भी मैंने घर छोड़कर निकल आने को कहा। भी खेराभासजी ने भी मरे कहने के अनुसार अपनी लोहरी से इस्तीफा दे दिया और इलाहाबाद चले आए। इसी प्रकार से श्री बनबारीलाल भी अपना घर-बार छोड़कर इलाहाबाद के मकान में श्री खेराभासजी के साथ रहने लग गए। विभिन्न जिलों के कार्यकर्तापण प्रायः मेरे पास आते थे। उन्हें मैं उसी मकान में ठहराता था। इस प्रकार से विभिन्न जिलों के कार्यकर्तापण एक दूसरे को जोड़ा-बहुत जानने लगे थे। लेकिन फिर भी एक-दूसरे का नाम या एक-दूसरे का पता कोई किसी से पूछ नहीं सकता था। इसी समय श्री खेराभासजी के मार्फत एक संघासी से मेरा परिचय हुआ। उसी मकान में बाठबीठ हुई। संघासी भी अपने की कार्यसमाप्ति कहते थे। इनका कोई पिटोह या जिसका काम था बकौती करना। यह संघासीजी हमसे कहते थे कि उनके पिटोह का नियम यह रहा है कि बकौती के बाद मास इरयादि बेचकर बिताने रुपये हाथ आते थे वे सब संपान रूप से सबस्त्रों में बांट दिए जाते थे। इस प्रकार से वह संघासी एक अन्तिकारी दल बना रहे थे। इस संघासीका कहना था कि संकटकाल में हम किसी की कोई सहायता नहीं कर सकते हैं और न ऐसा करना सम्भव ही है। इसलिए बकौती के रुपये सबस्त्रों में बांट दिए जाते हैं। और इस प्रकार से सहायता देने पर अपने दल का समस्त कार्य बहुत सहज हो जाता है। स्वामीजी की सब बातें सुनकर मैंने मसला पूर्वक सबसे निवेदन किया कि ऐसी संस्था के साथ हम लोग कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते हैं। मैंने बताया कि हम लोगों का अन्तिकारी धाम्नेशन दूसरे प्रकार के सिद्धान्तों पर प्रतिष्ठित है। हम लोग गुरस्कार के बाजार पर समस्त कार्य नहीं करते। यहाँ तो सर्वस्व लोने का प्रयत्न करके कार्यक्षेत्र में घबरीमें होना पड़ता है। यहाँ तो व्यक्तिगत परिश्रम समाज सेवा के मार्ग से गये धाम्नेशन की सृष्टि करना हमारा काम है। समय आने पर कैबलमान विप्राद्वियों की धाम्नेशन क्या होगी तब हम लोग गुरस्कार की बात सोचेंगे। अभी तो हम लोगों का काम है सर्वस्व स्वामी बीजवालों की टोली तैयार करना। जब समय आरुतवर्ष में ऐसी टोली बन आवेगी तब हम लोग दूसरे काम के बारे में सोचेंगे। मुझे इस बात पर बहुत धारण्य हुआ कि हम नहीं संघासी महोदय ने मेरे साथ प्रबंध तर्क किया वह प्रमाणित करने के लिए उनके सिद्धान्त हम लोगों के सिद्धान्त से कहीं अधिक

काबकारी और समसोपयोगी है। संघ्यासीजी चाहते थे हम सब उनके साथ मिल कर एक बिरादू आत्मिकारी बन जायें। मुझे इस बात से बहुत आश्चर्य हुआ कि हमारे साथी श्री छेदासासजी भी कुछ हद तक संघ्यासीजी की बातों का समर्थन करते थे। मैंने यह तो नहीं कहा कि पेखेवर बर्कतों के साथ हम लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं रह सकता लेकिन मैंने स्वामीजी को यह प्रणसी तरह समझा दिया कि हम दोनों के सिद्धांतों में आकाश-पाताल का अन्तर है। हम दोनों के इस एक साथ काम नहीं कर सकते। स्वामीजी अंत में कुछ होश में आकर यह कह कर चले गए कि आप लोग कुछ भी नहीं कर पाएँगे। मैंने मुस्कुराकर नम्रता के साथ उन्हें बिदा किया। फिर श्री छेदासासजी को भी आत्मिकारी आन्दोलन के बारे में बहुत कुछ कहा और समझा दिया कि किसी भी अवस्था में हमें मामूली आशुओं को अपने साथ नहीं लेना है। हमें मूलतः उचित नहीं है कि हमें बड़े स्वयं को सामने रखकर समाज में नये सिरे के आन लाने के लिए हम लोग कार्यक्षेत्र में प्रवर्तित हुए हैं।

इसी समय किसी विश्वस्त मूक से मुझे पता चला कि यू० पी० में फिर एक आत्मिकारी बन्धु का मामला चलने वाला है और मुझे भी बन्धुत्व में प्रसीद्ध आया। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। अभी तो मुरिदस से साक्षर ही काम किया होगा। इतने में ही फिर बन्धुत्व का मामला चलने वाला है। मुझे अपने आशुओं में से किसी किसी पर कुछ सन्देह होने लगा। गुप्त रीति से काम में यह एक बड़ा भारी दोष है कि बरा-सी बात से ही अपने विश्वस्त आशुओं पर भी सन्देह उत्पन्न हो जाता है। मुझे इस धर पर कुछ सन्देह हुआ कुछ डर भी हुआ। इस अवस्था में मैंने यह उचित समझा कि अब घर में नहीं रहना चाहिए। जाने बहर खड़े हो या झूठ फिर भी उचित नहीं है कि सावधानी का काम लिया जाय। मैं श्री श्री छेदासासजी और श्री बनवारीसासजी के साथ रहने लग गया अक्सर देखकर घर में भोजन कर पाता था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि इस का खर्च प्रभावक कप से बढ़ जाय।

मुझे इस समय ठीक स्मरण नहीं है संभव है इसी के कुछ पहले निजी सांसारिक कारणों से कुछ अशोभाजन की भावना से मैं व्यस्त हो पड़ा था। मुझे संशुद्ध साहब की बातें याद आईं। संशुद्ध साहब ने मुझे अन्तमन से कोटते ही कह दिया था कि यदि भविष्य में कभी भी किसी सहायता की आवश्यकता अनुभव करो तो

मुझसे कह देना। मुझसे कम पढ़ा तो मैं प्रथम ही तुम्हारी सहायता करूँगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए मैंने सैन्ट्स साहब के पास एक बिट्टी भेजी। सैन्ट्स साहब उस समय सी० आई० डी० (C I D) से प्रस्थित होकर मामूली पुलिस विभाग में डी आई० जी० ग्राफ पुलिस (D I G of Police) के इनसे मैं प्रथम से मिलते ही फंडाबाब में मिला था। सैन्ट्स साहब ने पत्रोत्तर में मुझको लिखा प्रभु का पीछे को मैं बनारस जाऊँगा और उस समय मुझसे मुलाकात करो। मेरे पीछे सदा सचवा कुफिया पुलिस के सिपाही सवे रहते थे। जिस समय मैं दस के काम से आता था तो इनकी दृष्टि बचाकर मैं प्रसर जिसक चाया करता था। लेकिन जब नियोजन काम में कहीं जाता था तो मुझे इस बात की परवाह नहीं रहती थी कि कुफिया पुलिस के घावमी मेरा पीछा कर रहे हैं। बनारस में सैन्ट्स साहब से मिला। सैन्ट्स साहब जानना चाहते थे कि मैं किस विभाग में किसकी दमस्वाह पर काम कर सकता हूँ। कोई विशेष बगह कहीं पर खामी हो तो मैं उन्हें बताऊँ। यदि उनका कोई हाथ चहुँता है तो वह प्रथम मेरी मदद करे। मैंने उन्हें बताया कि किसी विशेष बगह के बारे में मैं नहीं जानता बरपावि। सैन्ट्स साहब ने बाद को मुझसे यह कहा कि जैसी परिस्थिति होगी और मैं जो कुछ सहायता दे सकूँगा इसके बारे में मैं पत्र ड्राफ्ट तुम्हें सूचना दूँगा। कुछ दिन बाद मेरे पास उनका एक पत्र आया जिसमें लिखा था कि मुझे एक अच्छी बगह भी जा सकता है। करीब एक सौ बरपा उन बगह भी मुझे मिल सकती है। लेकिन मुझे एक शर्त स्वीकार करनी पड़ेगी कि अभिय में जब तक मैं इस मुसाबमत में रहूँगा तक तक किसी प्रकार के भी राजनीतिक धाम्नीसन में भाग नहीं लूँगा। सैन्ट्स साहब ने यह भी आशा दिसाई थी कि मुझे बहुत धन्ये रिपोर्टेंट में काम दिया जाएगा जिससे अभिय में मेरे लिए बहुत उन्नति का मार्ग खुला रहेगा। मैंने देखा कि मुझे एक अच्छा प्रसर मिल रहा है लेकिन किसी प्रकार की भी शत कबूल करने में मेरे दिस में पगवाही नहीं थी। मैंने सोचा कि धाम्नीसन कालेपानी की सजा से मैं जब मुक्त हुपा तो उस समय भी मैंने कोई शर्त नहीं मानी थी। इस समय किसी प्रकार की शर्त मानना मेरे लिए उचित नहीं होगा यद्यपि मैं यह देखा रहा था कि सैन्ट्स साहब के प्रस्ताव में एक बहुत ही व्यापकृत बात यह थी कि जिसने दिस तक में मुसाबमत में रहूँ वहने दिस तक किसी प्रकार के राजनीतिक धाम्नीसन में भाग न लूँ। मैंने सैन्ट्स साहब को एक पत्र भेजा और उसमें बहुत बजटा के साथ

यह लिखा कि 'सैन्ट्स साहब' चापने एक सच्चे धर्म (Englishman) की हैसियत से जो उदारता दिखाई है उसके लिए मैं जगमगर धापका कृतज्ञ रहूँगा। लेकिन बहुत दूर के साथ यह कहना पड़ता है कि भयंकर से कूटते समय भी जब मैंने कोई दार्त स्वीकार नहीं की है तो मेरे लिए उचित है कि जब भी मैं कोई दार्त स्वीकार न करूँ। लेकिन सरकारी मुलाजमत जब मैं स्वीकार करता हूँ तो उसका अर्थ यह होता ही है कि सरकारी क़ायदे-क़ानून को भी मैं स्वीकार करता हूँ। इसके प्रतिरिक्त मैं और कोई दार्त कबूल करना उचित नहीं समझता।" इस पत्र का कोई उत्तर मुझे नहीं मिला और मित्रता धावस्थक भी नहीं था। जब मैं बाल बच्चों को साथ लेकर बरबार छोड़कर फ़रार हो गया था उस समय भी सैन्ट्स साहब की बिट्टी धावि मेरे पास थी। लेकिन मेरी बिरफ्तारी के बाद ये सब चीज़ें एवं और भी बहुतेरे आनन्दवर्णीय कागजात—पत्र एवं मेरी बहुत-सी किताबें—जाने कितनी जगह भूमिधाम कर आज सब-के-सब लो गये हैं।

मुझे ठीक याद नहीं है सम्भव है थोड़े दिन भी खेदासात और भी बनबारी साल के साथ रहकर जब मैंने देखा कि पुलिस की तरफ से कोई विशेष उत्पात की सम्भावना नहीं है तो मैं भी बीसा पड़ गया।

भी खेदासातजी के साथ सनठन-काय के सिलसिले में मैं फ़तेहगढ़ गया हुआ था। सहर के कुछ हिस्सों में एव देहात में भी जाना पड़ा था। हमारे संगठन-कार्य का यह तरीका था कि कितनी जगहों में हरे सके उतनी जगहों में दूढ़ चित्त कर्तव्य पद्यपग रपायी साहसी मुक्कों को बैठाया जाय। इन्हीं को केन्द्र करके क्रमशः एक बिराद बस संमन्वित हो जाता है। गाँव और सहर से बापस आकर गंगाजी के किनारे मुस्ता रहे थे। थोड़ी देर में गंगाजी के किनारे किनारे बाद बाद भूमना प्रारम्भ किया और यह देखना आहा कि कोई ऐसा स्थान मिलता है या नहीं जहाँ पर मनुष्य बिसेस से आकर ठिक सकता है। उस समय फ़तेहगढ़ जिले के 'साब' नामक कौम के पुरुष और स्त्री बहुत संख्या में एकत्र हुए थे। बेलवाड़ी में सबकर परिवार के परिवार जने आ रहे थे। इनको बैसने से मालूम पड़ता था कि ये लोग बड़ मुली हैं निर्द्वन्द्व हैं। इनमें धार्मिक स्थियाँ थीं। ये धार्मिक पदाँ नहीं करती थीं। नि संकोच होकर गंगाजी में नहाती थीं किनारे पर आकर छाती-पीठी थीं। टोलियों में बैठकर संसार की मुस-दुस की बातें करती थीं। कभी-कभी कुछ स्त्री पुरुष एक टोली से दूसरी टोली में आते-जाते थे। मुझे मैं धाया कि जब 'साब'

लोग बड़ घमीर होते हैं। धीर इनका येसा है व्यापार करना। दिनान्त में कुछ बैतपाड़ी में लबकर धीर कुछ पंदस पर को बापस जाते थे। उस समय मामूम होता था मानो किसी मेसा से सब लौट रहे हैं। हम एक घाट से घुसरे घाट को जा रहे थे धीर इधर-उधर तीव्र दृष्टि से देखते जा रहे थे कि इस मेसे के सवरा भावमियों की मीढ़ में बुद्धों धीरतों धीर बाल-बच्चों को छोड़कर मौजवान भी यहाँ पर हैं या नहीं धीर यह हैं तो वे शिमिल हैं या नहीं। अर्थात् मेरे लापक भी कोई मुबक इस मीढ़ में मिल सकता है या नहीं यह भी मैं देखता जा रहा था। एक दफा प्रचानक ही मैंने एक कुने कमरे के पन्वर एक मुबक को बैठकर किताब पढ़ते हुए देखा। मेरा दिल उत्सहित हो उठा। मैं सीधा उस कमरे के पन्वर चला गया। मेरे साथ मेरे दो-एक साथी भी कमरे के भीतर चले आए। हम लोगों को देखकर वह मौजवान किताब की तरफ से अपनी दृष्टि हटाकर हम लोगों की तरफ देखने लगा। मैंने उस नवयुवक की ओर धीरों में ऐसी चीजें देखीं जिससे मैंने अनुमान किया कि यह मुबक निरान्त निविष्ट चित्त होकर अपनी किताब पढ़ रहा था। किताब की तरफ दृष्टि पाकृष्ट होते ही मैंने देखा कि वह एक अर्धे-की किताब थी। मैंने उस मुबक से समा प्रार्थना करते हुए कहा कि इन स्थान पर एक नवयुवक को रतचित्त होकर किताब पढ़ते हुए देखकर हम लोग पाकृष्ट हुए हैं धीर इनलिए आपके पास आए हैं। मुबक ने सहृदयता के साथ हम लोगों को अपने उत्त पर बैठाया। यह विचार भी तो निरान्त अकेला ही था। मनुष्य समापम से वह मुबक कुछ असन्तुष्ट हुआ हो ऐसा मामूम हुआ कि उस मुबक की एक बहन थी पत्नी पार्वतीदेवी देखा वह भारतीय इतिहास पर परबिटर साहब का भापुनिकतम अग्र्य था। मार होने के बाद वह मामूम हुआ कि उस मुबक की एक बहन थी पत्नी पार्वतीदेवी सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में राजमोहात्मक आपस देने के कारण दो साल की कड़ी कैद की सजा फतेहगढ़ की सेन्ट्रल जेल में भगत रही हैं। अपनी बहन से मिलने के लिए वह मुबक फतेहगढ़ आया हुआ है। यह भी मामूम हुआ कि आप साहीर में साजपराय की प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पाठशाला में सम्पापक हैं। इनका नाम है सम्पापक जयचमकी विद्यालंकार। आप मुकुटम के स्नातक हैं एवं मारतीय इतिहास पर विशेष लोच करके आपने दो ग्रन्थ भी लिखे हैं जिनमें से एक ग्रन्थ के लिए संसदाप्रसाद पारितोषिक आपको मिला है। इन ग्रन्थ का नाम है

यह सिखा कि संयुक्त साहब आपने एक सख्त अंग्रेज (Englishman) की हसियत से जो उदारता दिखाई है उसके लिए मैं बगम पर आपका कृतज्ञ रहूँगा। लेकिन बहुत दूर के साथ यह कहना पड़ता है कि अखबार से छूटे समय भी जब मैंने कोई धर्म स्वीकार नहीं की है तो मेरे लिए उचित है कि जब भी मैं कोई धर्म स्वीकार न करूँ। लेकिन सरकारी मुलाजमत जब मैं स्वीकार करता हूँ तो उसका यर्थ यह होता ही है कि सरकारी कायदे-कानून को भी मैं स्वीकार करता हूँ। इसके परिणाम में और कोई धर्म कबूल करना उचित नहीं समझता। इस पत्र का कोई उत्तर मुझे नहीं मिला और भिक्षुता आवश्यक भी नहीं था। जब मैं बास बरखों को साथ लेकर बरबार छोड़कर उतरा हो गया था उस समय भी संयुक्त साहब की बिंदी प्राप्ति मेरे पास थी। लेकिन मेरी निरपेक्षा के बाद वे सब चीजें एवं और भी बहुतेरे आवश्यकीय वानबात—एक एवं बरी बहुत-सी किताबें—जाने किसनी अगह धूमधाम कर प्रायः सब-कुछ लो गये हैं।

मुझे ठीक याद नहीं है सम्भव है जोड़ दिन की खेलाखाल और भी वनबात जाल के साथ रहकर जब मैंने देखा कि पुलिस की तरफ से कोई विशेष उत्साह की सम्भावना नहीं है तो मैं भी डीमा पड़ गया।

श्री खेलाखालजी के साथ संपदन-कार्य के सिलसिले में मैं फतेहगढ़ गया हुआ था। सहर के कुछ हिस्सों में एक वेहात में भी जाना पड़ा था। हमारे संगठन-कार्य का यह उरीका था कि जितनी जगहों में हो सके उतनी जगहों में कुछ चित्त कर्तव्य परामर्श तयानी साहसी युवकों को बैठवाया जाय। इन्हीं को केन्द्र करके क्रमशः एक बिन्दु बस संगठित हो जाता है। पाँच और सहर से बापस आकर पंगाबी के किनारे सुस्ता रहे थे। बोली बेर में बंयानी के किनारे किनारे बाट-बाट धुमना प्रारम्भ किया और यह देखना आहा कि कोई ऐसा स्थान मिलता है या नहीं जहाँ पर मनुष्य विदेश से आकर टिक सकता है। उस समय फतेहगढ़ जिले के 'साब' नामक कोम के पुरुष और स्त्री बहुत संख्या में एकत्र हुए थे। बंसदाड़ी में बबरकर परिवार के परिवार बसे आ रहे थे। हमको देखने से भाजूम पड़ता था कि ये लोग बड़े सुखी हैं निर्दम हैं। हमने अधिकांश स्त्रियाँ भी। ये अधिक पर्व नहीं करती थीं। निःसंकोच होकर पंगाबी में गहाली भी किनारे पर आकर जाती-पीती थीं। टोसियों में बैठकर संसार की सुख-दुख की बातें करती थीं। कभी-कभी कुछ स्त्री-पुरुष एक टोली से दूसरी टोली में आते-जाते थे। सुनने में आया कि जब 'साब'

रोप बढ़ घभीर होते हैं। घीर इनका वेधा है व्यापार करना। दिमान्त में कुछ 'नयाड़ी में लदकर घीर कुछ पैदा कर को बापव जाते थे। उस समय मामूम होठा। मानो किसी मेला से सब लौट रहे हैं। हम एक घाट से दूसरे घाट को जा रहे थे घीर इधर-उधर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते जा रहे थे कि इस मेले के सब घाबमियों की भीड़ में बुद्धों घीरों घीर बाग-बच्चों को छोड़कर नीजवान भी यहाँ पर हैं वा नहीं घीर यदि हैं तो वे शिक्षित हैं वा नहीं। घर्पात् मेरे लामक भी कोई युवक इस भीड़ में मिल सकता है वा नहीं यह भी मैं देखता जा रहा था। एक दफा घाबानक ही मैंने एक लुमे कमरे के घम्बर एक युवक को बैठकर किताब पढ़ते हुए देखा। मेरा दिन उत्सवित हो उठा। मैं सीधा उस कमरे के घम्बर चला गया। मेरे साथ मेरे दो-एक साथी भी कमरे के भीतर चले आए। हम लोगों को देखकर वह नीजवान किताब की तरफ से अपनी दृष्टि हटाकर हम लोगों की तरफ देखने लगा। मैंने उस नवयुवक की ओ घीरों में ऐसी भीड़ देखी जिससे मैंने अनुमान दिया कि यह युवक नितान्त निविष्ट चित्त होकर अपनी किताब पढ़ रहा था। किताब की तरफ दृष्टि धाकृत होते ही मैंने देखा कि वह एक धंयेंड़ी किताब थी। मैंने उस युवक से लमा प्रार्थना करते हुए कहा कि इस स्थान पर एक नवयुवक को वचचित्त होकर किताब पढ़ते हुए देखकर हम लोग धाकृत हुए हैं घीर इसलि आपके पास आए हैं। युवक ने सहृदयता के साथ हम लोगों को अपने वक्त व बठाया। यह बिचार भी तो नितान्त अकेला ही था। मनुष्य समागम से यह युवक कुछ प्रसन्नुष्ट हुआ हो ऐसा मामूम नहीं पड़ा। धंयेंड़ी किताब को उठाकर मैंने देखा वह भारतीय इतिहास पर परबिटर साहब का धाबुनिकतम ग्रन्थ था। भार तीय इतिहास पर युवक से बातचीत होने लगी। इस प्रकार कुछ देर तक बातचीत होने के बाद वह मामूम हुआ कि उस युवक की एक बहुत सीमती पार्सतीदेवी सत्पाप्रह धान्दोलन के सिससिमे में राजश्रीहात्मक भाषण देने के कारण हो सान को कड़ी कर्ष की सभा फटेहूक की सेन्ट्रल जेल में मृगत रही हैं। अपनी बहुत से मिनने के लिए वह युवक फटेहूक धाया हुआ है। यह भी मामूम हुआ कि आप लाहौर में नाजपतराम की प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पाठशाला में धम्पापक हैं। इनका नाम है धम्पापक नयचन्द्री विधानकार। आप गुरुकुल के स्नातक हैं एवं भार तीय इतिहास पर विशेष लोज करके आपने हो ग्रन्थ भी लिखे हैं जिनमें से एक ग्रन्थ के लिए मंगलाप्रसाद पारितोषिक आपको मिला है। इन ग्रन्थ का नाम है



‘भारतीय इतिहास की कपरेखा’। बहन की बात होते-होते राजनीति और सरयाग्रह आन्दोलन पर खूब बातें होने लगीं। मालूम पड़ा कि धर्मतस्तर में बा० जयचमू साहब ने एक आश्रम खोला था। उस आश्रम में बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी अध्यापक श्री ज्योतिषचन्द्र घोष भी पधारे थे। लेकिन बाद की फिर उन लोगों के साथ कोई सम्बन्ध इत्यादि नहीं रहा। पहले तो ज्योतिष बाबू का नाम सुनकर दिल में यह बटका पैदा हो गया कि क्यों मेरे पहले ही बंगाल वाले पंजाब में घटना घट्टा बना लिए हैं और मुझे इसका कुछ पता भी नहीं। लेकिन जब बाद की सुना कि ज्योतिष बाबू के साथ इन लोगों का अब कोई सम्बन्ध नहीं है। तो मैं समझ गया कि अभी तक कोई सयत्न कार्य नहीं हुआ है। ज्योतिष बाबू के साथ जयचन्द्रजी और उनके कुछ छात्रों की खूब बातचीत हुई थी यह सुनकर मैं समझ गया कि क्रांतिकारी आन्दोलन पर भी निश्चय ही बहुत बातचीत हुई होगी। फिर हिंसा-अहिंसा पर, महात्माजी की नीति पर सरयाग्रह आन्दोलन पर, एवं बाद की क्रांतिकारी आन्दोलन पर भी खूब बातचीत हुई। जयचन्द्रजी को जब मालूम हुआ कि मैं प्रगल्भ गया हुआ था और ऊँची-थार सात तक वहाँ पर रहा तो वह मेरे प्रति बहुत आश्चर्य हो गए। उन्होंने बतलाया कि फतेहगढ़ से वह इलाहाबाद आएँगे। उस समय ‘बन्दी जीवन’ नामक मेरी पुस्तक छप चुकी थी। मैं चाहता था कि जयचन्द्रजी मेरी किताब पढ़ें। किताब मेरे पास नहीं थी। इसलिए तथा जयचन्द्रजी से बातचीत और भागे बढ़ाने के लिए वह तय पाया कि इलाहाबाद में राष्ट्रीय स्कूल में जयचन्द्रजी से मेरी फिर मुलाकात होगी। इलाहाबाद में फिर मुलाकात हुई। ‘बन्दी जीवन’ पढ़कर जयचन्द्रजी अत्यन्त प्रभावित हुए। इस प्रकार से जयचन्द्रजी हमारे इस में सम्मिलित हुए। इन्होंने मुझे साहौर बुलावा। मैं साहौर गया। अध्यापक जयचन्द्रजी के मकान में ही प्रतिष्ठित हुआ। साहौर में मैं कुछ गीतबानों से परिचित हुआ। इन गीतबानों में एक का नाम बा सरदार मनसिंह। साहौर के गीतबानों में से कोई तो राजमसिन्धी या रहनेवाला या कोई बा नूबरामलामा का कोई या पुरदासपुर का और कोई होधियारपुर का। ये सब लालपतछाय के प्रतिष्ठित तिलक स्कूल पाठशाला के छात्र थे। एक एक करके इन सब गीतबानों से देर तक बातचीत होती रही। अन्त में अन्ति के मार्ग को छोड़कर भारतवर्ष कभी भी स्वाधीन नहीं हो सकता और अन्ति अन्ति होना निश्चय ही सम्भव है इन सब बातों पर विवेक रूप से और बैठे हुए और

पिछले क्रान्ति युग के इतिहास को बतलाते हुए मैंने इन सब नवयुवकों को क्रान्ति मार्ग में दीक्षित किया।

साहौर में हम लोगों के एक बहुत पुराने साथी थे श्री केदारनाथजी सहगल। इससे भी मैं मिलने गया। ये व्यक्ति बारहों महीना तीसों दिन हरबड़ी सिर से पैर तक काने कपड़ पहने रहते थे। भारतवर्ष जब तक स्वाधीन नहीं होता है तब तक इनका प्रयत्न था कि सफ़र बपड़ा नहीं पहनें।

श्री केदारनाथ के यहाँ और भी पुराने साथियों के साथ बातचीत हुई। श्री केदारनाथ और ये सब दूसरे पुराने साथी काम करने के लिए घाये नहीं बड़े। श्री केदारनाथजी के जरिये यह मासूम हुआ कि पहले साहौर पठनार्थ केस के श्री पुष्पीसिंहजी के साथ उनका कुछ सम्बन्ध है। मैंने बार-बार आन्तरिक बैट्टा की कि पुष्पीसिंहजी से मेरी मुलाकात हो जाय लेकिन मेरे दुर्भाग्य से उनसे मुलाकात नहीं हो सकी।

इस वक्त मुझे ठीक से याद नहीं है यदि उस समय के संवाहकों द्वारा से सहा ता भी जाय तो सम्भव है सिलसिले को ठीक रखते हुए सब बातों में बता सकूँ। इस समय कुछ घागे की बातें थोड़े कह रहा हूँ या थोड़े की बात घागे बता रहा हूँ या नहीं इसके बारे में कुछ निश्चयपूर्वक मैं कह नहीं सकता। जिस समय नामा में अकासियों का सरयाग्रह हो रहा था उस समय मैं अमृतसर आया हुआ था। सम्भवतः जयजन्मजी से मिलकर मैं सीबा अमृतसर आया था। सिकखों का जो महान् दूर्य उस समय मैंने देखा उसकी तुलना भारतवर्ष के किसी प्रान्त से भी नहीं हो सकती। नामा में प्रति दिन गोमी बन रही थी। उसके मुकाबले में प्रतिदिन सिकख जत्थे गोमी का सामना करने के लिए नामा आते थे। पंजाब के हरएक प्रान्त से किसान मजदूर छात्र नीज बाग बूढ़ प्रौढ़ हरएक प्रकार के सिकख इन जत्थों में भा आकर शामिल होते थे। मैंने स्वयं देखा है कि अमृतसर में जब ये जत्थे पहुँचते थे तो बिसकुल सामरिक रीति से इन जत्थों का स्वागत होता था। और इनकी कितनी ही माताएँ, बहनें स्त्रियाँ इनसे आकर मिलती थी। अपने प्रयत्न से अपनी उम्र से हृदय के अन्तस्त्व से ये माताएँ, बहनें और स्त्रियाँ इन सिकखों के गलों में प्रीति के स्नेहाशीर्वाद के भगवत कामना के प्रतीकस्वरूप मालाएँ पहनाती थीं। अमृतसर में एक तरफ़ रसद का ईंतजाम था अस्पताल की व्यवस्था थी। नामा से बीट आए कितने व्यक्ति इन अस्पतालों में आकर आराम लेते थे। एक घर को छोड़कर और सब बातों में पूरी लड़ाई की

साथ यदि हम कांग्रेस के नेताओं की मनोवृत्ति की तुलना करते हैं तो मन में ऐसा लगता है कि ये लोग विशेष करके महात्माजी और उनके अनुयायीगण मार्गों अन्तिकारियों को अपना और अपने देश या धनु समझते हैं। कांग्रेस के प्लेटफार्म से एवं समापति के वाचन से भी ऐसे विषय वाक्यों के उद्गार किए जाते हैं जिससे देश में क्रूर एवं प्रबल बलबन्दी की भावना उत्पन्न होती है। ऐसा मानना पड़ता है कि इन नेताओं के दिल में अन्तिकारियों के प्रति एक उग्र कटुता-सी है। कभी तो ये नेताएँ अन्तिकारी आन्दोलन की उसे इफेंटाइस (Infantile) अर्थात् बालकोचित कहकर भिन्ना करते हैं और कभी अन्तिकारी आन्दोलन को फैंसि स्टक कहकर अपनी बलन को ध्वस्त करते हैं। और कभी ऐसा भी कह देते हैं कि अन्तिकारियों ने देश की प्रगति को पचास साल पीछे हटा दिया है। यह भी आरोप किया जाता है कि अन्तिकारीगण बलपूर्वक असह्य निर्वोप व्यक्तियों को सही बना देते हैं। इस मनोवृत्ति के पीछे धान्य युक्ति नहीं है इसके पीछे ऐतिहासिक प्रेरणा भी नहीं है और सर्वोपरि इसके पीछे देश हित की कस्याबमयी कामना भी नहीं है। इसके पीछे केवल सर्वकार का एक उग्र रूप विद्यमान है। कांग्रेस के नेताओं ने भी सरलतापूर्वक आत्यन्तिक रूप में भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को न स्वीकार किया और न उसका विचार किया। जिस समय संसार का प्रत्येक पक्षीन राष्ट्र अपनी स्वाधीनता को प्राप्त करने के लिए बेचैन है तब पृथ्वी है असाध्य साधन के लिए सर्वस्व विसर्जन करने को भी तैयार हो रहा है एवं अद्भुत साहस और निष्ठा के साथ अपने ध्येय के पीछे लगा हुआ है। उस समय भारतवर्ष के लज्ज-प्रतिष्ठित नेतागण अपने सामर्थ्य को अपने ध्यान में रखते हुए ही भारतवासियों को रास्ता दिखाने की हिम्मत करते हैं और उनके नेतृत्व में भी विश्वास नहीं करते हैं ऐसे अन्तिकारियों के प्रति वे कटुतापूर्वक उद्गार करते हैं। लेकिन जैसे अकाली नेतागण एक तरफ अन्तिकारियों के प्रति सहायुक्ति सूचक शब्द व्यवहार करते थे वही प्रकार दूसरी तरफ अकाली नेतागण सरदार गुरुमुखसिंह जैसे विशोद्विगों का क्षिपकर साथ देते थे और उनकी सहायता भी करते थे।

सरदार गुरुमुखसिंह के कमरे में अकालियों के एक सर्वमान्य नेता थे। सदाह हा रही थी कि भारतवासियों की सृष्टि करके अकाली आन्दोलन को सहायता पहुँचाई जा सकती है या नहीं। मैं जानता था कि अपना बल सभी पूर्ण रीति से संगठित

नहीं हुआ है तथापि यह भी मैं जानता था कि दो-बार सरकारी भ्रष्टाचारों को यम-आम पहुँचाने के लिए जिसकी क्षमता थी आवश्यकता है उसकी क्षमता हमने प्राप्त कर ली है। मैं यह भी जानता था कि आतंकवाद के बख्तर में पड़कर क्रान्तिकारी आन्दोलन को काफ़ी नुक़ा नज़ सकता है। मैं यह भी ज़ून जानता था कि आतंकवाद के हाथ नभी भी देश को स्वाधीन नहीं किया जा सकता। लेकिन देशवासियों की सहानुभूति धाक़ूट करने के लिए ब्रिगान्दोलन के नेताओं की सहानुभूति पाने के लिए हम लोगों को बार-बार आतंकवाद के बख्तर में पड़ना पड़ा है। इस पहलू को बिहार-विनिमय नामक अपनी पुस्तक में पाठकों के सामने रखना मैं भूल गया हूँ। भारत के आतंकवाद के भूल में यह भी एक प्रबल बात थी कि बहुत-से बनी ब्यक्ति क्रान्तिकारियों को सहानुभूति देने के लिए इस घर्त परतवार हो जाते थे कि कूर प्रस्थापारी राजपुत्रों को समाप्त कर दिया जाय। बारीश ने इस बात को प्रकाश रूप में स्वीकार किया है। पंजाब में भी अकाली नेता की मनोभूति को देखकर वही बंगाल की बात याद घाती है। सरदार गुरमुखसिंह के कमरे में बैठकर यह तय हुआ कि भारत के बड़े नाट के ऊपर बय धीर पिस्तील से हमला किया जाय। उस समय सरदार गुरमुखसिंह भी पंजाब में बोलसेविकनीति पर एक दल के सक्रिय कार्य में लगे हुए थे। लेकिन उनके दल में यह तानधर्म न भी कि सादसाहन के ऊपर आक्रमण का कोई इम्तज़ाम कर सके। जैसा मैं पहले बता चुका हूँ मैंने मुक्त प्रांत में एक लोग-सा दल लड़ा कर लिया था। मैंने इन लोगों से वादा दिया कि बंगाल के देशबन्धु सी० धार० दास से सलाह करने के बाद ही मैं यह बता सकता हूँ कि साद साहन के ऊपर हमले का दायित्व मैं ले सकता हूँ या नहीं। पंजाब के नेताओं को मैंने स्पष्ट शब्दों में समझ दिया कि हम ऐसा कोई काम करना नहीं चाहते जिससे जन-आन्दोलन को कोई नुक़ा पहुँचे। महारमा दाबी से बंगाल के कुछ क्रान्तिकारियों ने वादा किया था कि सासमर महात्माजी के कार्य में वे लोग बाधा नहीं देंगे। मैंने अपने दिल में यह धाधा पोदी भी कि देशबन्धु सी० धार० दास धीर उनके ऐसे बूझने कायेची नेताओं को बिनाब आन्दोलन के प्रति सक्षम रूप में धाक़ूट करेगा। इस मनोभूति के कारण मैं यह नहीं चाहता था कि सी० धार० दास की इच्छा के विरुद्ध आतंकवाद की सट्टि की जाय। मुझे ऐसा भी मामूय था कि सभी बड़े दिन पहले ही सी० धार० दास में धीर ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि में राजनीतिक मामलों के बारे में कुछ

समझौते की बातचीत चल रही थी। यकासी गैठा एवं गुरुमुखसिंह ने मेरे दृष्टिकोण का समर्पण किया।

कहीं पर साठ साहब के ऊपर हमला किया जाय इस पर भी विचार हुआ। पाठक सुनकर हैरान हो जाएंगे कि सिख धार्मिक इतना व्यापक एवं गम्भीर हो चुका था कि बड़े-से-बड़े सिख भ्रष्टार भी इस धार्मिकता को हर प्रकार से सहायता देने के लिए तैयार हो गए थे। गुरुमुखसिंह के कमरे में जो सिख भ्रष्टार मौजूद था उसने मुझसे कहा कि धिम्मा में ही हमला हो सकता है। धीरे साठ साहब के बसने-फिरने के बारे में एक बच्चे की तरह हमको डीं था सकती है। मैं धिम्मा के बारे में बोझा-बहुत परिचित था क्योंकि मैं एक साल तक धिम्मा में रह चुका था। मैं जानता था कि धिम्मा से बाहर निकल जाने के लिए रैकड़ों पैसे हैं। धिम्मा में मेरे आने-जाने का इन्तजाम होने लगा।

एक और विशेष महत्वपूर्ण बात यहाँ बताना सामास्यिक न होना। मुझे एक तार की नकल दिखाई गई। यह तार जैपी साठ की तरफ से नामा के जैपी भ्रष्टार के पास था रहा था। यह तार संकेत में लिखा हुआ था। मुझसे कहा गया कि मैं इस तार का समझौता करूँ। मैंने देखा हजार की संख्या में (एक-दो-बहाई रैकड़ा हजार ऐसे हजार की संख्या में) कई एक एक तीन लम्बी-लम्बी कतारों में सजाये हुए हैं—सर्वात् मान लीजिए कि ऐसा है पहले 4510 लिखा हुआ है उसके नीचे 3781 लिखा है धीरे उसके नीचे 7828 लिखा है इसी प्रकार से तीन लम्बी-लम्बी कतारों में ऐसे घोकड़े सजाये हुए हैं। ऐसा मोपनीय तार भी सिख भ्रष्टार ने तार भर से नकल करके निम्नवर्गियों के हाथ में लाकर रख दिया है। मैंने इन्हें समझाया कि इस तार के धर्म को समझने के लिए कई महीनों तक परिश्रम करना पड़ेगा। फिर संकेत विज्ञान से भी धून परिचित रहना नितांत आवश्यक है। धीरे मैं ऐसा परिचित नहीं हूँ। मैंने यह भी बतलाया था कि हम लोगों के सांकेतिक चिह्न धाग भी सी० धाई० डी० बासे समझ नहीं पाए हैं। हम लोगों के एक धाभी भी विनायक राम कापसे के मुत-धरीर के साथ एक बिट्टी भी पाई नहीं थी। उस बिट्टी में कुछ सांकेतिक चिह्न थे धाग भी सी० धाई० डी० बासे इन चिह्नों का धर्म समझ नहीं पाए हैं। तार की नकल तो धीरे बात रही साठसाहब के भ्रष्टार से नामा के सम्मान में पूरी काइस-की-काइस (कायडाठ) भ्रष्टारियों ने जाबन करायी। इसका नाम है बन-पान्नान

इसको कहते हैं क्रीम की प्रीति । सिख लोग सरकारी नौकरी भी करते थे और अपनी जाति की सेवा के लिए भी सब कुछ करने के लिए तैयार रहते थे । भारत भर की दूसरी जातियों में इसकी तुलना जिसको कठिन ही नहीं घसमस है ।

प्रकाशी नेता और सिख धर्मगुरु से मिलने के बाद सरकार गुरुमुखसिंह से संघर्ष के बारे में बहुत बातचीत हुई । मुझे पता चला कि सरकार गुरुमुखसिंह रुस हाकर गए हैं काबुल में भी इनके घरों में रुक रहे हैं । काबुल में अंगरेजों का जाने का विरोध सपास निर्धारित है । गुरुमुखसिंहजी कई बार काबुल से पंजाब आए हैं और गए हैं । सरदार गुरुमुखसिंहजी बीमारी के सिद्धांत के आधार पर सिखों में ही अपना संघर्ष करना चाहते हैं । उनसे बातचीत करके मैंने यह अनुभव किया कि सिखों को छोड़कर दूसरी किसी क्रीम के साथ मिलकर अब ये लोग कुछ काम नहीं करना चाहते । मुझे बहुत दुःख हुआ । लेकिन मैं समझ गया कि व्यक्तिकारी धर्मोत्थान में भी साम्प्रदायिकता का विषय अपना असर दिखाने लग गया है । मैंने यह सब समझ लिया कि गुरुमुखसिंह अब मेरे साथ मिलकर कोई काम नहीं करेंगे ।

अंततः मैं जाहौर सीट भागा । मरिच में गुरुमुखसिंह से सम्बन्ध कायम रखने के लिए प्रयत्न कर लिया । धर्मगुरु अमरगढ़ी को गुरुमुखसिंह के बारे में सब बातें बता दीं लेकिन वहाँ तक मुझे पता था कि सादरसाहब के ऊपर हमसे की बात उन्हें नहीं बताई ।

इधर गगतसिंह से बातचीत करने पर मामूम पड़ा कि गगतसिंह के पिता गगतसिंह की छाती कटाने का समझ प्रयत्न कर रहे हैं । मैंने खुद तो छाती कर ली थी लेकिन मैं यह सब अनुभव कर रहा था कि मैंने छाती करके बड़ी भारी झगड़ी की है । मैंने गगतसिंह को समझ दिया कि यदि छाती कर लीये तो मरिच में व्यक्तिकारी धर्मोत्थान में तुम अधिक काम नहीं कर पाओगे । गगतसिंह छाती करना नहीं चाहते थे । मैंने यह एक नियम या कि दल के धारणी की परीक्षा करने की गरज से मैं यह देखना चाहता था कि अपने दल का व्यक्ति तपाव करने के लिए कहीं तक तैयार है । हम लोग तो सही को अपने दल का धारणी समझते थे जो व्यक्ति हर घड़ी इस बात के लिए तैयार हो कि जब कभी कहा जाय तभी बर बार छोड़कर काम करने के लिए मंजूर में उत्तर पड़े । इस नीति के अनुसार मैंने गगतसिंह से कहा कि 'जब तुम बर-बार छोड़ने को तैयार हो । यदि तुम छाती

कर सोचे तो घाबे चलकर अधिक काम करन की याचा तुमसे नहीं रहेगी । और तुम यदि घर में रहते हो तो उन्हें छोड़ी करनी पड़ेगी । मैं नहीं चाहता कि तुम छोड़ी करो । इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम घर छोड़कर मैं वहाँ कहीं वहाँ रहने लग जाओ ।” भगतसिंह घर छोड़ने के लिए तैयार हो गए । मैंने एक डफ़ा चाहा था कि सरदार किशनसिंह (भगतसिंह के पिताजी) से मिल गया मैं । क्योंकि घटीत युग में सरदार किशनसिंह से हम लोगों का कुछ सम्बन्ध रहा था । लेकिन भगतसिंह के घर से बाहर जाने की बात से मैंने वह निर्णय किया कि सरदार किशनसिंह से नहीं मिलूँगा । मुझे यह याद है कि एक डफ़ा एक बंगले के लघु मकान में मैं साहौरा बाहर की बाहरी तरफ़ सरदार किशनसिंहजी से मिला था किन बार मिला था मुझे इस बात का स्मरण नहीं है । मेरे कहने पर भगतसिंहजी घर छोड़कर पुस्तकालय चले गए थे । पहले-पहल कानपुर में यमीनामजी यमस्वी के मकान पर उनके रहने का इन्तजाम किया गया था ।

इसपर ब्यास की बातें कहने को बहुत कुछ रह गई हैं। जमशेदपुर के काम को छोड़ देने के बाद और इलाहाबाद आने के पहले एक इलाहाबाद से भी मैं कई वर्ष कलकत्ता गया था। उसका विवरण देना अभी बाकी है।

पंजाब का समाचार लेकर के उस समय मैं बंगाल गया था। धाव भी मुझे बहू ठीक ठीक स्मरण है कि मैं हैसबन्धु सी० आर० दास से कई बार मिलता था और पंजाब का संदेश लेकर उनसे बहुत बातचीत हुई थी। उसका सब बृहन्त धाव प्रकाश कर देने से किसी की भी कोई हानि नहीं है ऐसा मैं समझता हूँ। इसके पहले पं० जवाहरलालजी से भी मेरी जो बातचीत हुई थी उसे भी यहाँ लिख देना अप्रासंगिक नहीं होगा। विशेष करके पं० जवाहरलालजी के अपनी आपबीती (मेरी कहानी) में कमिन्सकारी धाम्नीधन के बारे में जगह-जगह पर अपने बहुत कुछ मन्त्रम्य प्रकाशित किये हैं। जमशेदपुर के काम को छोड़ देने के बाद इलाहाबाद में मैंने पं० मोतीलालजी नेहरू एवं पं० जवाहरलालजी नेहरू से मुलाकात की थी। उस समय पं० मोतीलालजी नेहरू स्वराज्य पार्टी बनाने में लगे हुए थे। अभी तक देहली में कांग्रेस का विशेष अभिवेक्षण नहीं हुआ था। मुझे इस समय याद नहीं है कि गया में कांग्रेस का नाविक अभिवेक्षण हो चुका था या नहीं। मोतीलालजी से मैंने बहुत मन्त्रम्य एवं धाम्नीधन के साथ यह निवेदन किया था कि कांग्रेस कार्यक्रम का यह एक प्रधान अंग होना चाहिए कि कांग्रेस सबसों को लेकर जो संघटन हुआ उसका स्वरूप ऐसा होना आवश्यक है ऐसा धामरसेव का 'दिनपनीना' संघटन या अथवा ऐसा यूरोप के ग्रन्थ देशों में राजनीतिक संघटन



ने। यहाँ आवश्यकता पड़ने पर छादमियों की माँग की जाती है और उस  
 आने कितने प्रकार के छादनी कितनी विभिन्न भावनाओं को लेकर  
 दिन के भिन्न काँधस के काम में लाग पड़े हैं। लेकिन होगा वह चादिए कि  
 सेवा के छादने को सँभल हुए त्वाणी मनुष्यों का ऐसा वल तैयार है जिसमें  
 क व्यक्ति देश-सेवा के छादस को धनार्थ रूप में हूबचयन करके भातृभाव से  
 बित होकर बहुकास व्यापी त्वाय का जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार हो।  
 बिल में और भी बहुत-सी बातें थी जिन्हें प्रकाश करने के पूर्व ही पं० मोतीलाल  
 मेरे प्रस्ताव की हँसी उड़ाने लग गए। मैं पंडितजी को यह नहीं समझ पाया  
 काँसीसी राज्य कान्ति के पहले काँस में और बिछोपकर पेरिस में कितने राज  
 तक सबको की स्थापना हुई थी। पंडितजी ने मेरी बातों को पूरी तरह से मुना  
 नहीं और जब कभी अपने कामों से फुरसत पाते व घोर में पास होता था तो  
 तजी मेरी तरफ इष्टि निखप करके मुस्कराकर मुझसे पूछते व “कहो मिस्टर  
 पास और कुछ बिलियन्ट सजेसन है?” मैं भी अपनी बज्जा और मँम को  
 जाने के लिए कह दिया करता था “वहाँ तो सभी बिलियन्ट हैं इन सब के  
 ने मैं क्या अपनी बिलियन्टी बिलनाऊँ। पं० मोतीलालजी से तो इससे आगे  
 चीत बढ़ी नहीं। लेकिन पं० जवाहरलालजी से बो-लीम दिन तक बहुत बात  
 हुई थी। यदि पंडितजी की राज मेरी राज से मिल गई होती तो आज मैं सब  
 लिखने की आवश्यकता न होती। कारण उस अवस्था में तो वे हमारे सहोपनी  
 और अपने छादमियों की बात धनुषों के सामने प्रकाशित कर देने का प्रय  
 है देखइए करना। इसके अतिरिक्त पं० जवाहरलालजी ने अपनी आत्म  
 नी में कमिन्कारियों के प्रति अपनी राज व्यक्त करना उचित समझ है तथा  
 य-समय पर भारत के राष्ट्रीय नेता की हिसियत से कमिन्कारियों के बारे में  
 होने बहुत-से वक्तव्य प्रकाशित किये हैं। मैंने भी एक कमिन्कारी होने के नाते  
 जवाहरलालजी से जो बातचीत की थी राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में  
 का भी एक स्थान होना उचित है ऐसा मैं समझता हूँ। अन्धमन से लौटने के  
 राजनीतिक बन्धनों की मुक्ति के लिए आन्दोलन में उनसे सहायता पाने की  
 से एक दफा मैं पं० जवाहरलालजी से मिला था। इसका जस्तेब मैंने पहले ही  
 दिया है। इसलिए पण्डितजी से मेरी कुछ बोझी बहुत पहचान हो गई थी। पं०  
 लालजी से निराश होकर मैंने चाहा कि एक एके पं० जवाहरलालजी से भी

घण्टी तरह से बातचीत करके क्यों न देख लूँ। एक दफे मिलने की इच्छा प्रयत्न करने पर पं० जबाहरसालजी ने मेरे मिलने के लिए एक समय नियत कर दिया। उस नियत समय पर एक दिन प्रातःकाल मैं 'ध्यानमन्त्र' मन्त्र में पं० जबाहरसालजी से मिली। वह समय पंडितजी का जलपान करने का समय था। बातचीत शुरू होते ही पंडितजी के लिए कुछ फल इत्यादि पाए थे। मुझसे भी उन्होंने पूछा 'कुछ खाओगे?' मैंने नम्रता से उत्तर दिया 'नहीं मेहरबानी है मैं जाकर आया हूँ। पंडितजी आते-आते मेरे साथ बातचीत करते रहे। कम-से-कम बड़े बच्चे का व्यवहार बातचीत हुई होगी। मैं पंडितजी को अमृतकारी ध्यानोक्तन की व्यवस्था और उसकी सफलता के बारे में विश्वास दिलाया चाहता था।

पं० जबाहरसालजी से जब मेरी बातचीत हो रही थी और मैं पंडितजी के कहने की तरफ देखता था तो मुझे ऐसा अनुभव होता था कि मानों मैं एक अर्ध-धीन मन्त्र बुद्धि बहका हुआ सरल लेकिन नासमर्थ बुद्धि हूँ और पंडितजी मानों निहम्वत कृपापूर्वक मेरे साथ बैठकर कुछ समय मल्ट कर रहे हैं। कुछ इस तौर पर कि विचार एक सरल बहका हुआ मुक्त भाषा है कुछ कहना चाहता है, गया करे कुछ तो समय बना ही पड़ता। घण्टा कहो, सुनते हैं। नास्ते का समय है बी बी लही। लेकिन जैसे जैसे बातचीत होने लगी जैसे-जैसे ही फल-फल निस्रुह उदासीन भाव बना गया और अपने पक्ष को लेकर पंडितजी से भी जैसे ही पन्नीरतापूर्वक ठर्क किया बीधा मैंने अपने पक्ष को लेकर धान्तरिकता के साथ उन्हें समझना चाहा। पंडितजी से बहुत धान्तिपूर्वक किसी बात को न छिपाकर अपनी बात को विहायत स्पष्ट दृष्टि में मेरे सामने रख दिया। पंडितजी का कहना था कि प्राकृतिक काल में सुप्रतिष्ठित किसी भी राष्ट्र के विकास वही की प्रजा के लिए संरक्षण कल्पित करना असम्भव है। मैंने उस और जर्मनी का बृष्टान्त दिया और कहा कि प्राकृतिक काल में इन देशों में संरक्षण कल्पित सम्भव हुई है। पंडितजी ने मुझे समझना चाहा कि गुप्त रीति से पञ्चम्य के मार्ग को प्रहल करने पर हम कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे कारण एक तो हमें इस मार्ग में बहुत-बोड़े बाधनी मिलेंगे और दूसरे यह कि जो बाधनी मिलेंगी भी समर्थ से हथेला मुकबिर पैदा होंगे। इन मकबिरों की वजह से संरक्षण का कोई काम पूर्ण नहीं हो पाएगा। हम सोय गुप्तरीति से पञ्चम्य रखेंगे। जोसे रियो में सब बाँटे कुल आँखी। जेजजाने तथा कीर्ती के तर्कों पर हम सोयों की जाने आँखी और इस

से हम लोग कुछ भी नहीं कर पाएँगे। मैंने उनकी यह बात स्वीकार कर भी मुप्त रीति से काम करने पर मुसबिर तो अवश्य पैदा होंगे और इन मुसबिरों के बारे में बार-बार हमारा संमेलन टूट जायगा और बार-बार हमारे पास भी कामों में तथा फौजी के तक्तों पर जाने देंगे। तथापि बार बार कामिकारी संमेलन तैयार होया और हर बार यह संमेलन पहले की अपेक्षा अधिक सक्रियता से व्यापक बनता जायगा और फौजी के तक्तों पर तथा कामेपानी में जीवन जत करने के परिणामतः देशभर में लोगों के दिलों में त्याग की भावना भी। प्रायों का मोह कटेगा साहस एवं दृढ़ता बढ़ेगी एवं सर्वोपरि कान्ति की भावना प्रवर्धक में देशभर में प्रसार मान करेगी। मैंने उनसे यह भी कहा कि मैं पहले तो बंगाल में ही एक मुप्त पद्धत रचा गया। लेकिन इस कान्तिकारी पद्धत के मामले के परिणाम में कान्ति की सहर बगावत से लेकर पञ्चायत तक फैल गई। एक पद्धत के मामले के स्थान पर प्रतिवर्ष बीसियों पद्धत मामले जैसे दिन ब दिन यह पद्धतकारी बन कमजोर बढ़ता ही गया बड़ा नहीं। जितनी सारी हुई जितनी कामे पानी की सज्जाई हुई उतने ही प्रबल रूप में कान्ति की भावना देशभर में फैली। फौजी या मुसबिरों के कारण कान्तिकारी प्रवर्धन नहीं बल्कि बढ़ता ही गया। मुसबिरों के बारे में सब बात तो यह है कि हम लोगों का काम जितना बढ़या उतने ही बढ़े-बढ़े मुसबिर भी पैदा होंगे। सभी को लोगों का काम छोड़े पैमाने में हो रहा है इसलिए सभी को मुसबिर पैदा होंगे वे हमारी हानि छोड़ी ही होगी। लेकिन जैसे-जैसे हमारा काम अधिक व्यापक प्रबल होता जायगा जैसे ही बढ़े-बढ़े देशभरोही निकलेंगे जिसकी स्वाधीनता कारण देश को बढ़ी-बढ़ी हानि पहुँचेगी। अमेरिकन बार माफ इन्विपेन्डेन्स' रिका के स्वाधीनता युद्ध के समय बढ़े-बढ़े जनरल देश-प्रोहिता करके संघर्षों तरफ चले गए थे। पश्चिमी ने यह प्रण किया था कि "विद्रोह करनेमें प्रेरित करने में तुम लोग कैसे धन-धन संवह कर सकते हो? संघर्षों की सुधि दे देना के मुकाबिले में तुम क्या कर सकते हो? तुम्हारे पास यह धिक्ता नहीं है कि हम अपने पास की धिक्ताओं में जैसे जहाँपर वे सामरिक धिक्ता एवं युद्ध प्रती बनाने के कारणों में धिक्ता पा सकें। यह काम भी प्रकाश रूप में कोई नहीं सकता। इसके लिए मैं तो मुप्त रीति से पद्धत करने की आवश्यकता

है। धरम-धरम सपह करने के बारे में मैंने उनसे जो कुछ कहा था उसे आज भी प्रकाशित करना उचित नहीं समझता हूँ। लेकिन पंडितजी को यह विश्वास नहीं हुआ कि हम धर्मियों के मुकाबले में सामरिक तैयारी या धरम धरम पहन कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि 'मान लो तुम लोगों ने छोटी प्रक्रियाओं की शिक्षा भी पा ली लेकिन फिर भी धर्मिक सरकार की छोटी के मुकाबले में अपनी छोटी कैसे तैयार करोगे। अगर यह बात भी मान ली जाय कि राष्ट्रपति और मेम्बरी भी बाहर से मंगा सकागे तो फिर मशीनमन धर्मिककार टक, टोपकामा हवाई जहाज इत्यादि के मुकाबले में तुम क्या कर सकते हो। मैंने ईसकर इसका जवाब दिया था कि बाकिर जर्मन राष्ट्र के मुकाबले में धातुमिक संसार में कोई राष्ट्र तो था नहीं। जर्मन जैनियों के समान कार्यक्षम होना आसान बात नहीं है। फिर भी जर्मनी की रियाया ने कैसे सफलतापूर्वक जर्मन राज्य को छोड़कर बड़ी प्रजातन्त्र स्थापन किया? वहाँ भी तो टोपकामे मशीनमन और हवाई जहाज थे। लेकिन प्रजा के बिद्रोह के सामने 'कैसर' को हर्लेन्ड भाग जाना पड़ा और 'हिरोनबर्ग' को भी तो झुकना पड़ा। जिस पसटन ने फ्रांस हर्लेन्ड, इटली और अमेरिका की सम्मिश्र धक्ति का मुकाबला किया था, जब उसी पसटन ने प्रजा के बिद्रोह का साम किया तो वही मशीनमन वही टोपकामे वही हवाई जहाज कैसर के काम में आकर बिद्रोहियों के काम में आय। उसी प्रकार से धर्मियों की धक्ति चाहे जितनी बड़ी क्यों न हो लेकिन भीतरी विप्लव के कारण जो मानना उत्पन्न होनी उसका मुकाबला करना उनके लिए बहुत कठिन बात है। यदि अपनी तैयारी के साथ देवी पसटन हमारा साम दे तो धर्मियों की समान धक्ति और उनके मशीनमन इत्यादि कोई काम नहीं दे सकती। लेकिन मेरी कोई व्यक्ति काम नहीं पाई। पंडितजी को यह विश्वास नहीं हुआ कि भारतवर्ष में सधरम धक्ति सम्भव है। अन्त में पंडितजी ने यहिशा भी नीति पर बहुत खोर दिया और कहा कि ये तो यहिशा नीति पर विश्वास रखते हैं और यही मानवता है कि महात्माजी के दशमि हुए मार्ग से ही भारतवर्ष का कल्याण हो सकेगा। इस प्रकार से बातचीत समाप्त होते समय सम्भव है मुझमें कुछ असहिष्णुता कुछ उन्मत्ता था गई हो। क्योंकि बाकिर में यहिशा नीति के बारे में पं० अवाहरमासजी से मैंने कुछ ऐसे व्यक्तिगत प्रश्न किये थे जिसका सम्बन्ध विप्लववाद की युक्ति धारा के साथ कुछ भी न था। लेकिन पंडितजी ने मेरे सब प्रश्नों का उत्तर बड़ी धान्ति

से दिया और मुझसे जरा भी घबराहट नहीं हुए। कारण कि मेरे प्रथम प्रत्यक्ष  
न के और मानसिक विश्लेषण की दृष्टि से व्यक्तिगत विकास को जानने के लिए  
मेरे बड़े संयत थे।

पंडितजी के साथ बातचीत के विमर्शों में प्रथम-क्रम से यह भी बात सिद्ध  
गई थी कि हमारे पुष्ट ग्रामोन्नत से प्रकाश ग्रामोन्नत का क्या सम्बन्ध रहेगा।  
पंडितजी कहते थे कि प्रकाश रूप में व्यापक जन-ग्रामोन्नत की सृष्टि किए बिना  
जन-साधारण में जागृति नहीं हो सकती है और जागृत जनता को छोड़कर भारत  
का राष्ट्रीय ग्रामोन्नत संभव नहीं हो सकता है। पुष्ट पद्धत से जनता में कोई  
जागृति नहीं उत्पन्न हो सकती है। मैंने भी बहुत धीरे में पंडितजी की यह बात  
मात्र की थी लेकिन मैंने यह कहा था कि प्रकाश जन-ग्रामोन्नत एवं पुष्ट रूप में  
विप्लव के लिए पद्धत का काम भी साथ-साथ चलना चाहिए। एक को छोड़कर  
दूसरा काम अपरिपूर्ण रह जाएगा। निम्नलिखित बिन्दु के संघर्ष के राष्ट्रीय ग्रामोन्नत  
का उत्प्रेषण करते हुए मैंने पंडितजी से कहा था कि संघर्ष में मोडरेट नेताओं की  
बहुत बड़ी हुई जगह से विप्लव ग्रामोन्नत की निम्ना तो करते थे लेकिन उनके  
कहने का सारा महत्त्व यह था कि प्रकाश ग्रामोन्नत विप्लव होने पर भारत  
में भीयन रूप में ऐसा जूनी विप्लव ग्रामोन्नत प्रारम्भ हो जाएगा जिसकी तुलना  
में कांग्रेसीय की प्रवृत्ति की तुल्य मान्य रहेगी अर्थात् बलात् के मोडरेट नेता  
रूप अपना ग्रामोन्नत इस प्रकार से जगह से जिससे संघर्ष के विप्लव ग्रामोन्नत  
का प्रभाव इतिहास सरकार के ऊपर जरा भी कम न पड़े। जन-ग्रामोन्नत की  
प्रवृत्तिता तो प्रत्यक्ष है इसमें कोई शंका नहीं। संघर्ष में भी जन-ग्रामोन्नत  
बड़े उच्च एवं प्रचण्ड हो चुका था इसीलिए उच्च प्रत्यक्ष में क्रांतिकारी ग्रामोन्नत  
में भी कुछ और पकड़ा। कुतर्कात् बिहार और मद्रास में बड़े रूप में प्रकाश  
ग्रामोन्नत नहीं हुआ इसीलिए उन प्रान्तों में क्रांतिकारी ग्रामोन्नत भी प्रचण्ड  
नहीं हुआ। इसलिए उनसे मेरा मर्म निवेदन यह था कि विप्लव में जन-ग्रामोन्नत  
का विप्लव इस प्रकार से करे जिससे विप्लव ग्रामोन्नत को कुछ भी बाधा न  
पड़े। मेरे लोगों ग्रामोन्नत एक-दूसरे के परिपूरक हों। ऐसा होना हम लोग उचित  
समझते हैं। लेकिन मुझे प्रत्यक्ष कुछ हुआ जब पंडितजी ने कहा कि ऐसा होना  
भी सम्भव नहीं है। कारण महात्मा गांधी के नेतृत्व में जो जन-ग्रामोन्नत हो रहा  
है और होगा वह एकदम अहिंसा नीति पर चलता और इसके द्वारा विप्लव

ग्राम्योत्थन की कोई सहयोगिता नहीं हो सकती है। वरिष्ठ बिप्लव ग्राम्योत्थन के कारण ग्रहिलात्मक ग्राम्योत्थन को बनेष्ट बनका पहुँचिया। यहाँ तक कि यदि बिप्लव ग्राम्योत्थन बसता रहे तो ग्रहिलात्मक सत्याग्रह ग्राम्योत्थन के लिए बाधावरण एकदम बियड़ जाएगा। इसलिये हम लोग कभी भी नहीं चाहेंगे कि बिप्लव ग्राम्योत्थन का काम बनता के सामने आए। मैंने प्रथम ही पण्डितजी को यह बतसा दिया था कि ऐसी घासा करके घाप निवृत्त वृत्तधा कर रहे हैं। क्योंकि बिप्लवोत्थन जब जो ठीक समझेंगे वही करे। कारण सिद्धान्तों का जब येद है तो कर्म-प्रणाली में भी येद प्रवृत्त होता है इसे कौन रोक सकता है। पण्डितजी ने इस पर केवल यही कहा था कि ऐसा होना नहीं चाहिए।

सब बातें समाप्त होने पर हम एक-दूसरे के प्रति यबेष्ट प्रीति की बावना लेकर एक-दूसरे से बिदा हुए। इस बटना के बाद भी पण्डितजी ने बीच-बीच में मिलता रहा। 'बम्पी बीबन' प्रथम भाग खपने पर मैंने एक प्रति पण्डितजी को उपहार दी थी। पण्डितजी ने स्वयं भी इस किताब को पढ़ा था एवं दूसरों को इसे पढ़ने को कहा था। मुझसे पण्डितजी ने कहा था कि दूसरे घाप की भापा कुछ धीर सरस होनी चाहिए। मैनी जेल में भी पण्डितजी से बहुत बातचीत हुई थी। जिसका बर्तन जेल जीवन के संवर्धन में ही करने की इच्छा है।

इलाहाबाद में जो दूसरे कावेस के नेता ब उन सबसे भी मैं अच्छी तरह मिला था। उनमें से एक-दो सज्जन बिप्लव ग्राम्योत्थन के प्रति यबेष्ट सहानुभूति रखते थे। लेकिन व्यावहारिक रूप में हममें से किसीने भी हमें कुछ भी सहामता नहीं दी। बिप्लव ग्राम्योत्थन के सम्पर्क के प्रकाश्य नेताओं में से पण्डित जवाहरलासजी को छोड़कर देसबन्धु सी० धार० दासजी से सबसे अधिक एक शम्भोर रूप में बातचीत हुई थी। पंजाब से मीटने के बाद किस समय मैं बसकता गया था एवं सबसे पहले मैं कब देसबन्धु सी० धार० दासजी से मिला था यह मुझे इस समय ठीक-ठीक वाद नहीं है। मैंने अपनी नीति यह बना ली थी कि हम प्रकाश्य ग्राम्योत्थन के नेताओं से अपना ऐसा सम्बन्ध स्थापित करें जिससे देश के गण्यमाग्य व्यक्ति बिप्लव ग्राम्योत्थन के प्रति यबेष्ट रूप में सहानुभूतिपूर्ण हो जाएँ और यदि सम्भव हो सके तो उनसे अपने आयोजन के अनुसार सहामता सेने की भी चेष्टा करें। इस नीति के कारण एव पंजाब के गुस्त्राघ ग्राम्योत्थन के नेता से बात चीत हो जाने के कारण देसबन्धु सी० धार० दासजी से मिलना मरे लिए निवृत्त

प्रारम्भ हो गया था।

बड़े साहस के ऊपर प्रारम्भ करने से प्रकाश राष्ट्रीय धाम्दोलन को किसी प्रकार से प्रभावित पहुँचेगा या नहीं यह समझ लेना मेरे लिए उचित था। धीरे में यह भी नहीं चाहता था कि प्रकाश धाम्दोलन के नेतापन हमारे ऊपर बड़ा साँझा लगाए कि हमारे ही काम के कारण प्रकाश धाम्दोलन में बिप्लव पड़ेंगे। मैं यह भी चाहता था कि देशबन्धु से बिप्लव धाम्दोलन के लिए कुछ प्राविष्ट सहानुभूति नूँ। इन सब कारणों से देशबन्धु सी० धार बासजी से मैं निम्ना एकदम एकान्त में बातचीत हुई।

देशबन्धु सी० धार बास के साथ बचान के कुछ नास्तिकारियों का सम्बन्ध था। लेकिन मेरे साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। श्री सुभाषचन्द्र बोस की एक किताब से यह पता चला है कि देशबन्धु के उद्योग संसिस्मर सन् 1921 में महात्मा जी से बंगाल के कुछ नास्तिकारियों की बातचीत हुई थी। इस बातचीत में देशबन्धु बास भी उपस्थित थे। महात्माजी से बातचीत होने के बाद इन नास्तिकारियों ने महात्माजी को यह बचन दिया था कि महात्माजी के कार्यक्रम में वे तोय बाधा तो देंगे ही नहीं बल्कि कांग्रेस धाम्दोलन में शीघ्रता से कर उनके कार्यक्रम को सफल बनाने की वे भरसक कोशिश करेंगे। यहाँ तक मुझ नामूम है इन नास्तिकारियों में डाका अनुशीलन समिति के कोई व्यक्ति नहीं थे और सम्भव है कल कला के दूसरे वर्गों के व्यक्तियों ने मुझे भी डाका समिति का प्राथमी समझकर मेरे साथ कोई सलाह नहीं की थी। मैं इस समय बमबेदपुर के पड़हूर धाम्दोलन में काम कर रहा था। डाका अनुशीलन समिति कांग्रेस धाम्दोलन के विरुद्ध थी सी धार बास के विरोधी दल के प्रमुख प्राविष्टों की सहायता लेकर सत्पात्र धाम्दोलन का विरोध करती थी। बंगाल के दूसरे वर्गों के व्यक्तियों से मुझे बड़ा सहाय मिलता था। यह बात मैं पहले ही बता चुका हूँ।

पंजाब से लौटकर मैंने श्री देशबन्धु बास के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय कर लिया। देशबन्धु बास से मेरा परिचय पहले ही हो चुका था। धम्बमन में रहते ही मैं अपने भाइयों के पास भी बिट्ठी भेजा करता था उसके अनुसार मेरे भाई देश के सर्वमान्य नेताओं के पास राजनीतिक कृतियों को सुझाने के लिए प्रावेदन-निवेदन पत्रादि भेजा करते थे। उस समय के राजनीतिक नेताओं में से केवल सी० धार बास एवं अखिलचन्द्र मिश्रजी ने उन प्रावेदन-निवेदनों के उत्तर दिए थे। इस बात से

श्री देशबन्धु का महत्त्व व्यक्त होता है। इसके बाद नागपुर कांग्रेस में श्री० धार० दास जी के साथ मेरा साक्षात् परिचय हुआ। कुछ बोझे धावमियों ने नागपुर में देशबन्धु को यह धारवाचन दिखाया था कि यदि आप बकायत छोड़कर राजनीतिक क्षेत्र में प्रवर्तनीय हों तो हुआ ऐसी पलटनी जिसकी तुलना मिसनी मुक्ति है। इन बोझे धावमियों में मैं भी एक था। श्री सी० धार० दास जी यह भरोसा नहीं था कि उनके राष्ट्रीय क्षेत्र में पूर्णरूप से प्रवर्तनीय होने पर भी बंगाली बनता ठीक प्रकार से उनके प्राज्ञान का प्ररूपतर दे सकेंगी। स्कूल कामेज के लड़के श्री सरदासह दामोदर में प्रचार्य रूप में जाय लेंगे या नहीं स्कूल कामेज छोड़ेंगे या नहीं इसमें श्री० धार० दास जी को काफ़ी संदेह था। जिन व्यक्तियों ने श्री० धार० दासजी से यह कहा था कि आपके बकायत छोड़ने पर बंगाल के छात्रबन्ध प्रबन्ध ही स्कूल-कामेज छोड़ देंगे उनमें बंगाल के एक बकीय श्री भिरवाप्रसन्न साम्पात और मैं थे। नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन के समय विषय समिति की बैठक में श्री मैंने श्री० धार० दास के पक्ष में दो-चार बातें कही थी। उस समय दासजी के साथ महात्माजी की तलाशनी कम रही थी। इसलिए जो व्यक्ति दास के पक्ष में कुछ कहता था उसके प्रति उनकी दृष्टि धाकट्ट होती थी। फिर जैसे अधिवेशन में राजनीतिक बन्धियों के सिलसिले में मैं ही एक बंगाली था जो सर्वप्रथम हिन्दी में प्रकाशनापूर्वक बोला था। बाद की मैंने सुना कि बंगाल कांग्रेस के सेवर विषय में मुझ लैने के लिए श्री० धार० दासजी ने इच्छा प्रकट की थी। इन सब बातों के प्रतिरिक्त और भी एक बड़ी बात यह थी कि श्री० धार० दास के सम्मान में 'माधवन' नाम से जो मासिक पत्र निकलता था उसमें 'बन्धी जीवन' नाम का मेरा लेख प्रकाशित होता था। इस लेख के प्रति श्री सी० धार० दासजी की दृष्टि प्रबल रूप में धाकट्ट हुई थी ऐसा मैंने सुना है। श्री हेमन्तकुमार सरकार उस समय देशबन्धु के अन्तरंग कार्यकर्ताओं में से थे। इन्हीं की जबाबी मैंने वे सब बातें सुनी थी। नागपुर कांग्रेस के बाद देशबन्धु दास ने कुछ कार्यकर्ताओं को अपने यहाँ बाबत दी थी। उस बाबत में मैं भी निमग्नित था। मुझे नितांत कुत्स है कि उस समय बरेलान मिले के फालना नामक स्थान में मैं हट के कारीबार में लगी ठरह पाया था। इसलिए ऐसे मुनहुले धक्कर पर मैं देशबन्धु के साथ मिलकर काम करके अपने कर्मजीवन को सार्थक नहीं कर पाया। इन सब कारणों से देशबन्धु दास से मेरा प्रवेष्ट परिचय हो चुका था। इसलिए जब मैंने देशबन्धु से एकान्त



में बातचीत करने के लिए कुछ समय चाहिए तो बालजी ने सहर्ष मुझे इसके लिए समय दिया।

मेरे साथ बैठकानु सी० आर० दास जी की बातचीत दो-तीन बार हुई थी। जहाँ तक मुझे स्मरण है मैंने उनसे जो पहली बार बातचीत की थी वह सबसे महत्वपूर्ण थी और उसी बातचीत में मैंने पंजाब के बारे में भी बातचीत की थी। अब निश्चित समय पर दासजी के मकान पर आया तो वे विशेष स्नेह के साथ मुझे एक निबन्ध कमरे में ले गए। सबसे पहले मैंने उन्हें बताया कि उनके साथ बिनका मतभेद भी है उन्हें भी वे सभारता के साथ सहानुभूति होते हैं वह बात सर्व-विशित है। अतः मैं भी आपके पास कुछ सहानुभूति पाने की इच्छा से आया हूँ। संभव है वे मेरे आदर्श से सहमत न हों तथापि मैंने यह हिम्मत की कि उनसे सहानुभूति की प्रार्थना करें। फिर मैंने दासजी को अपना मूल कार्यक्रम बताया। फिर पंजाब के प्रकाशी नेता के बारे में बातचीत की और कहा कि यदि वे समझें कि बड़े नाट साहस के ऊपर आक्रमण करने पर प्रकाश्य आन्दोलन की बचका नहीं पहुँचिया और यदि इस बात पर उनको कोई आपत्ति न हो तो हम लोग वाइसरॉय पर आक्रमण करना चाहते हैं। और यदि वे समझें कि ऐसा करने से उनके आन्दोलन में बिम्ब पैदा होगा तो हम लोग ऐसा काम नहीं करेंगे। यदि हम लोग यह काम करते हैं और यदि हमारा आदमी पंजाबियों और विशेष करके सिक्खों के साथ सहानुभूति प्रकट करने के लिए पंजाब में जाकर आत्मबलिदान करता है तो इस प्रकार से हम सिक्खों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। वाइसरॉय पर आक्रमण करने के परिणामतः अब हमारा आदमी सराजवत के सामने फटके के अन्दर लड़े होकर बीरव्य श्रमिक शब्दों में पंजाबियों के प्रति सहानुभूति दिखाता है यह कहेंगे कि राष्ट्र की समस्त शक्ति से तुम वाइसरॉय हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को बलपूर्वक कुचलना चाहते हो तो हमारा भावार्थ्य हो जाता है कि हम भी दिखाते हैं कि बलपूर्वक किसी राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलना नहीं जा सकता। प्रिये ! तुम यदि समझते हो कि पंजाबियों के पीछे बूझरे भारतवासी नहीं हैं तो तुम परमन्त्र भ्रम में हो। इस भ्रम को दूर करने के लिए ही मैंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर यह प्रमाणित करना चाहा कि भारतवर्ष में प्रकाशी छिपे नहीं हैं। सी सी० आर० दास जी सब बातें सुनकर सम्मोहित हो गए और बाद में कहा आज का दिन और रात मुझे समय दो। कम फिर मेरे साथ मिलते। सब बातें समझ-बुझकर कम मैं

अपनी राय देना ।

बागसराय के प्रश्न को छोड़कर सिक्क नेताओं ने एक घोर बात मुझ बताई थी । हमें भी मैंने श्री सी० धार० दासजी के सामने रख दिया था । निक्कों ने मुझ से कहा था कि पंजाब की नीति यह हो रही है कि काश्मीर को किसी-न-किसी महाने में ब्रिटिश इच्छा के अन्तर्मुक्त कर दिया जाए और काश्मीर को अंग्रेजों की एक कानोनी के रूप में बरिष्ठ कर दिया जाए । पंजाब चाहते थे कि काश्मीर में अधिष्ठान-आधिकार मुग़ल में अंग्रेजी पलटन रखी जाए । हमने निक्क किस प्रकार से आन्दोलन बढ़ा दिया था वह भी निक्क नेतायों के आनन्द चाहते थे । मैंने निक्क नेताओं से कह दिया था कि देसबान्धु श्री० धार० दासजी से परामर्श किये बिना मैं कोई काम नहीं करूँगा । वे भी यह चाहते थे कि काश्मीर का प्रश्न श्री० धार० दास के कानों तक पहुँच जाए ।

श्री० धार० दासजी ने काश्मीर के प्रश्न को विषय महत्त्व नहीं दिया और इसके बारे में मुझसे कुछ कहा था या नहीं मुझे पता याद नहीं है । दूसरे दिन नियत समय पर मैं श्री० धार० दासजी के भवने पर बहुत उत्सुकता के साथ पहुँचा । श्री० धार० दासजी ने कहा 'तमाम रात मुझे नींद नहीं आई तुम्हारे प्रश्न को लेकर बहुत चिन्तितता के साथ मैंने दिन और रात सोचा । लेकिन अन्त में मैं इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि अभी बागसराय के ऊपर कोई आक्रमण होना उचित नहीं है । तथापि यदि मैं गिरफ्तार हो गया तो मेरी पिरफटारों के बाद तुम लोग इस काम को कर सकते हो । मैं सब बातें समझ गया । और क्या कहता ? लेकिन फिर भी राजनीतिक क्षेत्र में यदि काम करना है तो हरएक प्रकार के व्यक्ति में जितना लाभ हो सके उठाना चाहिए । फिर एक तो मैं श्री० धार० दासजी से सहायता पाने की आशा कर रहा था और दूसरी बात यह थी कि अभी हमारा संघर्ष थोड़ा कम था या इसलिए मैं नहीं चाहता था कि अभी हम लोग ऐसा कोई काम करें जिससे सरकार की तमाम धान्ति हमें मिलाने में लग जाए । हम सब करकों में मैंने पंजाब के नेताओं को अपनी परिस्थिति समझा दी । परिस्थिति के सामने उन्हें भी झुकना पड़ा ।

एक बात मुझे ठीक से याद नहीं है कि देसबान्धुदासजी से मैंने सहायता के लिए जो प्रार्थना की थी वह पंजाब की बातों की आलोचना करते समय की थी जबकि उससे बाद मैं ठीक से नहीं कह सकता । जहाँ तक मुझे याद है मैं समझता हूँ कि

शीमन समिति के साथ पैरा कोई समझौता होने के पहले ही मैंने सी० धार० दास जी से ये सब बातें की थीं। सहायता देने के बारे में दासजी ने मुझसे कहा था कि ऐसा कोई समझौता निकालो जिसके जरिए मैं तुम्हें सहायता दे सकूँ। किन्तु थोड़ा सोचकर उन्होंने कहा कि बड़ा बाजार की तरफ यदि तुम्हारा कोई प्रभाव पाली जावनी हो तो उसे मैं मासिक वेतन के रूप में कुछ दिया करूँगा। वह व्यक्ति प्राचीन कांग्रेस कमेटी की तरफ से बड़ा बाजार में कांग्रेस का कार्य करेगा। बड़ा बाजार ने तुम्हारा कोई जावनी है। दासजी जानते थे कि पैरा कार्य-क्षेत्र मुक्त जाल है। सम्भव है इसीलिए वे चाहते थे कि पैरा कोई परिचित व्यक्ति बड़ा बाजार में कांग्रेस का काम करे। बड़ा बाजार में जो लोग कांग्रेस का कार्य कर रहे थे उनमें से अधिकतर व्यक्ति महात्माजी के कट्टर अनुयायी थे। इसीलिए सम्भव है दासजी यह चाहते थे कि पैरा सहायता से उन्हें बड़ा बाजार में कोई जावनी मिल जाय। दासजी बड़ा बाजार में एक प्रभावशाली व्यक्ति चाहते थे। मैंने ऐसे व्यक्ति का परिचय दिया। सी० धार० दासजी ने इस प्रकार से मुझे टीम ली जैसा मासिक देने का वचन दिया था। लेकिन दुर्भाग्य से मया कांग्रेस के बाद मैंने एक परचे में सी० धार० दासजी का कुछ विरोध किया था। मया कांग्रेस के समापन के पक्ष से दैराजगु दासजी ने विप्लव आन्दोलन की जर्नल करते हुए विप्लव नीति के विषय में कुछ कहा था। उसी विलसिसे में दासजी ने यह भी कहा था विप्लव आन्दोलन कभी भी सफल नहीं हो सकता। यदि मुझे विश्वास होता कि विप्लव आन्दोलन सफल होगा तो मैं भी सस्तरन काम्पिकारी आन्दोलन में अवश्य भाग लेता। कुछ विलकुल विश्वास नहीं है कि विप्लव आन्दोलन सफल हो सकता है। इसीलिए मैं विप्लव आन्दोलन में योगदान नहीं करता। मैंने अपने पत्रों में यह लिखा था कि जिस दिन लोग यह समझने लगें कि विप्लव आन्दोलन सफल होने का रस्ता है उस दिन हमें यह परवाह नहीं रहेगी कि सी० धार० दास जी हमारे साथ घाते हैं या नहीं। राजनीतिक होने का अर्थ तो यह है कि सफलता की प्राप्ति बिनाई देने के पहले ही वह जान जाय कि वह आन्दोलन प्राये विलकुल सफल होगा या नहीं। यह लिखते समय मैंने इस बात पर ध्यान रखा था कि जहाँ तक विज्ञान का सम्बन्ध है वहाँ कोई भी किसी से भी समझौता नहीं कर सकता। अपने विज्ञानों को स्पष्ट करने के लिए उन्हें अपने-अपने मायामों के लिए बड़े-बड़े मैनार्थों का भी विरोध करना हमारा परम कर्तव्य है। लेकिन कार्य-क्षेत्र में हम सबके साथ

मिलकर काम कर सकते हैं। केवल छिटागढ़ के बारे में हम किसी से भी कोई समझौता नहीं करने यह हमारा प्रण था। इसलिए देशबन्धु सी० धार० दासजी ने कांग्रेस के समापति के आसन से निम्नलिखित प्राण्वोलन पर जब कटाक्ष किया तब हमारा भी कर्तव्य हो गया कि हम उसका उत्तर दें। लेकिन इस उत्तर से दास जी मेरे ऊपर असन्तुष्ट हो गए थे। यहाँ तक कि जब मैंने फिर उनसे मिलना चाहा तो उन्होंने मेरे साथ मिलने से भी इन्कार कर दिया।

मुझे ऐसा जान पड़ता है कि देशबन्धुजी के साथ मेरा यह बिगाड़ उस समय की घटना है कि जब मैं बुक्सप्रान्त को छोड़कर छत्तार ज़ासत में कसकता में आकर रहने लग गया था। बड़े भाई साहब के ऊपर, आक्रमण करने की बात पर देशबन्धुदासजी से परामर्श किया था उस समय मैं कसकता छत्तार ज़ासत में नहीं आया था। परिपक्व बुद्धि न रहने के कारण एवं दुनिवाहारी की बातों से एकदम अपरिचित रहने के कारण मैंने देशबन्धुदासजी को अपना विरोधी बना लिया था। मेरी विरसारी के बाव बंगाल प्रान्तीय राजनीतिक काफ़ेस के प्रबन्ध पर विचारालय से दृष्टि प्राप्त न होने पर भी जो सैकड़ों युवकों को जेलों में बन्द कर दिया गया था उस सम्बन्ध में जो आलोचना हुई थी उस समय देशबन्धु दासजी ने मुझे जेलों में यह कहा था कि मजबूरान् राजबन्धियों में सभी व्यक्ति निर्दोष नहीं हैं इसलिए सब मजबूरान् की मुक्ति के लिए प्रयत्न करना युक्ति-समय एवं ग़्याय-संगत नहीं होगा। प्रान्तीय काफ़ेस में देशबन्धु दासजी की इन बातों का प्रचल विरोध हुआ था। विरोध होने पर भी देशबन्धु दासजी ने स्पष्ट सब्यों में काफ़ेस के सामने यह प्रश्न रखा था कि क्या आप लोग कहना चाहते हैं कि राष्ट्रीय नाथ साय्यास निर्दोष व्यक्ति हैं। इस बात पर काफ़ेस में घोर नाथ-विवाद हुआ था एवं देशबन्धुदासजी ने यह कहा गया था कि यदि धी साय्यास निर्दोष व्यक्ति नहीं हैं तो मुझे इजलास में उनका विचार क्यों नहीं होता। सम्भव है कि सरकार के बुझिया विभाग से आपको कुछ ज्ञान मिली हो। लेकिन काफ़ेस के सामने ऐसी कोई बात नहीं है जिससे हम राष्ट्रीयबाहु के विरुद्ध मुझे सम्मेलन में आपकी तरह कुछ कहूँ। सुत सम्मेलन में सभी पार्टियों के व्यक्तियों ने मेरे पक्ष में सी० धार० दास जी के विरुद्ध आवाजें उठाई थी। हमारे देश के ग़ण्यगण्य नेताओं की मनोबुद्धि का परिचय इन सब बातों से भूब मिल सकता है। व्यक्तिकारी आन्दोलन प्रमाण रूप में गुप्त रीति से ही चल रहा था। इस आन्दोलन के विरुद्ध

रूप में कटुतिष्ठ करना बहुत आसान बात थी। कारण कि इन कटुतिष्ठियों का उत्तर देना सब समय आत्मिकारियों के लिए आसान नहीं होता था क्योंकि उन्हें तो मूल्य रीति से ही काम करना पड़ता था। हमारे देश के प्रायः सभी मध्यमार्थ नेताओं ने इस आन्दोलन के प्रति अनेकों बार अनेकों प्रकार से कटुतिष्ठ की है। बरि किसी ने इन सब कटुतिष्ठियों के बिना कुछ कहने का साहस किया तो हमारे देश के मध्यमार्थ सम्प्रतिष्ठित नेता गणों ने उसकी खबर लेने की खूब चेष्टा की है। लेकिन इसमें एक विशेष अपवाद अवश्य है वह है महात्मा गांधी। महात्मा गांधी ने भी बेमर्याद कादेंत में आत्मिकारियों के प्रति भीषण कटुतिष्ठ की थी। लेकिन जब मैंने उन कटुतिष्ठियों का प्रत्युत्तर महात्माजी के पास भेजा तो महात्माजी ने विशेष जवाब देना एवं त्याग निष्ठा के साथ मेरे प्रत्युत्तर को ज्यों-का-त्यों १३ फरवरी सन् १९२६ के 'द इंडिया' में छाप दिया था और बाद की उन्होंने अपने मस्तक को भी उसी प्रत्युत्तर के प्रभु में छाप दिया था। इसलिये आज भी मेरा हृदय महात्माजी के भीतरों का स्पर्श करता है।

एक दफे की बात है किसी काम से मैं कलकत्ता आया था। श्री सी० आर० दासजी से मेरी खूब बहस हुई थी। दास जीर मुझे छोड़कर बस कमरे में एक व्यक्ति और थे। वे सज्जन बंगाल के प्रसिद्ध नेता श्री अश्विनीकुमार दास के भाई अश्वना मठीजे थे। सब बातें आस-पास नहीं हैं लेकिन इनका माथ है कि बेशकम्बु अत्यन्त उत्तेजित होकर तीव्र स्वर से भरसमा ध्वनिक शब्दों में मेरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दे रहे थे। उत्तेजित होते से व्यक्ति स्थिर नहीं रहती है। प्रभु में सब तीसरे सम्मेलन से रहा नहीं गया। मेरे पक्ष को लेकर उन्होंने श्री सी० आर० दासजी से बहस की। मुझे इस समय अपना एक प्रत्युत्तर याद है। दासजी अहिंसा नीति के पक्ष में तीव्ररूप से आग्रह-विचार कर रहे थे और उन्होंने प्रभु में बहस कहा था कि पार्थिविक बल से आरिम्भिक बल नहीं अधिक प्रबल है। तुम लोग आरिम्भिक बल पर अत्यधिक ध्यान दे रहे हो आरिम्भिक बल पर नहीं। इस पर मैंने यह उत्तर दिया था कि आप हम लोगों को समझ समझ रहे हैं। आप समझते हैं कि पिस्तौल या बन्दूक का बलाना एक पार्थिविक बल मात्र है। आप भूल जाते हैं कि टीपर (Trigger) का भीजना पार्थिविक बल से नहीं होता है। टीपर को भीजने के पीछे कुछ कम आरिम्भिक बल की आवश्यकता नहीं होती। एक पहलवान भी तो टीपर भीज सकता है लेकिन पहलवान होने से ही वह आत्मिकारी आन्दोलन में भाग लेता

ऐसी बात नहीं है। धार्मिक बस रहे बिना क्या कोई व्यक्ति जातिकारी धाम्मोसन में सम्मिलित हो सकता है। एक तथ्य बसक मुक्त पहलवान की घपेला कहीं कम धार्मिक बस रहता है लेकिन विप्लवकारों में यह तथ्य मुक्त सहज ही में टीगर बीज सन्नेना लेकिन पहलवान यह टीगर नहीं बीज सकता। टीगर बीजम को धाय पासमिक बम क्यों समझ रहे हैं।”

इसी प्रकार सं एक धीर बात मुक्त भव जी लूब दास है। यह बात सहायता पाने क सिससिने में ही हुई थी। किस नीति के अनुसार जातिकारी धाम्मोसन सफल होया उसके बारे में बातचीत हो रही थी। जब सब प्रश्नों का उत्तर देने सफलतापूर्वक दे दिया तो धाम्म में दासजी ने यह प्रश्न किया कि भण्ड मान लो धीर सब बात ठीक है, लेकिन धाय जनता को किस प्रकार सं लुप्त लोय धपने साथ लोये? तुम लोयों के कार्यक्रम में जनता को साथ लेने का कोई विधान नहीं है। जनता को साथ लिये बिना कोई भी जातिकारी धाम्मोसन सफल नहीं हो सकता। मैंने इसके उत्तर में कहा था “धाम्म जनता को साथ लेना हम लोय प्रबिक कठिन बात नहीं समझते हैं। इस बात को मे सीमित कसकता के भासपास बस-पंड्रह नीस के धम्बर बितने कारखाने हैं उनमें कम-से-कम दस म्यारह लाख मजदूर काम करते हैं। लोन-बार महीने के परिधम से इन कारखानों में हड़ताल कट देना विशेष कठिन बात नहीं है। इतनी बड़ी हड़ताल के व्यवहार पर मिलिटरी पुलिस धीर पलटन कारखानों की रक्षा के लिए प्रबन्ध था लाएयी। ऐसे मौकों पर मजदूरों को नड़का देना कोई कठिन बात नहीं है। ऐसी परिस्थिति में यदि हमारे पास श्रीजी धिमा प्राप्त किये हुए उपयुक्त व्यक्ति धायदक संख्या में हों धीर धपने प्रयोजन के अनुसार उपयुक्त संख्या में धरुन-धरुन लो हो तो क्या जाति का प्रारम्भ करना कुछ कठिन बात है। ऐसी धमस्या में क्या जनता हमारा साथ नहीं देगी?” मुक्त दास है बाबजी इसका कोई उत्तर नहीं दे पाए थे।

इस प्रसंग में एक बात धीर बता देना अप्रासंगिक न होया। मेरे साथ बात चीत करने के परिणामत वेदबन्धुदास इतने प्रबल रूप से प्रभावान्वित हुए थे कि चन्ही दिनों में एक प्रकाशक लमा में सन्धीनिर्घण्ड सरकार को बतावनी देकर कहा था कि यदि सरकार समझती है कि जातिकारी धाम्मोसन बम मया है तो यह धारी भूत में पड़ी हुई है यह धाम्मोसन इतना व्यापक एवं मधीर रूप धारण किये हुए है कि यदि सरकार जनमत की धकहेलना करेगी तो बड़े बुरी तरह पक्षधामा

बढ़ेगा।

इस बन्धुता के बाद बंगाल सरकार की तरफ से शुक्रिया विमान के एक पुनिष्ठ सुपरिटेण्डेंट भी प्रोपेन्स चटर्जी को भी देखबन्धु के पास भेजा गया था। सरकार जानना चाहती थी कि दासजी के उस बक्तव्य का आचार क्या है। प्रोपेन्स चटर्जी बहुत देर तक सी० धार० दास० जी को प्रबल पूछ-पूछकर बरोशान करते रहे। सरकार जानना चाहती थी कि क्या वर्तमान परिस्थिति वैसी नाबुक है जैसी कि सन् १९१५-१६ में हुई थी।

प्रोपेन्स चटर्जी के विजने के बाद मैं फिर सी० धार० दासजी से मिलना था और उन्हीं की उबानी ये सब बातें सुनी थी। कमकता बाहर नर में बहु बात फैल गई थी कि बंगाल सरकार सी० धार० दास जी बातों से बिचलित हो गई थी।

बिच समय दासजी ने ऐसी बक्तव्य दी थी उस समय डाका समिति के साथ मरा समझौता हो चुका था। मैं सी० धार० दासजी के साथ जो सम्मन्ध स्थापित करना चाहता था डाका धान्योन्नत समिति के नेतागण उसे पसन्द नहीं करते थे। उनका कहना था कि दासजी के बक्तव्य से सरकार घोर चौकन्नी हो जाएगी। इससे हमारे कार्य में बहुत बाधा पड़ियेगी और साथ कुछ न होगा। मैं इनकी बातों से सहमत न था। मैं कहता था कि इससे कामिकारी धान्योन्नत भी प्रबल होता जा रहा है और इससे हमारे धान्योन्नत को लाभ होगा। इस प्रकार से राष्ट्रीय धान्योन्नत के ऊपर कामिकारी धान्योन्नत की एक पट्टी खान पड़ रही है। लेकिन डाका समिति के नेताओं ने मेरे दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं किया।

## ॥ उत्तर भारत में दल का विस्तार

मुझे मुक्तप्राप्त एवं पंजाब का बार-बार दौरा करना पड़ा और जब मैंने समझ लिया कि उन प्रेरणों का काम अन्य व्यक्तियों पर छोड़कर दूसरी जगह जाया जा सकता है तब मैं अपने बाम-बन्धुओं को साथ लेकर फरार हुआ मैं फसकता जमा आया। लेकिन इसके पहले पंजाब में और विदेश रूप से मुक्तप्राप्त में अन्तिम का काम बहुत कुछ भागे बड़ा था। यहाँ अपने राष्ट्रीय के अनुसार उसका परिचय देने की मैं चेष्टा करता हूँ।

सन् 1923 के प्रारम्भ में मुक्तप्राप्त एवं पंजाब में मैंने कम-से-कम बीस या पच्चीस विभिन्न केन्द्र स्थापित कर लिए थे। सन् 1923 में मैंने दिल्ली में कांग्रेस के विदेश परिषेधन में भाग लिया था। उस समय तक हाका समुदायिक समिति के नाम से कोई सम्बन्ध नहीं था। देहली में कांग्रेस के विदेश परिषेधन के बाद ही मैंने अपने संघटन का नाम 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' रख दिया था और इस नामकरण के अगसर पर ही अपने संघटन का जन्म एवं स्थापन इत्यादि का सेतु हुए एक परिपूर्य भिन्नभाषी बनाई थी। इस प्रकार बीबीपर्व निर्णय करने के लिए मेरे पास कुछ साधन मौजूद हैं।

जब मैं जमशेदपुर में अमर्बीकियों के आम्बोलन में काम कर रहा था उसी समय मैं अन्तिमकारी आम्बोलन के लिए मन मिलाने की व्यवस्था भी कर रहा था। मेरे परम सीमाय से एक महानुमान पनी व्यक्ति ने मुझे वासिक एक सौ पचास रुपए देने का वचन दिया था। यरी भिरणारी के बाद भी ये महानुमान मियम पूर्वक प्रति मास एक सौ पचास रुपए देते गए। इन्हीं रुपयों से हृय सौयों का रेल



एक इयादिक निकल जाता था। डाका अनुशीलन समिति के साथ सम्बन्ध स्थापित होने के पहले तक पुस्तकालय या पंजाब में हम लोगों ने कभी कोई बकरी नहीं की। जो सज्जन हमें प्रतिमास एक सौ पचास रुपये देते थे उन्होंने कभी भी हम लोगों से इसका कोई हिस्सा नहीं माँगा। बिस्मास के ऊपर हम लोगों का काम चलता था। इस प्रकार से और कुछ आदमी भी पाँड़ी रकमों में हम लोगों की सहायता करते थे। एक बड़े में मेरठ के बँस्य धनायास में थी बिष्णुसरभजी बुकलिस के वहाँ ठहरा था। बिष्णुसरभजी उस समय बँस्य धनायास के अध्यक्ष थे। एक दिन धनायास में धर्मीयड़ के प्रसिद्ध व्यक्ति ठाकुर टोडरसिंहजी आए। मैं एक पेड़ के नीचे चारपाई पर बैठा हुआ था। चारपाई पर बन्दी जीवन की दो एक प्रतियाँ पड़ी थीं। ठाकुरसाहब मुझे पहचानते नहीं थे। टोडरसिंहजी बन्दी-जीवन की एक प्रति को उठाकर मेजक के प्रति बहुत प्रशंसासुचक शब्द कहने लग गए। इसके पहले बुकलिसजी ने मुझे बताया था कि ठाकुर टोडरसिंहजी एक बनी बनीधार हैं अर्थात् व्यक्ति हैं। लेकिन यह भी कह दिया था कि अपना परिचय इन्हें प्रती न देना। बुकलिसजी समझते थे कि सम्भव है टोडरसिंहजी क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति सद्भावपूर्ति न प्रकट करें। बुकलिसजी किसी काम से घर के अन्दर नए थे। बाहर चारपाई पर बैठे-बैठे टोडरसिंहजी से बेटी बातचीत होने लगी। बातचीत के प्रथम में मेरा परिचय पूछने पर टोडरसिंहजी को मैंने अपना परिचय दे दिया। मैंने समझ लिया था कि टोडरसिंहजी से सहायता लेनी असम्भव बात नहीं थी। लेकिन बुकलिसजी ने मेरा इस प्रकार से परिचय देना पसन्द नहीं किया और बाद की यह कहकर मेरी जून हँसी उड़ाई कि ज्योंही टोडरसिंहजी ने कहा कि बन्दी जीवन के मेजक को यदि मैं सामने पाता तो उसका पैर सूटा त्योंही आन्दोलनजी सपककर कह दूँ कि मैं ही मेजक हूँ। शायद भी बुकलिसजी इस बात पर चुटकी सेते हैं यद्यपि यह बात सच नहीं है कि मैंने एकदम से अपना परिचय टोडरसिंहजी को दे दिया था। टोडरसिंहजी से बात करते समय मैंने यह अनुभव किया था कि ठाकुरसाहब पर प्रभाव डालने से कुछ काम निकल सकता है। इसी मरज से उनके पूछने पर मैंने अपना परिचय दे दिया। परिणामतः टोडरसिंहजी मुझे अपने स्थान पर ले गए। उन्होंने मुझे प्रेम से मोहन कपरा और धन्त में मेरे एक आदमी को चालीस रुपये मासिक वेतन पर अपने बर्तन के एक स्कूट में पिछक रखने के लिए वे राजी हो गए। टोडरसिंहजी क्रान्तिकारी

मार्गदोष के विशेष पक्षपाती नहीं थे तथापि इस प्रकार से उन्होंने हम लोगों को चालीस रुपए मासिक देना स्वीकार किया था। टोडरसिंहजी महारामजी के अनु रक्त अनुयायियों में से थे तथापि उनसे हम लोग यह सहायता लेने में समर्थ हुए थे। लेकिन दुर्भाग्यवश जिस व्यक्ति को मैंने टोडरसिंहजी के स्कूल में भेजा था वह व्यक्ति हम लोगों के काम के उपयुक्त न था। दो महीनों के बाद वह व्यक्ति विप्लव काम से अलग हो गया। इसी व्यक्ति ने बनारस में मेरे विवाह के अवसर पर मुझ चुनौती हुई बातें सुनाई थीं। गमीमत यह थी कि सरल रूप में एक पत्र द्वारा मुझे उन्होंने यह सूचना दी कि विप्लव कार्य से अब मैं अलग हो रहा हूँ क्योंकि इस काम के लिए मैं अपने को उपयुक्त नहीं समझ रहा हूँ। यह बटना चितम्बर सन् 1923 के पहले हुई। टोडरसिंहजी से हम लोगों ने धीरे कोई विशेष सहायता नहीं पाई।

मेरठ की एक धीरे बटना विशेष उल्लेख योग्य है। यह बटना भी बाका अनु सीमन समिति के साथ सम्बन्ध स्थापित होने के पहले ही हुई थी। मेरठ होकर मैं साहौर जानेवाला था। मेरे मनीबेग में पाँच सौ रुपए के नोट धीरे कुछ रेजमारी थे। मेरठ स्टेशन में मनीबेग से दो बस-बस रुपए के नोट निकाले। मनीबेग को फिर कोट के ऊपरी बेग में रख दिया। टिकट लेने गया। उस समय खिड़की के सामने दो ही चार आदमी थे लेकिन फिर भी उन दो-चार आदमियों में ही बाँटे समय कुछ बककम-बकका हुआ। उस समय मैं समझ नहीं पाया कि बककम-बकका करना गिरहकटों की एक तरीका है। बार को बेल में इस तरीके का पता चला था। एक आदमी जब किसी को बकका देता है तो स्वभावतः ही बकका खाने वाला बकका देने वाले की तरफ देखता है। जोड़ी बेर के लिए उसका पूर्ण ध्यान काटीगरी दिखता देते हैं। उस करण सा ही बककम बकके के बाव जब मैंने खिड़की के सामने आकर साहौर का टिकट माँगा तो टिकट बाहू ने कहा कि यात्री घागे में घमी बेर है टिकट घमी नहीं बटना। जब मैंने खिड़की से बाहर आकर नोट अपने मनीबेग में रक्ता चाहा तो देखा मनीबेग घायब है। मेरे होश-हवास बिलकुल उड़ गए। किर्तव्य विमूढ़ की तरफ़ रह गया गया कर्से धीरे क्या न कर्से कुछ समय में नहीं घाया। अवश्य मेरे मुँह से यह निकला होया कि घरे मनीबेग घायब है क्योंकि किसी ने मुझसे कहा कि बाघो पुमिस में इतना दे दो।

इतना भी देता तो पुलिस को अपना नाम नाम क्या बताता। यदि मैं अपना असल नाम बताता हूँ और यह कहता हूँ कि मेरठ में धाकर बैद्य बनायात्मक में मैं ठहरा था तो ब्रिज्ज में धाकबकता पड़ने पर पुलिस को इस बात का प्रमाण मिल जाता कि बुलिसजी के साथ मेरा सम्बन्ध है। लेकिन फिर भी मैं रेलवे वाले में क्या एक पुलिस का हंडकोस्टेबुल बौढ़कर मेरे साथ टिकट बाँटने के आगे के सामने धारा। वहीं के लोगों से कुछ पूछताछ की कि कीन टायावाला यहाँ था कीन कहा है उसका कोई नाम-गुहनाम का धारमी उस समय उस स्थान पर था या नहीं इसलिए बातों को जानकर फिर हम लोग रेलवे जाने में बापस आए। मुझे पूछा गया कि मेरठ में मैं कहाँ ठहरा था। मैंने बताया कि बैद्य बत्तीमछाने में ठहरा था। पुलिसवालों ने मुझे पूछा कि रिपोर्ट लिखूँ या नहीं। मैंने बताया कि झूठ-मूठ मिथाने से क्या फायदा क्या मिलना ला है नहीं। लेकिन वह भी मैंने बताया कि मनीबेस में पाँच सौ रुपये के मोठ थे। यदि रुपये बापस मिल जाय तो पता भवानेवाले को धारा दे दूँगा। रिपोर्ट नहीं लिखवाई दिन छोटा करके पुलिस के दफ्तर से फिर उसी टिकटबार के सामने धाकर बढ़ा हो गया और सोचा कि मैं कितना बड़ा बैबकूफ हूँ। अब कीन-सा मूँह लेकर कहाँ बापस जाऊँ। किसी मुस्किम से तो स्नाने मिलते हैं। बड़ी मुसीबत है। बीड़ी देर तक इस प्रकार के विमर्श के बाद बुलिसजी के यहाँ बापस जाना ही ठीक समझा। मेरे दिम में यह एक अव्यस्त भय हो रहा था कि बुलिसजी और मेरे धर्म साथी मेरे ऊपर यह उम्मेद न करने लय जाएँ कि मैं स्पष्ट हजम कर बैठूँ। यदि ऐसा होता तो मैं मिट्टी में मिल जाता। लेकिन ये रुपये मैं जहाँ से लाता था उसका पता हमारे बल के और किसी को न था। मुझ छोड़कर और दो व्यक्तियों को इसका पता रहता था। एक तो देने वाले और दूसरा वह जिसके जरिए से मैं कभी-कभी स्वभा लाता था। इसके भलाया मुझे प्रथम करनेवाला तो कोई न था नहीं मनीबेस प्रायव होने का किस्सा यदि मैं प्रकाश न करता तो किसी को क्या मालूम होता। ये सब बातें होते हुए भी मेरे मन में एकाएक भय और लज्जा उत्पन्न हुई थी।

मुझे बापस घाटे देकर बुलिसजी मेरे पास धाकर बैठते हुए बढ़े हो गए और पूछा क्या बात है। पाड़ी छूट गई। मैंने कहा टाँगेवाले को तो कुछ दे दो फिर बताऊँ। टाँगेवाले को पैसे दे दिए और मैंने अपनी बैबकूपी की कहानी कह सुनाई। सब बातें सुनकर कोब और धमिलनास के स्थान पर मेरे प्रति

बुधनिसजी के हृदय में दया का उद्रेक हुआ। मुझ धावबाधन दिलाकर बुधनिसजी ने कहा कि धाव धाव रातभर ठहर जाइए। मैं धावको चुपचाप बंधा साकर बैठा हूँ। मेरे लिए बुधनिसजी ने एक बन्धी भी पी जिसकी भीतरी तरफ एक जेब थी। दूसरे दिन बुधनिसजी ने कहीं से दो सौ रुपये साकर मुझ दिए। उस दिन से धाव तक मैं कभी भी मनीबेग कोट या कमीज के अन्दरी हिस्से में नहीं रखता हूँ। मेरे बदन में हमेशा एक बन्धी रहती है। उस बन्धी को छोड़कर और कहीं मैं पैसा नहीं रखता। जीवन में यह दूसरी बार हुआ था जब मेरे जेब से रुपया निकल गया। पहली बार हावड़ा स्टेशन में एक बच्चे मेरे जेब से घोर कुछ रुपए निकल गए थे।

मेरठ में रहते समय एक और सञ्जन से मेरी जान पहचान हुई थी जिसका उल्लेख करना यहाँ पर अप्रासंगिक न होया। उन सञ्जन का नाम था चौधरी निबबपालसिंह। हम दोनों के साथ उनकी पहली सहानुभूति थी लेकिन हम दोनों की सहायता करने का उन्हें अवसर नहीं मिला। उनके पास थे मैंने एक किताब ली थी उसका नाम है सोवियत कम्यूनिज्म। सितम्बर सन् 1923 के पहले ही मैंने इस प्रकार से सोवियत कम्यूनिज्म को समझने की शैष्टा की थी। सन् 1923 में दिल्ली कांग्रेस के बाद मैंने कम्यूनिज्म का समझने के लिए मच्छी तरह से शैष्टा की उसी समय सोवियत कम्यूनिज्म से भी संबंध नाम उठाया। यह किताब बाद का है। बुधनिसजी के साथ मेरी पहली मित्रता हो गई थी। बुधनिसजी का घर था मेरठ जिले के मबाना ग्राम में। मबाना से हस्तिनापुर बहुत करीब है। बुधनिसजी ने अपने घर से जाने के लिए मुझसे विशेष प्रार्थना किया था और कहा था कि मबाना से हस्तिनापुर बहुत करीब है और हस्तिनापुर देखने योग्य स्थान है। ऐसा कीन था भारतवासी होना जिसके हृदय में हस्तिनापुर का नाम सुनकर आनन्द पैदा न हो। इन्द्रप्रस्थ हस्तिनापुर और दिल्ली य तीन नाम भारत के इतिहास में मानों एक सूत्र में बंधित हैं। लेकिन मुझमें एक बुरी घावत है कि जिस काम के लिए बड़ी बाधा है उसका छोड़कर एक दिन-भर भी दूर-दूर जाना मुझसे नहीं होता। यह एक त्रुटि है। व्यापक रूप में किसी चीज को न देखना एक अप्रवृत्ति है। मैं अपने कामों से ऐसा अनभिज्ञ हुआ रहता था कि दो दिन की जमाद तीन दिन एक स्थान पर रहना मेरे लिए कठिन हो जाता था। मैं धाव तक भी हस्तिनापुर नहीं गया। सन् 1937 में छूटने के बाद मैं दो बफा मेरठ गया। मेरे कुछ साथी हस्तिनापुर हो गए हैं। लेकिन मुझे हस्तिनापुर जाने का अवकाश नहीं मिला।

मेरठ में मैं कई बार धाया-गया। बुकलिसिबी की सहायता से मेरठ में दो बार धाकती घोर मिलने लगे गए थे। लेकिन मेरी गिरफ्तारी के कारण मेरठ का संगठन कुछ अधिक घटकर नहीं हो पाया। एक पार्षदभाजी प्रचारक बैरस भगवाणस्य में धाया करते थे। उनसे मेरी बहुत बातचीत हुई थी। बातचीत के बाद वह धार्मिकसमाज के प्रचारक मेरे साथ काम करने को तैयार हो गए। वह सत्रजन पंजाब तक जाते थे। लेकिन बुकलिसिबी की बात है कि मेरी धनुषस्थिति में इन सत्रजन से किसी ने कोई काम नहीं लिया।

मेरठ के बाद मुझे पंजाब जाना था। लेकिन जेल में अपना निकल जाने के कारण फिसलान पंजाब जाना स्थगित किया किन्तु पंजाब जाना तो था ही इस लिए बनारस और इलाहाबाद घूमकर मैं फिर पंजाब गया।

पंजाब में बरकर लाहौर के प्रोफेसर जयचन्द्रजी विद्यालंकार के यहाँ ठहरता था। जब की बार भी विद्यालंकारजी के ही यहाँ ठहरा। मुझे ठीक स्वरूप नहीं है कि जब की बार या इसके पहले ही मुझे पता लग गया था कि सरकार मुख्तारसिंह इत्यादि जो अपना मतलब संगठन कर रहे थे वह नहीं चाहते थे कि जबकी बार शिक्षा और शिक्षा संस्थाओं के साथ मिलकर भारतीय विप्लववादी धाम्नेशन में जाएँ। यहाँ तक कि सरकार मुख्तारसिंहजी ने कहा कि हमारे सम्बन्धों वाली सरकार भगत सिंह को हम सोपों से छोड़कर अपनी संस्था में लिया। इस कारण मुख्तारसिंहजी ने भगतसिंहजी को बहुतैरा समझाया कि तुम बंधानियों के फेर में मत पड़ो इनके फेर में पड़ोये तो फाँसी पर लटक जाओये काम कुछ भी नहीं कर पाओये। इस प्रकार से मुख्तारसिंहजी बितनी बातें भगतसिंहजी से कहते थे वे हम सोपों से सब कह देते थे। बहुत बहकाने पर भी भगतसिंहजी ने हम सोपों का साथ नहीं छोड़ा। मैं भी मुख्तारसिंहजी से मिलता रहा। अपनी संस्था के छोटे हुए कानून-कापरे मुख्तारसिंहजी ने मुझे दिए थे। उन सबसे मुझे पता चला कि उनकी संस्था कस की साम्यवादी नीति पर संगठित है। साम्यवाद की नीति पर मुख्तारसिंहजी से बहुत बातचीत हुई। बहुत एक मुझे ध्यान पार है उस समय मुख्तारसिंहजी पूर्ण रीति से मार्क्सिस्ट नहीं थे कारण कि भीतिकवाद में उनका पुरा विश्वास नहीं था। यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूँ तो सम्भव है मुख्तारसिंहजी ने मुझसे वह भी कहा था कि कस की पूरी नकल करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सरकार भगतसिंह नामक एक सत्रजन कस से बापस पाये हुए थे। मैं जिस समय पंजाब गया था उस

समय सरकार सन्तोषसिंहजी एक गाँव में नजरबन्द थे। लेकिन मुझ ऐसा मामूल हुआ कि सरकार सन्तोषसिंह जी वचार्थ में गुरुमुखसिंह यादव के सत्ता के संचालक व्यवस्थापक या सहायक थे। उनकी सत्ता से ही गुरुमुखसिंह इत्यादि नाम करते थे। इसके बहुत पहले से ही मैं कम्युनिज्म का साहित्य पढ़ने लग गया था। लेकिन अभी भी कम्युनिज्म का पूरा स्वरूप मेरी समझ में नहीं आया था। गुरुमुखसिंहजी से बातचीत करने के बाद एवं खोजपट कॉन्स्टिट्यूटन (घाघन विधान) पढ़ने के कारण कम्युनिज्म के बारे में मेरी धारणा धीरे धीरे स्पष्ट हो गई। सरकार गुरुमुखसिंह की सत्ता के बारे में जयचन्द्रजी से मेरी बातचीत हुई धीरे दृढ़ विचार किया गया कि कम्युनिज्म के सिद्धान्त का कितना घट हम अपनी संस्था में ग्रहण कर सकते हैं। उस समय अध्यापक जयचन्द्रजी भी कुछ अधिक नहीं जानते थे। इस प्रकार हम लोग कम्युनिज्म के बारे में धीरे-धीरे सोचने लग गए। उस समय तक रीयास के पुराने कान्तिकारी श्री नरैन्द्रनाथ भट्टाचार्य उफ मानवेंद्र राय यूरोप के कम्युनिज्म के बारे में सब इत्यादि भारत में भेजा करते थे। उनके प्रकाशित 'क्रिज़ार्ड फाफ इण्डियन इन्फिनेक्शन' नामक साप्ताहिक पत्र हम सौधों के हाथ में आया। उन पत्रों एवं पत्रों से भी कम्युनिज्म के बारे में हम लोग कुछ-कुछ समझने लग गए।

अबकी बार पंजाब आकर जैसा एक तरह का सत्ता की साम्यवादी नीति के संस्पर्ध में आया उसी प्रकार से दूसरी तरह राजनयिकी तक के नीजवालों से परिचित हुए। इस लोक संघर्ष के कार्य में अध्यापक जयचन्द्रजी ही प्रधान रूप में सहायक थे। अंतिम दिन तक माई जयचन्द्रजी हमारे इस विप्लव आन्दोलन में मने रहते तो आज जिस प्रकार से आपने इतिहास गवेषणा के क्षेत्र में अपनी नवीन खोज एवं नवीन दृष्टिकोण के कारण क्याति अर्जित की है उसी प्रकार से अपना सम्भव है उससे भी अधिक व्यापक रूप में आप भारत के राजनीतिक आन्दोलन के संपर्ध में अपनी प्रतिष्ठित स्थापित करते। हमारा ध्यान है कि श्री जयचन्द्रजी राष्ट्रीय निर्माण क्षेत्र से प्रलय होकर एक ऐतिहासिक यन्त्रक होकर ही रह गए। लेकिन के बारे में एक निरंतर के एक प्रोफेसर महोदय ने लेनिन के एक लेख को पढ़कर ऐसा कहा था कि लेनिन एक अति उत्तम प्रोफेसर बन सकते थे।

समय है आज ऐतिहासिक क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करने जयचन्द्रजी सतुष्ट हैं लेकिन मेरे हृदय में एक अत्यन्त गंभीर खेद बना हुआ है। कारण मैं समझता हूँ कि श्री जयचन्द्रजी के मुख्य उपयुक्त व्यक्ति यदि भारत के विप्लव आन्दोलन में

ठीक प्रकार से मान लिए होते तो भाव हमारे इस धाम्पोलन में भारत की राजनीति में अपना प्रभाव प्रभाव प्रकट ही आता होता।

पंजाब में जो विप्लव धाम्पोलन की नींव पड़ी थी उसका पूर्ण भ्रम ही जयचमक को ही है कारण उनके बिना मैं सकता पंजाब के काम में धरम समय के धमर इतना अधिक प्रसर नहीं हो सकता था। तिसक स्कूल और पॉलिटेक्निक के छात्र वृत्तों से जो मैं परिचित हुआ था वह भी जयचमकजी की ही कृपा से। आपकी सहायता से ऐसे छात्रों भी मुझे मिले थे जिन्हें मैं धरम कष्टसाध्य एवं विपद्-संकुल स्थानों में भेज पाया था। धाम इतना बात में मैं कोई शेष नहीं समझता हूँ कि उस समय की दो-एक महत्वपूर्ण व्यक्तियों की बात में यहाँ पर प्रकाशित कर दूँ। मुझे जहाँ तक पता है उससे मैं कह सकता हूँ कि भारत के धीरे किसी भी विप्लव इस में ऐसी व्यष्टि नहीं की थी जैसी कि हमारे काम के द्वारा हुई थी। सरदार सुबुद्ध सिंह के दस में प्रकट ऐसी व्यष्टि सकलतापूर्वक हुई थी।

उस व्यक्ति का नाम धाम मैं भूल गया हूँ जिसे हम लोगों ने काश्मीर की प्रसिद्ध सरहद मिशमिट में एवं पेशावर की सरहद जमक इत्यादि की तरफ भेजा था। हम लोगों का उद्देश्य यह था कि इन सरहदों के धरिए से बाहर जमक से भारत के विप्लव धाम्पोलन का शेष मूल स्थापन किया जाय। इस व्यक्ति ने कई महीनों तक जीवन कष्ट सहन करते हुए मिशमिट के घासपास में भुसीबल के दिन बिताए थे। उनकी सहायता से हम लोगों को यह पता चला था कि भारत धीरे जीवन के लिए मिशमिट के रास्ते से व्यापारी जाते-जाते हैं, लेकिन उनकी बड़ी कल मिशमिट होती है। महीनों तक का रसद छात्र लेकर इन रास्तों से गुजरना पड़ता था। जम धीरे बुद्धि से काम लेने पर इस रास्ते से धरम-धरम भोगाना संभव बात नहीं थी। धाम प्रकट इन रास्तों से धरम भोगाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जिन दिनों की बात यहाँ जिस रास्ते में हम लोग बिदेह से बड़े पैमाने में धरम-धरम भोगाने का रास्ता ढूँढ़ रहे थे। यदि मैं शीघ्र पकड़ा गया न होता तो संभव है हमारा विप्लव धाम्पोलन कुछ धीरे ही रंग-रूप ग्रहण किए होता। मिशमिट के रास्ते के चलना पेशावर के रास्ते का भी हम लोगों ने जली प्रकार से निरीक्षण कर लिया था। प्रकट ही शिष्ट सरकार को यह पता है कि पेशावर के रास्ते से बाहर के विप्लवकारियों का गुजरना संभव एवं स्वाभाविक है।

जन् 1923 के शिष्ट सरकार जम में बहली में काश्मिर का विशेष अभियोग हुआ

था। ऐसे अवसरों पर भारत के प्रत्येक प्रांत से हर प्रकार के मनुष्य भाषा करते हैं। इस कारण कांग्रेस के अधिवेशन के समय अन्तर प्रांतीय संमेलन का कार्य बहुत भावे बढ़ जाता है। देहली के कांग्रेस के विरोध अधिवेशन के समय मैने कराची के अध्यापक निहवानी साहब, श्री कुरेसी साहब (जो कि एक समय महात्मा गांधी के 'यंग इंडिया' के सम्पादक भी रह चुके थे) महात्मा पट्टेकर साहब मिर्जापुर के बैरिस्टर श्री सुसुक इमाम साहब बुन्देलखण्ड के बीकान बाबुलसिंहजी आदि से बातचीत की थी। अध्यापक निहवानी साहब जानना चाहते थे कि कान्तिकारी आन्दोलन के साथ देशबन्धु चित्तरंजनदास का कहीं तक सम्बन्ध था। मैं भी जानना चाहता था कि कान्तिकारी आन्दोलन के बारे में निहवानी साहब की क्या धारणा है। उनसे बातचीत करने पर मुझे बहु निश्चय हो गया था कि निहवानी साहब घट्टिसा भीति को सिद्धान्त के तौर पर नहीं मानते थे। नीति के हिसाब से भी हिंसा और घट्टिसा का रास्ते पर उनकी कोई निरूपधारण धारणा नहीं थी। जिस समय की बात मैं लिख रहा हूँ उस समय निहवानी साहब राष्ट्रीय विद्यालय के अध्यापक थे। अपने प्रांत के मजदूरों में उनकी काफी प्रसिद्धि थी। वे देशबन्धुदास के अत्यन्त विरोधी थे। अफ़ग़ानी आन्दोलन के सिलसिले में एक बार वे जवाहर लालजी के साथ निहवानी साहब नामा पधारे थे। विरफ्तारी के बाद थोड़े ही दिनों में वे दोनों सज्जन छोड़ दिये गए थे। पुनः नाया के अध्यापक आन्दोलन में इन सज्जनों में से किसी ने कोई भाग नहीं लिया। सन् 1921 में आसाम बंगाल रेलवे कम्यारियों ने जब पूर्व बंगाल की स्टीम मेवीयेशन कम्यनियों के कम्यारियों ने भी भारी हड़ताल कर दी थी। इन हड़तालों के कारणों में देशबन्धुदासजी का विशेष हाम नहीं था। लेकिन जब हड़ताल प्रारम्भ हो गई थी तो देशबन्धुजी ने हड़तालियों की भी-आग से सहानुभूति की थी। उस समय पटनाई दरपादि स्थानों के कमेटरों की भी इन हड़तालों के कारण कोई सामान नहीं मिलता था हर प्रकार से हड़ताल सफल रही थी।

देहली की कांग्रेस में जाने के पहले ही पं० जवाहरलालजी से मेरी बातचीत हो चुकी थी। उसका उत्तेजित मैने पहले ही कर दिया है। देहली कांग्रेस के अवसर पर एक बार मुझे डाक्टर अंसारी के स्थान पर जाना पड़ा। वहाँ पर पं० जवाहर लालजी से मेरी भेंट हुई। पंडितजी बहुत आसह के साथ आनन्दित होकर मुझे एक विशेष कमरे में ले गए। वहाँ श्री कुरेसी से मेरी आन-बहान करी थी। मैं



मिर्जापुर के डीरिस्टर श्री मुसुफ इमामजी तथा मुग़ैलसङ के निरिस्ट व्यक्ति शीबाम धनुष्मसिंहजी से हम लोगों की बातें हुई। हम लोगों ने एक-दूसरे को अच्छी तरह से समझ लिया। लेकिन विशेष दुःख की बात है कि मेरी धनुष्मसिंहजी में इन लोगों से किसी ने कुछ काम नहीं लिया। साथ ही सांप्रदायिकता की महर में मुसुफ इमाम साहब पूर्ण राष्ट्रीयतावादी हैं। शीबाम धनुष्मसिंहजी एवं मुसुफ इमाम साहब दोनों ने ही कांग्रेस कांग्रेस में पूर्णरूप से भाग लिया। साथ ही सभी देशभक्तों की भाँति ये दोनों सज्जन राष्ट्रीय क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

भारत के विप्लव आन्दोलन के लिए यह विशेष दुःख की बात थी कि विप्लव आन्दोलन के नेताओं की प्रकाश आन्दोलन में भाग लेने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ। यह भी एक कारण है जिसके लिए भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन पर विप्लव आन्दोलन का बितना प्रभाव पड़ना चाहिए था उसना नहीं पड़ा। इसलिये अन्त्येष्ट से मुक्त होने पर मेरी इच्छा थी कि मैं भी प्रकाश आन्दोलन में भाग लूँ। बेहनी में कांग्रेस के विशेष प्रतिवेदन के समय मैंने देश-वासियों के प्रति एक अपील निकाली थी। इस अपील में एक नया कार्यक्रम किया गया था—भारत को पूर्ण रूप से स्वतन्त्र करना है इस ध्येय पर विशेष जोर देते हुए एशिया की विभिन्न पर-वर्तित जातियों का एक राष्ट्र बना देने की कल्पना के अनुसार इस अपील में कार्यक्रम दिया गया था। इस अवसर पर विशेष जोर देते हुए एशिया की विभिन्न पर-वर्तित जातियों का एक राष्ट्र बना देने की कल्पना के अनुसार इस अपील में कार्यक्रम दिया गया था। राष्ट्रीय समस्यार्यों को सभी प्रकार समझने वाले अंतर्गतवादी व्यापी दृष्ट संकल्पमुक्त देशभक्तियों को लेकर स्वयंसेवकों का देशव्यापी एक विप्लव बल बनाने का संकल्प भी इस कार्यक्रम में था। इस प्रकार बोड़े सभी में जोड़सिंधी धर्मजी भाषा में अपने कार्यक्रम का स्पष्ट चित्र अंकित हुए मैंने यह अपील निकाली थी। प्रोफेसर बितेन्द्रनाथ बनर्जी धर्मजी के प्रसिद्ध अभिलेखाली लेखक हैं। इस अपील को पढ़कर उन्होंने यह भावना बाह्य कि इस अपील की धर्मजी किसने लिखी है। मेरे साथ बंगाल के प्रसिद्ध कान्तिकारी नेता श्री विपिन चन्द्र पांडुनी थे। उन्होंने बनर्जी साहब को मेरा नाम बताया। मैं भी विपिन पांडुनी को लेकर इस अपील पर बितेन्द्रनाथ बनर्जी के हस्ताक्षर कराने गया था। डेसीपेट की हस्तियत से मैं बेहनी कांग्रेस में आया था। मेरा नाम इस अपील के बिसम्भूत अन्त में था। वहाँ तक मुझे स्मरण है सबसे पहले श्रीमुक्त विपिनचन्द्र पांडुनी के हस्ताक्षर थे। इस अपील में आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के बहुतराई सदस्यों के



मैंने भी उनसे अधिक अनुरोध नहीं किया। उनकी इस घानाफानी को देखकर मैंने भी कुछ सापरबाही से यह कह दिया कि यदि घाय इस अपील पर हस्ताक्षर करना उचित न समझे तो न कीजिए। मेरी उदासीनता को देखकर वे कुछ सोच में पड़ गए। न जाने क्या समझकर मुझसे उन्होंने कहा कुछ बेर ठहर जाएँ हम घायस में परामर्श कर लें। कुछ बेर के बाद उनमें से कुछ ने प्रतिनिधि की हस्तियत से अपील पर हस्ताक्षर कर दिए। लेकिन उनका दृष्टिकोण कुछ धीर ही था। मैं यह चाहता था कि आन्तरिकी नेताएँ अपने मौखिक कार्यक्रम को लेकर प्रकाश रूप से राजनैतिक क्षेत्र में घबराती हों। कमकता आन्तरिकी बल के नेता की विपिनबन्ध गांधुजी ने तो इस बात के महत्त्व को अनुभव किया परन्तु अनुशीलन समिति के नेताओं ने इसे व्यर्थ समझा।

इस अपील को लेकर मैं बेचबन्धुबास के पास भी गया था। अपील पढ़कर दासजी कुछ हँसि धीर बोले कि कौन्सिल प्रवेश का कार्यक्रम इसमें क्यों नहीं रखा। मैंने भी हँसकर कहा कि कौन्सिल प्रवेश के कार्यक्रम से तो हम सहमत हैं ही यदि अन्य सब बातों से भाप सहमत हों तो इस कार्यक्रम को भी इस अपील में रखा जा सकता है। मैं जानता था कि दासजी इसमें अपना हस्ताक्षर न देंगे। दासजी उस समय एक ही बात पर अपनी पूरी चर्चित मचा रहे थे। कौन्सिल प्रवेश को छोड़कर धीर किसी प्रश्न पर उनका ध्यान न था।

इस विलसिले में एक विषय बात से मुझे बहुत साम हुआ। मुझे यह अपील ज्ञापनी थी। (इसके लिए मेरे पास पैसे न थे।) देहली की जिस बर्मंधाला में मैं ठहरा था उसीमें मेरे कम के कुछ खाची भी थे। यह अपील मैंने उनके परामर्श से उसी बर्मंधाला में बैठकर लिखी थी। उसी समय मेरे एक खाची ने मुझ भोटों का एक बंडल दिया धीर कहा कि वे स्पष्ट उसे अमुक कमरे में मिले थे। यदि उस व्यक्ति का पता चल जाय जिसका यह खयाल है तो उसे वे दिया जाएगा अन्यथा इसे अपने काम में लगाया जाय। मैं मन-ही-मन ऐसा सोचता था कि यदि कोई खयाल मालिनेबाला न भाए तो अच्छा हो। मुझे हर बड़ी यही भिन्ता थी कि कोई मालिनेबाला तो नहीं था रहा है। परन्तु सीमाय से न किसी ने खयाल माँगा न खयाल खोने की उस बर्मंधाला भर में कोई बर्बा ही हुई। इस बंडल में पछतर रुपये के भोट थे। देहली के एक घायसमाजियों के प्रेस से यह अपील ज्ञापनाई थी। शीघ्रता के कारण प्रेस ने अपील की ज्ञापनाई के नाम अधिक ही लिए थे। इस

बाद की सुविधा मुझे अवश्य मिली कि इस प्रेस ने मेरी अपील छाप तो दी सम्मन वा कि दूसरे प्रेस इस काम को न करते।

इन छप्पे हुए अपीलपत्रों को कांग्रेस पंढास के अन्दर हम लोगों ने बाँटमा बाहा लेकिन स्वयंसेवकों ने ऐसा करने में हम लोगों को रोका। तब प्रोटेस्टर जितेन्द्रनाथ बनर्जी की सहायता से हम स्वयंसेवकों के सरदार श्री माधुसूदनजी के पास पहुँचे। माधुसूदनजी साहब ने वादा किया कि वे अपने स्वयंसेवकों की सहायता से इस अपील को पंढास के अन्दर बँटवा देंगे। हमने इस अपील की पाँच हजार प्रतियाँ छपवाई थीं। समयवश दो या तीन सौ प्रतियाँ अपने पास रखकर बाकी सब प्रतियाँ माधुसूदनजी को दे दीं। लेकिन बाद को हमें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनमें से एक प्रति भी किसी को नहीं दी गई थी।

इस अपील की प्रतियाँ मैंने भारत के विभिन्न-विभिन्न प्रांतों के सम्पादकों को भेज दीं लेकिन भारत के किसी पत्र में इस अपील को नहीं छपा। इसकी कुछ प्रतियाँ जापान में श्री रासबिहारी एवं अमेरिका में श्री सरकनाथदास के पास भी भेज दीं। अमेरिका के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'दि न्यू रिपब्लिक' में यह अपील ब्लॉ-की-ब्लॉ खूब बड़े और उसके साथ श्री सरकनाथदासजी ने भी इस अपील के महान के बारे में एक लेख लिखा। जापान से रासबिहारी बोस ने उस पत्र की एक प्रति मेरे पास भेजी थी। सम्भवतः इस अपील की एक प्रति महात्माजी के संयोजकता को भी भेजी गई थी। भारत में इस अपील के विषय में कोई खबर नहीं हुई।

बंगाल के उपन्यासकार श्री धरत्चन्द्र चटर्जी से एक सम्वाद सुनकर हम बहुत ही रोए। सरत् बाबू भी हम लोगों की भाँति महात्माजी के अन्ध भक्त नहीं थे। पों तो बंगाल के अधिकांश व्यक्ति महात्माजी के अन्ध भक्त नहीं हैं फिर भी जब सरत् बाबू जैसे व्यक्ति की सम्मति हमारी सम्मति से मिल गई तो हमें बड़ी खुशी हुई। इस प्रकार महात्माजी के बारे में खर्ची करते समय बारपोली के सरमा बाबू को इसलिए स्मिंत नहीं किया गया था कि बीरीचोरा में हिंसात्मक काण्ड हो जाय वाकि बारपोली के किसान पहले ही हीं शासभर का लगान सरकार को दे चुके थे। केवल इतना ही नहीं यह भी खबर थी कि बारपोली के किसानों ने अपनी हटाने योग्य सारी वस्तुएँ अपने मकानों से धलत कर दी थीं। मूकदात के एक सच विवीकगत अफसर ने यह संवाद महात्माजी को दिया था इस पर महात्मा

जी ने अपने बिस्वस्त व्यक्ति को बारबोली भेजा था। उसने श्री महात्माजी के पास एच० डी० प्रो० की बातों को सही बताया। ऐसी व्यवस्था में बारबोली के सत्याग्रह धान्योन्नत को स्थगित कर देने के अतिरिक्त महात्माजी के पास घीर रास्ता ही बचा रह गया था।

उत्तर भारत के विप्लववादी धान्योन्नत के सम्बन्ध में देहली के कांग्रेस अधिवेशन के विद्यप अक्सर पर वा महत्वपूर्ण बातें हुई थीं जिनका उल्लेख इस स्थान पर करना विशेषतः आवश्यक है।

कांग्रेस के इस अधिवेशन के पहले ही ईसाहाबाद के श्री पुष्पोत्तमदास टंडन से नसी प्रकार परिचित हो चुका था। टंडनजी अच्छी तरह से जानते थे कि हम लोग गुप्त रीति से नास्तिकारी धान्योन्नत में सने हुए हैं। हम लोगों के प्रति उनकी पूर्ण सहानुभूति थी। परन्तु वास्तविक क्षेत्र में हम लोगों ने उनकी सहानुभूति से कुछ लाभ नहीं उठा पाया। टंडनजी अपरिवर्तनवादी थे। देहली कांग्रेस में वह प्रस्ताव पास हो गया कि कांग्रेस जन मेजिस्ट्रेटिक कोसिस के सदस्य बनकर उसके कार्य में भाग ले सकते हैं। सत्याग्रह धान्योन्नत एक बार व्यर्थ हो चुका था। अपना धान्योन्नत समाप्त होने पर महात्माजी राजनीतिक क्षेत्र से कुछ दिनों के लिए घसप हो जाते हैं। किसी धान्योन्नत के विफल हो जाने पर जनता में सब साद छा जाता है। आशा भंग के आघात से सब जनता उरसाह घीर उधम हीन हो जाती है ऐसी व्यवस्था में महात्माजी कार्यक्षेत्र से घसप हो जाते हैं। व्यवसाय के दिनों में अन्य नेतागण राष्ट्रीय धान्योन्नत को बनाते हैं। फिर जब धान्योन्नत उग्र रूप धारण करता है तो फिर महात्माजी कार्य क्षेत्र में घबटीर्ष होते हैं। सन् 1931 के सत्याग्रह धान्योन्नत के समय महात्माजी कोसिस प्रवेश के विरोधी ने घीर दसवन्धु दास पम्पिल मोतीलाल मेहता घीर भाभा लाजपतराय इत्यादि कुछ नेतागण कोसिस प्रवेश के पक्ष में थे। पं० बहादुरलाल श्री पुष्पोत्तमदासजी टंडन इत्यादि नेतागण महात्माजी की तरह कोसिस प्रवेश के विरोधी थे। देहली कांग्रेस में दास पक्ष की विजय हुई। ऐसी परिस्थिति में मैंने टंडनजी से यह आग्रह किया कि सब सब पाया है कि कांग्रेस क्षेत्र में परिवर्तन करने की चेष्टा की जाय। अपनी विशेष मानसिक परिस्थिति के कारण टंडनजी ने अपनी बार मेरे परामर्श को स्वीकार कर लिया। वही तक मुझे स्मरण है बाबू रामेन्द्रप्रसादजी ने भी कांग्रेस अधिवेशन में टंडनजी के प्रस्ताव का समर्थन किया था। टंडनजी ने यह प्रस्ताव

किया था कि कांग्रेस के ध्येय में शक परिवर्तन करने का समय आया है। इस प्रस्ताव के समर्थकों में मेरा नाम भी था। परन्तु मेरे बोलने का समय घाने से पहले ही मौसामा प्रबुधकलाम भाबाय भी सभापति के आसन से कुछ देर के लिए हट गए थे और उस समय श्री बास भी सभापति के आसन पर बैठे थे। मैंने तो मन ही मन समझा कि मुझे प्रच्छन्न धवसर मिला। परन्तु दुर्भाग्य से मौसामा मुहम्मदभाभी बोलने को चढ़े हो गये और जगमग डेढ़ या दो घण्टे तक बोलते ही रहे। बासजी उन्हें बोलने से रोकना नहीं चाहते थे। इसके बाद मुझे बोलने का अवसर नहीं मिला।

टहनजी पूर्ण स्वाधीनता के ध्येय को तो पसन्द करते थे। परन्तु इस ध्येय को कार्यक्रम में परिणत करने के लिए जीवन में उन्होंने क्या प्रयत्न किये यह मुझे बात नहीं है। बेहूनी अधिवेशन के बाद कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में भी उन्होंने कांग्रेस के ध्येय को बतलाने की कोई चेष्टा नहीं की या नहीं मुझे पता नहीं। हिंसा-अहिंसा के प्रश्न पर भी उनकी नीति अन्तिकारियों अथवा श्री सरविंद या लोकमान्य तिलक की नीति से भिन्न न थी। श्री तिलक ने पीछा रहस्य सिद्ध कर अपने दार्शनिक सिद्धान्त को युक्ति एवं भारतीय दर्शन के आधार पर सुप्रतिष्ठित करने की चेष्टा की। श्री सरविन्द ने सातों तक वैदिक एवं सांप्ताहिक पत्रों में अपने राष्ट्रीय एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। उस समय भारत एवं विशेषकर बंगाल में सघन अग्नि की लहर उमड़ रही थी। प्रकाशी विस्फोटों की तरह उन्होंने भी कभी विप्लव आन्दोलन की मिया नहीं की। प्रकाश्य आन्दोलन के सम्पर्क में अपना व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने कभी भी हिंसा और अहिंसा के सिद्धान्त पर राज पुष्पों के दृष्टिकोण से अपने पक्ष को दुर्बल नहीं किया। बेधबन्धुदासजी ने भी अपने देहावसान के कुछ दिन पहले तक अपनी नीति तिसक ओर सरविन्द की नीति स्थिर रखी। जब कलकत्ते के पुलिस कमिश्नर टेमार्ट की भूस में 'जे' साहब मारे गए तो बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में 'जे' साहब के मारनेवाले श्री योगी मोहन के प्रति सम्मान एवं प्रीति सूचक प्रस्ताव पास किया गया था। इस प्रस्ताव के पास कराने में बेधबन्धुदास जी की पूर्ण सहायता थी। महात्माजी इस बात से एकदम विचक गए एवं महात्माजी ही के कारण प्र० भा० कमेटी में बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव के विरुद्ध बृहत्त प्रस्ताव माया गया। बासजी अपने प्रस्ताव पर बटे रहे। अथवा महात्माजी को अधिक बोट मिले फिर भी

पोपीमोहन शाह की प्रशंसा में जो प्रस्ताव पहले पास हो चुका था उसके पक्ष में भी सबूत बोट धाये। महात्माजी अपने व्यक्तिगत के कारण बीठ तो मरस्य गए परन्तु उन्होंने स्वयं ऐसा कहा था कि राजनी के पक्ष में भी इसमें बाट धाए इससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि भविष्य का पक्ष अभी प्रबल नहीं हुआ। महान् धारण्य की बात तो यह है कि सरकार अगस्तसिंह की प्रशंसा में कराची कांग्रेस में महात्माजी के ही परामर्श एवं सहायता से एक विशेष प्रस्ताव पास हुआ। इससे भी धारण्य की बात यह है कि बिलायत में राउण्ड टेबुल कांफ्रेंस में जाने के पहले बम्बई में प्र० भा० काँग्रेस कमेटी की बैठक में कराची के इस अगस्तसिंह के प्रस्ताव सूचक प्रस्ताव के विरुद्ध एक अन्य प्रस्ताव पास किया गया। और कराची वाले प्रस्ताव को वापस कर लिया गया। इस प्रकार हिंसा अधिष्ठा की नीति पर कांफ्रेंस आन्दोलन में बिलनी बार प्रश्न उठ चड़े हुए टंडनजी ने कभी भी महात्माजी के विरुद्ध अपने पक्ष का समर्थन नहीं किया।

व्यक्तिगत जीवन में टंडनजी महान् त्वाभी पुरुष हैं। जिस समय थाप साहौर के एक बंक के मैनेजिंग डायरेक्टर से लाला लाजपत राय का देहान्त हो गया। लाला जी लोक सेवक संघ के अध्यक्ष थे। महात्माजी के कहने पर टंडनजी ने मैनेजिंग डायरेक्टरी छोड़कर लोक सेवक संघ का कार्यभार अपने ऊपर ले लिया। सन् 31 के अन्त्यार्थ आन्दोलन के समय टंडनजी ने बकालत छाड़ दी और उसके बाद उन्हें बहुत धार्मिक कष्ट सहने पड़े। फिर भी कभी उन्होंने किसी के सामने हथ नहीं फैलाये। इसके अतिरिक्त महात्माजी के राष्ट्रीय आन्दोलन में जाने के बहुत पहले से ही टंडनजी अपने व्यक्तिगत जीवन में अधिष्ठा नीति का पालन करते आए हैं। थाप इसा हाबाव हाईकोर्ट में भी 'प्रिपोजीन' वाले कँग्रेस के जुटे पहुँचकर बकालत करने आते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के सत्र में थाप सदा ही अभिकारी आन्दोलन के प्रति हार्दिक सहानुभूति रखते थे। लेकिन ये सब बातें होते हुए भी भारतीय अभिकारी आन्दोलन का यह बड़ा दुर्भाग्य है कि टंडनजी जैसे महानुभाव ने इस आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया। बहुत कहने-सुनने पर कांदेश के देहली अधिवेशन में थापने स्वाधीनता का प्रश्न उठाया था।

राष्ट्रीय आन्दोलन के बड़े-बड़े नेताओं के विषय में मैं इसलिए इतनी बातें लिख रहा हूँ कि पाठकों को इन महानुभावों की मनोवृत्तियों से परिचित होने का अवसर मिले। यह कहना आवश्यक नहीं है कि अभिपक्ष में भारतीय अभिकारी

पाण्डित्यन कैसे कर सकेंगे। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भारत के इतिहास  
कारों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का विश्लेषण करना पड़ेगा। मुझे आशा  
है कि मेरे इतिहास से अभिप्रेत के इतिहास में लोगों को सहामता  
मिलेगी। इसी अभिलाषा से मैंने इस इतिहास को लिखना प्रारम्भ किया है।

आज तो कांग्रेस ने अवश्य ही यह स्वीकार कर लिया है कि पूरा स्वाधीनता  
प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है परन्तु इस स्थिति पर पहुँचने के लिए कांग्रेस में  
बहुत कम मतभेद हुए हैं और बेहमी के अभिव्यक्त में ही इसकी सर्वप्रथम  
वेष्टा हुई थी यह बात भी स्मरण रखने योग्य है।



## 12 / कान्तिकारी दल और कम्युनिस्ट

जब एक दूसरी विशेष महत्वपूर्ण बात का उल्लेख कर रहा हूँ। बेहती में एक  
 और व्यक्ति से मेरी मुलाकात हुई। आपकी धातु अनुमान से तीस वर्ष की रही  
 होगी। आपसे मेरा पूर्व परिचय न था आपका नाम कुतुबुद्दीन साहब था। अपना  
 परिचय देते हुए आपने बताया कि मैं थी मानवैश्वनाथ राय के भाव्यी हूँ। इस  
 परिचय से मेरे मन में बड़ा हर्ष और कुतूहल हुआ। कुतुबुद्दीन साहब ने बड़े प्रेम  
 से कहा मैं बहुत दिनों से आपसे मिलना चाहता था। मानवैश्व राय ने आपको मास्को  
 बुलाया है। वहाँ कम्युनिस्ट इन्टर नेशनल कांग्रेस होने जा रही है। राय साहब की  
 इच्छा है कि आप भी उस समय पर उपस्थित हों। विशेषकर आप ही से मिलने  
 के लिए मैं बेहती आया हूँ। मैंने कहा 'कम्युनिज्म के बारे में मैं ठीक-ठीक सब  
 बातें नहीं जानता। कुतुबुद्दीन साहब ने उत्साहपूर्वक कहा 'आपको यह सब  
 मैं तो कम्युनिज्म के बारे में सब बातें पहले ही से अच्छी तरह जानना चाहता  
 था। कुतुबुद्दीन साहब का प्रस्ताव तो मेरे लिए एक सीमावर्ती बात थी। उनके  
 साथ बहुत दूर तक मेरी बातचीत हुई। कुतुबुद्दीन साहब से ही मैंने जीवन में सर्व  
 प्रथम कम्युनिज्म के मूल तत्त्व को सार्थक रूप में समझा। मेरे जीवन की यह एक  
 महान् ऐतिहासिक घटना है।  
 कुतुबुद्दीन साहब ने मुझसे कहा कि कम्युनिज्म का ध्येय है समाज की ऐसी  
 व्यवस्था करना जिससे समाज की कोई भी सम्पत्ति किसी व्यक्ति के हाथ में न  
 रहकर समाज के हाथ में रहे। यह तुमसे ही मेरे मन में हिन्दुओं के संघास आश्रय

को बात आई इसलिये उसी क्षण मैंने कहा कि यह तो मनुष्य जीवन की चरम उन्नति पर निर्भर है। मनुष्य जीवन की प्रगतिम उन्नति हुए बिना कैसे यह सम्भव है कि समाज की सम्पत्ति व्यक्ति के हाथ में न रहकर समाज के हाथ में बसी जाय। यह सुनकर कुतुबुद्दीन साहब ने कहा कि नहीं व्यक्ति के हाथ से भी समाज व्यवस्था ली नहीं जा सकती है जिसके परिणाम में सम्पत्ति व्यक्ति के हाथ में से समाज के हाथ में बसी जाय एवं उसी व्यवस्था में पिछा-दीना की सहायता से मनुष्य की चरम उन्नति संभव होगी। मेरे लिए यह एकदम नई कल्पना थी। मैं बोड़े समय के लिए बकित-सा रह गया। और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि बहुत संभव है कि कुतुबुद्दीन साहब की बात सत्य हो। समय में मेरे मानसिक विषय में संन्यास प्रायम के बारे में बहुत धर के लिए यह प्रश्न उठा कि जीवन भर की तरफ़ा के परिणामतः जिस चरम और परम व्यवस्था की प्राप्ति करने के लिए हिन्दू समाज में व्यवस्था है कम्युनिज्म की व्यवस्था में क्या उसी व्यवस्था को इतने सरस एवं सहज मार्ग से प्राप्ति किया जा सकता है? परन्तु यह प्रश्न क्षण भर के लिए ही मन में उभर हुआ था। बोड़े ही समय के समन्तर में समझने लगा कि संभव है विप्लव के बाद हिन्दू समाज प्रवर्तित उत्कृष्ट के मार्ग को मनुष्य ग्रहण कर सके। कम्युनिज्म को भली प्रकार समझने के लिए मन में उत्सुकता और बढ़ गई। एक समय निवृत्त करके मैं फिर कुतुबुद्दीन साहब से मिली और कम्युनिज्म के सिद्धान्त के बारे में उनसे मेरी बकटी तक बातचीत हुई।

क्रीम गारडेन में बैठकर घंटों तक कुतुबुद्दीन साहब से मेरी बातचीत हुई। कुतुबुद्दीन साहब ने प्राचीन काल से लेकर आज तक के इतिहास का एक साफ़ा बीजकर दिखाने का प्रयत्न किया। उन्होंने एच० बी बेन्स के इतिहास से दृष्टान्त लेकर यह विधाना कहा कि कैसे एक समय नारी राज्य का वर्तित्व था और उस समय स्त्री जाति के प्रभुत्व के कारण समाज की रीति व्यवस्था पद्धति आदि सब स्त्रियों की इच्छानुसार होती थी। उस समय पुरुषों के अधिकार स्त्रियों के प्रभु बर्ती होते थे प्रसिद्ध समाज में जो जाति शासन करती है उसी के स्वार्थ के प्रभु रूप रीति-नीति की बन जाती है। कुतुबुद्दीन साहब का कहना था कि रीति नीति समाज व्यवस्था इत्यादि सनातन नियमों की प्रभुबर्ती होकर नहीं बनती प्रत्युत राज-शक्ति जिसके हाथ में रहेगी उसकी इच्छा एवं स्वार्थ के प्रभुधारा ही समाज व्यवस्था बनेगी। सामाजिक सम्पत्ति भी राज-शक्ति पर निर्भर है। राज-शक्ति की

सहायता से समाज में शिक्षा-बीक्षा उद्योग-धर्मों आदि की व्यवस्था बनाया ही एवं ठीक नीति पर हो सकती है। व्यक्ति के लिए उन्नति का मार्ग भी तभी प्रचस्त होया जब राज-सक्ति की सहायता मिलेगी। व्यक्ति की उन्नति की प्रतीक्षा में यदि हम बैठे रहेंगे तो समाज का कोई काम नहीं चल सकेगा। आज समाज में जितने घोर घनर्ब हो रहे हैं उनके मूल में सबसे बड़ी बात यह है कि समाज के जन उत्पादन के जितने साधन हैं वे सब कुछ चोरे ही मनुष्यों के हाथ में हैं। वे लूटते हैं उसी प्रकार समाज व्यवस्था बनाते हैं बिबर चाहते हैं उसी तरह समाज को से चमते हैं। राज-सक्ति भी इनही के हाथ में रहती है। एक घोर तो जन की समृद्धि होती है दूसरी ओर वरिष्ठा के निष्ठुर दबाव से समाज के प्रचक्ष व्यक्ति हाहाकार करते हैं। प्रजातन्त्रात्मक राज्य में भी पूर्वीपति ही जो-जो चाहते हैं वही करते हैं। कहने के लिए तो प्रजा की सब राष्ट्रीय कुर्बानियाँ बराबर हैं परन्तु बनी व्यक्ति घरीबों के बोट धपने जन की सहायता से प्राप्त कर लेते हैं। इसलिये मर्याद प्रजातन्त्रात्मक राज्य तभी बन सकता है जब समाज से शरीर और समीर का भेद मिट जाय। शरीर और समीर का भेद तभी मिट सकता है जब जनोत्पादन के साधन व्यक्ति के हाथ में न रहकर समाज के हाथ में रहें। कान्ति के ही मार्ग से यह काम बन सकता है सम्भव नहीं। यदि धार्मिक दृष्टि से समाज में साम्य नहीं रहता तो उस समाज की प्रत्येक व्यवस्था एवं राज्य की नीति दुर्वि एवं प्रकृत्यान्वी मनी हो जाती है।

मैंने शान्त एवं एकाग्र चित्त होकर उनकी सब बातें सुनीं। आज तक कान्ति का ही आन्दोलन के घनेको इतिहास पढ़े राष्ट्रों के उत्थान-पतन की भी कितनी ही बातें पढ़ीं परन्तु कम्युनिज्म के धार्मिक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक बदलावों की समझना नहीं सीखा। जीवन में क्रान्तिवादी की सहायता से कम्युनिज्म का धार्मिक दृष्टिकोण के सिद्धान्त की मौलिकता देखकर मैं चकित एवं विस्मयादिष्ट हो गया। आज तक मैं इस सिद्धान्त से परिचित न था यह जानकर मुझे बड़ी लज्जा एवं शर्म हुआ। बातचीत होते-होते कभी इतिहास के गहन प्रश्नों में कभी वर्मनीति की विभिन्न गति में एवं वर्मनीति से वर्मनीति में एवं वर्मनीति से धर्मवाद एवं नीतिकवाद इत्यादि की महान् धार्मिक धारणाओं में हम चपटें बिचरते रहे। क्रान्तिवादी छात्र से मिलकर उनसे बातचीत करके मुझे सबसे धार्मिक प्रसन्नता हुई जैसे ही एक नवीन सिद्धान्त से परिचित होकर मैं धार्मिकान्वित एवं चकित भी हुआ।

जीवन में एक और नवीन समस्या पैदा हो गई। सभी तक वेदान्त के लपेटे में पड़कर मान और कम की विषय उसमन में पड़ा था। फिर हिंसा और अहिंसा के द्वन्द्व में पड़कर भी कुछ अवांछित भुगतनी गांधीबाद और सत्याग्रह-मार्ग से सत्य का नान्वितकारी मार्ग की भीषण प्रतिद्वन्द्विता के कारण जीवन में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जब अन्त में कम्युनिज्म के मौलिकवाद इतिहास की प्राथमिक व्याख्या एवं राज की नवीन परिदृश्यना प्रभुत राजनैतिक एवं दार्शनिक उसमन में पड़कर जीवन में एक नवीन एवं अद्वितीय समस्या की उत्पत्ति हुई है।

सम्यक्ति व्यक्ति के हाथ में न रहकर समाज के हाथ में रहे इसके मूल में जो महान् पारदर्श है उसे मैं अस्वीकार नहीं कर सका। परन्तु जन उद्वेग के सामने ही सम्यक्ति है यह मैं बैहसी में मनी भाँति नहीं समझ पाया था। इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम मेरे मन में इस भावना की उत्पत्ति हुई कि मैं इस महान् आदर्श का अनुयायी बनने योग्य न था। मेरे मन में बहो सम्यक्ता का प्रादुर्भाव विज्ञाई दिया और मैंने यह अनुभव किया कि मैं इसके लिए उपयुक्त न था। इसका साप-साय मैं इस बात को भी स्वीकार नहीं कर पाया कि प्राथमिक व्यवस्था के कारण ही समाज में हर प्रकार की उत्पत्ति हो सकती है। जब मैंने कुतुबुद्दीन साहब को बलात्त के दूनतरक के विषय में कुछ समझना प्रारम्भ किया तो आपने यह स्वीकार किया कि ये सब बातें दार्शनिक विचार-चार में छोमा जा सकती हैं। एक सम्भव है इनकी उपयोगिता भी हो लेकिन बर्म के प्रति कम्युनिज्म का जो आक्रामक है उससे इन दार्शनिक विचारों का विषेय सम्भव नहीं है। मान्य है सब बातें स्मरण करते समय मुझे ऐसा सम्बेह होता है कि सम्भव है कुतुबुद्दीन साहब वेदागत के विचारों से मनी भाँति परिचित न रहे हों यथवा यह भी हो सकता है कि क्योंकि कुतुबुद्दीन साहब मुझे धीरे धीरे अपनी ओर आकर्षित चाहते थे इसलिए मेरे बहु दार्शनिक विचारों के प्रति सहिष्णुता दिखाकर मुझे यह समझना चाहते थे कि दार्शनिक विचार बाध एवं दार्शनिक भावना य दो एकदम भिन्न वस्तुएँ हैं। कुतुबुद्दीन साहब का यह कहना कि बर्म के कारण ससार में भीषण धनार्थ हुए हैं मुझे बहुत सीमा तक स्वीकार करना पड़ा था। तथापि मैंने इस बात को किचित् मान भी स्वीकार नहीं किया कि बर्म का सद्ब्यवहार नहीं हुआ इसलिए यथाय में बर्म भी स्वयं सद्बस्तु नहीं है। इतिहास में बहुत-से धनधरों पर बर्म का दुरुपयोग हुआ है इसलिए बर्म का सद्ब्यवहार भी नहीं हो सकता है यह बात न मुक्तिमुक्त है न

ऐतिहासिक दृष्टि से ही सरल है। फिर गिरी धार्मिक दृष्टि से ही इतिहास को समझने की चेष्टा करना यह भी एक युक्ति समत बात नहीं है। इस प्रकार कम्युनिज्म के सत्यार्थ में भाकर जीवन में एक महान् गवीन धार्मिक की प्रेरणा का मैंने अनुभव किया। परन्तु कम्युनिज्म के सिद्धान्त में एक महान् धार्मिक के साथ कुछ ऐसी भी बातें जोड़ दी गई हैं जिन्हें मैंने उस दिन ही स्वीकार किया था और मैं इतने दिनों के मनन और अध्ययन के बाद आज भी कर सकता हूँ। मैं युक्ति दार्शनिक दृष्टि अथवा मानव अभिज्ञता की दृष्टि से भौतिकवाद को आज भी सरल नहीं समझता। किसी गवीन धार्मिक की परिकल्पना केवल जड़वाद के दृष्टिकोण से उत्पन्न नहीं हो सकती।

विप्लव धाम्नीजन की दृष्टि से देहली में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के प्रारंभ पर बहुत महत्वपूर्ण बातें हुईं। इसी अधिवेशन में कांग्रेस प्रेष को बदलने की सर्वप्रथम चेष्टा हुई। उत्तर भारत के विप्लव धाम्नीजन पर कम्युनिज्म के धार्मिक का प्रसूत प्रभाव पड़ा। भारतीय विप्लव धाम्नीजन के इतिहास में यह एक विशेष महत्वपूर्ण घटना है। देहली में कांग्रेस के अधिवेशन के समय भारत में कम्युनिस्टों का कहने योग्य कोई संघटन नहीं था। सन् 1934 ई. में कानपुर के बोसधेनिक पदपत्र के मामले में इने-मिने मनुष्य अभिमुख थे। हम लोगों के अन्तिकारी बन की चुनना मैं भारतवर्ष भर में वृत्ता कोई व्यापक एवं सुसंस्थित दल न था। पंजाब में सरदार बुधमूखसिंह तथा सरदार सतोपसिंह के नेतृत्व में कम्युनिज्म के धार्मिक पर एक दल तैयार हो रहा था। लेकिन इस दल की उमाय कर्मचेष्टा पंजाब प्रान्त में ही सीमित थी। बंगाल के अन्य अन्तिकारी दलों में कम्युनिज्म के किसी भी प्रभाव का चिह्न नहीं दिखाई दिया था। मैंने उत्तर भारत में जिस विप्लव दल का संगठन किया था भारतीय विप्लव धाम्नीजन के इतिहास में इसी दल में सर्वप्रथम कम्युनिस्ट सिद्धान्त के बहुत धर्मों को स्पष्ट धर्मों में ग्रहण कर लिया था। उस सिद्धान्त के जिन धर्मों को हमने उस दिन नहीं ग्रहण किया था वह इसलिए नहीं कि मैं हम लोगों की समझ में नहीं था वे वरन् हम लोगों ने जान-बूझकर सिद्धान्त के विचार से मुक्ति की कसौटी पर उनके निर्बल प्रमाणित होने के कारण ही उन्हें स्वीकार नहीं किया था। यूरोप के आधुनिक इतिहास का पर्यालोचना करने से यह प्रमाणित हो रहा है कि हमारा दृष्टिकोण सरल है। परानुकरण दृष्टि के कारण जो लोग सी नर्य के पहले के सिद्धान्त को अपरिचित

रूप में ज्यों का त्यों धाज भी देख-काज-गज भेद का विचार न करके जैसे का तैसा ग्रहण करने को साक्षात् हैं वे भूल जाते हैं कि गत पद्य रूप की प्रवृत्ति के बाद भी धाज यूरोप अथवा अमेरिका में कोरे मार्क्सवाद की विषय नहीं हुई बल्कि यूरोप के कम्युनिस्टों को अपनी नीति में बहुत परिवर्तन करना पड़ा है। यही संघर्ष के स्थापन पर धाज संयुक्त मोर्चा आदि के नारे बुलन्द हो रहे हैं। ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि इंग्लैंड का तब तथा अमेरिका में कम्युनिस्टों के साथ दूसरे प्रगतिशील दलों ने सहयोग करना स्वीकार नहीं किया।

देहली से सीटकर मैं धावरा मयुरा इत्यादि होकर कामपुर आया था। कामपुर आकर एक सत्रजन के यहाँ ठहरा। इनका नाम भी सत्यमन्त्रजी था। धाव परिचित होने की प्रवृत्ति इच्छा उत्पन्न हुई थी।

सत्यमन्त्रजी कम्युनिज्म के सिद्धान्त के आधार पर युक्त प्राम्थ में एक दल उपलब्ध करना चाहते थे। कम्युनिज्म का एक मूल सिद्धान्त है कि विप्लव के ही तान से सफलता प्राप्त की जा सकती है अथवा नहीं। हम सोय यन्त्राय में विप्लवी कम्युनिज्म के विषय की कुछ अच्छी-बुरी पुस्तकें थीं। उन्हें मैंने पढ़ डाला। कम्युनिज्म को समझने के लिए मुझे 'बुखारिन लिखित 'ए० बी० सी० घाऊ पुस्तकें भी पढ़ डालीं। इन सब पुस्तकों में से तीन-चार पुस्तकें विशेष उत्तरेय बोध्य हैं यथा 'प्रामिनिरियम रेवस्युधन' 'स्टेट ऐण्ड रेवस्युधन' 'छाय घुटोपिमा ट साइन्स' 'ऐर्य एण्ड सिक्कन रिपोर्ट घाऊ बी कम्युनिस्ट इण्टर नेशनल कांफ्रेंस' इत्यादि। इनके अतिरिक्त मानवेन्द्राय द्वारा सम्पादित बहुत-से पत्र पढ़ने का भी अवसर मिला। इस प्रकार मन् 1924 में ही कम्युनिज्म के सिद्धान्त के बारे में मैंने बहुत कुछ समझ लिया था। सत्यमन्त्रजी से मेरा बहुत बातचीत भी हुआ एवं बहुत कुछ समझ लिया था। सत्यमन्त्रजी से मेरा बहुत बातचीत भी हुआ एवं यही संघर्ष इत्यादि प्रश्नों को लेकर दिन-दिनभर तक घामोचनार्थ हुई। पंचाय के सरदार गुरुमुखसिंहजी से बातचीत होने के बाद मैंने अपने दल के लिए एक लिखित संघठन और कार्यक्रम की योजना तैयार करना आवश्यक समझा।

घौर कानपुर में धाकर यह योजना तैयार की। इसके बारे में विप्लव रूप घोर विस्तार से लिखने की आवश्यकता है। कारण यह कि क्रान्तिकारी आन्दोलन के बारे में भारतीयों में बहुत-सी भ्रान्त धारणाएँ फैली हुई हैं। हमारे देश के बहुत से मध्यमवर्गीय अल्प-प्रतिष्ठ नेतावर्ग भारतीय विप्लव आन्दोलन को बन्धों का खेल समझते आए हैं। भारतवासी प्रायः यह समझते आए हैं कि भारतीय विप्लव आन्दोलन का केवल यही अर्थ है कि समय-समय पर कुछ धड़े घोर पुलिस पकड़ों का बोली से मारना जल्दा बनी देशवासियों के घरों में जाकर डकैतानाई करना। हमारे देशवासी आज भी नहीं समझ पाए हैं कि क्रान्ति के मार्ग से भारत को स्वाधीन करने की चेष्टा मुक्ति संगठन एवं ऐतिहासिक परम्परा के आधार पर समर्थन योग्य है। इस नासमझी के फल में बर्बाद बातें यह हैं कि भारतवासी आज भी सच्चे हृदय से भारत को स्वाधीन करने के लिए कुछ नहीं करना चाहते हैं। भारत के किसी भी राष्ट्रनेता की मनोवृत्ति मेडिनी केटीवाडी के बुरे विचारों से भरी किसी इतिहास प्रसिद्ध विप्लवी नेता की तरह नहीं है। यही कारण है कि भारत के नेतावर्ग यहाँ के विप्लव आन्दोलन को बर्बाद रूप में नहीं समझ पाए हैं और दूसरी बात यह भी है कि भारतीय विप्लवी वर्ग ने स्वयं अपने सिद्धान्तों का प्रचार कुछ नहीं किया। भारत के विप्लवियों ने प्रकाश आन्दोलन में भाग लेकर अज्ञानमयी प्राण-स्पर्धी भाषा द्वारा एवं प्रसंख्य मुक्ति के मार्ग से जन-साधारण को अपनी ओर आकर्षित करने की बर्बाद चेष्टा नहीं की।

अजमेर में रहते समय ही मैंने यह अनुभव किया था कि भारत में क्रान्ति का कोई आन्दोलन की ओर से ऐसे साहित्य की सृष्टि करने की परम आवश्यकता है। ऐसे साहित्य की सृष्टि अभी हो सकती है जब उपयुक्त शिक्षित वर्ग क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग ले। परन्तु भारत के दुर्भाग्य से यहाँ के प्रतिभावान विचारशील साहित्यिक बलि हम्पन्न मननशील और अव्यवस्थित व्यक्तियों में से अधिकतर ने विप्लव आन्दोलन में भाग नहीं लिया। इसी कारण भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन की ओर से उपयुक्त साहित्य की सृष्टि नहीं हुई। किसी आन्दोलन की सफलता के लिए उसके दृष्टिकोण से उपयुक्त साहित्य की सृष्टि करना सर्वप्रथम एवं परम आवश्यक बात है। परन्तु यह परम बुद्ध की बात है कि इस देश में भारतीय विप्लव आन्दोलन के सम्बन्ध में किसी भी कच्चे बोध्य साहित्य की सृष्टि नहीं

हुई। सन् 1919 ई० से सम्पादक धाम्नीजन को बीच बर्षे हो गए पर इन बीच में भी साहित्य की सृष्टि नहीं हुई। यूरोप अमेरिका जगजागीर के किसी भी धाम्नीजन को मे सीत्रिए उन देशों में जिसमें प्रकार के साहित्यों की सृष्टि हुई है उनका पताच भी हमारे देश में नहीं हुई। कम्युनिस्ट धाम्नीजन के सम्बन्ध में इतनी पुस्तकें, पुस्तिकाएँ एवं सामयिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई हैं कि उनसे संसार भर में विज्ञान बसा हुआ है। साम्राज्यशाही राष्ट्रों के निकट कम्युनिस्टों की एक साधारण पुस्तिका महीनत से भी अधिक भीतिपूर्ण एवं आपत्तिजनक समझी जाती है। उन्नीसवीं शताब्दी के धाम्नीजन में बंग भाषा में मन्त्रिणी मैरी बास्ती इत्यादि प्रसिद्ध राष्ट्र विप्लवियों के जीवन चरित्र लिखे गए हैं। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही डॉक्टर रबीन्द्रनाथ ठाकुर, सरस्वती इत्यादि प्रतिभाशाली लेखकों ने जिस साहित्य की सृष्टि की है उसकी तुलना आज भी भारत में नहीं मिल सकती। फिर ऐतिहासिक व्यपत्ति में वैज्ञानिक अनुसंधान में काव्य में कला में अर्थात् राष्ट्रीय चेतना की प्रत्येक विधा में धाम्नीजन का अत्यन्त स्फुरण हुआ था। कलकत्ता हाईकोर्ट के न्यायालय में जब पहले पहल राजनीतिक बन्धुत्व के मामले पर विचार प्रारम्भ हुआ तो मुगलपुर के धनुबाद के सम्बन्ध में जजों के सामने यह कहा गया था कि मुगलपुर की भाषा इनकी मौलिक है कि उसका आन्दोलन करना सम्भव नहीं। मिस्टन की भाषा में जो लिखित है बर्षों की लम्बी में जो प्रोत्तिष्ठा है भाषा की भाषा में जो प्रोत्तिष्ठा और प्रसार है मुगलपुर की भाषा के भाषा इन सब धुनों की अत्यन्त व्यञ्जना व्यक्त हुई है। मुगलपुर की तुलना में हिन्दी भाषा में हमें कुछ भी नहीं मिल सकता। नेपोलियन के समय में जर्मन प्रेषित शतका निम्नतम था। सी मोघ जाने में सीस टुकड़े-टुकड़े स्वतन्त्र प्रान्तों से होकर जाता पड़ता था। नेपोलियन द्वारा सीस रूप में आबाध प्राप्त करके जर्मनी में राष्ट्रीय चेतना का अन्वेषण हुआ था। उस समय भी जर्मन साहित्य में अत्यन्त वास्तु विचारों की थी। जर्मन विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध अध्यापक डॉक्टर ने नवीन लैंगी से अत्यन्त प्रेरणा के अन्तर्गत होकर जो इतिहास लिखा था उसी के प्रभाव से जर्मनी में एक नवीन राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ। भारतवर्ष के राष्ट्रीय धाम्नीजन की जर्जा क्रम पर हमें निताम्न निराश होना पड़ता है। महात्माजी एवं पं० जवाहरलालजी की धारम-कथाओं तथा मुद्राण बाबू की एक-दो पुस्तकों को छोड़कर पिछले बीस बर्षों में कुछ भी साहित्य की सृष्टि



नहीं हुई है। यह कुछ भाषा की बात नहीं है। भग्नमन में रहते समय मेरे मानस पटल में ये सब बातें स्वामी रूप से प्रविष्ट हो गई थीं। तथापि आज भी मेरे मन में परिष्कार की सीमा नहीं है कि अपनी अभिसाया के अनुसार मैं कुछ भी साहित्यिक प्रयत्न नहीं कर पाया। बात यह भी कि विप्लव कार्य में आत्मनिक रूप से सिप्ट रहने के कारण मुझे साहित्य बर्बा कराने का अवसर ही नहीं मिला।

मेरी एक यह इच्छा भी कि कमिश्नारी आन्दोलन की उपबोधिता एवं आब दमकता के विषय में एक परिपूर्ण ग्रन्थ लिख जानूँ। कमिश्नारी आन्दोलनों के विषय में आज तक बितने आलेख किये गए हैं इसे तुच्छ एवं बुझिहीनों का व्यर्थ आस्थागत प्रतिपादित करने के लिए बितनी बातें कही गई हैं इन सबका प्रत्युत्तर देने की मन में प्रबल इच्छा थी। परन्तु परम दुर्भाग्यवश मैं कुछ भी न कर पाया। इस प्रकार के ग्रन्थ लिखने में यथेष्ट समय की आवश्यकता होती है। और मुझे यह समय प्राप्त नहीं है। यदि ग्रन्थ लिखने बैठ जाता हूँ तो इतर संगठन का कार्य पड़ा रहता है और संगठन के कार्य में लग जाता हूँ तो लिखने का समय नहीं मिलता। ऐसी परिस्थिति में ही मैंने अपने दल का एक कार्यक्रम तैयार किया था। मेरी समझ से भारतीय कमिश्नारी आन्दोलन के इतिहास में इस कार्यक्रम का एक विशेष महत्त्व है। यह कार्यक्रम आज पुसिस के अधिकार में है। लेकिन काकोरी पद्मग्न के मामले के फैसले में इस कार्यक्रम का बहुत-सा प्रभु उद्भूत है।

उन उद्भूत प्रभों से उस कार्यक्रम का कुछ परिचय इस स्थान पर देने का प्रयत्न करूँगा। इस कार्यक्रम से पाठकों को विवित होमा कि उत्तर भारत का कमिश्नारी आन्दोलन कितने बृह सिद्धान्तों के आधार पर प्रारम्भ हुआ था।

भी रासबिहारी के समय उत्तर भारत में जो कमिश्नारी दल काम कर रहा था उसका कोई कार्यक्रम न था। यूनाइटेड स्टेट्स और कनाडा में जो विप्लव दल या बहु शहर पार्टी के नाम से विख्यात था। बंगाल में बितनी पार्टियाँ थी उन सब के चलन प्रसंग नाम थे। अब की बार मैंने जो दल संवर्धित किया उसका नाम दि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन रखा। अबच भीष्ट कोर्ट के फैसले से इस दल के समय तथा साधन एवं इसकी व्यवस्था प्रजाली के नियम दर्याबि नीचे उद्भूत हैं

नाम

इस दल का नाम दि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' रहेगा।

मुद्रयुक्ति एक सघन वाणि के द्वारा निपुण भारतीय प्रजातन्त्र संघ का स्थापना करना इस दल का ध्येय होगा। इस प्रजातन्त्र के विधान और उसके अन्तिम स्वरूप का निर्माण एवं उसकी घोषणा जनता के प्रतिनिधियों द्वारा ऐसे समय की बायमी जब वे अपने निश्चयों को व्यावहारिक रूप देने में समर्थ होंगे। आर्थिक महाधिकार की नींव पर इस प्रजातन्त्र संघ का संघटन होगा। इस प्रजातन्त्र मंच में उन सब व्यवस्थाओं का अंगुष्ठ कर दिया जायगा जिनसे किसी एक मनुष्य द्वारा दूसरे का शोषण हो सकने का अवसर मिल सकता है।

## विधान

संघात्मक संविधि—“संघ के समस्त कार्य केन्द्रीय समिति द्वारा संघान्वित होंगे। इस केन्द्रीय समिति में भारत के प्रत्येक प्रान्त के प्रतिनिधि रहेंगे। केन्द्रीय समिति के सभी निश्चय सब संघस्यों की स्वीकृति सहित होंगे। केन्द्रीय समिति के हाथ में पब्लिक अधिकार रहेंगे। विभिन्न प्रान्तों के समस्त कार्यों की जानकारी इस समिति को रहेगी। विभिन्न प्रान्तों के कार्यों को समन्वयित करने के अपने उद्देश्य साधन में उन्हें परस्पर सम्बन्ध करना और उन पर नियन्त्रण रखना इस केन्द्रीय समिति का मुख्य काम होगा। भारत के बाहर विदेशों में जो कुछ किया जायगा वह केन्द्रीय समिति के ही तत्वावधान में होगा।

## प्रान्तीय संगठन

साधारणतया प्रत्येक प्रान्त में दल के पाँच विभागों के पाँच प्रतिनिधियों को मकर एक कार्यकारिणी समिति बनेगी। प्रान्त के समस्त कार्य इस समिति के नियन्त्रण में होंगे। इस समिति के समस्त निर्णय सर्व सम्मति से निश्चित होंगे।

## दल के पाँच विभाग

1 प्रचार कार्य 2 लोक संग्रह 3 धर्म संग्रह एवं धार्मिकता 4 अस्त्र धस्त्र का संग्रह एवं उन्हें सुरक्षित रखने की व्यवस्था करना 5 विदेशों से सम्बन्ध स्थापित करना।

1 प्रचार कार्य—(क) प्रकाश एवं गुप्त मुद्रित पत्रों की सहायता से (ख)

व्यक्तिगत वार्तालाप की सहायता से (ग) सार्वजनिक समावृत्ति द्वारा, (घ) कक्षा वार्ता प्रयात् वर्म विषयक व्याख्यानों द्वारा सुनियोजित रूप में अपने उद्देश्य का प्रचार करना, और (ङ) मीडिक सैफ्टम द्वारा।

3 लोक-संग्रह का काम जिलों के मार प्राप्त संचालकों द्वारा होगा।

3 सामारभतया स्वेच्छाकृत काम की सहायता से अच-संग्रह किया जाएगा परन्तु समय-समय पर बल प्रयोग द्वारा भी। विदेशी सरकार से भयान्त उत्पीड़ित होने पर इस बल का कर्तव्य होगा कि वह उसका उचित रूप से प्रतिशोध ले।

4 इस दम के प्रत्येक सदस्य के पास एक पञ्जीयाने का भरसक प्रयत्न किया जाएगा परन्तु ये सब एक ही दिग्गम केन्द्रों में सुरक्षित रखे जाएंगे एवं प्रान्तीय कमेटी के नियन्त्रण में ही उनसे काम लिया जाएगा। इस विभाग के अधिनायक प्रत्येक जिला संगठन कक्षा की बिना अनुमति एवं बिना जानकारी के कोई भी एक दूसरे से उबर नहीं किया जाएगा।

5 विदेशी विभाग—इस विभाग के समस्त कार्य केन्द्रीय समिति के ही नियन्त्रण एवं संचालन में होंगे।

### जिलों के संचालक और उनका कर्तव्य

जिलों के सदस्यों का मार पूर्ण रूप से जिला मार्गनाह्वार पर रहेगा। अपने जिले के प्रत्येक घंटे में जिला-संचालक इस दम की छायाएँ स्थापित करने की यथाशक्ति चेष्टा करेगा। सफ़सतापूर्वक लोक-संग्रह के कार्य के लिए प्रत्येक संचालक अपने जिले के विभिन्न सार्वजनिक कार्यों एवं संस्थाओं के साथ बलिष्ठ रूप से सम्पर्क रखेगा। जिलों के संचालकगण सब प्रकार से प्रान्तीय कमेटी के अधीन रहकर काम करेंगे। प्रान्तीय कमेटी उनके सब कार्यों पर नियन्त्रण रखेगी एवं इस समिति के संचालन में ही जिलों के ये संचालकगण काम करेंगे। जिले के संचालक अपने सदस्यों को छोटी-छोटी टोहियों में विभाजित कर देंगे एवं इन बात पर ध्यान रखेंगे कि ये सब विभिन्न टोहियाँ एक-दूसरे से परिचित नहीं रहेंगी। वही एक सम्मेलन हो सके एक प्रान्त के विभिन्न जिला संचालकगण भी आपस में एक-दूसरे के कार्यों से जानकारी नहीं रखेंगे। एवं यथासम्भव ये संचालकगण आपस में एक-दूसरे की शक्त से भी परिचित न रहेंगे और न वे एक-दूसरे के नाम

माने। अपने ऊपर बाते को बिना सूचना दिए किसी भी जिंसा संचालक को प  
प्रतिकार न होगा कि वह अपने स्थान को छोड़कर कहीं और चला जाय।

जिंसा संचालक की योग्यता

1. विभिन्न स्वभाव एवं प्रकृति वाले समुच्चों को साथ लेकर चलाय और उनके काम लेने की योग्यता प्रत्येक जिंसा संचालक में होनी चाहिए।
2. प्रत्येक जिंसा संचालक में यह योग्यता होनी चाहिए कि वह प्राधुनिक काल की राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को ठीक ढंग से समझ सके और उन समस्याओं के साथ अपनी मातृभूमि का क्या और कहाँ तक सम्बन्ध है इसका भी ठीक ज्ञान होना परमावश्यक है।
3. प्रत्येक जिंसा संचालक में यह योग्यता होनी चाहिए कि भारतीय इतिहास की समझ को हृदयंगम करते हुए भारतीय सम्प्रदाय की विशेषता को बड़े समीकरण समझ सके।

4. मानव सम्प्रदाय को स्वाधीन भारत की भी कुछ देन है इस बात पर जिंसा संचालकों की परिपूर्ण भठा होनी चाहिए। प्राथम्य और वास्तव्य सम्प्रदायों में मानव की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं में समानता यह सब स्वाधीन भारत ही कर सकता है। मानव सम्प्रदाय को स्वाधीन भारत की यही देन है।

5. जिंसा संचालकों के लिए यह परमावश्यक है कि वे त्यागी एवं साहसी हों क्योंकि इन गुणों के बिना उनकी और सब प्रतिभार्थ व्यर्थ हो जायेगी।

प्रांतीय एवं केन्द्रीय कमेटी

इन कमेटियों के सदस्यों को उचित है कि वे इस बात पर विशेष ध्यान रखें कि अपनी सत्ता के सदस्यों को इस बात में पूर्ण रीति से विकसित कर पाएँ एवं अपनी कार्य-कुशलता का पूर्ण परिचय दे सकें। सम्प्रदाय सम्भव है यह संस्था क्रमशः प्रगति को प्राप्त हो जाय।

कार्यक्रम

इस संस्था के समस्त कार्य दो रीतियों से होंगे एक प्रकाश सूचरी गुण।

### प्रकाश्य कार्यक्रम

1 पुस्तकालय व्यवसायशाला सेवा-समिति इत्यादि के रूप में विभिन्न संस्थाओं की प्रतिष्ठा करना ।

2 विज्ञान एवं मजदूरों का संगठन करना । इस संस्था की धोरत योग्य व्यक्तियों को कारखानों, रेलों एवं कोयले की खानों में भेजा जाय जिससे वहाँ के मजदूरों पर इनका प्रभाव कम जाय और वे मजदूरों के मन में यह बात प्रचली तरह से बैठे सकें कि मजदूर वर्ग कान्ति के साधन-धाम नहीं हैं बल्कि मजदूर वर्ग के संगठन के लिए ही कान्ति होगी । मजदूरों की तरह किसानों को भी संगठित करना है ।

3 प्रत्येक प्रांत से एक-एक साप्ताहिक निकाला जाय और उसकी सहायता से स्वाधीनता और प्रजासत्त की बातों का प्रचार किया जाय ।

4 बिदेसों में क्या-नया हो रहा है और उन देशों में विचार-बादल किन दिशाओं की ओर प्रवाहित हो रही हैं इन सब बातों को समझने के लिए छोटी-छोटी पुस्तकें और पुस्तिकाएँ प्रकाशित की जाएँ ।

5 कांसस तथा अन्य सार्वजनिक कार्या पर यथासंभव अपनी संस्था का प्रभाव डाला जाय और उनसे यथासंभव लाभ उठाया जाय ।

### गुप्त कार्यक्रम

1 गुप्त रीति से छापेखाने की प्रतिष्ठा की जाय और उसकी सहायता से ऐसे साहित्य की सृष्टि की जाय जिसका प्रकाशन प्रकाश्य रूप से सम्भव नहीं है ।

2 ऐसे साहित्य का प्रचार करना ।

3 समस्त देश में जिनके लिए इस संस्था की शाखाएँ स्थापित करना हवा ।

4 जैसे भी सम्भव हो धर्म-संघर्ष किया जाय ।

5 विप्लव के भयंकर पर भस्म-यन्त्रों के कारखानों एवं सेना परिचालन का कार्य मार गड़ह करने के योग्य जनमै के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को बिदेसों में सामरिक एवं भूतानिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से भेजा जाय ।

6 बिदेसों से भस्म-यन्त्र मँगाना एवं इस देश में उनके निर्माण का प्रयत्न करना ।

7 विदेशों में भारतीय विप्लवियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखना एवं उनके साथ पूर्ण सहयोग से काम करना।

8 ब्रिटिश सेना में अपनी संस्था के सदस्यों को भरती कराना।

9 समय-समय पर प्रतिदोष के उद्देश्य से ऐसा काम करना जिससे जनसाधारण की सहानुभूति अपने सिखाने की ओर आकृष्ट हो सके। इस प्रकार देश में एक एस दस की मुद्रि होगी जिसकी सहानुभूति से हम लाभ उठा सकेंगे।

### सदस्यों के धारे में

1 सदस्यवर्ग इस संस्था के काम में अपना पूरा समय लगाएँ और भाव प्रकटा करने पर अपने जीवन को संकट में डालने के लिए सदा प्रस्तुत रहेंगे। प्रत्येक प्रान्त के बिना संभालकगण ऐसे सदस्यों की भरती करेंगे।

• प्रत्येक सदस्य बिना संभालक की आज्ञाओं का निर्विरोध पालन करे।

3 प्रत्येक सदस्य अपनी मौलिक कार्य-कुशलता को बढ़ाने का भरपूर प्रयत्न करे। इस संस्था की उपलब्धता एवं साधकता इस बात पर निर्भर है कि इसके सदस्यवर्ग कितने उद्योगी मौलिक रूप से कार्य-कुशल एवं कर्तव्य-परायण हैं। प्रत्येक सदस्य इस बात को स्मरण रखे।

4 प्रत्येक सदस्य का आचरण ऐसा होना आवश्यक है जिससे इस संस्था के ध्येय पर किसी प्रकार की कामिया न लग सके एवं उनके कार्यों से साराएँ भयवा परेश रूप में इस संस्था को कोई हानि न पहुँच सके।

5 बिना संभालक की अनुमति बिना इस संस्था का कोई भी सदस्य दूसरी संस्था का सदस्य नहीं बन सकेगा।

6 बिना संभालक की अनुमति बिना कोई सदस्य अपना स्थान नहीं छोड़ेगा।

• प्रत्येक सदस्य इस बात की चेष्टा करेगा कि जनसाधारण भयवा पुनित की दृष्टि में इस संस्था की उत्पत्ति न हो कि उसका कान्तिकारियों से कुछ सम्बन्ध है।

8 प्रत्येक सदस्य को इस बात का स्मरण रखना परम आवश्यक है कि उसका व्यक्तिगत व्यवहार या उससे एक भी घसटी होने पर समस्त संस्था नष्ट सकती है।

॥ कोई भी सदस्य अपने सामाजिक काव्य के बारे में जितना सचामक सचिबी बात को नहीं ज्ञाता ।

10 विरवासमाज करने पर सदस्य को सत्या से निकाल दिया जायगा या उसे मृत्यु दण्ड दिया जायगा । दण्ड देने का अधिकार पूर्णतया प्रांतीय कमेटी को होगा ।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन अथवा हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ की नियमावली एवं कार्यचम को यदि कोई विरोध ध्यानपूर्वक पढ़ेगा तो उसे अस्स प्रतीत हो जायगा कि उत्तर भारत का विप्लव धान्दोलन प्रजातन्त्र एवं समाज तन्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर प्रतिष्ठित था । और यह देखन सम्भवमान ही न थी । अपने ध्येय को हाथ में बरिष्ठ करन के लिए भारत के जुने हुए बुदक बुद बर-बुहली की सुख स्वच्छता को, माता-पिता के स्नेह को आई-बहिनों के प्यार और मोह को दुनियावादी के प्रलोभनों को सिनाबलि देकर अपने अहस्य साधन के लिए फीसी के तख्ते पर बड़ने स मायवा मातृम्य कामेपानी की काल कोठरी के दर से कभी पीछे नहीं हटे ।

उस समय उस में राज्य प्राप्ति हो चुकी थी कम्युनिज्म की रस्ताज धमि पिछा से समस्त संसार के उत्पीडितमन एवं बड़े-बड़े साम्राज्यों के सचालकमन मस्त और अस्त-व्यस्त हो चुके थे । तब से यूरोप और अमेरिका म कम्युनिज्म के सिद्धान्त के आधार पर तुलु धान्दोलन हो चुका था और उसका प्रचण्ड रूप दिन पर दिन उग्र से उग्र होता जा रहा था । इन सब परिस्थितियों के प्रति ध्यान रखते हुए यदि हम उत्तर भारत के विप्लव धान्दोलन की आलोचना करें तो वह निश्चित रूप से विवित हो जायगा कि यह धान्दोलनमात्र मिताम्र बाध सुजन नपनता या धुरदुरी उहण बुदक-बुदों की विचारहीन धृष्टतामान म था अथवा हाहासास्त कार्यकर्ताओं का अर्थ धास्फालन भाव न था । यदि वह कहा जाय कि बड़े-बड़े धर्मों के व्यवहार से अथवा अने विचार के सिद्धान्त के उन्मेष मान से ही किसी धान्दोलन की साधकता का विचार हम नहीं कर सकते ता इसके उत्तर मे केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि संसार में अब कभी भी किसी नूतन सिद्धान्त का अचार हुआ है तो उसका प्रारम्भ परिमित धाकार मे एवं प्रधान रूप से विचार के क्षेत्र में हो सम्भवयन हुआ है । यही ता इन विप्लवियों ने दीपक प्रतिकूलता का ज्ञाना करते हुए जनार की सबसे बड़ी सामाज्यवादी

के प्रहार को सहते हुए मारवातारियों के विभिन्न एवं प्रचाराय प्रसन्न मन को अपने बीच के बसिदान से संजीवित किया। सन् 19<sup>th</sup> 1 सत्वाग्रह आन्दोलन के प्रसन्न होने के बाद से सन् 1920 तक भारत में जो आन्दोलन होता रहा महात्मा गांधी का उसमें कोई हाथ न था। उस समय यह कामिन्दारी आन्दोलन ही ऐसा आन्दोलन था जो सत्वार के सामने उभर कर से यह घोषित कर रहा था कि भारत को आधीन करने के लिए वहाँ के नवयुवकयन प्रायों की आहुति है सफ़्टे हैं। सन् 1920 की बाहिर कांग्रेस के सम्पापति पं० जवाहरलालजी नेहरू के अधिभाषण को ध्यानपूर्वक पढ़ने से सबको यह स्पष्ट विदित हो जायगा कि भारतीय कामिन्दारी आन्दोलन का प्रभाव भारत के राष्ट्र नायकों पर किसने प्रबल रूप से पड़ रहा था। यदि मैं भूल नहीं रहा हूँ तो पंडितजी ने अपने अधिभाषण में यह भी कहने का साहस किया था कि भारत के युवक-युवों के कामिन्दारी कार्यों ने ही भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का जीवित रखा है।

यह बात सत्य हो सकती है कि हमारी संस्था के इस कार्यक्रम की सब बातें सर सरस्वों को समझ में पूर्ण रूप से न आई हों। इस कार्यक्रम की पूर्ण रूप से समझने के लिए दो बातों को बाल मने की विशेष आवश्यकता है। जिसने भारतीय सम्मता की सम-कथा को मनी-माति नहीं समझा उसके लिए यह सम्मन नहीं कि कम्युनिज्म के बोध को बह-ठीक-ठीक समझ सके। इसलिये भारतीय सम्मता के प्रति जिसका मन नहीं है और इस बात पर कि मानव-सम्मता की उन्नति के लिए भारतीय सम्मता की विशेष उपयोगिता है जिसकी मज्जा नहीं है यह इस कार्यक्रम को ठीक-ठीक नहीं समझ सकता तथा यह भी जिसने वह मान ही लिया है कि कम्युनिज्म का सिद्धान्त एक परिपूर्ण अधिभाष्य नुदिरहित समूचे तीर पर प्रभाव है यह भी हमारी संस्था के इस कार्यक्रम की पूर्ण रीति से नहीं ही समझ सकता। कारण यह है कि उसको ऐसा प्रतीत होगा कि कम्युनिज्म के पूरे सिद्धान्त को इस कार्यक्रम में ज्यों-का-त्यों नहीं लिया गया है और इसलिये वह समझे कि इसके बनाने वाले कम्युनिज्म के सिद्धान्त को ठीक-ठीक नहीं समझे हैं। जिस प्रकार एक धीर पण्डित जवाहरलालजी जैसे व्यक्ति ने कामिन्दारियों को प्रोत्साहित कहा है उसी प्रकार दूसरी धीर कुछ मनीन मानसंवादी इस कार्य के की प्रलोचना करते हुए भाष्य यह कहते हैं कि इस कार्यक्रम के निर्माता ने कम्युनिज्म के सिद्धान्त की पूर्ण रूप से नहीं समझा था इसलिये योभी संघर्ष के



बारे में वह कुछ नहीं लिख रहा है। इस प्रकार की टिप्पणी करने वालों में से मेरे एक साथी श्री मम्मयनाथजी मुख भी हैं। ध्याने धरने कई भेजों में ऐसा लिखा है कि श्री साय्यालजी ने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के कार्यक्रम का तैयार किया था और उसमें कुछ साम्यवादी सिद्धान्तों को भी रखा था। लेकिन साय्यालजी श्री-संघर्ष के मर्म को समझ नहीं पाए थे। श्री मम्मयनाथजी अपने को कामरेड कहते हैं। इसलिए उचित है कि मैं भी उन्हें कामरेड ही लिखूँ। कामरेड मम्मयनाथजी समझते हैं कि हमारी संस्था के कार्यक्रम में व्यक्तियों के स्वाध के बिना में कुछ नहीं कहा गया है। इसलिए वह समझते हैं कि इस कार्यक्रम के रचयिता के मन में श्री-संघर्ष एवं श्री-स्वार्थ के बारे में कोई चारवाही न थी।

तोमो की विरफ्तारी के पहले मम्मयनाथजी ने इस बात के प्रति कभी भी हमारी दृष्टि आकर्षित नहीं की। इसका कारण यह है कि इस समय मम्मयनाथजी इस कार्यक्रम को भलीभाँति समझे नहीं थे। कम्युनिज्म को बिना समझ इस कार्यक्रम की विशेषता को समझना किसी के लिए सम्भव भी नहीं है। मम्मयनाथजी उस समय कम्युनिज्म के सिद्धान्त से विशेष परिचित न थे। ध्यान कामरेड मम्मयनाथ कम्युनिज्म को किस प्रकार समझते हैं सम्भव है भविष्य में छीक ऐसा ही न समझें।

अपने पक्ष के समर्थन के लिए इस स्थान पर मैं दो-एक बातों के प्रति पाठकों का ध्यान दिमाना चाहता हूँ। कम्युनिज्म के सिद्धान्त में इतिहास की धार्मिक व्याख्या का एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। और इतिहास की धार्मिक व्याख्या के मूल में श्री-संघर्ष की धारणा प्राबल्यपूर्ण वर्तमान है। जो इन सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करता वह कहुर पंथियों की दृष्टि में कम्युनिस्ट नहीं हो सकता। मैंने विशेष ध्यानपूर्वक इन सब सिद्धान्तों को पढ़ा और इन पर धमकीर कम से कमन किया लेकिन ध्यान श्री मैं इन सिद्धान्तों को ग्रहण नहीं कर पाया, तथापि इन बातों को मैंने स्वीकार कर लिया था कि स्वाधीन भारत के प्रजातन्त्र राज्य में यज्जूर एवं किसान वर्ग के स्वार्थ की उपयुक्त रीति से रखा होनी चाहिए। इतिहास में बार-बार यह देखा गया है कि यज्जूर तथा किसान वर्ग से राज्य अस्तित्वी हुई परन्तु अस्तित्व के बाद उसकी उपयोगिता हुई; राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के समय बार बार उनके स्वाध की रक्षा।

। लेकिन इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि श्री

धामता  
बाद  
११।  
इमें

घाम बढ़ना पड़े घबरा इतिहास की धार्मिक व्याख्या को हम स्वीकार करना पड़। निरपराधी के समय मेरे पास एक छोटा-सा परचा पाया गया था जिसमें इतिहास की धार्मिक व्याख्या की सम्पूर्णता को प्रमाणित करने - लिए मैंने कुछ बातें सप्रह करके लिख रखी थीं। यह परचा काकोरी पड़गन्त के मामले में एनिमिस्ट है। इतिहास की धार्मिक व्याख्या का सहन करते हुए मैं इस समय एक हस्तलिख रहा हूँ। विचारविनिमय नामक मरी एक पुस्तक के व्यक्ति समाज और मार्क्सवादी दीपक लेख में 23 पृष्ठों में मैंने इतिहास की धार्मिक व्याख्या के कुछ संघों का सहन किया है। और कुछ परिचित कम्युनिस्टों से इस बात की भी श्रवना को है कि वे हमला प्रत्युत्तर दें। लेकिन धर्मी तक इसका किसी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया है। इसके प्रतिरिक्त अपनी संस्था के कार्यक्रम से भी कुछ भ्रष्ट उद्धृत करके ही मैं यह बिलाने का प्रयत्न करूँगा कि वय ज्ञान की बारम्बा भी इस कार्यक्रम में विद्यमान है। इसलिए इस कार्यक्रम के प्रकाश्य पक्ष का दूसरा नियम।

इस नियम से सबको विहित हो जाएगा कि मजदूर और किसान वर्ग के स्वायत्त हो लिए अन्तिम की धारोचना की गई थी। इस स्वायत्त पर धर्मी-संघर्ष की नीति पर विचार रूप से प्रामोचना करने की इच्छा नहीं है। इस विषय में मैंने कानपुर के साप्ताहिक प्रकाश में एक काफ़ी बड़ा निबन्ध लिखा है। इस निबन्ध का धीरे-धीरे कम्युनिस्ट बुद्धिकोण में परिवर्तन। मैं समझता हूँ कि विप्लव आन्दोलन के इतिहास में कम्युनिस्ट सिद्धान्त पर प्रामोचनात्मक विचार करने का यहाँ उपयुक्त स्थान नहीं है, इसके लिए एक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही लिखने की आवश्यकता है और वह मैं लिख रहा हूँ। यहाँ पर यह स्पष्ट निबन्ध कर देना आवश्यक है कि हमारी संस्था के कार्यक्रम में कम्युनिज्म के बहुत-से सिद्धान्त ग्रहण कर लिए गए थे और जिन सिद्धान्तों को नहीं ग्रहण किया गया था वह इसलिए नहीं कि वे सब हमारी समझ में न आए थे बल्कि इसलिए कि उन्हें हमने जान-बूझकर धक्की ठरह से धोखे-बिचारकर ही नहीं ग्रहण किया था। एक विशेष बात इस कार्यक्रम में यह आई जाएगी कि कम्युनिस्ट बुद्धिकोण से इस कार्यक्रम को बनाए जाने पर भी हमारी संस्था के नाम के साथ कम्युनिज्म भयबा सोसलिज्म का नाम नहीं जोड़ा गया था। इस बात से यदि कोई यह समझे कि हम सोय साधसिज्म से परिचित न थे प्रकृता उधड़े सिद्धान्त को ग्रहण नहीं कर पाए थे तो वह भी उसकी भूल होगी। हमने यह सोचा था कि सोसलिज्म के नाम से सम्भव है बहुत-से नवी व्यक्ति ॥

उस समय इसारी छात्रावली कर रहे थे हमसे विमुख हो जाएँ। केवल इसी विचार से हमने अपनी संस्था के नाम के साथ सोशलिज्म नाम नहीं लगाया था। पत्रावली के सरदार मुकुन्दमिह के पास को देखकर मैंने भी यह कहा था कि अपनी संस्था का नाम सोशलिज्म से मुक्त रखें। परन्तु मेरे परम मित्र प्रध्यापक जयचन्द्रजी के परामर्श से ऐसा नहीं किया गया। हम लोगों की गिरफ्तारी के बाद सरदार भगत सिंह ने इस संस्था के साथ सोशलिज्म का नाम भी लगा दिया था। लेकिन फिर भी लक्ष्य करने की बात यह है कि इस नाम के प्रतिरिक्त इस कार्यक्रम में और कोई परिवर्तन नहीं किया गया था। हमारी संस्था के ध्येय का वर्णन करते समय स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि हम ब्रिटिश में भारत की समाज व्यवस्था ऐसी बनाने चाहते हैं जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य पर किसी प्रकार का भी शोषण सम्भव न हो सके। फिर इस संस्था की ओर से जो घोषणा-पत्र निकाला गया था उसमें यह भी कहा गया था कि भारत की सभी राष्ट्रीय व्यवस्था में बड़े-बड़े कारखाने और उद्योग-व्यवस्थाओं का व्यापार व्यक्ति के शरीर न रहकर राष्ट्र के अधिकारों में से एक के रूप में हस्तान्तरित हो जाएँ। कारखानों का चलाना श्रमिकों के अधिकारों के अनुसार होना चाहिए। इस ध्येय के साथ यदि प्रसारण कार्यक्रम के दूसरे नियम को देखें तो निम्नलिखित बातों को निश्चय ही यह बात विवक्षित हो जाएगी कि कम्युनिज्म के मूल सिद्धान्तों को हमने बहुत ध्यान में रखकर लिया था। प्रकाश्य प्रामाण्य के दूसरे नियम को यदि ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय तो किसी के मन में संदेह का अवकाश नहीं रहेगा कि कम्युनिस्ट सिद्धान्त के प्रत्यक्ष वर्णन की वजह से हमारी कल्पना एवं संकल्प में सक्रिय रूप से वर्तमान थी। यह नियम यह है 'किताब एवं मजदूरों का संगठन करना'। इस शर्तों की ओर से बोध्य व्यक्तियों को कारखानों, रेलों एवं कोयले की खानों में भेजा जाय जिससे वहाँ के मजदूरों पर इनका प्रभाव पड़ जाय और वे मजदूरों के मन में यह बात प्रचली तरह से बैठे कि मजदूर वर्ग-क्रान्ति के साधन नाम नहीं हैं बल्कि मजदूर वर्ग के संगठन के लिए ही क्रान्ति होगी। मजदूरों की तरह किसानों को भी संगठित करना है। इस स्थान पर मैं बातचीत की दृष्टि से शक्तियों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहता हूँ। 'मजदूर वर्ग-क्रान्ति के साधन नाम नहीं हैं बल्कि मजदूर वर्ग के संगठन के लिए ही क्रान्ति होगी। मेरी समझ में समग्र इतिहास की मर्म कथा जो कम्युनिस्ट सिद्धान्त को प्राण-स्वरूपा है इन दो शक्तियों में व्यक्त हो

रही है। इसके प्रतिष्ठित हुपासी संस्था की धोर से जो घोषणा-पत्र प्रकाशित किया गया या उसमें बोलीन ऐसे धीरे बाधय भी ये जिनसे साम्यवादी इन्डिक्शन का स्पष्टीकरण होगा है जैसे स्वाधीन भारत के भावी राज्य संविधान में बिना राज्यों (न्यायालयों) की व्यवस्था निरुद्ध की जाएगी। सार्वजनिक मताधिकार होगा। प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोगिता के आदर्श को ग्रहण किया जाएगा क्योंकि इसीमें संसार का कल्याण है प्रतियोगिता में नहीं। इस क्रान्तिकारी दल का म्येव बिठमा राष्ट्रीय है उसने पश्चिम अन्तर्राष्ट्रीय होया और इस हिसाब से यह हम अतीत कास के गौरवमय युग के भारतीय अधिवक्ताओं एवं प्राधुनिक काम के बोसमैविक कस के पक्षों का अनुसरण करेया। इस स्थान पर एक और बात का कहना समार्थनिक न होया। हमारे आश के नवीन आसोक प्राप्त कुछ बन्धुगण प्राचीन गौरवमय युग के भारतीय अधिवक्ताओं के उन्मेष से नाक भीह सिंकोड़ते हैं और कहते हैं कि प्राधुनिक हम के साथ प्राचीन पक्षियों का उन्मेष करना बुद्धि प्रस का परिचय देना है, मानो विश्व प्रीति का आदर्श बोसरोविक कस की ही देन है, मानो प्राचीन भारतीय आदर्श से विश्व प्रीति की कोई बहना ही न थी। पाठकमय स्वयं विचार करेने कि किसे बुद्धि प्रस हुआ है।

पं० अबाहरनामजी का यह कहना कि भारतीय क्रान्तिकारी गण फॉसिस्ट से यह भी निराश्र भ्रमात्मक है। इस स्थान पर हम बात की भी आलोचना करना प्रभावशालक समझता हूँ।

## 13 | अनुशीलन समिति का सहयोग

देहली में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के बाद अनुशीलन समिति के नेतागणों के कहने के अनुसार श्री योगेश चटर्जी मेरे पास बार-बार आते थे और मेरे साथ मिलकर काम करने की प्रवृत्ति इच्छा प्रकट करते थे। अनुशीलन समिति के नेता यह नहीं चाहते थे कि मैं उनसे प्रत्यक्ष होकर काम करूँ। लेकिन वे यह भी नहीं चाहते थे कि बंगाल के अन्तिमारी आन्दोलन में भिरावही स्थान हो जैसा कि पंजाब और कुछ प्रान्त में था। इसपर आहुमोपाल बाबू चाहते थे कि मैं पूर्व रूप से उन लोगों के साथ मिलकर काम करूँ। उस समय श्री महीन्द्रनाथ मुकर्जी श्री गणेश नाथ भट्टाचार्य (जो धातुकल मानवेग्रनाथ राय के नाम से प्रसिद्ध हैं) श्री आहुमोपाल मुकर्जी इत्यादि सब एक साथ मिलकर काम कर रहे थे। इसी समय एक किसान पुस्तक डिप्टी के पास से एक प्रस्ताव आया था कि मैं उनकी कमकत्ते की दूकान का कार्य भार ग्रहण करूँ। आहुमोपाल बाबू भी चाहते थे कि मैं कमकत्ते में रहूँ और मजदूर वर्ग का काम अपने हाथ में ले लूँ। मैंने इन सब प्रस्तावों को स्वीकार भी कर लिया था लेकिन वे किताबबासे प्रान्त में मुझे दूकान का कार्यभार देने से घानाकारी करने लगे। मैंने भी उनके मन की बात समझ ली। उन्हें समझ हो गया था कि मैं राजनैतिक मामलों के सम्पर्क में धाकर उत्तमन में पड़ जाऊँगा। सम्भवतः इसीलिए उन्होंने अपनी कमकत्ते की दूकान का कार्यभार मेरे ऊपर नहीं छोड़ा।

मेरा कमकत्ता जाना तो यह मया। इसके थोड़े ही दिन बाद डाका से मेरे एक पॉपुलर बन्धु श्री मोबिन्ध बग्नर मुझसे मिलने आए। इनके साथ मैं जालेपानी

में रह चुका था। विष्णु के जाग करके समय गोविन्द बाबू को फरार रहना पड़ा था। प्रसन्न में पुनित को गोविन्द बाबू और उनके एक साथी का पता चल गया। उपरान्त पुनित ने इनका मकान घर भिया। इनके लिए सब निजसने का कोई उपाय नहीं रहा। इन्होंने भी अपने घर उठाए और पुनित बाबू पर गोली चलाते हुए निकल गए। पुनित बाबू में भी पीछे से गोली चलाई। गोविन्द बाबू और उनके साथी बुरी तरह से घायल होकर गिर पड़े। लेकिन ईश्वर की कृपा से घायल भी गोविन्द बाबू जीवित हैं। घायल भी उनके शरीर में सीमे की गोली बर्तमान है। और सम्भवतः इस परिवर्तन में और बारम्बार की विशेष बढोतरा के कारण उनकी बेह में कुछ क बिजु दिलाई देने लगे हैं। ऐसे पुराने मित्र में मित्र कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आज ही से मुझे विदित हुआ कि धनुर्गीतन के एक बड़ नेता श्री नैसोस्य साथ अन्यत्र भी मृत्यु हो गए हैं और वे मुझने मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं। मुझे आका से जाने के लिए ही गोविन्द बाबू इसाहावाद प्राप्त था। जाना जाने का खर्च भी मुझे नहीं उठाना पड़ा। मैं भी नैसोस्य बाबू मे मिलने के लिए विमेष इच्छुक था। इसके पहले मैं आका बनी नहीं गया था। जहाँ तक मुझ स्मरण है मैं इसाहावाद से कसबता गया और बहाँ से ग्वास्त घोर घोर ग्वास्त से एहीमर हाउ नारायण गंग पहुँचा फिर नारायणगंग से रेल पर चढ़कर आका पहुँचा। कसबता और ग्वास्त के बीच ट्रेन में एक घटना हुई जिसका उत्प्रेषण करना यहाँ पर प्रशमनिक न होगा। मैं बेंच की एक ओर सेटा था और दूसरी ओर एक अन्य व्यक्ति था। हम दोनों के बीच एक मम्बो-सी पट्टी बनीब डेढ़ हाथ लंबी लगी हुई थी। इस पट्टी के कारण उस बेंच के दो हिस्से हो गए। बच की एक ओर सेटा हुआ मनुष्य दूसरी ओर के व्यक्ति को नहीं बेल सकता था। थोड़ी देर में देखा गया कि पट्टी के ऊपर से एक टॉप और एक हाथ मटक रहा है। यह बात मुझ कुछ अचानक न लगी किसी का जाता किसी के शरीर पर मटके यह किसे अचानक भय सकता है। फिर भी जब तक मेरे शरीर को न छू दे या धूने को न हो तब तक ट्रेन के सफर में मैं किसी को क्या कह सकता हूँ। थोड़ी देर में देखा हूँ कि यह टॉप और भी मटकी और हाथ मेरे सिर पर पड़ा। मुझे बहुत कोच आया। पहले तो मैंने यह समझा कि यह सब मित्रित अवस्था की बेहोशी है और मैंने अपनी टॉप से उसकी टॉप और हाथ से उसका हाथ हटा दिया। लेकिन बार-बार वही दृश्य ही होता नहीं। अपनी बार में उठ बैठा तो देखा कि

एक टिपना-सा बापानी जान-बूझकर यह हरकतें कर रहा था। इस बापानी को देखकर मुझे कुछ कौतुक अनुभव हुआ और कुछ कुछ भी लगा। मैंने सोचा यह बिदेसी है और फिर पश्चिमावासी। इसके साथ मेरा व्यवहार प्रशस्त होगा चाहिए। पास-पास के दूसरे बंगाली यात्री मेरी ही तरह हँस रहे थे और कौतुक अनुभव कर रहे थे। अब मुझे याद नहीं कि वह बापानी घरेली नामका था या नहीं। बहरहाल मैंने उसे सम्मन्त्रा कि रात्रि का समय है तुम भी सो जाओ और मुझे भी सोने दो। तुम बिदेसी हो इसलिए तुम्हारा तिहास कर रहा हूँ। बापानी हँसठा रहा। घेठ जाने के बाद फिर वही बात। बापानी जान-बूझकर मुझे घेड़ रहा था। मेरे शरीर पर जूता सहित टाँग फँसा रहा था और हाथ से मेरा मत्था छू रहा था। मैंने बंगाली सहवासियों से कहा कि देखिए यह बिदेसी होते हुए भी हम से छेड़छाड़ करने में कुछ भी संकुचित नहीं होता। क्या हम भी बिदेस जाकर ऐसा साहस कर सकते हैं। जब भक्तमत्साहत के साथ उसे न सम्मन्त्र पाया तो मैंने भी जैसे के साथ जैसे का व्यवहार किया। मैंने भी अपनी टाँग उसकी टाँग पर और हाथ उसके हाथ पर भड़ा दिया। मैंने भी वही हरकतें करनी शुरू की वैसे कि वह कर रहा था। मैंने भी जब उसका सिर नोकना शुरू किया तब वह घाम्त हो गया। सम्भवतः वह बापानी देखना चाहता था कि हम भारतवासी कितने मिरे हुए हैं। मेरे दिमाग में बापना बनी रही कि कहीं उसे बापान जाकर इस मोर्चे की बुराई करने का मौका न मिले।

और होते हो ग्वांसंद पहुँचि। इसके पहले मैं ग्वांसंद कभी नहीं घाया था। वहाँ भी वृक्ष मैंने देखा ऐसा वृक्ष इसके पहले कभी नहीं देखा था। रेलवे लाइन के लिए जितनी भूमि की आवश्यकता थी उसे छोड़कर आरों विद्याओं में पानी ही पानी दिखाई दिया। मानो एक समुद्र के बीच में घाकर गाड़ी टूट गई हो। वहाँ पर गाड़ी घाकर ठहरी उसके पासपास पानी में बो-बार ओपड़ियाँ इपर-उपर दिखाई दीं। एक टिकटघर है तो दूसरा मालनोचाम का दफ्तर, कहीं पानी अधिक है कहीं कम। पछाई की घीर जैसे प्रत्येक बड़े स्टेसन पर गर्म पूड़ियाँ मिल सकती हैं वैसे बंबास में दो स्टेसनों को छोड़कर घीर कहीं नहीं मिल सकती। लेकिन यहाँ के स्टेसनों पर बगामी मिठाईयाँ मिल जाती हैं। ग्वांसंद में हम सीन स्टीमर पर सवार हुए।

हाला पहुँचकर जिन मकान में घाकर टहरे वही पर जातिघाटी पथ दिलो

इस खेदे से एवं जागी बाट बनाने के लिए माया प्रचार के प्रयत्न कर रहे थे।  
 पुनः इस बात का पता था क्योंकि धनुषीजन समिति के नेताओं के साथ इसने  
 पूरा पक्ष-संघर्ष के बारे में मेरा बहुत-कुछ वाद विवाद हो चुका था। मरा कहना  
 था कि इस देश में रहकर जागी मोट बनाने में हम लोग सफल नहीं हो सकते।  
 दरिद्रों को बनाना ही है तो बिना में जाकर धातुनिर्माण व वैज्ञानिक प्रणालियों द्वारा  
 बनाने की जरूरत होती चाहिए। मैं किसी भी उच्च कार्यक्रम पर पाठो पा। इन  
 दिनों में लोग बमान के काम को देखकर कुछ घाया तो घर-घर उतारने हुई थी  
 उनके साथ मन में कुछ ईर्ष्या का भी उदक हुआ कि कहीं ये लोग जागी न मार ले  
 बल परलु लोग के एक-साथ नमून को देखकर मुझ पर शरोमा न हुआ कि य लोग  
 लोग बनाने में इतना कार्य हो सकते हैं और धन्यता यही बात हुई थी। लोग बन लेकिन  
 काम के नहीं थे।

धनुषीजन समिति के एक विविष्ट नेता थी बलोकय नाथ ब्रह्मचारी स मरी  
 बुर बातचीत हुई। मरी टिकायतों का धोखिय उन्होंने स्वीकार किया एवं यह  
 बात कि अधिक्य में ऐसी टिकायतों का घर-घर पापको नहीं मिलेगा।  
 उनकी बातचीत से मुझ पर सन्तोष हुआ। य बहुत सरल एवं सहज स्वभाव के  
 व्यक्ति हैं और बसा कहते हैं बसा ही करते हैं। प्रणमन म रहते समय जिस  
 चीज के साथ उन्होंने मरा साथ दिया था धनुषीजन के और किसी व्यक्ति ने  
 मरा नहीं दिया। घर में धनुषीजन समिति के साथ मिलकर काम करने को  
 तैयार हो गया।

पर यह ठप हो गया कि मैं धनुषीजन समिति के साथ मिलकर काम करूँगा और  
 हमारे दोनों बलों के मिलने के बाद इसके नियन्त्रण में मुझसे कुछ धिखाया न जाएगा।  
 बलोकय बाबू ने योगे बाबू के लिए मेरे हाथ एक पत्र भेजा था और उसमें यह  
 निम्नलिखित बातें थीं कि तुम धीमी बाबू के नियन्त्रण में काम करोगे। मैं बिट्टी  
 मर भुक्तान्त नापय बता था। योगे बाबू को जब मैंने बिट्टी की तो वे बहुत  
 प्रसन्न हुए। मैं भी एक धनुषी कायकर्ता चाहता था। इसको पाकर मैं भी बहुत  
 प्रसन्न हुआ। इसके बाद उनके व्यवहार में मैंने कभी कोई दोष नहीं पाया। सवा  
 धनुषीचित होकर वे मेरे कमलानुसार काम करने में उत्तर रहते थे। उनके  
 पापन से मैंने यह कभी नहीं समझा कि वे अपने को किसी भिन्न दल का समझते  
 हैं। धनुषीजन के दूसरे नेताओं से मतभेद होने पर भी योगे बाबू मेरे ही मत के



अनुसार काम करते रहे। मैंने भी योगेशबाबू पर विश्वास करके मुक्तप्रान्त का कार्यभार उन पर ही छोड़ दिया था। स्वर्गीय राजेन्द्रनाथ साहिबजी योगेशबाबू से नहीं अधिक चिन्तित थे। योगेशबाबू से मिलने के बहुत पहले से ही राजेन्द्रनाथ मेरे साथ काम कर रहे थे। वह मेरे विषेय मित्र भी थे। तथापि पूर्ण रीति से अनुभवी न होने के कारण मैंने राजेन्द्रनाथ पर कार्यभार ग्यस्त न करके योगेशबाबू पर ग्यस्त करना ही उचित समझा। पंजाब का कार्यभार जयचन्द्रजी पर ग्यस्त था। योगेशबाबू से जयचन्द्रजी का घबरा किसी अन्य व्यक्ति का परिचय मैंने नहीं कराया था। काम करने के सिलसिले में ओ-ओ व्यक्ति पंजाब से मुक्त प्रान्त में आए थे। उन्हींसे योगेशबाबू का परिचय हुआ था। अनुधीन के साथ सम्बन्ध स्थापित होने के बहुत पहले से ही सरदार भगतसिंह मुक्तप्रान्त में आ गए थे। प्रेमचन्दनाथ बाबू से बिछी जाने के बाद मैंने यह निर्णय किया कि योगेशबाबू बनारस छोड़कर कानपुर आकर ठहरें क्योंकि मैं यह समझता था कि बनारस में राजेन्द्र साहिबजी हैं परन्तु कानपुर में मेरी अभिरूचि के अनुसार कोई व्यक्ति न था। इसके पहले ही सरदार भगतसिंह को कानपुर में ठहराया गया था। भगतसिंह भी बड़े योग्य व्यक्ति थे परन्तु अनुभवी न थे। इस प्रकार अब योगेशबाबू एवं सरदार भगतसिंह दोनों व्यक्ति कानपुर में रहने लगे तो ये एक-दूसरे से परिचित हो गए। अभी तक कानपुर में श्री राजकुमार, श्री विजयकुमार तथा श्री बटुकेश्वर हमारे इस में सम्मिलित नहीं हुए थे। श्री सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य भी कानपुर में थे लेकिन सुरेशबाबू अनमने होकर हमारे लक्ष्य का काम कर रहे थे। योगेशबाबू के कानपुर आने पर ढंग से काम होने लगा। मैं था इलाहाबाद में राजेन्द्र साहिबजी थे बनारस में श्री योगेशबाबू कानपुर में आ गए। लखनऊ में हमारा कोई विश्वस्त और कार्यकुशल व्यक्ति न था। इलाहाबाद और कानपुरवाले ही लखनऊ का काम भी संभाल रहे थे। बीरे बीरे मैंने योगेशबाबू से मुक्तप्रान्त के विभिन्न कार्यकर्ताओं का परिचय करा दिया। बनारस में योगेशबाबू के दो-तीन मित्र थे यथा श्री मन्मथ नाथ गुप्त श्री राजीन्द्रनाथ बक्षी श्री प्रणवेश चन्द्र श्री स्वर्गीय चन्द्र दोस्तर पात्राव।

योगेशबाबू के कानपुर आने पर उनके बनारस के मित्रमन राजेन्द्रबाबू के नियन्त्रण में काम करने लगे। मेरी गिरफ्तारी के पूर्व तक योगेशबाबू सरस हृदय से मेरे साथ काम कर रहे थे। मेरे दिल में कभी भी यह खन्हेह नहीं हुआ कि

योगेशबाबू न मुझे कुछ भी दिखाया हो या हमारे दल में किसी प्रकार के भ्रमभाव की सृष्टि की हो। लेकिन उनका बंगाल के धनुषीसनीयों ने स्वयंसेवक रात्रिप्रभास से सफल एवं उचित व्यवहार नहीं किया। इसका पता मुझे बहुत बाद को पता था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब तक हम दोनों निरपज्जर नहीं हुए वे हम लाग एक-दूसरे पर पूर्णतया निर्भर रहते थे। यह भी ध्यान है कि प्राये दिन के कार्यक्रम से योगेशबाबू का यह प्रतीत हो रहा था कि उत्तर भारत में हमारा कार्यक्रम बंगाल के कार्यक्रम से अधिक उपयोगी एवं अधिक उत्तमस्तु था। इतिहास के पृष्ठों में यह बात ध्यान प्रभावित भी हो सकती है कि जागृतकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में उत्तर भारत के दल की जितनी बेत है उसकी तुलना में बंगाल की धनुषीसन समिति की कुछ भी नहीं है। उत्तर भारत के कार्यक्रम से योगेशबाबू इतने प्रभावित हुए थे कि वे बंगाल में जाकर अपने उद्योग से धर्मसंघर्ष करके मुक्तप्राप्त में साते थे। वही तक मुझे स्मरण है बंगाल के नेताओं को इसका पता न था। यदि पता होता तो वे भी अवश्य इसके हिस्सेदार बन जाते। योगेशबाबू के धारण से मैं कभी यह सन्देह नहीं कर पाया कि मैं मुझे किसी अन्य दल का नेता समझने से और अपने को किसी दूसरे दल का धनुषीसनी। बात तो यह भी कि बंगाल में भी धनुषीसन समिति के नेतागण सदा सही बताते थे कि साम्यास भी अपने ही दल का आन्दोलनी है। उत्तर भारत के कार्यक्रम की बहुत-सी बातों में योगेशबाबू को बता दिया करता था जो कि मैंने बंगाल के नेताओं को नहीं बताई थी। इसका एक कारण था कि मैं योगेशबाबू से दिन रात काम ले रहा था इसलिए उन्हें बहुत-सी बातों का बताना आवश्यक हो जाता था। दूसरा कारण यह था कि बंगाल के नेताओं के साथ मिलने का अवसर मुझे कम प्राप्त होता था। तीसरी बात यह भी कि हम लोगों में एक प्रतिरोपिता की भावना गहरी थी। चौथी बात यह भी कि धनुषीसन के नेतागण अपनी सब बातें मुझे नहीं बताते थे। लेकिन बीरे-बीरे हम एक-दूसरे को समझने लगें थे और कम-कम हम लोगों में सहयोग की भावना प्रबल हो रही थी।

मैं चाहता था कि पंजाब-आका की सहायता से कादमीर और काबुल के रास्ते से हम रूस और पश्चिमी यूरोप तक पहुँचें इन रास्तों से अल्प धारि के मंगाने की व्यवस्था करें और विदेशस्थ भारतीय विप्लववाधियों के साथ इन्हीं रास्तों से अपना योगमूत्र स्थापित करें। इस विषय की कोई बात न मैंने योगेशबाबू का बतलाई और न बंगाल के नेताओं को। इसी प्रकार मुक्तप्राप्त के कार्यक्रम के बारे

में भी सब बातें मैंने बंगाल के नेताओं को नहीं बताई थीं। साथ भी वे कार्यक्रम धुर्लक्ष रह गए हैं। इसलिये इन सब बातों का उल्लेख करना भाव्य उचित न होगा। इस स्थान पर तो मैं केवल इतना ही बताना चाहता हूँ कि उन पिछले दिनों मैं योयेराबाबू के साथ मेरा क्या सम्बन्ध था।

मैं यह पहले ही बता चुका हूँ कि दिल्ली से लौटने के बाद मैं बानपुर गया। बानपुर में पहला बोलशेविक कान्फ्रेंस (पद्मग्न) केस चल रहा था। इस पद्मग्न के मामले में मैं भी विरफ्तार होनेवाला था यह भी मैं बता चुका हूँ। बानपुर में बोलशेविक केस चलने के पहले ही युक्तप्रान्त के एक मॉडरेट नेता ने मुझे यह सूचना दे दी थी कि सम्भव है मैं भी इस मामले में विरफ्तार हो जाऊँ। उस समय मैं बड़ी सावधानी से धूमता फिरता था। अब तक मैं युक्तप्रान्त और पंजाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन की नींव डाल चुका था। युक्तप्रान्त के प्रायः सभी बड़े सहरों में हम लोगों का संमेलन हो चुका था। पंजाब में अन्धे कार्यकर्ता मिल चुके थे। युक्तप्रान्त और पंजाब में भी मुझे ऊरीब-ऊरीब फटार हुआत में ही धूमना पड़ता था। मैं यह बहुत चाहता था कि मुझे एक अनुभवी कार्यकर्ता मिल जाय तो मैं अपना धूमना फिरना बन्द कर दूँ। बोगसबाबू के मिलने पर मुझे यह संतोष हो गया कि अब मैं एक स्थान पर निश्चित होकर काम सकता हूँ और उस स्थान से बैठे-बैठे समस्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का नियन्त्रण कर सकता हूँ।

देहली में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के बाद बंगाल में रेवुल्युशन 3 के अन्त में बहुत-से क्रान्तिकारी नेता बेकार होने लगे थे। इनमें पूर्वोक्त भी सत्येन्द्रचन्द्र मित्र एवं भी सुभाषचन्द्र बोस भी थे। मैं इसके पहले से ही कुछ सावधान-सा हो गया था। बंगाल की विरफ्तारियों के बाद मैंने यह निश्चय कर लिया कि अब मुझे बाकायदा फटार होना पड़ेगा नहीं बल्कि बच न सकूँगा।

प्रथम से लौटने के बाद मैंने विवाह कर लिया था। क्या-सीति करार होने के पहले मेरे दो संतानें हो चुकी थीं। मेरे सामने यह विकट प्रश्न था कि मैं अपनी स्त्री और इन दो बच्चों को किसके पास छोड़कर करार होऊँ। हम चार माई के और मैं ही सबसे बड़ा था। मेरे बुढ़ारे ज़ाई भी ब्याह कर चुके थे और गोरखपुर में सैण्टोएग्जुक् कॉलेज में अध्यापक का काम कर रहे थे। बनारस पड़्यन्त केत के मामले में ये भी मेरे साथ बिरफ्तार हुए थे। स्वाभाविक से मुक्त होने पर भी इन्हें गोरखपुर में मजबूरन रहना पड़ा था। मेरे तीसरे भाई ने उस समय तक छाती नहीं की थी। वह इण्डियन प्रेस में काम कर रहे थे। मेरी माता उस समय बीपित थी। मेरी मौसी भी माताजी के पास रहती थी। मेरे सर्व कनिष्ठ भ्राता कावेज में पढ़ रहे थे। मेरे मध्यमे भाई को प्रोफसर के मुम्मेले प्रत्यन्त असंतुष्ट थे। वे बिसकुल भी नहीं चाहते थे कि मैं राजनीतिक उत्तमनों में ध्वर्ष के लिए फँसा रहूँ और फिर मेरी राजनीति भी साधारण राजनीति न थी। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसी राजनीति में फँसा नहीं करते थे। मेरे मंझमे भाई श्री रवीन्द्रनाथ संत कोष के साथ कहा करते थे कि “तुम्हारी बजह से मेरी भी नीकरी बामनी। तुम मानते नहीं हो। क्या हम लोगों की कोई बर्मीबारी है? भाव हमारी और बितैन्त्र की नीकरी बती जाय सो कम मकान का किराया भी न है लकड़े। तुम तो अपनी पुन में मस्त हो। छाती कर भी बास बज्जे हो चुके हैं। तुम्हें तनिक भी बरबाह नहीं है कि इन सबका क्या होपा। सपय-समयपर माताजी भी मेरे ऊपर बहुत भाराव होती थीं। माताजी का भी अधिक दोष न था, बेबारी तीस-बतीस वर्ष की बबस्था।

में ही बिबबा हाथी थी। साधारण मुक्त शक्ति उन्हें कुछ भी न मिली थी। अपनी साईस बर्ग की व्यवस्था में मुझे कामेपानी खाना पड़ा था। भोट घाने के बाद भी मैंने साधारण गृहस्थ जीवन व्यतीत करना नहीं चाहा। माताजी ने घाघा की थी कि घाघी कर लेने से मैं गृहस्थ बन जाऊँगा। माताजी की यह धारणा भी पूरी नहीं हुई। घाघा संघ की पीडा से एक बलिष्ठ की घाघका से मेरी माता सदा दुःखी रहती थी। एक दिन की बात हो दो दिन की बात हो तीन दिन की बात हो तो निराह भी न। लेकिन माताजी याह लीको दिन इस पारिवारिक अस्थिति के बीच जीवन व्यतीत करना कितना दुःखदायी है मुक्तमोनी को छोड़ यह बात दुबरे नहीं समझ सकते। ऐसे परिस्थिति में यदि मैं बच्चों को अपनी माता और माहियों के पास छोड़कर करार हो जाता हूँ तो इन पर मैं एक भारी बोझ डाले जाता हूँ। और इस प्रकार करार होने से यह भी बात थी कि मुझे सदा के लिए अपनी स्त्री तथा बाल बच्चों से विच्छिन्न होना पड़ता। विच्छिन्न देखी के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में यह प्रायः देखा गया है कि करार व्यक्ति भौट फिरकर अपने परिवार में आकर पड़ने गए हैं। जब मैंने विवाह किया था तो मैंने अपने माहियों से यह आग्रह किया था कि मैं क्रांतिकारी आन्दोलन में जीवन बिता दूँगा और आर्थिकता पड़ने पर मेरे परिवार का भार आप लोग ग्रहण करेंगे। उनके लिए मानो बड़ी देण्डा सदा है। मैं अपने जीवन को छतरे में डालने के लिए प्रस्तुत हूँ तो क्या मेरे माई मेरे परिवार का प्रतिपालन भी न करने। मेरे लीसरे माई की जितेन्द्रनाथ सहर्ष यह कर्तव्य भार ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत हुए थे।

जब मुझे योगेधबाहु जैसे कार्यकर्ता मिल गए तो मैंने भी बचारीति करार होने का संकल्प कर लिया। युक्त प्रदेश में मुझे पुलिस वाले मन्त्री दरह स यह जानते थे। पंजाब की पुलिस उठना नहीं पहुँचानती थी। अपनी स्त्री का मुँह देखकर मैंने दिन न यह आशय उत्पन्न होती थी कि पचाई लड़की को मैं नहीं पसंद लाया। इसे छोड़कर यदि मैं सदा के लिए करार हो जाता हूँ तो क्या इसका जीवन व्यय-ना नहीं हो जायगा। अपने लड़के का मुँह देखता था तो यह सोचने लगता कि यह बेचारा भी अपने पितासेह से सदा के लिए बंदि रह जायगा। मैं इस सदा के लिए भी भावना से नितांत विचलित हो जाता था। माता और माहियों के स्नेह, स्त्री और सन्तानों की प्रीति के बन्धन से सदा के लिए विच्छिन्न हो जाना मेरे लिए असहनीय था। और यह बात भी थी कि युक्त प्रदेश व्यवस्था

पंजाब में मेरे लिए बास-बच्चों को साथ लेकर फरार होना न सम्भव था न उचित । इसका एक कारण तो यह था कि इन प्रदेसों में मुझे पुलिस के काफी भावनी बख्शी तरह पहचानते थे और यदि मैं बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर किसी छोटे नगर में जाकर बास-बच्चों सहित रहूँ तो भी बंगाली होने के नाते मैं बहुत शीघ्र ही सबकी दृष्टि को आकर्षित कर भूता । ऐसी दशा में मेरे लिए यह सम्भव न था कि मैं अपने बास-बच्चों को साथ लेकर पंजाब प्रदेस या मुक्त प्रदेस में फरार हासत में रह सकूँ । मैंने यह भी निश्चय कर लिया था कि फरार हासत में मैं अपने बास बच्चों को साथ ही रखूँगा । इन सब कारणों से मैंने बंगाल में ही फरार होकर रहने का निश्चय कर लिया । लेकिन फरार होकर जाम बचाना ही तो मेरा उद्देश्य न था और यदि फरार हासत में रहकर आम्बिकारी आन्दोलन का कार्य करता तो मर्यादीत संगठन शक्ति की सहायता के बिना ऐसा सम्भव न था । यदि मैं फरार हासत में रहकर आम्बिकारी प्रयास राजनैतिक आन्दोलनों से भ्रमण रहता और किसी प्रकार से अपनी जीविका उपार्जन कर लेता तो विशेष शिन्ता की कोई बात न थी । लेकिन एक तरफ ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के समस्त धामन मुझे खोज निकालने में मने हों दूसरी तरफ मैं संकटपूर्ण आम्बिकारी कार्य में मग्न रहूँ तो परिस्थिति कुछ और ही हो जाती है ।

इन सब कारणों से मेरे लिए यह आवश्यक था कि बास-बच्चों को लेकर फरार होने से पहले मैं अपने रहने का स्थान एक आवश्यकतानुसार सहायता पाने की सब व्यवस्था कर लेता । इसके लिए मैंने बंगाल में जाकर सब प्रकार की विधि व्यवस्था का आयोजन किया । मैंने सोचा कि यदि कलकत्ता के पास फाँसीसी राज्य के प्रभुत्वत बन्धनगर में बस जाता हूँ तो सम्भव है मेरे लिए कुछ सहूलियत हो जाय । बन्धनगर के एक कार्यकर्ता से मैंने बातचीत कर ली ये सज्जन प्रगुसीतम समिति के नहीं थे । प्रायः बंगाल के एक साप्ताहिक पत्र 'आत्मशक्ति' के दफ्तर में काम करते थे । आम्बिकारी आन्दोलन के साथ भी इनका सम्पर्क था । यह तो सभी को मालूम है कि बंगाल में विभिन्न दल आम्बिकारी आन्दोलन में काम करते थे । इन सब विभिन्न दलों को एकजित करने के लिए मैंने बहुत प्रयत्न किए थे । इसी विधिधरे में इन सज्जन से मेरा परिचय हुआ था । इनका नाम था श्री परमेश्वर बगर्जी । इन्होंने बड़े जराह के साथ मेरे पत्रगमन में रहने के प्रस्ताव का समर्थन किया । और अपने मकान में रहने के लिए मुझसे विशेष धाराह किया था । इधर

माताजी से मने कहा कि पिताजी के छोड़ हुए बन से मुझे एक या दो हजार रुपया दे दें ताकि कुछ दिनों के लिए मैं निर्विघ्न हो जाऊँ। माताजी ने कहा कि यह रुपये लेकर तुम बरबाद कर लोगे मैं तुम्हें माहवार कुछ देती रहूँगी। मैंने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और कहा कि उन्हें मुझसे कम से कम पच्चीस रुपया प्रति मास भेजना पड़ेगा। माताजी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। लेकिन केवल पच्चीस रुपये में बास-बच्चों को साथ लेकर फरार हासल में रहना बहुत कठिन बात थी। और आर्थिक दल की आर्थिक सहायता पर पूर्ण रूप से निर्भर करना भी बहुत कठिन बात थी। ऐसी अनिश्चयात्मक स्थिति में मैं अपने परिवार को लेकर अपना समूह में कूद पड़ा।

मैं पच्चीस तरह बातों का कि घाब हो या कस हो मुझे बरबार छोड़ना ही पड़ेगा। फरार होने का अर्थ होता है आरम्भिक लोगों से एक अनिश्चित समय के लिए बिछड़ना हो जाना एवं अन्ततः पुलिस के पंखे में पड़कर न जाने किस अनजान पातालपुरी में जाकर खो जाना। इस घासमन बिच्छेद की भावना से मैं दिन प्रति दिन अधिक से अधिक बिचलित होता गया। हम सब भाइयों में अत्यन्त प्रीति का सम्बन्ध था। मुझे स्मरण है जब मैं लयभन पार या पाँच बच का था तो मेरे मँझले भाई के गाल में एक फोड़ा हुआ था जिसके पीछे जाने की बात सुनकर मैं एकदम बचल हो उठा था और अपने माता-पिता से मैंने कहा था कि मैं इसे कभी नहीं पीरने दूँगा। मुझ यह भी स्मरण है कि मेरी माता ने मुझे यह कहकर बहुत समझाया कि तुम्हारे एक और भाई कमकता में पड़त हैं जिन्हें पीर-पड़ का काम करना पड़ता है यह तो एक साधारण बात है इसके लिए तुम्हें इतना व्याकुल होने की आवश्यकता नहीं। एक दिन की बात है कि मेरे पिता के एक मित्र ने मेरे कनिष्ठ भ्राता को बोह में उठा लिया था। इससे हम लोग परिचित न थे इसलिए मेरे मँझले भ्राता ने बिस्माना मुक कर दिया और अपने नहे-नहे हाथ फँसाकर अपने कनिष्ठ भ्राता को उगड़ी बोह से उतारने की व्यवस्था करने लगे। वास्तव में वास्तव की वह प्रीति आज वालीस बच के बाद भी वही ही बनी है। और दुश्मनों के समय जब मैं असहाय बच में ब्रिटिश सरकार के कारागार में निर्बल कोठरी में अनिश्चित काल के लिए बन्द पड़ा रहा तब मेरे इन परम स्नेहात्मकों ने ही मेरे बास बच्चों का विपाद-मुक्त हृदय के साथ आलन-पालन किया था। एक-दो दिन के लिए तो सभी दुःख भोग सकते हैं लेकिन लगातार बारह-तेरह वर्ष तक अपने

पशुपति आता के दुःख ईश्वर अपने कंध पर उठाने के दुष्टान्त आश्रम मंसार में बिरसे ही है। ऐसे माइयों से सदा के लिए बिछुड़ने की बुद्धिमत्ता से मैं बिचलित नहीं न होता। और अपनी स्नेह-मयी जननी की बात या क्या कहना। किसकी जननी स्नेहमयी नहीं होती? और किस मतम को अपनी जननी से प्रेम नहीं होता? सत्य के लिए ऐसी माँ और माइयों से प्रेम होने की संभावना से मैं सदा खुशी खाता था। अंत में घर से प्रसन्न होना ही पड़ेगा यह मैं जामता या सम्राट स्नेह बन्धन के कारण मैं उस प्रसन्न होने के दिन को सदा टासता रहता था। मैं नित्य यह सोचता था कि जब प्रसन्न होना पड़ेगा और फिर प्रसन्न होने के दिन को मैं टास देता था। अपने बाल-बच्चों को तो मैंने साथ लेने का संकल्प कर ही लिया था लेकिन अपनी बुद्धिनी बिधवा जननी को मैं किस प्रकार छोड़ जाता। यदि मैं इन स्नेह बन्धनों को नहीं तोड़ सकता हूँ तो मुझे राजनीति से प्रसन्न होना पड़ता है।

माताजी के चार पुत्र थे। उनमें से एक जमा बापया। तीन तो माताजी के पास रह जायेंगे। मुझे इतना ही संतोष रह गया था। एक दिन की बात है माताजी प्रयाग में धर्मकुंजी के अवसर पर कल्पवास कर रही थीं। गंगा के तट पर साधु-संतों का जलजट था। नाम धर्ममन्त्र, अर्चन सुशोभित तरह-तरह के वस्त्र पहने और, स्थाप आदि सभी वर्ग के उच्च कोटि, मध्य कोटि प्रथम निम्नस्तर के नाम प्रकार के सहस्रों साधुओं के दर्शन के लिए जिज्ञासु प्रथम कौतूहली संकड़ों व्यक्ति प्रातःकाल में संख्या तक वहाँ प्रयाग करते थे। मैं भी इन मदकटै हुए व्यक्तियों में से एक था। माताजी भी स्वतंत्र रूप से अपनी टोपी के साथ साधु-संतों का दर्शन करती थीं। एक गौरवमयी सौम्य भूति सम्पादी के पास मैं शान्त बसा करता था। कुछ न कहने पर भी मेरे मन के प्रश्न को योंही समझकर इन महात्माजी ने मुझे बहुत-सी बातें बताईं। उनका उत्प्रेषण करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। योग की शक्ति पर जिसका विश्वास नहीं है इन सम्पादीजी के पास जाने से उनके संदेह का अन्त हो सकता है। क्योंकि यह साधु प्रमी भी धर्मव्रत है। इनका नाम है परमार्थ श्रीमन्स्वामी अयेम्पूरीजी। आजकल प्रायः नाराज के पास सिद्धपुर में अपने आश्रम में रहते हैं। मेरी माताजी भी मेरे पहले ही इन महात्माजी के पास पहुँची थीं और उनसे सन्तुष्टि अपना खुद का सुनाया था कि मेरा महका निषिद्ध मार्ग पर चलकर देस सेवा करना चाहता है इबार कहती



हूँ वह मानता ही नहीं। जाने क्या धुम संचार है। एक बार बाब्रम्म कातेपानी की सजा हो गई थी लेकिन परमात्मा की कृपा से बार-बार साल में ही छुटकारा मिल गया था। फिर वही काम करना चाहता है। मैंने उसे किसी तरह भी समझ नहीं पाया। भाप महारमा है यदि भाप दो सप्ताह बहुत बग तो लड़का भवस्य ही मान जायगा। मैं बहुत खुशी हूँ एक बच्चे के लिए भी मेरे मन में घामि नहीं है। मैं बिधवा हूँ मेरा लड़का ही मेरा सहारा है। वह सब बातें सुनकर संन्यासीजी ने माताजी से कहा कि तुम अपने लड़के को मेरे पास लेती जाना। माताजी जामती थी कि मैं भी साधु-संतों के पास पाया-जाया करता हूँ। साधु-संतों से मेरी परवश प्रीति है। एक दिन माताजी ने मुझसे कहा कि जबो तुम्हें एक पड़ोस हुए महारमा के पास ले जसती हूँ। मैं भी बड़ी उत्सुकता के साथ साधु-संतों के लिए पल पड़ा तो देखता हूँ कि जिस महारमा के पास मैं जाया करता था उसीके पास माताजी भी मुझसे आई। इनके पास आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरे साथ मेरी माता मेरी पत्नी और मेरा बड़ा साल का लड़का था। माता ने मेरी तरफ इशारा करने के बाद कहा कि 'यही मेरे पुत्र है जिनके सम्बन्ध में आपसे पहले कह चुकी हूँ। महारमाजी ने माताजी को बताया कि वह तो मेरे पास पहले ही संभाता है। और मुझसे कहा आपो पास बैठो। कुछ बातचीत होने पर संन्यासीजी ने माताजी से कहा कि 'बेटी! तुम्हारे जब बार लड़के हैं तब तो मुम्हें एक लड़के को बर्माई देना ही पड़ेगा। बार में से जब तीन तुम्हारे पास रहते हैं और एक बर्माई जीवन म्यतीत करना चाहता है तो उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं रह सकता। माताजी के दोनो नयन आँसुओं से भर आए लेकिन माताजी फिर भी हँस रही थी क्योंकि वे अच्छी तरह जानती थी कि मेरा सारा बर्माई का मार्ग था। मैं कोई बुरा काम करने नहीं जा रहा था। माताजी तो स्नेह की पीड़ा से बर्जित हो रही थी फिर भी उनकी बम की मुठि जामुत थी। एक चिह्निष्ट साधु के मुख से उपर्युक्त बचनों को सुनकर मेरी माताजी को सुपण्ड बुद्ध स्नेह और श्रद्धा की भावनाओं के समिपण ने एक साथ हर्ष और विषाद की अनुभूति हुई। अप्रपुत्र नयनों से मेरी तरफ देखकर जब माताजी हँसने लगी तो मैं भी हर्षोत्प्लुत नयनों से विषयोस्तास को राजिक अनुभूति की दीप्ति से व्यक्त कर रहा था और सीम्य मूर्ति औरवच सक्त महापुरुष की तरफ देखकर विस्मय पूरा चकित दृष्टि से कृतज्ञता एवं धर्म समर्पण की भावना को बीमता के साथ व्यक्त कर रहा था। इतने में संन्यासीजी

मुझसे यह कहने लगे कि देखा बेटा ! हिन्दू शास्त्र के अनुसार तुम्हारा यह वरम कष्टमय है कि जब तुमने विवाह कर लिया है तो अपनी पत्नी की अनुमति की उपेक्षा करके तुम कोई भी काम नहीं कर सकते । ' यह बात मैं पहले ही से जानता था । मैं यह जानता था कि धर्म धर्म के अनुसार यदि कोई सम्प्राप्ति भी होना चाहता है तो उस न केवल अपने माता-पिता की वरन अपनी सहधर्मिणी और दूसरे पारिवीय लोगों तथा प्रतिबेधियों से भी अनुमति लेने की आवश्यकता है । इस पर मैंने महात्माजी से कहा कि 'जिस दिन सर्वप्रथम मुझे अपनी पत्नी से बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ था मैंने उसी दिन अपनी सहधर्मिणी से अपना सभी कार्य करने की अनुमति ले ली थी । मैं आज भी इस बात के लिए प्रस्तुत हूँ कि यदि मेरी पत्नी मेरे सभी कार्य के लिए मुझे अनुमति नहीं देती है तो मैं उस काम को नहीं करूँगा । आप भी पूछ सकते हैं । स्वामीजी ने मेरी पत्नी से पूछा 'क्यों देती, तुम अपने पति को इस काम के लिए अनुमति देती हो ।' उस बेचारी लड़की ने कम्पायमान बेहावबब के इशित से विकसित कुसुम की नाई हँसते हुए मुझ को हिलाकर अपनी अनुमति प्रकट की लेकिन नवन पस्त्रों के द्रुत संघासन के साथ भाँसों से बो-बार भाँसुओं की बूँद टपक ही पड़ी । बासबहापारी परमहंस परिहासक सम्प्राप्ति भी एक बार विचलित हो गए और बार-बार छिर हिलाकर हँसते हुए मुझसे कहने लगे 'नहीं बेटा ! यह लड़की अभी बहुत छोटी है । रोठे हुए जो अनुमति दसने दी है यह स्वीकृत नहीं है ।' मैंने कहा कि मैं फिर पूछ लूँगा और यह बचन देता हूँ कि यदि दसने बचाने में अनुमति नहीं दी तो मैं इस काम को नहीं करूँगा ।

अतीत काल की वे सब बातें निखरते हुए आज भी मेरा हृदय हर्ष अधिमान और युमान से भर जाता है । आज भी हमारे देश में ऐसे साधु-सन्त हैं जिन्हें मेरे ऐसे बिरोधी के प्रतिमम कर्म-वचन से आन्तरिक प्रीति है । और हम अपनी सामाजिक व्यवस्था की निम्न बातों के प्रति ध्यान देने से आज भी फूस नहीं समाते । कर्ममय काम चाहे किता हो सकटपुष्प और अन्तिमार्थ क्यों न हो हमारे समाज के चीन्हेस्थानीय सम्प्राप्ति आज भी सबसे निचलित नहीं होते और मेरे ऐसे बिरोधियों के कठोर कायों का वे हृदय से समर्पण करते थे । फिर पत्नी का स्थान हमारे समाज में किता अँधा है । पत्नी की अनुमति बिना कोई काम करना उचित नहीं है । पत्नी हमारे भोक्त की सामग्री नहीं है सहधर्मिणी है सहधर्मिणी को छोड़कर

हिन्दू समाज में धर्म श्रद्धाति में मनुष्य मग्न रह जाता है। पत्नी को पाकर ही समाज में मनुष्य स्वयंमनुष्ठान के अधिकार को प्राप्त करता है अन्यथा नहीं। हिन्दू समाज में पत्नी को छोड़कर कोई धर्म कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। जिस समाज में बिना पत्नी की अनुमति पति को संन्यास लेने का भी अधिकार नहीं उस समाज में स्त्री का स्थान कितना ऊँचा होता आवश्यक है इसे ध्यान में रखते हैं। धर्म पारिवार्य समाज में स्त्री-अधिकार के प्रश्न पर कितना धोरणुम मना हुआ है मानो स्त्री के अधिकार पुरुष से एक पुरुष के अधिकार स्त्री से स्वतन्त्र हैं। हमारे सामाजिक धादध में पुरुष और स्त्री के मिलने से ही पति-पत्नी के रूप में एक परिवार के रूप में एक परिपूर्ण स्वतन्त्र अस्तित्व बनता है। इसीलिए हमारे समाज में पुरुष और स्त्री के अधिकार असंग-असम नहीं होते। कामरेड धर्म से भी सहकर्मिणी धर्म अधिक व्यापक एवं सर्वगणित है। सहकर्मिणी धर्म के अनुसार नरे काम में स्त्री पति की साधिन नहीं हो सकती कामरेड धर्म के अनुसार हो सकती है। हिन्दू समाज में माता-पुत्र के सम्बन्ध पारिवार्य समाज से अधिक बनिष्ठ हैं। पारिवार्य समाज में विवाह के बाद नरका असंग रहने लगता है। हिन्दू समाज में पिता माता भाई, बहिनी पत्नी और सन्तान एक साथ ही मिलकर रहते हैं और इस प्रकार से जो परिवार बनता है हिन्दू समाज में नही इकाई का स्थान ग्रहण करता है। हिन्दू समाज में पुरुष और स्त्री के लिए अलग अलग रूप से उनके स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया है। इस स्थान पर समाज विज्ञान को बर्णन करने की न तो इच्छा ही है और न स्थान ही। प्रतीत काल की एक मनुष्यम स्मृति का उल्लेख करते समय जो बातें अनिवार्य रूप से समझ पड़ीं उन्हें ध्यान दिए बिना मैं रह नहीं सका। इस बात के लिए पाठकमण मुझे क्षमा करेंगे।

सन् 1921 के करवरी माह में प्रयाग में कुम्भ का मेला हुआ था। मैं जून महीने में इलाहाबाद से करार हुआ था। इस समय मेरे मकान में मेरे सब निकट भारतीय उपस्थित थे। मेरे मामा ने मेरी मौसी मौसी की एक पामित बच्चा मेरे तीनों भाई मेरे भैया भाई की पत्नी तथा मेरी पत्नी। कालेज में छुट्टी रहने के कारण नरे भैया भाई की स्त्रीमण्डल सपरिवार इलाहाबाद आये हुए थे। जब हम सब भाई एकत्र होते थे तो पहला सप्ताह और बाद-विवाह में व्यतीत होता था। भोजन के लिए माताजी बिस्माया करती थीं और रूप बाद-विवाह में मस्त रहते थे। सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं की भीमंसा किए बिना जाने

कोन था। मेरे मेधने भाई रवीन्द्रनाथ सामाजिक विषयों में घोर परिचयन के पत्रापी व घोर में प्राचीन प्रथाओं का समर्थन था। रवीन्द्रनाथ चाहते थे कि पुरुष और स्त्रियों के प्रभाव मिसन में कोई बाधा न रहे। मैं ऐसे प्रभाव मिसन का घोर विरोधी था घोर सब भी हूँ। रवीन्द्रनाथ पुरुष-स्त्री के एक साथ मिला जाने के पक्ष में थे घोर मैं इसे कभी भी समझ नहीं करता। परन्तु मझे की बात यह थी कि राजनीतिक क्षेत्र में मैं घोर विपक्ष का पत्रापी था घोर रवीन्द्रनाथ सुधार के। ऐसी दशा में आपस में घोर द्वन्द्व क्यों न हो? एक सप्ताह के घोर द्वन्द्व के बाद हम एक-दूसरे की उपेक्षा करने लगते समझ लते थे कि इसने हमारे बहने से नाद-विवाद प्रारम्भ हो जाएगा। लेकिन दूसरे वय जब हम मोग फिर मिसते तो नाद-विवाद पुनः प्रारम्भ हो जाता घोर एक सप्ताह के पूर्व घान्ति स्थापित नहीं होनी थी। बाद विवाद के समय वकील के आदमी समझते थे कि हम आपस में मड़ रहे हैं।

रवीन्द्रनाथ जानते थे कि मैं निषिद्ध मार्ग पर संकटपूर्ण रास्ते से राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश हो रहा था। एक दिन रवीन्द्रनाथ से फिर वही पुरानी बहस शुरू हो गई। एक बड़ कमरे में हम पाँच व्यक्ति उपस्थित थे। रवीन्द्रनाथ को छोड़कर मेरे मामा घोर मेरी माताजी भी बहस में भाग ले रही थीं। मेरी पानी कुछ दूरी पर बैठी हुई हम लोगों की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी। जैसा हमारा करता है बातचीत में ही धुक् हुई घोर धीरे-धीरे चलने गम्भीर रूप धारण कर लिया। मेरी माताजी एक पढ़ी लिखी घोर समझदार स्त्री थीं। राजनीतिक घोर सामाजिक बाटों में भी उनके विचार बहुत स्वच्छ एवं निर्भीक थे। माताजी से स्नेहावरण के कारण बहस नहीं छिपती थी। रवीन्द्रनाथ ने मसिप इतिहास में एम० ए० पास किया था तथापि राजनीतिक मामलों में उनके विचार माताजी की भाई स्वच्छ एवं निष्पक्ष नहीं थे। रवीन्द्रनाथ स्नेहाबोध में घाबर सत्य की मर्यादा का उल्लंघन करते थे। मेरे मामाजी भी परम स्नेहावश रवीन्द्रनाथ के ही पक्ष का समर्थन कर रहे थे। मेरी माताजी मामाजी एवं रवीन्द्रनाथ मुझे विद्रोही के कठोर प्रथिममय विनाशकारी मार्ग में जाने से रोकते थे। लेकिन विचार की दुरचार के सामने रवीन्द्रनाथ घाबि नहीं टिक पाते थे। तथापि विचार-बुद्धि ही तो मनुष्य का सब कुछ नहीं है। संसार में विचारपूक ही सब काम नहीं होते। मनुष्यों की भावना, उनके पूर्व संस्कार उनकी शिक्षा-बीक्षा उनके परिदृष्टन इत्यादि इन सबक मिसने

ने मनुष्यों की कर्म प्रेरणा बनती है। मैंने जो बिरोही का मार्ग ग्रहण किया था वह भी तो केवल विचार बुद्धि ही की प्रेरणा से नहीं किया था। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अभिवृत्ति या अभिसारा बनती है और तब विचार बुद्धि की सहायता से उस अभिवृत्ति उस अभिसारा का हम समर्थन करते हैं। विचार बुद्धि हमारा बन्धु मात्र है। यह यन्त्र किस काम में लाया जाएगा इसका निर्णय युक्ति मार्ग से नहीं हो सकता। अपनी-अपनी प्रवृत्ति के अनुसार हम अपने कर्तव्य का निश्चय करते हैं। यह प्रवृत्ति कहीं से घाती है और कहीं से घाती है हमका निरक्षरपारमर्श निर्णय मात्र तब नहीं हो पाया है। यथिवातावरण के ही कारण प्रवृत्ति की उत्पत्ति होती है तो वातावरण की सृष्टि और उसमें परिवर्तन कैसे और क्यों होता है इसका निर्णय कौन करेगा? वातावरण के बिना आकर भी तो यथिवातासी व्यक्तियों ने परिस्थितियों को बदल दिया है। टॉलस्टाय के दृष्टान्त का अनुसरण करके महारमाजी ने भारत के राजनीतिक वातावरण को बहुत कुछ बदल दिया है। महारमाजी ने कम के निहितार्थ प्रचारित करके सोवियतों के दृष्टान्तों का अनुसरण न करके टॉलस्टाय के ही दृष्टान्त का अनुसरण क्यों किया? भारत के तथा संसार के नास्तिकारियों के दृष्टान्त रहते हुए भी व जवाहरलालजी ने उनका अनुसरण न करके महारमाजी का ही अनुसरण क्यों किया? इसका उत्तर कौन देगा? क्या इसके मूल में व्यक्तिगत शक्ति-अभिवृत्ति राव-श्रेष्ठ परिणाम की भावना और कुर्मावना इत्यादि के संस्कार प्रबल रूप में सक्रिय नहीं हैं? एक ही वातावरण में रहते हुए भारत के कम्युनिस्ट सोशलिस्ट, मांजीवाणीयन मुस्लिम लीगी हिन्दू महासभा वाले और नास्तिकारी काँग्रेसी तथा अन्य भारतवासी इनने विभिन्न मार्गों पर क्यों चलना चाहते हैं। इन सब गूढ़ ऐतिहासिक प्रश्नों की भीमामा सहज नहीं है।

क्या मेरे माई रबीग्रनाथ नहीं जानते थे कि मैंने कुछ दृष्टान्त से घातित सबभाग्य बिरोहियों के ऐतिहासिक मार्ग को ग्रहण किया था? सक्रिय जिस घातित निष्ठ घातित के साथ रबीग्रनाथ मेरे साथ तर्क-वितर्क कर रहे थे उससे यह संदेह होता था कि सबकुछ रबीग्रनाथ जी मेरे रास्ते को ठीक नहीं समझ रहे थे। इस बात-विचार में जमा भी समय आया जब प्रत्येक सप्ताह हो गया कि मैं जो करने आ रहा हूँ वह उचित है या अनुचित। रबीग्रनाथ के बताने पर कि मैं अनुचित मार्ग पर जा रहा हूँ मैंने माताजी से पूछा क्यों माताजी क्या तुम भी ऐसा ही समझती

हो।" माताजी ने मृदु मृदु हँसते हुए यह कहा कि 'मैं भी ऐसा नहीं समझती हूँ। मैं यह नहीं कह सकती कि तुम गलत रास्ते पर जा रहे हो। मैं केवल इतना ही कहना जानती हूँ कि सब मुझसे सहा नहीं जाता। आज भी मेरे सामने वह दुःख मयानर प्रातः की सृष्टि करता है जो कि मजदूरों ने धाकर तुम्हारी पहली गिरफ्तारी कर दिया था। कपड़ों का कूट तुम्हारे गले में लिपटा है हथकड़ी से दोनों हाथ बँधे हुए हैं एक बस्त्र लेकर जाने की हवासात को तुम जा रहे हो। यह मृदु 1916 की बात थी। राजनैतिक पदव्यवस्था के मामले में यह मेरी पहली गिरफ्तारी थी। उस दुःख का वर्णन करते करते माताजी का मुख मूछावधव ऐसा गम्भीर और कोमल हो गया जैसे बचपनो-मुख बन बिगुल बाधन होते हैं। धनी ठग हमारी बातचीत में कुछ उम्मा थी कुछ हान उपहास कुछ व्यंग्य कुछ छेड़ छाप थी। सब सबके चेहरों पर कुछ सम्मोहितता या गर्ह। माताजी ने मेरा नाम लेकर फिर पूछा "क्या तुम्हें डर नहीं मामूम होना ? क्या बकासेपानी के दुस्म तुम्हें याद नहीं आता ?" मैंने मरमतापूर्वक कहा 'माताजी ! मृदु आज भी वे दुःख स्पष्ट और मरान्तिक रूप में याद हैं। उनमें मैं बिचलित भी हो जाता हूँ डर भी मामूम होता है। जैम का भोजन जैम अधिकारियों के तिरछे और निष्ठुर व्यवहार व सब बातें स्मरण आते ही रोम छूट हो जाते हैं। और जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूँ उसका अन्तिम परिणाम मेरे लिए कुछ अच्छा नहीं है यह भी माय है। परन्तु वह सब जानते हुए भी मैं कर्तव्य-यत्न से कैसे हट जाऊँ ? यदि भारत को स्वाधीन होता है तो मेरे ऐसे छत-सहस्र यवकों को ऐसे निमग्न निर्वासन सहने ही पड़ेंगे। जिस रास्ते पर मैं जा रहा हूँ केवल इन्ही रास्ते में ही भारत स्वाधीन हो हो सकता है और दूसरा रास्ता नहीं है।

मेरी इस बात ने और माताजी के हार्दिक व्यथापूर्ण सीन समर्पण ने बिबाध का प्रत्यक्ष कर दिया। माताजी की बात ने मातों हम सब आदमियों के मन को छत और दागा। ब्रिटिश जो पहले ही मणिमोति साज हो चुका हो तबे ब्रुथ की नक़्क़ोरने ने जैम उसके पत्तों से एकदम बूँदों की बौछार होने लगती है जैसे ही हम जाते हैं नमनों से नीर की बौछार होने लगी। रोते-आते धनुर्गे उच्चारण से मैंने कहा कि मेरे निरुस जाने की सब तैयारी हो चुकी है। मैं अब बूमा काम घेर न करके निकल पड़ूंगा। उस समय यह नहीं मामूम पड़ता था कि कौन किसे आत्मना दे। भटेमर की लक्ष्मता बाधाकार में परिणत हो गई। सम्भवतः एवं

अचर्ननीय स्नेह ने घासुघों का रूप ग्रहण कर लिया। मामों हम परस्पर के घोर निकटवर्ती हो गए। पता नहीं मेरी तरफ़ी भार्या पर क्या बीत रही थी। गोर में बच्चों को सिये हुए बेचारी सर्वक्षण एकाग्र चित्त होकर बैठी हमारी बातें सुन रही थी। पता नहीं अपने माय्य को कोसती थी या सराहती थी। अथवा अनिश्चित विषय की घासका से भय-विह्वल हो रही थी। सात घन्टात निश्चित-अनिश्चित मार्ग पर अनन्त दिशा की घोर पुनः कलत्रादि को घायलते हुए असहाय संपन्न होकर अक्ष पड़ने का दिन आ गया। न जाने किस बेस मे किस स्थिति में रहना पड़ेगा। कहा बात है 'परे नारी विवर्जिता' और मैंने वो नन्हे-नन्हे बच्चों और तरफ़ी भार्या को साथ लेकर ब्रिटिश घासन के निकट विद्रोह करन के लिए फटार होने का साहस किया। अज्ञात दिशा में जाना या इसलिये मौसी की पालित कन्या से प्रार्थना की कि वोड़े दिनों के लिए तो घाय मेरे साथ हो लीजिए। घर के सब लोगों ने इस बात को स्वीकार कर लिया। गूदू बीबी मेरे साथ चलने को तैयार हो गई।

पुलिस की दृष्टि से बचना था। बास-बच्चे असहाय बिस्तरे लेकर पुलिस की निगाह बचाकर रेलवे स्टेशन से चमना है। स्टेशन पर पुलिस की सख्त निगरानी है। इलाहाबाद में पुलिस मुझसे क्या घोर किस पहचानती थी ?

मेरे भाई मेरे बच्चों को लेकर स्टेशन के लिए रवाना होने लगे। मैं उस समय घर में था। माताजी की सहन-शक्ति अन्तिम सीमा तक आ पहुँची थी। ब्रिटिश रोटी थी उससे कही अधिक उमरी वेह दुःसाधन में हिंस रही थी। घोंठ काँप रहे थे ठोड़ी संकुचित विकुचित हो रही थी। बीहे कुचित थीं माँसु अचिराम टपक रहे थे। द्वार तक आकर जब माताजी मेरे बच्चे को लेकर गाड़ी पर चढ़ने लगीं तो वह बहुत रोने लगीं। मेरा वो साध का बच्चा झुक झुककर बार-बार माताजी का मूँह देख रहा था। बुद्धि के महाभित्तिप्रमन के समय ऐसा दृश्य देखना नहीं पड़ा था।

मैं सीधा स्टेशन नहीं गया। मेरे मामाजी और आताओं ने मेरे बास-बच्चों को गाड़ी पर सवार करा दिया। गाड़ी छूटने के समय से एक-घास मिनट पहले किसी बुद्धि रास्ते से मैं अपने बास-बच्चों में घाकर सम्मिलित हो गया। जहाँ तक याद है वह दिन के करीब दस बजे का समय था।

प्रिय जन के विच्छेद के दुःख के अतिरिक्त मेरे मन में और कोई प्मानि नहीं थी। फटार जीवन मेरे लिए दुस्तहनीय न था। बहनों ने मुझ से कहा है कि फटार

जीवन की अनिश्चयता ने उन पर इतना अधिक बोझ डाला था कि उससे बिसरकर उन्होंने संत में पुनिस के हाथों में आत्मसमर्पण कर दिया था। मैंने बन्नी भी ऐसे बोझ का अनुभव नहीं किया। जब यात्री पर सवार हो गया तो मैंने एक धनुष स्तूति का अनुभव किया। पुनिस के सब प्रयत्नों को विफल करते हुए जब उनकी प्राँतों में बूझ भोंक दी तो मैंने एक छोटी-सी विजय की आत्म-स्तुति का अनुभव किया। पाठक यह न समझें कि पुनिसवालों के साथ हम लोगों का यह निरा धाँद मित्राणी का खेल था। पकड़े जाने पर हम लोगों को जीवन से हाथ धोना पड़ता था। बेगवासी घाज भी अम्तिकारियों के कार्यों को घिसबाड़ समझते हैं। लेकिन ब्रिटिश सरकार की दृष्टि से हम लोगों के कार्यों का इतना गुदरन था कि हम लोगों को पीछे सरकार ने साँतों रूप खर्च कर दिए। केवल संवेहमात्र से ही किसी घमात दुसरीन दुबक का पीछा करने में सरकार ने हजार रूप खर्च कर दिए ऐसे दृष्टान्त बहुत हैं। अम्तिकारियों की सबसे बड़ी कमी यह थी कि वे अपने प्रयत्नों में असफल रहे नहीं तो घाज उनके सिद्धान्तेपीमन सज्जाबान्त मुक्त होकर मीरब बन रहते। घाज भी हमारे बेसवासी स्वतन्त्रता के प्रेमी नहीं बने हैं। घाज भी उनमें वह तीव्र प्रमितापा उत्पन्न नहीं हुई है जिसके कारण भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के लिए वे प्रवीर हो जाते। अस्तु मैं असन्तुष्ट होकर पुनर्मनीय प्रमितापा के साथ विवाहीन होकर, विप्लव कार्य में भागे बत बना।



मिर्जापुर पहुँचकर मैंने बगलनगर में भी नरेन्द्रनाथ बनर्जी के पास एक ठार भेज दिया। मेरे माने की सूचना उनको भी। केवल इतना ही वे नहीं जानते थे कि कब और किस दिन मैं उनके पास पहुँचूँगा। यदि मैं इलाहाबाद से ठार भेजता तो संभव था कि पुलिस की दृष्टि आकर्षित हो जाती। मिर्जापुर स्टेशन से यदि कोई पब्लिक ठार करे तो पुलिस की दृष्टि आकर्षित होने की सबसे कम संभावना थी। लेकिन 'बहाँ कबीर माठा का जाएँ' पड़िया भेज दोनों पर जाएँ' मैंने सोचा था कुछ हो गया कुछ धीर। जोय भाम्य को मानते नहीं। परन्तु यह बहुधा देखा गया है कि हजारों प्रयास करने पर भी किसी मनुष्य के लिए कभी भी सरल रूप में घुम परिणाम नहीं निकलते। मैं उन धमियों में से एक था और अब भी मेरे दृष्टि में कुछ समझ हुआ है ऐसा नहीं मानूँ पक्का। रास्ते में तो कोई बिपत्ति नहीं आई। लेकिन बगलनगर पहुँचकर मेरी विहम्बना की सीमा न थी। मेरा टिकट तो कलकत्ते तक का था। इसका भी कुछ ख़ुश था। बगलनगर में हमारी पाकी बहुत बौड़ी बेर लकी। मेरे पास सामान जपेट था। बगलनगर के स्टेशन पर मैं बहुत उद्विग्न होकर देख रहा था कि नरेन्द्रनाथ आएँ हैं या नहीं। नरेन्द्रनाथ को स्टेशन पर न देखकर मेरी उत्कण्ठा की सीमा न रही। परन्तु मुझे उतरना तो था ही। सहपाथियों की सहायता से मैंने अपना सामान उतार लिया और जेटकारों पर सहाय की तरह इधर उधर देखता घोर सोचता रहा कि किसका सहारा लूँ। बर-बार छोड़कर आया हूँ रहने का ठिकाना नहीं। नरेन्द्रनाथजी का पता नहीं। रहने के पहाँ ठहरे की बात थी। पहले से तय था रहने के मकान पर ठहरेगा

घोर सहायता के रूप में मासिक कुछ दे दिया करेगा। इनका मकान मैंने पहले से देखा लिया था। कृतिमों से सामान उठवा रहा था घोर संबैहानुस भयनों से शर उबर ठाक रहा था। मन में मय का कहीं पुनिसवालों की दृष्टि मेरी घोर धातु-बिड न हो जाय। इतने में स्टेयन से सब मात्री चले गए वे केवल दो-तीन व्यक्ति किसी के इन्तबार में प्लेटफार्मे पर ठहर गए थे। यह मेरी तरफ था। मैं भी उनकी तरफ धाये बढ़ा। उन्होंने पूछा आप कहाँ से आ रहे हैं कहाँ जाएँगे। मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने एक मित्र की नरेन्द्रनाथ बनर्जी के यहाँ जा रहा हूँ। उनके मुहस्ते का नाम बताया पूछे जाने पर मैंने अपना नाम भी बताया। सब बातें सुनकर उन्होंने बहुत कौतुक अनुभव किया घोर हँसकर बताया कि "आपका तार हम लोगों को मिला था। हमारे भी एक साधनी का नाम सचीन्द्रनाथ है। वे भी मिर्जापुर में ही रहते हैं। घोर नरेन्द्रनाथ भी हम लोगों में से इनका नाम है। बनरनगर में एक ही मुहस्ते में दो नरेन्द्रनाथ हैं। हम लोग समझ रहे थे कि हमारे प्राणीय सचीन्द्रनाथ आ रहे हैं। इसीलिए स्टेयन पर आए थे। आपके मित्र को तो पता भी नहीं कि आप आ रहे हैं। मध्य हम दली जाते हैं घोर उन्हें सूचित करते हैं कि आप आ गए हैं। आप लोग माफ़ी पर माइए हम लोग सामकिल से चमते हैं।" कुछ ठसलसी हुई। आधा का उदय हुआ। फिर हिम्मत बाँधी। नरेन्द्रनाथ का मुहस्ता बहुत दूर था। करीब बटिघर चमने के बाह्य रास्ते में बसता हूँ दि नरेन्द्रनाथ अपने मकान हैं काफ़ी दूर पर रास्ते में हम लोगों का इन्तबार कर रहे थे। हमें देखकर उन्हें कुछ प्रसन्नता नहीं हुई। मैं मन-ही-मन विचलित हो गया। मेरा मन सच्चा साबित हुआ। अत्यन्त बबड़ाहट के साथ नरेन्द्रनाथ की ने कहा कि 'आप लोगों का मेरे मकान में रहना समझ नहीं है। बटिघर सरकार के एजेण्टों ने बनरनगर के अधिकारी पुरुषों से कुछ समझौता कर लिया है। अब कपार व्यक्ति का बनरनगर में रहना प्राप्ता नहीं है। बाहर से किसी प्राणमुक्त के जाने पर हमें पुनिस की इतना हैनी पड़ेगी। ऐसी अवस्था में मेरे घरवाले आप को अपने यहाँ ठहराने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं।' मेरा मुँह सूख गया। मुझमें इतना भी साहस बाकी नहीं रह गया कि मैं अपने स्वी घोर बच्चों की तरफ देखूँ। तथापि अपने मन की व्यासा घोर विक्षीय की मैंने नहीं भ्रस्त होने दिया। संघे अपने मित्र से कुछ अनुमय-विमय की घोर कहा कि कम-से-कम दो-चार दिन तो ठहरने के व्यवस्था कर दो। उनके जब विज्ञान हृदय ने मेरी एक न

मानी। मेरे पास प्रबिक बेर तक ठहरना भी उनके लिए बुराई हो गया। उनकी इस मानसिक स्थिति और आचरण को देखकर मेरे मन में अत्यन्त क्रोध हुआ एवं बिदुष्या की उत्पत्ति हुई। नरेन्द्रनाथ की तरफ सौटकर देखने को दिस नहीं आता। पाईबाले से कह दिया सौटो। अब किसर आता। मेरी पत्नी मुझ पर अत्यन्त अप्रसन्न हो गई और कहने लगी "इन्हीं धार्मिकों के सहारे तुम इतना बड़ा काम करने का रहे हो? मैं इसका क्या उत्तर देता। मैं उनके बिहारे को एकाग्र दृष्टि से देख रहा था और अनुमान कर रहा था कि उनके क्रोध और अप्रसन्नता की सीमा कहाँ तक पहुँची है। एक अपराधी व्यक्ति की भाँति अपनी स्त्री की तरफ देखते हुए मैंने कहा कोई परवाह नहीं है अभी बुरा बन्धोबस्त हुआ जाता है। मुँह से तो कह दिया लेकिन मन में करता रहा। सन् 1914 के क्रान्तिकारीयण चन्द्र नगर में उपस्थित थे। पुलिस की दृष्टि से बचने के लिए उन लोगों के यहाँ मैं नहीं गया था। चन्द्रनगर की राजनीतिक स्थिति तो मैं सुपेक्षित था। नरेन्द्र नाथ जी ने मुझे कोई भी बात नहीं बताई थी। उनके यहाँ मेरे रहने के प्रस्ताव स्वीकार करने के पहले ही उन्हें सब बातें सोच लेनी उचित थीं। इस प्रकार अवस्थातः मुझे विपत्ति के सागर में डाल देना उनका बिलगना बड़ा अपराध था पाठकपण स्वयं सोच सकते हैं।

नरेन्द्र के मुहूर्त्ते से मेरे पुराने क्रान्तिकारी साथियों का मुहूर्त्ता बहुत दूर था। स्टेसन से नरेन्द्रनाथ के पास जाने में बंटाघर लग गया था। अब फिर दूसरे मुहूर्त्ते जाने में एक घंटा लगा। साथ में तीन महीने की एक छिछु कन्या और दो छाम का एक छिछु बालक मुझ से ब्याकुल हो रहे थे। पास दूध नहीं था। माता के पयोवर से छिछु कन्या का निर्बाह हो चुका था। केवल दो-चार का बालक मुझ से ब्याकुल होकर ध्विरत रो रहा था। मेरी स्त्री ने फिर कहा 'तुम्हारे काम में साथिन होने से और कोई आपत्ति पड़े ही है इन बच्चों के मुँह की तरफ देखकर मुझमें सहा नहीं आता। देखो अब इन बच्चों को क्या रूँ बी बंटे हा गाए अभी ठहरने का ठिकाना नहीं। तुम्हारे ऐसे साथी हैं कि तुम्हारे काम-बच्चों को संकट में डालने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता। ऐसे-ऐसे साथियों को लेकर तुम काम करने जैसे हो। तुम्हें तबुर्बा तो कुछ है नहीं। इस लोगों को पाप बघीटकर जाने कहाँ ले जैसे हो। एक और बड़बड़ा सरकार से बुर्बाकना की सीमा नहीं है बुरी घोर नरेन्द्रनाथ जैसे साथियों के बिबायबात से पीड़ित हो रहे हैं जिस

द्विर्बंगाल म

वर अपनी प्रिया के मुख से यह सब घति मधुर बचन सुनकर भरी अन्तरात्मा पर  
बपा बीत रही होगी पाठकगण इसका अनुमान कर सकते हैं। कितना भीम प्रारम्भ  
विस्वास, प्रार्थना मिष्टा विवना प्रत्यक्ष उत्साह एक आशावादी होने में इतनी  
प्रतिक्रिया के हाते हुए भी कागितीकारी अपना काम कर सकते हैं इसका अनुमान  
पाठकगण स्वयं कर लेंगे।

यै एक बड़े पुराने लोक प्रसिद्ध अभिनेत्री राजबिहारी बोस के एक प्रार्थनीय  
श्री श्रीचन्द्र बोस के मकान को चलने लगा। रास्ते में बच्चा बहुत रो रहा था।  
घोर कोई उपाय न देखकर माताजी के लिए रसगुल्ले सबके को खाने को दिए।  
घुषा की मन्त्रणा से बासक के मुँह से इस समय एक या दो शब्द निकलते थे 'दूध  
बापो बनता मैं 'बो बा 'बापो कहते हैं। जीवन में सर्वप्रथम मेरे बासक ने  
इन्हीं दो शब्दों का उच्चारण किया था। बेबारे के मुँह से 'दूध बापो दूध बापो  
के छत्र सुनकर अन्त में हम लोगों ने उसे खाने को रसगुल्ले दिए। पूरा रसगुल्ला  
खा जाने में उसे कुछ भी समय न लगा। हमें डर था कि रसगुल्ला खाने से कहीं  
बच्चे के पेट में कोड़ा म हो जाए। एक रसगुल्ला घोर घोड़ा-सा रस का-सीकर  
धीध बाबू को देखकर घोर भी तसल्ली हुई। बड़ी प्रसन्नता एवं उत्सुकता के  
साथ उन्होंने मेरा स्वागत किया। मरूमूमि के बीच जसाजय को देखकर बस पब्लिक  
सुनी होता है वैसे ही श्रीम बाबू को देखकर मुझे बेहद खुशी हुई।

बाबू श्रीचन्द्र बाप के बारे में दो बार बातें यहाँ कह देना उचित होगा।  
मातृव्य में सबसे पहला जो बम पद्वयन् केस हुआ था जिसमें सर्वेधी घरीब  
धीध, भारीन्द्रगुमार बोस उपेन्द्रनाथ बमजी हेमचन्द्रबास इत्यादि पक्के मए मे  
धीध भारत के इतिहास में जिसने प्रसीपुर बम पद्वयन् केस के नाम से प्रसिद्धि  
पान की है बाबू श्रीचन्द्र बोस इसीसे सम्बन्धित बल के बड़े-बच्चे कागितीकारी  
४। प्रसीपुर बम पद्वयन् केस सन् 1908 में बना था। इसके बाद श्री मोतीलाल  
राय धीध श्री श्रीचन्द्र बोस ने इस बल के काम को जारी रखा था। श्री राय  
बिहारी बोस जो भारतका बापाम में बस गए हैं धीध भारत में खाने से जिन्हें  
भारत श्री श्रीधी के तर्क पर लटकना पड़ेगा श्री श्रीचन्द्र बोस के प्रार्थनीय है  
गण महापुरुष के समय धीध बाबू को सगाठार कई बयों तक वेस में मकरबन्ध  
रहना पड़ा था। लड़ाई के अन्त में जब दूसरे सब मकरबन्ध छोड़ दिये गए थे उसी

घबसकर पर भीड़ बाबू ने भी मुनिष पार्स थी। मुनिष पाने के पहले भीष बाबू ने मुनिष वालों की कुछ बातों को स्वीकार कर लिया था। भीष बाबू ने यह स्वीकार कर लिया था कि मविध्य में वे फिर किसी अशक्तकारी धाम्बोलन में भाग नहीं लेंगे।

धम्बन से लौटने के बाद भीष बाबू से मेरी बातचीत हुई। मुझे भी इसका उत्तेज में पहले ही कर चुका हूँ। मेरे मन में यह डर था कि धाम्ब मुझे सहायता देने में उन्हें कुछ हिचकिचाहट हो। लेकिन करार हासल में चम्बनगर में बैठ होने पर मुझे सहायता देने में वे सहज माने बढ़।

भीष बाबू अविवाहित थे। परन्तु उनके घर में उनकी मायब उनका मोठी दूबारीरि स्त्रियाँ थीं। अपने बाल-बच्चों को साथ लेकर मैं करार हुआ था यह देखकर भीष बाबू बड़काए नहीं। बड़ी प्रसन्नता एवं समयपूर्व धाम्ब के साथ मेरे बाल-बच्चों को उन्होंने स्त्रियों के पास भिजवा दिया। दरिबा में ठहरते-ठहरते जब मके हुए मनुष्य का पैर किसी ठोस वस्तु को स्पर्श करता है उस समय उसकी जो अनुभूति होती है अपने बाल-बच्चों को भीष बाबू के घर की स्त्रियों के पास भेजकर मुझे भी वैसी ही उत्सली हुई। बच्चों को बूब धोर मुझे लीस लेने का समय मिला।

चम्बनगर कहने के लिए फाँसीसी है परन्तु यहाँ के गवर्नर को ब्रिटिश सरकार अपने बघ में रखती है। तथापि अशक्तकारियों के लिए यहाँ कुछ सुविधा व्यवस्था मिल जाती है। ब्रिटिश मुनिष सीधे धाकर यहाँ पर घर पकड़ नहीं कर सकती। फाँसीसी मुनिष की सहायता लिए बिना वह कुछ नहीं कर सकती। ब्रिटिश सरकार के मुत्तबर चम्बनगर में भी बढ़ते से बूमते हैं लेकिन किसी को गिरफ्तार करने के लिए उन्हें फाँसीसी कोतवासी में जाना पड़ता है। इतने में अशक्तकारियों को घबसकर मिल जाता है। ब्रिटिश सरकार के दबाव से चम्बनगर में भी वे निवम बन गए हैं कि किसी भी परिवार में धाम्बलुक के धाने पर उन्हें धाने पर सूचना देनी पड़ेगी। इसी प्रकार मकानधारों को भी नवागत के बारे में मुनिष को सूचित करना पड़ेगा। ये सब बातें मुझे मायूम थीं। भीष बाबू ने मुझसे ये सब बातें बोहवाईं। अभी तक ब्रिटिश सरकार की तरफ से भुक्त कर कोई प्रमियोप नहीं लगाया। इसलिए सब बातें सोचकर मैंने निश्चय किया कि मुनिष को यदि सूचना मिल भी जाय तो कोई हानि नहीं। मैं चम्बनगर में ही रहूँगा। मुनिष को पता मिलने पर मेरे लिए चम्बनगर के बाहर जाना प्रायः असम्भव हो जाएगा यह मैं

फिर बगाम में

बागडा बा तथापि यह तो था कि एक भौगोलिक सीमा के सम्वर तो मैं निरापेक्ष एवं निरिच्छत रूप से रह सकता हूँ। सीमा बाबू के साथ मकान ईश्वर के लिए निवस पद। पहल एक होटल में गए। इस हाटल की मालकिन एन ऐम्मा इन्डियन बुद्धी थी। उस स्वाम का वातावरण घोर होटल का बाज सुनकर वहाँ रहना उचित न समझा। उस स्वाम का बुद्ध तो मनाहूर था। होटल के सामन से एक चौड़ा रास्ता मंषात्री के किनारे-किनारे निकल गया था। फासीतियों ने बंग्रमगर एवं पाशीचेरी में समुद्र एवं नदी के किनारे बड़ सुपुख्य घोर चौड़ रास्ते बनाए थे। ऐसे इस्य माउल के अन्य स्वामों में बिरमे हैं। गंगा एवं समुद्र के तन्त्यस की भूमि पर ईंट की पक्की दीवारें खड़ी कर दी गई हैं एवं उनसे ऊपर से रास्ते निकाल दिए हैं पानी में जाने के लिए बयह प्रगह सीढ़ियाँ निकाली गई हैं। बाशीत्री में भी बना का किनारा बहुत सुदृश्य है लेकिन पन्ना नहीं क्यों वहाँ इतनी प्रबल्यस्वा है। किछो मुनिदिष्ट प्रजापी के अनुसार वहाँ पर न मकान बनाये गए हैं घोर न कोई सड़क ही निकाली गई है। वहाँ की सीढ़ियों की दुबला की भी प्राज सीमा नहीं है। फाशीत्री के गंगा तट-सा सुन्दर स्थान सम्भव है। भारतवर्ष में कोई दूसरा न हो तथापि ऐन सीम्वर्य के निकेतन को भी प्राज प्रबहेलना की तुच्छता में प्रसोमनीय बना रक्खा है।

उपयुक्त होटल में घनीचर और इतवार को कसकता से सीढ़ीन एवं घनी स्मृतिर्षों का आयमन होता है। गुरादेवी की घाराधना यहाँ पर कुल मासानी से एवं माहम्बर के साथ होती है कारण यह कि बलिणा यहाँ पर कमकता से बहुत कम देनी पड़ती है। परिवार सहित ऐसे स्थान पर रहना कंस संभव हो सकता था। जब हम लोगों ने हाटल की मालकिन से कहा कि कल परसों तक अपना निरवध बठा देने तो मालकिन ने बाधह किया कि जब प्राण लोभ होटल में पधारें है तो कुछ बलिणा तो प्रबल्य बढ़ानी पड़ेगी कुछ नहीं तो एक-एक गिमास समनेब तो प्रबल्य ही पी सीजिए। मज्जाबाध एक बोतल सेमनेब तो पीना ही पड़ा लेकिन जब बिम बैठा तो प्राण सूख गए, पाँचें उभट गईं। एक बोतल पानी का दाम प्राठ घाठ घाने देन पड़े उस स्थान को मैंने फिर लौटकर न देखा।

बोवन-स्थान घावि क बाज मकान की तलाश में फिर निकले। बम्बनगर मित्रान्त छोटी जगह नहीं है। दूर-दूर तक पहुँच मकानाठ भी मिले, लेकिन पसन्द

न पाए। विभिन्न स्थानों को देखकर पहले का भय धीरे-धीरे बढ़ हो गया कि इस स्थान पर रहने से मेरे सिर से हम लोगों को अर्जित होना पड़ता। श्री श्री बाबू के यहाँ रहना उचित नहीं समझा और उनके वहाँ स्थान भी न था। चित्त व्याकुल हो उठा गया और धीरे-धीरे न करें कुछ ठीक न कर पाए।

बंगलूर के पास एक छोटी-सी मेकन मछलूर जगह श्रीरामपुर के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर बंगाल के कुछ बड़-बड़ जमींदार बसे हैं। मेरे मामा की सारी श्रीरामपुर के एक जमींदार के घर में हुई थी। जिस समय का मैं जन्म कर रहा हूँ मेरे मामा के लड़के श्रीरामपुर में अपनी माँ के यहाँ रहते थे। मेरे मामा के लड़के श्री भवानीचंदर राय से मेरी घेरेष्ठ मित्रता थी। वह मैं प्रथम जानता था कि भवानीचंदर की माँ अपने यहाँ मरा जाना-जाना अधिक पसंद नहीं करती थीं तथापि अपनी स्थिति को देखते हुए वो बार-बार दिन के लिए भवानीचंदर के यहाँ ठहरना ही मैंने उचित समझा। मेरा समिप्राय यह था कि श्रीरामपुर में अपने बाल-बच्चों को रखकर फिर कहीं रहने के उपयुक्त स्थान की खोज कर लूँ। जहाँ तक मुझे स्मरण है मैंने पहले चले श्रीरामपुर जाकर भवानी मैदा से सब बातचीत कर ली। बाद की बाल-बच्चों सहित श्रीरामपुर पहुँचा। भवानी मैदा की माँ के व्यवहार से वह भी मान्य पड़ता था कि मैं सोच हमने किसी प्रकार से भी संसृष्ट रहे हों। इसी बात के लिए मेरे मन में प्रयत्न कुर्मा-बना थी। जब एक कुर्मा-बना का तो घट्ट हुआ।

भवानी मैदा धीरे-धीरे मिलकर बंगलूर से लेकर हावड़ा तक गया थी के किनारे-किनारे मिलनी बस्तियाँ और कस्बे थे सब पैदल सँभल जाते। श्रीरामपुर से हावड़ा रेलवे लाइन से बाएँ-दोह भील है। इसके पश्चिमिस्त प्रत्येक कस्बे में मोहल्ल-मोहल्ले में कहीं पर यकान पानी है पड़ोसी कस्बे हैं, बलकला से जाने-जाने के लिए गया-गया मुक्तिपार् एवं धमुक्तिपार् हैं कहीं पर क्या दर्ज पड़ता इस सबके प्रतिबुद्धि रखते हुए मुझ में शाम तक बचकर काटते रहे। प्रायः मैं बहुत इतलता के साथ भवानी मैदा की सहायता का स्मरण कर रहा हूँ। जन्मजीवन समिति के निधी सचिव को मैंने अपने बाल-बालों की बात इसपर १० कि ऐसा करने से बात फैल जाने की संभावना थी। श्रीराम भी कि उन लोगों की सहायता बिना निधि न बन व्यवस्था है कुनरी

लिए बैठता फिर रहा हूँ। कहीं पर रहने का ठिकाना नहीं है। बात-बचपे भी मेरे माथ मेरी तरह भटकते फिर रहे हैं। इन सब घटनाओं के बहुत दिन बाद जब जून 1930 ई० में मैंने मैनी मेथुस जेल में ट्राइबकी की धारमकहानी पढ़ी एवं सन् 1934 में सक्कल ऊ सेथुस जेल में रहते समय साइबेरिया स्थित कम के अग्निकारी पुस्य घोर स्थियों की जीवन-कथा पढ़ी की तब मैंने अनुभव किया कि मेरा भट कना उन लोगों की तुलना में कुछ भी नहीं था। इन सब भिदावप दुखों का सामना करना पड़ता है इसीलिए ही तो आग्निकारियों के मार्ग पर चलने के लिए कोई सड़क में सेपार नहीं होता है। यह बात केवल भारतवर्ष ही के लिए ही सत्य हो ऐसा नहीं है संसारभर के अग्निकारियों का इतिहास पढ़ने से सभी को इस बात की सत्यता पर विश्वास हो जायगा। समस्त इतिहास में यह बात पाई गई है कि सफलता प्राप्त करने के पूर्व प्रत्येक देश के आग्निकारियों को कुट्टिमान व्यक्तियों ने धुरंधरी भव्यावहारिक समझासत भावुक बताया है। संसार के अभिजात तथा कथित बुद्धिमान व्यक्तियों ने आग्निकारी मार्ग को ग्रहण नहीं किया। प्रायः भी हमारे देश के सम्प्रतिष्ठ गण्यमान्य बुद्धिमान नेतामण अग्निकारी मार्ग को बासकोचित समझते हैं। वो हूँ यवागीचकर और मैंने मिलकर बासी नामक एक कस्बे में काम चलाने सायक एक मकान ईब निकासी। किस खासे से कुछ खेपे कीन बर्तन मिलेमा बाजार कितनी दूर है स्टेशन कितनी दूर है रेलवे स्टेशन तथा स्टीमर बाट कितनी दूर है इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए और सब बातों को उपयुक्त व्यवस्था करके तीन-चार दिन के कठोर परिश्रम के बाद बहु मकान में निवा गया। रहने की सुव्यवस्था हो जाने के बाद विप्लव काय में ध्यान देने का अवसर मिला।

एक तो बरसात के दिनों में यों ही बीमारियाँ हुषा करती है। फिर पश्चिम में रहते रहते ऐसा हो गया था कि जब बगाम की जमनायु हम लोग बरखास्त नहीं कर पाते थे। बासी के जमनायु के कारण सड़के को सागकाइतिष्ठ हो गया। इस अपरिचित ग्राम में प्रसहाय संपदहीन प्रबस्था में मैं पराम्त चिन्तित हो गया। और कोई धन्यता उपाय न रहने के कारण अन्त में मैंने कसकसा जाने का ही निश्चय किया। लेकिन रहने लायक एक उपयुक्त स्थान खोज निकालने के पहले बात बच्चों को कसकता मैं अपने बचपे माई के मकान में साकर रखवा। वहीं पर रह कर सड़के का बजाव बरार। बजावें बजावें बजावें में ही मैंने मकान में



भोग रहते बने। मेरे घातीय स्वभाव को यह पता नहीं था कि मैं कहाँ रहता हूँ। बहुतों से मैंने कह दिया कि मैं फाँसीपी अन्ननगर में रहता हूँ। अपने दो-एक विशेष मित्रों को छोड़कर अस्थितकारी दल के भी किसी को पता न था कि मैं कहाँ रहता हूँ।

मैंने तब इस बात के प्रति ध्यान रक्खा कि देश के मध्यमाध्य प्रकाश में लोगों में प्रकाश मिलूँ एक उगड़े कान्तिकारी आन्दोलन के प्रति सहानुभूति सम्पन्न एवं सहायक बनाने के लिए यथासाध्य प्रयत्न करूँ।

इस नीति के अनुसार देशबन्धु चित्तरामदास के साथ मिलना मैंने अपना प्रथम कर्तव्य समझा। इनका कुछ परिचय मैंने पहले ही दे दिया है। देशबन्धु सी० आर० दास के साने के साथ हम लोगों का बहुत पुराना और अनिष्ट सम्बन्ध था। इनकी सहायता से मैंने महारथ यात्री से भी मिलने का प्रयत्न किया था। महात्माजी जानते थे कि मैं फरार हासत में हूँ। देशबन्धु के साने थी एस० एन० हानदार महात्माजी के पास मेरा सम्बन्ध लेकर गए थे। महात्माजी कांग्रेस के कार्य से देशबन्धुदास के यहाँ भाने हुए थे। पता नहीं कांग्रेस कार्य समिति की बैठक थी अपना अधिकार भारतीय कांग्रेस कमेटी की। इसी अवसर पर थी हेमचन्द्रभार सरकार की मार्केट मुझे वह संदेश मिला कि मोसामा मुहम्मदअली साहब मुझसे मिलना चाहते हैं। बनारस पब्लिश के मामले में कालेपानी जाने के पहले मोसामा मुहम्मदअली के साथ हम लोगों का सम्बन्ध हुआ था। कालेपानी ने लौटने के बाद उनसे मरी मुलाकात नहीं हुई थी। इसलिए मैं भी इनसे मिलने के लिए उरमुक्त था। देशबन्धु के मकान में ही उनसे मुलाकात हुई। मोसामा अकबरअली की तरह रहने भी मुझसे कुछ तरीके छोड़कर प्रकाश आन्दोलन में काम करने का अनु रोध किया। मैंने अपनी नीति हमसे व्यक्त नहीं की।

थी एस एन० हानदार से निश्चित हुआ कि महात्माजी मुझसे बहुत दिन रात को घाठ बज थी सी आर दास के मकान पर मिलेंगे। उस समय देशबन्धु का मकान लकिया पुलिसवाले बेरे रहते थे। लेकिन मैं जानता था कि मुझे वे पहचानते नहीं हैं। इनके रहते हुए भी मैं देशबन्धु के मकान पर ठीक समय पर पहुँचा। हानदारजी से भेंट हुई। उन्होंने मुझे एक कमरे में बैठा दिया और कहा कि जब तक मैं नहीं लौटता हूँ तुम यही पर ठहरो। यह एक मुनीम का कमरा था। सम्भव है पुलिस वाले समझे हों कि मैं भी देशबन्धु के मुनीमों में से एक हूँ। ठीक

घाठ बने महात्माजी से मिलने की बात थी। कमरे में एक बड़ी बड़ी लमी थी। इन्तजार करते-करते घाठ से भी भी से दस घोर बस से व्यापक बने लेकिन हास्य दार साहेब बापस नहीं था। एक तो वह स्थान पुलिस वालों से भरा था तिस पर मैं फरार हास्य में भूम रहा था। इन्तजार करते-करते मेरे मन में माना प्रकार की दुर्दिनताएँ पैदा होने लगीं। मेरे मन में समझ होने लगा कि शायद महात्माजी मेरे प्रस्ताव को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहे हों सम्भव है वह मुझसे मिलना नहीं चाहते हों। मैंने अपने दिम में कुछ अपमान-सा अनुभव किया। सम्भव है यह मेरे चरित्र की दुर्बलता हो इसलिए वहाँ अपमान बोध नहीं होना चाहिए था वहाँ भी अपमान बोध कर रहा था। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मानो महात्माजी मेरी पर्वाह नहीं कर रहे हैं। यह मेरे परम दुर्भाग्य की बात है कि आज भी बहुतेरे प्रयत्न करने के बाद भी मैं महात्माजी से नहीं मिल पाया। हरिपुर में भी मैंने महात्माजी से मिलने की बार-बार केप्टा की घोर हर बार मुझसे यही कहा गया कि आज महात्माजी की तबियत स्वस्थ नहीं है आज महात्माजी को प्रवचन नहीं है आज महात्माजी केवल दो-तीन मिनट ही दे सकते हैं इत्यादि। एक दिन हरिपुर में मैं सीधे महात्माजी के पास पहुँच गया तो देखा कि महात्माजी भी मंजर घसी सोफा के साथ टहलते हुए बातचीत कर रहे हैं। कुछ दूरी पर एक तरकी बड़ी थी। उस तरकी से सकोच के साथ मैंने पूछा क्या मैं महात्माजी के पास पहुँच सकता हूँ। उसने कहा कि हाँ चाहें तो आप जा सकते हैं। मैं निःसंकोच महात्माजी के पास पहुँच गया। उनके पास सूकर प्रणाम किया और उनसे बातचीत करने के लिए कुछ समय की प्रार्थना की। महात्माजी ने मेरे मुँह की तरफ कुछ एकाग्रता के साथ देखा। मैंने अपना नाम बताया लेकिन इतने पर भी महात्माजी ने मुझे कोई समय नहीं दिया। यद्यपि वे भी मंजरघसी सोफा के साथ बहुत देर तक टहलते हुए बातचीत करते रहे। सोफाजी से मुझे बार को मालूम हुआ कि उनसे उस समय महात्माजी की कोई विशेष आन-यकीम बातचीत नहीं हो रही थी। जब की बेज से छूटने के बाद मैंने महात्माजी को एक पत्र भेजा था उसके उत्तर में उनके सेक्रेटरी ने मुझे यह सिखाया कि आप बर्बा के पास शैलीय ग्राह्य, एक सप्ताह हम लोगों के पास रहिए और महात्माजी के पास शान्ति से बातचीत भी हो सकती। हरिपुर में पुनः भी महात्माजी के पास मैंने बहुत देर तक फिर नहीं लेकिन मेरे पास इतना पैसा न था कि मैं सेपीय जाकर महात्माजी से मिलता।

बैतुसी में जब अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी की बैठक हुई थी उस समय भी मैंने महारमाजी ने मिसने का प्रयत्न किया था। लेकिन इस बार भी विफल रहा।

मैं रात के प्यारह बजे देशबन्धु के मकान से चल पड़ा। कुछ घण्टा और कुछ रोप से मैं मन-ही-मन चल रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैंने अपने व्यक्तित्व को ऐसे ऊँचे स्थान पर नहीं पहुँचाया है जिसके कारण महारमाजी ऐसे व्यक्ति मुझने मिसने के लिए उत्सुक होते। ऐसी मनोवृत्ति को पारंपरिक मनोविज्ञान के अनुसार *Inferiority Complex* (छोटेपन का भाव) कह सकते हैं। मैं इस हीनता के बोध को लेकर देशबन्धु के मकान से लौटा। इस हीनता बोध से आज भी मैं मुक्त नहीं हूँ।

इस घटना के बाद जब पुनः हामदारजी ने येरी मुआदलत हुई तो पता चला कि महारमाजी मुझने मिसने के लिए यथार्थ मैं उत्सुक थे। उनकी इच्छा थी कि काँग्रेस के अन्य व्यक्तियों के इधर-उधर चले जाने पर महारमाजी मुझे साथ लेकर मोटर में कहीं दूर निकल जाते और कार में ही बैठे-बैठे सब बातें होतीं। लेकिन कुछ का विषय है कि हामदार साहब ने याकर मुझे सब बातें नहीं बताईं।

बामरेदाम एन० राय के जो व्यक्ति देहली में मुन्सिफ बन गए उनमें मैं  
नमस्ते में फिर मिला। श्री कुतुबुद्दीन महमद का नाम मैं पहले ही जाना चुका हूँ।  
कमरुद्दीन मैं उनके सकातान था। मैं यह घोषणा करता था कि उनमें मुझे पने की  
सहायता मिलेगी। इसकी सहायता से मैं जाहूदा या कि बिदेस में मैं अपना प्रान्तीय  
घर अपना करने में सफल हुआ। मई 1914 के जालिफारी प्रान्तीयता में मुझे  
जाहूम या कि बड़े पैमाने में प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष आदि के योगदान की व्यवस्था किए बिना  
जालिफारी प्रान्तीयता सफल नहीं हो सकती। एवं यह भी मैंने देखा था कि पिछले  
प्रान्तीयता में हुए लोगों ने बिदेस में स्थित जालिफारी घरों के साथ कोई सम्बन्ध  
स्थापित न करने से बहुत शोका खाया। इन सब विषयों की दृष्टिकोण में  
रखते हुए जबकी बार बिदेस में प्रान्तीयता के जाने की मैंने यथार्थ चेष्टा की लेकिन  
कुतुबुद्दीन की सहायता से कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई।

बिस् रीति स बान्धिकाारी दल के भावमी बिदेस घाया जाया करत स बहु मात्र पुमिस का मानूम हो गयी है। उस रीति वा घबलमबल करके बिदेस घाना जना बहुत कठिन हो गया है। जो बात पुमिस को मानूम है उसे जनता क सामन एने मे कोई इति नही है।

श्री कृष्णगुहिन से पता चला कि वे अपने छाहरी लतामी घपका जहाज के पन्च कर्मचारियों के रूप में भर्ती कराते थे और विदेश जाकर व व्यक्ति जहाज से उतरकर भागना हो जाते थे। मैंने भी सन् 1911 में एक बार अमेरिका भाग जान की निष्पत्ति देखी थी।

सन् 1924 ई के प्रारम्भ में चोड़े-से व्यक्ति रेगुलेशन 3 में नजर बन्द कर दिये गए थे। लेकिन मेरे कलकत्ता पहुँचने के बाद सरकार ने एक नये कानून के अनुसार बड़ी संख्या में नौजवानों को गिरफ्तार कर लिया और अश्वामत में बिना पेश किये ही उन्हें जेल में बन्द कर दिया। इसी सिलसिले में सुजायबाबू भी गिरफ्तार हो गए।

इसके पहले ही मैं देशबन्धुजी से मिल चुका था। उन्होंने हम दोनों को नियमित रूप से सहायता देने का वचन भी दिया था लेकिन अत्यन्त दुर्भाग्यवश यह सहायता भिन्न-भिन्न के पहले ही बासबी मुझसे अत्यन्त असम्पुष्ट हो गई। देशवातियों से निवेदन मायक मेरे नाम के प्रकाशित एक वर्ष में देशबन्धुबाबू के अन्तिम कारी विरोधी सिद्धान्त का मैंने स्पष्ट शब्दों में व्यक्तिपूर्ण रीति से खंडन किया था। इसी बात से वे मुझसे अत्यन्त सख्त हो गए थे। इस वर्ष के प्रकाशित होने के बाद जब मैं उनसे मिलने के लिए उनके भवन पर गया तो उन्होंने मुझसे भिन्न-भिन्न से इनकार कर दिया। मैं समझ गया कि राजनीतिक बाजों से मैं निरन्तर अनभिज्ञ हूँ। कांग्रेसी नेतागण जब भी बाहे प्रकाश्य रूप से वचस्पता-सत्य पर प्रथवा संसार-वर्षों में जागृतकारी धाम्नीजन की यथेष्ट निम्ना करते हैं। उन्हें यह भलीभाँति भासता है कि जागृतकारियों के लिए प्रकाश्य रूप में अपने पक्ष का समर्थन करने का कांक्षित नेताओं की तरह अवसर अवकाश अवकाश प्राप्त नहीं है।

देशबन्धु जी० धार बासबी ने गया कांग्रेस के समापन के आसन से जागृतकारी धाम्नीजन के प्रति कुछ कटाक्ष किए थे। उन्होंने यह कहा था कि जागृतकारी धाम्नीजन सफल नहीं हो सकता इसलिए मैं जागृतकारी धाम्नीजन में योगदान नहीं करता हूँ। उन्होंने यह भी कहा था कि यदि मेरी समझ में यह बात या याव कि जागृतकारी धाम्नीजन सफल होगा तो मैं उसी अर्थ इस धाम्नीजन में धामिस हो जाऊँगा। लेकिन उन्होंने यहिस्ता नीति के आधार पर जागृतकारी धाम्नीजन का विरोध नहीं किया। इसके प्रत्युत्तर में मैंने लिखा था कि जिस दिन सबको यह प्रतीत हो जाएगा कि जागृतकारी धाम्नीजन सफल होना आ रहा है उस दिन तो भाजों की संख्या में समुप्य इस धाम्नीजन में भाग लेने समेत। उस दिन देशबन्धु जैसे व्यक्ति इस धाम्नीजन में भाग लेंगे या नहीं इसका विरोध महत्त्व नहीं रख जाएगा। जिस देश में विदेशी सरकार जब असा बाहे बीसा हो कानून बना सकती है उस देश में कानूनी नदई नदना प्रथवा जिस देश में विदेशी सरकार पाषाणिक बल से शासन करती है उस

देश में बल का प्रयोग न करके स्वाधीनता के लिए लड़ाई करना वास्तवतामान है ऐसा मैंने उस पक्ष में सिखाया था। मैंने यह भी बताया कि वेष्टा की भी कि जातिकारी आन्दोलन आतंकवाद नहीं है कारण यह कि भारत में किसी भी जातिकारी का यह विश्वास नहीं है कि केवल आतंकवाद से ही स्वाधीनता प्राप्त हो सकती है। यदि सरकारी अत्याचारों के विरुद्ध हड़ताल युक्त व्यक्ति हुई पिछले का प्रयोग भी करते हैं तो उनका अर्थ नहीं हुआ कि आन्तरिकीयन ने आतंकवाद ने ही स्वाधीनता की लड़ाई करना चाहते हैं। इसी प्रकार जातिकारी आन्दोलन के विरुद्ध आलोचकों का उत्तर इस लेख में था। मैंने अपने नाम से इस विमर्श के प्रति निवेदन दीर्घक क पक्ष को छपवाया था। कसकता में प्रकाश समाचारों के अक्षरों पर ये पक्ष बंटवाए थे। इस पक्ष के कसकता में बड़ी लम्बो न्यायी थी। यह पक्ष अक्षर था कि भारतवर्ष में किसी आन्तरिकीयन ने अपने नाम से प्रकाश पक्षमान्य नेता के विरुद्ध आन्दोलन के समय में आवाज उठाई थी।

इस पक्ष के कारण अनुसूचित समिति के दूसरे नेतागण मुझसे असन्तुष्ट हो गए थे। मेरा प्रपना यह विश्वास था और अब भी है कि यदि आन्तरिकीयन जन आन्दोलन के सामने अपने मनोभावों को व्यक्त करते रहें और देश की विभिन्न परिस्थितियों में अपने स्वतन्त्र विचारों को दुर्लभतापूर्वक जनता के सामने रखें तो यह सम्भव हो सकता है कि आन्तरिकीयन भी जनता के हृदय पर अधिकार स्थापन कर सकें। अनुसूचित समिति के नेताओं में यह प्रवृत्ति नहीं थी।

मैं अनुसूचित समिति के बितने नेताओं के संस्पर्ध में आया उससे मेरे मन में यह आशा हो गई थी कि उनके मानसिक उत्कर्ष उस प्रकार के न थे जिस प्रकार यूरोप के जातिकारी नेताओं में पाये जाते हैं। लेकिन उनके अनुमानियों में ने ऐसे बहुत-से प्रतिभाशाली युवक थे जिनमें उपर्युक्त नेतृत्व गुणों का उमेर था किन्तु अनुसूचित समिति की कार्य प्रणाली के कारण इन प्रतिभाशाली युवकों को अपनी प्रतिभा के प्रयोग का अवसर नहीं मिला रहा है। आन्तरिकीयन आन्दोलन की प्रथम अवस्था में थोड़ी धारु के बहुत-से भव्ययुवकों ने स्कूल कासेजों से अपना छोड़कर योगदान किया था। अब, आन्तरिकीयन अवस्था इटली में भी ऐसा ही हुआ था। लेकिन उन देशों में एवं विशेष रूप से इस देश में आन्तरिकीयनों ने अपनी काम प्रणाली, उद्यम एवं धैर्यवश्या से अधुना मानसिक उत्कर्ष को प्राप्त कर लिया था। अब के आन्तरिकीयन अब तक पकड़े नहीं जाते थे तब तक

उपेक्षा की हूँ ही हूँ। फिर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की नियमावली एवं कार्यक्रम को एक तरफ़ ठाढ़ कर दिया। मैंने समझ लिया कि उनकी समझ उक्त एसोसिएशन के आदर्श तक नहीं पहुँच पाई है।

इसके प्रतिरिक्त उन नेताओं के पास जनता के सामने रखने योग्य कोई कार्य कम नहीं था। मैं चाहता था कि सब की बार इस प्रकार से कार्य किया जाय जिससे जन-साधारण पर क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रभाव प्रभाव परिलक्षित हो। प्रमुखीयन समिति के नेतागण विरोधी थे। वे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहते थे जिससे जनता की दृष्टि क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति आकृष्ट होती। इसका कारण यह था कि वे पुलिस की दृष्टि को बचाना चाहते थे। वे ऐसा समझते थे कि अभी ऐसा कोई काम करना उचित नहीं है जिससे पुलिस की दृष्टि क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति आकृष्ट हो जाय। वे चाहते थे कि ईरान भी सीब बाएँ और पानी भी न सूना पड़। वे भूल गए थे कि राजनीतिक क्षेत्र में ऐसा सम्भव नहीं है।

बैसाकि मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ देशबन्धुशासत्री से मेरी बातचीत के परिणामतः उन्हें वह प्रतीत हो गया था कि क्रान्तिकारी आन्दोलन समग्र उत्तर भारत में प्रबल और विस्तृत रूप से बढ़ रहा है। और उसी समय एक भाषण में शासत्री ने सरकार को यह चेतावनी दी थी कि भारतवासियों की माँग को अवि सम्म पुरा न करने से भारत में एक भीषण परिस्थिति उत्पन्न होगी क्योंकि क्रांति के प्रतिरिक्त भारत के क्रान्तिकारीगण भी भीषण रूप से काम कर रहे हैं। यदि मवर्नमेंट यह सोचती है कि क्रान्तिकारी आन्दोलन दब गया है तो यह उसकी भारी भूल है। भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन दबा नहीं है। सरकार को पता नहीं है कि यह आन्दोलन किना उग्र रूप धारण करने जा रहा है। यह भी मैं पहले ही बतसा चुका हूँ कि इस व्यापमान के बाव सरकार की ओर से कृषि विभाग के सुपरिन्टेण्डेंट थी मुपेन्द्र चटर्जी को शासत्री के पास भेजा गया था। इस घटना के बाद शासत्री से मेरी बातचीत हुई थी। शासत्री के व्यापमान से सरकार को यह पता हो गई थी कि कहीं महायुद्ध के समय की तरह फिर क्रान्तिकारी आन्दोलन उग्र रूप धारण न करे। मुपेन्द्र चटर्जी शासत्री से यह जानना चाहते थे कि क्या उनकी बारणा में भारत में भी इस ही विप्लव मच सकता है। शासत्री नवों ऐसा समझते हैं कि भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन उग्र रूप धारण कर रहा है ?

क्रान्तिकारियों के साथ बासबी का क्या घोर कर्तव्य सम्भव है ?

बासबी के इस व्याख्यान से अनुधीन समिति के नेतागण मुग्ध प्रसन्न हुए। उसकी धारणा थी कि इस व्याख्यान से क्रान्तिकारी आन्दोलन को विशेष प्रेरणा मिलेगी। मैं समझता था कि इस व्याख्यान से क्रान्तिकारी भावनाओं का स्व-प्रचार होगा। इससे क्रान्तिकारी मार्ग पर काम करने के लिए विशेष बुझाई हो जाएगी।

इस व्याख्यान के बहुत पहले ही देहली में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के ठीक बाद ही कुछ व्यक्तियों को बंगाल में रेगुलेशन 3 के अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया था। मैं अपने साथियों से प्रार्थना अनुधीन समिति के नेताओं से यही कहा करता था कि आप लोग सब यों ही विशेष कानून के अनुसार विरक्त हो जाएंगे। काम कुछ होगा नहीं। मुक्त में वेस काटते और क्रान्तिकारी आन्दोलन कम-से-कम कुछ दिनों के लिए तो रुक ही जाएगा। इसके बहेतर है कि कुछ ऐसा काम किया जाय जिससे जनता के सामने यह सिद्ध हो जाय कि कांग्रेस की सामरिक शक्ति के मुकाबले में जनता में भी शक्ति-संचय करने की योग्यता है और इससे भी बढ़ कर एक और काम यह करना है कि जिससे भारतीयों की विचारधारा में और शक्ति बच जाय। कांग्रेस के नेतागण दिन-रात यही प्रचार किया करते थे कि शक्ति के माप से भारत की स्वाधीन करना सम्भव नहीं है। भारत की जनता भी समझती है कि ब्रिटिश सरकार की सामरिक शक्ति के सामने उसके पास कोई शक्ति नहीं है। यदि यह मानना सत्य है तो इसका भर्त्ता हो सकता है कि भारतवर्ष कभी भी अंग्रेजों की प्रभुता से मुक्त नहीं हो सकता। इस मानसिक अवस्था के रहते ही शक्ति कैसे सम्भव है ? इस मानसिक दुर्बलता को मिटाने के लिए हम लोगों को सर्वप्रथम आन्तरिक प्रयत्न करना पड़ेगा। ये सब काम हम लोग करते नहीं। केवल मुक्त रीति से व्यवहार करने से क्या बनेगा। लेकिन अनुधीन समिति के नेताओं को यह बात पसन्द नहीं थी। वे चाहते थे संगठन जैसे जाय मुक्त रीति से बाहर से अस्त्र-शस्त्र भेजा जाय और तब जाकर दूसरे कामों में काम लगाया जाय। परन्तु संयुक्त का काम जारी रखना सरल काम न था। स्पूस ब्रिटिश से किसी काम का सहारा न लेकर संयुक्त का कार्य चलाना सम्भव नहीं है। संस्था के प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ-न-कुछ काम होना विशेष आवश्यक है। यदि किसी संस्था की



घोर से प्रत्येक सदस्य के लिए उपयुक्त काम नहीं दिया जा सकता तो वह संस्था सम्मति नहीं कर सकती। प्रत्येक संस्था के यथारीति संवाहन के लिए धन की विधेय आवश्यकता होती है। भारत में क्रान्तिकारी संस्थाओं के लिए धन-संग्रह करना एक अत्यन्त कठिन समस्या थी और बिना धन के कोई काम होना सम्भव न था। क्रान्ति के कार्य में पूर्ण समय देनेवाले गृह-स्थांगी सब प्रकार से निस्वार्थी एवं छाहरी कार्यकर्ताओं के अलावा दूसरों से विप्लव-न्याय पैसा भी सम्भव नहीं है। लेकिन प्रश्न यह है कि ऐसे कार्यकर्ताओं का निर्वाह कैसे हो। फिर समग्र भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में ऐसे कार्यकर्ताओं के क्या भूमते रहने का भी तो कर्त्तव्य है। क्रान्ति काटी छाहिर्य का प्रचार करना एवं बाँटना सामयिक प्रमादि का चलना इन सब कामों के लिए भी तो उसे ही आवश्यकता है। इससे अतिरिक्त भारत के बाहर भी आना-जाना है विशेष से बड़े पैमाने में अस्त्र-पस्त्र भी तो मँजाना है। इतना पैसा कहाँ से आए ?

कांग्रेस प्रथम अन्य संस्थाओं के लिए तो रास्ता खुला है उनके लिए प्रकाश रूप से धर्म माँगा जा सकता है। उन संस्थाओं के लिए पैसा देने में भी कोई मज की बात नहीं है। क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए तो एक पैसा देना भी बतरे की बात है। इस सन्दर्भ में पहले के लिए भारतवासी धान भी प्रस्तुत नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में क्रान्तिकारी आन्दोलन को कैसे सफल किया जाय।

दूसरे देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन के विस्तृत इतिहास को पढ़ने पर भी ठीक प्रकार से यह पता नहीं चलता कि उन देशों में जबत समस्या का समाधान वहाँ के क्रान्तिकारी कैसे करते थे। मैक्सिम की जीवन में ऐसा भी समय आया था कि प्रत्येक इंडियन से एक-एक रुपया माँगने पर भी मैक्सिम को कुछ भी नहीं मिला था। उसकी बोल्शेविक पार्टी की नीति के अनुसार डाका डालकर धर्म संग्रह करना उचित नहीं समझा गया था तथापि लेनिन की अनुमति एवं अनुमोदन से स्टालिन के हल को इन्वेंटी द्वारा धर्म-संग्रह करना पड़ा था। लेकिन यह भी बात सरय है कि आयरलैंड में सीनफीन पार्टी के लिए प्रत्येक सदस्य जन्दा दिया करता था। प्रभावशाली इसी जन्मे से हल का काम चलता था।

यदि हम सोम किसान और मजदूर आन्दोलन में यथारीति धान लिए होते तो सम्भव था कि कुछ सीमा तक हमारा आर्थिक-संकट निवारित हो जाता लेकिन मजदूर प्रथम किसान आन्दोलन के लिए जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता होती है

सिंहे हमारे पास अधिक मर्यादा में न थे। मामूली नायकता तो हमारे पास बहुत थे परन्तु जिनमें उपयुक्त संगठन सम्बन्धित हो जिनमें कुछ नियन्त्रण सम्बन्धित हो ऐसे व्यक्ति हमारे पास अधिक न थे। जितने व्यक्ति थे भी उन्हें हम लोगों ने नान्दिकारी संगठन में काम में लगा रखा था। यदि मैं फरार हासल में न होता तो मैं यथा रीति मजदूर आन्दोलन में काम कर सकता था बल्कि मैंने जमशेदपुर में प्रारम्भ किया था। लेकिन फरार हासल में ऐसा करना सम्भव न था। इन सब बातों के होते हुए भी मजदूरों में काम करने के लिए मैंने अपने आदमी भेजना प्रारम्भ कर दिया था। श्री एम० एन० राय के वस के आदमी उन व्यक्ति-विशेष की सहायता से जिनसे बेहसी में मेरा परिचय हुआ था। मैंने अपने आदमी कलकत्ते के पास-पास के दिनों में भेजना प्रारम्भ कर दिया था। यदि मैं कुछ दिन और न बका जाता तो सम्भव था थोड़ा दिनों में हमारे आदमी मजदूर आन्दोलन में भी भरी प्रकार से काम करने लगे और अन्तिमकारी आन्दोलन के साथ-साथ मजदूर आन्दोलन में भी हमारा बल निपुण और योग्य हो जाता। कलकत्ते से काँचका पाड़ा इत्यादि स्थानों के धान ज्ञान का दर्भ श्री एम० एन० राय के साथी श्री कुतुबुद्दीन अहमद जिहा करते थे। उन लोगों ने मजदूरों में जागृति फैलाने के लिए एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला था। हमारे आदमी इन पत्रों को मजदूरों में बेचने के लिए दिनों और कारखानों में न जाते थे। लेकिन नान्दिकारी आन्दोलन के कार्य में सहायता देने के लिए कुतुबुद्दीनसाहब तैयार न थे।

अन्तिमकारी आन्दोलन के लिए धर्म-संग्रह करना एक अत्यन्त कठिन समस्या थी। अनुशीलन समिति के नेतृत्वण इस बार डाका डालकर धर्म-संग्रह करने के अत्यन्त विरोधी थे। कारण यह कि ऐसा करने से वे समझते थे कि अन्तिमकारी आन्दोलन की पकड़ा लगेगा पुमिस सचेत हो जाएगी, और इस प्रकार संगठन काम पूरा होने के पहले ही इतनी बाधाएँ उत्पन्न होंगी कि वास्तव में काम करना कठिन हो जाएगा। उस समय मैं इन लोगों की राय से सहमत नहीं हो सका। मैं बहुत समझता था कि अन्तपूर्वक धर्म-संग्रह करने की नीति के कारण इन लोगों में कारखाने का (गोरीनाथार) बसाने की शक्ति उत्पन्न होती जाएगी और धर्म संग्रह भी होगा तथा संगठित रूप से संकटपूर्ण काल में हाथ बटाने का प्रयास भी होता जाएगा। अपने आदमियों में काम साहसी है जिसमें कितनी त्वाय की भावना है, संकट का सामना करने के लिए कितने व्यक्ति प्रसन्न हैं इन सब बातों

का ठीक ठीक पता चलता रहेगा। परन्तु मैं ग्रामीणों के घर में जाकर जानने का पधपाती न था। समुचीन समिति के नेतागणों की नीति को न मानकर मैं कम कला के निकटस्थ बड़े-बड़े धनिक भिल मानिकों के दर्यों पर हाथ डालने का प्रयत्न करने लगा था। उनको भी यह बात माजूम थी। उसी समय मैं बम्बई और पंजाब पैलट्रेन के डाक के डिब्बे पर आपा मारने की तैयारी कर रहा था। इसके प्रतिरिक्त अन्तिकारी नीति पर भी मैं एक भेज भिज रहा था। मैं चाहता था कि अपने दल की ओर से जनता की जानकारी के लिए आन्तिकारी आन्दोलन के कार्यक्रम को स्पष्ट छाया में छोलकर रक्त दिया जाय। यदि प्रकारज कम से कोई सामयिक पत्र चलाने का अवसर हमें प्राप्त नहीं है तो कम-से-कम पुस्त रीति से पत्रें बँटवाने की व्यवस्था तो हमें अवश्य ही करनी चाहिए। समुचीन समिति के नेतागण मरी इन नीतियों के जोर विरोधी थे।

कलकत्ता में आकर समुचीन समिति की सहायता न लेते हुए स्वतन्त्र रूप से मैं लोकसंग्रह के कार्य में जुट गया था। इसी प्रकार मैंने कुछ सोय इकट्ठे किए जो कि यूनिवर्सिटी ट्रेनिंगकोर में सामरिक सिखा पा रहे थे। ये सब कामियों के मड़के थे। इनमें दो-एक इन्वीनिपरिंग कामेच के सबके भी थे। इन सोयों की सहायता से श्री सुधीनकुमार बेनर्जी नामक एक अच्छे कार्यकर्ता से मेरा परिचय हो गया। ये पहले ही समुचीन समिति के सदस्य बन चुके थे। एक दिन मैंने श्री सुधीनकुमार के साथ रास्ते पर चलते हुए कुछ नीजवालों को कापेच-कार्य करने में उत्तर देखा। इनमें से एक के प्रति मेरी वृष्टि विशेष रूप से आकृष्ट हुई। वे खाने रग के थे। यामु समयय मोठ बर्य की होगी। मैंने सुधीन बाबू से कहा कि मैं इस युवक से परिचित होना चाहता हूँ। सुधीन बाबू ने कहा कि मेरी श्री भियाह इस पर मपी हुई है परन्तु इसके कुछ ऐसे विष हैं जो हमारी समिति में नहीं हैं। मैंने कहा कि घब डेर करने की आवश्यकता नहीं है। सुधीन बाबू कुछ डेर करना चाहते थे मिरिन मैंने कहा कि मैं आज ही उनसे मिलना चाहता हूँ। उध दिन तो नहीं परन्तु दो-एक दिन के धम्बर ही उनसे मेरा परिचय हो गया। इनका नाम था श्री यनीगुनाथ बाब। यह ही युवक बाद की सरबार भगतसिंह के साथ लाहौर पदार्थ के मामले में बिरपत्तार हुआ था और यही भारतभय का सबसे पहला व्यक्ति था जिसने गुल हड़ताल करके राजनीतिक बन्धियों की माँग पूरी कराने में अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। प्रधान रूप से इन्हीं बलिदान के परिणामस्वरूप

## घातकों का संबंध

भारतवर्ष में राजनैतिक बन्धियों के साथ विशेष करने आत्मिकारी घातकोत्म के सम्पर्क में कर दिये गए व्यक्तियों के साथ ब्रिटिश भारत के जेलों में प्रस्था बर्ताव होने लगा था। घात इस पुरानी बात का स्मरण करते समय मुझे ऐसी स्थापा का अनुभव होता है कि मैंने उस दिन किसी घातमी को ठीक-ठीक पहचाना था। राह चलते हुए जिस युवक के प्रति कोई एकाएक आक्रुष्ट हो गया हो और वही युवक बाद को पतनीनतापदास हुआ हो इस बात से किसे स्थापा का अनुभव न होगा ?

पच-सह करने के काम के लिए मुझे कुछ घस्त्रों की आवश्यकता थी। मुक्त प्रांत और पंजाब में मेरे पास कुछ घस्त्र थे लेकिन मैं उन्हें बंवास में नहीं भेजना चाहता था। अगर अनुशीलन समिति के नेतागण मुझे घस्त्र-घस्त्र की सहायता देने के इच्छुक न थे। मैंने देखा कि अनुशीलन समिति के नेताओं से मेरी पट नहीं रही है। अनुशीलनसमिति के नेताओं ने भी देखा कि मैं भी अपनी नीति से हटनेवाला व्यक्ति नहीं हूँ। अतः ऐसा ठहरा कि मैं दो-एक महीने तक और ठहर जाऊँ और अपनी नीति को कार्यरूप में परिणत न करूँ। इस बीच मैंने सोच जानी नाट बनाने का काम करके क्योंकि उन्हें घाता है कि उन्हें इस काम में सफलता प्राप्त होगी। इस प्रस्ताव के अनुसार बोझे दिनों के लिए शांत रहना मैंने स्वीकार कर लिया। लेकिन मैं यह धम्की तरह से जानता था कि मोट बनाने के कार्य में वे सफल नहीं होंगे। जब तक बो-सीन मोट मेरे पास आए परन्तु वे बहुत ही बराब थे, वे मोट बाजार में आम नहीं सकते थे। मैंने शांत रहना तो स्वीकार कर लिया लेकिन अपने कार्य की तैयारी स्वगित नहीं की। जिस दिन मैं बाका बाजना था वही की स्थिति को पूर्णरूप से समझने के लिए मैंने अपने घातमी भेजे एवं उनकी रिपोर्टों की जाँच करने के लिए मैं स्वयम् उन स्थानों पर गया। जिस रास्ते से जाना है वही मोटना है किम मोकों पर किराए के मकान सेना है। वहाँ के बाद किम मोके पर अपने घस्त्र-घस्त्राधि को छोड़ देना है। कहीं पर मोटरकार या सक्ती है और कहीं पर स्थानों को साकर रखना है। इन सब कार्यों के लिए कितने व्यक्तियों की आवश्यकता है जिस दिन मैं कितना खयाल मिल सकता है पंजाब घातमी बन्दई मेस को किस स्थान पर रोका जाएगा, फिर वहाँ से कैसे हम सोय आया करने है। बाद भागेंगे इन सब बातों की जाँच हुई और प्रबन्ध होने लगा।

इस मुक्त समुष्ट करने के लिए एवं मेरी नीति और अनुशीलन समिति के दूसरे नेताओं की नीतियों में समझौता कराने के लिए एक मीटिंग हुई। बहरमपुर

तक ग्रहण कर रहे हैं। मदनसिंह की मीटिंग के प्रवक्ता पर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की नीति से समझबूझ के बिना सिद्धान्त ग्रहण किये गए थे उन्हें वे उस समय नहीं ग्रहण कर पाए थे।

मदनसिंह की मीटिंग रात भर होती रही लेकिन मेरी समझ में उस मीटिंग में किसी विशेष महत्वपूर्ण बात का निष्पत्ति नहीं हो पाया था। कुछ समय तक मैंने उन लोगों की बातचीत में सह्य भाग लिया परन्तु जब मैं देखा कि बात में बात बढ़ जाती है और काम की बात कुछ नहीं हो पाती तो मैंने और अधिक बातचीत करना उचित नहीं समझा। एता मासूम पड़ता था कि राजनैतिक परिस्थितियों से कंठ साफ उठता था सन्तुष्ट है। उन परिस्थितियों के पन्तरास में कौन-कौन सी शक्तों प्रवृत्त रूप से कार्य कर रही हैं। भविष्य में इन परिस्थितियों के रूप कैसे पस्टा चार्ज जनसाधारण के सामने किस प्रकार अपने सिद्धान्तों को रखना आवश्यक है जिससे भारतीय राष्ट्रीय धाम्नीजन का स्वतन्त्रता का एक जनसाधारण पर प्रभाव नेताओं के नेतृत्व की अपेक्षा कमिश्नरियों के निर्देशों का प्रभाव अधिक-से-अधिक विलक्षण हो सके इन सब बातों का मर्म अनुशीलन मिति के नेतृत्व उपलब्ध नहीं कर पाए थे। जातिकारी धाम्नीजन में ऐसे व्यक्तियों का नितास्त समावेश होने का कारण भारतीय राजनीति पर उस धाम्नीजन का उतना प्रभाव नहीं दिखाई पड़ा जितना कि उचित रूप से पड़ना चाहिए था।

मदनसिंह की मीटिंग में बंगाल युक्त प्रांत एवं पंजाब के संगठन का समस्त कार्यभार मेरे ऊपर छोड़ दिया गया।

वर्षा ऋतु का धनी प्रवक्ता नहीं हुआ था। वायुमंडल बाप्य भार से बसा हुआ रहा था। प्रकृति में तारी के धाबिक के कारण मनुष्यों के मन नीरस हो रहे थे। धीमे ऋतु के धम में जैसे मल-नीरस रक्त को देखने के लिए मनुष्य तरस जाते हैं वर्षा ऋतु के धम में जैसे ही वे नीरस बल से ऊपर नियम धाका में सूर्य का प्रकाश देखने के लिए भंगल हो उठते हैं। उत्तर भारत के निवासियों के लिए तो यह एक साधारण बात है। परन्तु वर्षा ऋतु के धम में बंगाल एवं बिंदु करके पूर्व बंगाल सदा स्नेहा सजस तन्मूहि और जलाशयों के ऊपर घलमान धारा सन्धानों की देखकर उत्तर भारत के निवासी बिस्मय पुनर्चित हो जाते हैं और ध्यातु भी हो उठते हैं।

बंगाल में जितनी महिला हैं आरम्भिक घर में इतनी और नहीं नहीं

पिलेंदी। यानो उस बेड़ की नदियों का बाध बिछा हुआ है पूर्व बंगाल में बिजने स्टीमर चलते हैं उतने भारतव्य भर में घोर कहीं नहीं। बर्षा ऋतु में तो स्टीमर घोर नावों की सहायता के बिना कहीं भी आना-जाना सम्भव ही नहीं।

नौका पर यात्रा की सोचा एवं उसके संकटों का कुछ भी आभास इन सेखों से नहीं मिल सकता। यात्रा की परिपाटी से कल्पना का उद्रेक हो सकता है। परन्तु कल्पना घोर वास्तविकता में आकाश-पाताल का अन्तर है। नदी के किनारे किनारे नौका चल रही है। इतने में पास से स्टीमर निकल गया। स्टीमर के अधिक समीप रहने में नौका को अत्यन्त खतरा रहता है। घोर अधिक दूरी पर रहने से भी स्टीमर के निकलने से जो उत्साह तर्गें उत्पन्न होती हैं उनका सामना करना पड़ता है। पूर्व बंगाल के नाविकों को इस बात का बहुत ध्यान रहता है। नौका के पास में तरंगों का आबाध होने से उसके उलट जाने की विशेष सम्भावना रहती है। इसीलिए सबसे तरंगों को घाते हुए देखाकर अपनी नावों के सम्मुख भागों को उन तरंगों की घोर मोड़ बैठे हैं एवं इस प्रकार से नावों को बसाते हैं कि शोकाय मान होने पर भी उनके उलटने की संभावना बहुत कम रह जाती है।

बैसाख के महीने में तो इतनी आधियाँ घाती हैं कि नौका पर यात्रा करना असम्भव होता है। नावें अक्सर पाल समाकर चलती हैं घोर बरासी बूझ के कारण एक भौंके से ही वे उलट सकती हैं। नावों का उपयोग करने में पूर्व बंगाल के नाविक बहुत ही अनुभवी होते हैं। सहर की सड़कों पर जिस प्रकार इक्के-साँवे तथा मोटरों के आगस में सड़ जाने की सवा आशंका बनी रहती है उसी प्रकार पूर्व बंगाल में नदियों पर नावों के आगस में सड़ जाने की सवा आशंका बनी रहती है। जैसे सहरों में सड़कों के ओराहे होते हैं उसी प्रकार पूर्व बंगाल में नदियों के भी ओराहे होते हैं। बंगाल में इन्हें मोहाना कहते हैं। ऐसे मोहानों पर नावों के लिए खतरा रहता है। किसी-किसी मोहाने के लिए नाविकों में ऐसी किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं कि समुद्र स्थान पर प्रायः नावें डूब जाती हैं। उन स्थानों से गुजरते समय पूर्व बंगाल के मुसलमान नाविकमण भी नदियों की बेधियों की प्रार्थना करने लगते हैं। पूर्व बंगाल के प्रायः सभी मस्जिदें मुसलमान होते हैं। परन्तु सबके के समय देव देवी बिम्ब धारिक के भी वे पुजायी बन जाते हैं। इंग्लैंड के प्रसिद्ध ऐतिहासिक ब्रुक साहब का कहना है कि समुद्र घोर नदियों में प्रकृति के निष्ठुर एवं अभिघातित आचरणों के कारण नाविक में कुसंस्कार की भावा प्रत्यक्ष अधिक

होती है। सम्भव है इस सिद्धांत में कुछ सत्यता हो।

मैं वर्षा ऋतु के अंत में नाब पर मैसनसिंह आया था एवं इसके पहले भी मुझे एवं बंगाल एक घाघ बड़े घाना पड़ा था। इन घबसरो पर पूर्व बंगाल के गौका रोहण के रहस्य से कुछ-कुछ परिचित हुआ था। गौका पर बसते हुए किसी किसी मोहामे पर माबिको की मानसिक उत्कठा को देखकर हमारे मन में भी एक मानसिक उद्वेग उत्पन्न हो जाता था कभी-कभी ऐसे घबसरो पर यह स्रका उत्पन्न हो जाती थी कि ब्रिटिश पुलिस के नियंत्रित से तो कृतकारा था गए परन्तु अब इन बड़ी-बेबियों के हाथ से निष्कृति पाना दुष्कर है। मस्साहों एवं माबियों में बातचीत होने लगती है कि अब सब हम स्थानों पर कौन-कौन मस्साह किन-किन माबियों को लेकर नदी मार्ग से विसृष्ट हो गए थे। ऐसी परिस्थिति में कुतस्कार विमुक्त साहसी पुरुषों के हृदयों में भी मुहूर्त भर के लिए तो एक धम्वन्त शंका उपस्थित हो ही जाती है। भूह से तो हंसते रहते हैं और मूक जनता के कुतस्कारों पर घबरा घबराए एवं घबरेलना की कृपा दृष्टि बाधते हैं और अपने को उनसे अलग समझते हैं परन्तु हृदय के गुप्त कम्बर में एक अनिर्वच्य भय बना रहता है कि कहीं डूब न जाएं। कभी-कभी साफा-सफा में जब काल-काले मन बाधस दिखाई देने लगते हैं तो भी मन में कुछ कम सका वंश नहीं होती। इन बातों से मस्साह उतना नहीं डरते थे जितना मैं डरता था।

पश्चिम देश के निवासी इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि वर्षा ऋतु में पूर्व बंगाल के माँब और कस्मे जैसे समुद्रवत पानी के बीच में टापू से तैरते रहते हैं, हजारों बीघा भूमि पानी में डूब जाती है। परन्तु उस भूमि का धान पुरछामर पानी से बो-बाई हाथ ऊपर निकला रहता है। इन जाल के छेतों के बीच से मार्ग बना करती हैं। न जाने मस्साह इन पानी से भरे हुए छेतों के बीच से अपने रास्ते का निर्भय कैसे करते हैं। बंगाल की नारों पर छप्पर लगे रहते हैं इन छप्परों के नीचे पाराम से बैठने और भेटन का स्थान रहता है। हम नबी में बसते हुए छप्पर के नीचे पाराम से सेते हुए थे। न जाने कब-कब की छोड़कर किसी माँब की ओर चलने लगे धान के छेतों के बीच से रास्ता बनाते हुए माब चलने लगी धान के पौधी के साथ नाब के पारबैर और उसके छप्पर के लगने से सर-सर-सी आवाज सुनकर जब मैंने छप्पर के नीचे के माब के घाये की ओर बहकर सामने देखा तो देखता हूँ धान के छेतों में कहीं छिप गए हैं। एक लम्बे से बाँस की सहायता से मस्साह पानी

के नीचे की भूमि को ढकेलते हुए घागी माब को भागे बढ़ा रहा है। मैं छप्पर के नीचे से निकलकर माब के बाहरी भाग पर उड़ा हो गया तो क्या देखता हूँ कि चारों तरफ घनत्व की घोग घाग के नीचे विस्तृत हैं। और बीच-बीच में कुछ बड़-बड़े बूख भी दिखाई देते हैं। गमक है यस्ताह इन्हीं बूख तथा बगीचों को देख कर अपने रास्ते का नियम करता हूँ। बगी-बगी दूसरी घोग से घाय माबों को भी घाले बाते देखते थे। इसी प्रकार बेटों के बीच में माबों पर बसते-बसते एक साड़ी के घन्दर धा गए। यह स्थान स्वप्न-लोक का मामूम पड़ता था। साड़ी दोनों ओर से बूखों में घिरी हुई थी। दोपहर के समय भी चारों दिशाओं में सूर्य की दीप्ति रहते हुए भी बूखों में घिरी हुई इस साड़ी के घन्दर धँकेरा-सा लय रहा था। घौप्यासिकों को मुक्ति मिताम्य काव्यनिक नहीं होती। हम पद्मग्रफारी पथ त्रिदिश सामाग्य के बिच्छू घंघों की पस्तनों घोग पुमिस की घुट्टि वधाते हुए इस प्रकार मद-नदी और आड़ियों के बीच स्वप्नवत घूमते-घूमते ममनसिह के एक माब को गए और लौट आए।

ममनसिह के गाँव में जिस मकान में हम सोम ठहरे थे उसके किचने ही कमरे बाँसों के मकानों के ऊपर बने हुए थे। इस समय पानी तो हट गया था परन्तु समस्त स्थान सँवार से घरे हुए थे। इस दृश्य ने मनुष्य व्याकुल हो उठता है। घुल घीगिंग होने के बाद इस मकान में हम सोगों को एक रात और रहना पड़ा था। घनुषीसन समिति के एक नेता श्री प्रनुम मांमुखी और मैंने एक ही कमरे में रात्रि व्यतीत की थी। एक रात बमने के बाद दूसरी रात हम सोम बूब सोने। पुमिस हम सोगों की सोम में थी। बगाम घाबिनेस के घमुसार हम सोग गिर पजार किये जा सकते थे। हम सागों के बार्दत नाम से निकले हुए थे। छोटे समय प्रनुम बाबू ने दो मनुष्यों को बारी-बारी से पहले में एक बिबा था।

मीटिंग का सब काम समाप्त होने पर मैं और प्रनुम बाबू कलकत्ता बापस लौटे। मेरे साथ बंमबाणी नामक प्रसिद्ध बँगला मासिक पत्र के कुछ घंघ थे। इनमें मेरे मित्रे हुए बगदी जीवन के त्रितीय भाग के कुछ घंघ छपे थे। रास्ते में मैंने प्रनुम बाबू को अपने मित्रे हुए इन घंघों को पढ़कर सुनाया।

प्रनुम बाबू चाहते थे कि मैं उनके साथ कलकत्ता को बापस जाते हुए बंमाम के कुछ बिबों में जाऊँ। मैं जानता था कि प्रनुम बाबू को बंगाल की सुधिया से कुछ से पढचानती है। और मैं यह भी जानता था कि बंगाल की



अधिकांश पुमिस मुझे नहीं पहचानती। इसलिये मैं प्रतुल बाबू के साथ नहीं जाना चाहता था। प्रतुल बाबू ने मुझे अपने साथ से जाने के लिए बहुत अनुरोध किया परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया। बाहिर में हुआ वही। मैं तो अपने स्थान पर सकुपस पहुँच गया लेकिन प्रतुल बाबू घूमते घूमते एक स्थान पर गिरफ्तार हो गए।

कलकत्ता पहुँचकर मैंने अनुशीलन समिति के दूसरे सदस्यों को फिर नये स्थान से सम्मानना चाहा कि हम सब प्रतुल बाबू की तरह एक-एक करके गिरफ्तार हो जाएँ और काम कुछ भी न कर पाएँ। इसलिये हमारे कार्यक्रम में हीन ही ऐसा परिवर्तन आवश्यक है जिससे गिरफ्तार होने के पहले हम लोग कुछ कर सकें और भारतवर्ष के स्वतन्त्रता-संघाम को धावे लगा सकें।

मैमनसिंह से सीटों के समय रास्ते में प्रतुल बाबू हैं। मेरी जो कुछ बातचीत हुई उससे मैंने अनुमति किया था कि प्रतुल बाबू उस समय तक कम्युनिज्म आदि सिद्धान्तों से परिचित नहीं थे। भारतीय समाज के नव आग्रह से राजनीतिक क्षेत्र में नवीन चेतना का बीजे संचार होगा जैसे ही साहित्य जमा ऐतिहासिक नये पन्ना दार्शनिक सिद्धान्तों तथा आधुनिक भावनाओं में भी सुमान्तकारी परिवर्तन हूँ। इस बात से अनभिज्ञ रहने के कारण प्रतुल बाबू और उनके साथी राजनीतिक क्षेत्र के एक तन वायरे के अन्धर ही अपने निश्चित कार्यक्रम में निरत रहते थे। मैमनसिंह से वापस सीटों के समय मैंने प्रतुल बाबू को अपने कुछ लेख पढ़कर सुनाए थे। इन लेखों में कुछ दार्शनिक बातों की भी चर्चा थी। प्रतुल बाबू इन सब बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। कम्युनिस्ट नेतागण इस बात को मसी प्रकार समझ गए हैं कि दार्शनिक विचार भूमि पर जिस सिद्धान्त की प्रतिष्ठा नहीं हुई है उसकी उपशोभिता तथा उसका स्थायित्व समझ-मुक्त है। समाज का सर्वांगीण विकास सभी सम्भव है जब एक सुनिश्चित एवं सुविन्यस्त विचारपाठ के आधार पर उसकी अभिव्यक्ति होती है। कम्युनिज्म के इस दृष्टिकोण से भारतीय नवमुक्तकाल आज भी अन्धरी तरह परिचित नहीं है।

कलकत्ता वापस आकर मैंने सब जगहों से अपने इस न कार्यकर्ताओं को बुलाना प्रारम्भ कर दिया। अधिकांश कार्यकर्ता उग्र कार्यक्रम के परा में थे। हमारे सामने प्रश्न यह था कि एक घोर तो सरकार ने बिना मुनबया जमाए हम लोगों को पकड़-पकड़कर जेलों में बन्द करना प्रारम्भ कर दिया था और दूसरी ओर अनुशीलन समिति के पुराने नेतागण जमा कोई काम करना नहीं चाहते थे जिससे

जनता में जागृतकारी भावनाओं का यथेष्ट प्रचार होता। मैं यह समझता था कि सर्वोच्च रूप से विस्तारपूर्वक युक्तिपूर्ण छात्रमयी शक्तों के द्वारा जागृतकारी सिद्धांतों का प्रचार होना परम आवश्यक है एवं इसके साथ-साथ धर्म-समूह के लिए ऐसी यही व्यक्तियों पर ढकती न आसकर सरकारी सम्पत्ति को लूटने का प्रवृत्ति करना पड़गा। अनुशीलन के माध्य मेंतामन इन बात से सहमत नहीं हो रहे थे। परन्तु मैंने स्वतन्त्र रूप से इन सब बातों का प्रवृत्ति करना प्रारम्भ कर दिया।

मैंमनसिंह समा के निषयके अनुसार अनुशीलन समिति के पुराने कार्यकर्ताओं ने अपने अपने क्षेत्रों में सब सदस्यों का मेरे साथ परिचय कराना प्रारम्भ कर दिया। इसके प्रतिरिक्त बंगाल ने हुसने जागृतकारी शक्तों के नेताओं से मैंने स्वतन्त्र रूप से मिलना प्रारम्भ किया। इस सम्बन्ध में चटर्गोष के एक दल के मुख्य व्यक्तियों के साथ मेरा परिचय हुआ। मूलकान्त सेन इस दल के प्रमुख नेता थे। इनके दो-तीन विद्यार्थी सामियों से मेरी बातचीत हुई थी। यह दल अनुशीलन समिति की ही एक शाखा थी। अनुशीलन समिति की नीति से ऊबकर इस दल ने उस समिति से अपने को अलग कर लिया था। यह सब भी मेरी ही तरह उस नीति का पक्ष पाली था। इन लोगों से बातचीत करके मैंने ऐसा अनुभव किया कि इनसे मेरी पट आगयी। श्री मुर्रसेन के विद्यार्थी आदमियों से मेरी बहुत कुछ बातचीत हो गई। कलकत्ता के अन्य दल के भी कुछ व्यक्ति चटर्गोष के दल के साथ काम करने लगे थे। इनसे भी मेरी बातचीत हुई। इन सब बातचीतों के परिणाम में उत्तर भारत के दल के साथ इनका सम्पर्क-हो गया और जब ब्रिजेश्वर में एक दल का कारखाना पकड़ा गया तो उसमें हमारे दल के प्रमुख कार्यकर्ता अमरसिंह राजेग्रनाथ साहिब भी मिरपत्तार हुए थे। मैं चाहता था कि हम कलकत्ता के दूसरे जागृतकारी शक्तों को भी अपने साथ मिलाकर एक विराट दल बना लें। इस कार्य के सम्बन्ध में मैं बहुत-से शक्तों ने कार्यकर्ताओं से मिला हुआ शोर मैंने यह निश्चय कर लिया कि जागृतकारी दल की शोर स परफेक्ट बटि आएगी। मैं चाहता था कि पहले पक्ष में जागृतकारी आन्दोलन के कार्यक्रम की एक रूप रेखा प्रकट हो जाय। मेरे प्रति बड़ों के साथ के अन्तराल में यह भावना सदा बनी रहती थी कि अपने पक्ष में किस श्रेण में अपने अन्तर्गत की प्रभावोत्पादक बन से कहूँ। एक दिन मैं अपने एक साथी को मकान में बैठा था। उनके बड़े भाई भी उच्च कमरे में-जैसे थे वो कमरा के एक कोने के इतिहास के प्रोफेसर थे। उ -

छोटे छोटे स्टेपों पर भी पुलिस की कुछ निगरानी रहती थी। इन लोगों की भाँति बचाकर मुझे बहरमपुर जाना था। मुझे ऐसा भी समझ ही रहा कि पुलिसवाले मुझे कतकता में जोरों से दूँगे सगे हैं। ऐसी अवस्था में जैसे मैं कतकता के बाहर निकल गया धीरे-सकुशल बापस आ गया इसका मानुषिक वर्णन करना मैं मात्र भी सक्षित नहीं समझता हूँ।

बहरमपुर की पुष्प बँलक में भाप लेकर लौट आने के बाद मैं अपने बंधन धीरे-उत्कृष्ट भावों को धारण बढ़ाने में लग गया। बनारस के अपने पुछने वाली भी मिलेगा मुझसे के छोटे भाई भी बीरेन्द्र मुझसे की बात में पहले भी कर चुका हूँ। उनको अपने दल में सम्मिलित करने का मेरा प्रयत्न निरन्तर बना हुआ था।

इतने आशयों के ऐसे हुए भी मैं क्यों बीरेन्द्र के पीछे इतना समय नष्ट कर रहा था। इसका एक कारण तो यह था कि बीरेन्द्र विज्ञान के बहुत प्रशिक्षण थे। हम लोगों में ऐसे व्यक्ति बहुत कम के बिना तब हो बुद्धिमत्ता हो छात्र हो बुद्धिमत्ता हो एवं जो विद्या-बुद्धि-सम्पन्न हो धीरे-विज्ञान का छात्र हो। यदि मैं बीरेन्द्र को आश्रितकारी बना लेता तो उनमें उन सब गुणों का समानेस हमपा लकते थे। दूसरी बात यह भी कि मेरे हमारे परिचित लोगों में है थे। इलाहाबाद में उन्होंने मुझसे राजनीति में आने की प्रवण इच्छा प्रकट की थी। इधर प्रवण ब्रिटिश साम्राज्य की उपस्थिति पुलिस व्यक्ति मेरा पीछा कर रही थी। ऐसी अवस्था में मेरे साथ सम्बन्ध रखने में बीरेन्द्र अनिच्छुक नहीं थे। उनके बीता व्यक्ति जिस किसी काम में जुट आएगा उसी में लक्ष्यता प्राप्त करेगा ऐसी मेरी धारणा थी। इसलिए मैं उनको अपने दल में लाने की भाषा से बार-बार उनके पास जाता था।

अन-सामान्य की तरह बीरेन्द्र भी यही समझते थे कि आश्रितकारियों में विचारवान भविष्य समझार व्यक्ति नहीं होते हैं। कुछ धर्मोपदेशित उन्नेता प्रवण अविवेक किन्तु बाहरी वैराग्य बुद्धिमान्य अक्षिप्त होकर अक्षयस्थित रूप से आश्रितकारी बन गए हैं। यथार्थ में विराट रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए न कोई संकल्प ही है धीरे न कोई ऐसी भावना ही है। मेरी लिखी 'बन्दी जीवन' पुस्तक ऐसी कुछ पुस्तकों के प्रकाशित होने के बाद ही अन-सामान्य को चौड़ा-बहुत पता लगा कि भारत में भी एक व्यापक विद्रोह की प्रवेष्टा बन रही थी। मेरे संस्पर्श में आकर बीरेन्द्र को भी अपना अम मासूम पड़ा कि भारतीय आश्रितकारी आन्दोलन निरावस्था नहीं है। परंतु

उनकी गांधी प्रीति उन्हें हमारे दल में घाने से रोक रही थी। यदि किसी दिन तुम उस दल के बाहर में उन्हें कुछ झुकता हुआ पाता या तो किसी दूसरे दिन पुनः वहीं पुराना ठक सड़ा हो जाता या। धीरे-धीरे बार-बार इस बात पर जोर देते कि अहिंसा नीति पर ही विराट् जन-आन्दोलन की सृष्टि हो सकती है जैसी महात्मा जी ने की है। उनके समझने पर भी मैं यह नहीं समझ पाता कि विराट् रूप से जन-आन्दोलन करने के लिए अहिंसा के सिद्धान्त पर इतना अधिक जोर डालने की क्या आवश्यकता है। महात्माजी ॥ कथनानुसार यह बात सत्य नहीं है कि व्यक्तिगत जीवन में जैसा हम अपनी समस्या के परिणाम में अहिंसा के द्वारा हिसा को जीत सकते हैं उसी तरह से समस्या न करके ही प्रसन्न जनसाधारण स्थूल दृष्टि से अहिंसक रहने पर कैसे हिसा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। ममत्व बोध का पूर्ण रीति से बिना त्याग किए कोई भी मनुष्य यथार्थ में अहिंसक नहीं हो सकता है। ममत्व बोध का त्यागना जीवनभर की समस्या का परिणाम होता है। जनसाधारण से ऐसी समस्या की भांति हम कैसे कर सकते हैं फिर परिपूर्ण समस्या के बाहर जो कुछ प्राप्त की जाती है उस सिद्धि को पहले ही भाँचे रास्ते में ही हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इन सब कारणों से सैद्धांतिक रूप से हम अहिंसा नीति का प्रयोग राजनीति के क्षेत्र में नहीं कर सकते। इसका अर्थ यह नहीं है कि हिसा के मार्ग पर ही हम जन-आन्दोलन को चला सकते हैं हमारे पास अस्त्र नहीं हैं इस लिए हम बाध्य होकर जन-आन्दोलन को ऐसे मार्ग पर चला देंगे जिसमें अस्त्र की आवश्यकता नहीं होगी। महात्माजी की मनोकामना तो यह है कि सत्ता को अहिंसा स्वीकृत नवीन बर्ग देकर अपने जीवन को साचक बनाएँ। इस नवीन बर्ग प्रचार के सामने भारत की स्वतन्त्रता का प्रश्न निराल्प तुच्छ बन गया है परन्तु पिछले महायुद्ध के अवसर पर ब्रिटिश सरकार को जब उन्हें जन की सहायता देकर महात्माजी ने कैसे अहिंसानीति का पालन किया यह बहुतों के लिए निराल्प तुच्छ है। मरे ऐसे अग्रिमकारी के निकट अहिंसा के प्रश्न की भीमंश। इस प्रकार है कि जैसे एक प्रवीण चिकित्सक रोगी की मंगल-कामना से प्रेरित होकर उसकी रूढ़ पर बल-प्रयोग प्रयोगात्मक करता है तो इस आचरण को कोई भी सुधी जन हिंसामक नहीं कह सकता। उसी तरह यदि कोई क्रांतिकारी सरमत्तापूर्वक युद्ध रूप से निरहंकार होने की प्रवृत्ति प्रेरित करते हुए समाज की अस्थायी कामना से प्रेरित होकर सत्ता प्रयोग के लिए अहंकार करता है तो वह भी हिंसा नहीं है। सत्ता प्रयोग का

मान्योत्तम उचित है या नहीं, हिंसा-अहिंसा के प्रश्न के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। भारतीय दार्शनिक दृष्टि से हम यह कह सकते हैं कि जो व्यक्ति ममता बोध का अतिक्रम कर चुका है उसके निकट हिंसा अथवा अहिंसा ममत्व बोध तक ही सीमित है। जिस सामक का ममत्व बोध भुत्त हो गया है और उसका जीवन सकल मानव-समाज की सेवा करना है उसका व्यक्तित्व मानव-समाज से भिन्न नहीं है। चीन-सा जन्म मानव-कल्याण के समुत्तम है वह भी एक स्वतन्त्र प्रश्न है और इसके साथ भी हिंसा-अहिंसा का कोई सम्बन्ध नहीं है। कल्याण-अकल्याण की चारणा भी हिंसा और अहिंसा नीति पर अवलम्बित नहीं है। अर्थात् समाज की कल्याण कामना से यदि हम ऐसे मार्ग का अवलम्बन करते हैं जिसमें बन्ध का प्रयोग हो तो उसको हम हिंसारमक जाचरण नहीं कह सकते। समाज अथवा राष्ट्र का परिपालन सभी सुबाध रूप से सम्भव हो सकता है जब आवश्यकता पड़े पर हम उपयुक्त नीति उद्देश्य का प्रयोग कर सकें। इससे यह तालार्थ निकालना उचित न होगा कि संसार में शान्ति की आवश्यकता नहीं है अथवा शान्ति से संपन्न प्रपिक प्रेयस्कर है। संसार में शान्ति की इच्छा सभी करते हैं। परन्तु यह शान्ति सभी संभव है जब मनुष्यों के आपरण एक-दूसरे के प्रति न्याययुक्त हों। स्वार्थ बुद्धि ही संसार में सब अन्धों का मूल है। जब तक संसार के समस्त मनुष्य स्वार्थ भेष धून्य न हो जाएं तब तक संसार में शान्ति संभव नहीं है। इस प्रकार मनुष्य चरित्र में सद्योचन किए बिना केवल अहिंसा नीति के प्रचार से हम संसार में शान्ति नहीं ला सकते। आध्यात्मिक बुद्धि से जब तक हम एक परिपूर्ण जीवनार्थ का विकास नहीं करते तब तक संसार में शान्ति संभव नहीं है।

कोरिया में चीन में विषय में आयरलैंड में तथा कस के आयाय प्रदेयों में भी तो विवाद रूप से आन्दोलन हुए हैं। वही तो हिंसा-अहिंसा नीति पर भारतवर्ष की तरह व्यर्थ की चर्चा नहीं होती थी। अनान्दोलन को सफल बनाने के लिए अहिंसा नीति को इतना अधिक महत्त्व देना आवश्यकता का सद्यः मामलूम पड़ता है। परन्तु धीरे-धीरे मेरा आप-विवाद कमता रहा और अन्त में मैं हमारे दल में सम्मिलित होने के लिए प्रस्तुत हो गए। उनकी अमेरिका जाने की तैयारी होने लगी। मैं ऐसा अनुमान कर रहा था कि भारतवर्ष में रहते हुए शान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने से धीरे-धीरे कुछ हिंसक रहे थे। सम्भव है यह ऐसा सोच रहे हों कि भारत में शान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने से मैं कुछ कर भी नहीं पाएँगे और व्यर्थ के

लिए उन्हें कठिन दृष्टि योग्यता पड़ना। और विवेक जाने में एक रोमांचकारी जीवनवापन की घाटा बनती है। यह संतोष उत्पन्न होता है कि इस प्रकार से अपना जीवन किसी न किसी प्रकार सफल होगा। मैं घाटा कर रहा था कि इस सामर्थ्य से धीरे-धीरे हमारे मन में सम्मिश्रित हो जाएंगे। मेरी घाटा सफल हो गई।

घाज हमारे बही पुराने साथी की धीरे-धीरे मुकामी कट्टर नास्तिकवादी हो गए हैं। कम्युनिस्ट सिद्धान्त के आधार पर काम करना चाहते हैं। इस दिन वह कट्टर गांधी वक्त बन गए थे। घाज उसी तरह के कट्टर कम्युनिस्ट पग्यी बन गए। मैंने एक व्यक्ति विशेष को लेकर अपनी घासोपना एक विशेष कारणवश की है।

धीरे-धीरे के लिए जहाज में बॉय (Boy) के काम की व्यवस्था हो गई। घने रिकॉ की तरह जाने वाले एक जहाज में धीरे-धीरे काम करने वाले थे। जहाज के खाना होने का दिन भी निश्चित हो गया। मैंने उन्हें बड़ी कठिनाता से पाँच सौ रुपये जमा करके दिए। जाने का दिन ज्यों-ज्यों निकट जाने लगा त्यों-त्यों धीरे-धीरे उदास से होने लगे। एक दिन एकाएक मजबूत हुए धीरे-धीरे मेरे पास आ सड़े हुए। धीरे-धीरे ने बताया कि वह पाँच सौ रुपये बैंक में लेकर एक्सचेंज के दफ्तर को वहाँ के रुपयों को अमेरिका के बाजारों में बदलवाने का रहे थे कि ट्राम से उतरकर धीरे-धीरे ने देखा कि उनकी बैंक बंद गई है। निराशा कोष एवं एक प्रकार की सम्मिश्र प्रथा भीतर ही भीतर मुझे एकदम बेचैन करने लगी। मैं क्या कहूँ और क्या न कहूँ। पाली ई भयना मारपीट करने लगीं का उन्हें पकड़कर बसपूर्वक लूट हिता डालूँ। मैं बिजुस होकर बार-बार उनके घापाय मस्तक का घसहाम के रूप में निरीक्षण कर रहा था। और ईश्वर की इच्छा से मैंने अपने को सम्मान लिया। धान्य और बुद्धि-वित्त होकर मैंने धीरे-धीरे से फिर कहा, "कोई पवाई नहीं है यदि तुम अब भी जाने के लिए प्रस्तुत हो तो मैं फिर रुपयों का प्रबन्ध अभी कर डालूँगा। जो क्या है जाने दो। परन्तु इतना खयाल तुम्हें इस सापरवाही से क्रमोज की खेब में न ले जाना चाहिए था।" मनोविज्ञान की प्राधुनिकतम शाखा में ऐसा कहा गया है कि मन के घनस्तन में घनेतन मन में खंका एवं द्विधा रहने के कारण मनुष्यों के प्राचरण बहुत विचित्र होने लगते हैं। यदि धीरे-धीरे परिपूर्ण हृदय से हमारे काम में आकर सम्मिश्रित हुए होते तो इस सापरवाही से के कभी इस दयने को न ले जात।



कुछ पूरक तथ्य



बड़ा संकल्प है वह लोगों को आगे बढ़ा सकने दिया जाए, जब हमारे देश में विदेशी  
 शासन-संघ बा। लेकिन का खड़े सब यह था कि भारत की स्वाधीनता के लिए हमने और उनके  
 नाबिकों ने मरणात्मक शक्ति का जो प्रयोग किया था उसका विफल फल का सम्मुख उपस्थित  
 कर दे, जिससे प्रेरित होकर अन्य भारतीय युवक भी इन प्रयासों में भागलए हैं और ॥॥ प्रकार  
 रक्षा मला आ-इतलन शक्तिराशी बन सके।

किन्तु इस समय सभी कठनायों को मक्का स्पष्ट रूप से नहीं लिया जा सकत था,  
 क्योंकि इसमें अनेक व्यक्तियों के आपत्तिप्रम हो जाने का भय था। इसलिए भी राष्ट्रीय दाम्  
 को अनेक बदनाय जियानी परी है और अनेक व्यक्ति ० क दुर्भाग्यवाम लिखने पड़े हैं।  
 भारत का स्वाधीनता क परकार हमारा देश क अन्य कानिकारी महानुभावों ने जो-जो संभव,  
 इतिहास आदि लिख है उनके सम्मुख बर बाधा नहीं थी। उन्होंने सभी कुछ रत क रूप से  
 लिख है और इमीतिर आम के मनन तथा भी प्रकाश में आ गया है किन्तु उर्ध्वम् बा  
 करने इस प्रम में प्रकट नहीं कर सकत था। बड़ा हम कुछ बने ही तब मंजूर करके दे  
 रहे हैं।

## हाडिंग्स बम काण्ड

'बली जीवन' की कहानी 'दिल्ली पब्लिशिंग केस' के पश्चात् से प्रारम्भ होती है। वास्तव में इस पब्लिशिंग केस के साथ ही उत्तर भारत के अन्धकारी शास्त्री मन का एक घम्याव समाप्त होता है और भ्रमना अध्याय प्रारम्भ होता है। यह पब्लिशिंग केस उन लोगों पर चलाया गया था, जो 23 दिसम्बर, 1912 को लार्ड हाडिंग्स पर बम फेंकने के अपराधी समझे गए थे। लार्ड हाडिंग्स पर जिस समय बम फेंका गया उस समय वह कसकट से दिल्ली राजधानी आए जाने के उपलक्ष में निकाले गए अपने दाही बस में एक हाथी पर घासीन थे। सन् 1905 में बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन के समय कसकट तथा बंगाल में जिस प्रकार विप्लव बकायी सक्रिय हो उठे थे उसी से प्रेरित होकर ब्रिटिश सरकार भारत की राजधानी कसकट से हटाकर दिल्ली लाई थी। इससे पूर्व सन् 1911 में जार्ज पंचम ने दिल्ली दरबार किया था और उसी में बंग बंग को रद्द करने की घोषणा की गई थी। उसके पश्चात् ही दिल्ली की राजधानी बनाने और इस सबतर पर ऐसी भूमिगत और प्रदर्शन करने का आयोजन किया गया जिससे भारतीय जनता और बिदेष्टों के भोक्तृत्व पर यह प्रभाव डाला जा सके कि भारतीय जनता पूर्णतया पंचेदी घासन की भक्त है और कहीं कुछ गड़बड़ नहीं है। किन्तु भारतीय जाति कारियों ने जिनमें श्री रासबिहारी बोस भी थे, लार्ड हाडिंग्स पर बम फेंककर सरकार की इस योजना पर पानी फेर दिया। बताया जाता है कि श्री रासबिहारी बोस के एक छापी श्री बसन्तकुमार विश्वास स्नी-बेप में एक ऐसे मकान की छत पर था बंठे जो बसुस के रास्ते में था। जैसे ही नावसराय का हाथी उस मकान के नीचे आया श्री विश्वास ने बम फेंक दिया। किन्तु नावसराय बच गए, केवल उसका एक भगवत्पद मारा गया। इसके पश्चात् ही बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुई।

बंगाली 'इंक्विरी' के वह नामों आग जग ममल लिखे गए, वह द्वारे देश में विविध शासक-तंत्र था। लेकिन वह उन्हें सब था कि भारत की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने और उनके साथियों ने सारा संप्रतिषेध जो प्रशमन किया था। उनका विचारण अन्तर्गत के सम्मुख उपस्थित कर है, जिससे प्रेरित होकर अन्य भारतीय युवक भी इन प्रयासों में सहभागी हैं और इस प्रकार स्वातंत्र्य आन्दोलन शक्तिशाली बन सके।

किन्तु इस समय सभी बटुआओं का समग्र स्वरूप रूप से नहीं लिखा जा सका था क्योंकि हममें अनेक व्यक्तियों के प्रतिपक्ष जो शान का सम था। इसीलिए श्री राजीन्द्र बाबू को अनेक परतर्पण क्षिप्रानी बड़ी है और अनेक व्यक्तियों के कृपित नाम लिखने पड़े हैं। भारत की स्वातंत्र्य के परचाहूँ हमारे देश के अन्य अन्विष्टता महासभाओं ने जो-जो सरासरी इतिहास आदि लिखे हैं उनके सम्मुख वह बाधा नहीं थी। उन्होंने सभी कुछ राख कर से लिखा है और इसीलिए आज वे अनेक तथ्य या प्रकारों में जा गए हैं जिनको राजीन्द्र बाबू अपने इस ग्रन्थ में प्रकट नहीं कर सकने के। यहाँ हम कुछ ऐसे ही तथ्य संप्रतिषेध करने दे रहे हैं।

## हार्लिंगज बम काण्ड

'बम्बी जीवन की कहानी' निम्नी पहलवान केस के पदचातु स प्रारम्भ होती है। वास्तव में इस पहलवान केस के साथ ही उत्तर भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक अध्याय समाप्त होता है और अगला अध्याय प्रारम्भ होता है। यह पहलवान केस उन लोगों पर चलाया गया था जो 23 दिसम्बर 1912 को साह हार्लिंग पर बम फेंकने के अपराधी समझे गए थे। साह हार्लिंग पर जिस समय बम फेंका गया उस समय वह कलकत्ते से दिल्ली राजधानी जाए जाने के उपलक्ष में निकाले गए अपने छोटी जुमूस में एक हाथी पर आसीन थे। सन् 1905 में बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन के समय कलकत्ता तथा बंगाल में जिस प्रकार हिंसक कार्रवाई चरित्र हो उठे थे उसी से प्रेरित होकर ब्रिटिश सरकार भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली लाई थी। इससे पूर्व सन् 1911 में, जब पंचम ने दिल्ली दरबार किया था और वही में बम भग को रद्द करने की घोषणा की गई थी। उसके पदचातु ही दिल्ली की राजधानी बनाने और इस घबराहट पर ऐसी जुमूस और प्रदर्शन करने का आयोजन किया गया जिससे भारतीय जनता और विदेशों के सौकरम पर यह प्रभाव डाला जा सके कि भारतीय जनता पूरवतया अंग्रेजी शासन की मजदूर है और वहाँ कुछ कहकर नहीं है। किन्तु भारतीय क्रान्तिकारियों ने जिनमें श्री रामबिहारी बोस भी थे, साह हार्लिंग पर बम फेंककर सरकार की इन योजना पर पानी फेर दिया। बताया जाता है कि श्री रामबिहारी बोस के एक भाई श्री बसुन्तकुमार बिस्वास स्त्री-वेष में एक ऐसे मकान की छत पर जा बैठे जो जुमूस के रास्ते में था। जैसे ही बायमराम का हाथी उस मकान के नीचे पाया श्री बिस्वास ने बम फेंक दिया। किन्तु बायमराम बच गए, केवल उनका एक अंगरतक मारा गया। इनके पदचातु ही बड़े पैमाने पर विस्फोटित हुए।

हैं, क्योंकि श्री जयचन्द मिश्र के महस्त हत्याकांड के अभियुक्त अवश्य वे किन्तु वे मरत तक पुलिस के हाथ नहीं पा सके। इस प्रकार अवस्था में जयचन्दजी बहुत दिनों तक हिरासत में बाबा काजी कमबीबाने की संस्था के मुख्य पत्र पर रहे और उनका ही जातिकारी दल का संगठन भी करते रहे। राजस्थान के वर्तमान सर्वोच्च नेता श्री रामनारायण चौबरी भी उस समय इसी मंडली में थे। श्री मोतीलाल और जयचन्दजी का परिचय देने हुए उन्होंने अपनी पुस्तक 'वर्तमान राजस्थान' में लिखा है—

“उन्होंने (श्री चरुनलाल सेठी ने) महाराष्ट्र और काश्मीर जैसे दूर-दूर के प्रान्तों से पुनः पुनःकर लोचबान इकट्ठे किए थे। वे कई बीघट के लोग थे इसके दो दृष्टान्त मुझे याद हैं। श्री मोतीलाल उस मुकदमे के अवग्राहक थे। एक बार उनका भाईप्रेमन लुभा। बा. जलबगसिंह की राय से वह इतना पत्नीर था कि कमीरोफार्म लुभाये बिना बीरा मवाने की उनकी हिम्मत न हुई। मोतीलाल का प्राग्रह था कि होज में ही बीरपन्न की माय। बाकिर बेसा ही हुवा और मोतीलाल ने उस तक न की। डाक्टर दोतों लने रंगली बहाकर रहे मया। धारा के महस्त की हत्या के अपराध में जब उन्हें फाँसी लगी तो बहते हैं बलिदान की कुपी में उनका जवन कई पीढ़ बह गया था।

“लेकिन उसकी अपराधी तो वे जयचन्द जो मरत तक पुलिस के हाथ न पाए। उनके साथ मेरा गहरा सम्बन्ध हो गया था। उनका विस्तर बिचि था। वे काश्मीर राज्य के पूर्व दिशाने में किसी छत्रभवा के लड़के थे। एक दूसरे कुक के साथ अनन्त मित्रता हो गई। जेग बाया तो दोनों में कौन करार हुआ कि जो बच रहे वह बर से निकल पड और उनकर अपने मापी के लिए तपस्वा बरे। जयचन्द बच गए। नीचे हराहार जाकर जाड में मवाशी में और गर्बी में बानू रेत में तपस्या करने लगे। बागे का पीक था। एक दिन सेठीजी का बहा भापन था। उसमें संगीत था भी कार्यक्रम था। जयचन्द कोन में बैठ चुन रहे थे। सेठीजी की पारखी दृष्टि ने उन्हें पहचान लिया कि काम का बाबरी है। सब से पाए। वह निर्भय इतने थे कि कई बार बाबरीपारी पुलिस के बीच से निकल पड। जलने में इतने तेज कि एक बार बुझवार पुलिस का पीछा बचाते हुए सतर मील दम बरने दाम को बरे पास पहुँच गए। वो मंडिस से कुरकर जाग जाने का उन्हें इतना बरका बिबाध था कि हमारे प्रबल प्राग्रह पर भी वे नीचे बापने का दूरी

सावधानी बरतने को तैयार नहीं होते थे।

“इसी मंडली में एक भी छोटेलात जंग भी थे जो हाईब्रिड बम केस में बमि बुरत बनाने गए किन्तु प्रमाणाभाव से फूट गए और फिर क्रांतिकारी कार्यों में संलग्न हो गए। इसके बरबात मांभीजी के तत्त्वज्ञान ने उनको खींचा और साबर मती घाबराह में जाकर रहने लगे।”

“किन्तु इस मंडली के रत्न तो प्रतापसिंहजी व जो सचीन्द्र बाबू के साथ बनारस महाराज केस के घनिष्ठत थे। जी रामनारायण चौधरी ने अपनी इसी पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है ‘सच तो यह है कि महात्मा गांधी को छोड़कर और किसी पर मेरी इतनी भ्रष्टा नहीं हुई जिसनी प्रताप जी पर।’

## सर रेजिनल्ड कोडक की हत्या का प्रयास

जी सचीन्द्र ने अपनी इस पुस्तक के द्वितीय भाग में ‘काची प्रचल की कहानी परिच्छेद (2) के अन्तर्गत लिखा है ‘राजपुताना के एक युवक के साथ दिस्ती भा पहुँचा। अपने हल के ही एक बुरक के डेरे पर अवस्थि हुआ। ‘उस समय के होम मेम्बर सर रेजिनल्ड कोडक साहब तब दिल्ली में थे और एक-दो और कारण थे जिससे दिल्ली में कुछ किया नहीं गया।

जी रामनारायण चौधरी ने भी अपनी पुस्तक में इस बटना का ब्यौर दिया है। वे लिखते हैं ‘1915 का साल कुछ हुआ था कि एक दिन संधे-संधेरे छोटे लालजी एक ऐकबारी मुबक को लेकर आए। छोटी-छोटी भाँखें साँवला रंग और ठिन्ना ब्रह्म था। उन दिनों हिन्दुस्तानी फ्रीज में यदर की ठंढापी की जा रही थी। इसके संभोजक बाबू रासबिहारी भोस थे। उनका कैग्न बनारस था। एक घात काम के लिए उन्होंने जी सचीन्द्रनाथ साग्याल को दिस्ती भेजा था। प्रताप सिंह उनके साथ थे। इसी घात काम में एक सन्देश से जानेवाले की अकरत थी। छोटेभातजी की सलाह से प्रतापजी ने मुझे पसन्ध किया। दूसरे ही दिन प्रतापजी और मैं दिस्ती के लिए रवाना हो गए। बाहर के एक पुराने मकान की पहली मंडिल पर पहुँचे तो एक गठीले जवान ने हमारा स्वागत किया। वह सचीन्द्र थे। एक कोठरी में प्रखबार बिछे थे। यही जगहा बिस्तर था। साथ एक मुझ पोत्रवा का पटा लप गया। वह यह भी कि भारत सरकार के होम मेम्बर सर रेजिनल्ड कोडक को गोली का निशाना बनाया जाय। यह काम करें बयबन्द और मैं उन्हें

हरिद्वार से बुला लाऊँ। संकेत यह था कि जैसे ही कैंडक साहूबबाजी बन्ना के समाचार प्रकाशित हों मेरे ल बरौरह की भारतीय सेना विशेषज्ञ बर दे। 'अस्तु, मैं रात की गाड़ी से हरिद्वार के लिए चल पड़ा। भारत रक्षा कानून का शिकार इतना बड़ा था कि हर जगह पुलिस किसी मुश्किल को देखते ही घेरे हुए होती थी। जैसे-जैसे पुछताछ किये बिना धाये न बढ़ने देती। लेकिन मेरी भारबाड़ी मेघ-भाषा ने अच्छा काम दिया। हरिद्वार में उन दिनों कुम्भ का मेला था परन्तु काली कमली वाले बाबा का स्वागत ईदुने में विशेष महत्त्व नहीं हुई। हमारे जयजय बाबा के बाहिले हाथ बने बैठे थे। देखते ही भिपट गए। लेकिन मेरे साथ हिन्दी बोलने में असमर्थता प्रकट करते हुए बोले 'यहाँ एक अच्छा वन तैयार कर लिया है। सभी वन परतों एक छतल बाका बना है। वन में मिया हुआ काम छोड़कर जाना ठीक नहीं। हाँ बाबो तो पाँच इस हज़ार स्वयं से बाबो। डाके का मत भी है और बाबा का 'महार भी भरपुर है। वन लागे की मुझे आज्ञा न थी। मैं साथी हाथ बापस भा गया। चौबीस घंटे प्रतापजी की निराशा हुई। जो काम जयजय के सिपुई होनेवाला था वह प्रतापजी को सीपा गया। मगर संयोजक कैंडक साहब उस तापि को बीमार हो जाने से बाहर नहीं निकले और बच गए। मैं उसी रात को बम्बुर पीट आया।

## श्री प्रतापसिंह

भारत पर्यटन के विमलिते में प्रतापसिंहजी के कटार होने और फिर उनकी निरपत्ता पर प्रकाश आने हुए थी बीवरी ने लिखा है। प्रतापजी पर बना उस पर्यटन के विमलिते में बर्तन निकल मल और वे भाग्यर हृदयवार (सिप) में था सिपे। लुप्टिवा पुलिस तलाश करती हुई बम्बुर पहुँची और एक मोसबाम मूहल के पीछे पड़ी। कमजोरी में आकर उन्होंने हृदयवार तो बता दिया मगर फिर संयोजक सिप के बजाय निजाम की राजदानी का पता दे दिया। टिप्पटी सुपरिटेण्डेंट आगे यह मुराग बाकर दक्षिण की ओर रवाना हुए। इधर हमारी मंडली को प्रतापजी को बचाने की फिर हुई। इस बार भी मुझे बुला गया। भारबाड़ी जोरार में चल पड़ा। मुझे हिदायत थी कि भारबाद के यमिमाविजा स्टेशन पर उतरकर चारों के साथ पापेटिया में पहुँचे तलाश कर लूँ। रायब प्रतापजी बहो हों। हमारे देहाती समाज में यजमान लोगों से गुम पूछना ही होती है। इससे मेरे

काम में बाधा पड़ रही थी। बाकिर एक किस्ता गड़ मिया घोर जो कोई पुस्ता उसीको मुनाकर पिछ छुड़ाता। गाँव के निकट पहुँचते-पहुँचते मानूम हो गया कि जिस घर में प्रतापजी ठहरा करते थे उसे पुलिस ने घेर रक्खा है। मैं समझ गया कि पंखी घड़ी पकड़ में मही घाया है मैं व्यर्थ में क्यों पहुँचूँ। मैंने सिंग की राह ली। हैदराबाद में पहुँचकर दिनभर की खोज के बाद प्रतापजी से मेंट हुई। उन्होंने एक बानगी बहालाने में कम्पाउण्डर की जगह काम शुरू कर दिया था और कुल्लत के समय बाजनाम्यों में जानेवाले नीबवानों में कर्मिकारी प्रचार करने लग पड़े थे। दूसरे ही दिन हम दोनों बीकानेर के लिए चल पड़े। सोचा यह था कि मैं तो राजधानी में कोई मौकरी कर लूँ। प्रतापजी कहीं देहात में जा बसोंगे और दोनों मिसकर बिप्लववादी दम खड़ा करेंगे—लेकिन एक गलती ने इस योजना पर पानी फेर दिया। जोधपुर स्टेशन पास आया तो प्रतापजी की इच्छा आद्यानाबा स्टेशन पर उतरकर वहाँ के स्टेशन मास्टर से मिस सेने की हुई। वह दम का सदस्य था। अगर कुछ दिन पहले उसके यहाँ हम का पार्सल पकड़ा जा चुका था और घपमी बाल बचाने को पुलिस का मुक़ाबिल बन गया था। इसकी हमें किसी को खबर न थी। तब यह हुआ कि मैं जोधपुर उतरकर खहर देख लूँ और दूसरे दिन घाम की बाड़ी से बीकानेर के लिए चल पड़ूँ। रास्ते में आद्यानाबा स्टेशन पर प्रतापजी की 'मायो' के नाम से पुकारें। अगर कोई बहाल न मिले तो समझ लूँ कि प्रतापजी देहात में बस गए हैं और मैं बीकानेर पहुँचकर उनका इन्तज़ार करें। लेकिन प्रतापजी तो आद्यानाबा उतरते ही गिरपतार कर लिये गए थे। मेरी आबाद का कोई खबर न देखकर मैं बीकानेर पहुँच गया।”

“इस हरिहार की कागजबारी के सिमसिमे में प्रतापसिंह ने बोल बाबू की तरफ से जो बड़ी धीर और धान भेंट की थी वह खोरी चली गई। ये पुरस्कार मुझे बहुत प्रिय थे। प्रतापजी के बियोग की पीड़ा भी कम न थी। वह भावमी हो ऐसा था। जितने बिप्लववादी देशभक्तों से मेरा परिचय हुआ उनमें प्रताप की छाप मुझ पर सबसे अज़ीज़ पड़ी थी। वे बड़े कोमल स्वभाव के मिहाबत शिष्ट और सदा खुश रहनेवाले थीर थे। पीता को उन्होंने जिस रूप में समझा था उसी के अनुसार उनकी सारी चेष्टाएँ होती थीं। धन और स्त्री की इच्छा को उन्होंने खूब जीता था। शरीर इतना सधा हुआ था कि जयपुर में जब वे मेरे पास रहे वे तो एक बार सनातार बहुतर बच्चे बायते रहे और बिना चाये-पिये बराबर



काम करते रहे। और फिर सोए तो तीन दिन तक बठने का नाम नहीं लिया। गस्ता के कद में बटों लैरते भी उन्हें देखा। 'ये जहाँ रहते नहीं का माताभरण घरसता प्रेम और पवित्रता से भर बैठे थे।'

राजस्थान के इसी आन्धकारि मंडल में श्री विजयसिंह पणिक भी थे, जो बाद को बमरार राजस्थानी किसानों के प्रसिद्ध नेता बने। सन् 1914-15 में पणिक श्री राजसाहब खरवा के साझी हाथ बने हुए थे और इन लोगों ने कई हजार बंदूकों बिड़ोह के लिए एकत्रित कर ली थी। किन्तु कृपालसिंह द्वारा बिड़ोह की योजना को सरकार पर प्रकट कर देने के कारण यह तयाम तैयारी बेकार बनी गई। निश्चय ही यदि यह योजना कियाम्बित हो सकती तो न केवल भारत का बहिष्म संसार का इतिहास भी शायद बहुत कुछ परिपतित हो जाता।

## मुखविर कृपालसिंह

श्रीगुरुबाबू ने 'बन्धी जीवन' में इतना संकेत तो कर दिया है कि कृपालसिंह पर आन्धकारियों को संदेह हो गया था। वे उसको समाप्त भी कर देना चाहते थे किन्तु कर नहीं सके और वह अपने इस दुष्टार्य में सफल हो गया। किन्तु कृपाल सिंह को रास्ते से बर्बाद नहीं हटाया जा सका। इसका पूरा ध्यौरा हमें खबर पार्टी के एक कार्यकर्ता बाबा हरनामसिंह के एक लेख से मिलता है। बाबा हरनामसिंह भारत से अमेरिका जाकर वहाँ में मटभूरी करते थे। खबर पार्टी का संमेलन होने पर उसके सम्मेलन हो गए। कुछ दिन तक अमेरिका में खबर पार्टी के मंत्री सासा हरनामजी के संवरण भी रहे। प्रथम बिदबपुत्र प्रारम्भ होने पर भारत में बिनीह करने के लिए अपने अन्य साथियों सहित भारत आ गए। रासबिहारी बोस तथा श्रीगुरुजी के साथ काम किया और फिर विरपजार होकर पहले फौसी की सजा पाई जो फौसी में बाजीवन कामायनी हो गई। अमेरिका में ही एक कुपटना बच उनका बाबा हाम बट गया। इसीलिए मे 'दृग्वालाट के नाम से भी प्रसिद्ध प। अभी कुछ दिन पूर्व बाबा हरनामसिंह का स्वर्णकाष्ठ हुआ है।

बाबाजी ने अपने लेख में लिखा है "—पंजाब और बंगाल में आन्ध प्रारम्भ करने के लिए 21 फरवरी सन् 1915 की तारीख निश्चित हुई थी। बाबू रासबिहारी बोस साहोब मं पंजाब पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे। सरासरी मुखविर कृपालसिंह ने इन बातों की खबर पुलिस को दे दी थी।

साहौर के एक मकान में कृपासिंह को किसी काम के लिए साहौर आवनी के एक रिहायश में भेजा गया। कुछ साधियों को कृपासिंह पर संदेह हो जाने के कारण उनके पोछे एक नक़्का उसकी निगरानी के लिए रखा गया। इन लड़के ने तुरन्त बाहर खबर दी कि कृपासिंह मकान से सावा साहौर स्टेशन की छुट्टिया पुनिस के दरबार में गया है। वहाँ रिपोर्ट देकर वह छावनी गया और उसी मकान पर लौट आया। उसके वापस आने से पहले मैं भी उस मकान पर पहुँच चुका था और उसकी जानूरी की बात सुन ली थी। जब वह लौटकर आया हम तीन घादमी वहाँ मौजूद थे। वह बाहर बेफिक्री से एक कुर्ची पर बैठ गया। हम तीनों में उस इत्तफाक के लिए हँसते-हँसते थे। मकान में कुछ वन और दो बार रिहायश भी भूषण थे लेकिन उनके बसाने से बाजार में घड़ाके का डर था। हमने उस गले में कच्चा हासकर मार हासने का निश्चय किया। इस काम के लिए सिर्फ एक ही हाथ होने की वजह से मैं बहुत नहीं कर सकता था। हमारे बाकी सासा रामसरनवास गादीरिख रूप से कमबोर थे। उनका हाथ दासता ठीक भी था। हमने तीसरे साथी माई भमरसिंह राजपूत को पहल करने का इरादा किया और हम दोनों मदद का तैयार थे। भमरसिंह लईच चौबीस बर्य का बूढ़ा कट्टा बबान था। सटिम कृपालसिंह पर हाथ टांगने का साहम उसे न हुआ। हम घरेबी में बातचीत नहीं कर सकते थे क्योंकि कृपालसिंह भी घोड़ी-बहुत धंरेबी समझता था। हमारे इमारों से वह बीटला हो गया और मेरे हाथ तथा भमरसिंह के भय ने उसकी जान बचायी।

जब भमरसिंह का फौसी सामने मारकवी नजर आई तो उसने पुनिस की घरान से सरकारी बकाह बमकर जान बचाने की कोशिश की। उसने धरने बयान में अमेरिका के एक क काम से लेकर आदीर तक की सारी कहानी पुनिस को सुना दी। भमरसिंह अमेरिका में पार्टी का घराने मम्बर था। गन्त केस में वह मेरे साथ ही काम करता था। हिन्दुस्तान लौटते समय उसने भी बाकी मेम्बरों को तरह-माबासी या मोत का प्रार किया था। इसके प्रतिरिक्त उसका नाम-बनन भी वहाँ बहुत प्रख्यात था लेकिन प्रायों क भय ने उसने अपने साधियों को भीड़ के मुँह में धकेलकर अपनी जान बचाने की सोची।”

## करतारसिंह आदि की गिरफ्तारी

इस मेर के खुम जाने पर मरफरग साधियों ने कोई अपाय न देखकर जल्दी से 11 करबरी के बजाए, अगति के लिए 10 करबरी का दिन निश्चित कर दिया। मेरिन पुनिम में 18 करबरी को ही साहीर के दो-तीन मकानों से कुछ धाधियों को गिरफ्तार कर लिया। बाबू रासबिहारी बोर के मकान का पता मुखबिर को न था इसलिए वे बच गए। 18 करबरी को ही समान धाधियों में हिन्दुस्तानी सिपाहियों की बगल पोरे सिपाहियों का पहरा हथियारबानों पर लगा दिया गया और हमारी योजना बीच में ही रह गई। 19 करबरी की रात को ही बमारस का टिकट करीबकर बाबू रासबिहारी को रेलगाड़ी पर सवार कराया गया। पचाबी कपड़े पहनकर वे जमरस पहुँचकर बच निकले। दूसरे दिन दो साधियों करतार सिंह सराफा और बमतसिंह के साथ में साहीर से बला गया। हम दोनों फ्यों-फ्यों पेसावर पहुँचे। पचावर से इस बीच जाने निकलकर फिर पीछे लौटने का निश्चय किया। फैसला यह किया कि कुछ हथियार इकट्ठे कर अपने साधियों को साहीर और बमतसर की हवालातों से छुड़ाया जाए। हथियार लेने के लिए हम भोज सराफा के सरकारी कार्म में गए और जहाँ के सिख रिहामदार की मुखबिरी पर गिरफ्तार हो गए। 'गिरफ्तारी 28 मार्च सन् 1916 को हुई थी।

## कृपावसिंह की हत्या

'मुखबिर कृपावसिंह उस समय तो बच गया किन्तु बाग्लिकाटी उसके पीछे गने ही रहे। बड़ इतनी सावधानी में रहता था कि उसकी ठिकाने सगाना साजाना बात नहीं थी। फिर भी सन् 1931 में जब एक दिन वह अपने घर पर सो रहा था कुछ लोगों ने उसे ठिकाने लगा लिया और धाक तक यह पता नहीं लग सका कि उसकी हत्या करनेवाले कौन थे।

## गदर पार्टी का जन्म और अन्त

राजीव बाबू ने अपनी पुस्तक में अमेरिका की गदरपार्टी के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है। पञ्जाब में ज़ाँकों को उभारने चादि का सम्पूर्ण कार्य गदर पार्टी के हाथियों ने किया था। इसमें मे पचासों ज़ाँकी पर चढ़ गए, सैबड़ों को कासा-

पानी हुआ और कुछ सरकार की भाँसों में बूझ भोंककर बिदेसों की नी बसे गए। किन्तु फिर इसके पश्चात् महर पार्टी का क्या हुआ ? क्या वह समाप्त हो गई ? बेशक बहुत-से व्यक्ति समझते हैं। इस सम्बन्ध में वास्तविकता यह है कि गवर पार्टी भारत की स्वाधीनता तक बराबर अमेरिका में थी वहाँ भी उसका सदस्य के कार्य करती रही। यह ठीक है कि प्रथम विश्वयुद्ध में उसके संकड़ों-हुजारों सदस्य भारत में आकर अपनी जन्मभूमि की स्वाधीनता के लिए सचरपरत हुए, किन्तु फिर भी अमेरिका में उसका चलन क्यों-का-र्यों चलता रहा। अभी कुछ दिन पूरा अमेरिका की सरकार द्वारा नियुक्त एक समिति ने इस बात की जाँच की थी कि अमेरिका की महर पार्टी के कुछ सदस्य चूँकि स्व और साम्यवाद से सहा नुवृत्ति और सम्पर्क रखते हैं अतः क्या वे अमेरिका में भी संकट उत्पन्न तो नहीं कर सकते ? इस कमेटी की रिपोर्ट मोपनीय थी किन्तु वह किसी प्रकार गवर पार्टी के एक सदस्य के हाथ लभ गई और स्वयं इन पंक्तियों के लेखक ने भी उसे देखा और पढ़ा है। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में एक बात तो यह बताई है कि महर पार्टी की स्थापना सन् 1907 में साहोर में हुई थी। अभी तक यही समझ जाता है कि काका हरदयालजी ने नवम्बर, 1913 में अमेरिका के कैलीफोर्निया में इसकी स्थापना की थी। इस सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध कान्तिकारी श्री ज्ञानकोजे, बिन्होमे बिदेसों में बहुत काम किया, इस प्रकार बताते हैं, "संगम्य 1907 के प्रारम्भ में अमेरिका के कैलीफोर्निया में जो भारतीय छात्र थे उनमें सगन्ध चन्द्र दास, पाम्बुर्य सागकोजे, ठारकनायदास, महरचन्द्र लखर भावि ने भारतीय स्वाधीनता-सब की स्थापना की। 1908 में कैलीफोर्निया के संक्रामेटो और पारलिस स्टेटों के पोर्टलैंड नामक स्थान में सब का केन्द्र स्थापित किया गया।

1913 में सासा हरदयाल और भाई परमानन्द कैलीफोर्निया आए। परमानन्द जब व धामित नहीं हुए पर हरदयाल धामित हुए और उन्होंने सलाह दी कि हम का नाम बदलकर 'गहरपार्टी' कर दिया जाय।"

अमेरिका सरकार की समिति की रिपोर्ट में और इस प्रामाणिक बयानमें जो पत्तर है, उसका कारण यह प्रतीत होता है कि समिति को महरपार्टी के किसी पुपने सदस्य से ही यह ज्ञात हुआ होगा कि सन् 1907 में साहोर के कान्तिकारियों के बीच ही अमेरिका में इस प्रकार का एक संघठन बनाने का निश्चय हुआ होगा। यह स्मरणीय है कि सन् 1908-07 में पंजाब में कान्तिकारी बहुत ही सक्रिय थे।

सरदार भगतसिंह के साथ सरदार भजीतसिंह का० बिहाड़ाध भम्बाप्रसाद सूफी तथा मय बनेरु हिन्दू सिख मुस्लिम क्रान्तिकारी अपने संगठन को दुब करने में लगे हुए थे। पन्नाब की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि बंगाल की भाँति पन्नाब में क्रान्तिकारी आन्दोलन केवल मध्यमवर्ग तक ही सीमित नहीं था और न आतंकवाद तक ही इसकी परिधि समाप्त हो जाती थी। इसके विपरीत सरदार भजीतसिंह इत्यादि वहाँ किसानों का आन्दोलन बना रहे थे और हजारों किसान उनके प्रभाव में आ चुके थे। सन् 1907 की पन्नाब के क्रान्तिकारियों ने ॥ सरदार भजीतसिंह भम्बाप्रसादसूफी अकूरवाह इत्यादि गोपनीय रूप से विदेश जात्र में सफल हो गए। सम्भव है अमेरिका सरकार की समिति ने इसी आधार पर गदर पार्टी की स्थापना का यह विवरण दिया है।

समिति का रिपोर्ट यह भी बताती है कि 1917 तक वो गदर पार्टी का सच ठन सचवा अनौपचारिक था। रिपोर्ट के अनुसार विधिवत् संगठन 22 जनवरी, 1917 को हुआ। इससे लगभग दस महीने पूर्व अर्थात् 31 मार्च 1916 को गदर पार्टी ने अपने आन्तरिक आदि के लिए आगठारिस्टो में दो आठ तरीके और वहाँ आन्तरिक आदि के लिए दमारात बनवाई। समिति की रिपोर्ट के अनुसार पार्टी का विधान सन् 1923 में बना और फिर वह भारत के स्वतन्त्र होने तक सरगमी के साथ काम करती रही और उसने सशस्त्र सरावर एक देश से दूसरे देश तक घुड़ पुन कर रहे रहे। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् गदरपार्टी ने अपनी सम्पूर्ण बल अपने सम्पत्ति भारत सरकार के अमेरिका स्थित प्रतिनिधि के सुपुर्ब कर दी और इस प्रकार भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इस अत्यन्त जम्झक संघटन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करके स्वयं को भंग कर लिया।

## मुस्लिम क्रान्तिकारी दल का इतिहास

गदर पार्टी को ही भाँति उस मुस्लिम क्रान्तिकारी दल पर भी कुछ प्रकाश डालना आवश्यक है जिसने इन्हीं में अपने सम्पर्क होने का उद्देश्य उद्दीष्ट बना ले लिया है। उन्नीस दशक में इस दल के उद्भव का समय और कारण सन् 1912 में हानवासी यामरुन बाग और उसमें डा० बंशारी के नेतृत्व में आनेवाले भारतीय मुसलमानों के अखिल मिलन को बताया है। श्री यकीन के अनुसार अखिल मिलन में जो भारतीय लोग भाग गए थे मुर्शी की सरकार और जनता

ने उनका भारी सम्मान किया। इस राजकीय सम्मान ने उनका भाषा परम कर दिया और उनमें से अनेक भारत आकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सक्रिय हो गए। कृष्ण धन्य महामुन्सों ने भी इस मुस्लिम आतिथ्यकारियों के सम्मान में कुछ इसी प्रकार लिखा है। इसका कारण यह है कि सिबीसन कमेटी की रिपोर्ट में मुस्लिम आतिथ्यकारी दस के उद्भूत और विकास का इसी प्रकार उल्लेख किया गया है।

इसके विपरीत वास्तविकता यह है कि इस बम का इतिहास बहुत ही पुराना और सम्पन्न उदना ही सम्पन्न है। सन् 1750 बर्गमू नगर से भी लयभग एक सौ सैंटीस बर्ग पहले दिल्ली में एक मुस्लिम सन्त हुए, जिनका नाम साहू बलीउल्ला था। वे वास्तव उल्लेखों के वास्तविक विद्वान् और तपस्वी व्यक्ति समझे जाते थे और उनके परिवार की बहुत धानधार परम्परा थी। मुस्लिम दशन के प्रभाव में वे निम्नवात समझे जाते थे। अरबी और फ़ारसी में उनके भिन्न ज्ञान प्राप्त भी अनेक मुस्लिम राष्ट्रों में पढ़ाए जाते हैं। भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति बड़ी भयावह थी और अरब बीरे-बीरे भारत की राजनीति पर हवाई होते आ रहे थे। दिल्ली की मुस्लिम वादवाहत बहुत कमजोर हो जाती थी। इस स्थिति ने साहू बलीउल्ला का राजनीति की ओर खींच लिया और वे अपने अनुयायियों को राजनीतिक शिक्षा देने लगे। भारत की हिन्दू-मुस्लिम समस्या और शासन नीति पर भी साहू बलीउल्ला ने अपनी प्रकार विचार किया था। जन-साधारण की दिनों-दिन बिराही हुई भाविक स्थिति और शासकीय दल द्वारा जनता के सोपस को दबाकर वे तत्कालीन शासकों के विरोधी बन गए थे और इसके लिए उन्होंने कष्ट भी उठाए थे। अपनी अरबी भाषा में लिखी एक प्रसिद्ध पुस्तक 'हुज्जत-उल-बासिदा' में उन्होंने एक स्थान पर लिखा है, "यदि कोई जाति सांस्कृतिक क्षेत्र में निरन्तर उन्नति करती रहे तो उसका कला-कौशल श्रेष्ठता की परम सीमा को पहुँच जाता है। इसके पश्चात् यदि शासक वर्ग सुख और भिलास का जीवन व्यतीत करने लगता है तो उसका शारीरिक धमकीनी बर्ष पर इसना बढ़ जाता है कि समाज का अनुसंधान भाग पशुओं-जैसा जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हो जाता है। ऐसी स्थिति में मानवता की सामूहिक संस्कृति नष्ट हो जाती है और जब व्यक्ति के आधार पर उनको (अमजीदियों को) सामूहिक संकट सहने के लिए विवश कर दिया जाता है, तो वे मर्दों और बर्षों की उक्ति के बस पेट भरने के लिए भ्रम करते हैं। जब यथुष्यता पर ऐसा संकट आता है, तो

ईश्वर मानवता को उससे मुक्ति विधान के लिए कोई-न-कोई मार्ग प्रशस्त होस देता है यानी यह आवश्यक है कि ईश्वरीय शक्ति अस्तित्व के साधन उत्पन्न करके क्रोम के तिर से ऐसे धर्मासूत्रीय शासन का बोझ उतार दे ।

“ तात्पर्य यह है कि मानव-समाज के सामूहिक जीवन के लिए प्राचिक समानता अत्यन्त आवश्यक है । प्रत्येक मानव समूह को एक ऐसी धर्म-व्यवस्था की आवश्यकता होती है जो उसको जीवनोपयोगी वस्तुएँ देने के लिए जिम्मेदार हो । जब मनुष्यों को अपनी प्राचिक आवश्यकताओं के प्रति संतोष होता है, तो फिर वे अपने उस प्रयत्न के समय को जो उनके पास बीबिकोपार्जन से बच जाता है जीवन के धर्म भागों की उन्नति और सम्पत्ता तथा संस्कृति की दिशा में लगाते हैं जो मानवता के वास्तविक रूप है ।

भारत की हिन्दू-मुस्लिम जातियों के प्रति शासन की नीति की ओर संकेत करते हुए दाह बनीइस्मा ने लिखा है “राज्य की ओर से कानून एक प्रकार के हों । उन ज्ञानुनों को पारम्भी प्रत्येक जाति अपने-अपने धर्मों के अनुसार करे । इसी प्रकार उन्होंने अपनी एक दूसरी पुस्तक में लिखा है कि भारत में छोटी-छोटी प्रादेशिक सरकारें बन सकती हैं किन्तु उनका एक केन्द्र होना चाहिए जो सम्पूर्ण भारतवर्ष के हानि-नाम को दृष्टि में रखकर नीति निर्धारित करे ।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक स्थिति में यह विचार बहुत ही मौलिक और कामिकारी है किन्तु कठिनाई यह थी कि उनका प्रचार केवल मुसलमानों तक ही हुआ । उस समय अधिकांश विधित व्यवस्था राजकीय सेवा में न अपना धिदान का काम करते थे । वे न व्यक्ति धनपट्ट और छेती के काम में संलग्न थे । दाह बनीइस्मा एक मुस्लिम संत थे । परंतु मुस्लिम जनता में ही उनके विचारों का प्रचार प्रारम्भ हुआ । उनके शिष्यों में कुछ लोग इन विचारों को वाय रूप में परिणत करने के लिए अपना संगठन भी बनाने लगे । दाह बनीइस्मा की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र दाह अब्दुस सजीद के समय इस संगठन को अधिक मूल रूप मिला । धीरे-धीरे यह संगठन एक ऊँची संघटना बन गया । किन्तु इस ऊँची संघटना की पहली मुठभेड़ हुई पंजाब के राजा रणजीत सिंह से जो अपने-अपने के हिमायती थे । दाह अब्दुस सजीद के एक शिष्य सय्यद अहमद बरेलवी अपने कई हजार शिष्यों को साथ लेकर बराही के रास्ते परफ़ानिस्तान पहुँचे और फिर वहाँ से पंजाब की सरहद पर आकर राजा रणजीत

कुछ पूरक तथ्य

सिंह की सनामों से मोर्चा लेने लग। सरखुद पार बसे हुए पठानों से उनका भारी सहायता मिली। किन्तु सय्यब ग्रहमब को सफलता नहीं मिली। सन् 1831 में शिख फौजों से मड़ते हुए वे मारे गए। इसके पश्चात् उनके साथी वहीं बस गए और समय-समय पर सरेब 1047 तक ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध छटपुट लड़ाई मड़ते रहे।

भारत में सन् 1857 के विद्रोह के समय इस दल न अंग्रेजों के विरुद्ध बड़ा सक्रिय भाग लिया था। किन्तु विद्रोह असफल हो गया और इस दल के कुछ नेता अंग्रेजों के दमन से बचने के लिए मक्का चले गए। फिर भी दल का संगठन बना रहा और उन्होंने स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे मदर्से कायम करके अपना प्रचार कायम करना शुरू किया। इसी प्रकार का एक मदर्सा सहारनपुर जिले के देवबन्द स्थान पर कायम किया गया और उसके प्रधानाचार्य ऐसे महानुभाव बनाये गए जो शहर में सक्रिय भाग ले चुके थे। शहर पठान इलाकों में बसे हुए इस दल के विद्रोही बार-बार अंग्रेजी सीमा पर आक्रमण करते रहे और भारत भर-से उनके लिए धन-जम की सहायता जाती रही। सन् 1860, 1862, 1863 में इस प्रपराध में बहुत-से मुसलमान पकड़े गए और उनको कड़ी सजा कासेपानी का दंड मिला। इस मुस्लिम क्रान्तिकारी दल में निस्संदेह धार्मिक उन्माद था क्योंकि उसकी प्रपराध का सोच मुस्लिम वर्गन और परम्पराएँ थीं। किन्तु उनमें हिन्दुओं के विरुद्ध द्वेष नहीं था। तत्कालीन राजनीति धम पर ही धार्मिक थी। बंगाल के क्रान्तिकारी जिस प्रकार वीता थे माधुभूमि के लिए धर्मिदान हो जाने की प्रपराध मानते थे उसी प्रकार यह मुस्लिम क्रान्तिकारी भी 'विद्रोह' के प्रपराधक थे। यह सोध हिन्दुस्तान को 'बार-जम-हर्ब' मानते थे जिसके अनुसार प्रत्येक मुसलमान का यह धार्मिक कर्तव्य हो जाता है कि जा ता वह धासन के विरुद्ध विद्रोह करे या देश का परित्याग करे।

## प्रथम विश्वयुद्ध और मुस्लिम क्रान्तिकारी

सन् 1884 में मदर्सा देवबन्द के प्रधान प्राचार्य शख महमूदजमहसन बनाय गए, जो 1887 के विद्रोह में भाग लेनेवाले थी रनाथ ग्रहमद गंगोही के शिष्य थे। इस समय देवबन्द का मदर्सा इस्लाम के दर्शन की धिखा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय



स्थाति प्राप्त कर चुका था और दूसरे मुस्लिम राष्ट्रों के बहुत-से मुकदमे भी देख-बाँट में शिष्टा प्राप्त करने के लिए धान सगे थे। इन बिदेजों से धानेवासे बिद्याबियों में अफगानिस्तान के बिद्याबियों की सख्या अधिक होती थी। सरहद पार बसे हुए पठान कबीलों के भी अनेक मुकदमे बेबरन्द में शिष्टा पात थे। इन अफगान और पठान मुकदमे के द्वारा दोस्त महमूदउलमुहम्मद ने अपना आधिकारीय इस का प्रसार काबुल और आन्ध्र कबीला में किया। सरहद का एक प्रभावशाली विद्वान् मौलवी तुरंग जई का हाजी इनका सहायक बना। एक दूसरा मज्बू मुस्लिम उबेदुल्ला सिन्धी जिसने इस मदरसे में ही शिक्षा पाई थी वेद महमूदउलमुहम्मद का इस काम में दाहिना हाथ था। उस समय इस मुस्लिम आधिकारियों को अफगानिस्तान और सरहद पार बसे हुए आन्ध्र पठान कबीले ही ऐसी सैनिक शक्ति दिखाई देते थे जिसकी सहायता से वे अंग्रेजों से भारत को मुक्त कर सकते थे। मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि मदरसा बेबरन्द का एक गोपनीय नियम यह भी था कि वह अफगानिस्तान की सरकार में अपना प्रभाव उत्पन्न करे। इसलिए सिन्धी ने उस पार से धानेवासे बिद्याबियों को यह शिष्टा दी जाती थी कि वे अपने कबीला में जाकर उसके समर्थन और व्यवस्था में कोई हेर-फेर न करें और यदि वहाँ कोई ऐसी रुढ़ि तथा परम्परा हो जो धर्म की दृष्टि से उचित न हो तो उसके विरुद्ध होनेवासे आन्दोलनों में भाग न लें।

## अफगानिस्तान की स्थिति

मुस्लिम आधिकारीय इस की इलाजतो और कार्य-नीति को समझने के लिए अफगानिस्तान की तत्कालीन स्थिति को भी संक्षेप में समझ लेना आवश्यक है। आधुनिक अफगानिस्तान के पिता अमीर अब्दुरहमान के बिहूनि सबसे पहला अफगानिस्तान में एक दुर्ग केन्द्रीय सरकार की स्थापना की। अमीर अब्दुरहमान सन् 1860 में अंग्रेजों को सहायता से काबुल की गद्दी पर बैठे थे किन्तु वह ही मन में अंग्रेजों से असन्तुष्ट रहते थे। अंग्रेज राजकुल को काबुल में रहने से उन्होंने यह कहकर दफार कर दिया था कि उसकी रक्षा की जिम्मेदारी लेने में वे असमर्थ हैं। अंग्रेजों ने उनसे यह इच्छा करवा लिया था कि काबुल की वैदेशिक नीति का निर्धारण सर्व शक्ति सरकार करेगी। अमीर अब्दुरहमान के एक दयोगी मुरउला अहमदी साहब थे, जो उस समय भी अब्दुरहमान के साथ थे।

कृष्ण पुराण तथ्य

जय व कस म निबाएन का जीवन व्यतीत कर रहू थे। अफगानिस्तान का सम्पूर्ण राज आज ऊहूमी साहब के परामर्श से हा बनता था। अमोर अमुरहमान ने अपनी सैनिक शक्ति अत्यन्त बढ़ा कर ली थी।

‘जमायते सियासिया’  
 में जमायते सियासिया नाम

**‘जमायते सियासिया’**

सन् 1882 में मस्तुफा कही साहब ने काबुल में 'जमायत सियासिया नामक एक संगठन बनाया और स्वयं इस संगठन के प्रधान मंत्री बन। साधारण जनता में राजनीतिक जागृति उत्पन्न करना इस संगठन का उद्देश्य था। अमीर अहमदुल्लाह इस संगठन के सहायक और समय-से-समय उनके सबसे बड़े पुत्र हदी बुस्मा खाँ भी या अफगान पिता के समय से ही राज-कार्य में भाग लेने लग गये जमायत सियासिया को बहुत महत्त्व देते थे। यह तथ्य अत्यंत ही कि 'जमायत सियासिया के अन्य कार्यकर्ता व लोग रहे थे जो मवरसा बेवबन्द में तारीम पा चुके थे। जमायत सियासिया ने सबसे पहले यह माँग रखी कि काबुल की बंदीखानों में जमायत सियासिया के कार्यकर्ता को रिहा किया जाय। सन् 1898 में अमीर अहमदुल्लाह ने जमायत सियासिया के माँग को मान्यता दी।

उपाधिका को बहुत ही जल्दी ही उपाधिका के अन्तर्गत आने के लिए कोर्ट के आदेशों का पालन करना पड़ा। जमायत सियासिया ने सबसे पहले यह माँग रखी कि काबुल की बंदेगिरी नीति से संश्लेषण का नियन्त्रण उठा लिया जाय। सन् 1898 में अमीर अम्बुरहमान का फ़िर्माणा हुआ कि अंग्रेजों का नियन्त्रण उठा लिया जाय। सन् 1898 में अमीर अम्बुरहमान का फ़िर्माणा हुआ कि अंग्रेजों का नियन्त्रण उठा लिया जाय। सन् 1898 में अमीर अम्बुरहमान का फ़िर्माणा हुआ कि अंग्रेजों का नियन्त्रण उठा लिया जाय।

सन् 1905 में बंग-मग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और इसी के मासपास पंजाब में किसानों का सरगम आन्दोलन फूट पड़ा जिससे गहर पार्टी को जन्म दिया। मग धरकों को यह फिक्र हुई कि काबुल के घसीर का मन्सूट किया जाय। परिणामस्वरूप घसीर हबीबुल्लाहों को सन् 1907 में भारत बुलाया गया। तबका सीन साह मिशने से घसीर की सम्झौत-सम्झौती मुसाकातें हुई और इन मुसाकातों का परिणाम यह हुआ कि मफगानिस्ताम वापस पहुँचते ही घसीर न जमायते दिया गया का विरोध करमा प्रारम्भ कर दिया। इस समय तक मुस्तफा फ़हमी की

प्लु हो चुकी थी और उनके पुत्र भी क़हमी जमायत के मशि-यद पर थे। यही क़हमी और उनके दो सहपाठी को अमीर ने गिरफ्तार करके निर्वासित कर दिया। बहुत दिनों तक ये लोग अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में पड़े रहे। इसके पश्चात् अमीर के छोटे भाई और तरछासीन प्रधानमन्त्री गसरमसाखी ने जो जमायते सिवासिया से हमदर्दी रखते थे, यही बटिनाई से इनको काबुल आने की आज्ञा दितवाई। वापस आते ही इन लोगों ने जमायते सिवासिया का गुप्त संगठन प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार जमायते सिवासिया एक संघेज विरोधी गोपनीय आन्तिकारी संगठन के रूप में परिवर्तित हो गई।

## सरहदी क़बीले

देशबन्धु के आन्तिकारी आचार्य महमूदजसहसन का इन सभी बटनामों से बराबर सम्पर्क रहा। उनके अनेक सिष्य और सहपाठी इस संगठन के कर्त्ता-कर्त्ता थे। सरहदी के माझाद क़बीलों में मबरसा देशबन्धु के आन्तिकारियों का बहु संमेलन मीरुद का जो सन् 1893 में भारत से हटकर कर गया था। उन विद्रोहियों की गई पीढ़ी ने भी इसी पक्ष को अपना लिया था। इसी समय गुरमजई के हाजी ने धार्मिक महरसों के रूप में पठान इलाके के अनेक स्वामीयों में अपने संगठन का नाम बिछाना शुरू किया। नाम धनुसगणधारणों को बार को कांग्रेस के बहुत बड़े नेता हुए और 'सरहदी गांधी' कहलाए, हाजी गुरमजई के प्रधान सिष्य के रूप में इस काम में हाथ बटा रहे थे। नाम धनुसगणधारणों ने एक बार मीराना हुसैन महरद मदनी को बताया था कि इस जमाने में अर्थात् 1910-11 में अनेक बार गुप्त गोपनीय संघेजों को लेकर हाजी गुरमजई देशबन्धु भेजते थे। आचार्य यह कि जिस इत्सी तुर्की मुठ में मैडिकल मिशन गया उससे बहुत पहले ही मुस्लिम आन्तिकारी इस का संगठन भारत से वाबुस तक फैल चुका था। यह भी उल्लेखनीय है कि जो मैडिकल मिशन तुर्की गया था उसका नेतृत्व डा० मुफ्तार अहमद घंठारी ने किया था जो बार में कांग्रेस के प्रमुख नेता बने। डा० घंठारी साहब भी धान महमूद जसहसन के निकट सम्पर्क में थे। और उनको पूजनीय दृष्टि से देखते थे। सन् 1911-12 में दोस महमूदजसहसन जब मबरसा गए और उनकी आन्तिकारी इसमलों का पता चलकर सरकार को लगा तो डा० घंठारी साहब से तत्कालीन मन्त्रेय धर्मियागियों ने काफ़ी गुस्सा खींची थी। एक बार तो डाक्टर

धंधारी साहब की गिरफ्तारी की सम्भावना भी उत्पन्न हो गई थी। इस प्रकार वास्तविकता यह प्रतीत होती है कि यह वैदिकस मिशन देवबन्द के कमिश्नरी दल ने ही तुर्की की सरकार से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भेजा था। इस मिशन में सरहब के कुछ शिक्षित पठान मुखक भी थे जिनमें से कुछ भारत वापस नहीं लौटे और पाकिस्तान विदेशों में भारतीय स्वाधीनता के लिए कार्य करते रहे। इन मुखकों में धन्नुनरहमान के का नाम उल्लेखनीय है जिनके सम्बन्ध में यह समझ आता है कि अंग्रेजों के इसारे पर उनकी हत्या कर दी गई। उनके एक भाई बहुत दिनों तक ज्ञान धन्नुनरहमान के प्राइवेट सैक्रेटरी रहे और अब भारत के वैदिक विमान में किसी सम्माननीय अवसर हैं।

## मौलाना उबेदुल्ला सिद्दी

अलीश साहब जब दिल्ली में कमिश्नरी कार्यों में संलग्न थे, उन दिनों ही दिल्ली में यह मुस्लिम कमिश्नरी दल भी अत्यन्त सक्रिय था। दिल्ली का यह सब समझें हुए सन् 1913 में ही मौलाना महमूदउलहसन ने एक महरसा दिल्ली में भी काम कर दिया था जिसका नाम बहादुर मजिस्ट्रेट था। मौलाना उबेदुल्ला सिद्दी उसके प्रधान आचार्य थे। डा० पसारी और हकीम अहमदसखी इसके सहायकों में थे। इससे पहले मौलाना सिद्दी ने देवबन्द में 'जमियत-उल-दाम्दार' नामक संस्था बनाई थी, जिसका उद्देश्य कमिश्नरी संघटन के प्रचार के हेतु एक प्रकट संगठन बनाना था किन्तु यह संस्था पारस्परिक मतभेदों के कारण ही अस्तित्व में नहीं रह सकी। इसी बीच अलीश की मुस्लिम यूनिवर्सिटी से विद्यापियों का एक दल देवबन्द में तालीम पाने के लिए भेजा गया। इस दल में अलीश महमूद नायक विद्यार्थी अंग्रेजों का जानूस था। मौलाना महमूदउलहसन और उबेदुल्ला सिद्दी बड़ी सतकता से अपना कार्य करते थे अतः अंग्रेजों को केवल देवबन्द आने-जानेवाले व्यक्तियों का पता ही अलीश महमूद द्वारा लगता रहा। बाद में अलीश महमूद सी० आई० डी० विभाग में बहुत ऊँचे पद पर पहुँचा और विदेशी सरकार की सहायता का उसे पर्याप्त पुरस्कार मिला। कहा जाता है कि अलीश महमूद द्वारा सरकार को भेजी गई रिपोर्टें सिद्दीसन कमेटी के सम्मुख भी प्रस्तुत की गई थीं और सिद्दीसन कमेटी की रिपोर्टें का डिस्क नैटर कामिश्नरी (विद्यार्थी वर्गों का अध्ययन) अलीश परिषद् में इन रिपोर्टों

मे बहुत सहायता सी गई है।

## काबुल में आज़ाद हिन्द सरकार

प्रथम विजयपुत्र की घोषणा होने के पश्चात् गवर पार्टी और बंगाल के जातिकारी बलों की ही भांति मुस्लिम जातिकारी दल ने स्वतंत्रता संग्राम की एक योजना बनाई। इस योजना के अनुसार मीराना उबेदुल्ला गिल्ली को काबुल भेजा गया। उबेदुल्ला साहब ने लिखा है कि एक दिन उस्ताद (मीराना महमूद उलहसन) अफ़सार् बाग़ 'उबेदुल्ला ! बाबुल जाओ। मैंने पूछा 'क्यों ? इस पर उस्ताद कुछ ख़ीदा में होकर नप हो गए। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। उस्ताद ने कहा 'उबेदुल्ला ! बाबुल जाओ। उस्तादने पूछा क्यों ? और उस्ताद फिर नप। तीसरे दिन उस्ताद ने अज फिर काबुल जाने की बात कही तो उबेदुल्ला साहब ने उत्तर दिया बहुत सज्जा और काबुल जाने की तैयारी शुरू कर दी। उबेदुल्ला साहब के पास कुछ द्रव्य पैसा था नहीं था अपने एक ज़िन्दा रात मुर्दहीन में जो आधाय ज़मानों के सगे बड़े भाई के और मुसलमान होकर इस जातिकारी कायम उबेदुल्ला के ज़माने सज़ाया बन गए थे अपनी लकड़ी और धोबी का ज़ेवर बेचकर रखा ज़दामा। 10 अक्टूबर 1916 को उबेदुल्ला काबुल पहुँचे तो उनके पास बचल एक पीट था। भारत में बाबुल के सिंग के रास्ते से गए थे और इस यात्रा में समयम दो मान उनको लगे थे। उबेदुल्ला साहब के दो मंत्री भी उनके साथ थे। मीराना महमूद उलहसन इतने सज्जे एंमठनकर्ता थे कि उबेदुल्ला के सेलानुसार बाबुल के अनेक प्रतिष्ठित राजा मिहारियों को यह मानूस था कि वे क्रिम बाग के लिए भारत से भेजे गए हैं। ज़माने सिपाधिया का गल्टा ज़िगरी ज़र्पा हम ऊपर कर पाए हैं उसकी मदद के लिए तैयार था। इस योजना में घोषा केवल यह हुआ कि अफ़ग़ानिस्तान का धमीर हबीबुल्लाग़ी अमर ही अमर अनेकों में मिल चुक थे। उबेदुल्ला साहब तो इस घागा में भेजे गए थे कि धमीर उनकी पूरी तरह सहायता करेंगे। इसी घागा से एक 'पूनी ज़मन-टिंग' मिलान भी इन दिनों ही काबुल पहुँचा। इस मिलान में राजा महेंद्रप्रसाद मोनबी बर्गुल्लाग़ी कुछ भारतीय युद्ध ज़मन और कुछ तुर्कि के लोग थे। यह बात याद रखनी चाहिए कि मोनबी बर्गुल्लाग़ी गवर पार्टी के मदद से और इस मिलान का टर्कि तथा ज़मन गवर पार्टी और से

काबुल के साथ मिलकर भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाने का अधिकार दिया गया था। मौलाना उबैदुल्ला और उनके साथी या तो पूर्व योजना के अनुसार या वहीं की स्थिति के अनुसार इस मिशन के साथ मिलकर कार्य करने लगे। वहाँ जाता है कि जर्मन और टर्की सरकार से समीर हबीबुल्लाहों को इस अवसर पर सहयोग देने के लिए पर्याप्त धन भी दिया गया। परिणामस्वरूप काबुल में अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार बनी जिनके अध्यक्ष राजा महेंद्रप्रसाद प्रधान मंत्री मोतबी बर्कतुल्ला और उबैदुल्ला सिन्धी होम मिनिस्टर बनाये गए। इसी समय लाहौर के कृष्ण मुसलमान विचारपी इसी उद्देश्य से काबुल आ पहुँचे। इन विचारपियों को अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार में विभिन्न पद दिये गए। इन विचारपियों में से ही एक सख्त उफ़रवाहसन उस समय (सन् 1919 में) जनरल माथिर खाँ के प्राइवेट सेक्रेट्री थे जब उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान सरकार की ओर से भारत पर आक्रमण किया था और जिसके फलस्वरूप होन बाली सन्धि में काबुल की वैधानिक नीति पर से संशयों का निवर्तन समाप्त हो गया था।

## अमीर हबीबुल्लाहों का विश्वासघात

अमीर हबीबुल्लाहों ने वायदा किया था कि अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार द्वारा भारत पर आक्रमण करने के साथ ही वे भी भारत सरकार के विरुद्ध युद्ध की की घोषणा कर देंगे। किन्तु यह सब उनका झूठ था। उबैदुल्ला साहब के कथनानुसार भारतीय अन्तिकारियों के साथ मिलकर वे बितनी योजनाएँ बनाते थे उन सबकी सूचनाएँ अंग्रेज सरकार को नेजते रहते थे। अमीर के छोटे भाई नस्रुल्लाहों और उनके सड़के अमानुल्लाहों तथा जमायते गियासिया के नेता मबरक हुसैन से इनके साथ थे। काबुल के कमाण्डर इनचीफ़ जनरल माथिर खाँ की सहानुभूति भी इनके साथ थी। इसी का यह नतीजा था कि अमीर हबीबुल्लाह इनकी गिरफ़्तार करने या इनका खुला विरोध करने का साहम नहीं कर सकते थे।

## टर्की सरकार से सम्पर्क

उबैदुल्ला काबुल में जब अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार का काम चला रहे थे उस समय मौलाना महमूद उलहासन मक्का पहुँचकर टर्की सरकार से सम्पर्क कर रहे थे। इसमें उनकी बहुत कुछ सफलता भी मिली थी। उनको ज़ेजाउ के

वत्सामीन मन्तर गान्धिविपाद्या से एक पत्र प्राप्त हो गया जिसका उल्लेख सिडीसन कमेटी की रिपोर्ट में 'गान्धिविपाद्या' के नाम से किया गया है। गान्धिविपाद्या का यह पत्र संसार भर के मुसलमानों के नाम था जिसमें उनको कांग्रेसों के निकट इजिबार उठाने के लिए उभारा गया था और मौलाना महमूद उल-हसन को अपना विश्वासपात्र बताते हुए उनके कार्य में जन-जन से सहायता करने की अपील की गई थी। इस पत्र को मौलाना के एक साथी मुहम्मद मिर्जा मन्सूर संसारी मक्का से हिन्दुस्तान आए और उसको मकसूर हिन्दुस्तान के सरहद्दी कबीलों में बाँटते हुए काबुल जाकर उदेहुस्ता से आ मिले। इसी बीच मौलाना महमूद उल-हसन को स्पष्ट की आवश्यकता हुई, तो हिन्दुस्तान से मौलाना मन्सूर नामक सज्जन कुछ रुपये लेकर मक्का पहुँचे। मौलाना महमूद उल-हसन उस समय मदीना गले गए थे पत्र खपा से आनेवाले महाशय निराश वापस लौट आए। सरकार की इन लोगों पर कड़ी नजर रख रही थी और उसको कुछ सुचनार्थ मिल रही थी पत्र मौलाना महमूद बम्बई में गिरफ्तार कर लिये गए। पुलिस ने उनको इतना छताया कि वे बहुत-सी बातें खपल गए। उधर मक्का का हाकिम खरीफ हुसैन तुर्की सरकार से बिब्रोह करके कांग्रेसों से मिल गया। कांग्रेसों ने तुरन्त उसके द्वारा मौलाना महमूद उल-हसन और उनके साथियों को गिरफ्तार करवा लिया। मुसलमानों की समाप्ति तक यह सभी सोच मान्दा में नजरबन्द रखे गए। इसके पश्चात् मौलाना महमूद उल-हसन ने धनुमन्त्र किया कि कोपनीय कामों द्वारा राज्ज चामित् यक्षन्मन्त्र है, पत्र के कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। इसी के अनुसार धान धनुमन्त्रपत्कारली भी कांग्रेस में आ गए। मुसलमान विद्वानों की प्रमुख वारिक सस्था अजय्यत उल उलेमा को सर्वत्र मुस्लिम लोग का विरोध करती रही और कांग्रेस के साथ रही मौलाना महमूद उल-हसन के धनुमन्त्रियों द्वारा स्वापित हुई। प्रविष्ट राष्ट्रीय मुस्लिम विद्वान संस्था आगिया मुस्लिमिया इस्लामिया की नींव भी मौलाना महमूद उल-हसन ने ही रखी थी। मौलाना महमूद उल-हसन का वैवाहिक 30 नवम्बर 1920 को डा० संसारी की बोली पर दिल्ली में हुआ।

## आजाद हिन्द सरकार के मिशन

काबुल की सरकारी यात्रा हिन्द सरकार उपर अपने काम में लगी रही। उसकी ओर से कम सरकार के पास एक विधान भेजा गया जिसमें उसका सहयोग

11" हिन्दू सरकार को मिल सके। इस के जार के नाम जो पत्र भेजा गया था एक सोन की प्लेट पर था जिसे गदर पार्टी के एक सदस्य डा० मयूरसिंह और मिर्हुम्मन् ने देकर माए थे। इस समय इस के जार की सरकार धंधेवालों की सहि भी घट। उनने मिशन का गिरफ्तार कर लिया किन्तु ताश्तकम्ब के गवर्नर हस्तक्षेप करने पर इन दोनों सदस्यों को बापस काबुल भेज दिया गया।

कुछ दिन पश्चात् आजाद हिन्दू सरकार की ओर से फिर एक मिशन जापान को रूसरी टर्की भेजा गया। जापान जानेवाले मिशन में शेख अब्दुल्लादिर और डा० मयूरसिंह थे। और टर्की जानेवाले मिशन में अब्दुलबारी तथा डा० मुबारकसा बे। दोनों ही मिशन गिरफ्तार करके धंधेवालों के सुपुर्द कर दिये गए। धंधेवा इन चारों न्तिकारियों को भारत ले आए। इन कान्तिकारियों में एक अब्दुलबारी रमुम्मन् लक्ष्मी के रिश्तेदार थे। सरकार ने सर मुहम्मद गाज़ी के द्वारा इन लोगों र मरु जोर डलवाया कि अगर वे तमाम रहस्य सिधिस रूप में सरकार को प्रकट र दें तो उनको लमा प्रदान की जा सनती है। डा० मयूरसिंह ने इसे अस्वीकार र दिया तो वे 27 मार्च, 1917 का लाहौर जेल में फाँसी पर चढ़ा दिये गए। शेख यकिन्यों ने सरकार की गलत स्वीकार कर ली और सभी बिबरण धंधेवा धमि कारियों को सिध कर दे दिया। सरकार ने इनको न कबल लमा प्रदान की बल्कि ल दम होह के पुरस्कार में उनको उच्च पद पर नौकरिया भी दे दीं।

## रेशमी पत्र

मुस्लिम कान्तिकारी उस के सम्बन्ध में अब केवल उन 'रेशमी पत्रों की बात कहनी शेष रह जाती है जिनके नाम स सिद्दीकन कमेटी ने इस संगठन की अपनी रिपोर्ट में बर्ण की हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रपस्त सन् 1917 यह पदग्रन्थ उद्घाटित हुआ जो सरकारी कागजात में 'गिस्म सैन्स के पत्र पीसे रेशमी रूपों पर बहुत साफ और सुन्दर प्रदर्शों साथ भीताना महमूजलहसन के नाम मुहम्मद मिर्था या जिसमें उन्होंने अपनी कारगुजारियों का पूरा बिबरण सरकार के खतों में सरकार के संगठन की संयुक्त स्तिाि ने नाम थे। इसके प्रतिरिक्त एक 'हिन्दोप समा' व भारतीय मुस्लिम नौजवान भरती क्रिये जाते थे।



प्रधान सेनापति नियुक्त किये गए थे।

मीलबी उबेदुल्ला साहब ने यह 'रिशमी पत्र' अम्बुलहक नामक व्यक्ति को दिये थे कि वह इनको रोह अम्बुलहमी (भाबाय गुपतामी के बड़े भाई) तक पहुँचा दे। यह अम्बुलहक साहब एक नव मुस्लिम थे और 'बिहार के बोध में लाहौर से आगकर काबुल पहुँचे थे। उन्होंने भारत आकर यह पत्र अपने एक मित्र हक नबाब साँ को दे दिए और हकनबाबसाँ ने इन पत्रों को अपने पिता सानबहा दुर भत्तामबाबसाँ के सुपुर्द कर दिया। राजस्थान के बाघ में भत्तामबाबसाँ इन पत्रों को पंजाब के गवर्नर सरमाइकेम घोडावर के पास ले गए और इस प्रकार सरकार को यह उम्बुर्ष योजना प्राप्त हो गई। इसके पश्चात् रोह अम्बुलहमी आग कर टर्कों पहुँच गए और बहुत दिनों तक भारतीय स्वाधीनता के लिए कार्य करते हुए वहीं उनका देहान्त हो गया।

## आजाद हिन्द सरकार द्वारा भारत पर आक्रमण

काबुल की आजाद हिन्द सरकार ने इसके बाद भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई और सरहद के आजाद ज़मीनों से से इसके लिए लगभग छ. हजार सैनिक एकत्रित किए। जयमी और टर्कों की सरकार को भी इन आक्रमण-योजना की सूचना दी गई और बताया तो यह जाता है कि जर्मन सैनिकों की एक टुकड़ी भी इनकी सहायता को काबुल भेजी गई। किन्तु जब आजाद हिन्द सरकार के छ. हजार सैनिक सरहद पर घेरे जा सरकार ने भारतीय भाग्ये हुए थे तभी फ़ोन के रमलान में जर्मनी का पत्तन हो गया और उसे मन्थि के लिए विवश होना पड़ा। घेरेजों के हाथ इनसे बहुत मजबूत हो गए और आजाद हिन्द सरकार के सैनिकों की स्थिति बहुत कमजोर हो गई। इन सैनिकों में से बहुत-से व्यक्ति घेरेजों से मारे गए। कुछ परदेवर पौसी पर भेजा दिये गए और कुछ विदेशों में ही मटक-मटककर मर गए। इसके बाद आजाद हिन्द सरकार और ज़ीज तोड़ दी गई और यह विराद प्रवास सहयोगों देश भगनों की आहूतियों की कड़ाही यात्रा बनकर समाप्त हो गया।

## हमीबुल्लाखाँ की हत्या

काबुल में, राष्ट्रीय कमिश्नरियों की इस घसफ़मता का मुख्य कारण भीमाबा उसरी मोर से कम ७

उबेदुस्सा सिग्भी ने तत्कालीन धमीर हबीबुल्ला खाँ को बताया है। डा० मूफेन्द्र नाथ दास आदि जातिकारियों ने जो उस समय बस्तिन में काम कर रहे थे, इसका कारण यह बताया कि जर्मनों ने धमीर को ब्रिजनी सहामता करने का धारावाचन दिया था वह पूरा नहीं हुआ। किन्तु हमें दोसामा उबेदुस्सा की बात धमिक प्रामाणिक जान पड़ती है। इस सब बटनाओं के कुछ ही दिन पश्चात् 'जमायत सियासिया' के एक सदस्य द्वारा धमीर हबीबुल्ला की राजनीतिक हरया भी इस बात को प्रमाणित करती है कि धमीर छोड़ो से मिसे हुए थे।

### अफगानिस्तान का भारत पर आक्रमण

काबुल के संघर्ष-धमीर विरोधी राजनीतिक संघटन में भारत से गये हुए मुस्लिम जातिकारियों का भारी प्रभाव था यह ता स्पष्ट ही है। धमीर हबीबुल्ला के छोटे भाई मसऊमाला और पुत्र धमामुल्ला खाँ भी धमीर के विरोधी थे। यह इसी से प्रकट है कि काबुल की पाञ्चाब हिन्दू सरकार के मजबूत होने के पश्चात् उनके जो सदस्य काबुल सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गए या निर्वासित कर दिये गए, धमीर की हरया के पश्चात् वे सभी केवल मुक्त हो गए, बल्कि उनमें से धनेक को उच्च सरकारी पद भी दिये गए। सम्भवतः धमीर की हरया की योजना में भारतीय जातिकारियों का भी हाथ था।

धमीर हबीबुल्ला खाँ की हरया के संदेह में जनरल नादिरखाँ भी गिरफ्तार दिये गए थे जो उस समय पञ्जाबिस्तान की सेना के उप-समापति थे। मौताना उबेदुस्सा सिग्भी के जनरल नादिरखाँ से बहुत अच्छे सम्बन्ध थे किन्तु वे प्रकट रूप से जनरल नादिरखाँ से बहुत कम मिलते थे। धमीर हबीबुल्ला खाँ के पश्चात् जब उनके पुत्र धमामुल्ला खाँ गद्दी पर बैठे तो जनरल नादिरखाँ को रिहा कर दिया गया और उनके एक भाई हायद खान को एक उच्च सरकारी पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया।

भारत की पाञ्चाब हिन्दू सरकार के प्रधान राजा महेश्वरप्रताप धमामुल्ला खाँ के प्रमाद मित्र थे। मौतानी उबेदुस्सा सिग्भी को भी धमामुल्ला खाँ बहुत मानते थे। तब जनरल नादिरखाँ के प्राइवेट सफ्टरी मौताना जफर हुसैन थे जो पाञ्चाब हिन्दू सरकार के एक महत्वपूर्ण पद पर थे। इस पुष्पभूमि में जब हम गद्दी पर बैठते ही धमामुल्ला खाँ को भारत पर चढ़ाई करते देखते हैं और साथ

ही सरकार पर बसे हुए आजाद कबीलों और सुरगमई के हाथी साहस को इस युद्ध में अफगानिस्तान की मदद करते हुए पाते हैं तो हम समझ सकते हैं कि काबुल स्थित भारत व आन्ध्रकारी अमीर तक अपने कार्य में सगे हुए वे और इस आक्रमण की योजना में उनका महत्वपूर्ण हाथ था।

## सन्धि

इस घबराहट पर अंग्रेजों ने जारी कठनीतिमत्ता दिखाई और अफगानिस्तान सरकार की महत्वपूर्ण बातें स्वीकार करके समझौता कर लिया। इस आक्रमण के समय अफगान क्रौबों की कमान स्वयं अमरस मादिरखाँ कर रहे थे। यह आक्रमण 29 मई तम् 1619 को हुआ और 8 अगस्त 1919 को अंग्रेजों की अफगानिस्तान से सन्धि हो गई। इस सन्धि के सम्बन्ध में ब्रिटेन के राजनीतिक धार्मिक टाउनशी ने कहा था "अमीर ने अपनी पराजय के पुरस्कार में जो कुछ वह चाहता था या लिया और भारत सरकार की अफगानिस्तान की परराष्ट्र नीति पर से जिस पर उसका आलीशान बंध से अधिकार था अपना हाथ हटाना पड़ा।" अंग्रेजों ने अपनी ओर से इस सन्धि के समय एक यह बात भी अफगानिस्तान से स्वीकार करा भी थी कि मौलवी अब्दुल्ला खाँ को काबुल में राजनीतिक कार्य नहीं करने दिया जायगा। इस प्रतिबन्ध से बिना मौलवी अब्दुल्ला काबुल में सभी प्रकार की सुविधाएँ होते हुए भी 22 अक्तूबर, 1922 को कस परो गए। इस आक्रमण और सन्धि ने उनमें सम्मुख यह तथ्य प्रष्ट कर दिया था कि अफगानिस्तान जैसा छोटा देश अंग्रेज सरकार के सम्मुख अधिक दिनों तक नहीं टकर सकता।

## बलूच और क्रान्तिकारी

श्री राफीन्द्र ने अपनी पुस्तक के द्वितीय भाग में 'पर्वा की बहानी' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत बलूच लोग के बिरोह की शीर्षी भी है जिसमें सैकड़ों बलूच सैनिकों और उनके अफसरों को भारी हानि सहना पड़ा। इस संदर्भ में कई बातें प्दान में रखने योग्य हैं। प्रथम तो यह कि बलूचिस्तान की सीमाएँ सरहद्दी पठानों के प्रदेश की सीमाओं से लगी हुई हैं जिसकी वजह बिरोधी परम्पराओं और भावनाओं वर हम अरर प्रभाव डाल चुके हैं। इसके अतिरिक्त मद्रसा देवबन्द के आन्ध्रकारियों का सगठन सिन्ध में भी था और वही अनेक छोटे-छोटे मद्रसे

इन लोगों ने स्थापित कर रखे थे, जिनके द्वारा निरन्तर धर्म विरोधी प्रचार होता रहता था। यह भी अब प्रकट हो गया है कि बर्मा में बसूच सेना ने जिस गबर पार्टी के कार्यकर्ताओं के प्रोत्साहन पर विद्रोह किया था, उसी गबर पार्टी के अनेक कार्यकर्ता ईरान के रास्ते बसूच प्रदेश की सीमा पर था पहुँचे थे और उन्होंने एक बड़े बसूच सरकार जिहादियों को अपनी धोर मिला लिया था। इन लोगों ने इस बसूच प्रदेश में आबाद हिन्दू सरकारी बनाई थी और बसूचियों की एक सेना भी समझित कर ली थी जिससे धर्म सनाओं की अनेक भयंकर हुई थी। इसके बाद धर्मियों ने बसूचों के समीर को अपनी धोर मिला लिया और फिर उसी ने अन्तिकारी बसूच सेवा पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप बसूच सेना बंभ हो गई और अन्तिकारियों को वहाँ से बड़ी कठिन स्थिति में भागना पड़ा। कुछ अन्तिकारी धर्मियों के हाथों में भी पड़े गए, जो वहीं बसूचों से उड़ा दिये गए। इतिहासज्ञों के लिए यह प्रश्न का विषय है कि ईरान-बसूचिस्तान की सीमा पर होनेवाली इन हलचलों का बर्मा के बसूच-विद्रोह से कुछ सम्बन्ध था या नहीं।

## अली अहमद सिद्दीकी

‘बर्मा की कहानी’ शीर्षक अध्याय में ही श्री अली अहमद सिद्दीकी के सम्बन्ध में भी कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। इन श्री अली अहमद सिद्दीकी से सन् 1900-01 में इन पंक्तियों का लेखक भी मिला था। श्री सिद्दीकी उस समय इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के वाटरवक्स विभाग में थे। उनसे बात करने पर नामूम हुआ कि वे मॅट्रिकल मिशन के काम करते पहुँचते ही अन्तिकारी दल में शामिल हो गए थे। श्री दुएस टुरैबी को मोरास के और बाद में बड़े प्रतिष्ठित राष्ट्रीय मुस्लिम नेता बने उसके सहयोगी थे। एक मन्त्रालय बाद उन्होंने यह बताया कि जब वे कुछ बकरी और गोपनीय कायदा लेकर मिस्र से भारत को चले, तो बयन सरकार के एक मुन्तखर ने उनको चेतावनी दी कि भारत पहुँचते ही आप गिरफ्तार कर लिए जाएंगे। श्री सिद्दीकी इससे बड़े परेशान हुए, क्योंकि जो कायदा उनको भारत पहुँचाने थे, उनको वे किसी भी प्रकार गप्ट नहीं करमा चाहते थे और न धर्मियों के हाथों में पड़ने देना चाहते थे। तभी अलाह में उनको एक मुस्लिम कबीर मिला, जो प्रतिभर्ष भीष्ट माँगने के लिए मसाया धादि देशों में घूमा करता था। श्री सिद्दीकी ने उस कबीर को समझाया कि यदि वह भारत में चले तो उसे अधिक

बन मिस सजता है। श्री सिद्दीकी ने उस फकीर का यह भी बताया कि ये एक जरूरी काम से तुरन्त मलाया पहुँचना चाहते हैं। घल फकीर यदि उनसे टिकट परिवहन कर ले और उनका सामान भारत में उनके घर पहुँचा देने का वायदा करे, तो वह उसके टिकट से मलाया चले जाएँ और फकीर हिन्दुस्तान बसा बाम। उन बिना पासपोर्ट इत्यादि की कठिनाई भी नहीं। घल फकीर घायब सामान की सामग्री से तैयार हो गया और उसने टिकट बहस लिया। सिद्दीकी साहब ने काश जात तो अपने पास रख लिए और अपना तमाम सामान फकीर के सुपुर्न कर दिया। इसके बाद वह मलाया जा पहुँचे। फकीर बम्बई पहुँचते ही निरपत्ता हो गया और वहाँ पश्चात्त घब सिद्दीकी साहब भारत के किसी जेल में थे, वह फकीर एक राजनीतिक कदी के रूप में ही सिद्दीकी साहब से मिला। नास्तिकारी घान्दीजन के इतिहास में ऐसी मनोरंजक घटनाएँ भी घनका हुई हैं।

श्री सिद्दीकी साहब ने बताया कि उनके दम में हिन्दू मुस्लिम प्रश्न को कोई स्थान नहीं था। सभी देश की स्वाधीनता के बीजान व और ठीकी सरकार की राज्य शक्ति का सहाय पाकर भारतीय प्रौद्योगिकी के विद्रोह द्वारा अंधकों स मुक्ति का स्वप्न देखते थे। मलाया और बर्मा में उनके संगठन का पर्याप्त विस्तार हो गया था किन्तु कुछ भारतीयों ने सहारी करके सम्पूर्ण नर अंधकों को बता दिया और भारतीय नास्तिकारी समय स पूरा ही निरपत्ता कर लिये गए। मेनाओं पर भी भापी दमन किया गया जो सर्वथा गोपनीय रहता गया। संकड़ों सिपाही और अछरर गुप चाप मोत के घाट उतार दिये गए जिससे उनकी कूट सूचरी कोनों को भी न लग आय।

## मुखनिर कुमुदनाथ मुखर्जी

श्री मुखर्जी ने इन गहरों स बेकाक क एक बंगासी बकीलसाहब का सम्बोध किया है किन्तु उनका नाम नहीं दिया है। यता संगता है कि इन बंगासी बकील साहब का नाम कुमुदनाथ मुखर्जी था। यह बकीलसाहब जो किसी समय गहर पार्टी के कार्यकर्ताओं से बड़ी दोगमनित भी बीने हाकिमे थे उस रूपसे जो हबम भर जाने को गातिर जो बकील क जमान बीसिस थे इनके द्वारा अयास के नास्तिकारियों को भजा या अंधकों स जा मिले। उनके द्वारा घोषाई स्वाय और बर्मा में होने वाली नास्तिकारी योजनाओं का आमास भारत सरकार को मिला गया और इसी

लिए वह सबकुछ नहीं हो सका जिसे भी सिद्दीक़ो इत्यादि करना चाहते थे। पञ्जाब के कृपासिंह की भाँति इन मुखर्जी ने सब गुणगोबर कर दिया।

## बंगाल में विद्रोह की तैयारी

रहस्योद्घाटन के समय से भी सचीन्त्र यह बात भी बचा गए हैं कि जब उत्तर भारत में भी रासबिहारी और महर पार्टी के सम्मुख इतने बिगड़ विद्रोह की तैयारी में जुटे हुए थे तब बंगाल के क्रांतिकारी क्या कर रहे थे? श्री ब्रजमनाथ मुन्शे ने अपनी पुस्तक 'भारतीय क्रांतिकारी धान्दोलन का इतिहास' में एक अन्य क्रांतिकारी श्री पाकड़ासी की एक पुस्तक का निम्न उद्धरण दिया है जो इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालता है और यह प्रकट करता है कि बंगाल में उन दिनों किस प्रकार की तैयारी चल रही थी। श्री पाकड़ासी लिखते हैं, "नेतापम डाका से लेकर साहौर तक विद्रोह की तैयारी में लगे हुए थे। डाका में उन दिनों सिख सेना थी। साहौर के पञ्चमनाथी सिख सैनिकों ने डाका के सिखों के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए परिश्रम पत्र भेज दिए। डाका के क्रांतिकारी नेता अनुकूल चक्रवर्ती उन पत्रों को लेकर डाका के सिख सैनिकों से मिले। सिख सैनिक विद्रोह की बात सुनकर घिरकट करने के लिए तत्पुष्ट हो गए।

"मैमनसिंह और राजशाही के मुख्य नामक जंगल में क्रांतिकारी संघों का बाढ़ डबामद करते थे। आक्रमण और रणनीति सीखने के लिए सब लोग प्रवास करने लगे। जिसों में बन्धुर्क चुपने की होड़ मच गई। भारों तरफ़ प्रकृवाह पला दी गई कि सबकी बार मैट्रिकयूनेशन और विद्वविद्यालय की वृत्तरी परीक्षाएँ नहीं होंगी।

श्री मुन्शे ने अपने ग्रन्थ में एक अन्य स्थान पर लिखा है, 'बंगाल के क्रांतिकारी समझते थे कि संकष्ट की दृष्टि से उनके साथ इतने काफ़ी भादमी हैं, जो बंगाल की छोड़ों को समझ के सकते हैं किमुब बाहुर से भादेवाली छोड़ों से बरत थे। इसी ज़रूरत की दृष्टि में रखकर क्रांतिकारियों ने यह निश्चय किया कि बंगाल में भादेवाली तीन मुख्य रेलों को उनके पुलों को उड़ाकर बेकार कर दिया जाय। यतीग्रनाथ के ऊपर मद्रास से भादेवाली रेल का भार दिया गया, वे बासाधोर से इस काम को धंजाम देने वाले थे। भासापाथ जटर्जी श्री० एम० मार० का भार लेकर बजपरपुर चले गए। सडोप बजवर्ती ई० आई० मार० का पुल उड़ाने के

लिए गए। मरेन बीधरी और फरीद बकशर्ती को यह काम सौंपा गया कि वे हटिया जाएं। वहाँ एक बत्था दबड़ा होनवाला था। हटिया से वे इस बत्थे की सहायता से पून बंगाल के जिलों पर कब्जा करने वाले थे और वहाँ से वे कमकता पर चढ़ जानेवाले थे। मरेन बट्टाचार्य और विपिन गौड़सी के नेतृत्व में कमकता दल पहले तो कमकता के प्राय-यास भस्म-सत्र तथा घत्वागारा पर कब्जा करने वाला था फिर फोर्ट बिलियम पर घावा खोलनेवाला था तथा कमकता पर अधिकार जमानेवाला था। माथेरिक ब्रह्मांड पर जानेवाले बर्धन प्रकभारी पर यह भार था कि वे पून बंगाल में रहें वहाँ डीजे डकट्टी करें फिर बाकामबा उन्हें धार्मिक सिद्धांत दें।”

### रासबिहारी का भारत-त्याग

देग-बिदेग में होने वाली यह बिछड़-तंदारियाँ प्रसङ्ग हो गई और श्री रासबिहारी बौध को भारत छोड़कर बाहर जाना पड़ा। श्री रवीन्द्र ने सिखा है कि मार्च १९१५ में श्री रासबिहारी ने भारत से प्रस्थान किया। वहाँ कुछ स्मृतिप्रसन्न मान्य होठा है क्योंकि श्री रासबिहारी ने अपने एक सेठ में भारत छोड़ने की तिथि १३ मई १९१६ बताई है। श्री रासबिहारी ने एक जापानी ब्रह्मांड पर पी० एन० टैमोर के नाम से यह यात्रा की। उस दिनों श्री रवीन्द्रनाथ टैमोर के जापान जाने की सूचनाएँ प्रसन्नार में निकली थी अतः श्री रासबिहारी ने कुछ देखा प्रसन्नित किया कि वे श्री रवीन्द्रनाथ के ही परिवार के हैं और उनकी यात्रा का प्रबन्ध करने के लिए जापान जा रहे हैं। उस समय श्री रासबिहारी के विर पर एक लाघ का इनाम था। वे पकड़ पाते ही प्रथम ही सबसे उनको फाँसी पर चढ़ा दें। पर वे सकुशल जापान जा पहुँचें। उनके जापान पहुँच जाने पर संदेहों को अब यह सब जात हुआ तो उसमें जापान सरकार पर यह दबाव वाला कि वह श्री रासबिहारी को गिरफ्तार करके संयुक्ता के हवाले कर दें। जापान सरकार यह कहकर मार की जो गई किन्तु रासबिहारी ने जापानी पिछों ने ऐसा नहीं हान दिया। घनेट दिया तक जापान में श्री रासबिहारी को भाष्ट से भी प्रथिक विरहर रहना पड़ा। कुछ दिनों पश्चात् यह बाधार्थ दूर हो गई और श्री रास बिहारी जापान के नागरिक बन गए।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय श्री रासबिहारी पुनः कायतोत्र में गये। जीते ही

जापान ने अंग्रेजों के विरुद्ध मुठ पोपना की थी रासबिहारी ने जापान स्थित भारतीयों का एक संमेलन बनाकर भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयास प्रारम्भ किया। गहर पाटी के कुछ कामकर्ता और बगाम नान्तिकारी इस के कुछ सदस्यों में इस कार्य में भी रासबिहारी की सहायता की। घाबराह हिन्दू प्रौढ के प्रारम्भिक संगठन में उन्होंने महत्वपूर्ण भाग लिया था। अमर पदचाए जब भी सुनाप बोस जापान जा पहुँचे, तो रासबिहारी ने नेतृत्व उनके हाथों में सौंप दिया। जनवरी सन् 1945 में श्री रासबिहारी का टोकियो में देहान्त हो गया।

## विदेशों में भारतीय विप्लववादी

श्री सपीन्द्र न विरसों में भारतीय विप्लववादीयों के कार्यों का बयान भी अपनी पुस्तक के द्वितीय भाग के अन्तर्गत किया है। इस अध्याय में उनके काम की एक प्रति संक्षिप्त ढाँची ही दी सकती थी और फिर ऐसी बातें न सिद्ध करने की विवशता भी थी जो उस समय तक प्रकट नहीं हुई थीं और जिनकी सूचना से अंग्रेज शासकों को लाभ पहुँच सकता था। वास्तव में जो भारतीय वैचल्य विदेशों में कार्य करते रहे उनका मेला-बोला तयार करना अतिपुस्तक कार्य है। उनका सम्पूर्ण कार्य अत्यन्त गोपनीय होता था। किसी भी सरकार की प्रामाणिकता उनके पास भी नहीं। अपने परिवार और साथियों से दूर रहकर निराला अभाव-रहित व्यवस्था में इनको कार्य करना पड़ता था। अनेक भारतीय और विदेशी युवक इनको भरे रहते थे और सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि एक दिन जिस राष्ट्र को वह अपनों का अनुसमर्थक नहीं मान्य ग्रहण करते थे तथा अपना केन्द्र बनाते थे वही किसी दिन भी आन्तरिक अथवा विदेशी राजनीतिक उलट से विरस होकर अंग्रेजों का मित्र और इनका शत्रु बन जाता था। ये लोग हजारों की संख्या में थे जिनमें से अधिकतर नहीं अपनी मातृभूमि से दूर, काम कथमित्त हो गए। अनेकों को विदेशों के कार्यवाह में भी बचाने के संभव करने पड़ी। फिर भी इनमें से अधिकतर ब्रिटिश सरकार द्वारा उत्पन्न की गई बाधाओं और उसके द्वारा दिये गए प्रसोधनों को चीतकर अपने मार्ग पर धाकड़ रहे। न जाने कब वह समय आएगा जब इन लोगों के कार्यों का अर्थ उनके सम्मुख आ सकेगा जिनकी स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने ऐसे कष्ट सहन किए थे। अभी कुछ दिन पहले हमारी सरकार इस कार्य में प्रवृत्त होती दिखाई दी थी। केन्द्र और



राज्यों में इसके लिए कमिटियाँ भी बनीं। बजट भी मंजूर हुए। कुछ कार्य घाते बढ़ा भी किन्तु फिर पता ही नहीं लगा कि क्या हुआ? इसाहाबाब की हिम्मुत्तामी कस्बेदार सोसाइटी ने भी एक बार इस काम को हाथ में लिया था जिसका एक कार्यकर्ता इन पंक्तिवों का मेतक भी था। यह तो काम में हाथ डालने के बाद माभुम हुआ कि सरकार के प्रतिरिक्त करोड़ों रुपया व्यय किए बिना कोई दूसरा मतलब यह काय प्रामाणिक रूप से नहीं कर सकता।

यह बात ध्यान में रखने की है कि बिदेशों में काय करनेवाले भारतीय विप्लव बाहियो में प्रत्येक प्रसाधारण शैक्षिक समता के व्यक्ति थे। इनमें से कुछ तो अन्य राष्ट्रों में उच्च सरकारी पदों तक पर पहुँच गए। वे सोच यदि चाहते और इस शान्ति मार्ग पर धाकड़ न होते तो अपने देश में भी पर्याप्त उस मान और मन शक्ति कर सकते थे। फिर भी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए उन्होंने कष्टों और पाठनामों से भरे हुए मार्ग को ही चुना और अपने लक्ष्य के लिए यहीद हो गए। हमारे देश के लिए यह किन्तनी बेदनायक स्थिति है कि आज उनमें से प्रशि काय का नाम भी हम नहीं जानत। यही नहीं बल्कि जिन लोगों ने बिदेशों में रहते समय साहित्य रचना की उनका प्रकाशित साहित्य भी हमारे पास उपलब्ध नहीं है। सब पता लगा है कि श्री रासबिहारी बोस ने आपापी मापा में साठ प्रब लिखे हैं। मौलवी बर्कतुल्ला की बरेलख बट्टोपाध्याय मंडम कामा स्वामजी कृष्ण बर्मा सा हरदयाल इत्यादि प्रत्येकी ने भी समय-समय पर प्रब पुस्तिकाएँ, लेख इत्यादि लिखे इन लोगों ने प्रत्येक पक्ष भी निकाले पर आज भारतीयों के लिए उसम से एक भी तो उपलब्ध नहीं है। भारत सरकार चाहे तो अपने बूटाबाधों के द्वारा यह कार्य करा सकती है। प्रत्येक बिदेशी राजनीतिक महापुरुषों ने अपनी पुस्तकों में इन भारतीय शान्तिकारियों का प्रसंगबध को बिबरण दिया है हमारे बूनाबास उनका मग़्दू भी कर सकते हैं पर यह सब नहीं हो रहा और न इसकी माँग ही ब। जा रही है। यायब किसी देश के लिए अपने देशमन्त्रों के प्रति इतक्यता की यह जरम नीमा है। इतिहास की प्रति तो है ही।

विदेशों में भारतीय जासूस

प्रत्येक सरकार इन मामों पर किन्तनी कड़ी नजर रखती थी इसका एक उदाहरण उलू के प्रमिष्ठ मेतक बाबी पखुन गणपतरता ने मुझे सुनाया था। उन्होंने

बताया कि एक बार मे डा० प्रसादी और हुकीम अबमसली के साथ पेरिस में थे। वहाँ किसी के द्वारा इन लोगों को सम्बोधित किया कि श्री एम एम राय की पत्नी ऐमेनराय इनसे भेंट करना चाहती हैं। मैं सर्वथा गुप्त होनी भी भूत पेरिस के एक भारतीय मुस्लिम व्यापारी का घर इसके लिए निश्चित किया गया। उस व्यापारी की बीकरी की एक बड़ी झुकाव थी। भारत की स्वाधीनता और राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति उसकी मित्रता देखकर ही उसका स्थान विद्रोहवादी समझ गया। फिर भी सावधानी के लिए न तो उसे ऐमेनराय का नाम बताया गया और न उसे बातों में सम्मिलित ही किया गया। इतना ही नहीं बल्कि बातों के समय उसके परिवार का कोई भी व्यक्ति मकान में नहीं था। निश्चित समय पर ऐमेनराय भाई और बार्ता करके जाती गई। इसके पश्चात् मे सोम (डा० प्रसादी हुकीम अबमसली काजी अब्दुलमपफार) टर्की गए। टर्की देखने की इच्छा बताकर वह मुस्लिम व्यापारी भी इनके साथ हो गया। वहाँ मे सोम रात्रिकीय प्रतिष्ठि माने गए। टर्की सरकार का एक बड़ा अधिकारी इनकी सेवा में निवृत्त हुआ। उस अधिकारी ने एक दिन काजी अब्दुलमपफार को बताया कि उनके साथ आया हुआ पेरिस का भारतीय व्यापारी बंधुओं का वासुस है और इसीलिए सुरक्षा की दृष्टि से मुस्तफा कमालपाशा से उनकी भेंट नहीं कराई गई। इतना ही नहीं बल्कि जब काजीसाहब भारत लौटे तो भारत सरकार के एक उच्च मन्त्रालय अधिकारी शामद आनबहादुर अलमरखुसेन ने उस बार्ता को पलरस सुना दिया जो ऐमनराय और इन लोगों के बीच हुई थी। इस बात से कई बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि ब्रिटिश सरकार ने अपने वासुसों की विदेशों में भारतीय व्यापारियों के रूप में भी बसा रखा था और उन पर दम मित्रत रक्खा कर्ष करती थी। फिर दूसरे देशों की सरकारों भी अपने वासुसों द्वारा इन भारतीय वासुसों की गतिविधियों पर मजबूर रहती थीं। तीसरी बात यह कि वा बार्ता इतनी सावधानी और गोपनीयता के साथ हुई, वह भी या तो कमरे में दिये किसी यंत्र के द्वारा सबका ध्यान किसी प्रकार सरकार को ध्यो-की-ध्यो सात हो गई। इससे हम विशेष स्थित भारतीय कामिन्कारियों की कठिनाइयों का किंचित् अनुमान लगा सकते हैं।

श्री बहादुरसाह मैहक ने विदेशी सरकारों के वासुसों के सम्बन्ध में एम रिमपस्य बटना का अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है, "मेरे

पर्यन्त में पूरी तरह सफल नहीं हो सके। इससे ईरान आदि देशों के स्वतन्त्रता प्रामोदनों को जो लाभ पहुँचा वह भी सर्व-विधित है। भारत को तो लाभ हुआ ही।

## भारत छोड़ने से पूर्व श्री सुभाष की सेनाओं से सम्पर्क

द्वितीय विश्वयुद्ध में विशेष प्रभावी भारतीय क्रान्तिकारियों ने जो कार्य किया उससे भारत को स्वाधीनता प्राप्त करने में बहुत महत्वपूर्ण सहयोग मिला। आन्ध्र हिन्दू सरकार और आन्ध्रहिन्दू फीज के निर्माण में सर्व प्रथम प्रवास रामबिहारी बोस स्वामी सत्यानन्दपुरी (जो बंगाली क्रान्तिकारी बल के पुराने सदस्य थे) और प्रीतमसिंह (गणप पार्टी के पुराने कार्यकर्ता) ने किया था। प्रायः ऐसा समझ जाता है कि श्री सुभाष बोस ब्रिटिश सरकार के बमनवास में बचने के लिए भारत में चले गए और फिर विदेशों में जाकर उन्हें यह सूचना कि भारतीय फीजों के बन्दी सिपाहियों का संगठन करने प्रयत्नों के विरुद्ध सदा जाव। किन्तु यह धारणा सही नहीं है। श्री सुभाष जब काबुल से वृषक हुए थे और प्यारबर्ग आकर स्थापित करके बेगमर में और करके प्रचार कार्य कर रहे थे उस समय श्री उनके मस्तिष्क में यही योजना थी। इस बीरे में उनके साथ श्री बलोजननाथ चक्रवर्ती भी किसी दूसरे नाम से थे जो बंगाल के क्रान्तिकारी बल के प्रभावशाली नेता थे और जिनका उद्देश्य श्री गंधीजी ने भी प्रशंसनीय सर्वोच्च में एक-ही स्थान पर अपनी इस पुस्तक में किया है। श्री चक्रवर्ती ने लिखा है कि सन् 1947 में जब श्री सुभाष बोस के समर्पणत्व में दिल्ली में छात्र सम्मेलन हुआ था उसी सत्र पर भारत के घर पर प्यारबर्ग आकर श्री कार्यकारिणी की बैठक भी हुई थी। इस बैठक में श्री सम्मिलित हुआ था। उन बैठक में जो नेता सम्मिलित हुए थे उनमें श्रीमाया के नेता प्रचुर शामिल भी थे। सम्मिलित नेताओं में जिन लोगों को सुभाषबाबू विप्लव मनोवृत्ति का समझते थे उनमें सम्मिलित थे जिसने और विचार विमर्श करने के उद्देश्य से विदेश परिषद करा देते थे। प्रचुरबाबू के बारे में सुभाष बाबू की ऊँची धारणा थी। वे सुभाष बाबू के विशेष भक्त और सरल सीधे स्वदेश प्रेमी और निर्भीक थे। उन्हें विदेश रूप में विप्लव के मार्ग पर जाने को सुभाष बाबू ने मुझे कहा। मैं भी बलोजननाथ से उनसे मिला और श्री विप्लव के बारे में उनसे चर्चा की। मेरे साथ चर्चा करने के बाद उनकी विचारधारा

दूर हो गई और वे सचस्म अमि के पक्ष के पूर्ण विरवाही बन गए :

सेना बाहिनियों में प्रभाव फैलाने के बारे में मैंने एकबारखाह से बात की । उन्होंने पठान सेवा-बाहिनियों की मुख्य बाहिनियों की जानकारी पाने की सलाह दी और कहा—'मैं उन लोगों में प्रभाव डालने का प्रयत्न करूँगा । पठान सैनिक भारत की स्वतंत्रता के सपना का विरोध नहीं करेंगे । अफ़गानिस्तान की गह से विदेश जाने के लिए भारत का सीमान्त पार करवा देने का कोई प्रयत्न करने की बात सुनने पर उन्होंने कहा कि सुमापिब के सहारे से प्रयत्न करना सम्भव होगा । उन्होंने यह भी कहा कि पैदा जाने में बहुत समय लगेगा और कष्ट भी बहुत होगा । मोड़े पर जाना आसान होगा लेकिन बर्ष बहुत पड़ेगा ।'

उपरोक्त संदर्भ से मेरा भी सुमाप के भारत से बाहर जाने की योजना पर एक बड़ा प्रभाव पड़ा है । श्री चक्रवर्ती ने यह भी सिखा है कि हिस्सी के सादा संकरलात को सुमाप बाबू ने जापान इरीलिय भेजा था कि वे ब्रिटिश राजू देशों से इस सम्बन्ध में बात कर आएँ । हमर सेनाओं में भी बिरोह का प्रचार हो रहा था । कमकसे में सिविल सेवा सरकार गिरनवसिह 'वालिब' की मार्फत एक सिविल बाहिनी हमार सम्पर्क में आ गई थी । उनके कई प्रतिनिधि सुमाप बाबू से मिले थे । सुमाप बाबू ने कर्मपद्धति के बारे में उनसे बातें करके उनका निकट सवित्र में तैयार रहने का कहा था । इस प्रकार बिरोहों में स्थित भारतीय अन्तिकारी सभी द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होते ही सक्रिय हो गए थे । यह भी सुमाप की अन्तिकारि विरपठारी से पहले की बात है । इस विरपठारी से पूर्व ही श्री सुमाप ने सीमाप्राप्त क रास्ते भारत से बाहर जाने की योजना बना ली और भारत तथा बिरोहों में स्थित भारतीय बाहिनियों से सम्पर्क स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया था । वे बिरोहों से आनेवाले किसी सम्देश की प्रतीक्षा में थे जबकि इसी समय बाहर चले गए होते । सरकार ने इसी बीच उनकी गिरपठार कर लिया किन्तु धनसक्त करके भी सुमाप ने अपने को मुक्त करा लिया और फिर बिरोह से सूचना मिलते ही भारत से बाहर चले गए । निस्संदेह यह सब इसीलिए सम्भव हो सका कि बिरोहों में भारतीय अन्तिकारी बड़ी सावधानी से इसकी पृष्ठभूमि बना चुके थे ।

जो भारतीय विप्लववादी बिरोहों में थे उनमें धनेर्क धन्य देशों के अन्तिकारियों से बड़े प्रभाव सम्भव बनाये हुए थे । काबुल के अन्तिकारी संघठन

‘अमायते सियासिया’ पर भारतीय क्रान्तिकारियों के प्रभाव पर हम पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। एशिया के अन्य ऐसे देशों में जो अंग्रेजों के शास या अर्धशास के भारतीय क्रान्तिकारियों ने उल्लेखनीय कार्य किया। उदाहरण के लिए ईरान में भी अम्बाप्रसाद मुन्शी धावि ने स्वयं अंग्रेजों के विरुद्ध हो रहे युद्ध में सक्रिय भाग लिया। यी डा० सानखोजे यी लममग तीन वर्ष तक ईरानी सेना में सम्मिलित होकर अंग्रेजों से लड़। यी अममनाथ दत्त भी ईरान की क्रान्तिकारी सेना में सम्मिलित होकर अंग्रेजों से लड़ते रहे और ईरानी सेना के हार जाने पर लममग तीन वर्ष तक एक ईरानी कबीले में छिपे रहे। इस की सोवियत सरकार की सहायता से उस समय बड़ी कठिनाई से उनका उद्धार हो सका। यी एम एन० जब तो चीन में साम्यवादी क्रान्ति का संघास्य करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संघटन की ओर से भेजे गए थे। जर्मा के क्रान्तिकारियों से से जतरन-प्राप्तान धावि यी रासबिहारी धावि के सम्पर्क में थे। गवर पार्टी के कुछ नेताओं का सम्पर्क नए चीन के पिता डा० सनघातमेन से था। रोनिन और ट्राट्स्की इगसिन के सम्पर्क में तो घनेको भारतीय क्रान्तिकारी रहे। मुस्तफा कमातपाशा का भी घनेक भारतीय क्रान्तिकारियों से सम्पर्क रहा। इस प्रकार भारतीय क्रान्तिकारियों ने महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित कर रखे थे। यह दूसरी बात है कि भारत की स्वाधीनता कुछ इस प्रकार और ऐसे का म मिसी जिसके कारण इन सम्बन्धों से विदेश तान नहीं उठाया जा सका।

## भारत के राष्ट्रीय नेता और क्रान्तिकारी

भारतीय क्रान्तिकारियों की अपने देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में क्या स्थिति रही और राष्ट्रीय नेताओं से उनसे सम्बन्धों पर भी यी यकीन ने यहाँ-वहाँ सोची सी चर्चा अपनी इस पुस्तक में की है। अन्य क्रान्तिकारियों ने यी अपनी पुस्तकों और संस्करणों में इस प्रश्न पर विचार किया है। उनमें सन्देह नहीं कि मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए सधस्य खाय वा जैसा धान्य बिप्लवियों ने जमता के सम्मुख रखा। यैसा आदम कांग्रेस आन्दोलन के बाधक नहीं रह सके। किन्तु ऐसा होना राजभाविन था। बिप्लवी आन्दोलन में जो व्यक्ति सम्मिलित होते थे वे समाज के सबसे अधिक लाहरी और निर्धन युवक थे जो पहले से ही फाँसी नामापानी की सम्भावनाओं को हृदयंगम करके इस रास्ते पर पैर बढ़ाते थे। इनमें

के जिनका मनोबल टूट जाता था वे एम्बर (इकबाली यबाह) इत्यादि बन जाते थे। कांग्रेस ग्रामोत्थन में फाँसी कासापाणी की सम्भावनाएँ नहीं थीं। धामद इसी लिए कांग्रेस का ग्रामोत्थन जन-ग्रामोत्थन भी बन सका। फिर भी कांग्रेस ग्रामोत्थन से सहानुभूति रखने वाली जनता और साधारण कार्यकर्ता विप्लवियों के प्रति अधिक यत्नवान थे इसमें सन्देह नहीं है। गांधी जी अनेक मृतपुत्र विप्लवी अपने व्यक्तिकारी जीवन की याद दिलाकर चुनाव जीतते देखे जाते हैं जो प्रमाणित करता है कि जनता उनके कष्ट-सहन के प्रति ध्यान भी पठावान है। स्वयं डाक्टर पट्टाभ ने अपने ग्रन्थ 'कांग्रेस का इतिहास' में स्वीकार किया है कि एक समय सरकार मयतसिंह भारतीय जनता में महात्मा गाँधी की ही भाँति लोकप्रिय थे। श्री जन्मदेवरा ग्रामाचार्य इलाहाबाद में पुलिस की गोशियों से मारे जाने के बाद जनता ने जिस प्रकार उस वृद्ध की पूजा की जिसके नीचे भी धावाएँ घड़ीय हुए थे तथा इससे बहुत पहले कन्हैयालाल दल के मृतपुत्र में विद्यालय जन समूह का सम्मिलित होना इस बात का प्रतीक है कि विप्लवियों के प्रति राष्ट्रीय विचारों की जनता में तदैव प्रबल आकर्षण रहा और वह इनको भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का चरित्र 'वीर' समझती रही।

वही एक कांग्रेस के नेताओं का सम्बन्ध है, अधिकतर से विप्लवी नेताओं की कमी अच्छी तरह पट नहीं सकी। वास्तव में कांग्रेस के अधिकतर नेता विप्लवियों के प्रातकवादी मार्ग की राष्ट्रीय ग्रामोत्थन की बाधा समझते थे। वे इस बारे में बहुत सचेत रहते थे कि कहीं सरकार उनका सम्बन्ध प्रातकवादी ग्रामोत्थन से सिद्ध न कर दे। कांग्रेस जो बड़ी कठिनाई से आन्दोलन-पत्रों और ग्रामोत्थन प्रस्तावों की वरिधि से निकलकर सविनय अवज्ञा के मार्ग पर आई थी सरकार को भीषण धाम दमन का कोई भी अवसर नहीं देना चाहती थी। फिर भी अपने-अपने कांग्रेस के कुछ नेताओं के मध्य में हम परिवर्तन होता हुआ देखते हैं। श्री चवीन्द्र को पिछापट है कि वे जब कासापाणा से भीगे तो मोतीलालजी देशबन्धु बाबू मान भीषणी, बहादुरलाल नेहरू ने उनको बाधों पर, पण्डित कि राजनीतिक बन्धियों की रिहाई के लिए ग्रामोत्थन करने की प्रार्थना पर भी उचित ध्यान नहीं दिया। इनमें से श्री मोतीलालजी के सम्बन्ध में हम एक अन्य व्यक्तिकारी मनमोहन मुक्त के संस्मरणों में पढ़ते हैं कि वे एक हस्तलिखित व्यक्तिकारी बुलेटिन के मुख्य-स्वरूप मोतीलालजी से पाँच सौ रुपये साएँ थे और वे प्रायः उनको कुछ न कुछ देते रहते

ये। श्री चन्द्रशेखर आज़ाद यशपाल आदि को भारत से बाहर जाने के लिए यशहरनामजी द्वारा वन प्राप्त हुआ था, वह स्वयं यशपालजी ने अपनी पुस्तक में लिखा है। देशबन्धु ब्रितरंजनदास के सम्मान में श्री जंजीबयनाथ चन्द्रवर्ती ने भिया है कि जब के आम्बिकारी कार्यों के अपराध में जेल की सजा काट रहे थे उन दिनों ही देशबन्धु भी असहयोग आन्दोलन में जेल आए। इस जेल प्रवास के समय एक कांग्रेसी ने देशबन्धु से यह प्रश्नायत की कि बिप्लबी जूरी असहयोगी बन्धियों को कांग्रेस के विरुद्ध भड़काते हैं तो देशबन्धु ने उत्तर दिया था "इनकी बातें सब भुल जाय जाती हैं तो मेरा सारा बमब बुर हो जाता है। इससे प्रकट होता है कि दास बाबू भी इनको पर्याप्त धावर की दृष्टि से देखते थे।

बिप्लबी आन्दोलन ने कांग्रेस आन्दोलन के मार्ग में बाधा सड़ी नहीं की बल्कि ही भी ऐसा प्राय सभी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं का अनुभव है। जब यह लोग कांसी पर बंद रहते हैं, कलापानी का रहते हैं तो क्या हम सर्व सह महीने की सजा भी नहीं काट सकते यह भावना बहुत-से युवकों को कांग्रेस आन्दोलन में जीव नाई इसमें सन्देह नहीं है। भारत की संघेद सरकार ने बिप्लबियों पर जो अत्याचार किए, उसके कारण भी जनमत संघेद सरकार का विरोधी बनता गया इसमें भी सन्देह नहीं है। कभी-कभी किसी विधेय बोधीले सरकार नकत प्रवि कारी ने जब कांग्रेसी आन्दोलनकारियों पर जीपण प्रत्याचार करके कांग्रेस वालों को बहुत घातकित कर दिया, एक किसी आम्बिकारी की एक बमकी मरी बिट्टी से ही उक्त अधिकारी सही रास्ते पर आ गया इसके उदाहरण भी मौजूद हैं। अन्त में सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का परिष्ठा की परिधि से निम्नकर हिंसात्मक रूप ग्रहण कर लेता यह सिद्ध करता है कि बिप्लबियों का न तो 'भातंक बाद' व्यर्थ हुआ और न हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन ने 'हिंसा परिष्ठा के तत्त्व बिस्तान की ही बिस्ता की। संघेदों को भारत छोड़ने का मुख्य भेद यदि आज़ाद हिन्द फौज के संगठन को नहीं तो आज़ाद हिन्द फौज के बन्धियों की रिहाई के आन्दोलन की तो है ही जिसने फौजों को भी ब्रिटिश विरोधी बना दिया था। पापीजी की परिष्ठात्मक रणनीति के कारण भारत का ब्रिटिश विरोधी जन आन्दोलन प्रत्यक्ष घोर संगठित रूप से चलता रहा और जमीने बस पर आज़ाद हिन्द फौज की रिहाई का आन्दोलन इस रूप में लिया जा सका, यह तथ्य भी हमारी धागों से मोझन नहीं होना चाहिए। भारत की स्वाधीनता का भेद इन

दोनों हो प्रकार के धाम्योक्तनों की है, किन्तु त्याग, कष्ट-सहन का बलका धम्मियों का ही भारी है यह निर्विवाद सत्य है।

## श्री शचीन्द्र की श्रेष्ठ कहानी

श्री शचीन्द्र ने 'बन्धी जीवन' की कहानी सन् 1920 में कासेपानी से मुक्ति के बाद घर आये, बिबाह करके आम्बिकारी कार्यों के लिए पत्नी-पुत्री सहित बट गये जाने और फिर मोटकर उत्तर प्रदेश में आ जाने की कथा के साथ ही समाप्त कर दी है। इसी बीच उन्होंने श्रेष्ठ आम्बिकारी राजदम्बियों की रिहाई के लिए जो उद्योग किया उसकी कथा तो पूर्व रूप से की है किन्तु आम्बिकारी दस को पुनर्बल करने के लिए क्या कुछ किया, इसका केवल प्रामाण्य मात्र ही दिया है। 'बन्धी जीवन' के उत्तीर्ण भाग में यह सब स्पष्ट है जो श्री शचीन्द्र ने सन् 1937-38 में कांग्रेस अधिवेशनों द्वारा दिखा दिए जाने के पश्चात् कामपुर के 'प्रवास' पत्र में वारन्ताहिक रूप से लिखा था। उस समय भी देश में अंग्रेज सरकार की, इसलिए श्री शचीन्द्र समाप्त विवरण दे भी नहीं सकते थे। इसीलिए उन्होंने 'काकोरी दण्डन' का विवरण भी नहीं दिया जिसमें उनके बार साक्षियों को छोड़ी हुई थी श्री शचीन्द्र को धात्रीवत कासेपानी का दण्ड मिला था।

श्री शचीन्द्र ने सन् 1920 में कासेपानी से लौटकर जिस दिन भारत भूमि पर पैर रक्खा ठीक उसी दिन वे थे आम्बिकारी दस के पुनर्बल में प्रवृत्त हो गये थे। इस समय तक उत्तर प्रदेश का आम्बिकारी संगठन विखिन्न हो चुका था। बंगाल का प्रमुख आम्बिकारी दस 'डाका अनुशीलन समिति' उसके बहुत से सदस्यों के कैद जाने से निर्बल था। श्री शचीन्द्र का 'सुमान्तर दस', जो प्रथम महादण्ड के पूर्व ही 'अन्तमर दस' के रूप में परिणीत हो गया था, और जिसके एक नेता पसविहारी बोर से अनन्त किकर्तव्यविमूढ़ था। अंग्रेजों में 'गहर पाटी' के नेता का तो देश में वे और या विदेशों में जिसक गये थे। कांग्रेस धात्रीजी के प्रभाव में था चुकी थी और अभियोक्ता बाबू हुराकोट से उत्पन्न रूप का धात्रीजी पसह मोग धाम्योक्तन में उपयोग करने की तैयारी कर चुके थे। मुस्लिम आम्बिकारी दस योग्यीय पाठकबाह की व्यपत्ता अनुभव करके प्रकट अन-धाम्योक्तन के मार्ग पर चल चुका था और 'विशाल' की रक्षा के नाम पर देश की मुस्लिम जनता का अंग्रेजों से समर्थ करने की भूमिका निभार कर रहा था। भारत की जनता को



ये। श्री बन्धोपध्याय आबाद, यशपाल आदि को भारत से बाहर जाने के लिए जवाहरलालजी द्वारा धन प्राप्त हुआ था यह स्वयं यशपालजी ने अपनी पुस्तक में लिखा है। देशबन्धु हितचरंजनदास के सम्बन्ध में श्री बीमोहनदास बच्चवर्ती ने लिखा है कि जब वे अग्निकारी कार्यों के प्रचरण में जेल की सजा काट रहे थे तब उन दिनों ही देशबन्धु भी प्रसहयोग आन्दोलन में जेल गए। इस जेल प्रवास के समय एक कांग्रेसी ने देशबन्धु से यह जानकारी दी कि बिप्लबी जैदी प्रसहयोगी बन्धियों को कांग्रेस के विरुद्ध भड़काते हैं। तो देशबन्धु ने उत्तर दिया था "इनकी बातें सब भूमे दास पाठी हैं, तो मेरा सारा बर्तन खुर हो जाता है।" इससे प्रकट होता है कि दास दाबू भी इनको पर्याप्त आदर की दृष्टि से देखते थे।

बिप्लबी आन्दोलन ने कांग्रेस आन्दोलन के मार्ग में बाधा डकी नहीं की बल्कि ही वी ऐसा मास-समी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं का अनुभव है। 'जब यह सोच काँची पर चढ़ सकते हैं कलापानी आ सकते हैं तो क्या हम वर्ष छह महीने की सजा भी नहीं काट सकते' यह भावना बहुत-से युवकों को कांग्रेस आन्दोलन में जीव लाई इसमें सन्देह नहीं है। भारत की संघेद सरकार ने बिप्लवियों पर जो अत्याचार किए, उसके कारण भी जनमत संघेद सरकार का विरोधी बनता गया इसमें भी सन्देह नहीं है। कभी-कभी किसी विशेष जोखिम पर सरकार मक्त अधिकारी ने जब कांग्रेसी आन्दोलनकारियों पर भीषण अत्याचार करके कांग्रेस वालों को बहुत घातघित कर दिया, तब किसी आत्मिकारी की एक कमकी मरी बिट्टी से ही उक्त अधिकारी उही रास्ते पर आ गया इसके जवाहरज भी मौजूद हैं। प्रस में सन् 1949 के भारत छोड़ो आन्दोलन का अहिंसा की परिधि से निकलकर हिंसात्मक रूप ग्रहण कर लेना यह सिद्ध करता है कि बिप्लवियों का न तो 'आतंकवाद' स्वरूप हुआ और न हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में 'हिंसा-अहिंसा' के तत्त्व चिन्तन की ही चिन्ता की। संघेदों को मारने से हटाने का मुख्य ध्येय यदि आबाद हिन्दू श्रमिक के संगठन को नहीं तो आबाद हिन्दू श्रमिक के बन्धियों की रिहाई ने आन्दोलन को तो है ही जिसने श्रमिकों को भी ब्रिटिश विरोधी बना दिया था। गांधीजी की अहिंसात्मक रणनीति के कारण भारत का ब्रिटिश विरोधी जन आन्दोलन प्रचलन धीरे संगठित रूप से चलता रहा और उसीके बल पर आबाद हिन्दू श्रमिक की रिहाई का आन्दोलन इन रूप में किया जा सका यह तथ्य भी हमारी आँख से छोमन नहीं होना चाहिए। भारत की स्वाधीनता का अर्थ इन

बानों ही प्रकार के घाम्मोलनों को है, किन्तु एगल कस्ट-सहम का पण्डा भिरावियों का ही मारी है यह निर्विवाद सत्य है ।

## श्री सचीन्द्र की शेष गाथाती

श्री सचीन्द्र ने 'बम्बी जीवन' की कहानी सन् 1920 में कायेगाती से मुंबई के बाद घर घाने विवाह करके कागितकारी कामों के लिए परमी गुपी राहिंग बग गांव जाने और फिर सोटकर ज़रार प्रदेश में घा घाने की बर्बा के गांव ही समाप्त कर दी है । इसी बीच उन्होंने शेष कागितकारी राजबन्धियों की रिहाई के लिए भी उद्योग किया, उसकी बर्बा तो पूर्ण रूप से की है किन्तु कागितकारी दया को मूल संठित करने के लिए बड़ा कुछ किया । इसका केवल माध्याम गांव ही बिगा है । 'बम्बी जीवन' के तृतीय भाग में यह सब व्योरा है, श्री श्री सचीन्द्र ने सन् 1937-38 में कांग्रेस मंत्रिमण्डलों द्वारा रिहा किए जान के पश्चात् कानपुर के 'प्रमाण पत्र' में बायबाहिक रूप से बिछा बा । उन समय भी देश में संघर्ष लफटा भी, इसलिए श्री सचीन्द्र बघातप्य बिचग्न है भी नहीं लफने से । इसीलिए उन्होंने 'काकोरी पहलू' का बिबरन भी नहीं दिया, जिसमें उनके बाग गावियों को काँची हुई और श्री सचीन्द्र का बाबावन बालेपानी का हक बिमा बा ।

श्री सचीन्द्र ने सन् 1920 में बामबापी न जीन्दर जित दिन मागत भूभिष

मया राजनीतिक दर्शन मने नेता धीर नई रणनीति प्राप्त हो रही थी।

बंगाल के क्रान्तिकारी असहयोग आन्दोलन का विरोध कर रहे थे किन्तु श्री एबीएन ने इसमें योग नहीं दिया। गांधीजी के इस आन्दोलन से उनकी स्वतन्त्रता प्राप्ति की आशा तो नहीं थी किन्तु इस आन्दोलन के माध्यम से जन-जागरण के महत्त्व को वे हृदयबंद कर सकते थे। सम्भवतः वे समझ गए थे कि आन्दोलन असफल होगा। इसीलिए असहयोग आन्दोलन से वे तटस्थ रहे। 'न निम्बा न प्रसंसा' की नीति इहय कर वे यहाँ-वहाँ घूमकर क्रान्तिकारी दल का संगठन करने लगे। बंगाल के सभी क्रान्तिकारी दलों का वार्षारिक सहयोग हो या एक संगठन बन जाय इसके लिए उन्होंने विशेष उद्योग किया। क्रान्तिकारी संगठन के प्रति देश के युवकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही उन्होंने इस समय बंगाली भाषा की एक पत्रिका में मेखमासा प्रारम्भ की जिसमें सन् 1914-16 के कार्यों का विवरण था। यही मेखमासा बाद में 'बन्धी बीबन' के प्रथम-द्वितीय भाग के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशित हुई और क्रान्तिकारी संगठन के नये रंमक्यों की पाठ्य पुस्तक बन गई। न जाने किनेने युवक यकैसी इस पुस्तक के पारायण से ही अनुप्राणित होकर क्रान्तिकारी दल में प्रविष्ट हुए। इस प्रकार श्री एबीएन असहयोग कास में अपने धीर और बुद्धि का सम्पूर्ण उपयोग क्रान्तिकारी संगठन के लिए करते रहे।

कुछ दिनों बाद असहयोग आन्दोलन असफल होकर समाप्त हो गया। इसकी प्रतिधियास्वरूप देश में साम्प्रदायिक विद्वेष और बसकों की हवा बह पसी। बड़े-बड़े ठकाकृति राष्ट्रीय नेता इस हवा में बहकर हिन्दू-मुस्लिम द्वय के प्रचारक बन गए। स्वदेश की स्वाधीनता की बात पीछे पड़ गई। कुछ सोय बरसा और मृत में जलम गए, कुछ को बारासमाओं की कुसिपाँपुकारने लगीं। राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए यह बड़ सवट का समय था।

श्री एबीएन इस समय पञ्जाब से बंगाल तक राष्ट्रीय विचारों के युवकों को यात्र-योजकर उनको एक संगठन में पिरोने लगे। इसी समय क्रान्तिकारी दल का ध्यान मजदूर संगठन भी धीर गया। जयपुर में मजदूर यूनियन बनो और उनके सभापति बनाये गए श्री देवबन्धुदास की परनी के भाई धीर कमकृता के प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री एस एन हुसदार। श्री एबीएन भी यहाँ जाकर काम करने लगे। किन्तु कुछ ही दिन बाद श्री एबीएन ने जयपुर का काय छोड़ दिया और

फिर सन् 1924 में कमलसे में प्रमुख अन्तर्गत गांगुली धीर भीमसिंह के साथ मिलकर 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी' की स्थापना की। इस समस्या की स्थापना का मुख्य उद्देश्य यह था कि उत्तर भारत में केवल एक आन्दोलन संयोजन कार्य करे जिसके नेता भी राष्ट्रीय बनाये गए। इससे पहले डा. कान्तिधारी समिति के भी मोमेध बटवारी भी उत्तर भारत में संगठन कार्य कर रहे थे और उन्होंने भी रामप्रसाद बिस्मिल्ला धारि को पुनः आन्दोलन कार्य में प्रवृत्त कर दिया था। भी राजेन्द्र साहिब जी को काकोरी केस में फाँसी हुई थी राष्ट्रीय के सहयोगी य इन दिनों ही 'रिबो-सुनरी' नामक एक पर्चा रचून से वेधवार तक बाँटा गया जिसमें भारतीय जनता के सम्मुख सचस्व आन्दोलन की आवश्यकता और उपयोगिता प्रकट की गई थी। एक ही दिन सम्मुख वेध में पर्चा वितरित करके आन्दोलन देशवासियों को यह विश्वास दिलाया जाहते थे कि उनका एक वृहत् संगठन स्थापित हो चुका है। भारत सरकार भी पर्चे बाँटने की इस संयोजन-व्यवस्था से बहुत घातकित हुई थी और इस पर्चे की सबसे बड़ी उपयोगिता यह थी कि सम्प्रदायिकता के उठे हुए मूकान में इस प्रकार के कार्य जन-साधारण को राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख करत थे। काकोरी पर्यय के मुकदमे में सरकारी बकीस ने भी राष्ट्रीय को ही 'रिबो-सुनरी' पर्चे का लेखक बताया था। बाप में इस पर्चे को डाक द्वारा भेजने के प्रयास में फरवरी 1925 में राष्ट्रीय पकड़े गए और दो वय को ऊँच का दर निमा। बंगाल ऐसेम्बली में आन्दोलन आ बयान करने के लिए सरकार ने इन दिनों ही एक 'पार्लियामेन्ट एक्ट' प्रस्तुत किया। बंगाल के तत्कालीन गृह सदस्य भी स्टीफेन्सन ने इस एक्ट की आवश्यकता बताते हुए अपने भाषण में भी राष्ट्रीय और 'रिबो-सुनरी' पर्चे की विधेय रूप से पर्चा की थी।

भी राष्ट्रीय वेस जाने से पुनः ही उत्तर प्रदेश में एक बृहत् आन्दोलन दल का संगठन कर चुके थे। भी अगस्तसिंह, अन्तराष्ट्रिय आजाद धारि इसी समय आन्दोलनकारी दल में प्रविष्ट हुए। इन दिनों दल को धार्मिक स्थिति प्रत्यक्ष दुर्बल थी। काकोरी काण्ड के चौहद भी रामप्रसाद 'बिस्मिल्ला' ने फाँसी की कोठरी में जो अपनी आत्मकथा लिखी है उसमें दिये गए विवरण के अनुसार "इस समय समिति के सदस्यों की बड़ी दुर्दशा थी। जन मिशना भी कठिन था। सब पर कुछ न कुछ कर्ब हो गया। किसी के पास साबुन पकड़े तक न थे। कुछ विद्यार्थी बनकर धर्म लेनों तक में भोजन कर पाते थे।" ऐसी स्थिति से निवृत्त होकर दल ने उन्नीसवीं

डालने का निश्चय किया। इन दिनों ही बिदेयों से घसब-खसब प्राप्त करने का भी कोई प्रयत्न सुन प्राप्त हो गया था। उसके लिए भी धन की आवश्यकता थी। इन सब कारणों से मजबूत के पास काफ़ी स्टेपन पर रस का खजाना सूटा गया। कुछ लोग डकैती डालना महिष कार्य समझ सकते हैं। नास्तिकारी भी इसे प्रशंसा नहीं समझते वे मेकिन देश के नार्थ के लिए भी धन की आवश्यकता तो होती ही है। इससे पूर्व हान चम्पा आदि से बच नष्ट करने का प्रयोग किया था चका था जो सर्वथा असफल रहा था। सर्व-समस्या सुसमाप्ति के लिए सन् 1924 में ही प्रयात्न श्री एचबीएन की विरफ्तारी से कुछ पहले ही वाली नोट बनाने का भी प्रयास नास्तिकारी कर चुके थे। श्री एचबीएन ने 'बम्बी जीवन' के तृतीय भाग में एक स्थान पर वाली नोट बनाने के सम्बन्ध में जोड़ा प्रयास किया है किन्तु यह नाट कहीं कौन बनाता था यह विवरण एट्सोड्घाटन के तब से नहीं दिया। वाली नोट बनाने का काम डाका धनुषीभन समिति की धोर से पहले डाका धीर मैमनसिंह धर में प्रारम्भ किया गया। इस ध्येय धोर से धन के नोट के ब्याक बिही प्रकार नास्तिकारियों में बनवा लिए थे। श्री बिनेयचन्द्र साहिबी प्रैलोक्य नाथ चक्रवर्ती आदि यह कार्य करते थे। इसके बाद बयान के लोनाग्य पाँच में प्रबोधशाल पण धीर एचबीएन चक्रवर्ती यह कार्य करते रहे। इन दोनों को इस धरधन में पाँच पाँच वर्ष का कायनास इंस भी मिला। यह वाली नोट इतने बुद्धि पूर्ण बनते थे कि गुरम्ल पकड़ाई में आ जाते थे। इन्हींमिध धमल डकैती हाथ धन लविष्ठ करने के लिए बिबल होना पड़ा। बाकोरी में ट्रेन सूटने से धन तो मिला किन्तु सरकार गुरम्ल समझ गई कि यह डकैती राजनीतिक उद्देश्य से वाली गई है। पहले दो-एक संदेहास्पद ब्यक्ति गिरफ्तार किये गए। वे दुर्भाग्य से इतने कमजोर बिकले कि आ कुछ मामूली या सब पुलिस के सामने जगम किया। फिर तो देशभर में विरबनारियाँ हुईं। श्री एचबीएन जो नार्थ बाँटने के जुम में सदा जुगल रहे थे वह भी इस केम में पसीट मिले गए। सरकार ने समयमय इस लाग धमाल ध्यय करके इस मुकदमे को नाबिल कर दिया। श्री एचबीएन फिर एक बार काला-पानी आ पहुँचे।

सन् 1926-27 में एचबीएन बाकोरी के धन्य राजबन्धियाँ के नाथ कापेस बंकिमधम द्वारा रिहा किए गए। उन्होंने फिर पुनर्निवार इसाहाबाद के एक पत्र में धन के नास्तिकारी कार्यों का विवरण मिलना प्रारम्भ किया। इसके अनतिरिक्त

भी कुछ सेवादि मित्रों की पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् द्वितीय महा युद्ध प्रारम्भ हो गया तो सरकार ने उनको नजरबन्द कर दिया। इन दिनों उनका स्वास्थ्य बहुत खर्बर हो गया था। इसी अवस्था के आचार पर नजरबन्दी से उनकी मुक्ति हुई। बर पुर रहकर सभीप्रभाव शिक्षित कराते सये। इसी समय भी नैतिकवर्माव बकवर्ती उनसे बनारस जाकर मित्रों और भी सुभाष बोस के नेतृत्व में बिहोह करने की योजना बताकर भी सभीप्र से जसमें भाग लेने को कहा। सभीप्र ने इसे स्वीकार कर लिया और परिवार की व्यवस्था करने के लिए थोड़ा समय माँगा। ये यह व्यवस्था कर ही रहे थे कि तब रोग का आक्रमण उन पर हो गया और सन् 1943 में भारत का यह महान् क्रांतिकारी अपनी मौलों में स्वदेश की स्वाधीनता के सपने बसाए सदैव के लिए चिरनिद्रा में निमग्न हो गया। अब उनके सौम्य पुत्र जीवन की केवल स्मृति-मर डेप रह गई है।





भी कुछ सेवार्थि मिले जो पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् द्वितीय महा  
कुष्ठ प्रारम्भ हो गया तो सरकार ने उनको मजदूरबन्द बन कर दिया। इन दिनों उनका  
स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था। इसी अस्वस्थता के आधार पर मजदूरबन्दी से  
उनकी मुक्ति हुई। बर पर पहुँचकर शशीश्रवाणू बिक्रिस्ता करने लगे। इसी समय  
श्री वैद्योक्तनाथ चक्रवर्ती उपस बनारस जाकर मिश्र शरीर श्री सुभाष बोस के  
नेतृत्व में बिरोह करने की योजना बताकर श्री शशीश्रव से उसमें भाग लेने को  
कहा। शशीश्रव ने इसे स्वीकार कर लिया और परिवार की व्यवस्था करने के लिए  
थोड़ा समय मीठा। वे यह व्यवस्था कर ही रहे थे कि दाय रोग का आक्रमण उन  
पर हो गया और तन् 1942 में भारत का यह महान् नास्तिकारी अपनी धाँतों  
में स्वदेश की स्वाधीनता के सपने बसाए सदैव के लिए चिरनिद्रा में निमग्न हो  
गया। अब उनके सौम्य पूर्व जीवन की केवल स्मृति-तर शेष रह गई है।

